

P. 30.

PLATONIS OPERA GRAECE

RECENSIVIT ET ADNOTATIONE CRITICA

INSTRVXIT

CAR. ERN. CHRISTOPH. SCHNEIDER

LITT. ANT. PROF. VRATISL.

VOLUMEN SECUNDUM

CIVITATIS LIB. V. VI. VII. CONTINENS

LIPSIAE

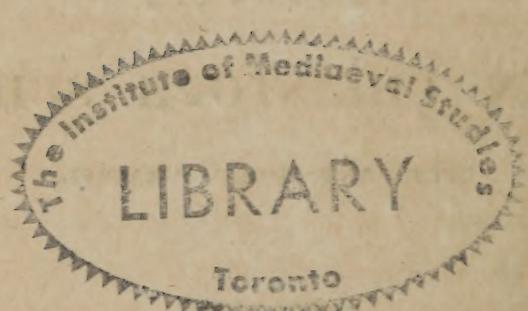
SVMPTIBVS B. G. TEVBNERI ET F. CLAVDII

MDCCCXXXI.

THE INSTITUTE OF MEDIAEVAL STUDIES
10 ELMASLEY PLACE
TORONTO & ONTARIO.

APR - 2 1932

4874



PRAEFATIO EDITORIS.

Ad critica subsidia, quibus in primo volumine concinnando usus sum, in hoc secundo novi nec dum a quoquam occupati nihil accessit, sed virorum excellentium, qui rei litterariae Borussicae et Bavariae publice praesunt, beneficio contigit, ut codices Monacenses duos a Bekkero et ab Astio primum adhibitos mihi ipsi denuo conferre liceret. Unus est idem ille *Monacensis B.* cuius descriptionem in praefatione voluminis primi p. XXXIII. dedi, lectiones per ipsum volumen secundum Bekkerum exhibui. Cui quum tantum tribuissest Bekkerus, ut haud raro unum omnibus praferret, existimandus scilicet erat quam accuratissime eum contulisse, certe nihil de genere eorum, quae ex aliis afferenda putasset, in hoc inventum silentio praeterisse. Verum res aliter habet. Haud maiore vir doctissimus in *Monacensi B.* quam in *Vindobonensi* diligentia versatus non solum orthographicā pro instituti ratione in prooemio ad *commentaria critica* p. X. demonstrata omisit, sed etiam alia paullo graviora neglexit, alia vel falsa attulit vel manca. Quorum omnium ego, non quo totidem praetermissionum reum agerem Bekkerum, sed quod notitia codicis haud dubie valde memorabilis quo plenior eo gratior lectoribus futura videbatur, indicem ad quatuor libros priores pertinentem hic apposui. Ex huius autem voluminis libris tribus ea excerpti, quae in *Monacensi* et in *Vindobonensi B.* per-

scripta atque ita comparata, ut a Bekkero haud minus, quam alia, quae non omisit, commemorari debuerint, tamen ab eo vel omissa sunt vel non satis accurate significata.

L. I.

- Πλάτωνος πολιτειῶν, πρώτη*
- p. 327. C (4, 9. Bekk.) ὡς] om.
(Ven. C. Par. DK.)
- E (4, 17) διανοεῖσθε] δια-
νοεῖσθαι a m. pr. (δια-
νοεῖσθαι Ang. B.)
- p. 328. B (5, 6) ἦν δ'] ἦν δὲ
C (5, 14) προσκεφαλαίον]
προσκεφαλέον
- E (6, 12) εἶ] int. vers.
(6, 14) ἔξαγγέλλεις] ἔξαγ-
γέλεις
- p. 329. A (6, 18) ἔννιούτες] συν.
B (7, 5) τοῦτο αἴτιον]
τοῦτ' αὐτόν.
- C (7, 14) τότε ἔδοξεν] τότ'
ἔδ.
(7, 16) γίγνεται] γίνεται
(Item 335. A. 19, 4
γίνονται, II. 358. A.
58, 15 γινόμενα, 360.
C. 63, 4 συγγίνεσθαι,
III. 403. B. 139, 13
ἔνγγίνεσθαι, 407. C.
146, 18 ἐγγίνεσθαι,
414. B. 159, 8 γινο-
μένων et III. 421. D.
168, 22 γίνεσθαι.) Ad
hunc locum in m. ad-
scriptum est: ταῦτα
καὶ αὐτὸς διαμαρτίρο-
με περὶ τὸ γῆρας καὶ
μάλιστα περὶ τῶν ἥδο-
νῶν τῆς συνουσίας ἔ-
νευ τῆς ἀναγνέας κρί-
ας: δημήτριος, et in
ima pagina: ἀρμόδιος
ὁ χρόνος ὁ ἡμέτερος
- p. 330. B (9, 6) δὲ ἀγαπῶ] δ' ἀγ.
C (9, 9) τὸ πολὺ] τοπολὺ
(Item 345. C. 39, 6.
352. D. 53, 5. III. 390.
C. 115, 4 τοποδῶτον,
II. 373. D. 87, 10 το-
ποδέρον, E. 18 το-
μετατοῦτο, 378. B. 96,
7 τοποδάπαν, III. 403.
C. 139, 17 ταμονοσιμά.)
- p. 331. A (10, 17) ἀτάλλοισα] ἀτ-
τάλλοισα (Par. DK. sec.
Bekk.)
- C (11, 16) εἰη] εἰ, addito
int. vers. a m. s. η
- D (12, 1) παραδίδωμι] Al-
terum α int. vers.
(12, 2) ἔφην] ἔφη (Vat.
BM. Ven. C. Vind. B.
Par. DK. Amb. C.
Ang. B.)
- E (12, 11) γιγνώσκεις] γι-
νώσκεις (Item 347. D.
43, 14 γινώσκων, III.
402. B. 137, 12 δια-
γινώσκειν, III. 426.
C. 178, 1 προγινώσκων,
D. 10 συγγινώσκεις.)
- p. 332. E (14, 9) ἔνμαχεῖν] Alte-
rum μ int. vers. a m. s.
(14, 10) ἄχρηστος.] ἄ-
χρηστος;
- (14, 11) ἀνβερνήτης.]
ἀνβερνήτης;
- (14, 12) Ἄρα] ἄρα
- p. 333. C (15, 16) ἦ] int. vers.
D (16, 2) τἄλλα] τἄλλα

- (item 348. E. 45, 21
cum Vindob. BDEF.
Steph. 353. C. 55, 1
cum Vind. BDF. Steph.
II. 360. C. 63, 6. 370.
D. 81, 11 cum Vind.
BDF. Steph. (τ' ἄλλα
Vind. E.) 373. A. 86,
8 cum Vind. BDF.
Steph. III. 415. B. 160,
20. III. 420. D. 167,
7. 424. A. 173, 16.
425. B. 175, 16. 434.
A. 192, 9. 443. C. 210,
2.)
- p. 333. D (16, 4) χρήσιμος ;] χρή-
σιμος.
- E (16, 11) μὴν] a m. pr.
μὴ
- p. 334. B (16, 22) πενάσθαι] πε-
νᾶσθαι
(17, 1) σὲ ναὶ] ναὶ int.
vers.
- (17, 2) ὡφελείᾳ] ὡφε-
λίᾳ
- p. 335. A (18, 18) δὲ ἐχθρὸν] δ'
ἐχ. (Amb. C. Ang. B.
Vat. M.)
- B (19, 4) Βλαπτόμενοι]
—μενοι int. vers.
(19, 5) ἀρετὴν post ἵπ-
πων int. vers. additum
et sequens (6) εἰς τὴν
τῶν ἵππων in m. a m.
s. adscriptum est.
- C (19, 12) τοῦτ'] τοῦτό
(19, 16) ἀφίππους] σῆ
ἀφίππους τοὺς μὴ εἰ-
δότας ἵππικήν : in m.
(19, 17) ἔυλλήβδην]
συλλ.
- D (19, 18) ἄλλὰ ἀδύνα-
τον] ἄλλ' ἀδ. (Ang. B.)
- E (20, 8) τοῖς δὲ φίλοις]
—δὲ — int. vers.
- p. 335. E (20, 11) ἄρα, ἦν] ἄρ-
ήν
(20, 15) οἶσθα, ἦν] οἴλ,
addito a m. s. οὐδ', ἦν
- p. 336. A (20, 21) δὲ οὐδὲ] δ' οὐ
B (21, 6) ταῦτ' εἰπον] ταῦ-
τα εἰ.
(21, 7) οὐκέτι] οὐκ εἴτι
(item 348. E. 45, 17.)
(21, 10) δ' δ'] δδ'
φθεγξάμενος] φθεγγξ.
- p. 337. A (22, 22) η ἀποκρίνοιο]
η ἀποκρίνοιο, in m. η
ἀποκρίνοι
- B (23, 4) ἔξ, μηδ'] ἔξ μη
δὲ
τέτταρα] τέσσαρα
(Amb. C. — Cf. hu-
ius Vol. p. 245, b.)
(23, 7) ἀποκρίνοιτο]
ἀποκρίνοῖτο
- C (23, 12) τοῦτο ἐκείνῳ]
τοῦτ' ἔκ.
(23, 16) Ἀλλο τι οὖν,
ἔφη, ναὶ] ἄλλ' ὅτι
οὖν ἔφη· ναὶ, vulgata
a m. s. in m. posita.
- D (24, 5) Οὐκοῦν] οὐκ
οὖν
(24, 6) μοι] int. vers.
- p. 338. A (24, 17) φθονήσῃς] φθο-
νήσις, a m. s. —σεις
(25, 3) τελευτῶν] τελευ-
τῶν (item 342. D. 33;
20. II. 361. E. 66, 2.
III. 425. C. 176, 2.)
- B (25, 3) ἔφη, η] ἔφη, in-
terposito int. vers. a
m. s. η
- C (25, 15) ἔθελήσεις.] ἔθε-
λήσεις;
(25, 17) δίκαιον εἶναι.]
δ. εῖναι;
- E (26, 7) αὐτῇ ἔνμφέρον]
αὐτ. σνμ.

- p. 338. E. (26, 9) οὐτω] οὐτως
 (26, 12) τοῦτο οὐν] τον-
 τοῦν
- p. 339. A. (26, 16) ἔνμφέρον.] Ita,
 non συμ.
- B (27, 5) προστιθησ] —
 τι — int. vers.
- C (27, 12) τιθέασι] τιθέα-
 σιν
- D (28, 1) ἄττα] ἄττα
 (28, 2) βελτίστου,] βελ-
 τίστου;
- E (28, 8) κακὰ αὐτοῖς] Ita,
 non ο. αὐ.
- φῆς] φῆς
- p. 340. B (29, 2) ηρείττους] Alter-
 rum τ int. vers. a m.
 s. additum est.
- D (30, 2) ὁ ἔξαμαρτάνει,]
 cum signo interrogandi.
 (30, 6) τοῦτο ἔστιν] τοῦτο
 ἔστιν
- E (30, 14) δή σοι] δή σε,
 in m. a m. s. σοι
 νῦν δή] νῦν δή
- p. 341. A (30, 18) ἔξ ἀρχῆς] ἔξαρ-
 χῆς (item 344. C. 37,
 14. 348. B. 44, 17.
 III. 411. B. 153, 15.
 III. 424. E. 175, 2.
 Similiter διαβραχέων
 III. 424. B. 173, 17.
 διαπαντὸς III. 407. D.
 147, 7. III. 429. B.
 183, 9. C. 16. 430. B.
 185, 2. 433. A. 190, 8.
 διαταῦτα 341. E. 32,
 11. 347. B. 42, 16.
 III. 425. C. 176, 5.
 καταρχᾶς III. 398. B.
 129, 15. μεταταῦτα
 353. D. 55, 2. III. 406.
 E. 145, 15. μετατοῦτο
 III. 392. C. 119, 1.
 408. A. 147, 20. 412.
- B. 155, 13. III. 427.
 D. 179, 21.)
- p. 341. A (30, 19) ἔνμφέρον] in m.
 a m. pr. additum.
 (30, 21) μ' ἔξ] με ἔξ
 (30, 22) ἔρεσθαι] Ita,
 non ἔρ.
- B (31, 5) ποτέρως] ποτέ-
 ρος a m. pr. (item II.
 368. A. 77, 20. Simi-
 liter 343. E. 36, 8
 μοκθηροτέρος, 348. B.
 44, 15 ὁποτέρος, III.
 390. C. 115, 3 ὡς οὐ-
 τος, 393. D. 121, 3
 ὠδέπος, 396. E. 127,
 2 ἀμφοτέρον, 412. A.
 155, 4 et III. 425. C.
 176, 6 εἰνότος, 430.
 B. 185, 7 ἀνδραποδό-
 δη, 439. B. 202, 4
 ἀποθοῦνται et 443. C.
 209, 19 εἴδολον a m.
 pr. scripta et a m. s.
 correcta sunt.)
- (31, 7) ἀκριβεῖ] τῶς ἀ-
 κριβεῖ, sed —ω in ar-
 ticulo e corr.
- ἔλεγες] Ita, sed initio
 et fine correcto.
- (31, 10) συκοφάντει, εἴ-
 τι δύνασαι] συκοφάν-
 τι δύνασαι a m. pr.
- C (31, 14) οὐδὲν ὧν] a
 m. s. comma additum.
 Ἀδην] ἄδην cum al-
 tero δ int. vers. prae-
 posito, adscripto in m.
 ἄδην
- (31, 17) καμνόντων θερ.]
 καμόντων θερ. cum ν
 int. vers. post μ ad-
 dito.
- D (32, 7) αὐτὴ αὐτὴ corr.
 in accentu utroque.

p. 341. E (32, 10) σώματι εἶναι
σώματι] σώματι εἶναι
σώματι, sup. αἱ inter
μετά τι in priori.

(32, 12) σώματά ἔστι] σώ-
ματά ἔστι

(32, 15) ἔφην] —ν int.
vers. a m. s.

p. 342. A (32, 19) ταῦτα ἐπ'] ταῦτ'
ἐπ'

(33, 2) αὐτῇ τὸ ἔνυμφέ-
ρον] αὐτόν τὸ συμ.

B (33, 3) ἦ οὐτε] ἦ in m.
a m. s. habet..

(33, 10) ἔχει;] ἔχει.

C (33, 17) Οὐκ ἄρα] οὐ-
κάρα

(33, 19) οὐδὲ ἐπιτάττει]
οὐδὲπιτάττει

D (34, 2) πάμνοντι;] πά-
μνοντι.

(34, 4) ἦ οὐχ] ἦ οὐχ

E (34, 6) ναύτης; Λμολό-
γηται.] ναύτης ὡμ.

(34, 11) οὐδὲ ἐπιτάττει]
οὐθὲν ἐπ.

p. 343. A (34, 16) περιειστήκει]
περιειστήκει (Par. K.
sec. Bekk.)

(35, 1) δὴ τι] δὴ, τι

C (35, 18) ὑπηρετοῦντες]
ὑπηρετοῦνται, sup. εσ

a m. s. super αι

(35, 19) δὲ οὐδέ] δὲ οὐ
δέ

D (36, 5) δέ δέ] δέδε

p. 344. A (36, 16) μαθήσει] μα-
θήση (Sic 347. E. 44,

1 et III. 397. D. 128,

15 αἰδῆ, 349. A. 46,

3. 5 μαντεύῃ et δια-

νοῦ, 351. C. 50, 21

ἀπορίνη, III. 386. A.

107, 7 et 413. A. 156,

20 ἥγη, 392. D. 119,

5 εῖση, 399. D. 132, 9
παραδέξῃ, III. 419.
165, 2 ἀπολογήσῃ, 423.
A. 171, 16 et 432. C.
189, 9 χρήση, 426. B.
177, 17 ἐπαινέσῃ, 430.
C. 185, 10 ἀποδέξῃ,
431. C. 187, 13 ἐπι-
τεύξη et 440. D. 204,
19 ἐνθυμηῆ.)

p. 344. C (37, 13) δικαιοσύνης
ἔστιν] δ. ἔστιν

D (37, 20) ἀλλ᾽ ἡν.] ἀλ,
sup. a m. s. λ, ἡν.

(38, 1) ἐδεόμην] δεό-
μην

E (38, 9) ὠγαθὲ] ὠγαθὲ
(item 345. A. 38, 14
et III. 423. D. 173, 1.)

p. 345. A (38, 13) οὐδὲ ἔὰν] οὐδὲ
ἔὰν

B (39, 3) μετατιθῆ] μετα-
τίθη

D (39, 15) ὥστε εἶναι] ὥστε
εῖ. (Ang. B. Vat. M.)

p. 346. A (40, 8) περαίνωμεν] πε-
ραίνομεν a m. pr.

(40, 12) γὰρ αὐτῆς] γὰρ
αὐτοῦ, in m. a m. s.
ἥσ

B (40, 14) βούλη] βούλει

C (41, 3) δῆλον, ὅτι] δη-
λονότι (item II. 372.

C. 85, 7. III. 389. B.

112, 17. 410. A. 151,

12. III. 428. B. 181,

7. 436. B. 196, 9. 444.

A. 211, 6.)

(41, 8) αὐτοῦ] αὐ.

D (41, 10) ὑγίειαν] —ει—
int. vers.

μισθαρητικὴ prius]

—αρ—ι (pro η) — a

m. s.

(41, 16) ὠφελεῖ] —ται

int. vers. a m. s. ad-ditum. Idem nunc vi-deo a Bekkero signifi-catum, non antecedens ὡφελεῖται manui re-centi tributum.

p. 347. B (42, 15) ἔστιν;] ἔστιν;
C (43, 3) αἰσχρὸν νενομι-
σθαι] αἰσχρὸν νενομι-
σθαι

D (43, 9) δύμοιοις] δύμοιως,
in m. a m. s. οίοισ
(43, 13) ξυμφέρον] Ita,
non συμ. (Vat. BM.
Ven. BC. Vind. B.
Par. K. sec. Bekk.
Amb. C. Ang. B.)

E (44, 3) Ἡκουσας] σῇ
τὴν σύνταξιν. in m.

p. 348. C (44, 20) αὐτοῖν] cum
litura in α

D (45, 9) βαλλάντια] βα-
λάντια (Ven. B. Par.
K. sec. Bekk.)

E (45, 12) ἔφην] —ν int.
vers. a m. s. (ἔφη Par.
K. Vat. M.)

(45, 13) ὅτι βούλει] δ
β. (Ven. C. Par. DK.)

p. 349. B (46, 15) ἥγοιτο prius]
ἥγοι, τὸ a m. pr.

C (46, 20) ἄρα ἀξιοῖ] ἄρα
ἀξ.

(46, 21) οὖν, ἔφη] οὖν
ἔφη

D (47, 12) Εἶεν] εἴων, in
m. a m. s. εἶεν

E (47, 16) ἄπερ] ὄνπερ,
e corr. ὄνπερ

(47, 17) οὔτως; Οὐ-
τῶς.] οὔτος (a m. s.
—τως); οὔτως.

(47, 20) ἦ ἀξιοῦν πλέον
ἔχειν] punctis notata.

p. 350. D (49, 11) ἦ οὐ] ἦ οὐ

p. 350. D (49, 12) οὐδὲ ἂν νῦν λέ-
γεις ἀρέσκει] οὐδὲ ἂν,
in m. a m. s. ἂ, νῦν
λέγεις, ante corr. —ης,
ἀρέσκει cum litura post
ει.

E (49, 15) δέ σοι] δέ σι
a m. pr.

p. 351. A (50, 7) ἐπειδή περ ἔστιν]
ἐ. ἔστιν

ἀδικία.] ἀδικία:

B (50, 11) πολλὰς δὲ] π.
δὲ

(50, 12) οὐκ; ἔφη] οὐκ
ἔφη

(50, 18) ἔχει] Huic a
m. s. superscriptum est
ἔστι

C (50, 20) ἐπινεύεις] ἐπι-
νεύεις
ἀνανεύεις] —ει— e
corr.

(51, 2) λέγε] λέγαι

D (51, 10) ἄρα, εἰ] ἄρα εἰ

E (51, 14) διοίσονται] σῇ
διοίσονται in m.

p. 352. C (52, 17) πρᾶξαι] πράξαι

(52, 18) ἀληθὲς] ἀλη-

θὲς

(52, 20) ἦ αὐτοὺς] η,
a m. s. ἦ, αὐ.

μή τοι] μή τι cum li-

tura inter τ et ι.

D (53, 9) δὲ ἔτι] Ita, non
δέ τι (Ven. B. Amb.
C. Ang. B.)

(53, 12) εἰναι ἵππον]
εἰππον, sup. a m. s.
ναι ἵ

E (53, 17) ταῦτα τούτων
φαμὲν] φαῖμεν ταῦτα
τούτων

p. 353. A (54, 1) τούτω] τούτω,
in m. a m. s. τοῦτο

- p. 353. B (54, 12) οὐτως; Οῦτως.] οὐτω; οὐτω.
 (54, 14) αὐτῶν αἰκ.] p. 358. A (58, 15) δι' αὐτὸν] δι'
 αὐ. αἰκ.
 C (54, 20) τῆς αὐτῶν ἀρ.] τ. αὐ. ἀρ.
 D (55, 3) ἔστι τι] ἔστι τι
 (55, 6) ἐκείνουν] ἐκείνης,
 sup. a m. s. 8
 (55, 7) Τί δ' αὐτὸν]
 τόδ' ήν τὸ
 (55, 8) γ', ἔφη] γε ε.
 E (55, 10) αὐτῆς] αὐτὰ
 αὐτῆς
 (55, 14) συνεχωρήσαμεν]
 Ita, non ε.
 p. 354. A (55, 21) λύσιτελεῖ] λυ-
 σιτελῆ, e corr. —ει
 (56, 3) τοῖς Βενδιδείοις]
 παριμία in m.
 B (56, 7) ἀεὶ] αἰεὶ
 (56, 9) ἔγώ μοι] ἔγώ
 οἶμαι (Ang. B.)
 (56, 10) δραμῆσαι] ὠρ-
 αῆσθαι
- τέλος πολιτείας πρώτου: —
- L. II.
- Πλάτωνος πόλιτειῶν,
 δευτέρα: —
- p. 357. B (57, 9) βούλει] βούλου-
 λει
 C (58, 3) τε αὐτοῦ] τε
 αὐ.
 (58, 7) τὸ κάμνοντα] τὸ,
 addito int. vers. ν, η.
 et in m. καὶ τὸν κάμν.
 (58, 8) ὁ ἄλλος] ὁ ἄλ-
 λως (non ἄλλως, quod
 ne Bekkerus quidem
 ostenderat.)
 D (58, 12) τρίτον. ἄλλὰ τι
- δή; Ἐν] τρίτον: ἀλ-
 λὰ τι δὴ εὐ
 p. 358. A (58, 15) δι' αὐτὸν] δι'
 αὐ. item 58, 19.
 B (59, 1) δοκῆ] δοκοῖ ante
 corr.
 (59, 2) κηληθῆναι] κο-
 ληθῆναι ante corr.
 (59, 4) τι τ' ἔστιν] τι
 τ' ἔστιν
 (59, 7) ἔᾶσαι] ἔάσαι
 C (59, 13) λέγονσιν] λέ-
 γονσην, sup. a m. s.
 iv
 D (59, 19) ἀν σοῦ] Ita,
 non ἀν σου
 E (60, 9) ἐπειδὲν] ἐπειδ'
 ἀν (item 377. B. 94,
 10. III. 396. C. 126, 7.
 411. C. 154, 3. 414.
 C. 159, 16.)
- p. 359. A (60, 14) αὐτῶν] αὐτοῖς,
 non αὐ.
 D (61, 19) ἡαγῆναι τι] τι
 int. vers. habet.
- p. 360. B (62, 19) ἐπιθέμενον] ἐπι-
 θέμενος
 (62, 21) δύο] δύω (Vind.
 B. Par. DK. sec. Bekk.)
 (62, 22) ὡς δόξειν, οὐ-
 τως ἀδαμάντινος, ὥς]
 ὡς, a m. s. ὥς, δ. οὐ-
 τος, a m. s. —τως,
 ἀδ. ὥς
- C (63, 5) ἀποκτιννύναι]
 ἀποκτιννύναι ante cor-
 rect.
 (63, 8) διάφορον] δια-
 φέρον (Ven. C. Par.
 DK. sec. Bekk. Ang.
 B.)
 E (64, 3) διάστασις; ἥδε]
 διάστασις ἥδε.
- p. 361. A (64, 9) δὲ, ἐὰν] δὲ ἀν,

- e corr. δ' ἔὰν (δ' ἄν
Ang. B.) p. 364. C (70, 7) ἀκεῖσθαι] Inter
p. 361. A (64, 16) δόξαν αὐτῷ] δ.
αὐ.
B (64, 20) ἀνδρείαν] ἀν-
δρίαν
C (65, 7) ποιητέος] ποιη-
τέον a m. pr.
D (65, 14) αὐτοῖν] αὐτῶν
(Par. DK.) p. 362. A (66, 3) ἀνασχινδυλευθή-
σεται] ἀνασχιλινδευ-
θήσεται, in m. ἀνα-
σκολοπισθῆ
B (66, 13) ἔνυμβάλλειν] ἔνυ-
μβάλλειν, sup. a m. s.
altero λ
(66, 16) περιγίγνεσθαι]
περιγίγνεσθαι, sup. γ
D (67, 6) τι λέγειν] τίλε-
γειν
E (67, 16) ἐπαινοῦσιν] ἐ-
παινοῦσι
ἴν' ἦ] ἕνα ἦ
p. 363. A (68, 1) ἐπὶ πλέον δὲ οὐ-
τοι] ἐπιπλέον δ' οὐ-
τοι
(68, 3) ἄφθονα] ἄφθο-
να
(68, 4) γενναῖος] γε-
νναῖος, sup. a m. s.
altero ν
B (68, 7) φέρειν] φέρει a
m. pr.
μέσσας] μέσσας, sup.
a m. s. altero σ
(68, 11) ἀμύμονος] ἀ-
μύνος
θεουδῆς] θεουδεῖς
D (68, 20) οἱ δ' ἔτι] οἱδ'
ἔτι
E (69, 7) ταῦτα] int. vers.
et in m. a m. s. εἰ-
δῶν. Ita enim illud
ταῦτα legi poterat.
- p. 364. C (70, 7) ἀκεῖσθαι] Inter
ἀ et η a m. s. q super-
scriptum et in m. ἀρ-
κεῖσθαι positum est.
ἔάν τέ] Ita, non καὶ
ἔάν (Par. A. Vat. BH.
Ven. BC. Amb. C. Ang.
B.) (70, 9) βλάψειν] βλά-
ψιν, sup. ε inter ψ
et ι.
(70, 10) ὡς φασι, πεί-
θοντές σφίσιν] ὡς
σφασι πείθοντ, sup.
αις eoque a m. s. in
ες mutato, σφίσιν.
(70, 13) ἥλαδὸν ἔστιν]
ἥλαδόν ἔστιν
E (71, 1) παρατρωπᾶσ']
παρατρωπᾶσιν
(71, 3) ὄμαδον] ὄμα-
δὸν (Par. D. Vat. M.)
p. 365. A (71, 16) ποιός τις] ποιο
τις, sup. a m. s. η
B (71, 17) πρὸς αὐτὸν] π.
ἐάντὸν (π. ἔαντὸν Vat.
M.) (71, 18) δίκαι] δίκαι
C (72, 8) ὅει] αἰεὶ¹
D (72, 16) οὐτε βιάσασθαι
— λανθάνειν E.] bis
deinceps, sed alterum
exemplum linea dele-
tum. Et in hac altera
scriptione μὴ omissum
erat.
E (72, 20) αὐτοὶ οὐτοι]
αὐτὸν οὐ. ante corr.
p. 366. A (73, 4) δίκαιοι μὲν γάρ
οὗτες] δίκεοι μ. γ. οὗ-
ταις a m. pr. (Simi-
liter 371. E. 84, 1
πωλοῦνταις, 372. D.
85, 13 τελευτῶνταις,
375. C. 90, 20 δρά-

- σανταις, III. 398. E. p. 369. D (80, 3) πέντε ἀνδρῶν.]
 131, 1 τίναις, 410. C. π. ἀνδρῶν;
 152, 2 τιναις, 416. D. p. 370. A (80, 16) εἰπόντος σοῦ]
 163, 13 σώφροναις, εἰ. σοῦ
 III. 421. A. 168, 1 B (81, 1) καιρὸν] κερὸν
 δύταις (prius) et 426. a m. pr.
 E. 178, 18 ἀγνοοῦν- C (81, 7) πράττη] πράτ-
 ταις a m. pr. erat.) τοι ante corr.
 p. 366. A (73, 5) ἐσόμεθα] εὐσό- p. 371. A (82, 9) ἀπεισιν] ἀπασιν
 μεθα a m. pr. sine corr.
 B (73, 14) μηνύουσιν.] μη- C (83, 5) οὐ τις ἄλλος] οὐ
 νύουσιν. τις ἄλ.
 (73, 15) εὐσχημοσύνης] (83, 7) τῆς αὐτοῦ] τ.
 εὐσχημοσύνης, sup. a m. αὐ.
 s. μο
 (73, 16) πτησώμεθα] (83, 11) τι ἄλλο] τι ἄλ.
 πτ.. ὡμαθα, in m. D (83, 18) πλανήτας] πλά-
 πτώμεθα νητας (Vat. BM. Ven.
 B. Par. K. sec. Bekk.)
 E (74, 15) λειειμμένοι] λε- p. 372. A (84, 9) ἐννοῶ] ἐνοῶ a
 λειμένοι m. pr.
 (74, 18) ἀπ' αὐτῶν] ἀπ'
 αὐτῆς (Par. DK.)
 αὐτὸ δ' ἐκάτερον] in
 m. a m. s. habet.
 p. 367. C (75, 21) τὸ δὲ ἄδικον] (84, 15) τὰ πολλὰ] τα
 τὸ δ' ἄδ. πολλὰ (Similiter τα
 (76, 4) αὐτὰ αὐτῶν.] πρότερον III. 430. E.
 αὐ. αὐ.
 E (76, 15) δὲ αὐτὴν] δι'
 αὐ.
 (76, 18) ἀει] αἰεὶ¹
 p. 368. A (77, 1) Γλαύκωνος] γλαύ- B (84, 19) μάξαντες μά-
 κονος ζας] μάξαντες μάζας
 (77, 5) δικαιοσύνης] δι- C (85, 4) πόλεμον;] πόλε-
 καισύνης, sup. a m. μον:
 s. o.
 C (77, 19) τι τ' ἔστιν] τι (85, 6) ἔστιωμένους] ἔστ.
 τ' ἔστιν (85, 7) ἄλας τε] ἄλλας
 D (78, 2) ἡμεῖς οὐ] ύμεῖς τε
 οὐ
 p. 369. B (79, 2) περαίνειν;] Ita,
 non περαίνειν.
 C (79, 13) αὐτῷ ἄμεινον] (85, 10) σύκων] σύκῶν
 αὐ. ἄμ. acuto a m. s. addito.
 D (79, 20) ἄλλο τι] ἄλλ' ὅτι D (85, 14) παραδώσουσιν]
 παραδώσουσι
 (85, 15) ἔφη, οὐτεσι.] (85, 15) ἔφη ομ.
 E (86, 5) φλεγμαίνονσαν

πόλιν] ὥσπερ τῶν νῦν
ἀρχώντων καὶ πόλαι-
ων καὶ μάλιστα τῶν
ταύτη οἰκούντων: in
m.

- p. 373. A (86, 7) κλίναι] κλίναι
(86, 11) τὰ ἀναγκαῖα]
Ita, non τάν.
C (87, 7) τούτον προσδεή-
σει] τοῦτο πρ. (Ven.
C. Par. DK. secundum
Bekk.)
D (87, 15) τῆς ἡμετέρας]
τῆς ἡμέρας a m. pr.
E (88, 1) ἔξ ὧν] Ita a m.
pr. ἔξ οὐ a m. s.

- p. 374. B (88, 12) Ἡ οὖν] ἦ οὖν
C (88, 21) ἐστὶν εῦ] ἐστὶ^ν
καλῶς
(89, 4) παρέργῳ] παρ-
ρέργῳ
E (89, 20) Δια, ἦν] δι'
ἦν

(89, 22) γ' ἀν] γε ἄν

- p. 375. A (90, 1) διαφέρειν] —ν
a m. s. sup.

B (90, 16) Δια, ἦ] δι' ἦ

- C (91, 2) φύσις. Φαίνεται.]
φύσις φαίνεται.

D (91, 5) Κινδυνεύει] κιν-
δυνεύοι

(91, 10) ταῦτα.] ταῦτα;

- E (91, 15) ἄρα, ἦν] ἄρ'
ἦν

(91, 17) οὖν σοι] οὖν
οὖ σοι

- p. 376. B (92, 6) ὡς ἀληθῶς] ὡς
ἀληθῶς

(92, 8) διακρίνει] δια-
κρίνειν (διακρίνειν
Vind. B.)

(92, 9) συνέσει] συνέσοι
a m. pr.

(92, 12) ταῦτόν;] ταυ-
τόν:

p. 376. C (92, 15) φύσει,] Ita a
m. pr., φύσει a m. s.
εἶναι;] εἶναι:

- D (93, 7) Οὐ γὰρ] οὐ
γὰρ
ἐν μύθῳ μυθολογοῦν-
τές] ἐν μύθῳ μυθω-
λογοῦντές a m. pr. εἰ
μυθολογοῦντές a m. s.
(punctis sub μύθῳ po-
sitis.)

(93, 8) παιδεύωμεν] Ita
a m. s. παιδεύομεν a
m. pr.

- E (93, 14) εἰπὼν] Ita a
m. pr. εἰπεν a m. s.

(93, 15) διττὸν] διττῶν
a m. pr.

- p. 377. A (93, 17) ψευδέσιν] ψεύ-
δεσιν (Ven. C. Par.
DK. sec. Bekk. Amb.
C.)

(94, 3) Οὐκοῦν] οὐκοῦν

- B (94, 10) τελεωθῶσιν]
τελειωθῶσιν (Ven. C.
Par. DK. sec. Bekk.
Ang. B.)

(94, 11) αὐτούς] αὐ-
τᾶς a m. pr.

- E (95, 8) ὥσπερ γραφεὺς]
His int. vers. a m. s.
interpositum est εἰ

(95, 13) ὁ εἰπὼν] ὁ εἰ.
(Vat. M.)

(95, 14) ἄ φησι] Ita, ut
vulgo, non ὁ φ.
δρᾶσαι] δράσαι

- p. 378. B (96, 5) Οὐ μὰ] οὐ μὰ
(96, 6) οὐδ' αὐτῷ] οὐδ'
αὐτῷ

- C (96, 12) αὐτοῖς] αὐ-
τοῦ, in m. a m. sec.
τῶν

- E (97, 8) εἰ τις] ἦ τις a
m. pr.

- p. 379. A. (97, 12) εἰδέναι] εἰδέναι, in m. a m. s. ναι (97, 16) Τοιοῦτε] τοιοῦτε
- B (98, 3. 4) αἴτιον; — εὐπραγίας;] αἴτιον: — εὐπραγίας:
- C (98, 9) ὀλίγων] ὀλίγον cum ω super ο
- (98, 12) ἄλλ' ἄττα] ἄλλα ἄττα
- D (98, 18) αὐτὰρ ὅ] ἀτὰρ ὅ (ἀτὰρ Amb. C. Vat. H.)
- E (99, 2) πανῶν τε] πανῶν, praeposito int. vers. a m. s. ναι (πανῶν Ven. B. Vind. B. Vat. H.)
- p. 380. D (100, 11) ἄρα γόητα] ἄρα γ. a m. pr.
- (100, 12) τοτὲ μὲν] τὸ τὲ μὲν a m. pr.
- (100, 15) περὶ αὐτοῦ] π. αὐτόν.
- E (101, 1) εἰλήσεων] εἰλ. (Vat. B. Par. K. sec. Bekk.)
- p. 381. B (101, 12) τὰ τοῦ θεοῦ] τὰ — int. vers. a m. s.
- (101, 13) Ταύτῃ] ταῦτα ante corr.
- D (102, 12) ἡλοιωμένην,] sine commate.
- E (102, 21) μεταβάλλειν] μεταβάλειν
- p. 382. A (103, 4) μισοῦσι] Ita, non —σιν
- B (103, 9) σεμνὸν λέγειν·] σ. λέγειν;
- (103, 11) ἥκιστ' ἀν] Ita, non ἥκιστα ἀν (Amb. C. Ang. B. Vat. HM.)
- E (104, 14) Οὐκ ἄρ' ἔστιν] οὐκ ἄρα ξ.

- p. 382. E (104, 20) οὐδ' ὅναρ] Ita a m. pr. οὐτ' ὅ. a m. s.
- p. 383. A (105, 5) ἐαυτοὺς] αὐτούς cum litura in spiritu.
- (105, 9) αὐτῆς] αὐτόν.
- B (105, 13) Παιῶν'] παιῶν (105, 18) τὸν παιῶν] παιῶν (Par. K.)
- C (105, 20) ἐπὶ παιδίᾳ] ἐπὶ παιδίᾳ (ἐπιπαιδίᾳ Amb. C.)
- (106, 2) καθόσον] καθόσον (item III. 437. C. 198, 12.)

τέλος πολιτειῶν, δευτέρας:

L. III.

Πλάτωνος πολιτειῶν,
τρίτη:

- p. 386. A (107, 1) τοιαῦτ' ἄττα] τοιαῦτα ἄττα
- B (107, 9) Δια, ἦ] δι ἦ (δι' Amb. C.)
- (108, 2) οὐτω τὰ] οὐτως τὰ
- (108, 3) οὐτ' ἀληθῆ] οὐτε ἀλ.
- (108, 4) οὐτ' ὁφέλιμα] οὐτε ὁφ.
- C (108, 5) Ἐξαλείψομεν] Ita, non ἐξαλείψωμεν
- D (108, 14) Ὡ πόποι] Ita, non ὡ π. (Vind. B.)
- (108, 15) Ψυχὴ καὶ] ψυχὴ; καὶ πάμπαν] πάμπαν
- (108, 17) πεπνύσθαι] Ita, non πεπνύσθαι, in codice scriptum esse Bekkerus recte si-

- gnificavit, de Par. K. nihil dixit. Ego eravi.
- p. 386. D (108, 20) γούωσα, λιποῦσ'] γεόωσα λιπούσα
- p. 387. A (109, 1) {Τρίζουσαι] τρύζουσαι
(109, 2) ἔχονται] ἔχοντας a m. pr.
(109, 3) "Ως αὖ] Ita.
B (109, 4) παρατησόμεθα] ση ἀντὶ τοῦ αἰτήσομεν. καὶ ἡ ἀριστείδον, ὑλεών σε παρατοῦμαι φανῆναι in m.
(109, 11) Στύγας] τύτας
C (109, 18) ποιητέον; Δῆλα δὴ.] ποιητέον: δηλαδὴ: (Item δηλαδὴ 392. A. 118, 5. 398. C. 130, 1. 412. B. 155, 11. III. 428. A. 181, 2.)
- D (110, 2) ἐταῖρός ἐστι] Ita, non — ἐστιν
(110, 3) γέ εκείνου] γε εκ.
(110, 5) αὐτὸς αὐτῷ] αὐ. αὐ.
E (110, 9) Ἡκιστ' ἄρα καὶ] ἥκιστα ἄρα καὶ a m. pr. Pro καὶ m. sec. χρή posuit.
- (110, 10) ὅταν] ὅτε ἀν ut Vind. D.
- p. 388. A (110, 18) πλευρᾶς] πλευρὰ, non πλευρᾶ
B (110, 20) μηδὲ ἀμφοτέρησι] μηδὲ ἀμ.
(111, 5) ὀνομάζοντ'] ὀνομάζοντα
- p. 388. C (111, 10) Ὡ πόποι] Ὡ π. sed corr. in accentu.
D (111, 20) αὐτῷ] τι, non τι
- p. 389. A (112, 11) δ' ἄρ'] δ' ἄρα μακάρεσσι] μακάρισσι (112, 12) ποιπνύοντα] ποιπνύοντα:
B (112, 18) δὲ οὐχ] δ' οὐχ (Ang. B.)
D (113, 10) δημιουργοὶ] Ita a m. pr.
(113, 14) δέ; παφροσύνης ἄρα] δὲ τ. ἄρα
- p. 390. A (114, 6) ἄρα καλῶς] ἄρα κ.
(114, 12) ὅταν] ὅτ' ἀν
(114, 13) παράπλειαι] Ita, non παραπλεῖαι (Par. DK. sec. Bekk. Vat. H.)
B (114, 16) ἐπιτήδειον] ἐπιτήδιον
C (115, 4) οὐδὲ ὅτε] Ita, non οὐδὲ ὅτε
(115, 6) οὐδὲ "Αρεώς] οὐδὲ ἄρεώς
(115, 7) Οὐ μα] οὐ μὰ
D (115, 8) καρτερίαι] καρτερία
E (115, 16) ἀστέον] ἀστέον, in m. ση ἀστέον
- p. 391. B (116, 11) Πατρόκλω] παντρόκλω
C (116, 19) ἐν αὐτῷ] ἐν ἐαντῷ (Ang. B. Vat. M.) νοσήματε] Ita, non νοσήματά τε (Par. ADK. Ven. C. Vind. B. Vat. BHM. Ang. B.)
(117, 2) Θησεὺς] θησεὶς a m. pr.

- p. 391. D (117, 7) λέγειν, μηδὲ] λ.
μὴ δ' (μηδὲ Vat. M.)
- E (117, 17) πατέρα Ιδαιον]
πτέριδ.
- (117, 18) βωμός ἔστι]
βωμὸς ἔστι
- p. 392. D (119, 7) Ἄρα οὖν] ἄρα
οὖν
- (119, 8) γιγνομένη] γινο-
μένη
- E (119, 15) ἀπολῦσαι]
ἀπολύσαι
- p. 393. A (119, 20) μάλιστα δύων]
sine commate.
- B (120, 7) παθημάτων.]
παθημάτων :,
(120, 9) ἕγεσεων;] ἕγ-
εσεων :
- D (121, 3) δὲ ἄνευν] δὲ ἄνευν
(Vat. M.)
- E (121, 6) οἱ λύσαι] οἱ
λύσαι, omissio αὐτῶν
ut Par. ADK. Vind. B.
Vat. BM. Ven. C. Ang.
B.
- p. 394. A (121, 18) οἰκοδομήσεσιν]
οἰκοδομήμασιν
(121, 19) τίσαι] Ita.
- B (122, 4) ὅτι ἔστι] Ita.
- C (122, 10) ἡ δ' αὐτὸν] ἡδ'
αὐτὸν
(122, 13) ὅτι ἔφαμεν]
Ita a m. pr.
- D (122, 17) ἥμιν] ἥμιν
- E (123, 7) ἐπιχειροῖ] ἐπι-
χειροῖ (Vind. B. Par.
K. Vat. M.)
- p. 395. A (123, 15) μιμήματα] μί-
μημά τι, e corr. μι-
μήματε
- C (124, 13) ἵνα μὴ ἔν] ἵν'
ἔν, a m. s. addito et
et in m. posito μὴ
- p. 396. D (126, 14) γίγνηται] γί-
γνηται cum litura in i.
- p. 396. D (126, 16) μὴ ἄρα] μη
ἄρα μὴ (μὴ ἄρα μὴ
Ven. C. Par. DK.)
- p. 397. B (128, 1) ἁνθυμῷ] ἁνυ-
θῷ
- C (128, 3) ἐναντίων] ἐναν-
τίον a m. pr.
- (128, 4) ἁνθυμῶν] ἁνυ-
θμῶν
- D (128, 9) πότερον εἰς]
πότερον εἰς
- (128, 11) ἀκράτων] ἀ-
κρατῶν a m. pr. (Ang.
B.)
- (128, 13) κεκραμένος,]
κεκραμένος :
- E (129, 3) Ἀνδραὶ δὴ] ταῦ-
τα περὶ ὁμήρου φησι:
in m. a m. s.
- p. 398. A (129, 10) τε εἰς] τ' ἀν
εἰς (Ang. B. Vat. M.)
- μύρον] μῆρον a m.
pr.
- C (130, 2) περὶ αὐτῶν] τὶς
αὐτῶν
- (130, 3) μέλλομεν] μέλ-
λημεν, a m. s. μέλλοι-
μεν
- (130, 7) ἄττα] ἄττα
- D (130, 13) ὠσαύτως;] ὠ-
σαύτως:
- E (130, 17) ἀρμονίαι;] si-
ne interpunctione.
- p. 399. A (131, 4) χρήσει] Ita.
(Par. DK. sec. Bekk.
Vat. M.)
- B (131, 12) παρτερούντως]
παρτεροῦντος a m. pr.
- E (132, 15) παινὸν] παι-
νὸν
- (132, 17) Μαρσύου] μαρ-
σίου
- p. 400. B (133, 15) δέ γε] δέ με,
ut Bekkerus ostendit.
- C (134, 1) τιστὶν] τισιν

- p. 400. C (134, 3) ἐνθμοὺς αὐτοὺς] ὁ. αὐτοῦ (Vat. BM. Ven. C. Par. DK.) (134, 6) ἡ σὺ] ἡ σὺ (134, 7) τὸ τῆς] τῷ τῆς p. 403. E (140, 12) φύλακος] in m. (140, 14) προσήκουσ] προσήκουσα
- p. 401. A (135, 10) κακοηθείας] κακονοίας (Vat. BM. Par. DK. Ven. C. Vind. B. Ang. B.) B (135, 17. 18) μήτε ἐν ter] μήτ' ἐν (Ang. B. Vat. M.) C (136, 10) ὑγίειαν] ὑγίειαν E (136, 18) δημιουργηθέντων] δημιουργηθῆ (137, 2) κάγαθὸς] καὶ ἀγαθὸς
- p. 402. A (137, 4. 6) λαβεῖν, — τραφεῖς;] λαβεῖν; — τραφεῖς: B (137, 17) θεῶν] θεῶν C (137, 20) ἀνδρείας] ἀνδρίας ἔλευθεροτητος] ἔλευθεροτητος a m. pr.
- D (138, 10) ἐρασμιώτατον.] ἐρασμιώτατον:, (138, 13) εἰ μέντοι τι κατὰ τὸ σῶμα] εἰ μέντοι τι ἔφη κατὰ τὴν ψυχὴν ἐλλείπει κατὰ τὸ σῶμα, quinque mediis linea notatis.
- p. 403. A (139, 1) ἀφροδίσια] ἀφροδίσια οὐδέ γε] : οὐδέ γε (139, 3) ἐρᾶν;] ἐρᾶν: B (139, 8) μὰ Δί'] μαδί C (139, 19) νεανίαι.] νεανίας:, D (140, 2. 3) αὐτοῦ — αὐτῆς] αὐ. — αὐ.
- p. 403. E (140, 12) φύλακος] in m. (140, 14) προσήκουσ] προσήκουσα
- p. 404. B (141, 3) εἰλήσεων] εἰλ. (Ven. C. Par. DK.) (141, 8) παρ' Ὁμήρου] ὡς ἄριστε, ἐάνπερ ἐκ τῆς πολυτίας ἦν δ' ἀνὴρ φηγὰς, ταῦτα οὐκ ἀν εἰδημεν, ἢ πῶς μαθοισόμεθα λιποντος τάνδρος. οὐκ ἔστιν ἄραι τοῦτο βέλτιον, κάπεινα μὲν ἔπεοθαι, ταῦτα δὲ μὴ: in im pagina a m. s.
- C (141, 18) ὁρθῶς γ'] ὁ γε
- D (141, 19) Συρακοσίαν] συρρακονούσιαν (Vind. B. Vat. M.)
- (142, 6) ἐνθμοῖς] ἐνθμοῖς
- E (142, 10) ὑγίειαν;] ὑγίειαν:
- p. 405. B (142, 21) ἐπακτῶ] ἐπάκτω (143, 2) Ἡ] Ἡ
- C (143, 10) ἔνεκα, ἀγνοῶν]. ἔνεκα, καὶ ταῦτα συμφορῶν τε καὶ οὐδὲν ἀγνοῶν, sex mediis linea notatis.
- (143, 14) ἡ τινων] Ita.
- D (143, 19) μάλ', ἔφη] μάλα ἔφη
- p. 406. A (144, 9) πρὸ τοῦ] οἱ προτοῦ
- (144, 10) Ἡρόδικον] τὸν τοῦ ἱππονράτου διδάσκαλον: in m.
- B (144, 17) εἰλαθνίας] εἰλαθνίας

- p. 406. E (145, 16) εἰωθνῖαν] εἰωθεῖαν
 (145, 19) οὐτωὶατριῆ] Ita.
 p. 407. B (146, 9) μὲν οὐλ] Ita,
 non μὲν γὰρ οὐλ (Par.
 ADK. Vat. BHM. Vind.
 B. Amb. C. Ang. B.)
 (146, 11) ὅς, σχεδόν] ὅς σχ. sine interpolatione.
 C (146, 17) ἀεὶ διαστάσεις] Ita:
 (147, 2) ἔχοντας τὰ σώματα] ἔχοντας σώματος
 D (147, 6) εἰωθνῖαν] εἰωθεῖαν a m. pr.
 (147, 10) ἔκγονα αὐτῶν] ἔ. αὐτῶν
 E (147, 12) οὐτε πόλει] οὐτε τῇ πόλει
 p. 408. A (147, 17) Μενέλεῳ] μενέλαῳ (Par. DK.)
 (147, 19) Αἴμῳ] αἷμα
 D (148, 19) μετεχειδίσαντο] μετεχειδίσηντο, a m. s. —σαιντο
 p. 409. C (150, 13) τὰ ἐν αὐτῷ] τὰ ἐν ἑαυτῷ
 D (150, 17) ἡ χρηστοῖς] bis deinceps, sed alterum exemplum linea notatum.
 p. 410. A (151, 9) ἀποκτενοῦσι;] ἀποκτενοῦσι:
 (151, 14) μήν; ἔφη.] μὴν ἔφη:
 B (151, 19) οὐχ ὥσπερ] οὐλ οὐχ ὥσπερ
 D (152, 17) ἔφη. Τί δέ;] ἔφη: τὶς ἐπιταθὲν τοῦ δέοντος, τί δὲ, quatuor mediis linea notatis.
- p. 411. A (153, 2. 3) ψυχή; — ἄγροικος;] Ita, cum signis interrogandi.
 C (153, 18) ἀντὶ θυμοειδοῦς] Super οὗ a m. s. εἰ positum.
 (154, 1) ἵσχων] ἵσχων,
 (154, 2) αὐτὸς αὐτοῦ] αὐτὸς αὐτοῦ
 D (154, 4) εἰ τι οὐλ ἐνῆν] οἵτι οὐλ ἐνῆν a m. pr.
 (154, 5) αὐτοῦ] αὐτῶν (Par. K. Amb. C.)
 (154, 10) ὁ τοιοῦτος] ὁτιοῦτος a m. pr.
 E (154, 12) πάντα] ἄπαντα, non ἄπ.
 (154, 15) δύο ὄντε] δύο ὄντε (Vat. BHM. Ven. C. Par. DK. Vind. B. Ang. B.)
 (154, 18) ἐκεῖνω] Ita a m. s. ἐκεῖνο a m. pr.
 (154, 19) ξυναρμοσθῆτον] συν.
- p. 412. A (155, 1) μετριώτατα] μετριότατα a m. pr.
 (155, 7) σώζεσθαι;] σώζεσθαι:
 B (155, 10) ουνηγέσια] ουνηγεσία
 C (155, 18) γίγνονται;] Alterum γ int. vers.
 (155, 20) φυλακιωτάτους] φιλ.
 D (156, 2) φιλῶν] φιλῶν:, (156, 6) τούναντίον.] τούναντίον:,
 p. 413. A (156, 21) τοὺς ἀνθρώπους] τοὺς om.
 (157, 5) δέξης στερ.] δόξῃ στερ. a m. pr.
 C (157, 14) ηηληθέντες] ηοληθένταις a m. pr.

p. 413. E (158, 10) φύλαξ αὐτοῦ]
φ. αὐ.

p. 414. B (159, 5) οὓς νῦν δὴ] οὓς
δὴ νῦν (Ang. B.)
(159, 6) δόγμασιν] δό-

γμασι

C (159, 12) Φοινικόν]
φοινικόν a m. pr.

D (160, 4) δημιουργούμε-
νη] Ita a m. s. δη-
μιουργούμενοι a m.
pr.

p. 415. B (160, 21) παραγγέλλει]
παραγγέλει a m. pr.

C (161, 5) ὥσονσιν] ὥσ
σονσιν

(161, 8) εἰς ἐπικουρίαν]
εἰς εἰς ἐπ.

D (161, 12) μέντ' ἀν] μὲν
τ' ἀν

νίεῖς] νιοῖς, a m. s.
νιοὶ

(161, 15) κῆδεσθαι·]
κῆδεσθαι:

p. 416. B (162, 14) εἰσὶν, ἀντὶ]
εἰσὶν. οὐδὲ ἀντὶ

(162, 18) εἰσὶν;] εἰσὶν:

C (162, 21) ποτέ ἐστιν]
Ita.

E (163, 16) περιεῖναι] πε-
ριεῖναι

(163, 19) αἰεὶ ἐν] Ita.

(163, 22) τὸ τῶν πολ-
λῶν νόμισμα γέγονε]
τὰ τ. π. νομίσματα
γέγονονε

p. 417. A (164, 3) τὸν αὐτὸν]
αὐτὸν, in m. a m. s.
τῶν (ad αὐτὸν perti-
nens)

B (164, 14) τοὺς φύλακας]
Ita, non τούς τε φ.

L. III.

πλάτωνος πολιτειῶν,
τετάρτη:

p. 419. (165, 3) δι' ἑαυτοὺς] δι'

int. vers. habet.

(165, 6) οὐδὲ μεγάλας]
om.

p. 420. A (166, 4) οὐδὲ ἔταιραις]
οὐδὲ ἔτέροις; quorum
posterior etiam Bekke-
rus ex hoc pariter at-
que ex Ang. B. meo
errore praetermissis re-
tulit.

(166, 5) ἀν ποι] Ita,
non ἀν που

B (166, 12) οὔτως εὐδ.]
οὔτω εὐδ.

E (167, 18) ἀν σοι] ἀν σοὶ

(167, 19) γεωργὸς alte-
rum in m. a m. s. ha-
bet.

p. 421. A (168, 4) οὐδὲ αὐ] οὐδὲ
αὐτὸι interposito a m.
s. γὰρ et littera v et
accentu pronominis cor-
rectis.

(168, 5) εἰ μὲν οὖν ή-
μεῖς μὲν] εἰ οὖν ήμεῖς
μὲν, priore, non, ut
Bekkerus refert, altero
μὲν omisso.

C (168, 17) ἔθνεσιν ή]
ἔθνεσι ή

D (169, 5) γίγνεται;] γί-
νεται:

E (169, 9) διδάσκῃ] διδά-
ξην, e corr. διδάξη

(169, 12) ἀ παντὶ] ἀ-
παντὶ cum litura su-
per i

p. 422. A (169, 17) πρὸς τῷ νεω-
τερισμῷ] ποιοῦντος

ut Par. DK. Flor. U.
quibus perperam ποι-
οῦντος πρὸς τῷ νεω-
τερισμῷ tribui. Bek-
kerus vero perperam
nostro καὶ νεωτερισμὸν
ποιοῦντος tribuit.

p. 422. B (170, 3) ἀρ' οὐ] ἀρα οὐ
C (170, 16) τριπλασίοις
αὐτῶν] τρ. αὐ.
(170, 17) δοκεῖς] δοκεῖ
a m. pr.

p. 423. A (171, 12) ἐν ἐκατέρᾳ]
Ita a m. pr. ἐν ἐκ. a
m. s.
(171, 16) αἰεὶ] αἰεὶ^{τόντης}
οὐτῷ, addito a
m. s. commate
(171, 20) οὐτ' ἐν] οὐτε
ἐν

B (172, 7) αὐξεῖν] αὐξη
D (172, 21) μὴ πολλαῖ.]
μὴ πολλὰς: a m. pr.
E (173, 6. 7) γίγνωνται—
διόφονται] γίγνωνται
— διόφονται a m. pr.

p. 424. A (173, 11) γίγνοιτ'] γί-
γνειτ' a m. pr.
(173, 12) ὁρμῆσῃ εὖ,]
A m. pr. etiam ante
εὖ comma erat.
(173, 14) φύσεις χρη-
σταὶ] φύσει, addito a
m. s. σ., χρ.
παιδείας] παιδίας a
m. pr.

D (174, 15) αὐτῇ] Ita.
E (175, 1) ἔχει;] ἔχει:

p. 425. A (175, 8) ἡ ἐκείνοις] ἡ
κείνοις (Vat. BM. Par.
DK. sec. Bekk.)
(175, 12) σιγάς] σιγῆς,
a m. s. σιγήν

B (175, 18) μείνειε λόγῳ τε

καὶ] μείνειεν ἐν λόγῳ
καὶ

p. 425. C (176, 1) ὅμοιον δν] om.
(176, 4) οὐκ; ἥ δ'] οὐ
— κοῖ δ' (οὐ in fine
versus est.)

D (176, 10) παταστάσεως]
eo compendio scriptum
est, ut παταστάσεως
legi debeat.

(176, 12) τὸ παράπαν]
τοπάμπαν

p. 426. A (177, 3) οὗτοί γε χα-
ριέντως] οὐτοί γε χα-
ριέντος, a m. s. οὐ
τοί γε χαριέντως

(177, 4) ποικιλώτερα]
ποικιλώτερον a m. pr.
(177, 5) καὶ αἰεὶ] καὶ
αἰεὶ

(177, 8) χαρίεν] χάριεν
et in m. a m. s. haec:
ῳσπέρ τινα νῦν Ἑλλη-
να, τάχα καὶ οὐκ ἀ-
γενῆ:

B (177, 13) χαρίεν] χά-
ριεν et in m. a m. s.
haec: οὐτος ἔχη, ὁ
βέλτισθε, πακίνοι δὲ
καὶ μάλα νοσούνταις:
(177, 15) μὲν Σία] με-
δία

D (178, 7) ἀνδρείας] ἀν-
δρίας
(178, 8) ἔφη, πλήν] ἔφη:
πλήν

p. 427. C (179, 15) πατρίῳ] τὸν
ἀπόλωνα φησι, του-
τέστι τὸν ἥληον. in m.
a m. s.

(179, 17) ὁμφαλοῦ] ὁμ-
φαλὸν τῆς γῆς τὰ
πύθεια φησὶ. in m. a
m. s.

(179, 19) οὐτος.] οὐτοι:

- p. 427. E (180, 8) Ἀληθῆ] ἀληθῖ
 (180, 9) οὕτως, καὶ]
 Ita.
 νῦν] ημᾶς, in m. a
 m. s. ὁ
 (180, 10) οὕτως. Ἐλπί-
 ζω] οὕτω: ἐλ.
 (180, 11) ὥδε.] ὥδε:
 (180, 13) τ' ἔστι] τ' ἔστι
 (180, 15) εὐρημένον;]
 εὑρημένον:
- p. 428. A (181, 3) ἐν αὐτῷ] ἐν αὐ-
 τῷ, in m. a m. s. τῷ
 B (181, 9) Δῆλον.] δῆλο-
 νότι:
 C (181, 12) ταύτην, ἀλλὰ
 τευτονική.] ταύτην:
 ἀλλὰ τευτονική.. (li-
 tura post ἡ)
 (181, 15) ἡ τινα ἄλλην]
 ἡ τιν' ἄ. (Ang. B.)
 (181, 16) ἡντινοῦν] ἡν-
 τινοῦν
 (181, 17) γεωργική.]
 γεωργική, a m. sec.
 —κή;
 E (182, 9) Οὐκοῦν, ἔφην]
 o. ἔφη a m. pr.
- p. 429. A (182, 16) ἡν] καὶ, non
 ἡν καὶ
 (182, 20) Ἐμοὶ γοῦν] ἔ-
 μοιγ' οὖν
 . (182, 21) ἀνδρεία] Ita.
 (183, 1) τοιαύτη] τιαύ-
 τη a m. pr.
- B (183, 6) οἴ γε ἄλλοι] οἴ
 γε ἄλλη a m. pr.
 (183, 7) τοιαν] Ita utro-
 bique.
- C (183, 12) ἀνδρείαν κα-
 λεῖς] Ita; et paullo
 post (14) τὴν ἀνδρείαν
- D (184, 1) ἀλονογά] ἀλ-
 λονογά, a m. s. ἀ-
 λονογά
- p. 429. E (184, 9) προθεραπεύ-
 σας.] προθεραπεύσας;
 (184, 10) ἔφη] om. (Par.
 K.)
- p. 430. B (185, 3) ἀνδρίαν] Ita,
 sed corr. in i
 (185, 5) λέγω.] λέγω:
 (185, 8) ἀνδρείαν] ἀν-
 δρίαν
- C (185, 9) ἀνδρείαν εἶναι]
 ἀνδρίαν εῖ.
- D (185, 21) ἔμοιγε] ἔμοι
 γε
- E (186, 4) ἔνυμφωνία] Ita,
 non σ. (Par. AK. sec.
 Bekk. Vat. BM. Vind.
 B. Ven. C. Ang. B.)
 (186, 6) ἔγκρατεια] ἔγ-
 κράτεια a m. pr.
 (186, 7) οὐκ οἶδα] οὐκ
 οἶδ' (Vat. H.)
 (186, 10) αὐτοῦ γελοῖον]
 αὐ. γ. a m. pr.
 (186, 11) καὶ ἡττων] καὶ
 ἡττων a m. pr.
- p. 431. D (187, 18) Ἔγωγ'] ἔγωγε
 (187, 20) ἐπιθυμιῶν]
 ἐπιθυμηῶν
 (187, 21) Παντάπασι]
 παντάπασιν
- E (188, 9) ἡ ἀνδρεία] ἡ
 ἀνδρία
- p. 432. A (188, 14) κρήμασιν ἡ]
 κρήμασι ἡ
- C (189, 6) πη ἔστιν] πη
 ἔστιν
- D (189, 20) ὥσπερ οἱ] οἱ
 μόνον περὶ διαισθί-
 νης τοῦτο ὡς βέλτι-
 σθαι, ἀλλὰ καὶ περὶ
 τοῦ θείου ἀπλὸς ταν-
 τῶ πάσομεν, τὸ ἐν
 ταῖς κερσὶν ἔχοντες
 ξητοῦμεν, ὅποιον τι
 ἔστι. ἀμφιβάλωντες

- τὸ .. (γ' ἀν η?) ἔστι.
in ima pagina a m. s.
- p. 433. A (190, 7) ὁ γὰρ] ὁ γὰρ ὁ
γὰρ cum linea sub
priori.
- (190, 12) εἰς ὁ] εἰς ὁ a
m. pr.
- B (190, 19) λέγ'] λέγε
(190, 21) ἀνδρείας] ἀν-
δρίας
- C (191, 7) ἄττα] ἄττα
(191, 8) ἐννόμον] ἐνό-
μον a m. pr.
- D (191, 15) τῇ ἀνδρείᾳ] τῇ
ἀνδρίᾳ
(191, 17) μάλα, ἔφη] μάλα
ἔφη (Vat. M.)
- E (191, 21) Ἡ] Ita, non Ἡ
- p. 434. A (192, 5) διμολογοῦτο.]
διμολογοῖτο;
(192, 8) τάλληλων] τὰ
ἄλληλων
- B (192, 16) μεταλλαμβάνω-
σι] λαμβάνουσι, a m.
s. —ωσι
- C (193, 1) πόλει ναι] πόλι
ναι
(193, 4) λέγωμεν] λέγο-
μεν a m. pr. (Ven. BC.
Par. K. Amb. C. Ang.
B. Vat. H.)
- (193, 6) τὸ ἔαυτοῦ] τὸ
αὐτοῦ
- D (193, 9) ἔγω, πω] Ita,
non πον (Par. AK.
Vat. BM. Ven. C.
Vind. B.)
- (193, 11) εἶδος τοῦτο]
Ita, non εἰ. τούτων
(Par. A. Vat. BM.
Ven. C. Vind. B. Ang.
B.)
- διπαιοσύνη] cum li-
tura post η
- (193, 15) ἔκεινο] om.
- p. 435. A (194, 1) τάχα ἀν παρ'
ἄλληλα] τάχ' ἀν πα-
ράλληλα
(194, 8) "Ομοιον] om.
a m. pr.
- B (194, 14) ἄλλ' ἄττα] Ita,
non ναὶ οὐ νατ' ἄλλ'
ἄττα, quemadmodum
Bekkerus quoque ostendit.
- C (194, 18) ἀξιοῦσθαι] ὁρ-
θῶς αἴξ. (Vat. BHM.
Ven. C. Vind. B. Par.
K. sec. Bekk. Ang. B.)
- D (195, 10) Ἄρ' οὐν] ἄρ'
οὐν a m. pr.
- E (195, 14) πόλεσι γεγ.]
Ita.
(195, 15) οἶνον οἱ] οἶνον
om.
- p. 436. A (195, 18) ὁ περὶ] τὸ
περὶ, in m. a m. s.
ὁ (τὸ Vat. BHM. Ven.
C. Vind. B. Amb. C.)
- (195, 21) Οὐ δῆτα] οὐ,
a m. s. εὐ, δ'
- C (196, 14) εἰπον] Ita,
sed corr.
- D (197, 1) οὐτω; Οὐτω.]
Ita. (Par. A. Vat. BHM.
Ven. C. Vind. B. Amb.
C. Ang. B.)
- E (197, 12) ἐγκλίνῃ] λ int.
vers. sup.
- (197, 13) οὐδαμῆ ἔστιν]
ἔστιν om.
γε, ἔφη] γ' ἔφη (Ang.
B.)
- p. 437. A (197, 17) ἐμέ γε] Ita a
m. pr. ἐμεγε a m. s.
- B (198, 9) ἀν θείης] ἀν
om. (Par. K.)
- D (198, 18) εἰναι] in m. a
m. pr. habet.

- p. 437. D (198, 22) πλέονος ἀντι-
τος] πλέονος
(199, 1) δίψα ἐστὶ δίψα p. 440. D (204, 15) οὐτοι γε]
ἀρά] δίψα ἐστὶ, δίψα.
ἀρά
- p. 438. A (199, 17) οὐτως. *[Ιεως]*
οὐτως: οὐτως:
B (200, 3) Ἀρ' οὖν] Ἀρ'
οὖν
D (200, 16) Ἀρ' οὐ] Ἀρ',
a m. s. Ἀρ', οὐ
οἶα] οἶοι a m. pr.
(200, 19) φάσι] φᾶσι
- p. 439. A (200, 11) ἐστίν; *[ἔστι]*
ἐστί, καὶ ἐστὶ etc. ut
Bekkerus ea significavit, cum interrogatio-
nis mutataeque perso-
nae signo post τον
(201, 15) οὐδὲ ἔνι] Ita.
B (201, 21) θηρίον] θηρίον
(Par. A. Vat. BM.
Ven. C. Vind. B.)
C (202, 11. 12) κωλύον]
κωλύον
E (202, 21) οὐτως.] Ita.
(203, 5) πιστεύω τούτω] cum signo interrogandi
a m. s. addito.
(203, 6) τεῖχος ἐκτὸς,]
Sic distinguit.
- p. 440. A (203, 15) ἄλλο οὖν] ἄλλο
τὸν, in m. a m. sec.
τῇ οὖν
B (203, 18) τε αὐτὸν] Ita.
(203, 20) τοῦ τοιούτου;]
τ. τοιούτου.
(203, 22) μὴ δεῖν] μῆ
δ.
(204, 1) σεαυτῷ] εαυτῷ
(204, 2) Οὐ μὰ] οὐ, e
corr. οὐ, μὰ
- D (204, 13) παρ' αὐτῷ]
παρ' αὐτῷ
(204, 14) ἔφη, ξοικε τού-
- τῷ] ἔφη: ξοικε τού,
sup. a m. s. τω
p. 441. A (205, 11) τοῦτό γε ἄν]
τ. γ' ἔν (Ang. B.)
(205, 13) δὲ ἔνιοι] δὲ ἔ.
B (205, 14) Δι?] δία
(205, 15) δὲ ἔν] δ' ἔν
(Vat. M.)
(205, 17) Ομήρου] ὁμή-
ρον,
C (206, 4) ὁμολογεῖται]
ώμολόγειται, a m. s.
—ηται
(206, 5) αὐτὰ δ' ἔν] α.
δὲ ἔν
(206, 6) ἵσα] ἵσα
(206, 8) εἰναι;] εἰναι:
(206, 9) καὶ ως] Ita.
D (206, 10) οὐτω, καὶ
τἄλλα] οὐτως. καὶ τ'
ἄλλα
(206, 17) ὅτι καὶ ήμῶν]
καὶ om. (Vat. BM.
Par. K. sec. Bekk.
Vind. B.)
(206, 18) ἐν αὐτῷ] ἐν
αὐτῷ
E (206, 18) δίκαιος τε] δί-
καιός τ', e corr. γ'
(206, 22) προμηθειαν]
προμηθίαν (Vat. BM.
Ven. C. Vind. B. Par.
K.)
(207, 1) τούτου;] τού-
του:
(207, 2) σύμφωνα] ξ.
(Vind. B. Par. K. sec.
Bekk. Ang. B. Vat. M.)
p. 442. A (207, 9) πίμπλασθαι]
πίπλ. a m. pr.

- p. 442. B (207, 13) *καὶ ξύμπαντα]*
καὶ om. (Par. K.)
(207, 16) *ψυχῆς τε καὶ]*
τε om. (Par. K. Vind.
B. Vat. M.)
(207, 18) *ἀνδρείᾳ]* ἀν-
δρίᾳ
C (207, 21) *τοῦ λόγου]*
Ita e corr. τῶν λόγων
fortasse ante corr.
(208, 1) *δέ γε ἐκείνῳ]*
δέ γ' ἐκεῖνο, in m. a
m. s. *κείνῳ*
(208, 2) *ἐν αὐτῷ]* ἐαν-
τῷ, addito a m. s. v
post ε
(208, 4) *ξυμφέροντος]*
συμ.
E (208, 17) *ἀνομοιογεῖ-*
σθαι] ἀνομοιογεῖσθαι,
in m. a m. s. ἀν ὁμο-
λογεῖσθαι
(208, 18) *καὶ τοῦ]* καὶ
τοῖς, in m. a m. sec.
τοῦ

- p. 443. A (209, 1) *δρᾶσαι]* δρά-
σαι
(209, 5) *κατὰ ὄρους]*
κατὰ τὸν δό.
(209, 6) *ἀμέλειαι]* ἀμέ-
λειαι
B (209, 10) *ἄρχεσθαι;*
ἄρχεσθαι:
(209, 11) *ἄλλο. "Ετι τι]*
ἄλλο ἔτι: τι
E (210, 18) *ἢ ἀν]* καὶ ἀν,
in m. a m. s. *ἢ*
p. 444. A (210, 21) *ταῦτη ἀν]* τ.
ἀν
(211, 4) *Φῶμεν ἄρα] φ.*
ἄρα, e corr. *ἄρα*
Φῶμεν] om.
B (211, 10) *δουλεύειν τῷ*
τοῦ] δουλεύειν. (e
corr. :,) τῷ δ' αὐ

- δουλεύειν cum linea
sub altero δουλεύειν
ante corr.
p. 444. B (211, 14) *Ταῦτὰ μὲν*
οὖν ταῦτα] ταῦτα
μὲν αὐ, e corr. οὖν,
ταῦτη
C (211, 21) *νόσον.] νόσον:*
D (212, 3) *τὰ ἐν τῷ]* τὰ
ἐν om.
(212, 5, 9) *ὑπ' ἄλλου. —*
ὑπ' ἄλλου;] ὑπ' ἄλ-
λου: utrobique, e corr.
ὑπ' ἄλλου;
E (212, 12) *οὕτως.] οὕτω:*
p. 445. D (214, 1) *διεληλύθαμεν]*
διελύθαμεν a m. pr.
(214, 2) *εἴη ἀν]* εἴη ἀν
ante corr.
(214, 6) *οὕτε εἰς]* οὕτοις
εἰς
L. V.
p. 449. B (216, 3) *Σὲ]* σὺ, in m.
a m. pr. σὲ, M.
C (216, 3) *"Ετι]* habet
etiam M.
D (216, 18) *τό σε]* πη σὲ
M. (,,πη σὲ Mon. B.“)
Bekkerus.)
p. 450. A (216, 19) *τἄλλα]* τἄλλα
V. M. (,,τάλλα“)
(217, 2) *τίθετε]* τίθε-
ται V. (Vat. M.)
ταῦτα] ταῦτα V. ut
Par. A. Vat. M. (,,ταῦ-
τα“)
(217, 4) *ὅσον]* ὅς V.
(Vat. M. et a m. pr.
B.)
(217, 7) *ὑμεῖς]* ημεῖς
V.
C (218, 1) *εῦδαιμον]* εὐ-

- δαλμων M. (Ven. C. Par. DK. sec. Bekk.) p. 455. C (227, 1) ἄλλα ἄπτα] ἄλλατα V. (ἄλλ' ἄπτα Ang. B.)
- p. 450. D (218, 8) ἀκονσόμενοι] Ita M. a m. pr. (,,ἀκούσομέν σου Mon. B.“) (227, 3) ὑπὸ] ὑπ’ V. (Vat. M.)
- (218, 10) πιστεύοντος μὲν] μὲν om. M. (Ven. B. a m. pr. Par. DK.) D (227, 12) δῖλον] δῖλον ξλον̄ M. quod significans Bekkerus de correctione tacet.
- p. 451. A (218, 17) οὐ μόνον αὐτὸς, ἄλλὰ] om. V. quod Bekkerus ostendens de litura facit.
- (218, 18) ἔννεπισπασάμενος] συν. V. (219, 2) τοῦτο] τοῦτ' V. (Vat. M.)
- C (219, 11) ἔχοι] ἔχει M. D (220, 2) φυλάττωσι] φυλάττουσι M. (Par. D.) (220, 6) Κοινῆ] κοινὴ M.
- p. 452. A (220, 15) γελοῖα] γέλοια M. (Vat. B. Ven. C. Par. D.)
- B (221, 3) γελοῖον] γέλοιον M. (221, 5) καὶ οἷα] om. M. (221, 6) εἰς] ἐσ M. corr. D (221, 15) Λακεδαιμόνιοι] λακεδαιμονίοις V. (Vat. M.)
- (221, 16) πάντα ταῦτα] τ. π. M. (,,π. τ.“)
- p. 453. D (223, 15) Δία] δι' V. (Ang. B. Vat. M.)
- (223, 20) τιν'] τινα V. quem margini eadem, quae Vat. M. adscripta habere Bekkerus non ostendit.
- (224, 1) ἄπορον] ἄπειρον V.
- p. 455. B (226, 16) ὁ μὲν] om. M. a m. pr. (Par. DK.) E (227, 18) προστάξομεν] προστάξωμεν V. sed ab eadem manu—ομεν (,, προστάξωμεν pr Vind. B.“)
- (227, 19) Ἀλλ'] ἀλλ' V. (Vat. M.)
- p. 456. A (228, 8) ἀσθενεστέρα ἡ ισχυροτέρα] ἀσθενεστέρα ἡ ισχυρότερα V. (Vat. BM. Ven. C.)
- B (228, 12) Τὰ δ'] τὰ δὲ M.
- C (228, 17) οὐδὲ] οὐδ' V. (Ang. B.)
- (228, 20) ἦν] om. V. (Vat. BM. Par. K.)
- (229, 5) παιδεία] παιδία V.
- D (229, 7) τοιοῦδε] τοιούτον V. (Vat. M.)
- (229, 9) ὁμοίους] ὁμοίως V. (Vat. M.)
- E (229, 16) βέλτισται] βέλτιστοι V.
- p. 457. B (230, 9) γελᾶ] γελῶ ut videtur, a m. pr. V. (Ven. C. Vat. M. et a m. pr. B.)
- (230, 14) πέρι] Ita M. (Par. A. Vat. B. Ven. BC.)
- C (230, 18) μάλα] μάλι V. (Vat. M.)

- p. 457. C (230, 21) ἡν] ὁ, in m.
a m. s. ἡν, M.
- E (231, 13) σύστασιν] Ita
V. M. non ἔ. quod Bek-
kerus tacito reliquit.
- p. 458. A (232, 2) καὶ μὴ] μὴ in
V. a m. s. deletum.
ὑπάρχον] ὑπάρχον V.
a m. pr.
- C (232, 16) τὸν δὲ] τὸν
δ' V. (Ang. B. Vat.
M.)
- (232, 17) μιμονμένους]
Ita M. a m. pr. μὴ πει-
θομένους a m. s. (,,μὴ
πειθομένους Mon.B.“)
- D (233, 6) δριμύτεραι] δρι-
μύτερα V. (Vat. M.)
- p. 459. A (233, 16) οἰκία] In V.
litura est inter ο and ι
(233, 18) τε] om. V.
(Vat. B.)
παιδοποιίαις] παιδο-
ποιία M. (,,παιδο-
ποιίαι Ven. C. Par.
DK. Mon. B. Ang. B.
Vat. H.“)
- B (234, 4) χείρον] χείρων
V. (Vat. M.)
- (234, 7) ἥ] ἥ V.
- C (234, 12) λατρὸν] λα-
τρῶν V. a m. pr. (Vat.
M.)
- (234, 18) ηὐδυνεύει] ηὐδυνεύειν V. (Vat.
M.)
- D (235, 3) συγγίγνεσθαι]
γίγνεσθαι V. (,,γίνε-
σθαι Vat. BM. Vind.
B.“) συγγίν. M.
- p. 460. A (235, 14) πολέμους] πο-
λεμίους V. (,,πολέ-
μους“)
- B (236, 1) ἀφθονεστέρα]
ἀφθονέστερα V.
- p. 460. B (236, 7) οὐτὶ ἀρχαὶ]
γνωστῶν idque pun-
ctis circumscripum V.
(,,γνωστῶν“)
- C (236, 9) τινι] τινι M.
ante corr.
- D (237, 1) προθυμούμε-
θα] προμηθούμεθα
M. (Vat. BM. Ven. C.
Par. DK.)
- E (237, 2) ξυνδοκεῖ] ξυν-
δοκῆ M. a m. pr.
- (237, 8) πεντεκαιπεντη-
κονταέτονς] πέντε οὐαὶ
πεντηκοστοῦ ἔτονς M.
(,, πέντεκαιπεντηκο-
στοῦ ἔτονς“) πέντε
οὐαὶ πεντηκονταέτονς
V.
- p. 461. C (238, 8) γ'] γε V.
(238, 9) κύημα] Ita M.
corr. γρ κύημα in m.
- D (238, 17) νιεῖς] νιοὺς
V. (Vat. M.)
- E (239, 3) οληρός] οληρῶν
V. (Vat. M.)
- p. 462. A (239, 16) αὐτὴν] αὐτὴ
V. a m. pr. (Vat. M.)
- B (239, 18) ποιῆ] Ita M.
(Vat. BM. Ven. B.
Ang. B. Par. K. et a
m. s. A.)
- C (240, 9) ταῦτά] ταῦτα
V.
- D (240, 14) πᾶσα] post
ἄμα M.
- (240, 16) ἀλγεῖ] ἀλγῆ
M. a m. pr.
- E (241, 2) ξυνησθήσεται]
συν. V.
- (241, 5) μάλιστ'] μά-
λιστα V.
- p. 463. A (241, 13) τοῦτο] τοῦτ'
V. (Vat. M.)
- B (241, 18) ἔφη] post Ξυ-

- νάρχοντας* V. (,, om.
Vat. B. Vind. B.) p. 466. E (248, 12) ἀδροὶ] ἀδροὶ
V.
- p. 463. C (242, 2) ὅστις] ὁ τις,
sup. σ a m. s. super
τ, M. (ὁ τις Vat. H.) p. 467. A (248, 16) τὰς τέχνας]
τῆς τέχνης V. (Vat.
M.)
- D (242, 14) πράττοντος]
πράττοντας M. ante
corr.
- E (243, 1) δ] ḡ, in m. a
m. s. δ, M.
- p. 464. A (243, 7) τούτου] τούτω
M. ante corr.
- (243, 8) Ἄρ] ἄρ M.
- B (243, 13) μέρος] τὸ μ.
V. (Vat. M.)
- λύτης] λύπας M. ante
corr.
- (243, 14) πέρι] περὶ V.
- (243, 17) μάλ] μάλα V.
- (243, 18) ὠμολογοῦμεν]
ὅμολογοῦμεν, quod
Bekkerus ex Ven. B.
Ang. B. Vat. H. rece-
pit, etiam M. corr. ex-
hibet.
- C (244, 6) ἐτέραν] Ita V.
sed sup. ante corr. αἱ
(ἐταίραν Vat. M.)
- E (244, 19) ἐπιμελεῖα] ἐπι-
μελεῖας M. (Par. DK.)
- (244, 20) ἔφη] ἔ...ι,
ante corr. ἔχει, V.
- p. 465. A (245, 7) δ] δὲ V.
(245, 8) τῷ] τῷ M.
(Ang. B.)
- C (245, 18) παιδοτροφίᾳ]
παιδοτρόφῳ V. (Vat.
BM. Ven. C. Par. DK.)
- p. 466. A (246, 20) σκεψόμεθα]
ἐπισκεψόμεθα V. (Vat.
M.)
- B (247, 13) πέρι ὀρμήσει]
περὶ ὀρμήσει V.
- E (248, 11) εἰς] ἐκ, e corr.
ἐσ, M.
- p. 466. E (248, 12) ἀδροὶ]
ἀδροὶ
- B (249, 6) μὲν] μὲ M. a
m. pr.
- (249, 8) εἰ] ḡ, sub. a
m. s. εἰ, M.
- C (249, 14) δ'] δὲ M.
καὶ] ... καὶ V. (η καὶ
Vat. M.)
- D (249, 18) ἄξονσιν] ἔξον-
σιν V. (Vat. M.)
- E (250, 11) δέη] δέοι, sup.
η, V. (,, δέοι“)
- p. 468. A (250, 14) αὐτοὺς] Ita
et V. (Mon. B.)
- (250, 17) ἄρα] ἄρ M.
(Vat. M.)
- (250, 19) εἰς] ἐσ M.
corr.
- B (251, 9) στρατείας] στρα-
τίας M.
- E (252, 5) πλείους] πλεί-
ους V. (Par. K. Vat.
M.)
- p. 469. A (252, 18) δαιμόνων] εὐ-
δαιμόνων V. (Vat.
HM.)
- B (252, 20) ἀν] om. V.
- C (253, 9) οὖν] om. V.
(Ven. B. Par. K. Vat.
HM.)
- (253, 11) νικήσωσιν] νι-
κήσουσιν M.
- D (253, 15) ἀπώλετο] ἀπώ-
λητο M.
- p. 470. B (254, 19) τῇ] in m. M.
a m. s. ut videtur.
- (254, 20) γ'] γε V.
- C (255, 7) δ'] δὲ V.
- D (255, 10) οὗτω] ἔντω M.
(255, 13) ἀλιτηριώδης]
ἀλ. V.

p. 470. E (255, 18) *Πολὺ*] *πολλὴ*,
in m. a m. s. *λὺ*, M.
(256, 2) *ῶνπερ*] *ῶσπερ*
V.

p. 471. A (256, 11) *αὐτοῖς*] Ita
M.

C (257, 8) *πάντ*] *πάντα*
V.

(257, 9) *ἢ γένοιτο*] punctis notata habet M.

p. 472. A (258, 3) *οὐκ οἶσθαι*] *οὐκοῦ*, in m. vulg. a m. s. M.
(258, 4) *μοι*] punct. not. M.

ἐμφυγόντι] *ἔφυγον. τι*
M. (Par. DK.)

(258, 6) *πάντη συγγνώμην*] *πανηγυγνώμην*, in m. a m. s. *σν*, M.

(258, 8) *λέγειν λόγον*] *λέγειν λέγειν*, e corr. *λόγον λέγειν*, M. (,λέγειν λόγον“)

(258, 9) *λέγης*] *λέγεις*
V. M.

B (258, 14) *ἀδιπίαν*] *ἀδιπία* M. (Vat. B. Ven. C. Par. D.)

C (258, 19) *μετέχη*] *μετέχοι* V.

D (259, 7) *ἴν*] *ἴνα* V.
(259, 13) *ἔγωγ*] *ἔγωγε*
V.

E (259, 18) *οὐτω*] Ita V.
M. non *οὐτως*.

(259, 21) *διομολόγησαι*] *διομολογῆσαι* V. (Vat. M.) *διαλόγησαι* M.
corr. (in m. vulg. a m. pr.)

p. 473. A (260, 1) *ἔχει*] Ita V.
sed corr. in *χει*

C (260, 20) *εἰμι*] *εἰμὶ* M.
a m. pr.

p. 473. C (261, 1) *μέλλει*] *μέλλοι*
etiam M. (Vind. B.)

D (261, 5) *φιλοσοφήσωσι*] *φιλοσοφήσουσι* M.

(261, 11) *μή ποτε*] *φυητὲ* V. (,,φυητη τε Vind. B. Vat. M.“)

E (261, 12) *ἴδη*] *ἴδοι* V.
(Vat. M.)

p. 474. A (261, 20) *διατεταμένους*] *διατεταμμένως*, deleto

a m. s. priori *μ*, M.
(,,διατεταγμένως“)

(261, 21) *ἄμυνεῖ*] *άμυνη* V. (Par. DK. sec. Bekk. et a m. s. A. Mon. B. Vat. M.)

B (262, 7) *μέλλομέν*] *μέλλει* vel *μέλλη μή*, a m. sec. *μέλλοιμί*, M. (,,μέλλοιμί“)

(262, 10) *γενομένων*] *γινομένων* V. (Vat. BM.)

(262, 11) *φύσει*] *ομ.*
V. (Ven. B. Vat. M.)

C (262, 12) *τ*] *τε* V.

D (262, 20) *ἔννοῶ*] *ἔνοῶ*
M. a m. pr.

(263, 6) *δη*] *ομ.* V.
(Ven. B. Par. K. Mon. B. Vat. M.)

p. 475. A (263, 19) *τριτυαρχοῦσι*] Ita M. sed in m. a m. pr. *τριτυαρχοῦσι*

E (265, 8) *γ*] *γε* V.

p. 476. A (265, 16) *πανταχοῦ*] *πολλαχοῦ* V. (Vat. M.)

B (266, 6) *αὐτὸ*] *ἔαντὸ*
V. M. (Ang. B. Vat. M.)

C (266, 11) *ἔάν τ*] *ἔάν τε*
V.

(266, 12) *τῷ*] *τὸ* M.
(,,τὸ pr. Mon. B.“)

- p. 476. C (266, 12) ἡγῆται] ἡγεῖ-
ται V.
(266, 14) δέ;] δέ V.
D (266, 18) μάλα] μάλ
V. (Ang. B. Vat. M.)
(266, 19) γιγνώσκοντος]
γιγνώσκοντες V. (Vat.
M.)
- p. 477. A (267, 13) Ἰνανότατα] Ἰνανότατα M.
(267, 16) δέ] δέ V.
B (267, 18) τε]. om. V.
(267, 19) τοιοῦτον] τοι-
οῦτος, e corr. τοιοῦ-
το, M. (τοιοῦτο Vind.
B. Vat. BM.)
D (268, 15) δέ εἰς] δέ εἰς
V.
(268, 18) δέ ἐπι] δέ ἐπι
V. (Vat. HM.)
(269, 1) Εἰς] εἰ V. (Vat.
M.)
- E (269, 2) οἴσομεν] θήσο-
μεν V. (Vat. M.)
- p. 478. B (269, 20) τό γε] τὸ M.
(Vat. BM. Ven. C.
Vind. B. Par. DK.
Ang. B.)
τι] om. M.
(270, 2) γέ] τέ M.
C (270, 9) Οὐδέτερα] Ita
M. (Par. A. Ven. B.
Vind. B. Ang. B. Vat.
HM.)
(270, 12) δέ] δέ V.
D (270, 17) οὐτε — οὐτε]
οὐτέ — οὐτέ V. (Vat.
M.)
(270, 19) δέ] ἦ M. a m.
pr. ἦν a m. s. (, ἦν“)
E (271, 3) ἵνα] ἵν’ V.
(Vat. M.)
(271, 4) προσαγορεύω-
μεν] προσαγορεύομεν
V.
- p. 478. E (271, 5) ἦ] ἦ V.
p. 479. A (271, 8) ἡγεῖται] ἡγῆ-
ται M. (Ven. B.)
ταῦτε] ταῦτα V.
(271, 9) ὠσαύτως] om.
V.
B (272, 1) ἔστιάσεσιν] ἔστ.
M.
C (272, 4) καὶ ἐφ' οὗ] φάν-
τες M. (,, καὶ φάντες“)
(272, 5) ἐπαμφοτερί-
ζειν] ἐπαμφοτερίζειν
M.
(272, 7) οὐτε] οὐτέ V.
(Vat. M.)
(272, 8) ὅποι] ὅπου M.
(Par. DK.)
D (272, 15) ὄντος εἰλικρι-
νῶς. Εὐρήκαμεν.] Ita
interpongit M.
E (273, 2) Τί δέ] Ita V.
M. non τί δέ
- p. 480. (273, 11) παλοῦντες]
post αύτοὺς V. (Vat.
BM.)
- L. VI.
- p. 484. A (274, 5) δοκεῖ] δοκοῖ
V. (Vat. BM. et a m.
s. Ven. B.)
B (274, 10) οἱ] εἰ V. a
m. pr. (Vat. M.)
(274, 11) οὐ] οἱ V. a
m. pr. (Vat. BM.)
(275, 2) τε] om. V. (Vat.
H. et a m. pr. Ven.
B.)
C (275, 4) φύλακα] Ita V.
M. non τὸν φ. (Par.
ADK. Vat. BHM. Ven.
C. Ang. B.)
(275, 5) Ἡ] ἦ V. (Vat.
HM.)

- p. 484. C (275, 5) οὐν] οὐν οὐ M.
 (,,οὐν οὐ Mon. B.“)
 (275, 8) γραφῆς] Ita V.
 non γραφεῖς (Par.
 ADK. sec. Bekk. Vat.
 BHM. Ven. BC.)
 D (275, 13) ἀτα] δι' V.
 (Vat. HM.)
 (275, 16) μηδενὶ] μηδαι
 M. a m. pr.
- p. 485. B (276, 8) καὶ ὅτι] καὶ
 om. M. (Vat. BM.
 Vind. B.)
 C (276, 17) φίλε] φίλος
 V. (Vat. M.)
- p. 486. A (277, 16) μέλλης] In M.
 s a m. s. expressum
 est. (μέλλῃ Par. D.)
 C (278, 14) τι] om. V.
 (Vat. B. Ven. C. Par.
 DK. Món. B.)
 (278, 17) πλέως] πλέος
 M. a m. pr.
 (278, 18) δὴ pro δὲ
 etiam V. (Par. A. Vat.
 BHM. Ven. B. Ang.
 B.)
 ἀναγκασθήσεται] ἀ-
 ναγκασθήσεσθαι M.
 (Vat. BM. Vind. B.
 Par. K.)
- p. 487. A (279, 14) ἵκενῶς] ἵκε-
 νὸς V. (Vat. M.)
 C (280, 8) ἀποκλείονται]
 ἀποκλείονται M.
 (280, 9) τελευτῶντες]
 Ita V. (,,τελευτῶν-
 τες“)
 (280, 12) δὲ εἰς] δὲ εἰς
 V. δὲ εἰς M. a m. pr.
 (280, 13) τις σοι] τισοι
 M. a m. pr.
 (280, 15) πεπαιδεῦσθαι]
 Ita etiam M. de quo
- uno Bekkerus nihil si-
 gnificavit.
- p. 487. E (281, 8) δέ γε] δ' V.
 (,,γε om. Vat. BM.
 Vind. B.“)
- p. 488. A (281, 13) ὕστε] ὕστε V.
 C (282, 13) πλεῖν ως] πλεῖον
 ως V. (Vat. BM. Ven.
 BC. Mon. B.)
 D (282, 16) ἔνλλαμβάνειν]
 συλλ. V.
- p. 489. A (283, 8) μάλα] μάλ' M.
 (Ang. B.)
 C (284, 7) νεύταις] ν —
 int. vers. a m. s. M.
 (284, 11) βέλτιστον] μέ-
 γιστον V. (Vat. M.)
 D (284, 13) φιλοσοφίᾳ] Ita
 etiam M. (Par. ADK.
 sec. Bekk. Ven. C.
 Vat. H.)
 (284, 16) δὲ] δ' V.
- p. 490. A (285, 9) αὐτοῦ] αὐτὸν
 V. (Vat. M.)
 (285, 11) πεφυκώς] πε-
 φυκός V. M. a m. pr.
 uterque
 ὄντως] οὔτως M. οὔ-
 τω V. (,,οὔτως Vind.
 B. Par. DK. Vat. M.“)
- C (286, 1) ποτε] ποτ' V.
 (Vat. M.)
 (286, 7) ἀνδρία] ἀνδρεία
 V.
- p. 492. A (288, 15) μὲν] μὴ pun-
 ctis circumscripsum V.
 (,,μὴ“)
 (288, 19) αὐτῇ βοηθή-
 σας θεῶν] θ. αὐτῷ
 β. V. (,,θ. αὐτῇ β.
 Vind. B. Vat. M.“)
- B (289, 7) ἔνλλογον] σύλλ.
 V. M.
- E (290, 7) γίγνεται οὕτε

- γέγονεν] γέγονεν οὐτε μενοι M. corr. (,,γενό-
γίγνεται M. μενοι“)
- p. 492. E (290, 7) οὐδὲ] οὐδ’ V. p. 496. D (297, 14) τειχίον] τοι-
p. 493. C (291, 9) χαίροι] Ita V. χίον M.
- sed corr. in οι (χαίρει
Ven. B. Par. K. Vat.
HM.)
- (291, 15) "Εμοιγ'] ἔμοιγε p. 497. A (298, 5) ἔτ'] ἔτι V.
V.
- D (291, 18) σοφίαν] σο- C (298, 19) ἔγνωσ] ἔγνω
φίας M. M. a m. pr.
- εῖτ' ἐν μουσικῇ] εῖτ'
ἔμουσ. M. D (299, 5) ὑμεῖς] ἡμεῖς
V. et ante corr. M.
- p. 494. A (292, 9) γ'] γε V. E (299, 12) διακωλύσει]
B (292, 20) ἐν ἀπασιν] πωλύσει M.
- punctis ab antecedentib- (299, 17) καὶ] punctis
tibus et a sequentibus not. M.
- distinguit M.
- (292, 21) φνῆ] φνῆ C (300, 14) βιώσεσθαι]
προσφνῆ cum linea sub βιώσασθαι M. ante
altero M. corr.
- D (293, 12) αντὸν] ἔαν- (300, 18) ἀντιτείνειν]
τὸν M. Huic M. in m. a m. s.
Dν praeponit.
- p. 495. A (294, 8) κακῇ] post τρο- (300, 21) Θρασύμαχον]
φῇ M. ἀρξαμένους addit M.
- (294, 13) διαφθορὰ] punctis notatum. (Vat.
φθορὰ M. B. Ven. C. Vind. B.
Par. D.)
- B (294, 20) μὲν] om. M. D (301, 2) πείσωμεν] πεί-
(Vat. BM. Ven. C. σομεν V.
Vind. B. Par. DK. sec. ἄλλους] om. V. (Vat.
Bekk.) M.)
- D (295, 11) τὴν] om. V. (301, 3) ποιήσωμεν]
(Vat. H.) ποιήσομεν V.
- (295, 12) τέχνιον] Ita (301, 4) γ'] γε V.
- V. M. non τεχνίον
- (295, 13) πρός γε] πρός p. 499. A (301, 16) ἔνντεταμένως]
τε V. (Vat. M.) ἔνντεταγμένως V. (Vat.
βανανσίας] M.) ἔνντεταμμένως M.
βανασίας V. ante corr.
- p. 496. A (296, 10) Πάνσμικον] C (302, 10) δὲ] δ' M.
Ita etiam M. (Par. AD. (302, 14) ἄκροις] ἄκροις
Vat. BM. Ven. C. V. Vind. B.)
- C (297, 3) γενόμενοι] γενό-
- D (303, 2) ὅτι] habet etiam M. de quo uno Bek-
kerus tacet.

- p. 499. E (303, 4) ἔξουσιν] ἔχου-
σιν V. (Ven. B.)
- p. 500. D (304, 13) μελετῆσαι] με-
λέτοσαι M.
- (304, 17) δημοτικῆς] δη-
μωτικῆς M.
- E (305, 2) ἡ̄] ἡ̄ν M.
- p. 501. A (305, 6) οἰσθ̄] οἰσθα V.
B (305, 12) ἔκατέρωσε] Ita M. ut Ang. B.
(,,ἔκατέρωσ“)
(305, 14) αὐ̄, ὁ̄] αὐ̄τὸ̄
V. αὐ̄τὸ̄, in m. a m.
s. ὁ̄, M. (,,αὐ̄τὸ̄ Par.
AD. Vat. BH. Ven.
C. Vind. B. Ang. B.
αὐ̄τὸ̄ Par. K. Vat. M.
αὐ̄τὸ̄ Ven. B. Mon. B.“)
C (305, 20) ἔώς] ὠ̄ς V.
(Vat. BM.)
ἀν ante ὅτι omittit
etiam V. (Par. A. Vat.
BHM. Ven. BC. Ang.
B.)
- (306, 2) διατεταμένονς]
διατεταμένονς ante
corr. M. (,,διατεταμέ-
νονς“)
(306, 3) ἐπηγνοῦμεν] ἐπο-
νοῦμεν cum αι super
πο M. (,,ἐπαινοῦμεν“)
- p. 502. A (307, 2) τις] τις V. M.
(307, 6) τις] τις V.
(307, 7) ἔνγγιαροῦμεν]
συγ. M.
δὲ̄] δ̄ V. (Vat. HM.)
- B (307, 10) γενόμενος] om.
M. (,,γενόμενος Mon.
B.“)
πάντ̄] πάντα V.
(307, 15) καὶ̄] Ita M. a
m. pr. ἀν a m. s.
- (307, 16) τι] τ V. (τε̄
Par. DK. Mon. B.)
- D (308, 9) δυσχέρειαν] ante
- τῆς πτήσεως V. (Vat.
BM.)
- p. 502. E (308, 13) τε̄] om. M.
(Vat. BM. Ven. C.
Vind. B. Par. DK.)
- p. 503. A (309, 1) τοιαῦτ̄] τοιαῦ-
τα V.
B (309, 4) μέμνημαι] μέ-
μνησαι, sup. a m. s.
μ, M.
”Ονος] Ita M. a m.
pr. ὄκνονν, in m. ὡ̄,
a m. s. (,,ὄκνος“)
C (309, 14) οῖοι] οῖονς
ut videtur, a m. pr.
M. (Par. DK.)
- D (310, 1) καὶ̄ χάσμης] καὶ̄
om. M. a m. pr.
- p. 504. A (310, 18) ḥ H] ḥ V.
B (310, 20) πάλλιστα] μάλ-
λιστα, in m. a m. s.
κ, M.
ἀλλη] Ita M. a m. pr.
ἀλλὰ a m. s. (,,ἀλλὰ
Mon. B.“)
C (311, 8) ὁτιοῦν] Ita M.
sed corr. in ε̄
(311, 11) μάλ̄] μάλα
V.
(311, 13) φύλακι] Ita
M. (,,φυλακή“)
E (312, 4) μάλα] μάλ̄ V.
(Ang. B.)
- (312, 5) μέγιστον] μά-
γιστον V.
- p. 505. C (313, 12) πλάνης] in m.
a m. s. M.
- D (313, 15) ταῦτά] ταῦτα
V.
(313, 18) καὶ̄ καλὰ] καὶ̄
int.vers. a m. s. habet M.
- p. 506. A (314, 9) γ̄] γε V.
(314, 11) ἔαντων] ἔαν-
τῶ V. ut Ang. B. Vat.
M. (,,ἔαντῶν“)

- p. 506. B (314, 17) φῆς] φῆς M. (314, 21) ἔφη] om. V. (Vat. M.)

C (315, 5) Τί] τὲ V.

D (315, 15) ἡν δ' ἐγώ] ἡν δὲ ἀν, in m. a m. s. ἐγώ, M. (,, ἡν δ' ἐγώ ἀν“)

p. 507. A (316, 10) γ'] om. M. ut Par. DK. (,, δ“) τά τε] τέ τ' V. (τά τ' Ang. B. Vat. HM.)

B (316, 17) προσαγόρευομεν] προσαγόρευόμενον M. (Par. DK. sec. Bekk.)

D (317, 14) αὐτῇ] αὐτοῖς, a m. s.—ῆ, M. (,, αὐτοῖς“)

E (317, 18) ἔφη] om. V. (Vat. BM.)

p. 508. C (318, 17) καὶ τὰ δρῶμενα] πρός τε ὅψιν, sup. a m. s. καὶ τὰ βλέπεται super hoc δρῶμενα, V.

(318, 19) οἶσθ'] οἶσθα V.

(319, 2) γ'] γε M.

E (319, 14) διανοού] διὰ νοού M. (,, διὰ νοῦ“)

p. 509. A (319, 19) ταῦτ'] ταῦτα V.

C (320, 20) δὲ] δ' V. (Vat. BM.)

D (321, 8) γένους] γένος V. (Mon. B.)

(321, 9) ἀσαφείᾳ] ἀσαφίᾳ M. (,, ἀσαφειᾳ“)

p. 510. A (321, 19) Ἔγωγ'] ἔγωγε V.

- C (322, 15) φανερῶν] φανερόν V. (Ang. B. Vat. HM.)

p. 511. C (324, 10) οἱ θεῶμενοι οἰόμενοι a m. pr. M.

D (324, 18) λαβὲ] λάβε V. M.

L. VII.

p. 514. B. C (326, 11. 327, 2) τειχίον] τοιχίον M.

p. 515. A (327, 6) τῶν] in m. a m. s. habet M. (327, 7) Ὁμοίους] ὁμούς M. (Par. D.)

B (327, 15) ταῦται] ταῦτα V. (ταῦτα Par. A. Vat. H.)

C (328, 2) εἰ φύσει τοιάδε ξυμβαίνοι] φύσει τοιάδε εἰ ξυμβαίνει M. (,, φύσει τοιάδε ξυμβαίνει εἰ“)

D (328, 7) αὐτὸν εἰπεῖν] εἰ. αὐτ., sup. β α, V. (328, 10) καὶ δὴ καὶ] καὶ δὴ V. (Vat. H.)

(328, 11) ἀναγνάξοι] ἀναγνάξει, sup. οι, V. (ἀναγνάξει Mon. B.)

E (328, 18) Εἰ δ'] εἰ δε V.

p. 516. A (329, 5) καθορῷ] καθορῶι vel —ῶν a m. pr. M. (,, καθορώῃ“)

C (329, 21) ἔαντὸν] αὐτὸν V. (Ang. B. Vat. H.)

(330, 1) τοὺς δ'] τοὺς δὲ V.

D (330, 10) παρ' ἀλήρῳ] παρακλήρῳ V. (Vat. M.)

p. 517. A (330, 21) γέλωτ'] γέλωτα M.

B (331, 12) τῆς γ'] τῆς σ', e corr. τῆς, M.

- p. 517. D (332, 7) τὰ ἀνθρώπεια] τάνθρωπειά V. (Ang. B.)
- p. 518. A (332, 18) ταῦτα δὲ ταῦτα] Ita V. corr. ταῦτα δὲ ταῦτα ante corr. ut Vat. BH. Ven. C. (,, ταῦτα δὲ ταῦτα Vind. B.“)
- (332, 20) ἀν ἀλογίστως] ἀναλογίστως V.
- B (333, 2) εὐδαιμονίσειεν] εὐδαιμονήσειεν V. (Venet. B. Vat. H.)
- (333, 7) ταῦτα] ταῦτα V. (Vat. H.)
- p. 519. B (335, 2) γ?] γε V.
- C (335, 12) ἀφιέσθαι] Ita V. sed initio corr. (ἀφιέσθαι Par. DK. Mon. B.)
- p. 520. B (336, 18) ἐκτίνειν] ἐκτείνειν V.
- τῷ] τῷ ante corr. V. M.
- (336, 19) ἡμῖν] ημῖν V. (Ven. B.)
- C (337, 4) ὕψεσθε] ὕψεσθαι ut videtur, ante corr. V. (Vat. H.)
- (337, 6) καλῶν τε] καὶ γε M.
- (337, 7) οὗτος ὅ.] οὗτος ὅ. V. M.
- D (337, 11) ὥδ?] ὥδε V.
- (337, 18) δίκαια] —α int. vers. a m. s. V.
- p. 521. A (338, 7) λασιν] λασιν V.
- B (338, 12) Δία] δί' V. (Vat. HM.)
- D (339, 9) ἐννοῶ] ἐνοῶ a m. pr. M.
- (339, 14, 15) Γυμναστικῆ — μουσικῆ] γυμναστική — μουσική V.
- p. 522. A (339, 20) ἐκείνη] ἐκεῖ a m. pr. M.
- (340, 4) τῶν λόγων] τῶν λόγω a m. pr. M.
- C (340, 18) ἐν πεφαλαῖφ] Ita V. ut Par. ADK. Vat. BHM. Ven. C. Mon. B. Ang. B. (,, ὡς ἐν π.“)
- E (341, 14) δ' εἰ] εἰ V. (Par. DK. Vat. H.)
- p. 523. A (341, 18) δ?] δὲ V.
- (342, 3) Δείκνυ] δείκνυ M. (δείκνυε Ang. B.)
- B (342, 9) φαινόμενα] φαινόμενα a m. pr. M.
- C (342, 15) προσπίπτουσα] πίπτουσα M.
- D (343, 1) καὶ ταύτη γε] Pro his M. καὶ a m. s. in fine versus positum habet. (,, καὶ ταύτη γε om. Mon. B.“)
- (343, 2) ἐάν τ?] ἐάν τε V.
- p. 524. A (343, 16) τεταγμένη] τεταγμένη, e corr. τεταγμένη, M.
- B (344, 3) αὐταί] αὐταί M. a m. pr. (,, αὐταῖ“)
- (344, 4) ἄρο?] ἄρα V.
- C (344, 17) ἐρέσθαι] Ita M. (Ven. B. Par. DK. sec. Bekk.)
- D (344, 21) τὰ δ?] τάδε M. τὰ δὲ V.
- (345, 4) ποτέρων] πότερον M. (Vind. B. et a m. pr. Ven. B.)
- p. 525. A (345, 17) ἡ?] ἡ M. a m. pr. ut videtur. (ἡ Par. K. sec. Bekk.)
- D (347, 3) ἀριθμοὺς] ἀριθμὸν a m. s. M. (,, ἀριθμὸν“)

- p. 526. B (347, 20) μὲν] Ita M.
non μὴν (Par. A. Vat.
BM. Ven. BC. Ang. B.)
- C (348, 12) σκεψώμεθα]
σκεψάμεθα M.
- D (348, 19) αὐτοῦ] αὐτοῦ
M. non ἐαυτοῦ, quod
Bekkerus ei et reliquis
praeter Par. ADK. Ven.
C. tribuit.
- (348, 21) λογισμῶν] Ita
M. ut Par. ADK. sec.
Bekk. Vat. BM. (,,λο-
γισμοῦ“)
- p. 527. B (350, 4) οὐαλλιπόλει] Ita
M. ut Par. ADK. Ang.
B. Vat. M. (,,οὐαλλίστη
πόλει“)
- D (350, 17) δοκῆς] δοκεῖς
a m. pr. M.
- p. 528. E (352, 21) μετίη] μετίοι
V.
- p. 529. A (353, 8) ἀγεννῶς] ἀγε-
νῶς a m. pr. M.
B (353, 11) οὐαταμανθά-
νοι] οὐαταμανθάνει M.
(Ven. B.)
- (353, 12) νοήσει] Ita
M. ut Vind. B. corr.
Par. K. sec. Bekk.
Ang. B. (,,νοήσειν“)
- C (353, 21) γῆ ἡ ἐν θα-
λάττῃ] θαλ. ἡ ἐν γῇ
M.
- D (354, 13) ἐντύχοι] ἐν-
τύχη V. (Vat. M.)
- E (354, 17) οὐαλλιστα] οὐά-
λι τα a m. pr. M.
- p. 530. B (355, 10) Ἐμοὶ γοῦν]
ἐμοιγ' οὖν M.
(355, 11) ἄρ'] ἄρα V.
- C (355, 21) οὐτωσι] οὐ-
τωσίν M.
(356, 1) εἰδη] εἰδη,
- sup. η, V. (ἢδη Ang.
B. Vat. H.)
- p. 530. E (356, 12) πάντα ταῦτα]
τ. π. M. (,,π. τ.“)
- p. 531. B (357, 7) κοιλόπων] κο-
λόπων M.
- C (357, 15) ἀνίσταν] ἀνιᾶ-
στη V. (Par. K. sec.
Bekk.)
- (357, 19. 20) γ'] γε utro-
bique V.
- D (358, 5) προοίμια] προ-
οίμοις M.
- E (358, 8) Δια] δι' V.
(Ang. B. Vat. H.)
- (358, 9) Ἄλλ'] ἄλλα V.
- p. 532. A (358, 13) περαινεῖ] Ita
M. ut Ang. B. non πα-
ραινεῖ, quod ei cum
reliquis tribuit Bekke-
rus.
- B (358, 20) αὐτῆ] αὐτῆ,
τῆ in m. a m. s. ad-
dito, M. (,, αὐτῆ τῇ
Ven. B. Mon. B.“)
- C (359, 12) ἔχει] ἔχη M.
(359, 15) φανοτάτον]
Ita M. (Par. ADK. sec.
Bekk. Ven. BC. Vind.
B. Vat. HM.)
- p. 533. B (361, 2) γεωμετρίαν]
γεωμετρίας M. (Vat.
BHM. Ven. C. Par.
DK. sec. Bekk.)
- C (361, 10) αὐτὴν τὴν]
τὴν om. M.
- D (361, 13) συμπεριαγω-
γοῖς] συμπεριαγωγαῖς
M.
- (361, 19) ἥ] om. M.
(Vat. BHM. Ven. C.
Vind. B. Par. DK.)
- E (361, 19) πέρι σκέψις]
περίσκεψις V. (Par. K.
sec. Bekk. Vat. M.)

- p. 533. E (361, 20) *οὐν]* *αν* V. p. 537. D (368, 16) *τούτοις]* *τού-*
 (,,*ἀν*“)*τοις* a m. s. M. (Vat.
p. 534. A (362, 4) *δὲ]* *δὲ* V. D (363, 7) *ἐπικαταδαρθά-*
 νειν] *ἐπικαταδαρθά-*
 νεῖν V.
p. 535. B (364, 8) *βλοσσυροὺς]* *βλοσ-*
 συροὺς V. et a m. s.
 M. ut Ven. B. Par. K.
 sec. Bekk. Vat. M.
 βλισσυροὺς a m. pr. M.
 (364, 15) *δὴ]* Ita V. ut
 Par. A. Ang. B. Vat.
 H. (,,*δὲ*“)
D (365, 4) *τὰ δὲ]* *τὰ δ'* V.
 (Vat. M.)
 (365, 6) *διὰ]* *om.* V.
 (Vat. H.)
 (365, 8) *μισοπονῆ]* *μι-*
 σοπονεῖ V.
E (365, 11). *ἢ]* *ἢ* a m. pr.
 M.
p. 536. C (366, 15) *Δι'* *] δία* M.
p. 537. A (367, 18) *ἐγνωτέον]* *ἐγ-*
 νωτέος M.
C (368, 7) *παιδία]* *παιδία*
 M.
 (368, 8) *συναπτέον]* *συν-*
 ταπτέον M.
 (368, 14) *ἐπισκοποῦντα]* *ἐπισκοποῦντα* M.
D (368, 15) *μόνιμοι δ'] μ.*
 δὲ V.
- p. 537. D (368, 16) *τούτοις]* *τού-*
 τοις a m. s. M. (Vat.
 B. Ven. C. Par. K.)
 (368, 17) *προκρίτων]*
 om. M.
E (369, 6) *μάλιστ'] μάλι-*
 στα V.
p. 538. B (369, 21) *μὴ]* *om.* M. a
 m. pr. (Vat. BM. Ven.
 C. Par. DK.)
 (370, 1) *ἀνεῖναι]* *ἀνεῖ*
 M. a m. pr.
D (370, 14) *πειθεῖ]* *πειθε*
 V.
p. 539. A (371, 12) *τριακοντού-*
 τας] *τριακοντούσεις* M.
 (,,*τριακοντούτεις*“)
 (371, 13) *μάλ'* *] μάλα* V.
B (372, 1) *ἐλεγχθῶσι]* Ita
 M. ut Par. ADK. Vat.
 BHM. Ven. C. Vind. B.
 (,,*ἔξελεγχθῶσι*“)
E (372, 21) *μηδ'] μηδὲ* M.
p. 540. E (374, 15) *τοῦτῳ]* *τοῦτο*
 V. (Vat. BH. Ven. B.)
 (374, 16) *διασπενωρή-*
 σωνται] *διασπενωρή-*
 σονται V. et a m. pr.
 M. (Ven. B. Vat. M.)
p. 541. B (375, 4) *γένοιτο]* *γήνοι-*
 το, a m. s. *γήγνοιτο*,
 M.

Haec qui consideret et illa comparet, quae ad L. V.

- p. 449. D. 450. D. 457. A. 463. B. 467. B. 468. A. 472. A.
477. A. VI. 484. A. C. 485. A. 489. D. 493. C. D. bis,
495. B. 501. A. 505. C. E. 506. A. 507. C. E. bis, 511. D.
E. VII. 517. C. 518. A. B. C. D. 519. B. E. 523. D. 526. D.
528. A. bis, E. 529. B. D. 534. C. 537. D. 538. A. occa-
sione data notavimus, non temere in praefatione voluminis

primi optatum nobis intelligat, ut omnibus a Bekkerio collatis codicibus aliquando retractatio adhibeatur. Interim consensum Vindobonensi et Monacensi cum suis utriusque affinibus intercedentem paullo certius nunc nec minimam partem orthographicorum istorum ope declaratum laetemur, Bekkerum vero teneamus ne iis quidem in locis, quos aliter ac vulgo scribendos existimaverit, omnium suorum librorum veram ubique vel habuisse vel lectoribus impertivisse notitiam, quod quum alibi, tum L. V. p. 469. B. (243, 18) VI. 591. B. (305, 12) VII. 532. A. (358, 13) appareat; eundem praeconcepta opinione ductum nonnulla, quae codices a vulgata lectione discrepantia haberent, ut falsa et futile praeterisse, contra diversam eiusdem generis, quam ipse probaret, codicum scripturam diligentius significasse eaque ratione effe-
cisse, ut elisio e. c. et littera ξ non fere eadem, ut res est, sed multo firmiore, quam hiatus et littera σ, auctoritate niti viderentur; tertio in manus secundae significatione parum constanter versatum ab ea profecta saepe silentio praetermis-
sisse et tamen nonnunquam simpliciter quasi a manu prima et sine ulla litura aut emendatione posita codicibus tribuisse, cuius rei exemplo sunt loci L. V. p. 458. C. (232, 17) et 463. C. (242, 2) cum 474. B. (262, 7) et 478. D. (270, 19) collati; denique ansam praebuisse suspicioni, ne confusis vel ipsius vel hypothetae errore siglis ad alium nonnulla codicem relata, in alio reperta ab eo sint, ut quum L. VII. p. 531. C. (357, 15) ἀνιᾶστιν, 533. E. (361, 19) περίστεψις in Par. K. scripta perhibet, de Vind. B. in quo eadem sunt, tacet, qua ex re, quum Bipontini contra de Par. K. taceant, dubitationem oriri necesse est, an Parisiensis libri signum (K) pro Φ, quo Vindobonensem denotat, inscius et invitus exhibuerit. Quae omnia caute utendum Bekkeri commentariis esse docent.

Alter Monacensis littera C a me significatus, olim Au-^{Mon.}_{C.} gustanus, nunc inter Monacenses numero CCCCLXXXXX. chartaceus est, seculi XV., quadratus, foliis D. multa et varia, quae Hardtius in Aretini Symbolis Vol. VIII. a. MDCCCVII. p. 557 — 630. recensuit, in eisque Platonis ex Parmenide, Timaco, Menexeno et Menone particulastum integrum de Legibus librum quintum et fol. 319 — 335. Civitatis septimum cum parte decimi priore, quod Hardtium fugit, usque ad ἀνθρωπίνων p. 604. C. continens. Proxime accedit ad Vind. B. et Vat H. eandemque cum his lacunam a p. 524. E. ad p. 528. C. pertinentem habet. Eius lectio-nes primum in secunda editione proposuit Astius, sed minus accurate, quod nostras comparanti patebit, excerptas, in-super hypothetae erroribus, quibus exemplar Astianum sca-tet, multis modis depravatas.

De reliquis libris manu scriptis duo mihi monenda sunt, in Vindobonensis E. varietate referenda, quoniam diligentius in hac parte, quam in prima scriptus est, etiam spiritus et accentus rationem habitam, et Florentinis codicibus temere a Stallbaumio subscriptum in dativis et aliis verborum for-mis esse tributum, quod ipse alicubi plerumque in eis omis-sum fatetur.

Ad editiones a me adhibitas accessit Stallbaumii se-cunda, cuius index hic est: PLATONIS DIALOGOS SELECTOS RECENSUIT ET COMMENTARIIS IN USUM SCHOLARUM INSTRUXIT GODOFREDUS STALLBAUM. VOL. III. SECT. I. CONTINENS POLI-TIAE LIBR. I — V. GOTHAE ET ERFORDIAE SUMTIBUS GUIL. HEN-NINGS. MDCCCXXIX. SECT. II. CONTINENS POLITIAE LIBR. VI — X. MDCCCXXX. Eius adnotationibus quantum ad criticen conferre videretur usus sum, errores paucos notavi, discrepantiam lectionis omnem indicavi.

Quod addam nunc nihil est, nisi p. 74, b. 8 *Phrynichi* nomen perperam pro *Photii* positum esse, et locum Basilii p. 189, a. 19 brevius iusto commemoratum eius operum T. III. p. 75. E. ed. Paris. in epistola ad Candidianum exstare atque ita habere: ἀλλὰ τὸ τοῦ Πλάτωνος, ἐν χειμῶνι καὶ ξάλη (χαλάξῃ cod. Vat. et Reg. 1.) πραγμάτων οἶον ὑπὸ τείχει τινὶ καρτερῷ (ὑπὸ τείχός τι καρτερὸν Vat. Coisl. et Reg. uterque) ἀποστὰς οὐδενὸς θορύβου τὴν ψυχὴν ἀναπίμπλασαι.

Vratislaviae d. XVI. m. April. a. MDCCCLXXI.

ΠΛΑΤΩΝΟΣ ΠΟΛΙΤΕΙΑ

ΛΟΓΟΣ ΠΕΜΠΤΟΣ.

Lugd. Steph.
τείαν καὶ ὁρθὴν καλῶ, καὶ ἄνδρα τοιοῦτον· κακᾶς δὲ ^{T. II.} 449
τὰς ἄλλας καὶ ἡμαρτημένας, εἴπερ αὕτη ὁρθή, περὶ τε
πόλεων διοικήσεις καὶ περὶ ἴδιωτῶν ψυχῆς τρόπου κα-

Inscriptio : πλάτωνος πολιτειῶν, .E. Lob. Vind. D. πολιτειῶν λόγος πέμπτος. Vind. B. E. Vind. E. A' Vind. F. πλάτωνος πολιτειῶν πέμπτη Mon. B. Flor. U. πέμπτος Flor. R. βιβλ. έ. Flor. V. πολιτειῶν ἦ περι διαισίου λόγος πέμπτος. Flor. AC. et praeposito ΠΛΑΤΩΝΟΣ Ald. Bas. ab. ΠΟΛΙΤΕΙΩΝ ΔΙΑΔΟΓΟΣ πέμπτος Steph. E. Bekkerus et Stallbaumius in prima ed.

449 [Αγαθὴν] Αγαθὸν Vind. D.
τοιοῦτον] τὸν τοιοῦτον Par.
A. Bekkerus, Astius in tertia,
Stallbaumius in secunda editione,
ut altera huius membra pars magis
exaequetur priori et Socrates
virum ipsum pariter atque civitatem
superiori sermone exhibuit
digito monstrat: ἀγαθὴν (πόλιν)
καλῶ τὴν τοιαύτην πόλιν καὶ
(ἀγαθὸν) ἄνδρα τὸν τοιοῦτον
(ἄνδρα). At omissa articulo
quemlibet eiusmodi virum bonum
se dicere ostendit item, ut ipsam
illam civitatem: ἀγαθὴν καλῶ
τὴν τοιαύτην πόλιν καὶ (ἀγα-
θὸν καλῶ) ἄνδρα τοιοῦτον. Cui
mutationi fortassis ideo factae,

quod plures eiusmodi viros in ci-
vitate illa fore videbat (similes
aliis de caassis factos Vol. I.
pag. 59, b. 299, b. 406, b. sq.
notavi), h. l. ordinis quoque ver-
borum mutatio coniuncta et per-
spicuitatis caussa ἄνδρα praeop-
situm est. Quae quum ita sint,
articulum solitario unius quamvis
optimi codicis testimonio non sa-
tis firmatum existimo. Neque
abest suspicio, quin ex L. VIII.
p. 543. C. ubi haec Socratis ver-
ba a Glaucone repetuntur, huc
irrepsexit.

[ἡμαρτημένας] ἡμαρτημένας Ald.
πόλεων] civitatis ipsius Fic.
ψυχῆς τρόπου κατασκευῆν] ψ. τ. κατασκευῆ Flor. T. disci-
plinam Fic. quem Astius in sec.
ed. non debebat propterea ψυχῆς
non legisse suspicari, multo vero
minus id vocabulum ut superva-
caneum „quum τρόπος iam mo-
res et ingenium significet, haud
dubie glossema“ pronuntiare. Fi-
cinum saepe vidimus ex unis plu-
ra facere, alibi bina et terna in
unum contrahere; Plato autem
non sine ratione duplum civita-
tem significaturus, quum alteram

τασκευὴν, ἐν τέτταροι πονηρίας εἴδεσιν οὖσας. Πολας δὴ ταύτας; ἔφη. Καὶ ἐγὼ μὲν ἡα τὰς ἐφεξῆς ἐρῶν, ὡς μοι ἐφαίνοντο ἔκασται ἐξ ἀλλήλων μεταβαίνειν· δὲ Πολέμαρχος (σμικρὸν γὰρ ἀπωτέρῳ τοῦ Ἀδειμάντου καθῆστο) ἐκτείνας τὴν χεῖρα καὶ λαβόμενος τοῦ ἴματίου ἄνωθεν αὐτοῦ παρὰ τὸν ὥμον ἐκεῖνόν τε προσηγάγετο καὶ προτείνας ἑαυτὸν ἔλεγεν ἄττα προσκευυφάς, ὡν ἄλλο μὲν οὐδὲν κατηκούσαμεν, τόδε δέ· ἀφήσομεν οὗ,

seu externam circa hominum societas moderandas versari demonstrasset, alteri seu internae animum animique habitum constituendum assignat. Atque illud περὶ neque ad νανὰς καὶ ἡμαρτημένας referendum, quo Matthiae gramm. p. 1178. v. 3. retulit, neque cum participio οὖσας construendum est, ut reliquarum civitatum ipsarum obiectum, quod vocant, duplex definiat.

τέτταροι] τέσσαροι Par. D.
Flor. T.

ταύτας] ταύτης Ald. Bas. a.
μὲν] om. Vind. D.

ἡα] ἡα Ang. B. Flor. R. ῥιτα,
in m. a. m. s. ἡα, Vind. F.

ἐφαίνοντο] ἐφαίνετο τὸ Vind.
D.

ἔκασται] ἔκαστα Vind. D. et
Astii prima editio typographi, ut
videtur, errore.

B F. ἐξ ἀλλήλων] ἐξαλλήλων Vind.
F.

μεταβαίνειν] dependere Fic.
σμικρὸν — καθῆστο] Haec
verba, quibus Astius, Bekkerus
et Stallbaumius pro parentheseos
signis lineas transversas circum-
dederunt, Ficinus ita interpreta-
tur: paulo enim a me remotior
erat quam Adimantus, Adimanti
post tergum sedens, quorum po-
steriora superaddere debebat, quia
genitivum a comparativo regi pu-
tans sensum imperfectum esse in-
telligebat. Regitur vero ab ad-
verbio, et Polemarchus paullo re-
motior ab Adimanto, quam reli-
qui a suis vicinis, vel longius,
quam clandestinum colloquium re-

quirebat, sedisse ideoque proten-
disse manum eumque proprius ad
se admovisse dicitur. Exempla
genitivi multa habet Pausanias.
L. I. c. 1, 3: τοῖς ἀπωτέρῳ τοῦ
λιμένος. Alia ostendit Siebelis in
indice. Astius et Schleiermache-
rus Ficini additamento abstinentes
et tamen genitivum a comparati-
vo repetentes incertum relinquunt,
a quoniam loco magis remotus Po-
lemarchus sederit, quam Adiman-
tus. Sed sive is Socratis locus
sive medius circuli sedentium (cf.
L. I. p. 328. C.) fingatur, cur
propterea manum protenderit et
Adimantum attraxerit, non appa-
ret, nisi secundum eum sedisse
statuatur, quod ipsum ostendi a
scriptore debebat illaque a nobis
inita ratione, quam Grovius,
Francogallicus interpres, et Kleu-
kerus nostras iam pridem inie-
rant, simul ostenditur. — Voca-
buli ἀπωτέρῳ primam syllabam
Vind. F. inter versus habet.

ὥμον] νόμον Par. K. sec.
Bekk.

ἄττα] ἄττα Vind. D.
προσκευυφάς] προσκευυφάς
Vind. E. Par. K. sec. Bekk. Vat.
H. Flor. ACT.

ῶν] ὧν Vind. F. Par. D.
ἢ τι] ὅτι Par. K.
γε] γ Vind. E. Flor. AC.
μάλιστα] μάλιστ' Vind. F.
Ang. B.

ἀφίεται] ἀφίεται cum ε super
ει Vind. E.

Σὲ] om. Vind. F. σὺ, in marg.
a m. pr. σὲ, Mon. B.

"Ετι ἐγὼ εἶπον· τι μάλιστα;]
C Hanc omnium codicum, excepto

ἔφη, ἡ τι δοάσομεν; Ἡκιστά γε, ἔφη ὁ Ἀδείμαντος, μέγα ἥδη λέγων. Καὶ ἐγὼ Τί μάλιστα, ἔφην, ύμεις οὐκ ἀφίετε; Σὲ, ἡ δ' ὅς. Ἔτι ἐγὼ εἶπον· τι μάλιστα; Ἀποδόθη ὁρθυμεῖν ἡμῖν δοκεῖς, ἔφη, καὶ εἶδος ὅλον οὐ τὸ ἐλάχιστον ἐκκλέπτειν τοῦ λόγου, ὥνα μὴ διέλθῃς, καὶ λήσειν οἰηθῆναι εἰπών αὐτὸν φαύλως, ὡς ἄρα περὶ γυναικῶν τε καὶ παίδων παντὶ δῆλον, ὅτι κοινὰ τὰ φίλων ἔσται. Οὐκοῦν ὁρθῶς, ἔφην, ὡς Ἀδείμαντε; Ναὶ, ἡ

fortasse Ven. B. de quo Bekkerus non magis, quam de Mon. B. qui tamen ἔτι cum reliquis exhibet, quicquam memoriae prodidit, lectionem ab Astio in prima editione ex Par. K. Ven. C. receptam, in secunda et tertia rursus abiectam neque Stallbaumio probatam merito tenuit Bekkerus. Nam quod ante Astium legebatur, ὅτι (Bas. ab. ὁ, τι) ἐγὼ εἶπον, τι μάλιστα; id commate vel colo a proximis separatum, ut est in Ald. Bas. ab. et Stephaniana, non solum inutilem, sed etiam invenustam et rusticam explicationem habet eius, quod dixerat Adimantus; quam miror placuisse Schleiermachero. (Dich! sprach er, weil ich gesagt hatte, was doch.) Haud multo melius est, quod Astius postea praetulit, Ὄτι, ἐγὼ εἶπον, τι μάλιστα; aut quod dedit Stallbaumius: Ὄτι ἐγὼ, εἶπον, τι μάλιστα; quorum prius ob praepositum contra consuetudinem pronomen, posterius ob inusitatam, quam secum fert, ellipsis, utrumque ob omissam in responsione particulam ὅτι improbandum est. Hanc enim in Platone post ὅτι τι sequi solere non frustra observavit Hemsterhusius ad Lucianum T. III. p. 43. Lehm. Nec mirum id, aut ratio in obscurio. Conf. Hoogeveenii doctr. part. pag. 597. Schütz. 1782. et quae olim docui in indice Graecitatis fabularum Aesopicarum Lips. 1810. in vocabulo ὅτι. Hic vero codicum auctoritas lectionem bonam praebentium dubitationis nihil relinquit. Quid ἔτι ἐγὼ εἶ-

πον significet, statim intellexeris, si primo responso satis edoctum aliquem neque repetita amplius indigentem quaestione οὐκέτι ἐγὼ εἶπον dicentem finxeris. Ἔτι, ut nostrum noch immer, Latinorum etiam (Plauti Mostell. II. 2, 43: circumspice etiam. ib. v. 90: sed tu etiamne astas?) continuacionem indicat similique modo legitur L. VI. p. 508. C: πῶς; ἔφη. ἔτι διελθέ μοι. 509. A: τὴν εἰνόντα αὐτοῦ ἔτι ἐπικοπεῖ. Protag. p. 310. C: ναὶ ἔτι μὲν ἐνεχείσθαι εὐθὺς παρά σε λέναι, ἐπειτά μοι λίστη πόρθω ἔδοξε τῶν νυκτῶν εἶναι. et duobus Xenophontis locis ab Heindorfio allatris. — Ficinus: So. Quid maxime?

Ἀποδόθαθυμεῖν] i primus subscriptis Bekkerus. ἀποδραθυμεῖς Vind. D.

ἡμῖν] om. Mon. B. et a m. pr. Ven. B.

οὐ τὸ] αὐτὸν super priori syllaba οὐ a m. s. adscripto, Vind. F. οὐ τὸ οὐν Ang. B.

διέλθης] διέλθοις Par. D.

οἰηθῆναι] οἴει Ven. B. et int. vers. Vat. B. cum editis ante Bekkerum.

αὐτὸν] αὐτῷ Vind. F.

τὰ φίλων] τὰ τῶν φίλων Par. K. Flor. T. Astius in sec. et tertia et Stallbaumius. Cf. Vol. I. p. 348. et Plutarchi Erot. p. 767. D: οὐ γὰρ ἀπλῶς κοινὰ τὰ φίλων — quo loco nostrum videtur respexisse.

ἔφην] ἔφη Lob. Vind. E. Vat. M. Comma anteposuit Bekkerus.

δ' ὅς. ἀλλὰ τὸ ὄρθως τοῦτο ὥσπερ τὰλλα λόγου δεῖται,
τίς ὁ τρόπος τῆς κοινωνίας· πολλοὶ γάρ ἂν γένοιντο.

D μὴ οὖν παρῆστιν ὅντινα σὺ λέγεις. ὡς ἡμεῖς πάλαι περι-
μένομεν οἰόμενοί σέ που μηδέντεσθαι παιδοποιίας τε
πέρι, πῶς παιδοποιήσονται, καὶ γενομένους πῶς θρέ-
ψουσι, καὶ δῆλην ταύτην ἦν λέγεις κοινωνίαν γυναικῶν
τε καὶ παΐσων· μέγα γάρ τι οἰόμεθα φέρειν καὶ δλον
εἰς πολιτείαν ὄρθως η̄ μὴ ὄρθως γιγνόμενον. τοῦν οὖν,
ἐπειδὴ ἄλλης ἐπιλαμβάνη πολιτείας, ποὶν ταῦτα ίκανῶς

ἀλλὰ] ἄλλὰ Steph.

τὰλλα] τ' ἄλλα Vind. EF.
τὰλλα Vind. BD. Mon. B. editio
ante Bekkerum.

λόγου δεῖται] δ. λ. Vind. F.
Ang. B. Flor. R.

ἄν] om. Lob. Vind. BD. Vat.
BM. — Ab omnibus his modis di-
versus et alienus a Platonis civi-
tate is est, quem Clemens Alex.
Strom. L. III. pag. 514. statuit,
quo loco Carpocratem arguit τοῦ Πλάτωνος παρακηροέναι ἐν τῇ Πολιτείᾳ φαμένον κοινὰς εἶναι τὰς γυναικας πάντων, κοινὰς μὲν τὰς πρὸ τοῦ γάμου τῶν αλ-
τεῖσθαι μελλόντων, καθάπερ καὶ τὸ θέατρον κοινὸν τῶν θεωμέ-
νων, φάσοντος, τοῦ προκατα-
λαβόντος δὲ ἐκάστην ἐκάστου εἶναι καὶ οὐκ ἔτι κοινὴν τὴν γε-
γαμημένην. Idem L. VI. p. 751.
Euripidem a Platone hanc com-
munionem accepisse et probasse
significat: Πλάτωνός τε ἐν Πο-
λιτείᾳ εἰπόντος κοινὰς εἶναι τὰς γυναικας Εὐριπίδης ἐν Πρωτε-
σιάῳ γράφει· κοινὸν γάρ εἰν' ἄρα καὶ (f. δεῖ) γυναικεῖον λέ-
χος.

σὺ] om. Vind. E. Flor. C.

D περιμένομεν] περιμένομεν
Mon. B. Flor. U.

μηδέντεσθαι] μηδέντεσθαι
cum si super σε Ven. C. μη-
δένται Lob. Vind. B. Mon. B.
Vat. BM. Par. DK. Flor. U. non
vitiose. Cf. Lobeck. ad Phryn.
p. 751. cuius tamen in exemplis
locus L. III. p. 442. E: τίν' ἄν
οἵει οἱδήνται propter additum
ἄν minus aptus videtur.

τε] om. Vind. F. Ang. B. Flor.
R.

πέρι] περὶ Ald. Bas. ab. Com-
ma post πέρι delevit Stallbaumius,
quasi quae sequuntur non
epexegesin, sed supplementum
proximorum contineant.

θρέψουσι] διαθρέψουσι Vat.
H.

δῆλην] δῆλως Flor. T.
γάρ τι] γάρ τι οἷμαι κοινω-
νία. καὶ μέγα τι Par. K. sec.
Bip. Secundum Bekkerum non
hoc loco, sed supra post παιδο-
ποιίας inserta habet οἷμαι κοι-
νωνία καὶ μέγι τε οἰόμενοί,
quod vix credibile.

οἰόμεθα] οἴο οἰόμεθα Vind.
B. (in fine et initio versus.)

πολιτείαν] τὴν πολ. Vind. E.
Vat. H. Flor. ACT.

η̄ μὴ ὄρθως] om. Vind. E.
ἐπιλαμβάνη] ἐπιλαμβάνει Asti-
us, Bekkerus et Stallbaumius.

ποὶν] ποὶν ἄν Vind. B. Vat. M.

τὸ σε] Ita Lob. Vind. D. et
cum γ super σ F. τὸ δε Par. K.
sec. Bip. τόδε sec. Bekk. πη σε
Mon. B. τὸ σε Vind. BE. cum
editis.

ταῦτα] τοῦτο Par. K.

450

πάντα] om. Flor. T. post ὥσ-
περ habent Lob. Vind. D. Vat.
BM. Ven. C. ante διέλθης Vind.
B. Mon. B. Par. DK. Flor. U.
Nam quod Stallbaumius in prima
ed. πάντα in Par. K. Flor. U.
post διέλθης collocatum scribit,
haud dubie hypothetae acceptum
referendum, quamquam in secun-
da de ea re tacet.

διελέσθαι, δέδοκται ἡμῖν τοῦτο, ο σὺ ἔκουσας, τό σε
μὴ μεθιέναι, πρὸν ἀν ταῦτα πάντα ὥσπερ τὰλλα διέλ- 450
θης. Καὶ ἐμὲ τοίνυν, ὁ Γλαύκων ἔφη, κοινωνὸν τῆς
ψήφου ταύτης τίθετε. Άμέλει, ἔφη ὁ Θρασύμαχος, πᾶσι
ταῦτα δεδογμένα ἡμῖν νόμιζε, ὡς Σώκρατες. Οἶον, ἦν
δ' ἐγὼ, εἰργάσασθε ἐπιλαβόμενοί μου. ὅσον λόγον
πάλιν ὥσπερ ἐξ ἀρχῆς κινεῖτε περὶ τῆς πολιτείας.
ἦν ὡς ἦδη διεληλυθώς ἔγωγε ἔχαιρον, ἀγαπῶν, εἴ
τις ἄσσοι ταῦτα ἀποδεξάμενος ὡς τότε ἐργήθη. ἀνῦν

τὰλλα] τ' ἄλλα Par. K. sec.
Bip. Vind. EF. τὰλλα Vind. BD.
Mon. B. Steph.

ὁ Γλαύκων ἔφη] ὡς γλ. ἔ.
Lob. Vat. M. ἔφη ὡς γλ. Vind. B.
ὅ γλ. ἔχει Vind. F.

ταύτης] om. Par. K.

τίθετε] τίθεται Lob. Vat. M.
Vind. B. et cum ε super αι E.

ταῦτα] ταῦτα Par. A. Vind.
B. Vat. M. Quum consensus o-
mnium satis declaratus sit verbis
πᾶσι et ἡμῖν circumpositis, rei
ipsius, in qua consentiant, decla-
ratio magis convenire videtur,
praesertim quum ταύτης praeces-
serit. Etiam p. 455. C. ταῦτα
perperam pro ταῦτα Par. A. ex-
hibit.

δεδογμένα] τὰ δεδ. Lob. Vind.
B. Vat. M.

εἰργάσασθε] εἰργάσασθαι cum
ε super αι Vind. E. εἰργάσεσθε
Ang. B.

ἐπιλαβόμενοί μου.] Huc spe-
ctare videtur glossa Antiatticistae
p. 93, 23: ἐπελάβετο μου· οὐ-
τῶς εἰπόντος Πλάτωνος Πολι-
τείας τρίτῳ. Quamquam etiam
L. II. p. 360. D. τοιαύτης ἔξον-
τιας ἐπιλαβόμενος ἐτ Lib. VI.
pag. 490. D. σοῦ ἐπιλαβόμενον,
sed hoc sine genitivo, legitur.
Pro puncto Bas. ab. interrogandi,
Bekkerus et Stallbaumius exclama-
mandi notam posuerunt, quae
aptior illa, sed ne ipsa quidem
necessaria et auctoritate destituta
est.

ὅσον] ὃς Lob. Vind. B. et ante
corr. D. Vat. M. et a m. pr. B.
ὡς a m. s. Vind. D. ὃν Vat. B.

λόγον] λέγειν Vind. D. corr.
λόγον Flor. U.

ὥσπερ] om. Par. K. post ἀρ-
χῆς habent Lob. Vind. BD. Vat.
BM.

ἐξ ἀρχῆς] ἐξαρχῆς Par. K. sec.
Bip.-Lob. Vind. B.

κινεῖτε] κινεῖ τε Flor. AC:
πολιτείας.] Hic quoque Bek-
kerus et Stallbaumius exclamari
iubent. In Bas. ab. comma est.

ἡν] ἦν Bas. b.
διεληλυθώς] διελυθώς Vind.
E.

ἔγωγε] ἐγὼ Lob. Vind. BD.
Vat. BM. Flor. T.

ἄσσοι] Ita Par. A. Vind. E.
Ven. C. Ang. B. Vat. H. Flor.
omnes. θεάσσοι Vind. F. ἄσση
Vind. D. Mon. B. ἄσση reliqui
codices cum editis ante Bekkerum.
Tenet id Astius, non sine ratio-
ne, sed adversante librorum au-
ctoritate.

ταῦτα] om. Vind. D. In Vind.
B. punctum sequitur.

ἐργήθη] Ita Par. A. Lob. Vind.
DEF. Mon. B. Vat. BH. Ven. C.
Bas. b. Reliquos codices suos
Bekkerus ἐργέθη habere demon-
strat, quod est in Vind. B. Ald.
Bas. a. Steph. et, si Stallbaumii
silentium non fallit, in omnibus
Florentinis. Id Stallbaumius in
prima editione Astii exemplo et
Heindorffii auctoritate ad Gorg.
§. 36. utrumque a veteribus a-
gnosci statuentis idque a Routhio
ex Phaborino et Etymologico v.
ἐργέθη monitum esse docentis re-
tinuit, in secunda item, ut Astius
in tertia, cum altero a Bekkero

B ὑμεῖς παρακαλοῦντες οὐκ ἴστε, ὃσον ἐσμὸν λόγων ἐπεγείρετε· δὸν δοῶν ἐγὼ παρῆκα τότε, μὴ παράσχοι πολὺν ὄχλον. **Tί** δέ; **ἥ** δ' ὅς, ὁ Θρασύμαχος· χρυσοχοήσοντας οἵει τούσδε νῦν ἐνθάδε ἀφῆθαι, ἀλλ' οὐ λόγων ἀκουσομένους; **Nαὶ**, εἶπον, μετρίων γε. **Mέτρον** δέ γ', ἔφη, ὡς Σάκρατες, δὸς Γλαύκων, τοιούτων λόγων ἀκούειν δῆλος δὲ βίος νοῦν

recepto permutavit. ἐξόρθη legitur sine varietate L. VI. p. 497. C. D. 504. B. Leg. L. IIII. p. 722. B. E. VI. 774. D. 782. D. 783. C. VII. 800. A. 802. D. 804. E. 809. B. (quos locos Rückertus ad Sympos. p. 117. indicavit.) VIII. 873. B. 874. A. porro uno Lob. dissentiente Polit. p. 267. A. 274. D. 275. A. 282. C. 284. E. 286. B. et, quo loco Eusebius quoque penultimam brevem exhibet, 270. A. Idem Eusebius solus ἐξόρθη legit Leg. L. I. p. 626. D. ut Ang. B. Critia pag. 109. D. ubi in Monac. DXIII. ἐξόρθη scriptum est. Hipp. mai. p. 302. E. tres tantum codices ex undeviginti, qui collati sunt, vulgatam ἐξόρθη non tuentur (Ven. BD. Vind. A.) Paullo plures ei, sed ne hi quidem sufficientes, adversantur Phil. p. 33. B. (Coisl. Ven. D. Par. BCF. et int. vers. Lob.) Gorg. l. c. p. 460. D. (Vat. A. Par. BV. Ven. D. Vind. AK. Bodleianus Routhii, Augustanus et Meermannianus;) et Phaedon. p. 92. D. (Vat. A. Ven. D. Vind. AB. Lob. Zittav. Amb. B. et int. vers. Clark.) Eorum vero locorum, quibus Heindorfius nitebatur, nullus satis firmus repertus est. Nam Leg. L. II. p. 664. D. ἐξόρθησαν Bekkerus omnium suorum consensu videri debet restituisse, quum in comm. crit. nil nisi Stephanum adnotaverit ἐξόρθησαν exhibere. Polit. p. 258. E. ἐξόρθη secundum plurimos in iisque optimum Clark. scripsit, refragantibus Ven. D. a m. pr. Vind. A. Par. EF. Lob. Zitt. et quatuor Flor. Theaet. p. 168. B. idem ex Coisl. Ven. A. et int.

vers. B. Par. BCFH. exhibuit, quo uno loco Clarkianus cum reliquis ε, sed sine accentu, ut dubiis in scripturis solet, prae se fert. Nostro denique loco ab ultra parte codices stent non obscurum est. Praeterea Symp. p. 193. E. et Pol. p. 303. C. ἐξόρθη Bekkerus secundum Clark. Coisl. Vat. AL. et int. vers. N. Ven. B. et int. vers. E. Vind. A. Par. DK. et int. vers. E. Ang. C. Flor. AC. illud, hoc secundum Clark. Vat. A. Ven. C. Par. B. hoc est, optimos libros correxit. Recentioribus igitur et labenti Graecitati relinquenda haec indicativi forma, quae nunquam ad reliquos modos transisse videtur, certe a Platone abjudicanda, et a Lobeckio dissentendum, qui ad Phryn. p. 447. Platonem popularem consuetudinem secutum ἐξόρθη dixisse credit. Corrigendus quoque Buttmanni calculus gramm. II. p. 121. haud raro eam formam in melioribus Platonis libris reperiri perhibentis, cui nimis tribuit Sommerus in iudicio de Stallbaumiana selectorum dialogorum editione, criticae bibliothecae a. 1829. parte sec. p. 557.

ὑμεῖς] ἡμεῖς Lob. Vind. B. Flor. AC. Bas. b.

ἐσμὸν] ἔμὸν Vat. B. Vind. E. B — Phrynicus Bekk. p. 37, 22: ἐσμὸς μελισσῶν οὐλὴ σμῆνος μελισσῶν· ἀμφω δόνιμα. Idem p. 64. 4: σμῆνος οὐλὴ ἐσμός· ἐπάτερον δόνιμον. σμῆνος ἀρετῶν simili metaphora dictum est Menon. pag. 72. A. ἥδονῶν L. VIII. p. 574. D. σοφίας Crat. p. 401. E.

ἔχονσιν. ἀλλὰ τὸ μὲν ἡμέτερον ἔα· σὺ δὲ περὶ ᾧν ἐρωτῶμεν μηδαμῶς ἀποκάμης η̄ δοκεῖ διεξιὼν, τίς η̄ ποινωνία τοῖς φύλαξιν ἡμῖν παιδῶν τε πέρι καὶ γυναι- C
κῶν ἔσται καὶ τροφῆς νέων ἔτι ὄντων, τῆς ἐν τῷ μεταξὺ χρόνῳ γιγνομένης γενέσεώς τε καὶ παιδείας, η̄ δὴ ἐπιπονωτάτη δοκεῖ εἶναι. πειρῶ οὖν εἰπεῖν, τίνα τρόπον

παράσχοι] παράσχη Lob. Vind. BDE. Vat. BM.

Ti δέ; — ἀπονοσομένονς; laudat Harpocratio in *χρυσοχοεῖν* (hoc enim lemma e cod. Vratisl. pro vulgato *χρυσοχοεῖν* restituendum) ubi postquam locum Dinarchi ἐν τῷ πατέρᾳ Πυθέον restulit (πάλιν παρά Aleschinην ἀποφοιτήσας παρὰ τοντῷ δῆλον ὅτι χρυσοχοεῖν ἔμάνθανεν, ἀλλ' οὐ τὸ προειμένον αὐτὸν πράττειν η̄ πάσχειν, ad quem glossa lexici rhet. Bekk. p. 316, 3. pertinet: *χρυσοχοεῖν* ἔμάνθανε τί ἔστι· παροιμία ἐν η̄θει λεγομένη ἀντὶ τοῦ ἐπόργυνεν.) haec addit: οὐχορται τῇ παροιμίᾳ καὶ Πλάτων ἐν πέμπτῳ Πολιτείᾳ λέγων. Tl δαι; (haec duo om. cod. Vratisl.) η̄ δ' ὁσ, ὁ Θρασύμαχος (η̄ν δ' ὁσὸς Θρ. id.) χρυσοχοεῖν οἴει (*χρυσοχοος εἰς* id.) τούσδε νῦν ἐνθάδε ἀφῆθαι, ἀλλ' οὐ λόγων ἀπονοσομένονς; (*ἀπονοσόμενος*. id.) Dinarchi locum sub vulgato Harpocrationis lemmate repetit Suidas, deinde Platonici mentionem facit imperfectam: οὐχορται δὲ τῇ παροιμίᾳ καὶ Πλάτων· τί δαι η̄ δ' ὁσ. ὁ Θρασύμαχος χρυσοχοεῖ. (Ita ed. Bas. 1544.) tum originē et significationē proverbii explicat in eumque, qui frustra suscepto labore magna spe excidisset, σὺ δὲ ὃν χρυσοχοήσειν dici consueuisse docet. Nostro tamen loco χρυσοχοεῖν is potius dici videtur, qui rebus vanis stulte operam dat. — Pro χρυσοχοήσεται in Ven. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACV. χρυσοχοήσεται, pro ἐνθάδε in Lob. Vind. BD. Vat. BM. ἐνταῦθαι, pro ἀφῆθαι in Vind. F. ἀφῆθαι, pro λογων in

Vat. H. Bas. b. λόγον scriptum est.

Nal, εἰπον] bis deinceps habet Vind. E. καὶ εἰπον Par. K.

Mέτρον] μέτρον Par. A. Ald. Bas. ab. Steph. tacentibus de Par. K. Bipontinis. Veram electionem Astius iam in prima editione ex Ficino restituit.

δέ] om. Vind. E.

τοιούτων] τὸν οὗτον Vind. F. a m. pr.

νοῦν] νῦν Bas. b. τοῖς νοῦν Vind. E.

ἀποκάμης] ἀπόκαμε Mon. B.

η̄] η̄ Vind. F. Bas. ab. εἰ̄ Vind. E. et int. vers. a m. s. F. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. si tibi videtur Fic.

διεξιὼν] διεξιέναι Vind. E.

ἡμῖν] ημῶν Steph. tacentibus C Bip. nostris custodibus Fic.

περὶ καὶ] καὶ περὶ Vind. D. Ang. B. καὶ περὶ Vind. F.

καὶ τροφῆς νέων ἔτι ὄντων] quaeve nutriendorum. puerorum ratio Fic. Mihi genitivus τροφῆς ut proximi παιδῶν et γυναικῶν ad praepositionem περὶ pertinere et a nomine ποινωνία pendere videtur. Itaque comma post ἔσται (Stephanus etiam colon posuit) sustuli, post ὄντων autem positum ab Aldo et Stephano restitui.

παιδείας] παιδεί Vind. E.

ἐπιπονωτάτη δοκεῖ] δ. ἐ. Lob. Vind. B. Vat. M.

οὖν] ἀν Par. A. Vat. H. Flor. ACTV.

τρόπον] om. Vind. E. Non male. Sic supra: τίς η̄ ποινωνία. Atque hanc ipsam communionem αντήν dicit.

δεῖ γίγνεσθαι αὐτήν. Οὐ δάδιον, ὡς εὔδαιμον, ἦν δ' ἐγὼ, διελθεῖν· πολλὰς γὰρ ἀπιστίας ἔχει ἔτι μᾶλλον τῶν ἔμπροσθεν ὥν διήλθομεν. καὶ γὰρ ὡς δυνατὰ λέγεται, ἀπιστοῖτ' ἄν, καὶ εἰ ὅτι μάλιστα γένοιτο, ὡς Δ ἄριστ' ἄν εἴη ταῦτα, καὶ ταύτη ἀπιστήσεται. διὸ δὴ καὶ ὄκνος τις αὐτῶν ἀπτεσθαι, μὴ εὐχὴ δοκῆ εἶναι ὁ λόγος, ὡς φίλες ἔταιρες. Μηδὲν, ἢ δ' ὅς, ὄκνει· οὕτε γὰρ ἀγνώμονες οὕτε ἀπιστοὶ οὕτε δύσνοι οἱ ἀκουσόμενοι. Καὶ ἐγὼ εἶπον· ὡς ἄριστε, ἢ που βουλόμενός με παραδιάρ-

· ὡς εὔδαιμον] ὕπερ εὐδαιμον Mon.
B. Ven. C. Par. DK. sec. Bekk.
ὡς εὔδαιμον Lob. Vind. BDF.
Vat. BM. Cf. Vol. I. p. 333, b.
inf. In Vind. E. utrumque omis-
sum et spatium trium circiter literarum
vacuum relictum est.

διελθεῖν· πολλὰς] ἔλθειν. πολ-
λὰ Vind. D.

ἔχει] Hoc Stallbaumius in se-
cunda ed. commate distinxit a se-
quentibus, non sine ratione. Ali-
ter enim haec dicta sunt, quam
si ἔτι γὰρ μᾶλλον πολλὰς ἀπι-
στίας ἔχει τῶν ἔμπροσθεν lege-
retur. Verum tamen ipsa verbo-
rum collocatio per se ambiguita-
tem tollit.

καὶ] καὶ Par. K. sec. Bekk.

ώς] εἰ ὡς Flor. T.

δυνατὰ] δύναται Vind. F.

λέγεται] λέγηται Par. K. sec.
Bekk.

ἀπιστοῖτ' ἄν.] Quum καὶ, quod
sequitur, proximo illi ante γὰρ
respondeat, et verbi ἀπιστοῖτο
idem, quod alterius ἀπιστήσεται
subiectum sit, non diversum illud
a subiecto verborum ἔχει, λέγε-
ται, γένοιτο et εἴη, cum Basileensibus et Astio comma potius,
quam colon cum Stephano, Bekkerio et Stallbaumio post ἄν ponendū existimavi. Aldus nullam
omnino distinctionem fecit.

ὅτι μάλιστα] ὅτιμαλιστα Lob.
ὅτιμάλιστα Vind. F. Steph. ὅ τι
μάλιστα Stallbaumius in sec. ed.
Cf. Vol. I. p. XXXXVIII.

ώς] καὶ ὡς Vat. BM. Lob.
Vind. BD. Flor. T.

ταῦτα, καὶ ταύτη ἀπιστήσε-

ται] Hanc Stephani et Bekkeri
interpunctionem Stallbaumius in
secunda ed. sententiae repugnare
non autumasset, si ipsam rem,
de qua persuaderi nequeat, ἀπι-
στεῖσθαι dici posse reputavisset.
Qua interpretatione adhibita *hac*
quoque in parte, quae ad prae-
stantiam atque utilitatem spectet,
eis, quae dicenda sint, fidem non
habitum iri Socrates demonstrat.
Altera interpunctio ταῦτα καὶ
ταύτη, ἀπιστήσεται, quam ipse
ex Aldina et Basileensibus repe-
tiuit, non solum membrorum ae-
quabilitatem turbat, sed etiam
tautologiam infert, cui frustra
mederi conatus est Ficinus: *utrum*
optima ista sint et quomodo, du-
bitabitur. — Pro ἀπιστήσεται
Par. K. sec. Bip. ἀπιστήσετε,
sec. Bekk. ἀπιστήσετι (quod ty-
pothetae tribuo) exhibit. In Par.
D. item ἀπιστήσετε, sed super-
scripto ται, in Vat. B. ἀπιστή-
σεται cum ε super ai legitur.

δὴ] δὲ Ald. Bas. a.

εὐχὴ] ὄφθη Vind. F. votum
quoddam et fictio Fic.

δοκῆ] δοκοῖ Ven. B. δοκεῖ
Lob. Vind. BDEF. Vat. B. Ven.
C. Par. DK. sec. Bekk. Flor.
ACRU. Itaque pauci remanent
coniunctivi assertores iisque parum
validi, Ang. B. Vat. HM. et Flor.
T. Nam Par. A. exhibit ille qui-
dem δοκῆ, sed correctus, quod
testatur Bekkerus, et Mon. B.
quod Bekkerus neglexit, —η item
manui secundae debet. Nihilo
minus, quum unum de tribus
praesentis modis recipi codices

δύνειν λέγεις; "Εγωγ', ἔφη. Πᾶν τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ,
τούναντίον ποιεῖς. πιστεύοντος μὲν γὰρ ἐμοῦ ἐμοὶ εἰδέ-
ναι ἂ λέγω, καλῶς εἶχεν ή παραμυθία· ἐν γὰρ φρονί- E
μοις τε καὶ φίλοις περὶ τῶν μεγίστων τε καὶ φίλων
τἀληθῆ εἰδότα λέγειν ἀσφαλὲς καὶ θαρραλέον, ἀπιστοῦν-
τα δὲ καὶ ξητοῦντα ἀμα τοὺς λόγους ποιεῖσθαι, ὃ δὴ
ἐγώ δρῶ, φοβερόν τε καὶ σφαλερὸν, οὐ τι γέλωτα
ὅφλεῖν· παιδικὸν γὰρ τοῦτο γε ἀλλὰ μὴ σφαλεῖς τῆς 451
ἀληθείας οὐ μόνον αὐτὸς, ἀλλὰ καὶ τοὺς φίλους

iubéant, coniunctivus recipiendus est, hoc sensu: *quia vereor, ne, si exponere ea coner, temere et stulte facere videar.* Conf. Hermannus ad Medeam p. 354. ed. Lips. 1822. Indicativus enim, de quo scitu digna, observavit Grasserus in Specimine adversariorum in Platonis sermones p. 36. ferri propterea nequit, quod dicere Socrates nondum coepit ideoque nec dubitare, an temere dicere videatur, nec, ne haec aliorum de ipso opinio sit, metuere potest. Optativus autem, si particulam ἀν additam haberet, vitiōsus non foret: sine ea probari non magis potest, quam Leg. L. I. p. 635. E: περὶ δὲ τηλι-
κούτων εὐθὺς πεπιστευκέναι ὁχ-
δίως μὴ νέαν τε εἴη μᾶλλον καὶ
ἀνοήτων. ubi quod Boeckhius et
Astius e conjectura reposuerunt,
Bekkerus e Par. A. restituit.

φίλε] om. Vind. B. Vat. M.
ἀγνώμονες] Lex. Bekk. p. 329,
30: Ἀγνωμόνως· ἀνοήτως η̄ ἀχα-
ρίστως. λέγονται δὲ παρὰ Πλά-
τωνι ἀγνώμονες οἱ ἀμαθεῖς. Cuius glossematis posteriorem par-
tem ad nostrum locum pertinere alterum eiusdem lexicī docet
p. 334, 8: ἀγνώμονες· οἱ πανο-
γνωμονοῦντες. Πλάτων δὲ ἐν
Πόλιτεια ἀγνώμονας ἔφη τοὺς
γνῶσιν μὴ ἔχοντας, ἀλλ᾽ ἀνεπι-
στήμονας. — *ingratos* Fic.

δύσνοι] δύσνοις Vind. F. Flor.
RT.

οἱ] om. Mon. B. int. vers.
Vind. F.
ἀκονσόμενοι] Ita Mon. B. a

m. pr. sed a m. s. ἀκονσόμεν
σον.

ἡ] ἡ Vind. F.
με] γε Par. DK.

τοίνυν] om. Vind. E. Fic.
πιστεύοντος μὲν γὰρ] μὲν om.
Vind. DE. Mon. B. Par. DK. et
a m. pr. Ven. B. Nil amplius
Stallbaumum suspicer e Flor. T.
adnotare voluisse, quem πιστεύ-
οντες γὰρ exhibere scribit.

εἶχεν η̄] εἶχε Mon. B. Flor. U.
Par. K. sec. Bip. Bekkerus tan-
tum η̄ in Par. D. et in Mon. B.
omissum refert.

παραμυθία] παραμυθεῖσθαι
Mon. B. Flor. U.

ἐν γὰρ — ὅφλεῖν 451. A.] laudat Stobaeus s. I. p. 24. Sed in
Trinc. omissa sunt.

τε καὶ φίλων] om. Stob. τε καὶ E
οὐ φαύλων Mon. B. Flor. U.

ἀσφαλὲς] ἀποσφαλὲς Vind. E.
θαρραλέον] Ita Stob. cod. A.
et ed. Gaisf. θαρραλέον Gesn.

τοὺς] τούς τε Vind. E.
δῆ] om. Vat. B.

οὐ τι οὐ τοι Vind. BE. Mon.
B. Par. K. Vat. M. Flor. U.

ὅφλεῖν] Sic cum Stobaeo scri- 451
bendum putavi pro vulg. ὅφλειν.
(Vind. F. ὕφλειν.) Conf. Butt-
manni gramm. II. p. 204. et Mat-
thiae gramm. p. 479.

σφαλεῖς] σφαλῆς Vind. F. a
m. pr.

οὐ μόνον αὐτὸς, ἀλλὰ] om.
Vind. B. deletis quatuor circiter
litteris.

φίλους] ἄλλους Vind. F. Flor.
R. cuius in margine φίλους ad-
scriptum est.

ξυνεπισπασάμενος κείσομαι περὶ ἀγηιστα δεῖ σφάλλεσθαι.
προσκυνῶ δὲ Ἀδράστειαν, ὡς Γλαύκων, χάριν οὖν μέλλω
λέγειν. ἐλπίζω γὰρ οὖν ἔλαττον ἀμάρτημα ἀκουσίως 457
τινὸς φονέα γενέσθαι, ηὔ πατεῖνα καλῶν τε καὶ ἀγα-
θῶν καὶ δικαίων νομίμων πέρι. τοῦτο οὖν τὸ κινδύνευ-
μα κινδυνεύειν ἐν ἐχθροῖς κρείττον, ηὔ φίλοις. ὥστε
B εὐ με παραμυθεῖ. Καὶ ὁ Γλαύκων γελάσας Ἄλλ, ὡς Σώ-

ξυνεπισπασάμενος] συνεπ. Lob.
Vind. BDE. in quo συν inter ver-
sus legitur. ξυνεπιστάμενος Par.
K. sec. Bekk.

δεῖ σφάλλεσθαι] σφ. δ. Lob.
Vind. BD. Vat. BM.

δικαίων νομίμων] Ita Par. ADK.
Vind. F. Mon. B. Ven. C. Ang.
B. Vat. H. νομίμων καὶ δικείων
Vind. BD. δικαίων καὶ νομίμων
reliqui codices (quamquam de Flo-
rentinis Stallbaumii silentium eo
magis suspectum est, quod etiam
Parisiensis K. lectionem iam a
Bipontinis indicatam commemorare
neglexit) cum editionibus omnibus.
Quum sermonis, in quem ingredi
Socrates dubitat, argumentum ad
institutum quoddam in civitatem
recipiendum spectet, caussam du-
bitationis hanc dicere potuit, quicun-
que de pulchris, bonis et iustis
institutis falsa doceat, hoc est,
pro pulchris vendit, quae tur-
pia sint, pro bonis mala, pro
iustis iniusta commendet. Ac νό-
μιμα saepe substantivi loco esse
et adiectiva recipere docuit Heindorius ad Sophist. §. 32. cui
Astius ad Leg. L. I. p. 636. B.
articuli praetermissionem, quae
illo Legum loco necessaria est,
obiicere non debebat. Nam si,
ut exemplo utar ab Heindorio
prolato, tyrannica instituta cun-
cta τὰ τυραννικὰ νόμιμα dicere
licet, quod Astius concedit, quid-
ni unum eorum recte τυραννικὸν
νόμιμον dicatur? Profecto non
minus, quam ab Euripide Suppl.
19. sepulturam negantes νόμιμον
ἀτίζοντες θεῶν dicuntur. Ita-
que sensu pariter atque linguae
usu permittente codicum aucto-

ritatem secutus sum. Fateor
autem graviorem et augusto-
rem mihi sententiam videri, si
non solum de institutis, sed de
quibuslibet rebus honestis adeo-
que de ipso honesto Socrates
fraudem capitalem pronuntiet, et
quoniam id, quod rationi conse-
taneum et tale est, ut legibus
sanciri mereat, νόμιμον appellari
potest, ut Vol. I. p. 374. sq. vi-
dimus, vulgatam lectionem per se
magis probabilem alterique non ut
verae, sed ut proprius ad veram
accidenti a me postpositam esse,
quum Platonem ἀπατεῖνα καλῶν
τε καὶ ἀγαθῶν καὶ νομίμων πέρι
scripsisse, δικαίων ex glossemate
accessisse suspicer. — Ficinus:
qui circa constitutiones de hone-
stis et bonis iustisque fallit. Ne
is quidem καὶ legit, sed νομίμων
a reliquis genitivis separavit eos-
que ab illo regi statuit, qua in
re haud dubie falsus est.

πέρι. τοῦτο] πέρι τοῦτο cum
puncto ante πέρι Ald. Bas. ab.
Steph. (Flor. R.) Iam in prima
ed. Astius rectam interpunctionem
secundum Par. K. exhibuit. πέρι.
τοῦτ' Lob. Vind. BD. Vat. M.

κινδύνευειν] κινδύνευειν Vind.

D. κινδύνειν Ald.

κρείττον] in marg. Lob.

ώστε] ὥστε Bas. b.

εὐ] οὐκ εὐ Mon. B. Flor. U. B.
Astius in sec. et tert. ed. Bekke-
rus et Stallbaumius. quare mel-
lius, o Glauco, me consolare
Fic. quo duce Astius in prima
ed. αὐτὸν pro εὐ dedit, παραμυθεῖ
intactum relinquens, e quo πα-
ραμυθοῦ facere debebat. Negationem
Cornarius ecl. p. 99. ad-
dendam ostenderat, cuius iudi-

κρατεῖς, ἔφη, οὐ τι πάθωμεν πλημμελὲς ὑπὸ τοῦ λόγου, ἀφίεμέν σε ὥσπερ φόνου καθαρὸν εἶναι καὶ μὴ ἀπατεῶντα ήμων. ἀλλὰ θαρρήσας λέγε. Ἀλλὰ μέντοι, εἶπον, καθαρός γε καὶ ἐκεῖ ὁ ἀφεθεῖς, ὡς ὁ νόμος λέγει· εἰκὸς δέ γε, εἴπερ ἐκεῖ, κἀνθάδε. Λέγε τοίνυν, ἔφη, τούτου γέ ἔνεκα. Λέγειν δὴ, ἔφην ἐγώ, χοη ἀνάπαλιν αὖ νῦν, ἡ ποτε ἵσως ἔδει ἐφεξῆς λέγειν. τάχα δὲ οὕτως ἀν ὁ-

cium Stephanus in annot. p. 21. ita probabat, ut haec pro ironice dictis accipi posse sentiret. „Vel ante εὐ^τ ponenda est negativa particula οὐ^τ, vel. haec ut ironice dicta sunt accipienda.“ Non me fugit, quid hic ironiae alienum sit, quam nemo, opinor, non agnosceret, si statim initio Socrates εὐ^τ γέ με παραμυθεῖ Glauconi responderet. Sic L. III. p. 435. C. idem εἰς φαῦλον γε αὖ σκέψασα ἐμπεπτώμασεν sine offensione ironice dixit, et tamen exposita caussa, cur difficilis illa quaestio esset, subiicere vix potuisset ὥστε εἰς φαῦλον αὖ σκέψασα ἐμπεπτώμασεν, quin absurde loqui visus esset. Ea enim vis est coniunctionis ὥστε, ut effecti exspectationem moveat, quod si contra, atque res se habet, enumiatur, non iam ironice, sed abso-
nōne dici videtur. Hic vero vocī ac pronuntiationi aliquid tribuen-
dum est, quā ubi querula et ad
lamentantis modum leviter inflexa
usum Socratem finxeris, non mi-
nus haec ferenda et probanda in-
telliges, quam Germanica du giebst
mir also einen schönen Trost! Si-
mul nonnihil ridiculi accedere et
Glauconem non temere risisse
senties.

παραμυθεῖ] Ita Lob. Vind. BDE. et cum η super ει F. Ven. B. Par. D. Ang. B. Vat. HM. Flor. ACV. παραμυθῆ Mon. B. παραμυθῆ Ald. Bas. ab. Steph.

γελάσας] πλάσας Vind. F. a m. pr. om. Fic.

Ἄλλο] om. Lob. Vind. BD. Vat. M.

σε] σον Vat. H.

καθαρὸν] καὶ καθ. Par. A.

Vat. H. Flor. TV. h. e. *absolvimus te veluti cædis, ut et liber (a culpa) neque nobis fraudis auctor sis.* Sed ipsum illud μὴ ἀπατεῶντα εἶναι ab altero καθαρὸν εἶναι, si hoc a φόνον separatur, nihil iam differt, ut ea separatione facta vix simplici καὶ, nedum dupli locu sit. Contra vulgatae lectionis sensus hic est: *absolvimus te, ut velut cædis (quoniam eius criminis mentionem fecisti) insons neque nobis fraudis auctor sis.* Quae sententia vera et perspicua videtur. Quid Ficinus legerit, ex eius interpretatione non satis appetet: *absolvemus te velut ab homicidio, et insontem in hac deceptione pronuntiabimus.* In Vind. E. sequens καὶ post εἶναι inter versus legitur.

καὶ ἐκεῖ ὁ] καὶ om. Vat. B. καὶ ὁ ἐκεῖ Vind. F. Ang. B. Flor. R.

δέ γέ] γε om. Par. K. et Astius. κἀνθάδε] κἀνθάδε Ald. Bas. ab. κἀνθάδε Steph.

τούτον] τοῦ Vind. F. Ang. B. δὴ] δὲ Par. A. Vat. H. Flor. ACTV.

ἡ ποτε] Ita cum plerisque Vind. F. ἡ ποτε Ang. B. Flor. RT. quod Bekkerus et post Bekkerum Astius et Stallbaumius receperunt. Ferri posset τότε, si certus in superioribus locus esset, quo Socrates haec deinceps exponi debuisse diceret. Atqui poterant et libro tertio, ubi de educatione custodum, et paullo post initium quarti, ubi de munere eorum sermo esset, inserenda fuisse videri. Itaque aptissima est particula indefinita, quam non omit-

θῶς ἔχοι, μετὰ ἀνδρεῖον δρᾶμα παντελῶς διαπερανθὲν τὸ γυναικεῖον αὐτὸν περαίνειν, ἄλλως τε καὶ ἐπειδὴ σὺ οὗτο προκαλῇ. ἀνδρώποις γάρ φῦσι καὶ παιδευθεῖσιν ὡς ἡμεῖς διηλθομέν, κατ’ ἐμὴν δόξαν οὐκ ἔστ’ ἄλλη δρᾶν παίδων τε καὶ γυναικῶν κτῆσίς τε καὶ χρεία, ἢ κατ’ ἐκείνην τὴν δόμην ιοῦσιν, ἥνπερ τὸ πρῶτον ὀρμήσαμεν. ἐπεχειρήσαμεν δὲ που ὡς ἀγέλης φύλακας τοὺς D ἄνδρας καθιστάναι τῷ λόγῳ. Ναὶ. Ἀκολουθῶμεν τοίνυν καὶ τὴν γένεσιν καὶ τροφὴν παιδαπλησίαν ἀποδιδόντες, καὶ σκοπῶμεν, εἰ ἡμῖν πρέπει, ἢ οὐ. Πῶς; Ἐφη. Ὡδε· τὰς θηλείας τῶν φυλάκων κυνῶν πότερα ξυμφυλάττειν οἴομεθα δεῖν ἀπερ ἀν οἱ ἄρδενες φυλάττωσι, καὶ ξυ-

tere debebat Ficinus. Neque vero serio hanc rerum dispositionem vituperare existimandus est Socrates, nedum id, quod continuo addit (*τάχα δὲ etc.*) cum Schleiermachero non ad eius excusationem, sed ad reprehensionem pertinere statuendum.

C ἔχοι] om. Vind. B. ἔχει Mon. B.

ἀνδρεῖον] τὸ ἀνδ. Steph. (Flor. V.) et Astius.

δρᾶμα] δρᾶγμα Ven. B. Respxit hoc Proclus in Civ. p. 419, 33.

προκαλῇ]. προκαλεῖ Vind. F. et cum η super ει E. Astius, Bekkerus et Stallbaumius.

φῦσι] φύσει Vind. F. a m. pr. ἔστι] Ita Par. A. Vind. DEF. Ven. B. Vat. H. Flor. ACRTV. est Fic. ἔσται reliqui codices editique ante Bekkerum. Fortasse ἔστι item futurum est, quod tempus et ad ιοῦσιν paullo accommodatius et ad proxima haud minus aptum praesente videtur. Quamquam praesens quoque recte habet.

τὸ πρῶτον] τοπρῶτον Lob. Vind. BD.

ὁρμήσαμεν] ὀρμήσαμεν Vind. F. a m. pr.

καθιστάναι] καθεστάναι Vind. D.

λόγῳ.] λόγῳ; editi ante Bekkerum cum Lob. Sed quantum dubitationis hoc loco significan-

dum esset, satis expressum est particula πον. In Vind. D. post sequens Ναὶ signum interrogandi factum.

ἡμῖν] νῦν Lob. Vind. B. D Vat. M.

πόσπετ] πρέποι Vat. B.

Ὦδε·] ἔστι. Vind. B. deleto post proximum Ἐφη puncto.

τὰς θηλείας — κατὰ ταντά. 452. A.] laudat Galenus de Hipp. et Plat. decr. L. VIII. T. V. p. 735. Kühn.

ἄν] om. Vat. B.

ἄρδενες] ἄρνες, e corr. ἄρενες, Vind. D.

φυλάττωσι] φυλάττουσιν Par. D. Ald. Bas. a. φυλάττουσι Mon. B. Bas. b. φυλάττωσιν (Flor. ACU.) Steph. et Astii prima et sec. ed.

τὰλλα] τὰ ἄλλα Gal. τ' ἄλλα Vind. E. τὰλλα Vind. BDF. Mon. B. Steph.

ποιηῇ] ποιῶσι Par. K.

οἰκονομεῖν] quasi domestica adseruisse Fic.

ἀδυνάτους] ad forensia opera impotentes Fic.

τὸν] τὴν Mon. B. τὸ, sup. ν, Vind. D.

Κοινῇ] κοινὴ Vind. E. Mon. B.

πλὴν] πλὴν ταῖς μὲν Flor. T. Galeni ed. Bas. T. I. pag. 331. Astius in prima et tertia, Stallbaumius in secunda editione. Stephanus annot. p. 21: „deesse

θηρεύειν καὶ τᾶλλα ποινῆ πράττειν, ἢ τὰς μὲν οἰκουμενῶν ἔνδον ὡς ἀδύνατους διὰ τὸν τῶν σκυλάκων τόκον τε καὶ τροφὴν, τοὺς δὲ πονεῖν τε καὶ πᾶσαν ἐπιμέλειαν ἔχειν περὶ τὰ ποίμνια; Κοινῆ, ἔφη, πάντα· πλὴν ὡς ἀσθενεστέραις χρώμεθα, τοῖς δὲ ὡς ἰσχυροτέροις. Οἶνόν τ' Εοῦν, ἔφην ἐγὼ, ἐπὶ τὰ αὐτὰ χρησθαί τινι ξώφ, ἀν μὴ τὴν αὐτὴν τροφήν τε καὶ παιδείαν ἀποδιδῷς; Οὐχ οἶνόν τε. Εἰ ἄρα ταῖς γυναιξὶν ἐπὶ ταῦτα χρησόμεθα καὶ τοῖς ἀνδράσι, ταῦτα καὶ διδαχτέον αὐτάς. Ναὶ. 452 Μουσικὴ μὲν ἐκείνοις τε καὶ γυμναστικὴ ἐδόθη. Ναὶ. Καὶ ταῖς γυναιξὶν ἄρα τούτῳ τῷ τέχνα καὶ τὰ περὶ τὸν πόλεμον ἀποδοτέον καὶ χρηστέον κατὰ ταῦτα.

Elikos ἐξ

puto ταῖς μὲν ante ὡς ἀσθενεστέραις: ut sequitur τοῖς δὲ ante ὡς ἰσχυροτέροις.“ Cf. Bernhardy de syntaxi linguae Graecae p. 309. ubi inter alia exempla unum ex Aristotele allatum est, quale desiderabat Stallbaumius, cum generis diversitate coniunctum. Sed nostro loco codicum lectio exemplorum auxilio non eget, neque ταῖς μὲν per ellipsis omissum, sed ταῖς θηλείαις utpote ex ipsa sententia et ex adiectivo ἀσθενεστέραις facile intelligendum non enuntiatum est.

ἀσθενεστέραις] ἀστενεστέραις
Vind. D.

E δὲ] δ' Vind. F. Ang. B. Gal.
ἄν] ἄν Gal.

τροφὴν τε καὶ παιδείαν] παιδείαν τε καὶ τροφὴν Flor. T.

οἶνόν τε] οἶτε Vind. E.

γυναιξὶν] γυναιξὶ Lob.

ἐπὶ] om. Bas. b.

ταῦτα] τὰ αὐτὰ Gal. Bas. b.
ταῦτα Vind. F. sed prior accentus a m. s. additus est. Eodem modo paullo post.

καὶ] om. Lob. Vind. BD.

ἀνδράσι] ἀνδράσιν Vind. E.

ταῦτα] τὰ αὐτὰ Gal.

αὐτάς.] αὐτάς; Ald. Steph. Bekkerus et Stallbaumius, quod non tam sensui, quam conformatio[ni] verborum syllogismi speciem prae se ferentium repugnat.

452 τε] om. Vind. E. Vat. H. Flor. CTV. Gal. Enclitica ad μουσικὴ

pertinens propterea huc reiecta videtur, quod particulae μὲν neque praeponi neque subiungi commode posset, et ut ἐνετνοις sonum acciperet. Cf. Leg. L. XII. p. 966. A: Τί δὲ δή; περὶ καλοῦ τε καὶ ἀγαθοῦ ταῦτὸν τοῦτο διανοούμεθα; ὡς πόλλῃ ἔστι μόνον ἐναστον τούτων, τοὺς φύλακας ἡμῖν γνωστέον, ἢ καὶ ὅπως ἐν τε καὶ ὅπη; Κλ. Σχεδὸν ἔστι. ἐξ ἀνάγνης δεῖν καὶ ὅπως ἐν διανοεῖσθαι. ubi postposita enclitica ἐν insignius fit.

ἐδόθη.] ἐδώθη. Bas. ab. ἐδόθη; Astius et iidem, qui supra αὐτάς; Interrogationi obstat μὲν, Latino atqui non multo debilius, de quo cf. Vol. I. p. 310.

Ναὶ] int. vers. Vind. E.

γυναιξὶν] γυναιξὶ Lob.

τούτῳ] τοσούτῳ Vat. H. τοσούτῳ Flor. AC.

τῷ] τὰ Vind. BD. Vat. M. Par. K. sec. Bekk.

τέχνᾳ καὶ τὰ περὶ] τέ... καὶ τὰ πά... Vind. D.

ἀποδοτέον] ἀποδοτέον τε Gal. ἀποδοτέον; Steph. In reliquis editionibus fere comma additum est, sine necessitate, praesertim quum haec χρῆσις, quam κατὰ ταῦτα faciendam dicit, diversa sit ab illa in superioribus posita, quae ἐπὶ ταῦτα fieri dicitur. Hic eodem modo habendas mulieres statuit.

κατὰ ταῦτα.] καταταῦτα. Vind.

ῶν λέγεις, ἔφη. Ἰσως δὴ, εἶπον, παρὰ τὸ ἔθος γελοῖα ἀν φαίνοιτο πολλὰ περὶ τὰ νῦν λεγόμενα, εἰ πράξεται ἦ λέγεται. Καὶ μάλα, ἔφη. Τί, ἦν δ' ἐγώ, γελοιότατον αὐτῶν ὁρᾶς; ἦ δῆλα δὴ, ὅτι γυμνὰς τὰς γυναικας ἐν

F. πατὰ ταῦτα; Bekkerus et Stallbaumius cum Basileensis et Stephano. Mihi huius dicti conformatio eadem, quae illius *El ἄρα — αὐτάς.* videtur.

λέγεις, ἔφη] ἔ. 2. Lob. Vind. BD. Vat. BM.

"Ισως — φιλογυμναστῶσι; B.] laudat Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 413.

ἔθος] εἰωθός Euseb.

γελοῖα] γέλους Mon. B. Vat. B. Ven. C. Par. D. Ald. Bas. a. Bekkerus et Astius in sec. et tert. ed. Quum de huius nominis accentu grammatici diversa praecipiunt aliique, ut scholiasta Aristophanis Ran. 6. et Moeris, Attice γέλοιον, vulgo γελοῖον sine significationis discrimine, quod Timaeus quoque lex. p. 66. non agnoscere videtur, dictum esse doceant, alii iisque longe plurimi discrimen faciant et γέλοιον (etiam γελοῖον) Philoponus apud Eustathium in Il. T. III. p. 116, 36. Lips. et auctor lexici Coislins. p. 470.) laudi, alterum convicio affine, ut Thomas Mag. et Suidas, vel contra, ut Ammonius, Etymologus et Phaborinus statuant, alii denique γέλοιον antiquioribus Atticis, γέλοιον recentioribus, ut Aelius Dionysius ap. Eustath. in Il. T. I. p. 167, 19. assignent, mirum non est, si librarios item in diversa abire videamus; quorum auctoritatem sequi editori eo magis arbitrarium esse debet, quod ipsos pro arbitrio eam rem administrasse et scriptores accentus nullos fecisse constat. Itaque Bekkerus suo iure usus id praetulit, quod plurimum testimonium grammaticorum et ipsa ratio atque analogia nominum ὄμοιος, ἔτοιμος aliorumque Pla-

tonis aetati vindicare videretur. Neque reprehendendum puto, quod idem alibi, ut L. III. p. 392. D. 403. E. Phaedr. p. 229. E. 236. D. 257. C. 260. B. C. 274. C. et saepius properispomenon omnium, ut videtur, codicum consensu munitum tenuit. Quemadmodum enim alia illa aetate, certe Platonis in codicibus, variari videntur, ita huius nominis pronunciationem nunc antiquorem, nunc vulgarem ipsi scriptori placuisse vel secundum significationem alterutram ab eo praelatam fuisse opinari licet. Sed hoc ipsum ad codices redire nos iubet; qui quum plerisque in locis γελοῖον eadem constantia, qua ὄμοιον, exhibeant, hoc quoque loco maiorem eorum partem in iisque optimum sequi tutius fuerit.

περὶ] παρὰ Lob. Vind. BD. et super vulg. a m. s. F. Vat. BM.

τὰ] τὸ Vind. D.

νῦν] νῦν δὴ Euseb.

εἰ] ἦ Vind. F.

πράξεται] πράξεται Vind. B. Vat. M. πεπράξεται Mon. B. Bekkerus. Sed non ita Socrates multa ridicula visum iri suspicatur, si ista sic peracta fuerint, sed si posthac peragantur. Formam autem medianam, quae ipsa librario offensioni fuisse videtur, satis tuerunt item singularia βλέψονται et τοίχεσθαι aliaque a Buttmanno grāmm. II. p. 54. collata. Eodem pertinet θρέψονται L. II. pag. 376. C. et ἄξονται L. V. p. 458. D. De indicativo cf. Lobeckius ad Phryn. p. 721.

ἦ] ἦ Vind. F. et ante corr. D. Euseb. si agantur vel dicantur Fic.

ταῖς παλαιστραῖς γυμναξομέναις μετὰ τῶν ἀνδρῶν, οὐ μό-
νον τὰς νέας, ἀλλὰ καὶ ἡδη τὰς πρεσβυτέρας, ὥσπερ τοὺς
γέροντας ἐν τοῖς γυμνασίοις, ὅταν ὄντοι καὶ μὴ ἡδεῖς τὴν
ὄψιν ὅμως φιλογυμναστῶσι; Νη τὸν Δία, ἔφη· γελοῖον

λέγεται] λέγετε Vind. B. Vat.
M.

Ti] Ti δ' Euseb.

δῆλα δὴ] δηλαδὴ Lob. Vind.
BDEF. Mon. B. (Florentini omn.)
Euseb. editique ante Astium. δῆλα δὴ scribendum esse Stephanus
annot. p. 21. antea docuisse mo-
net. Id factum ab eo est annot.
p. 13. ubi pro ἦ δῆλα δὴ ὅτι
interdum ἦ δῆλον δὴ ὅτι legi
observat. Cf. Vol. I. p. 164. de
verbis δῆλον ὅτι dicta. Ficinus
ἢ δῆλα δὴ, ὅτι γυμνὰς τὰς
γυμνάς an quia nudas feminas
conspeturus sis interpretatus a
significatione formulae illius aber-
ravit.

γυμνὰς τὰς] γυμνάστας Vind.
F.

παλαιστραῖς] παλέστραῖς Vind.
E.

γυμναξομέναις] γυμναξομέναις
Ven. B.

B δὲλλὰ] ὀλλ' Euseb.

ἥτι. ἦδη] ἦ. η. Ven. B. Euseb.
cum. editis. ante Bekkerum. et
Fic.

τὰς] om. Euseb.

ὄντοι]. Ita Vind. BD. Ven. BC.
Vat. HM. Flor. ACTV. et Euseb.
ὄντοι reliqui codices cum Ald.
Basil. ab. Stephan. Ast. Quum
grammatici veteres hoc nomen ex-
plicantes nusquam duplicitis scri-
pturae, qualem in aliis, velut in
θρύλειν (cf. Vol. I. p. 103.) no-
tare solent, mentionem faciant,
uno modo ab antiquis scriptum
accepisse videntur. Scribunt au-
tem ipsi plerumque ὄντοις. Vide
scholiastas ad Hom. II. VIII.
503. Etymologum pag. 706, 47.
scholiasten Aristoph. Plut. 266.
Hesychium secundum cod. Schow.

in huius suppl. p. 681. Ti-
maeum lex. p. 228. Phrynicum
Bekk. pag. 32, 4. quorum nulli
ὄντοις memorabile visum. Alii
ὄντοις scribunt, ut Eustathius
ad Il. l. c. (Il. 283, 32. 284, 26.
Lips.) sed duplicatae q̄ rationem
non reddunt. Nam vero satis con-
stat librarios tum hoc tum aliis
consonis iterandis saepius peccas-
se, quam omittendis (cf. Vol. I.
l. c. et p. 283.) atque in primis
vocales specie ancipites, natura
longas istius modi erroribus occa-
sionem dedit. Itaque ὄντοις
antiquos pronuntiassent et scripsisse
probabile est, non ὄντοις, quod
nostro loco in optimo codice ex-
stare dicitur. Sed Tim. pag. 71.
C. idem codex cum tribus aliis
Bekkeri et uno Vindobonensi
praestantissimo ὄντον exhibet,
quod aliorum quoque scriptorum
codices meliores habere solent.
Conf. quos laudavit Passovius in
lexico. Ceterum Ruhnkenii con-
iectaram ad Tim. lex. l. c. gram-
maticum et nostro et Timaei loco
ὄντοις pro ὄντοις legisse suspi-
cantis codices non confirmant.

καὶ μὴ ἡδεῖς τὴν ὄψιν] veter-
nosque Fic.

φιλογυμναστῶσι] Ita Vind. F.
correctus in στ. φιλογυμνασθῶσι
Vind. D. Par. DK. sec. Bekker.
Euseb. Ald. Bas. ab. φιλογυμνα-
στῶσιν Bekkerus.

Δία] δι' Vind. F. Ang. B.
Flor. R. Δι' Bekkerus. διὰ Ald.

γελοῖον] γελοῖον Lob. γέλοῖον
Mon. B. Ald. Bas. a. Bekkerus
et Astius in sec. et tert. ed.
Γελοῖον Steph. maiuscule ab
Aldo positam revocans, quam Ba-
sileenses recte minuerant.

γὰρ ἀν ὡς γε ἐν τῷ παρεστῶτι φανείη. Οὐκοῦν, ἦν δ' ἐγὼ, ἐπείπερ ὡρμήσαμεν λέγειν, οὐ φοβητέον τὰ τῶν χαριέντων σκώμματα, ὅσα καὶ οἷα ἀν εἴποιεν εἰς τὴν τοιαύτην μεταβολὴν γενομένην καὶ περὶ τὰ γυμνά-
C σια καὶ περὶ μουσικὴν καὶ οὐκ ἐλάχιστα περὶ τὴν τῶν ὄπλων σχέσιν καὶ ἵππων ὁχήσεις. Ὁρθῶς, ἔφη, λέγεις.
Ἄλλ' ἐπείπερ λέγειν ἡρξάμεθα, πορευτέον πρὸς τὸ τρα-
χὺ τοῦ νόμου, δεηθεῖσί τε τούτων μὴ τὰ αὐτῶν πράτ-
τειν, ἀλλὰ σπουδάζειν, καὶ ὑπομνήσασιν, ὅτι οὐ πολὺς
χρόνος, ἐξ οὗ τοῖς Ἑλλησιν ἐδόκει αἰσχρὰ εἶναι καὶ γε-
λοῖα ἀπερ νῦν τοῖς πολλοῖς τῶν βαρβάρων, γυμνοὺς

γε] γ' Lob. Vind. BDE. quod Bekkerus quoque in suis invenisse adeoque recipere voluisse videtur, quum Vat. B. a m. pr. γ' omittere annotaverit, non γε. Quamquam ex eo, quod hanc varietaatem ante illud δι' ex Ang. B. alatum posuit, aliud quid ab eius operis hic peccatum suspicari licet.

παρεστῶτι] παρόντι Par. K.
φανείη] φανῆναι Lob. Vind. B. Vat. M.

φοβητέον] φορητέον iidem.
καὶ οἷα] om. Mon. B. καὶ οἳ Bekkerus et Astius in tertia ed.

εἰς] εἰς Mon. B. correctus.
γενομένην], γεν. ἀν Mon. B. Flor. U. Bekkerus et Stallbaumius in prima ed. quod, quia mutatio simpliciter et sine conditio-
ne facta ponitur, ferri non potest.

C περὶ μουσικὴν] περὶ om. Vind. E.

ὄπλων] ὄχλων Bas. b.
σχέσιν] κρῆσιν Vind. E.
δρῆσις.] ὄχλήσεις Vat. B. Lob. Vind. B. Ven. C. δρῆσις; Astius, Bekkerus et Stallbaumius, non sine ambiguitate et aliter, quam Glauco videtur intellexisse.

Ἄλλ'] ἀλλ' Ald. Steph.
τὰ] τὸν Vind. D.
αὐτῶν] αὐ. Lob. Vind. DF. Ald. Bas. ab.
ὑπομνήσασιν] ὑπομνήμασιν Vind. F. a m. pr.
ὅτι οὐ] οὐ τι οὖν Vind. F.

ἔξ οὗ] ἔξον Vind. E.

γελοῖα] γέλοια Lob. Vat. B. Ven. C. Par. D. Bekkerus et Astius in sec. et tert. ed.

ἀπερ] ὥσπερ Par. K. secund. Bekk.

τοῖς] om. Vind. E. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV.

γυμνοὺς] γυμναστοὺς Lob. γυ-
μνοὺς τοὺς Vind. BD. Vat. M.

πρῶτοι] πρῶτα Mon. B. πρῶ-
τον Ven. C. Par. DK. (Flor. UV.) editi ante Bekkerum.

λακεδαιμόνιοι] λακεδαιμονίοις D Lob. Vind. BF. Vat. M. Par. K. sec. Bip.

τοῖς] om. Vind. E.
πάντα τὰ τοιαῦτα] Ita Par. A. Vind. DEF. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. τ. π. Mon. B. cum reliquis codicibus editisque ante Bekkerum.

συγκαλύπτειν] ξ. Vind. F.
πάντα τὰ τοιαῦτα] τὰ τοι. π. Vind. BD. Vat. M.

τοῖς] om. Mon. B. Flor. U. Par. K. sec. Bekk.

γελοῖον] γέλοιον Bekkerus et Astius in sec. et tert. ed. item paullo post.

τοῖς] τῆς Ald.
λογίοις] Ita, sup. λογίοις, Vind. F.

τοῦτο] τούτον Ven. C.
ὅτι μάταιος — τοῦ ἀγαθοῦ.
E.] laudat. Stobaeus serm. I. p. 24.

ἡγεῖται] om. Vind. B.
ἢ] om. Par. K.

ἄνδρας δρᾶσθαι. καὶ ὅτε ἥρχοντο τῶν γυμνασίων πρῶτοι μὲν Κρῆτες, ἐπειτα Λακεδαιμόνιοι, ἐξῆν τοῖς τότε Δάστείοις πάντα ταῦτα νωμῷδεῖν. ἢ οὐκ οἶει; "Ἔγωγε. Άλλ' ἐπειδὴ, οἷμαι, χρωμένοις ἀμεινον τὸ ἀποδύεσθαι τοῦ συγκαλύπτειν πάντα τὰ τοιαῦτα ἐφάνη, καὶ τὸ ἐν τοῖς ὄφθαλμοῖς δὴ γελοῖον ἔξεργήν ὑπὸ τοῦ ἐν τοῖς λόγοις μηνυθέντος ἀρίστου, καὶ τοῦτο ἐνεδείξατο, ὅτι μάταιος ὁ γελοῖον ἄλλο τι ἥγεῖται, ἢ τὸ κακὸν, καὶ ὁ γελώτοποιεῖν ἐπιχειρῶν πρὸς ἄλλην τινὰ ὄψιν ἀποβλέπων ὡς γελοίον, ἢ τὴν τοῦ ἄφρονός τε καὶ κακοῦ, ἢ Επουνδάζει πρὸς ἄλλον τινὰ σκοπὸν στησάμενος, ἢ τὸν

γελωτοποιεῖν] γελοτοποιεῖν
Vind. F. Stob. Trinc.

πρὸς] εἰς Stob.

τινὰ] τινὰν Ven. C.

ἢ τὴν] ἢ om. Stob. Trinc.

E ἢ σπουδάζει] Hanc lectionem a Bekkero secundum Par. A. quippe cuius discrepantiam in commentariis nullam prodiderit, exhibitam tenui, quia una ex omnibus in reliquis libris existentibus sensum probabilem efficit et quomodo reliquae ὄρται sint magis perspicuum reddit. Scilicet obliterata particula ἢ deesse aliquid apparebat, quod ex sequentibus supplendum visum, quum ipsum supplementum ad superiora relatum mancum esse intelligeretur, novo ab aliis glossemate auctum est. Sic triplex codicum exstitit lectio, σπουδάζει, omissione ἢ, in Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. B. Ald. Bas. ab. reperta, καὶ καλοῦ αὐτὸν σπουδάζει in Vind. DEF. Ven. C. Par. DK. Ang. B. Vat. H. Flor. ACTV. et Stobaeo, cuius una Gesneri editio ἢ pro αὐτῷ habet, denique καὶ οὐ καλοῦ αὐτοῦ, in Mon. B. et Flor. U. inventa; quarum medium Ficinus securus, sed diversa ab interpolatore, qui καλοῦ ad σποκὸν retulisse videtur, sententia interpretatus aut honestum quicquam et studio dignum existimat pro his, alio respiciens pro πρὸς ἄλλον τινὰ σποκὸν στησάμενος posuit. Quod ad nostram lectionem atti-

net, ἢ σπουδάζει interruptam participio ὁ ἐπιχειρῶν constructionem pronominis ὁς cum verbo finito continuat et ad sententiam reprehensione caret, sed eo ipso, quod omissum orationis cursum repetere nos iubet, molestiam creat et naturalem quasi incessum sermonis turbat. Itaque praestare fateor Stephanianam ἢ σπουδάζειν, quam ipse annot. pag. 21. pro vitiosa priorum σπουδάζει secundum Ficinum reposuisse ostendit, quam a Stallbaumio in sec. ed. manifesto errore depravatam dici miror, praesertim quum eundem in prima videam infinitivum non solum in textu reliquise, sed etiam in annotatione recte explicuisse et, quo debebat, ad ἐπιχειρῶν retulisse. Neque prorsus destituta ea lectio codicum auctoritate videtur: teste Stallbaumio in Flor. R. καὶ καλοῦ αὐτὸν σπουδάζειν prescriptum est. Sed unum hunc et aperto glossemate inquinatum optimo et saltem tolerabilem lectionem atque puram offerenti anteponere temerarium existimo. Bekkerum secutus est in tertia ed. Astius, Stallbaumius in prima καὶ αὐτὸν σπουδάζειν, in altera καὶ αὐτὸν σπουδάζει edidit.

πρὸς] εἰς Stob.

στησάμενος] ἐνστησάμενος
Vind. E. Flor. C. στησάμενον
Stob. cod. B.

τοῦ ἀγαθοῦ. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἡρόδοτος δὲ τοῦτο περὶ αὐτῶν ἀνουμολογητέον, εἰ δυνατὰ, ηὔ οὖν, καὶ δοτέον ἀμφισβήτησιν, εἴτε τις φιλοπαισμων εἴτε σπουδαστικὸς ἐθέλει ἀμφισβητῆσαι, πότερον
 453 δυνατὴ φύσις ηὔ ἀνθρωπίνη, ηὔ θήλεια, τῇ τοῦ ἄρρενος γένους κοινωνῆσαι εἰς ἅπαντα τὰ ἔργα, ηὔ οὐδὲ εἰς ἓν, ηὔ εἰς τὰ μὲν οἷα τε, εἰς δὲ τὰ οὖν, καὶ τοῦτο δὴ τὸ περὶ τὸν πόλεμον ποτέρων ἐστίν; Ἡρόδοτος δὲ τὸν πόλεμον ποτέρων ἐστίν; Οὐδὲν γε, ἔφη. Βούλει οὖν, ηὔ δὲ ἐγώ, ήμεῖς πρὸς ἡμᾶς αὐτοὺς ὑπὲρ τῶν ἄλλων ἀμφισβητήσωμεν, ἵνα μὴ
 B. ἔρημα τὰ τοῦ ἑτέρου λόγου πολιορκηταὶ; Οὐδὲν, ἔφη, κωλύει. Λέγωμεν δὴ ὑπὲρ αὐτῶν, ὅτι, ὃς Σώκρατές τε

ἀγαθοῦ.] ἀγαθοῦ; Lob. Vind.

B. Ἡρόδοτος] Ἡρόδοτος Vind. F.

οὖν] om. Par. D.

τοῦτον] τοῦτον Ang. B. et ante corr. Vind. F.

αὐτῶν] Ita Astius in prima ed. ex Par. K. sec. Bip. Bekkerus ex Ven. B. Mon. B. Ang. B. Stallbaumius ex Flor. RU. ediderunt. His accedit Vind. E. et int. vers. F. qui in ipso versu cum reliquis codicibus editionibusque Astio anterioribus αὐτὸν exhibet.

ἀνουμολογητέον] ἀν οὐ. Vind. F.

φιλοπαισμων] Hoc ab Astio iam in prima ed. secundum scholiasten Atticos ita dixisse testantem pro vulgato φιλοπαιγμων receptum, deinde in Par. A. Vind. E. Vat. H. Flor. ACV. inventum et a Lobeckio ad Phryn. p. 241. probatum cum Bekkero et Stallbaumio tenendum putavi. Etiam Ven. C. σ, sed superscripto γ, et Vat. B. σ super γ exhibet et in Vind. F. γ a correctoris manu illatum est. Similiter Crat. p. 406. C. meliores libri in iisque Lob. φιλοπαισμωνες habent, quod restituit Bekkerus. Sed Euthyd. p. 278. C. pro vulgato παισαι in Clark. Lob. aliisque non contemnendis legitur παιξαι. φιλο-

παίγμονος Hom. Od. XXIII. 134. extra controversiam positum est.

ἐθέλει] ἐθέλοι Ven. B. Flor. T. ἀνθρωπίνη] Pollux II. 5: παῖς ἀνθρωπεία τέχνη, ὡς Θουνδίδης, (an L. II. c. 50. ubi in nostris codicibus ἀνθρωπεία φύσις est?) παῖς ἀνθρωπίνη φύσις, ὡς Πλάτων.

γένους] γ. φύσει Mon. B. Flor. 453 U.

εἰς ἓν] εἰεν ἓν Vind. E.

οἷα τε] οἷά τε Lob. Vind. BEF. Ald. Bas. ab. οἷά τε Mon. B.

δὲ τὰ] τὰ δὲ Lob. Vind. BD. Vat. M. Conf. Bernhardy synt. p. 310.

τὸν] τὸ cum ν int. vers. Vind. F.

ποτέρων] ποτέρω Vind. D.

καλλισταῖ] recte Fic. item paullo post.

ὡς] εἰς Ang. B. Vind. F.

τελευτήσει] τελευτήσειεν Bekkerus.

γένε] γένε Vind. F. Ang. B.

Βούλει οὖν — ἀπολογεῖσθαι; C.] laudat Galenus T. V. p. 736. βούλη etc. Vind. E.

ἡμᾶς] ἡμᾶς Vind. B.

ἀμφισβητήσωμεν] ἀμφισβητήσωμεν Vind. F. Ven. B. Par. DK.

καὶ Γλαύκων, οὐδὲν δεῖ ὑμῖν ἄλλους ἀμφισβητεῖν· αὐτοὶ γὰρ ἐν ἀρχῇ τῆς κατοικίσεως, ἣν φάνταστε πόλιν, ὠμολογεῖτε δεῖν πατὰ φύσιν ἔκαστον ἐν τὸ αὐτοῦ πράττειν. Ὡμολογήσαμεν, οἶμαι· πῶς γὰρ οὐ; "Εστιν οὖν ὅπως οὐ πάμπολυ διαφέρει γυνὴ ἀνδρὸς τὴν φύσιν; Πᾶς δ' οὐ διαφέρει; Οὐκοῦν ἄλλο καὶ ἔργον ἐκατέρῳ προσήκει προστάττειν τὸ πατὰ τὴν αὐτοῦ φύσιν; Τί C μήν; Πᾶς οὖν οὐχ ἀμαρτάνετε νῦν καὶ τὰναντία ὑμῖν αὐτοῖς λέγετε, φάσκοντες αὖ τοὺς ἀνδρας καὶ τὰς γυναικας δεῖν τὰ αὐτὰ πράττειν, πλεῖστον κεχωρισμένην φύσιν ἔχοντας; "Εξεις τι, ὡς θαυμάσιε, πρὸς ταῦτ' ἀπολογεῖσθαι; Ὡς μὲν ἔξαιφνης, ἔφη, οὐ πάνυ δάδιον· ἀλλὰ δοῦ δεήσομαί τε καὶ δέομαι καὶ τὸν υπὲρ ἥμαν

sec. Bekk. Vat. H. Flor. ACV.
Gal. Bas. p. 332. Ald. Bas. ab.
ἔτερον] ἔταιρον Vind. E.
πολιορκῆται] πολιορκεῖται Gal.
Bas.

B ἔφη] om. Vind. E.

λέγομεν] λέγομεν Vind. F.
Ang. B. Flor. R. Par. K. secund.
Bekk. Gal. Bas. λέγω μὲν Ven.
B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACV.
dicam Fic.

τε] om. Mon. B.

δεῖ] δὲ, a m. s. addito acuto
et superscripta syllaba *ov*, Vind.
F. δέον Flor. R. δέος Ang. B.
om. Vind. D.

ὑμῖν] ἡμῖν Lob. Vind. BE. et,
sup. ὁ, D. Flor. AC. Bas. a.
ἡμᾶς Bas. b.

ἄλλους] ἄλλως Vind. D. Mi-
rum est in hac sententiae perspi-
cuitate Heusdium spec. crit. in
Plat. 1803. p. 119. ἄλλους per-
versum dicere et in ἄλλήλοις mu-
tantum pronuntiare potuisse, quem
satis superque refutavit in comm.
Astius, sed refutationi nolens ini-
uriā addidit, dum Heusdium
scribit ἄλλήλους coniecssisse, quod
quum absurdum sit, tamen Stall-
baumius in utraque editione bona
fide repeti passus est.

κατοικίσεως] πατοικίσεως Lob.
Vind. BDEF. Ven. B. a m. pr.
Vat. HM. Flor. ACRTV. Gal.

φάνταστε] οἶμαιςτε Gal. φάνταστε
τε Vind. F.

ὠμολογεῖτε] ὠμολογεῖτε Vind.
DF. Ang. B. Vat. H. Gal.

ἔνα] om. Lob. Vind. BD. Vat.
BM.

αὐτοῦ] αὐτόν. Vind. D. Ald.
Bas. ab.

οἶμαι] εἰναι Vind. E. Flor.
ACR. om. Fic.

δ'] om. Gal.

καὶ ἔργον] καὶ om. Vind. DE.
Vat. H. Flor. T. Fic.

αὐτοῦ] αὐτόν. Vind. D. Mon. B.
ἐσαντοῦ Lob. Vind. B. Vat. BM.
Gal.

ἀμαρτάνετε] ἀμαρτάνεται cum C
ε super αι Vind. E.

νῦν] νῦν Gal.

ὑμῖν] ἡμῖν Flor. AC.

αὖ] om. Fic.

πλεῖστον] om. Vind. B. Vat. M.
valde Fic.

τι] om. Par. DK. Mon. B. Flor.
U. Ald. Bas. a. Steph. Astius in
prima ed. τι Vind. BF. quemad-
modum Ficinus legit: *Habebisne,*
o mirifice vir, quid ad ista pro
nostra defensione respondeas?

ταῦτα] ταῦτα Wind. DEF.
Flor. ACV.

ἔξαιφνης] ἔξαιφνης Vind. E.

καὶ τὸν] καὶ om. Fic. τὸν om.
Vind. E.

λόγον, ὅστις ποτέ ἔστιν, ἐρμηνεῦσαι. Ταῦτ' ἔστιν, ἦν 458 δ' ἐγὼ, ὡς Γλαύκων, καὶ ἄλλα πολλὰ τοιαῦτα, ἢ ἐγὼ

D πάλαι προορῶν ἐφοβούμην τε καὶ ὕκνουν ἅπτεσθαι τοῦ νόμου, τοῦ περὶ τὴν τῶν γυναικῶν καὶ παιδῶν πτῆσιν καὶ τροφήν. Οὐ μὰ τὸν Δία, ἐφη· οὐ γὰρ εὐκόλῳ ἔστιν. Οὐ γὰρ, εἶπον. ἄλλα δὴ ὡδὸς ἔχει· ἀν τέ τις εἰς κολυμβήθραν μικρὰν ἐμπέσῃ, ἀν τε εἰς τὸ μέγιστον πέλαγος μέσον, ὅμως γε νεῖ σύδεν ἥπτον. Πάνυ μὲν οὖν.

ποτέ ἔστιν] Ita Lob. Vind. BDE. Mon. B. ποτέ ἔστιν Vind. F. Ald. Bas. a. Steph. Ast. ποτέ ἔστι Bas. b. ποτέ ἔστιν Bekkerus et Stallbaumius, tacentes. Conf. Vol. I. p. 327, a.

ἐρμηνεῦσαι] εὑμηνεῦσαι Vind. E.

ἔστιν] ἔστιν Vind. F.
πολλὰ] permulta Fic.

D περὶ τὴν] τὴν om. Vind. E. et a m. pr. F. Vat. H. (Vind. F. int. vers. a m. sec. habet.)

Oὐ] οὐ Lob. Vind. BDEF. (uti solent ante μὰ) Ald. οὐ Bas. ab. Oὐ, Astius in secunda edit. hanc negationem eodem, quo alteram ante γὰρ, referens, qua ratione hoc ipsum γὰρ ineptum et tota oratio iusto vehementior fit. Sed enim non appareat, quid tandem neget Glauco. Negat vero idem, quod Socrates, qui in proximo caussis demonstratis tergiversationem suam non iniustam neque temerariam fuisse ostenderat. Itaque Glauco meliora iam eductus et Socratem immerito ob cunctationem reprehensum agnoscens Minime, per Iovem, inquit, temere tu et sine causa hanc rem tractare dubitas; haud enim facilis videtur. Nobis similiter brevitate dicere licet Nein, nein! die Sache hat ihre Schwierigkeiten. Stallbaumius in sec. ed. Οὐ μὰ τὸν Δία, ἐφη, οὐν εὐκόλῳ ἔστιν scriendum coniecit.

Δία] δι' Lob. Vind. BDF. Ang. B. Vat. M.

ἐφη·] ἐφη, Astius, Bekkerus, Stallbaumius.

εὐκόλῳ] εὐκόλως Vind. F. Mon. B. Ang. B.

ὡδὸς] ὡδὲ Vind. E.

ἄν τέ] ἄν Ven. B. Bas. b. ἄν τέ Vind. E.

κολυμβήθραν] Pollux VII. 138: κολυμβᾶν. ἀφ' οὗ καὶ πολυμβήθραν δὲ Πλάτων.

μέγιστον] μέσον Vind. B. Vat. M.

πέλαγος μέσον,] πέλασος μ. Vind. E. πέλαγος, μέσον Vind. B. Eodem modo Ficinus: *sive profundum in pelagus, nihilominus aqua in media natat.*

νεῖ] εἰ Vind. F.

τινά] τι Ven. C. Bas. b. τινα Lob. Vind. BDE. τινὰ Vind. F.

ἐλπίζοντας] ἐλπίζοντες Par. K.

ἡμᾶς] In Lob. et Vat. M. margini adscripta h. I. sunt καθ' ὃν τρόπον καὶ ἀρίστα τὸν μηδυμαῖον μιθαριστὴν, eisque in Vat. M. praescriptum est πείμενον, de quo dixi Vol. I. p. 80, b. et p. 436, a. Eadem Vind. B. in margine habet, sed ad δελφῖνα, non ad ἡμᾶς relata.

ὑπολαβεῖν] ἀπολαβεῖν (Flor. T. Par. K. sec. Bip.) Ald. Bas. ab. Steph. Astius in prima et tertia ed. *suscepturum sublevaturumque* Fic. ὑπολαβεῖν vel ἀναλαβεῖν coniecerat Hemsterhusius ad Luciani dial. mar. 8. ubi idem delphin primum ἀναλαβών, tum ὑπολαβὼν dicitur, et ὑπολαβεῖν malle se ostenderat Heusdius spec. p. 31. Eodem verbo in narratione de Arione usus est Herodotus L. I. c. 24: τὸν δὲ δελφῖνα λέγοντι ὑπολαβόντα ἔξενεῖται ἐπὶ Ταΐναρον. Et apud Ac-

Οὐκοῦν καὶ ήμῖν νευστέον καὶ πειρατέον σώζεσθαι ἐκ τοῦ λόγου, ἥτοι δελφῖνά τιν' ἐλπίζοντας ήμᾶς ὑπολαβεῖν ἀν, ἡ τινα ἄλλην ἅποδον σωτηρίαν. Ἔοικεν, ἔφη. Ε Φέρε δὴ, ἣν δ' ἔγω, ἐάν πη εὔρωμεν τὴν ἔξοδον. ὁμολογοῦμεν γὰρ δὴ ἄλλην φύσιν ἄλλο δεῖν ἐπιτηδεύειν, γυναικὸς δὲ καὶ ἀνδρὸς ἄλλην εἶναι· τὰς δὲ ἄλλας φύσεις τὰ αὐτά φαμεν νῦν δεῖν ἐπιτηδεύσαι. ταῦτα ήμῶν πατηγορεῖτε; Κομιδῇ γε. Ἡ γενναῖα, ἣν δ' ἔγω, ὡ

lianum H. A. II. 6. VI. 15. VIII. 3. XII. 45. similia de delphinibus referentem aliquoties legitur ὑπονήχεσθαι. ἀπολαβεῖν, quod Astius ignorans, quid in codicibus esset, restituit, cui significationem „secum auferendi ideoque periculo eripiendi hoc loco egregie quadrantem“ in comm. tribuit, auferre non aliter significare videatur, nisi ut ad totum quoddam respiciatur, cuius ex partibus una pluresve auferantur.

ἄν] om. Vind. E.

ἄποδον] εὔποδον Par. K. ἀπειρον Vind. B. occultam Fic. Astius in comm. „, incertam h. e. inexspectatam salutem“ dicit, in tertia ed. raram interpretatur, quorum nihil satisfacit. ἄποδον σωτηρίαν eam intelligo, quae humana ope conciliari nequit, ut ἄποδον θῦμα L. II. p. 378. A. item passive dicitur; eine wunderbare Rettung, quemadmodum Schleiermacherus interpretatus est.

σωτηρίαν.] σωτηρίαν; Bas. ab. Astius, Bekkerus et Stallbaumius. Id vero Socrates interrogare non poterat, an aut delphin, aut aliud mirabile remedium ipsis sperandum atque ita ad salutem contendendum esset.

E Φέρε δὴ] φ. δὲ Vat. M. circumspice obsecro Fic. An legit φέρεις ἤδε;

ἀμολογοῦμεν γὰρ δὴ] Pro ἀμ. Par. A. Lob. Vind. F. Ven. C. Ang. B. Vat. H. ὁμολογοῦμεν habent, (Lob. et Ven. C. cum ω super δ') quod, quia alterum de virilis muliebrisque naturae discrimine in superioribus sermonibus

concessum nondum fuit, admitti potuisse videtur. Tamen propter νῦν ad φαμὲν additum, et quod accusatio ad repugnantiam supra concessionum ac novi placiti pertinet, discriminem autem virorum et mulierum nullo tempore non concedendum videri potest, imperfectum tenendum putavi. — δὴ in Lob. Vind. BD. Vat. BM. omisso est. — Ficinus Attende itaque. Convenimus profecto interpretatus nescio quid amplius in suo codice invenit.

δεῖν] δεῖ Ang. B. Flor. R. et a m. pr. ut videtur, Vind. F. Certe δεῖν correctus exhibet.

τὰς δὲ] δὲ Ficinus omisit.

ταῦτα ήμῶν πατηγορεῖτε;] in hoc illi nos accusant. Fic. Legit igitur τ. η. πατηγορεῖται. ut scriptum est in Vind. F. Flor. RT. idque non inepte; quum Socrates adversarios iam dimisisse, Glauconis autem personae minus convenire videatur pro eis respondere, quod secundum vulgatam lectionem facit. Nam illud Κομιδῇ γε non cum Schleiermachero Socrati sibimet ipsi, quemadmodum supra, pro eis respondentि tribuendum esse verba ἣν δ' ἔγω docent, quibus suum sermonem distinguit. Sed nihil obstat, quo minus Socratem primum eadem illa, quam paullo ante ingressus erat quamque maximi faciebat, dialogi via adversarios docere voluisse, mox, quum Glauconem repugnantiae specie incitatum promptius pro eis respondere vidisset, interim illos dimisisse et orationem ad ipsum Glauconem con-

454 Γλαύκων, ηδύναμις τῆς ἀντιλογικῆς τέχνης. Τί δή;
 "Οτι, εἶπον, δοκοῦσί μοι εἰς αὐτὴν καὶ ἄκοντες πολλοὶ
 ἐμπίπτειν καὶ οἴεσθαι οὐκ ἐρίξειν, ἀλλὰ διαλέγεσθαι,
 διὰ τὸ μὴ δύνασθαι κατ' εἶδη διαιρούμενοι τὸ λεγόμε-
 νον ἐπισκοπεῖν, ἀλλὰ κατ' αὐτὸ τὸ ὄνομα διώκειν τοῦ
 λεχθέντος τὴν ἐναντίωσιν, ἔριδι, οὐδὲ διαλέκτῳ πρὸς ἀλ-
 λήλους χρώμενοι. "Εστι γάρ δὴ, ἔφη, περὶ πολλοὺς
 τοῦτο τὸ πάθος ἀλλὰ μῶν καὶ πρὸς ἡμᾶς τοῦτο τείνει
 B ἐν τῷ παρόντι; Παντάπασι μὲν οὖν, ἦν δὲ ἐγώ· κιν-
 δυνεύομεν γοῦν ἄκοντες ἀντιλογίας ἀπτεσθαι. Πῶς; Τὸ
 μὴ τὴν αὐτὴν φύσιν ὅτι οὐ τῶν αὐτῶν δεῖ ἐπιτηδευ-
 μάτων τυγχάνειν, πάνυ ἀνδρείως τε καὶ ἐριστικῶς κατὰ
 τὸ ὄνομα διώκομεν, ἐπεσκεψάμεθα δὲ οὐδὲ ὅπηοῦν, τί

vertisse statuamus. Sic κατηγο-
 ρεῖτε verum esse potest, dum-
 modo signum interrogandi appo-
 natur, quod librarius Mon. B. et
 inter editores primus apposuit
 Bekkerus. κατηγορεῖται eo non
 opus habet.

Κομιδῇ] καὶ οὐμ. Lob. Vind. B.
 BD. Vat. BM. non male.

γενναῖα] γενναῖα Lob. Vind. F.
 Ald. Bas. ab.

454 ἀντιλογικῆς τέχνης.] ἀ. τέχνης;
 Bas. ab. — Pollux II. 120: —καὶ
 ἀναλογίζεται, ὡς Πλάτων. ὁ
 δὲ αὐτὸς καὶ ἀντιλογικὴ τέχνη
 φησίν.

πολλοὶ] permulti Fic.

ἐρίξειν] ἐκμερίξειν Vat. B.

οὐδὲ διαλέκτῳ] οὐδὲ Vind. F. int.
 vers. habet praescripto a m. sec.
 nomine, nisi fallor, γράφη.

περὶ πολλοὺς] περὶ πολλὰ
 Vind. D. om. Lob. Vind. B. Vat.
 BM.

ἡμᾶς] ημᾶς Mon. B.

τείνει] τείνει Vind. F. τείνει
 Mon. B. a m. pr.

B κινδυνεύομεν — Παντάπασι
 μὲν οὖν. 456. B.] laudat Galenus
 T. V. p. 737 — 741.

γοῦν] οὖν Mon. B. Par. K.
 sec. Bekk. Flor. U. Gal. sanc
 Fic.

Πῶς;] om. Lob. Vind. B.

μὴ τὴν αὐτὴν φύσιν] Licet
 omnes codices praeter Ven. B. et
 Galenus quoque μὴ omittant nec
 Ficinus (*natura eadem*) in suo
 negationem invenerit, tamen ne-
 cessaria et ab omnibus editoribus
 uno Stallbaumio in prima editione
 excepto merito servata est. Non
 eidem naturae ne institutionem
 quidem eandem convenire, hoc
 erat illud, quod in nomen (*non*
idem) unice intenti, diversitatis
 varia genera non curantes, διώ-
 κειν, sectari (*fest halten*) ac
 sibimet ipsis obiicere arguuntur.
 Eandem vero naturam non eodem
 modo instituendam esse neque
 ipsi contenderant neque ab aliis
 affirmatum impugnaverant, ideo-
 que eam sententiam neque nomine
 tenus sectari neque, si quis διώ-
 κειν cum Ficino *insequi* interpre-
 tetur, impugnare dici poterant.
 Itaque μὴ abesse nequit: τὸ
 minus necessarium et fortasse olim
 errore pro μὴ receptum est. Ce-
 terum post φύσιν, quo loco in
 Ald. plene interpungitur, ἔχον
 seu λαχὼν subaudiendum statuit
 C. F. de Nieport in *Nouveaux*
mémoires de l'académie royale
des sciences et belles-lettres de
Bruxelles. T. I. 1820. pag. 158.
 cuius mentionem semel fecisse
 sufficiat.

εῖδος τὸ τῆς ἑτέρας τε καὶ τῆς αὐτῆς φύσεως καὶ πρὸς τί τεῖνον ὀριζόμεθα τότε, ὅτε τὰ ἐπιτηδεύματα ἄλλη φύσει ἄλλα, τῇ δὲ αὐτῇ τὰ αὐτὰ ἀπεδίδομεν. Οὐ γὰρ οὖν, ἔφη, ἐπεσκεψάμεθα. Τοιγάρτοι, εἶπον, ἔξεστιν **C** ἥμιν, ὃς ἔοικεν, ἀνερωτᾶν ἡμᾶς αὐτοὺς, εἰ ἡ αὐτὴ φύσις φαλακρῶν καὶ κομητῶν καὶ οὐχ ἡ ἐναντία, καὶ ἐπειδὴν διολογῶμεν ἐναντίαν εἶναι, ἐὰν φαλακροὶ σκυτοτομῶσι, μὴ ἐάν κομήτας, ἐὰν δ' αὖ κομῆται, μὴ τοὺς ἑτέρους. Γελοῖον μέντ' ἀν εἴη, ἔφη. Ἄρα κατ' ἄλλο τι, εἶπον ἐγὼ, γελοῖον, ἦ ὅτι τότε οὐ πάντως τὴν αὐτὴν καὶ τὴν ἑτέραν φύσιν ἐτιθέμεθα, ἀλλ' ἐκεῖνο τὸ εἶδος τῆς ἄλλοιώσεως τε καὶ διοιώσεως μόνον ἐφυ- **D** λάττομεν, τὸ πρὸς αὐτὰ τεῖνον τὰ ἐπιτηδεύματα; οἷον

πάνν] πάνν τε Vind. E.

ἐπεσκεψάμεθα] ἐπισκεψόμεθα Gal. Bas. h. l. et paullo post.

δὲ] om. Lob. Vind. B. Vat. M. οὐδ'] ὁδ' Vind. E.

ὅπηοῦν, τί] ὅπηοῦν τι Ald. ὅπηοῦντι Lob. Vind. D. Bas. ab. ὅπη οὖν τι Vind. F. ὅποιοῦντι Vind. E. ὅπητοῦν Vind. B. Vat. M. ὅπιοῦν τι Gal.

πρὸς τί τεῖνον] quorsum re- spicientes Fic.

ῳριζόμεθα] ὠριζόμεθα Lob. Vind. F. Vat. BH.

ὅτε] om. Gal.

ἄλλῃ] οὐκ anteponunt Ang. B. Flor. R. et a m. sec. int. vers. Vind. F.

ἀπεδίδομεν] ἐπεδίδομεν Bas. b.

Οὐ γὰρ οὖν] οὐγαροῦν Lob.

C *Τοιγάρτοι] τοιγάρτι Vind. E. Ceterum Fic.*

φαλακρῶν] φ. καὶ Bas. b.

κομητῶν] κωμ. Vind. F. a m. pr.

οὐχ ἡ] οὐχὶ Lob. -Vind. BD. Vat. BM. Flor. T.

διοιώσεων] ὠδιοιώσεων Bas. ab.

συντοτομῶσι] coria incident calceosque conficiant Fic.

Γελοῖον] Γέλοιον Bekkerus et Stallbaumius. Item in proximo. Cf. ad p. 452. A.

μέντ' ἀν] μὲν τὰν Vind. F. Gal. μέν τ. ἀν editiones ante Astii secundam. Conf. Vol. I. p. 177, a.

τὴν ἑτέραν] τὴν om. Ven. B.

μόνον] ἐὰν μόνον Vind. F. μόνον ὅν Vind. DE. Vat. H. Flor. ACV.

*ἐφυλάττομεν] ἐφυλάττωμεν **D** Vind. F. ante corr.*

*τὸ πρὸς αὐτὰ τεῖνον τὰ ἐπι- τηδεύματα] Sic incorrupte haec tantum in Mon. B. Flor. U. apud Galenum et in libris editis legun- tur. In codicibus reliquis τεῖνον τὰ in τεῖνοντα confluxerunt et τὰ pro τὸ scriptum est, excepto tamen Ven. B. qui τὸ et τεῖνον servavit, sed pro τὰ ἐπιτηδεύ- ματα unum ἐπιτηδενμα, ceterum vitiosam reliquorum lectionem in margine appositam exhibet. Praeterea pro αὐτὰ in Vind. F. Ang. B. Par. DK. sec. Bekk. αὐτὸ ex- stat. τὸ τεῖνον etiam scholiastes legit, sed parum apte per τὸ ἐπιτηδειον explicat. Ficinus: *quac (species) ad ipsa cadem studia pertinebat.**

ἰατρικὸν μὲν καὶ *ἰατρικὸν* τὴν ψυχὴν ὄντα τὴν αὐτὴν φύσιν ἔχειν ἐλέγομεν. ή οὐκ οἶει; Ἐγωγε. Ἰατρικὸν δὲ καὶ τεκτονικὸν ἄλλην; Πάντως που. Οὐκοῦν, ην δ' ἐγὼ, καὶ τὸ τῶν ἀνδρῶν καὶ τὸ τῶν γυναικῶν γένος ἐὰν μὲν πρὸς τέχνην τινὰ η ἄλλο ἐπιτίθενται διαφέρονται, τοῦτο δὴ φήσομεν ἐκατέρῳ δεῖν ἀποδιδόνται· ἐὰν δὲ αὐ-

[*ἰατρικὸν* μὲν καὶ *ἰατρικὸν* τὴν ψυχὴν ὄντα] Ηαές quoque in optimis libris, quos sequi solemus, leviter corrupta non nisi in Mon. B. Flor. U. ita, ut edidimus, leguntur: in Par. ADK. Vind. EF. Ven. C. Ang. B. Vat. H. Flōr. ACRTV. et Gal. Bas. scriptum est *ἰατρικὸν* μὲν καὶ *ἰατρικὴν* τὴν ψυχὴν ὄντα, in Lob. Vind. B. et a m. pr. D. Ven. B. Vat. M. *ἰατρικὸν* μὲν τὴν ψυχὴν ὄντα tertio quartoque vocabulo omisso, quod utrumque Vind. D. in quo *ἰατρικὸν* finem et μὲν initium versus facit, ita in margine positum habet, ut *ἰατρικὸν* καὶ *ἰατρικὴν* μὲν τὴν ψυχὴν ὄντα deinceps exhibere videatur; denique in Vat. B. *ἰατρικὸν* μὲν τὴν ψυχὴν ἔχοντα exstare Bekkerus ostendit. Quarum omnium lectionum nullam probabilem esse appareat. Longe aliter comparata illa est, quam editiones ante Bekkerum et Galenus Kühnii habent: *ἰατρικὸν* μὲν καὶ *ἰατρικὴν* τὴν ψυχὴν ἔχοντα, quam, si per codices licisset, libenter retinuisse, ut pote ad significandum discrimen illud exiguum, quod inter duos eadem natura praeditos atque pro exemplo huius ipsius aequalitatis proponendos intercedere potest, aptissimam, siquidem *ἰατρικὸν* eum interpretari licet, qui arti medicae, quam exercet, idoneam indolem habet, *ἰατρικὴν* τὴν ψυχὴν ἔχοντα vero eum, qui tali ingenio est, quamvis artem non exerceat. Sed idem inter *ἰατρικὸν* et *ἰατρικὸν* τὴν ψυχὴν ὄντα discrimen statui posse videtur, non quo *ἰατρικὸς* alia sui parte, quam animo, aptus ad artem me-

dicam sit, aut non quolibet alio vitae generē occupatus esse possit; sed tamen quum *ἰατρικὸν* appellari aliquem audimus, medicum fere laudari putamus, non fabrum aliumve artificem describi; quum vero componi cum eo *ἰατρικὸν* τὴν ψυχὴν ὄντα videamus, hoc ipso additamento monemur, ut hunc *non nisi* ingenio et natura, alterum etiam facto et actione idoneum praedicari statuamus. Sic optimorum codicum lectionem una secundum Mon. B. Flor. U. mutata littera servari posse censeo. Bekkerus paullo longius progressus Ficini auctoritate medicum (et hominem habentem animum medicinae studiis aptum) interpretantis *ἰατρὸν* μὲν καὶ *ἰατρικὸν* τὴν ψυχὴν ὄντα edidit, quem in utraque editione tacitus, quasi *ἰατρὸν* in omnibus codicibus editionibusque legeretur, secutus est Stallbaumius et in tertia sua Astius. *ἰατρὸν* haud dubie tales intelligebat Bekkerus, qualem Thrasymachus libro primo praetexuit, τὸν τῷ ἀριθμῷ λόγῳ *ἰατρὸν* ὄντα, non qui vulgo dicuntur, quos minime semper *ἰατρικὸν* τὴν ψυχὴν esse satis constat. Nec non concedendum est vero medico futuro maxime opus esse natura eadem, qua qui praeditus est, *ἰατρικὸς* τὴν ψυχὴν dicatur. Sed Platonem, de hoc si cogitaret, nulla eius rei significatione facta velut de multis unum appellandum eum censusse parum verisimile videtur; neque vero deinde *ἰατρικὸν* δὲ dixisset, si *ἰατρὸν* μὲν praecederet. Ficinum autem non optimo codice in his quidem libris usum - quum saepe alibi, tum

τῷ τούτῳ φαίνηται διαφέρειν, τῷ τὸ μὲν θῆλὺ τίκτειν, τὸ δὲ ἄρδεν ὀχεύειν, οὐδέν τι πω φήσομεν μᾶλλον ἀπό- Ε δεδειχθαι, ὡς πρὸς ὃ ἡμεῖς λέγομεν, διαφέρει γυνὴ ἀνδρὸς, ἀλλ᾽ ἔτι οἰησόμεθα δεῖν τὰ αὐτὰ ἐπιτηδεύειν τούς τε φύλακας ἡμῖν καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν. Καὶ ὁρθῶς, ἔφη. Οὐκοῦν μετὰ τούτοις κελεύομεν τὸν

Vol. I. p. 80, a. I. 9. 10. deprehendimus, et tamen hoc loco varianda orationis caussa potius, quam quod *latrōn* scriptum videret, medicum posuisse credidimus.

ἔχειν ἐλέγομεν] ἔλ. ἔχ. Vind. D. δὲ] αὐτὸν Lob. Vind. BD. Vat. M. δέ γε Vind. F. Ang. B. Flor. R. Gal.

ἄλλην;] Ita. Lob. Vind. B. ἄλλην reliqui mei cum editis ante Bekkerum.

ἀνδρῶν] ἀνδρῶν τε Par. K. sec. Bip.

τὸ] om. Flor. T. τὸ Ald. Bas. a. γένος] Vulgo comma apponunt. μὲν] om. Vind. F. Ang. B. Flor. R. Grynaeus pro eo videtur μὴ legendum censuisse, quippe qui Ficini interpretationi si ad artem aliquam aut aliud studium inter se differant in hunc modum a se reficiet si in arte aliqua aut studio nihil inter se differant ed. Bas. 1539. pag. 591. in margine adscriperit Sic legendum videtur, quamquam aliter habet exemplar Graecum. Scilicet ἐκάτερον cum Ficino utrique interpretatus idque pro ambobus accipiens, quem sit utrivilis seu alterutri, non poterat non offendere.

τούτο δὴ φήσομεν — φαίνηται] om. Vind. B. Vat. M., Invenitur alia lectio, in qua est δὴ pro μὴ, [immo μὴ pro δὴ] et interrogationis nota post ἀποδίδονται. Fic. tamen lectionem nostram videtur agnoscisse, nisi quod et ipse interrogative legit: vertit enim, Nonne et genus virorum mulierumque genus, si in arte aliqua aut studio nihil inter se differant, hoc utrique assignandum esse dicemus? Steph. an-

not. p. 21. Interrogationis nota est in Bas. ab. sed μὴ pro δὴ scribendum coniecerat Cornarius ecl. p. 99. Eodem illo in vocabulo ἐκάτερον aberrans et interrogationem cum Ficino statuens, ut ex hac eius interpretatione apparet: Nonne, inquam ego, etiam virorum et mulierum genus, si ad artem aliquam aut aliud studium, inter se diversum videatur, hoc utrique attribuere oportere negabimur? Simul illud notabile, quod Stephanus interpolatum à Grynaeo Ficinum pro genuino habuit. — Pro δὲ Vind. DEF. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. et Galenus δὲ exhibit, quod recepit Stallbaumius. Pro τούτῳ in Vind. D. τούτῳ legitur.

διαφέρειν] διαφέροντι cum εἰν super ultima Lob.

τῷ τῷ] τῷ τῷ Bas. b.

δὲ] δὲ Vat. H. Gal.

διαφέρει] διαφέροντι Ang. B. E διαφέρειν Flor. T. In Vind. F. να m. s. super ει scriptum.

ἡμῖν] ἡμῶν Gal.

αὐτῶν.] Ita. Lob. Vind. B. Gal. Ald. Steph. non αὐτῶν; quemadmodum Bas. ab. et recentiores scribunt, quod neque ad ambitum et partium conformationem huius dictionis neque ad initium responsonis ita aptum videtur.

ὁρθῶς] ὁρθῶς γ' Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Flor. ACR. Gal. Stallbaumius.

ἔφη] ἔφην Gal.

μετὰ τούτοις] μεταπούτοις Ald. Bas. ab.

κελεύομεν] κελεύομεν Ven. B. Vind. E., Malim κελεύσομεν“ Stallbaumius in sec. ed. Cur? Socrates postquam dixerat quod

455 τὰ ἐναντία λέγοντα τοῦτο αὐτὸ διδάσκειν ἡμᾶς, πρὸς τίνα τέχνην ἡ τί ἐπιτήδευμα τῶν περὶ πόλεως κατασκευὴν οὐχ ἡ αὐτὴ, ἀλλὰ ἑτέρα φύσις γυναικός τε καὶ ἀνδρός; Δίκαιου γοῦν. Τάχα τοίνυν ἀν δπερ σὺ δλίγον πρότερον ἔλεγες, εἴποι ἀν καὶ ἄλλος, ὅτι ἐν μὲν τῷ παραχρῆμα ἴκανως εἰπεῖν οὐ δάδιον, ἐπισκεψαμένῳ δὲ οὐδὲν χαλεπόν. Εἴποι γὰρ ἄν. Βούλει οὖν δεώμεθα τοῦ Β τὰ τοιαῦτα ἀντιλέγοντος ἀκολουθῆσαι ἡμῖν, ἐάν πως ἡμεῖς ἐκείνῳ ἐνδειξώμεθα, ὅτι οὐδέν ἐστιν ἐπιτήδευμα ἵδιον γυναικὶ πρὸς διοίκησιν πόλεως; Πάνυ γε. "Ιδι δὴ, φήσομεν πρὸς αὐτὸν, ἀποκρίνου. ἂρα οὗτως ἔλεγες τὸν

affirmaturos sese, quod negaturos putabat, aptissime, an iam nunc repraesentato tempore illo paullo ante futuro adversarium illud adigant, rogat. Praeterea διδάσκειν minus futuro convenit.

τὰ ἐναντία] ταναντία Vind. E.
διδάσκειν] διδάσκει Vind. D.

455 τί] om. Vind. BD. Vat. HM.
οὐχ] οὐχ', (ut fere solent librarii) superscripto ἵ, Par. D.
ἄλλα] ἄλλ' Vind. DEF. Ang. B.
Vat. H. Flor. ACR. Gal.
ἀνδρός;] ἀνδρός. Gal. et Ald.
Δίκαιου γοῦν.] Δίκαιον γ' οὖν.
Gal.

τοίνυν] om. Fic.

δλίγον] δλίγω Gal.

παραχρῆμα]. παρὰ χρῆμα Lob.

Vind. F.

δὲ] om. Par. D.

δεώμεθα] δεύμεθα Vind. F.

Flor. AC.

τοῦ τὰ τοιαῦτα ἀντιλέγοντος]
qui haec nobis opponit Fic. τοῦ
τὰ τοι. ἀντιλέγοντός μοι Gal.
(— μον Gal. Bas.)

ἀκολουθῆσαι ἡμῖν] βοηθῆσαι
ἡ. Par. K. Mon. B. Flor. U. ut
aures nobis praestet attendatque
Fic.

B ἐκείνῳ] ἐκεῖνο Gal.
ἐνδειξώμεθα.] ἐνδειξαίμεθα

Vind. E. Cf. Vol. I. p. 384, b.
διοίκησιν] διοίκησιν Bas. a.

"Ιδι δὴ — ἄλλα φήσει. C.]
laudat Stobaeus ecl. phys. p. 722.
Heer. Pro ιδι in eo erat ἶσθη,
quod Heerenius correxit.

φήσομεν] φήσωμεν Par. K.
Vind. B. Mon. B. Flor. TU.
ἄρα] ἄρα Ald. Bas. ab. ἄρ
Ang. B. Vind. F. Gal. In Bas.
ab.; Steph. commate a praecedentibus distinctum est.

ενφνη] ἐνφνη Vind. E.

δὲ] δ' Vind. F. Ang. B. Flor.
R. Stob.

ο μὲν] om. Par. DK. et a m.
pr. Mon. B. qui utrumque a m.
s. int. vers. additum habet. Hein-
dorffio ad Soph. §. 70. unius Par.
K. auctoritas ad expungendum
sufficere videbatur, quia illius
preium aestimare nondum potue-
rat.

μανθάνοι] μανθάνει Lob.
Vind. BE. Vat. BM. Ven. B. et,
sup. οι, Flor. T. Optativus in
oratione obliqua legitimus, ἐν ὥ
autem, quod Ficinus ex eo quid
interpretatur, ita intelligendum
est, ut L. I. p. 340. E: ἐπιλι-
πούσης γὰρ ἐπιστήμης δ ὁμο-
τάνων ἀμαρτάνει, ἐν ὥ οὐν
ἐστι δημιουργός. hoc tantum dis-
crimine, quod vis pronominis re-
lativa non ad praecedentia, sed
ad sequentia pertinet, ut pro ἐν
ἥ nostro loco γ δici potuisset,
ipsum vero plane respondeat La-
tino quatenus.

ἀπὸ βραχείας] ἀποβραχείας
Vind. F.

ἐπι πολὺ] Ita Lob. ἐπιπολὺ^{reliqui mei cum editionibus ante}
Astii secundam.

τυχὼν] τυχὸν Vat. H.

μὲν εὐφυῆ πρόσι τι εἶναι, τὸν δὲ ἀφυῆ, ἐν ὃ δὲ μὲν φύσις τι μανθάνοι, ὁ δὲ χαλεπῶς; καὶ οὐ μὲν ἀπὸ βραχείας μαθήσεως ἐπὶ πολὺ εὑρετικὸς εἴη οὐκ ἔμαθεν, οὐδὲ πολλῆς μαθήσεως τυχὼν καὶ μελέτης μηδὲ ἔμαθε σώζοιτο; καὶ τῷ μὲν τὰ τοῦ σώματος ἵκανῶς ὑπηρετοῖ τῇ διανοίᾳ, τῷ δὲ ἐναντιοῖτο; ἂλλος ἄλλα ἄττα ἔστιν, η̄ ταῦτα, οἷς τὸν εὐφυῆ πρόσι ἕκαστα καὶ τὸν μὴ ὠρίζον; Οὐδεὶς, η̄ δ' ὅς, ἄλλα φήσει. Οἰσθά τι οὖν ὑπὸ ἀνθρώπων μελετώμενον, ἐν ὃ οὐ πάντα ταῦτα τὸ τῶν ἀνδρῶν γένος διαφερόντως ἔχει, η̄ τὸ τῶν γυναικῶν; η̄ μακρολογῶμεν τὴν τε ὑφαντικὴν λέγοντες καὶ τὴν τῶν ποπάνων

μηδὲ] μὴ δὲ Vind. F. μηδὲ Flor. R. Gal. Stob. Ficinus pro his quatuor paulo post obliuiscitur ponens haec quomodo τῷ ἐπὶ πολὺ εὑρετικῷ ὅpposita sint, non accurate quaequivit.

τῷ] ποὶ Vind. F.

C ὑπηρετοῖ] ὑπηρετεῖ Lob. Vind. BF. Vat. M. Flor. R. ὑπηρετοίη Stob.

τῇ] om. Mon. B.

δὲ] δ' Vind. F. Gal. Stob.

ἐναντιοῖτο] ἐναντιοῦται Vind. B. Vat. M.

ἄλλο] ἄλλα Vind. DF. Flor. R. Gal.

ἄλλα ἄττα] ἄλλα ἄττα Vind. D. ἄλλάττα Lob. Vind. BF. ἄλλ' ἄττα Aīg. B. Flor. R. Gal. Stob. Stallbaumius.

ἔστιν] ἔστιν Vind. F.

οἷς] εἰ̄ Flor. T. εἰ̄ς Stob. Cant.

ῳρίζον] ὠρίζον Stob. ὠρίζον Ald. Bas. ab. distinguis Fic.

Οὐδεὶς] οὐδὲν Flor. T.

B.] laudat Eusebius praep. ev. L. XII. p. 357. Pro οἰσθα Ald. Bas. ab. ησθα habent. In Lob. οἰσθα τι etc. legitur.

οὖν] om. Fic.

ὑπὸ] ὑπὸ Lob. Vind. BD. Vat. M. Euseb. ὑπὸ τῶν Flor. T.

πάντα ταῦτα] πάντα ταῦτα Par. A. Flor. ACT. omnia eadem Fic.

τὸ] int. vers. a.m.s. Vind. F.

διαφερόντως] et excellentius

Fic. repugnantiam sentiens cum lectione πάντα ταῦτα, quam sequebatur, coniunctam.

η̄ τὸ] τοῦ Gal.

μακρολογῶμεν] μακρολογοῦμεν Lob. Vind. B. Mon. B. Vat. BM. Ven. B a m. s. Flor. U. Gal.

τε] θ' Gal.

λέγοντες — δοκεῖ] om. Vind. E.

ποπάνων] Timaeus lex. p. 220: πόπανα· πέμπατα πλατέα καὶ λεπτὰ καὶ περιφερῆ. Eisdem verbis utuntur scholiastes Platonis et Porphyrii de abst. L. II. §. 16. p. 129. Rhoer. et, quos Ruhnkenius significavit, Photius et Suidas: tantum πλακούντια pro πέμπατα praebeant. De eo genere, quod in sacris offerebatur, in primis conferendus est Polybii locus L. VI. c. 25, 7. ubi scutum vetus equitum Romanorum simile fuisse dicitur τοῖς ὁμφαλωτοῖς ποπάνοις, τοῖς ἐπὶ τὰς θυσίας ἐπιτιθεμένοις. Idem genus contra mentem Platonis h. l. significatum statuisse videtur Proclus comm. in Civ. p. 419: καὶ γὰρ ἐν τοῖς ὁμολογουμένοις εἶναι γυναικεῖοις ἔργοις ἐρέθιμενέστερον ἀνὴρ ἐνεργεῖ γυναικὸς, ὡς ἐν τῷ ὑφαίνειν, ὡς ἐν τῷ ταλασσουργεῖν, ὡς ἐν τῷ ποπανοποιεῖν. ἐνθα καὶ ἔθος ημᾶς ἐδίδαξε τὸ Ἀττικὸν, ὡς ἄρα γυναικεῖς ἦσαν οὐχ αἱ ἀλετοίδες μόνον, ἀλλὰ καὶ αἱ ποπανοποιοὶ, μιμούμεναι τὰς φύσεις τὰς πλαττούσας ὅσα τοῖς θεοῖς

τε καὶ ἐψημάτων θεραπείαν, ἐν οἷς δή τι δοκεῖ τὸ
D γυναικεῖον γένος εἶναι, οὗ καὶ καταγελαστότατόν ἐστι
πάντων ἡττώμενον; Ἀληθῆ, ἔφη, λέγεις, ὅτι πολὺ^ν
ηρατεῖται ἐν ἄπασιν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, τὸ γένος τοῦ γέ-
νους. γυναικες μέντοι πολλαὶ πολλῶν ἀνδρῶν βελτίους
εἰς πολλά· τὸ δὲ ὄλον ἔχει ὡς σὺ λέγεις. Οὐδὲν ἄρα
ἐστὶν, ὡς φίλε, ἐπιτίθενται τῶν πόλιν διοικούντων γυ-
ναικὸς διότι γυνὴ, οὐδ' ἀνδρὸς διότι ἀνὴρ, ἀλλ' ὅμοιως

ἀνιᾶσι· ξῶα καὶ φυτά. Profana-
rum enim placentalum pistrices
non comparasset cum naturae vi-
ribus diis animalia et plantas
velut totidem sacrificia offerenti-
bus atque ex gremio terrae emit-
tentibus.

τε] om. Vind. D.

δή] δεῖ, sup. ἦ, Vind. F.

οὐ] οὐ idem.

καὶ] int. vers. Vind. E.

καταγελαστότατόν] Primam syl-
labam Vind. F. int. vers. habet.

D ἐστι πάντων] ἐστὶν ἀπάντων
Flor. T. ἐστι πάμπολυ Gal. Eus.
ἔφη, λέγεις] λ. ἔ. Gal.

πολὺ ηρατεῖται] πολυηρατεῖ-
ται Gal. καὶ πολὺ ηρ. Eus.

ἐν] ἐν Vind. E.

πολλαὶ] om. Lob. Vind. B.
Vat. BM.

δὲ] δ' Gal.

ὄλον] ὄλον ἔλον cum linea
transversa sub ἔλον, quod signum
delendi est, Mon. B.

ἄρα ἐστὶν] ἄ. ἐστὶν Vind. F.
ἐστὶν ἄρα Gal.

ὡς φίλε] om. Vind. E.

οὐδέ] οὐδὲ Gal. οὐδέ ἀν Eus.
ἀλλ' Vind. E.

μὲν] om. Vind. D.

δὲ ἀνὴρ] δ' ἀνὴρ Gal. et sta-
tum post δὲ ἀσθενεστερον.

E ^H] ἦ Vind. EF. Eus. τί Gal.
οὖν] γοῦν Vind. E. om. Fic.

πάντα] ταῦτα Gal.

προστάξομεν] προστάξωμεν
Lob. Vat. B. Ven. C. et ante
correctionem ab eadem tamen
manu factam Vind. B.

γυναικὶ] γυναιξὶ Flor. T.

δὲ] δ' Lob. Vind. B. Vat. M.
Gal.

Kai] om. Ald. Bas. ab. Steph.
ἢ καὶ Gal. Kühn. At Fic. καὶ
Astius in prima ed. ex Par. K.
et Galeno restituit. Etiam Eu-
sebius cum codicibus omnibus ha-
bet.

Ἄλλ.] ἄρα Lob. Vind. B. Vat.
M.

γυνὴ] γυναικὶ Par. K. secund.
Bekk.

Γυμναστικὴ δ' ἄρα οὐ, οὐδὲ⁴⁵⁶
πολεμικὴ, ἢ δὲ ἀπόλεμος καὶ
οὐ φιλογυμναστική; Ita Par. A.
Vat. H. Flor. ACV. et Vind. EF.
nisi quod hi duo οὐ post καὶ
omittunt et δὲ pro δ' exhibent,
et Vind. E. ἐπιπολεμικὴ pro πο-
λεμικὴ, alter pro acuto in ἄραι
circumflexum e correctione habet.
Proxime accedunt Flor. R. et Eu-
sebius: γυμναστικὴ δὲ ἄραι (Flor.
R. ἄρα;) οὐδὲ (Flor. R. cum
καὶ int. vers.) πολεμικὴ. ἢ δὲ
ἄπ. καὶ οὐ (id Flor. R. omittit)
φιλογυμναστικὴ; Paullo longius,
sed ita, ut ad hanc partem re-
ferendi sint, abeunt Ang. B. et
Galenus: γυμναστικὴ δ' ἄρα (δὲ
ἄρα ἢ Gal.) καὶ πολεμικὴ etc.
Reliqui codices καὶ initio ante
γυμναστικὴ addunt, cetera vel
ita, ut Par. A. exhibent, quo in
numero sunt Lob. Vind. BD.
(prior cum signo interrogandi post
οὐ) Ven. C. Par. D. Vat. HM.
et Ven. B. Vat. B. qui duo insuper
ἢ post γυμναστικὴ inserunt,
vel cum Ang. B. pro οὐ, οὐδὲ
substituant καὶ, ut Par. K. Mon.
B. Flor. TU. quorum secundus
et quartus etiam δ' omittunt et
pro φιλογυμναστικὴ in fine γυ-
μναστικὴ habent. Ad Flor. T.

διεσπαρμέναι αἱ φύσεις ἐν ἀμφοῖν τοῖν ζώοιν, καὶ πάντων μὲν μετέχει γυνὴ ἐπιτηδευμάτων κατὰ φύσιν, πάντων δὲ ἀνήρ, ἐπὶ πᾶσι δὲ ἀσθενέστερον γυνὴ ἀνδρός. Εἶτα
 Πάννυγε. Ἡ οὖν ἀνδράσι πάντα προστάξομεν, γυναικὶ δὲ οὐδέν; Καὶ πῶς; Ἀλλ' ἔστι γὰρ, οἷμαι, ὡς φῆσομεν, καὶ γυνὴ λατρικὴ, ή δ' οὐ, καὶ μουσικὴ, ή δ' ἀμουσος φύσει. Τί μήν; Γυμναστικὴ δὲ ἄρα οὐ, οὐδὲ 459 πολεμικὴ, ή δὲ ἀπόλεμος καὶ οὐ φιλογυμναστική; Οἶμαι 456

facta videtur Ficini interpretatio: Et alia quidem ad exercitationes gymnasticas et rem militarem prompta, alia vero ad haec impeta. Lectionem Veneti B. repreäsentavit Aldus cum additamento, quod in eiusdem codicis margine a manu recenti scriptum est: Καὶ γυμναστικὴ η δ' ἄρα οὐ. οὐδὲ πολεμικὴ. η δὲ ἀπόλεμος καὶ οὐ φιλογυμναστική; η δ' ἄρα οὐ. Nec aliter Basileenses, quarum prior in additamento ἄρ, posterior ἄρ' et antea φυλογυμναστική exhibet, aut Stephanus, qui tantum verba commodiūs interpunctit. Sed in margine hanc conjecturam proposuit: for. καὶ οὐ γυμναστικὴ, η δ' ἄρα οὐ; οὐδὲ πολεμικὴ, η δὲ ἀπόλεμος; καὶ οὐ φιλογυμναστική, η δ' ἄρα οὐ; ut οὐ in prioribus locis sit pro Nόnne. atque in annotatione pag. 21. haec monuit: „Alia huius loci assertur lectio, quae habet, καὶ γυμναστική. η δ' ἄρα καὶ πολεμικὴ. η δὲ, ἀπόλεμος, καὶ οὐ φιλογυμναστική; Οἶμαι ἔγωγε. Τί δέ; φιλόσοφος τε καὶ θνμοειδῆς; η δὲ, μισόσοφος καὶ ἀθνμος; Sed quae-dam in nostra editione melius scripta esse videntur: ideoque fortassis ex duabus lectionibus facienda una fuerit. Quae autem ibi margini adscripti sunt ex conjectura: ubi οὐ priore loco est interrogativum. Sed lubentius lectionem quam modò attuli, sequor, in priore parte, ut dicitur, καὶ γυμναστικὴ, subaudi ἔστι γυνὴ: nec verò γυμναστικὴ solùm, sed etiam πολεμικὴ: est

contrà quae nec sit πολεμικὴ, sed contrà ἀπόλεμος, nec γυμναστικὴ, sive φιλογυμναστικὴ. (nam hoc in illius significatione utitur) Sed in altero membro minimè necesse videtur aliam quam quae in hac editione est quaerere verborum collocationem.“ Aliam illam, quam dicit, lectionem Cornarius e conjectura proposuerat ecl. p. 99. eamque, quatenus Stephano probabatur, in primam editionem recepit Astius; in altera secutus est Parisiensem K. Bekkerus et Stallbaumius secundum Mon. B. Flor. U. scripsierunt Καὶ γυμναστικὴ ἄρα καὶ πολεμικὴ, η δὲ ἀπόλεμος καὶ οὐ γυμναστική; cui lectioni commendanda Stallbaumius in sec. ed. hanc notam sufficere creditit: „Sic hunc locum ex codd. persanavit Becker. Vulgo erat: Καὶ γυμναστική, η δ' ἄρα οὐ. οὐδὲ πολεμικὴ. η δὲ ἀπόλεμος καὶ οὐ φιλογυμναστική, η δὲ ἄρα οὐ; Οἶμαι ἔγωγε π. τ. λ. Longum est singulas recensere codicum lectiones: itaque monere iuvat codices Monac. et Flor. β'. veram suppeditasse scripturam, quibuscum ceteri codices alii aliis in partibus consentiunt. Pro φιλογυμναστικῇ, quod nunc recte in γυμναστικῇ mutatum est, Ast. legendum censet φιλογυμναστής, ut VII, 15. VIII, 4.“ Scilicet in tertia ed. Astius deleta secundum Bekkerum particula δ' in ceteris Par. K. scripturam tenuit, φιλογυμναστικὴ autem in φιλογυμναστής mutandum coniecit. Sed, ut ab hoc ordiar, quemadmodum

ζηγωγε. Τι δέ; φιλόσοφος τε καὶ μισόσοφος; καὶ θυμοειδής, ἡ δ' ἄθυμος; "Εστι καὶ ταῦτα. "Εστιν ἄρα καὶ φυλακικὴ γυνὴ, ἡ δ' οὐ. ἢ οὐ τοιαύτην καὶ τῶν ἀνδρῶν, τῶν φυλακικῶν, φύσιν ἔξελεξάμεθα; Τοιαύτην μὲν οὖν. Καὶ γυναικὸς ἄρα καὶ ἀνδρὸς ἡ αὐτὴ φύσις εἰς φυλακὴν πόλεως, πλὴν ὅσα ἀσθενεστέρα ἡ ἴσχυροτέρα ἐστί. Φαίνεται. Καὶ γυναικες ἄρα αἱ τοιαῦται Β τοῖς τοιούτοις ἀνδράσιν ἐκλεκτέαι συνοικεῖν τε καὶ συμφυλάττειν, ἐπείπερ εἰσὶν ἵκαναὶ καὶ ἔνγραφεῖς αὐτοῖς

φιλανθρωπιοὶ, φιλαρχικοὶ, φιλεριστικοὶ, φιλοδημοτικοὶ, φιλοχομαστικοὶ ἱι dicuntur, qui natura sunt ad φιλανθρωπίαν, φιλαρχίαν etc. propensi seu idonei, ita φιλογυμναστικὴ ea mulier dicitur, cuius indoles talis est, ut φιλογυμναστίαν facile in se recipiat. Et poterit horum collatione φιλοσοφικὸς, quod Stephanus sine testimonio exhibuit, Schneiderus proscriptis, certe tolerabile videri. In prioribus vero nulla caussa est, quod ab optimorum et plurimorum librorum lectione discedatur. *Ad medicinam, ad musicam idoneas esse nonnullas concessum est: quid igitur? ad gymnasticam nullane neque ad bellum idonea esse alteramque non idoneam oppositam sibi habere dicetur?* Neque sine ratione haec ita enuntiantur, quandoquidem hoc ipsum adversarii, qui ad custodiā ineptas mulieres esse contenderent, vel maxime negatūri erant; quos, si prius concedant, posterius negent, sibimet ipsos repugnare il lud ἄρα negationi coniunctum arguit.

δέ] δαι Flor. T.

καὶ μισόσοφος] post ἄθυμος Gal. quem ordinem verborum Astius in sec. ed. amplexandum, in tertia ἡ δὲ pro καὶ scribendum censet, quemadmodum Ficinus interpretatur: *An non et una quidem sapientiae studiosa est, altera sapientiam spernit: et una elato animo, altera vero depre-*

so? Contra Stallbaumius vulgatam lectionem hoc ipsum significare statuit: τι δέ; ἡ μὲν φιλόσοφος, ἡ δὲ μισόσοφος; sed quomodo, non ostendit. Scilicet post φιλόσοφός τε suppleatur γυνή: et studiosa sapientiae mulier invenitur et ab ea aliena.

δ'] δὲ Eus. Gal.

ἄθυμος; "Εστι] ἄθυμός ἐστι; Vind. F. Eus.

ἡ δ'] ἡδ' Vind. B. Ald. Bas. ab. (Ald. Bas. ab. etiam in superioribus ἡδ' ἀμουσος cum Vind. F. habent, et Ald. in proximis ἡδ' ἄθυμος, ubi Bas. ab. ἡ δ' exhibit.) ἡ δ', e corr. ἡ δ', Vind. F.

οὐ.] οὐ; Vind. B. Steph. Ast. pr. et sec.

ἢ] ἢ Vind. B. Ἡ Ald. Steph. καὶ] om. Fic.

ἔξελεξάμεθα] ἔξελεξέμεθα Vind. E. ἐκλεξάμεθα Ald. Bas. a. — V. L. II. p. 376. C.

ἡ αὐτὴ] καὶ ἡ αὐτὴ Vind. E.

πλὴν ὅσα ἀσθενεστέρα ἡ ἴσχυροτέρα ἐστί.] In his Par. A. ἡ omittit, Vind. E. Vat. H. Flor. ACV. ἀσθενεστέρας et ἴσχυροτέρας, Lob. Vind. BF. Vat. BM. Ven. C. ἀσθενέστερα (hoc etiam Bas. ab.) et ἴσχυρότερα habent; (pro Ven. C. suspicor Vind. B. Bekkerum significare voluisse.) Vind. D. πλὴν ὅσα ἀσθενέστερας καὶ ἴσχυρότερας ἐστὶ cum α super ultima comparativi utriusque

τὴν φύσιν. Πάνν γε. Τὰ δ' ἐπιτηδεύματα οὐ τὰ αὐτὰ ἀποδοτέα ταῖς αὐταῖς φύσεσι; Τὰ αὐτά. "Ηκουεν ἄρα εἰς τὰ πρότερα περιφερόμενοι καὶ διολογοῦμεν μὴ παρὰ φύσιν εἶναι ταῖς τῶν φυλάκων γυναιξὶ μουσικήν τε καὶ γυμναστικὴν ἀποδιδόναι. Πάντα πασι μὲν οὖν. Οὐκ ἄρα ἀδύνατά γε οὐδὲ εὐχαῖς ὅμοια ἐνομοθετοῦμεν, ἐπεί- C περ κατὰ φύσιν ἐτίθεμεν τὸν νόμον· ἀλλὰ τὰ νῦν παρὰ ταῦτα γιγνόμενα παρὰ φύσιν μᾶλλον, ὡς ἔοικε, γίγνεται. "Εοικεν. Οὐκοῦν ἡ ἐπίσκεψις ἡμῖν ἦν, εἰ δυνατά γε

exhibit. Galenus legit πλὴν ὅσα ἡ μὲν ἀσθενεστέρα, ὁ δὲ λεχυνότερός ἐστι. Eusebius autem πλὴν ὅσῳ ἀσθενεστέρα, ἡ δὲ λεχυνοτέρα ἐστι. Hinc Astius in sec. et tert. ed. et Stallbaumius in sec. ἡ δὲ receperunt. Ficinus: nisi quod mulieribus ut imbecillioribus, viris ut robustioribus est utendum. Bekkerus in fine ἐστίν pro more suo scripsit, ceterum vulgatam intactam reliquit. Si contaminare codices placeat, possis ἀσθενεστέρα λεχυνοτέρας vel ἀσθενεστέρα καὶ λεχυνοτέρας coniicere. Sed nihil opus est mutatione. Quum virium diversitas omnibus in rebus conspicua sit, diversitatis gradus plurali ὅσα designatur, et quum natura illa mulieris et viri ceteroquin eadem, prout mulierem virumve respicias, minus vel plus virium ostendat, ἡ recte habet, atque sensus hic est: nisi quatenus imbecillior vel firmior est. Ceterum nescio, utrum ad Menon. p. 73. an hoc respexerit Aristoteles Polit. I. 5. p. 24. Goettl. οὐχ ἡ αὐτὴ σωφροσύνη γυναικὸς καὶ ἀνδρὸς οὐδὲ ἀνδρίας καὶ δικαιοσύνης, καθάπερ ὡέτο Σωκράτης, ἀλλ ἡ μὲν ἀρχὴ ἀνδρίας, ἡ δὲ ὑπηρετικὴ. Certe hoc respexit scholiastes Eurip. Orest. 1204: τὰς μὲν γὰρ ἀρετὰς καὶ ὁ Πλάτων κοινὰς εἶναι φησι, πλεονεκτεῖν δὲ τὸν τοὺς ἀρέτας.

αἱ] om. Gal.

τοῖς τοιούτοις] om. Fic. τοῖς om. Vind. E. Vat. H. Flor. ACRTV.

συνοικεῖν τε καὶ συμφυλάττειν] ἔ. τε καὶ ἔνμφ. Vind. F. Ang. B. Flor. R. Stallbaumius. σ. τ. κ. ἔνμφ. Eus. σ. τ. κ. φυλάττειν Gal.

αὐτοῖς] αὐτὴν Vind. E. Vat. H. Flor. AC.

Τὰ δ'] τὰ δὲ Mon. B.

τὰ αὐτὰ] ταῦτα Gal. Item in responsione.

ἀποδοτέα] ἀποδοτέον Lob. Vind. B. Vat. B. Ven. BC. Par. K. ἀποδιδότεα Vind. F.

φύσεις] φύσειν Bekkerus. In Vind. B. haec cum sequentibus continuantur: φύσει τὰ αὐτά;

πρότερα] πρότερον Par. K.

περιφερόμενοι] Duas primas syllabas Vind. E. int. vers. habet.

καὶ διολογοῦμεν] concessimus que Fic.

οὐδὲ] οὐδὲ' Vind. BF. Ang. B. C εὐχαῖς ὅμοια] pro desiderio commentitia Fic. Male scholastes: τὰ μὴ καθήκοντα. ἔστι γὰρ δέ τε καὶ τοιαῦτα εὐχόμενα.

ἐνομοθετοῦμεν] ἐνονθετοῦμεν Vat. H. Flor. AC.

μᾶλλον] multo magis Fic.

ἔοικε] ἔοικεν Vind. F. Flor. R.

ἦν] om. Lob. Vind. BD. Vat. BM. Par. K.

δυνατά γε] δυνατά τε Flor. T. quemadmodum Bekkerus scribendum coniecit. Quum posse illud fieri iam demonstratum esset, δυνατὰ aliquo modo distingui non ineptum erat.

καὶ βέλτιστα λέγοιμεν; Ἡν γάρ. Καὶ ὅτι μὲν δὴ δυνατὰ, διωμολόγηται; Ναι. "Οτι δὲ δὴ βέλτιστα, τὸ μετὰ τοῦτο δεῖ διωμολογηθῆναι; Δῆλον. Οὐκοῦν πρός γε τὸ φυλακικὴν γυναικα γενέσθαι οὐκ ἄλλη μὲν ἡμῖν ἄνδρας
D ποιήσει παιδεία, ἄλλη δὲ γυναικας, ἄλλως τε καὶ τὴν αὐτὴν φύσιν παραλαβοῦσα; Οὐκ ἄλλη. Πῶς οὖν ἔχεις δόξης τοῦ τοιοῦτο πέρι; Τίνος δή; Τοῦ ὑπολαμβάνειν παρὰ σεαντῷ τὸν μὲν ἀμείνω ἄνδρα, τὸν δὲ χείρω. ή πάντας ὁμοίους ἡγῆ; Οὐδαμῶς. Ἐν οὖν τῇ πόλει, ἦν φύλαξομεν, πότερον οἵτινες ἡμῖν ἀμείνους ἄνδρας ἔξειργάσθαι τοὺς φύλακας, τυχόντας ἵστις διήλθομεν παιδείας, ή τοὺς σκυτοτόμους, τῇ σκυτικῇ παιδευθέντας; Γελοῖον,

μὲν] om. Vat. H.

δὴ] Lacuna est in Vind. D.

δὴ] om. Lob. Vind. BD. Vat.

M.

τὸ μετὰ τοῦτο] τομετατοῦτο
Vind. B. Mon. B. τὸ μετατοῦτο
Ald. Bas. ab.

πρός] καὶ πρός Vind. BD.

ἄλλη] ἄλλ Vind. E.

ἡμῖν] .om. Vind. D.

παιδεία] παιδία Vind. BF.

ἄλλως] ἄλλ' ὡς Vind. F. a

m. pr. In margine καὶ μάλιστα
habet.

D αὐτὴν] αὐτοῦ Flor. T.

παραλαβοῦσα] προσλαβοῦσα

Lob. Vat. M. Vind. B. et, sup.

περι, D. παραλαβοῦσα Ang. B.

τοιοῦτος] τοιούτου Lob. Vind.

B. Vat. M.

σεαντῷ] σαντῷ Vind. F. Ang.

B. Flor. R.

πάντας] πάντως Ang. B. Flor.

R. et, sup. ας, Vind. F. πάντ

ἀν Vat. H. Flor. AC. πάντας

ἀν Flor. T.

ὁμοίους] ὁμοίως Lob. Vind. B.

Vat. M.

ἡγῆ] ἡγεῖ, sup. ἡ, Vind. F.

ἡγεῖ recentiores.

φύλαξομεν] οἰκιζομεν Flor. T.

πότερον] ποτέρους Mon. B.

Flor. U. Stallbaumius, qui post

ἔξειργάσθαι comma fecit.

σκυτικῇ] σκυτοτομικῇ, in mar-

gine γρ. σκυτικῇ, Flor. T.

ἔφη] Ita Vind. F. sed cum ν
super η.

δέ] δαί Par. A.

πολιτῶν] πολιτικῶν Flor. T.

Πολύ γε] Πάντη γε Bas. b. E

In Vind. D. Πολύ γε — βέλτισται; omissa sunt. Ficinus proxima nonne et reliquorum civium hi optimi? interpretatus pro Πολύ γε Et reliquorum posuit.

δέ] δαί Par. A.

αῖ] om. Vat. H.

βέλτισται] βέλτιστοι Vind. B.

Καὶ τοῦτο, ἔφη, πολύ.] Valde

Fic.

τι] τῇ Vind. E. Vat. H. τι τῇ
Vind. D. Etiam Flor. ACR. τῇ
πόλει exhibent, sed utrum omisso,
an servato τι, Stallbaumius
non declaravit.

πόλει] πολέως Vat. B.

ἔγγιγνεσθαι] ἔγγιν. Mon. B.
(Flor. U.) Ald. Bas. ab. Steph.

ἔστι] ἔστιν Bekkerus.

δὲ] δὴ cum editis ante Bekkerum Vind. E. Vat. M. et fortasse a m. pr. Ven. B. quem Bekkerus correctum δὲ exhibere dicit. δὲ ex Florentinorum uno A. Stallbaumius annotavit, ut reliqui quinque δὴ habere videantur. Bipontini quoque de Par. K. tacent.

παραγγηγόμεναι] om. Fic.

πόλει] πόλιν Ang. B. Flor. R. 457

πόλεως Vat. B.

ἔτιθεμεν.] ἔτιθεμεν Ald. έτι-

ἔφη, ἔρωτᾶς. Μανθάνω, ἔφην. τί δέ; τῶν ἄλλων πολιτῶν οὐχ οὗτοι ἀριστοι; Πολύ γε. Τί δέ; αἱ γυναικεῖς Ετῶν γυναικῶν οὐχ αὖται ἔσονται βέλτισται; Καὶ τοῦτο, ἔφη, πολύ. "Εστι δέ τι πόλει ἀμεινον, ηγετησάς τε καὶ ἄνδρας ὡς ἀριστους ἐγγίγνεσθαι; Οὐκ ἔστι. Τοῦτο δὲ μουσική τε καὶ γυμναστικὴ παραγιγνόμεναι, ὡς ἡμεῖς διήλθομεν, ἀπεργάσονται; Πῶς δ' οὕ; Οὐ μόνον ἄρα 457 δυνατὸν, ἀλλὰ καὶ ἀριστον πόλει νόμιμον ἐτίθεμεν. Οὕτως. Ἀποδυτέον δὴ ταῖς τῶν φυλάκων γυναιξὶν, ἐπειπερο ἀρετὴν ἀντὶ ἴματίων ἀμφιέσονται, καὶ ποιωνητέον πολέμου τε καὶ τῆς ἄλλης φυλακῆς τῆς περὶ τὴν πόλιν, καὶ οὐκ ἄλλα πρακτέον· τούτων δ' αὐτῶν τὰ ἐλαφρότερα

θεμεν; Bekkerus et Stallbaumius; cui initium dictionis repugnare videtur.

Ἀποδυτέον — αἰσχρόν. B.] excerpsit Stobaeus serm. XXXXI. pag. 255. Ἀποδοτέον etc. Ald. Bas. a.

ἐπειπερο] ἐπειδήπερ Lob. Vind. BD. Vat. M. Bas. b.

ἀμφιέσονται] ἐνδύσονται Lob. Vind. BD. Vat. BM. et scholastes, qui ἀμφιέσονται ut variam lectionem affert. Item margo Lob. γρ. ἀμφιέσονται. Hoc autem medium est, non passivum, quod statuit Matthiae gramm. p. 780.

ποιωνητέον] ποιωνητέων Bas. b.

φυλακῆς] φ. καὶ Stob. cod. B. custodia atque tutela Fic.

ἄλλα] ἄλλο Stob. aliud Fic.

δ'] δὲ Vind. EF. Flor. CTV. Stob.

αὐτῶν] ἔαντων Flor. A.

ἐλαφρότερα] ἐλαφρώτερα Bekkerus ex coniectura, quam sequitur in tert. ed. Astius. Choeroboscus Bekkeri anecd. p. 1287. de his adiectivis ita praecepit: εἰ δὲ ἔχοντιν ἄφωνον ὅμοιως πρὸ ἀμεταβόλου, ὅμοιως τοῖς μανιοῦ παραληγομένοις φυλάττονται τὸ ὅ καὶ ἐν τοῖς συγκριτικοῖς καὶ ἐν τοῖς ὑπερθετικοῖς, οἷον λάγνος λαγνότερος λαγνότατος, ἄνθρος ἀνθρότερος ἀνθρότατος, ἔργος ἔργοτερος ἔργοτατος,

ἐλαφρὸς ἐλαφρότερὸς ἐλαφρότατος. Ιστέον δὲ, ὅτι αὐτὰ, φημὶ δὴ τὸ ἔργοντερος καὶ ἐλαφρότερος καὶ εὐτεννος εὐτεννότερος καὶ δύσποτος δυσποτότερος, παρὰ τοῖς Ἀθηναίοις καὶ διὰ τοῦ ὧ, ὡς παρὰ τῷ Εὐφριπίδῃ ἐν Ἐπάρῃ. (579. Pors.) πατέδος θανούσης εὐτεννωτάτην δὲ σέ. Hanc auctoritatem non sufficere ad recipiendum contra codices ὁ recte statuit Buttmannus gramm. II. p. 410. in dubia vero scriptura utendum ea neque cum Schaefero melet. p. 9. ὡς a prosa oratione abiudicandum videtur. Itaque ἐμμετρώτατος Leg. L. XI. p. 926. A. non immerito Bekkerus secundum Ven. B. Vat. C. et a m. pr. Par. A. recepit, quamquam ne Stallbaumius quidem reprehendendus est, qui contra Vossianum et Florentinos vulgatum ὅ mutare noluerit. Neque ἔργοντερος Epin. 987. C. a Bekkerio et Stallbaumio editum auctoritate caret, si Par. A. et Vat. C. a m. pr. id exhibent. Minus tutum est ἀτεχνώτεροι Leg. III. 679. D. a m. pr. in Par. A. scriptum et a Bekkerio receptum, et ἐμμετρώτατα Leg. II. 674. C. ex depravata Par. A. Voss. Pal. C. scriptura ἐμμετρώτατα, quam Vat. C. inter versus habet, a Bekkerio factum et a Stallbaumio secundum Flor. A.

ταῖς γυναιξὶν, ἡ τοῖς ἀνδράσι δοτέον διὰ τὴν τοῦ γένους ἀσθένειαν. ὁ δὲ γελῶν ἀνήρ ἐπὶ γυμναῖς γυναιξὶν τοῦ βελτίστου ἔνεκα γυμναξούμεναις ἀτελῆ τοῦ γελοίου σοφίας δρέπων παρόπον οὐδὲν οἶδεν, ὡς ἔοικεν, ἐφ' ᾧ γελᾷ οὐδ' ὅτι πράττει. κάλλιστα γὰρ δὴ τοῦτο καὶ λέγεται καὶ λελέξεται, ὅτι τὸ μὲν ὠφέλιμον παλὸν,

in quo ὁ super ὁ adscriptum legitur, praelatum. Nullo vero modo ἐμμετρώτατα et πικρώτατον probanda, quorum illud infra p. 474. D. hoc Epist. VII. 336. B. Bekkerus ut nostro loco ἐλαφρώτερα et Tim. 56. B. ἐλαφρώτατον ex conjectura exhibuit, quam Stallbaumius in altero secutus est, quum infra L. VIII. p. 569. C. πικροτάτην neuter eorum attractaverit. Idem Stallbaumius in ed. sec. Bekkerum brevem vocalem in huiusmodi formis per totum Platonem expulisse tradens Buttmanni annotationem supra indicatam non legit. Etiam ἀρρότατον infra p. 459. E. Leg. V. 730. E. et similia intacta reliquit Bekkerus.

ἡ — γυναιξὶν] om. Vat. B. Verba ἡ τοῖς ἀνδράσι neque Ficinus expressit neque scriptor nisi per negligentiam addidit, quasi non τὰ ἐλαφρότερα, sed ἐλαφρότερα dixisset. Pro ἀνδράσι δοτέον Stobaeus ἀνδράσιν ἀποδοτέον habet.

ὁ δὲ γελῶν — γελᾷ B.] laudant Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 413. et Theodoretus Therap. L. VIII. p. 937. hac praefatione usus: κελεύσας γὰρ καὶ τὰς γυναιξας, οὐ μόνον τὰς νέας, ἀλλὰ καὶ τὰς γεγηρακυίας γυμνάζεσθαι, εἰτα γελῶντας τοὺς προσδιαλεγούμενους ἵδων ὑπολαβῶν ἐφη.

ἀνήρ] om. Fic.

ἐπὶ γυμναῖς γυναιξὶν] om. Vind. B. (cuius loco in Bekkeri comm. perperam Vat. B. significatus est.)

Vat. M. ἡ. γ. ταῖς γυν. Vind. D. Vat. H. Euseb. Theod.

ἀτελῆ] ἄτε δὴ margo Par. A. B secundum Faehsium („ἄτε δὴ γρ. A.“ Bekkerus.) Euseb. Theod. cuius ex cod. Augustano antiquiore Sylburgius δὴ recepit, quod vulgo deerat. Sed in cod. Ursini ἀτελῆ erat.

τοῦ γελοίου] διὰ τ. γ. Theod. excepto cod. Ursini. circa ridiculas nugas Fic. Apud Stobaeum serm. LXXVIII. p. 465. Pindarus hoc in physiologos dixisse traditur: τοὺς φυσιολογοῦντας ἐφη Πίνδαρος ἀτελῆ σοφίας παρόπον δρέπειν. Idem Boeckhius T. II. p. 10. inter apophthegmata Pindari e codice Vratisl. retulit: τοὺς φυσιολογοῦντας ἐφη ἀτελῆ σοφίας δρέπειν παρόπον. et eiusdem tomī parte altera p. 669. ingeniose hoc cum altero Pindari fragmēto a Platone Theaet. p. 173. D. servato coniunxit. Sed quod priori loco Schneideri conjecturam σοφίας e nostro efficientis scitam dicit, non magis ei assentior, quam Stallbaumio, qui in ed. sec. τοῦ γελοίου ex glossemate additum suspicatur. παρόπον σοφίας Plato fructum sapientiae dicit, quem risor iste quasi de arbore sapientiae sua decerpere, h. e. sapientia sua invenisse sibi videtur, eundemque τοῦ γελοίου παρόπον appellat utpote in ridicule positum et ridendi materiam in se continentem: die Weisheitsfrucht des lächerlichen.

δρέπων] δρεπόμενος Theod. excepto cod. Ursini, quemadmodum Attico apud Eusebium praep.

τὸ δὲ βλαβερὸν αἰσχρόν. Παντάπασι μὲν οὖν. Τοῦτο μὲν τοίνυν ἐν ὥσπερ κῦμα φῶμεν διαφεύγειν τοῦ γνωναικείου πέρι νόμου λέγοντες, ὥστε μὴ παντάπασι κατακλυσθῆναι τιθέντας, ὡς δεῖ κοινῇ πάντα ἐπιτηδεύειν τούς τε φύλακας ἡμῖν καὶ τὰς φυλακίδας, ἀλλά πη τὸν C λόγον αὐτὸν αὐτῷ ὁμολογεῖσθαι, ὡς δυνατά τε καὶ ὡ-

ev. L. XV. p. 465. fortasse hunc locum respicienti ὁ ἔξ αὐτῆς τῆς διαισούντης τὸν καρπὸν τῆς εὐδαιμονίας δρεπόμενος dicitur.

οὐδὲν] οὐδὲ Astius in sec. ed. Euseb. Theod. excepto uno Ursini codice, in quo οὐδὲν, et altero, in quo οὐν erat. ὡνδὲν, sup. οὐ, Vind. F.

ὡς ἔστιν] om. Fic.

γελᾶ] γελῶι Lob. Ven. C. Vat. M. et a m. pr. B. γελῶ etiam Vind. B. a m. pr. habuisse videtur; certe ἂ in eo a correctione est. εὐκτιὸν τοίτον προσώπουν τῶν ἐνικῶν margo Lob.

οὐδ' ὅτι] οὐδέ τὶ Stob. Trinc. οὐδὲ τὶ Stob. Gesn. Gaisf. (οὐδ' ὅτι margo Gesn.)

κάλλιστα — Παντάπασι μὲν οὖν.] excerptis Stobaeus etiam serm. I. p. 24. atque ibi κάλλιστον in ed. Trinc. et Gesn. κάλλιστα vero in cod. A. et in ed. Gaisfordii, serm. autem XXXXI. κάλλιον in cod. A. μάλιστα in cod. B. legitur. Ficinus pro eo scite dixit.

δὴ] om. Vat. H.

λελέξεται.] λέξεται Ang. B. Flor. R. et a m. pr. Vind. F. qui quartam syllabam a m. sēc. int. vers. praepositam habet. διαλέξεται Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV.

τὸ μὲν] prius int. vers. Vind. D.

διαφεύγειν] enatasse Fic.

πέρι] Ita Bekkerus secundum Par. A. Vat. B. Ven. BC. pro

περὶ scripsit, nec aliter Lob. Mon. B. et nisi fallor Vind. DEF. Sed Vind. B. cū editis ante Bekkerum et Stallbaumio in sec. ed. πέρι exhibet, quod, quum γνωναικείου sonum habeat, minus aptum videtur. Conf. Buttmanni gramm. II. p. 301.

λέγοντες] λέγοντι Vind. E.

πάντα] πάντας Lob. Vind. B. Vat. M.

τε] int. vers. Vind. D.

αὐτῷ] αὐ. Lob. Vind. BDF. C

ὁμολογεῖσθαι] Ita Par. A. Vind. EF. et int. vers. D. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. ὁμολογεῖσθαι Vat. B. ὁμολογῆσθαι Vind. D. cum reliquis codicibus editionibusque omnibus. Etiam Par. A. ὡ super ὁ et η super εἰ habet, et Ficinus perfectum legit: immo vero sibimet oratio nostra consonuit, quod videlicet et possibilia et utilia ferret. nec non necessarium foret, si sensus is esset, quem Schleiermacherus ostendit: sondern dass die Rede gewissermassen für sich selbst Zeugniss abgelegt hat, dass sie mögliches und nützliches vorträgt. Verum testimonii significatio a verbo ὁμολογεῖσθαι aliena et sensus hic est, sed quodammodo sibi constet sermo noster et vere tum posse illa fieri, tum utiliter fieri affirmare videatur. Itaque praesens aptissimum est. Cf. L. III. p. 434. E: καν μὲν ὁμολογήται. Leg. V. 746. C: τὸ ὁμολογούμενον αὐτῷ αὐτῷ. Infinitivus autem non a φῶμεν, ut Stallbaumius autumat, sed ab ὥστε pendet, quum ἀλλὰ negationi sit oppositum.

φέλιμα λέγει; Καὶ μάλα, ἔφη, οὐ συιρὸν κῦμα διαφεύγεις. Φήσεις γε, ἦν δ' ἐγώ, οὐ μέγα αὐτὸν εἶναι, ὅταν τὸ μετὰ τοῦτο ἵδης. Λέγε δὴ, ἵδω, ἔφη. Τούτῳ, ἦν δ' ἐγώ, ἐπεται νόμος καὶ τοῖς ἐμπροσθεν, τοῖς ἄλλοις, ὡς ἐγῶμαι, ὅδε. Τίς; Τὰς γυναικας ταύτας τῶν ἀνδρῶν τούτων πάντων πάσας εἶναι κοινὰς, ἵδια D δὲ μηδενὶ μηδεμίαν συνοικεῖν, καὶ τοὺς παῖδας αὖ κοινοὺς, καὶ μήτε γονέα ἐκγονον εἰδέναι τὸν αὐτοῦ μήτε παῖδα γονέα. Πολὺ, ἔφη, τοῦτο ἐκείνου μεῖζον πρὸς ἀπιστίαν καὶ τοῦ δυνατοῦ πέρι καὶ τοῦ ὀφελίμου. Οὐκ οἶμαι, ἦν δ' ἐγώ, περὶ γε τοῦ ὀφελίμου ἀμφισβητεῖσθαι ἂν, ὡς οὐ μέγιστον ἀγαθὸν κοινὰς μὲν τὰς γυναι-

λέγει;] λέγει. codices mei cum editis ante Bekkerum, quod verbo φῶμεν non convenit.

μάλα] μάλ' Lob. Vind. B. Vat. M.

ἔφη, οὐ] ἔφη. Oὐ Ald. Erunt fortasse quibus plenius post ἔφη interpungendum videatur, ut καὶ μάλα interrogationi φῶμεν respondeat, sequentia caussam affirmationis contineant. Sed haec iusto vehementius ita adiici puto ideoque καὶ μάλα cum διαφεύγεις iungere malo.

συιρὸν] μιρὸν Vind. D.

διαφεύγεις] evasisti Fic.

Φήσεις] φύσεις Bas. ab.

γε] om. Vat. B. δὲ Vind. F. Ang. B. Flor. R. Stallbaumius in sec. ed. sibi δέ γε scribendum videri bis docuit, caussam ne semel quidem significavit.

τὸ μετὰ τοῦτο] τομετατοῦτο Lob. Vind. BD. τὸ om. Vat. B.

ἵδω] ως ἵδω Ven. B. Mon. B. Flor. U. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr. et sec. Stallb. pr. ut videam Fic. quemadmodum etiam solum ἵδω interpretandum erat. Cf. Schaeferus ad Bosium p. 764. et Bernhardy synt. p. 397.

Τούτῳ — ποινοὺς δὲ τοὺς παῖδας D.] excerptis Stobaeus serm. XXXXI. p. 255. et priora usque

ad παῖδα γονέα Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 414. Pro Τούτῳ Vind. E. τούτων habet.

ἦν] ως, in marg. a m. s. ἦν, Mon. B.

καὶ τοῖς] καὶ τοῦ Vind. E. Flor. AC.

τοῖς] καὶ τοῖς Vind. D. Par. K. sec. Bekk.

ἄλλοις] ἄλλοις Stob. Trinc. ἄλλοις Gesn.

ὅδε. Τίς; : ὅδε τίς Vind. E. Etiam Vind. F. post ὅδε interpunktionem omisit. Pro ὅδε Stobaei codices et ed. Trinc. Gesn. ὥδε habent, quod Gaisfordius secundum vulgatam nostram correxit.

Τὰς γυναικας — παῖδα γονέα. D.] Theodoreetus Lib. VIII. p. 939. ita exhibit: Ἀνδρῶν τούτων ἀπάντων πάσας εἶναι γυναικας κοινὰς, ἵδια (ἵδιαν cod. Ursini) δὲ μηδεμίαν μηδενὶ συνοικεῖν· καὶ τοὺς παῖδας αὖ κοινοὺς, καὶ μήτε γονέα ἐκγονον εἰδέναι τὸν αὐτοῦ παῖδα, (hoc cod. Urs. Flor. B. et duo recentiores Sylburgii omittunt) μήτε παῖδα πατέρα τὸν αὐτοῦ (παῖδας omissis tribus sequentibus iidem) γονέα.

πάντων] om. Stob. cod. A. Trinc.

κας εἶναι, κοινοὺς δὲ τοὺς παῖδας, εἴπερ οἶόν τε· ἀλλ' οἶμαι περὶ τοῦ εἰ δυνατὸν ἢ μὴ πλείστην ἀμφισβήτησιν γενέσθαι. Περὶ ἀμφοτέρων, ἢ δ' ὅς, εὗ μάλα ἀν ἀμφισβητηθείη. Λέγεις, ἣν δ' ἔγὼ, λόγων σύστασιν· ἔγὼ δ' ὥμην ἐκ γε τοῦ ἑτέρου ἀποδράσεσθαι, εἴ δοι δόξειεν ὡφελίμον εἶναι, λοιπὸν δὲ δή μοι ἔσεσθαι περὶ τοῦ δυνατοῦ καὶ μή. Ἀλλ' οὐκ ἔλαθες, ἢ δ' ὅς, ἀποδιδράσκων· ἀλλ' ἀμφοτέρων πέρι δίδου λόγον. Τριητέον, ἣν δ' ἔγὼ, δίκην. τοσόνδε μέντοι χάρισαι μοι· ἔασόν με ἔορτάσαι, ὕσπερ οἱ ἀργοὶ τὴν διάνοιαν εἰώθασιν ἔστια— 458 σθαι ὑφ' ἁυτῶν, ὅταν μόνοι πορεύωνται. καὶ γὰρ οἱ τοιοῦτοι που, ποὶν ἔξενρεῖν, τίνα τρόπου ἔσται τι ὅν

iδίᾳ] *iδίᾳ* Stob. cod. A. Trinc.

iδίῳ Gesn.

D *μηδεμίαν*] μὴ δὲ μίαν Mon. B. Stob. Trinc.

συνοίκειν] ἔνν. Ang. B.

γονέα] γονέας Ang. B. Stob. cod. A. Trinc.

ἔγονον] post εἰδέναι Stob.

αὐτοῦ] αὐ. Lob. Vind. DF. Ald. Bas. ab.

γονέα] γονέας Vind. EF. Flor. ACR.

τοῦ ὡφελίμον] τοῦ om. Stob.

Οὐκ — ὡφελίμον] om. Vind. BF. Vat. M. Post *Οὐκ* Stephanus comma posuit.

αὐ] om. Lob. Vind. B. Vat. BM.

ώς] om. Vind. E.

τὰς] om. Vind. BD.

τοὺς] om. iidem.

εἰ] om. Lob. Vind. B. Vat.

BM. *δυνατὸν*] ἀδύνατον Vind. F. Ang. B. Flor. R.

πλείστην] Huic Vind. F. Ang. B. et int. vers. a m. s. Mon. B. αὐ addunt.

E *εὖ*] om. Vind. B.

μάλα] μάλιν Vind. DE. Vat. H.

Flor. ACTV. Stallbaumius.

σύστασιν] Ita Lob. Vind. BDEF. Mon. B. Flor. ACRTUV. *ἔνστασιν* editi. (*sermonum*) *conspiracy* Fic. quod supra modum

auxit Schleiermacherus: *Das ist ja eine Rote von Reden, die du mir ankündigest!* Vid. Stephanithes. I. 1794. D.

ἀποδράσεσθαι] ἀπόδράσασθαι Ven. B. Flor. R.

ἀλλ' ἀμφοτέρων] ἀλλ' om. Vind. D. Fic.

τοσόνδε] τὸ σὸν Vat. H.

χάρισαι μοι] χάρισαίσιμ Vind. F. a m. pr. χάρισαίμι Vind. E. χάρισόν μοι Par. K.

ἔασόν] καὶ ἔ. Ang. B. Flor. R. ζεσαί Vind. D.

ἔορτάσαι] *meo arbitratu crassari* 458 Fic. Idem in sequentibus *ἔστιασθαι* ὑφ' ἁυτῶν *crassari* se ipsis satis crasse interpretatus est.

ἀργοὶ] ἀργεῖοι Vind. D. a m. pr.

εἰώθασιν] *εἰώθεσάν* Lob. Vind. B. Vat. BM. Et Vind. D. *εσεν* super ασιν habet.

ἔστιασθαι] ἔστ. Vind. D.

πορεύωνται] *πορεύονται* Vind. E. Flor. R. Bas. b.

τίνα] *τίνα* Lob.

τι] om. Par. DK. secund. Bip. Mon. B. Flor. U. Stallbaumius; quem et sequens singularis δὲ et res ipsa deterrebat, quo minus tam dubiae fidei codices sequeretur. Unum enim quoddam otiosa mens ex eis, quae in votis habet, secum volvere, exornare, paratum ponere solet.

ἐπιθυμοῦσι, τοῦτο παρέντες, ἵνα μὴ κάμνωσι βουλευόμενοι περὶ τοῦ δυνατοῦ καὶ μὴ, θέντες ὡς ὑπάρχον εἶναι ὃ βούλονται, ἥδη τὰ λοιπὰ διατάττουσι καὶ χαίρουσι διεξιόντες, οἷα δράσουσι γενομένου, ἀργὸν καὶ **B** ἄλλως ψυχὴν ἔτι ἀργοτέραν ποιοῦντες. ἥδη οὖν καὶ αὐτὸς μαλθαπίζομαι καὶ ἐκεῖνα μὲν ἐπιθυμῶ ἀναβαλέσθαι καὶ ὑστερον ἐπισκέψασθαι, ἦδη δὲ τὸ δυνατά, νῦν δὲ ὡς δυνατῶν ὅντων θεὶς σκέψομαι, ἢν μοι παρίης, πῶς διατάξουσιν αὐτὰ οἱ ἀρχοντες γιγνόμενα, καὶ ὅτι πάντων ξυμφορώτατ' ἀν εἴη πραχθέντα τῇ τε πόλει καὶ τοῖς

παρέντες] παρέντισι Vind. E.
καὶ μὴ] In Vind. B. μὴ a m.
s. deletum.

ὑπάρχον] ὑπάρχον Lob. et a
m. pr. Vind. BF. Post hoc quod
legitur εἶναι, id non dubitavi
cum Bekker ex Par. AD. Vind.
F. Ven. C. Ang. B. Vat. H.
Flor. ACRTV. recipere. In Vind.
E. eius loco est ἥδη, in reliquis
et in editionibus praeter Bekke-
rianam omissum est, et, si ὑπάρ-
χον significacione vulgari pro ὃν
accipitur, omitti debet. Sed quum
ὑπάρχειν etiam certo adesse, non
deesse significet, quo sensu So-
crates Phaedon. p. 78. A. ταῦτα
μὲν δὴ ὑπάρξει dicit, recte illi
hoc, ut sit res cupita, tamquam
certum et indubium ponentes θέν-
τες ὡς ὑπάρχον εἶναι ὃ βούλον-
ται dicuntur. Simil apparent εἰ-
ναι facile supervacaneum, minime
vero explicatione gratia adden-
dum videri librariis potuisse.

βούλονται] βούλευονται Par.
K. sec. Bip.

διατάττουσι] διαλλάττουσι Lob.
Vind. B. Vat. M.

δράσουσι] δράσσουσι Vind. D.

γενομένου] γενον Vind. E.
γενομένην Ang. B. et a m. sec.
Flor. RT.

ἀργὸν καὶ ἄλλως ψυχὴν] at-
que ita torpente animum Fic.
Pro ἀργὸν Mon. B. Par. DK.

sec. Bekk. ἀργὴν habent, Flor.
U. ἀργην habere dicitur.

ἐκεῖνα] ἐκεῖνο Mon. B. Flor. B
U. disceptationem illam Fic.

ἀναβαλέσθαι] ἀναβαθέσθαι
Vat. H. Flor. ACV. ἀναβλαβέ-
σθαι Vind. E.

ἥ] Ita Par. A. Lob. Vind.
BDF. Vat. BHM. Ven. BC. Ang.
B. Flor. ACRV. quibus in sec.
ed. Stallbaumius Flor. T. addit.
εἰ reliqui cum editis ante Bek-
kerum, quem Stallbaumius in sec.
ed. deseruit, quia non qua ra-
tione res fieri possit potissimum
dubitetur, sed an omnino fieri
possit. Sed posse aliquid fieri
haud aliter demonstratur, nisi ut
modus, quo fieri possit, ostenda-
tur. Itaque codicibus obtempe-
rare licet. Ficinus alterum secu-
tus est: possibiliane ista sint an
non.

δύναται] δύναται Vind. F.
Ang. B.

σκέψομαι] σκέψωμαι Flor. R.
μοι] με Vind. D.

παρίης] Hunc accentum codi-
ces a me inspecti omnes sex ha-
bent cum editis ante Bekkerum,
qui tacite scripsit παριῆς. Cf.
Vol. I. p. 305, b. sq. et L. VII.
p. 520. A. In Vind. D. super
ultima ois legitur.

ξυμφορώτατ'] ξυμφερώτατ'
Vind. F.

φύλαξι. ταῦτα πειράσομαι σοι πρότερα συνδιασκοπεῖσθαι, ὅστερα δ' ἐκεῖνα, εἶπερ παρίης. Ἀλλὰ παρίημι, ἔφη, καὶ σκόπει. Οἶμαι τοίνυν, ἣν δ' ἐγὼ, εἶπερ ἔσονται οἱ ἄρχοντες ἄξιοι τούτου τοῦ ὀνόματος οὗ τε τούτοις ἐπίκουροι κατὰ ταῦτα, τοὺς μὲν ἐθελήσειν ποιεῖν τὰ ἐπιταττόμενα, τοὺς δὲ ἐπιτάξειν τὰ μὲν αὐτοὺς πειθομένους τοῖς νόμοις, τὰ δὲ καὶ μιμουμένους, ὅσα ἀνὴκείνοις ἐπιτρέψωμεν. Εἰκὸς, ἔφη. Σὺ μὲν τοίνυν, ἣν δ' ἐγὼ, δὲ νομοθέτης, αὐτοῖς, ὥσπερ τοὺς ἄνδρας ἐξέλεξας, οὕτω καὶ τὰς γυναικας ἐκλέξας παραδώσεις

τε] om. Par. A. Vat. H. Flor. TV. δὲ, sup. τ., Vat. B.

ταῦτα] In Ald. ante hoc nulla distinctio, post id comma, in Bas. ab. utrimque punctum positum, deinde Πειράσ. scriptum, in Stephan. Ast. pr. sec. post φύλαξι commate incisum est. Pro πειράσομαι Par. K. sec. Bip. πειράσομαι habet.

πρότερα] πρότερον Par. K. Ang. B. Flor. RT.

παρίης] παρίης Steph. Ast. pr.

C οὗ τε] εἴ τε Stallbaumii sec. ed.

κατὰ ταῦτα] καταταντὰ Lob. Vind. F. In Bas. ab. non post, sed ante haec comma positum, in Ald. utroque loco omissum.

τοὺς δὲ] τοὺς δὲ Lob. Vind. BF. Ang. B. Vat. M. Flor. R.

αὐτοὺς πειθομένους τοῖς νόμοις] αὐτὸς πειθομένους τοὺς νόμους Vind. F. αὐτοῖς πειθομένους τοῖς νόμοις Par. K. quod Astius praeente Ficino (*ipsis parentes legibus*) in sec. ed. recepit, non postulante, ut ipse ait, sed tamen permittente sensu, quia imitatio ad voluntatem et consilium legislatoris, non ad ipsas leges dirigitur. At nihil minus verum est αὐτοὺς, quod in tercia ed. restituit. Nonnulla enim sic imperant custodes, ut ipsi legibus pareant, scilicet ea omnia, quae a legibus imperare iubentur.

καὶ] ἡ cum punctis superne inscriptis Vind. F. om. Ang. B. Flor. RT.

μιμουμένους] Ita Mon. B. a m. pr. μὴ πειθομένους a m. s. Post μιμουμένους comma feci, quia sequentia per appositionem addita sunt, ut L. I. p. 334. D: πολλοῖς ἄσα, ὡς Πολέμαρχε, ἔνυβρήσεται, ὅσοι διημαρτήσατι τῶν ἀνθρώπων, δίκαιοι εἶναι τοὺς μὲν φίλους βλάπτειν· πονηροὶ γὰρ αὐτοῖς εἰσὶ· τοὺς δὲ ἐχθροὺς ὡφελεῖν· ἀγαθοὶ γάρ.

ἐπιτρέψωμεν] ἐπιτάξωμεν Vind. D. Cf. L. III. p. 425. A. sqq.

Eἰκὸς — λεών. D.] laudant Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 414. et Theodoretus Therap. L. VIII. p. 939. Sed hic duo prima omittit et pro Σὺ secundum Flor. B. cod. Ursini et ed. Sylb. Εἰς legit.

δὲ] om. Theod. Sylb.

νομοθέτης] Huic quoque comma, quod Aldus et Stephanus ne sequenti quidem αὐτοῖς apposuerunt, apponendum putavi, quo magis αὐτοῖς ad ἐκλέξας et παραδώσεις pertinere intelligeretur.

ἐξέλεξας] ἐκλέξας Vat. B. om. Ven. B. Euseb. Theod. Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr.

παραδώσεις] παραδώσει Theod. Schulz.

καθόσον οἶόν τε δμοφυεῖς· οἱ δὲ, ἄτε οἰκίας τε καὶ ξυσ-
σίτια ποιη̄ ἔχοντες, ἰδίᾳ δὲ οὐδενὸς οὐδὲν τοιοῦτο πε-
D πτημένου, δμοῦ δὴ ἔσονται, δμοῦ δὲ ἀναμεμιγμένων καὶ
ἐν γυμνασίοις καὶ ἐν τῇ ἄλλῃ τροφῇ ὑπ' ἀνάγκης, οἷμαι,
τῆς ἐμφύτου ἔξονται πρὸς τὴν ἀλλήλων μέξιν. Ηὐ οὐκ ἀναγ-
καία σοι δοκῶ λέγειν; Οὐ γεωμετρικαῖς γε, ηδὸς, ἀλλ'
ἔρωτικαῖς ἀνάγκαις, αἱ κινδυνεύοντιν ἐκείνων δριμύτεραι
εἶναι πρὸς τὸ πείθειν τε καὶ ἔλκειν τὸν πολὺν λεών.
Καὶ μάλα, εἶπον. ἀλλὰ μετὰ δὴ ταῦτα, ὡς Γλαύκων,

καθόσον] καθ' ὁσον Vind. F.
Mon. B. (recentiores.)

δμοφυεῖς] consimiles inter se
ingenio Fic.

ἄτε] ἄτε δὴ Theod.

ξυσσίτια] ξυνσίτια cum σ super ν Vind. F.

ποιη̄] ποιὰ Lob. Vind. BDEF.
Mon. B. Vat. B. Ven. BC. Par.
DK. sec. Bekk. Ang. B. Flor.
ACRTUV. Euseb. Theod. Sylb.
Bas. b. Stallbaumius. Utrum Fi-
cinus legerit, utpote aedes et
comessationes communes haben-
tes interpretatus, incertum est.
ποιη̄, si non in optimo codice
exstaret, ad sequens ἰδίᾳ accommodatum a librariis videri posset:
nunc ab ipso Platone ad evitan-
dam tautologiae speciem, quam
ξυσσίτια ποιὰ habere necesse
est, et ut communio ad aedes
quoque pertinere intelligeretur,
potius, quam ποιὰ possum vi-
detur. Quamquam posse hoc ad
οἰκίας pariter atque ad ξυσσίτια
referri et codicum auctoritate
praevalere non nego..

οὐδενὸς] om. Par. K. et a
m. pr. Ven. B. post οὐδὲν ponit
Flor. T.

τοιοῦτο] τοιούτον Lob. Vat.
B. τοιοῦτον Vind. BD. Ven. B.
Par. K. Vat. M. Flor. T. Euseb.
Theod.

κεντημένον] κεντημένοι Par.
DK. (proprium vero nihil talium)
possidentes Fic.

δμοῦ] οὐδμοῦ Vind. E.

δὴ ἔσονται] δὲ ἔσονται Vind.
E. Theod. cod. Urs. δεήσονται
Par. K. sec. Bekk.

δμοῦ δὲ] καὶ δμοῦ δὴ Theod. D
δμοῦ δὲ cod. Urs.

ἀναμεμιγμένων] ἀμεμιγμένων
Vind. E.

οἷμαι] int. vers. Lob.

ἐμφύτου] ἐμφύτου ἐπιθυμίας
Theod. ἐμφ. οἰκονομίας cod. Urs.

ἔξονται] αὐξόνται Theod. co-
dices duo recentiores Sylb. et
Flor. B. Cf. ad p. 452. A.

ηὐ οὐκ] ηὐ οὐκ Vind. E.

γε] om. Vat. B. — Plutarchus
Lycurg. p. 48. C: ηὐ μὲν οὖν
καὶ ταῦτα παρορμητικά πρὸς
γάμον. λέγω δὲ τὰς πομπὰς τῶν
παρθένων καὶ τὰς ἀποδύσεις
καὶ τοὺς ἀγῶνας ἐν ὅψει τῶν
νέων ἀγομένων οὐ γεωμετρικαῖς,
ἀλλ' ἔρωτικαῖς, ὡς φησιν ὁ
Πλάτων, ἀνάγκαις: quem locum
indicavit Astius. Similiter nostrum,
ut videtur, respiciens Proclus in
Tim. p. 101: ταῦτα μὲν οὖν τὰ
τοῖα γεωμετρικαῖς ἀνάγκαις, φη-
σιν, ἀποδεδειγμέναι πείσθω. Ce-
terum nescio, an Glauconi haec
respondenti poëtae alicuius locus
sit obversatus.

αἱ] ἂ Lob. Vind. B. Vat. M.

κινδυνεύοντιν] om. Fic. (quae
multo acrior est quam illa.)

δριμύτεραι] δριμύτερα iidem,
qui ἂ habent.

ἀτάκτως μὲν μίγνυσθαι ἀλλήλοις η̄ ἄλλο διοῖν ποιεῖν Ε
οὔτε δσιον ἐν εὐδαιμόνων πόλει οὔτ' ἔασουσιν οἱ ἄρ-
χοντες. Οὐ γὰρ δίκαιον, ἔφη. Δῆλον δὴ, ὅτι γάμους
τὸ μετὰ τοῦτο ποιήσομεν ιεροὺς εἰς δύναμιν ὅτι μάλι-
στα· εἶεν δ' ἀν ιεροὶ οἱ ὀφελιμώτατοι. Παντάπασι μὲν
οὖν. Πῶς οὖν δὴ ὀφελιμώτατοι ἔσονται; τόδε μοι λέ- 459
γε, ὡς Γλαύκων· ὁρῶ γάρ σου ἐν τῇ οἰκίᾳ καὶ κύνας
θηρευτικοὺς καὶ τῶν γενναίων ὁρνίθων μάλα συχνούς.
ἄρ' οὖν, ὡς πρὸς Διὸς, προσέσχημάς τι τοῖς τούτων

τε] om. Theod. exceptis codi-
cibus Sylburgii duobus recentio-
ribus, ex quibus ille particulam
recepit.

πολὺν] πολὺν Bas. b.

μετὰ δὴ] δὴ τὰ δὴ Vind. E.
δὴ μετὰ Vat. B. Ven. B. cum
editis ante Bekkerum et Astio in
tert. ed. δὴ continuationem indi-
cans haud raro praepositionem
inter et pronomen vel nomen po-
nitur ita, ut huic ponderis non
nihil addat. Phaedon. 87. B: πρὸς
δὴ τοῦτο τόδε ἐπίσημαι εἰ τι
λέγω. 98. B: ἀπὸ δὴ θαυμα-
στῆς, ὡς ἑταῖρος, ἐπιλόδος φό-
μην φερόμενος. Non multo alie-
ter 102. B: ἐπεὶ αὐτῷ ταῦτα
ξυνεχωρήθη — τὸ δὴ μετὰ ταῦ-
τα ηρωτᾷ, εἰ δὴ etc.

μίγνυσθαι] γνηνοῦσθαι Vat.
BH. Vind. ED. Flor. ACV. hi
quatuor cum vulgato in margine.
denudari (*inter se*) Fic.

E *ἐν]* om. Vind. D.

δὴ] δὲ Mon. B. Flor. U.

γάμους] ἀγάμους Vat. B.

τὸ μετὰ τοῦτο] τομετατοῦτο
Lob. Vind. BDE. τὸ μετατοῦτο
Mon. B. Ald. Bas. ab.

ποιήσομεν] ποιήμεν Vind. E.

ιεροὺς] Haec singulorum cum
pluribus connubia Proclus in Tim.
p. 16. repetit ἐκ τῶν μνοτικῶν
λόγων καὶ τῶν ἐν ἀποδέήτοις
λεγομένων ιερῶν γάμων, οἷς καὶ
ὁ Πλάτων εἰς δύναμιν ἐξ ὄμοιῶν
(f. ἔξομοιῶν) περὶ τοὺς πολίτας

καὶ τοὺς τῶνδε γάμους ιεροὺς γέμους προσηγόρευσε. Hunc lo-
cum Astius indicavit et insuper Themist. Orat. XXI. pag. 248.
Hard. conferri iussit, ubi inter
alia haec ex nostro loco haud
aptissime translata leguntur: εἰσὶ¹
πον νῦμῶν ἐν ταῖς οἰκίαις πολ-
λοὶ μὲν ὕπποι, πολλοὶ δὲ κύνες,
καὶ ἐν τοῖς ἀγροῖς γε αὖ βοῶν
τε καὶ προβάτων ἀγέλαι. ὅταν
οὖν βούλησθε ἐξ αὐτῶν τίκτε-
σθαι νῦν μόσχους τε ἀδροὺς
καὶ πώλους γενναίους καὶ σκυ-
λάκια θηρευτικά, πότερον ἐξ
ἀπάντων ὄμοιώς γεννᾶτε, η̄
προθυμεῖσθε. ὅτι μάλιστά ἐν
τῶν ἀρίστων; ἔγω μὲν γάρ νῦν
ὅρῳ τόν τε ὕππον ἐξετάζοντες
etc.

ὅτι μάλιστα] ὅτιμαλιστα Vind.
F. ὅτιμαλιστα Steph. ὅ τι μάλι-
στα Stallb. in sec. ed. ut solet.

ῳφελιμώτατοι] ὀφελιμώτατοι
Vind. E. Item paullo post.

οὖν δὴ] om. Fic.

ἔσονται;] ἔσονται, Mon. B.
Ald. Steph. Ast. pr. sec.

οἰκίᾳ] Ita Vind. B. sed cum
litura ante i.

θηρευτικὸς] θηρευτικὸς Par.
K.

ἄρο] ἄρο Flor. T. ἄρα Vind.
F.

ὡς πρὸς Διὸς] om. Fic.

τι] om. Vind. F. Flor. R.

γάμοις τε καὶ παιδοποιίαις; Τὸ ποῖον; ἔφη. Πρῶτον μὲν αὐτῶν τούτων, καίπερ ὄντων γενναίων, ἀρ' οὐκ εἰσὶ τινες καὶ γίγνονται ἄριστοι; Εἰσί. Πότερον οὖν ἐξ ἀπάντων δύοις γεννᾶς, η̄ προθυμῆ ὅτι μάλιστα ἐκ

B τῶν ἀριστῶν; Ἐκ τῶν ἀριστῶν. Τί δ'; ἐκ τῶν νεωτάτων, η̄ ἐκ τῶν γεραιτάτων, η̄ ἐξ ἀκμαζόντων ὅτι μάλιστα; Ἐξ ἀκμαζόντων. Καὶ ἐὰν μὴ οὕτω γεννᾶται, πολύ δοι ἡγῆ χειρον ἔσεσθαι τό τε τῶν ὀρνίθων καὶ τὸ τῶν κυνῶν γένος; "Εγωγ', ἔφη. Τί δὲ ἵππων οἶει,

τε] om. Lob. Vind. B. Vat. B. nisi huius signum perperam pro Vindobonensi, cuius mentionem omisit, Bekkerus posuit.

παιδοποιίαις] *παιδοποιία* Vind. EF. Par. K. sec. Bip. *παιδοποίαι* Ven. C. Par. DK. secund. Bekk. Ang. B. Vat. H. *παιδοποιίας* Bas. ab. *παιδοποιίᾳ* Mon. B. Flor. ACRTUV. Stallb. in pr. ed. generationem Fic. qui tamen γάμοις quoque singulari coitum reddidit. Pollux III. 14: *Πλάτων* δὲ τὴν παιδοποιίαν οὐ παιδογονίαν καὶ παιδονογίαν εἴρηκεν.

Τὸ ποῖον; ἔφη.] Vulgo *Τὸ ποῖον, ἔφη;*

αὐτῶν τούτων] αὐτὸν τοῦτο Par. K.

Ἐλοιτ.] Elsīv. Bekkerus.

ἔξ ἀπάντων] *ἔξαπάντων* Vind. F.

προθυμῆ] *προθυμεῖ* Astius, Bekkerus et Stallbaumius.

Ἐν τῶν ἀριστῶν.] om. Vind. F. Ang. B.

B *Tί δ';]* *Tί δ'* Ald. Bas. ab. *Tί δ',* Steph. Ast. pr. sec.

γεραιτάτων] *γεραιοτάτων* Lob. Vind. B. Vat. M.

ἔξ ἀκμαζόντων] *ἔξακμαζόντων* Lob. h. l. et in sequentibus iterum, ubi Vind. F. *ἔξακμαζόντων* habet.

ἐὰν] *ἄν* Vind. E. Vat. H. Flor. ACT.

δοι] om. Fic.

ἡγῆ] *ἡγεῖ*, sup. *η̄*, Par. D. *ἡγεῖ* Astius, Bekkerus et Stallbaumius.

χεῖρον] *χείρων* Vind. B. Vat. M.

τό τε τῶν] *τε τὸ τῶν* Vind. D. τῶν τε Lob. Vind. B. Vat. M.

ορνίθων] *canum* Fic.

οὐλ τὸ] *οὐλ* Lob. Vind. B. Vat. BM.

κυνῶν] *avium* Fic.

δέ] *δαι* Par. A.

οἶει] om. Vind. B. Vat. M. οἶη Bas. ab.

ἡ̄] *ἡ̄* Par. A. *η̄* Lob. Vind. BDF. Ast. sec.

πη̄] *πη̄* Vind. F.

μὲν τὸ ἄν] *μὲν τὸ ἄν* Mon. B. μὲν τὸ ἄν editi ante Bekkerum.

η̄ δ' *δ'* *ος]* om. Lob. Vind. B. Vat. M.

ἄροιν εἶναι] *εἶναι* om. Mon. B. Flor. U. Fic. „Videtur abundare εἶναι.“ Steph. in marg. quem contra Astius duabus e structuris conflatam esse orationem statuit cum Matthiae gramm. p. 1303. quibus ita assentior, ut verbum εἶναι ex altera assumptum propter censem, ne σφόδρα ad δεῖ potius, quam ad ἄροιν referatur, articulum autem ad ἀρχόντων additum ex eadem illa altera structura repetendum putem. Scilicet illud σφόδρα ημῖν δεῖ ἄροιν ἀρχόντων non solum valde peritis nobis opus est magistratibus, sed etiam valde indigemus peritis magistratibus significare poterat, ideoque a Socrate, ne peritos magistratus desiderare videretur, quibus instruendis ipse iam magnam operam dedisset, ita inflectitur, ut ma-

ἢν δ' ἐγώ, καὶ τῶν ἄλλων ξώσων; ἢ ἄλλη πη ἔχειν;
Ἄτοπον μέντ' ἀν, ἢ δ' ὅς, εἴη. Βαβαὶ, ἢν δ' ἐγώ, ὡ
φίλε ἑταῖρε, ὡς ἄρα σφόδρα ἡμῖν δεῖ ἄκρων εἶναι τῶν
ἀρχόντων, εἴπερ καὶ περὶ τὸ τῶν ἀνθρώπων γένος
ἄσσαντως ἔχει. Ἀλλὰ μὲν δὴ ἔχει, ἔφη· ἀλλὰ τί δή; C
Οὐτὶ ἀνάγκη αὐτοῖς, ἢν δ' ἐγώ, φαρμάκοις πολλοῖς χρῆ-
σθαι. Ιατρὸν δέ που μὴ δεομένοις μὲν σώμασι φαρμά-
κων, ἀλλὰ διαίτῃ ἐθελόντων ὑπακούειν, καὶ φαυλότερον
ἔξαρκειν ἥγονύμεδα εἶναι. ὅταν δὲ δὴ καὶ φαρμακεύειν

gistratus nostros valde peritos esse necesse est sine ambiguitate dicat. Aliter sensisse videtur Bernhardy synt. p. 364. hunc locum inter eos referens, qui infinitivum extra necessitatem et per accessionem adiectum habeant, qualis sit Eurip. Med. 1400: φύ-
λιον χρήξω στόματος παιδῶν ὁ
τάλας προσπτύξασθαι. Plat.
Euthyd. p. 282. D: τὸ μὲν ἐνὶ,
ἔφην, παράδειγμα, ὡς Διονυσο-
δῶρε τε καὶ Εὐθύδημε, οἵων
ἐπιθυμῶ τῶν προτρεπτικῶν λό-
γων εἶναι, τοιούτον. et Xenoph.
Anab. V. 4, 9: τί ἡμῶν δεήσε-
σθε χρήσασθαι; quorum exemplorum primum ac tertium, quo-
niam infinitivum habent ad idem
subiectum, quod verbi finiti illum
regentis est, spectantem, cum
hoc nostro componi non debebant.
Neque alter ille Platonis locus
tuto adhibetur, quia οἷῶν ex
Routhii coniectura profectum est,
codices οἷῶν legi iubent. Noster
praeterea hoc proprium et nescio
an singulare habet, quod diver-
sae verbi construendi rationi si-
gnificationis quoque diversitas ali-
qua coniuncta est, quae ipsa
structurae utriusque adhibendae
et alteri alterius innectendae caus-
sa exstitit; quam ob rem illius di-
ctionis, etiam si secundum Rou-
thium cum Heusdio, Heindorfio et
Bekkero scribatur, tamen alia et
facilior ratio sit. Ceterum quae
Stallbaumius in sec. ed. p. 54.
exempla contulit, pleraque talia
sunt, quale Euripideum supra si-
gnificatum, et ab hoc aliena; in

verbis autem Timaei p. 33. D.
χειρῶν δὲ — οὐκ ὅτε δεῖν αὐ-
τῷ προσάπτειν, quae similia no-
stris videri possunt, genitivus ab
omissō τι pendet, non a verbo
δεῖν, cuius cum οἰκεῖσθαι coniuncti
significatio certa est et geniti-
vi impatiens.

εἴπερ] εἰ Vind. E. εἴπε, e
corr. εἰ, Vind. F.

καὶ] om. Vind. E.
ἄσσαντως] ἄσσαντως Vind. F.
ἔφη· ἀλλὰ] ἔφη· ἀλλὰ Ald. C
Steph.

Ιατρὸν] Ιατρῶν Vat. M. et a
m. pr. Vind. B.

ἐθελόντων] ἐθέλοντιν Vind.
BD. Vat. M. Flor. TV. ἐθέλον-
των cum οὖσι super ὄντω Lob.
„Paulo ante adscripsi margini,
videri redundare εἶναι (et merito
certe, quum satis sit, ἡμῖν δεῖ
ἄκρων τῶν ἀρχόντων, ut dicitur
δεῖ μοι τούτον pro δέομαι
τούτον) sed hic quoque de éo-
dem infinitivo redundante admoni-
nere debueram: quum satis sit
ἔξαρκειν, absque εἶναι. Nisi
forte putemus non ἔξαρκειν sed
ἔξαρκη Platонem scripsisse: nam
post ἔξαρκη (aut ἔξαρκη, si ita
potius scribendum est) apte ad-
deretur εἶναι. Verum et pro ἐθε-
λόντων scribendum videtur ἐθέ-
λοντιν. nisi dicamus non ad praec-
cedens σώμασι referri, sed intel-
ligendum esse σώμασιν ἀνθρώ-
πων ἐθελόντων διαίτῃ ὑπακού-
ειν: sed ita scripsisse Platонem
minus mihi fit verisimile.“ Steph.
annot. p. 21. Eandem coniectu-
ram margini adlevit: ἐθέλοντιν.

δέη, ἵσμεν ὅτι ἀνδρειοτέρουν δεῖ τοῦ λατροῦ. Ἀληθῆ· ἀλλὰ πρὸς τί λέγεις; Πρὸς τόδε, ἦν δ' ἐγώ· συχνῷ τῷ ψεύδει καὶ τῇ ἀπάτῃ κινδυνεύει ἡμῖν δεήσειν χρῆσθαι
D τοὺς ἀρχοντας ἐπ' ὀφελείᾳ τῶν ἀρχομένων. ἔφαμεν δέ που ἐν φαρμακον τοῖς πάντα τὰ τοιαῦτα χρήσιμα εἶναι. Καὶ ὁρθῶς γε, ἔφη. Ἐν τοῖς γάμοις τοίνυν καὶ παιδοποιίαις ἔοικε τὸ ὁρθὸν τοῦτο γίγνεσθαι οὐκ ἐλάχιστον. Πῶς δή; Λεῖ μὲν, εἶπον, ἐκ τῶν ὀμολογημένων τοὺς ἀρίστους ταῖς ἀρίσταις συγγίγνεσθαι ὡς πλειστάκις,

Neque dubium est, quin genitivus nec masculini generis sit neque a σώμασι pendeat. Minime vero mutandus, sed pro absoluto habendus atque ab eadem sermonis mobilitate repetendus est, qua supra p. 458. D. ἀναμεμιγμένων pro nominativo, Leg. L. VIII. p. 855. A. in verbis παισὶ δὲ καὶ γένει, ἐάντι φύγωσι τὰ πατρῷα ἥθη, πλέος ἐστω καὶ λόγος ἔντιμος λεγόμενός, ὡς εὖ τε καὶ ἀνδρείως εἰς ἀγαθὸν ἐπηκού διαπεφεγγότων hoc extremum pro dativo, alibi idem genitivus pro accusativo ponitur. Non magis opus est altera Stephani conjectura, quam Astius in tert. ed. suam fecit, quum in secunda vulgatum εἴναι recte explicuisset.

φαντότερον] φαντοτέρων cum on super ὡν Vind. F.

δέη] δέοι Flor. T.

ἵσμεν] σημεν Vind. F.

λατροῦ.] λατροῦ. ἦ γάρ; Ang. B. Flor. RT.

πρὸς τί] τί πρὸς ταῦτα Vind. D.

κινδυνεύει] κινδυνεύειν Vind. B. Vat. M. Ald. Bas. ab.

δεήσειν] δεήσει Lob. Vind. BD. Vat. M.

χρῆσθαι] om. Lob. Vind. B. Vat. M.

D ἐπ' ὀφελείᾳ] ἐπωφελείᾳ Ald. Bas. ab.

ἐν φαρμακον εἴδει] pharmaci medicinaeque loco Fic. V. L. III. p. 389. B.

γε] γ' Vind. F. Flor. RT. Idem Bekkerus in Vat. M. aliove

codice invenisse videtur. Scribit enim in commentariis: „γ' om. Vat. M.“ et in textu γε habet.

ἔοικε τὸ] ἔοικεν Lob. Vind. B. Vat. BM. ἔοικε καὶ τὸ Ang. B.

γίγνεσθαι] γίγνεσθαι Mon. B. γενέσθαι editi ante Bekkerum.

„Omnino opus est particula ἀν post γενέσθαι, ut γενέσθαι ἀν accipiatur pro γενήσεσθαι. quamvis Ficinus interpretetur Fieri, perinde acsi legisset γίγνεσθαι.“ Steph. annot. p. 21.

Qui si codices praeiens habere scisset, haud dubie eo contentus ἀν non desiderasset. Scilicet magnam partem illorum mendaciorum, quae probaverant, locum in nuptiis et liberorum procreationibus habere Socrates existimat; cuius verba recte interpretatur Schleiermacherus: Bei den Hochzeiten nun und der Kindererzeugung scheint dies richtige gar nicht in gerinem Maass vorzukommen.

ἐλάχιστον.] ἐλάχιστον; Bas. b.

ὀμολογημενων] ὁμολογημένων Vind. E.

συγγίγνεσθαι] γίγνεσθαι Lob. Vind. B. γίγνεσθαι Vat. M. et a m. pr. B. (a m. s. præpositio-nem habere videtur.) συγγίγνεσθαι Vind. DE. Mon. B. editi ante Astium.

τῶν μὲν] Pro τῶν Vind. F. a m. pr. τὸν habebat.

ἔγγονα] ἔγγονα Ven. C. Vind. DF. Cf. Vol. I. p. 131.

μέλλει] μέλλοι Lob. Vind. BDE. E Vat. H. Flor. AC. μέλλει, sup. οι, Ven. B.

τοὺς δὲ φανλοτάτους ταῖς φανλοτάταις τούναντίον, καὶ τῶν μὲν τὰ ἔκγονα τρέφειν, τῶν δὲ μὴ, εἰ μέλλει τὸ Εποίμνιον ὅτι ἀκόρτατον εἶναι· καὶ ταῦτα πάντα γιγνόμενα λανθάνειν πλὴν αὐτοὺς τοὺς ἀκροντας, εἰ αὖτις ἀγέλη τῶν φυλάκων διτι μάλιστα ἀστασίαστος ἔσται. Ὁρθότατα, ἔφη. Οὐκοῦν δὴ ἐօρται τινες νομοθετητέαι ἔσονται, ἐν αἷς ξυνάξουεν τάς τε νύμφας καὶ τοὺς νυμφίους, καὶ θυσίαι, καὶ ύμνοι ποιητέοι τοῖς ἡμετέροις ποιηταῖς πρέποντες τοῖς γιγνομένοις γάμοις· τὸ δὲ πλῆ- 460

ἀκόρτατον] „Quavis ἀκόρτατον agnoscere videatur Ficinus, qui interpretatur, Si armatum futurum sit excellentissimum: suspectum tamen habeo: et vereor ne pro ἀκεραιότατον aut ἀκροτάτατον irrepserit. Dicit certe paulo post, εἰπερ μέλλει παθαρὸν τὸ γένος τῶν φυλάκων ἔσεσθαι.“ Steph. annot. p. 21. Sed illo loco (p. 460. C.) non nisi de excludenda prole deterriore, hic vero etiam de procuranda optima sermo est, quae si rite succrescat, non solum integrum aut incontaminatum, sed omnino perfectissimum gregem fieri necesse sit. Itaque ampliore hic nomine utitur. Cf. supra B: σφόδρα ἄκρων. et Leg. L. V. p. 730. Ε: καὶ τὸν μὲν μεταδιδόντα ὡς ἀκόρτατον χοή τιμῆν. Lucian. T. VII. pag. 236. Lehmk. τοῦτον ἐκεῖνον τὸν ἀκόρτατον ἐν πάσῃ κακίᾳ λεγόμενον.

πάντα] „Non dubito quin scribendum sit πάντας.“ Steph. annot. p. 21. Cui Astius ne hoc quidem concedere debebat, Ficinus ita legisse videri. Is enim haec habet: et haec omnia, dum agantur, ab omnibus praeterquam a principibus ignorari.

λανθάνειν] λαμβάνειν Vind. F.

Ὥρθότατα] ὄρθότατα Vind. F.

νομοθετητέαι] νομοθετηται Vat. B. legibus designata (erunt) Fic.

ἔσονται] om. Lob. Vind. BDEF. Mon. B. Vat. BHM. Ven. C. Par. DK. Ang. B. Flor. ACRTUV. Stallbaumius. Utique mirum, qui in tot codicibus verbum exciderit, sed magis etiam mirum, qui desiderari a librariis et, si desideraretur, futurum potius, quam praesens necessarium videri potuerit. Quamquam eo adhibito non solum pleniorē orationem fieri, sed etiam dubitationem de tempore tolli appetat. Itaque si non in optimo codice, aut si in eo uno legeretur, quamvis per se probabile, tamen recipiendum non putarem, accedente vero et alterius Veneti et Ficini auctoritate facere non potui, quin tenerem.

θυσίαι,] Vulgo comma deest.

ἡμετέροις] ὑμετέροις Lob.

πρέποντες] πρεπόντες idem.

γάμοις] γάμοις; Bekkerus, 460 Astius in tert. ed. et Stallbaumius. Idem in fine verborum Socratis γίγνηται; scribunt. Utrumque non ineptum, sed minus aptum videtur. Primum Glauco non ita respondeat; deinde quod incerti Socratis oratio habet, id tempore futuro, quo utitur, satis significatum est; denique initio, si οὐκοῦν δὴ pro iam igitur accipiedum est, affirmatio magis convenit. Itaque hic colon tenui quod Astius in prima et secunda ed. pro puncto priorum posuit, in fine cum omnibus Bekkero anterioribus punctum feci.

θος τῶν γάμων ἐπὶ τοῖς ἄρχουσι ποιήσομεν, ἵν' ὡς μάλιστα διασώζωσι τὸν αὐτὸν ἀριθμὸν τῶν ἀνδρῶν, πρὸς πολέμους τε καὶ νόσους καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα ἀποσκοποῦντες, καὶ μήτε μεγάλη ἡμῖν ἡ πόλις κατὰ τὸ δυνατὸν μήτε σμικρὰ γίγνηται. Ὁρθᾶς, ἔφη. Κλῆροι δή τινες, οἷμαι, ποιητέοι κομψοί, ὥστε τὸν φαῦλον ἐκεῖνον αἰτιάσθαι ἐφ' ἐκάστης συνέρξεως τύχην, ἀλλὰ Β μὴ τοὺς ἄρχοντας. Καὶ μάλα, ἔφη. Καὶ τοῖς ἀγαθοῖς γέ που τῶν νέων ἐν πολέμῳ ἢ ἄλλοθι που γέρα δοτέον καὶ ἄθλα ἄλλα τε καὶ ἀφθονεστέρα ἢ ἔξουσία τῆς τῶν γυναικῶν ἔυγνοιμήσεως, ἵνα καὶ ἄμα μετὰ προφάσεως

ἐπὶ] καὶ ἐπὶ Vind. D. Exempla dictionis ποιεῖν ἐπὶ τινι, quae Stallbaumius in promptu non habebat, Kūnoelius suppeditat ad Wellerum III. b. p. 235.

ποιήσομεν] ποιήσωμεν Lob. Ang. B. Flor. R.

μάλιστα] καλλιστα Vind. E.

πολέμους] Ita Par. A. Ven. BC. Vind. EF. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. πολεμίους reliqui codices editique ante Bekkerum. hostes Fic.

. τε] Hoc in eisdem, si a Ven. C. discesseris, libris perscriptum, qui πολέμους exhibit, in reliquis autem et vulgo omissum recte Stallbaumius in sec. ed. recepit. Qui dum quatuor tantum Bekkeri cōdices secutum esse ostendit, ipse suarum variarum lectionum, in quibus τε ex quinque Florentinis retulit, oblitus videtur.

καὶ πάντα] om. Vind. E.

μεγάλη — σμικρὰ] populosā nimis — vacua Fic. Cf. L. III. p. 423. C.

δή] δέ Par. K. secund. Bekk. Ang. B.

ἔφη] ἀφ' Flor. AC.

B γέ] τέ Lob. Vat. M. δέ Mon. B. Par. DK. sec. Bekk. Flor. TU.

νέων] γονέων Flor. T.
ἢ ἄλλοθι πον] om. h. l. Flor. T.

γέρα] γέρας Ang. B. γέρα nominativum esse sequens nominativus ἀφθονεστέρα ἢ ἔξουσία docet, cui per enallagen, qualis Phaedon. p. 107. B. in verbis τάς γε ὑποθέσεις, τὰς πρώτας, καὶ εἰ πισταὶ ὑμῖν εἰσὶν, ὅμως ἐπισκεπτέαι σαφέστερον sine offence fit, post accusativum inferendo hic quidem nihil erat, quod occasionem dare posset. Iam vero non δοτέον, sed δοτέα dicendum fuisse videtur. Sed idem numerus, qui verbo cum neutro pluralis constructo legitimus est, hic ad verbale transfertur, quod omnino ab adiectivorum mutabilitate remotum est. Cf. Sophist. p. 223. B: ἢ τέχνης οἰκειωτικῆς — γιγνομένη θήρα προσερτεον, ὡς ὁ νῦν λόγος ἡμῖν συμβαίνει, σοφιστική. Crat. 410. C: αἱ μὲν δὴ ὡραι Ἀττικοὶ ὡς τὸ παλαιὸν ὄγητον.

ἄθλα] ἄθλα δοτέον δ' αὐτοῖς Ang. B. ἄθλα ἢ ἄλλοθι πον δοτέον δ' αὐτοῖς Flor. T.

ἄλλα τε] et alia permulta Fic. ἀφθονεστέρα] ἀφθονεστέρα Lob. Vind. B. et a m. pr. F. ἀφθονωτέρα Mon. B. Flor. U.

ἔυγνοιμήσεως] συγκ. Vind. F.

ὡς πλεῖστοι] plures, quam ex aliis Fic.

ώς πλεῖστοι τῶν παίδων ἐκ τῶν τοιούτων σπείρωνται.
 Ὁρθῶς. Οὐκοῦν καὶ τὰ ἀεὶ γιγνόμενα ἔκγονα παρα-
 λαμβάνουσαι αἱ ἐπὶ τούτων ἐφεστηκυῖαι ἀρχαὶ εἴτε ἀν-
 δρῶν εἴτε γυναικῶν εἴτε ἀμφότερα· κοιναὶ μὲν γάρ που
 καὶ ἀρχαὶ γυναικές τε καὶ ἀνδράσι. Ναὶ. Τὰ μὲν δὴ C
 τῶν ἀγαθῶν, δοκῶ, λαβοῦσαι εἰς τὸν σηκὸν οἴδουσι
 παρά τινας τροφοὺς χωρὶς οἰκούσας ἐν τινι μέρει τῆς
 πόλεως, τὰ δὲ τῶν κειρόνων, καὶ ἐάν τι τῶν ἑτέρων
 ἀνάπηρον γίγνηται, ἐν ἀποδρήτῳ τε καὶ ἀδήλῳ πατα-
 κρύψουσιν ώς πρέπει. Εἶπερ μέλλει, ἔφη, παθαρὸν τὸ
 γένος τῶν φυλάκων ἔσεσθαι. Οὐκοῦν καὶ τροφῆς οὐ-

σπείρωνται] σπείρονται Vind.
 E.

ἀεὶ] om. Fic.

ἀμφότερα] Ita. Par. A. Lob.
 Vind. BDEF. Vat. BHM. Ven.
 BC. et, quod Stallbaumus in sec.
 ed. suspicatur, Florentini, de qui-
 bus in prima non magis, quam
 de ipsa lectione eiusque varietate
 verbum fecit. Mon. B. et reliqui
 codices Bekkeri cum editionibus
 ante Bekkerum ἀμφότεραι ha-
 bent. Cf. Crat. p. 416. C.

μὲν] om. Lob. Vind. BDF.
 Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par.
 DK. sec. Bekk. Ang. B. Flor. RU.
 Habet affirmandi vim, ut p. 459.
 D. post δεῖ, L. III. p. 412. C.
 post ὅτι, post οὐ p. 390. D.

καὶ ἀρχαὶ] om. Vind. D. γυ-
 ναικῶν, sed punctis circumdatum,
 Vind. B. καὶ αἱ ἀρχαὶ Ven. B.
 Vind. E. Vat. H. Flor. ACV.
 Stallb. in pr. ed.

ἀνδράσι.] ἀνδράσιν. Bekkerus.
 ἀνδράσι; Ald. Bas. ab. Scilicet
 confirmari hanc suam opinionem
 Socrates a Glaucone cupiens in-
 stitutum orationis cursum subito
 inhibuit, id quod Bekkerus signo
 aposeopesis post ἀμφότερα indi-
 cavit, sed nihilo minus eam ut
 sibi certam pronuntiat. Recte
 igitur Stephanus interrogandi no-
 tam sustulit.

C εἰς τὸν σηκὸν] εἰς τινα ση-
 κὸν Mon. B. Flor. U. h. e. in
 aliquam domum, quae stabuli in-

star sit; quam quum in superioribus
 commemoratam non videret
 auctor illius recensionis, articu-
 lum ineptum putabat. Sed eam
 Socrates in hac rerum constituti-
 one haud secus paratam ponit,
 quam stabulum in villa, et velut
 praesentem designat articulo. ση-
 κὸς, secundum Timaeum p. 230.
 ἔπαντλις est τριγχῶ seu potius
 θριγκῶ περιεχομένη, quae glossa
 magis ad Theaet. p. 174. E. quam
 ad nostrum locum apta est. Prae-
 ter notam Ruhnkenii cf. Bekkeri
 anecd. p. 183, 5. In Vind. B.
 comma post σηκὸν positum.

τροφοὺς] τροφὲς Vind. F.
 Ang. B. Flor. R. Comma a Ste-
 phano et recentioribus additum
 sustuli, quia nulla hic appositiō
 est.

τινι] τισι Mon. B. ante corre-
 ctionem.

ἀνάπηρον] ἀνάπειρον, sup. η,
 Vind. F.

γίγνηται] γένηται Vind. BD.
 Vat. M. et, vulgato sec. Bip. in
 margine addito, Par. K.

ἐν ἀποδρήτῳ τε καὶ ἀδήλῳ] in abditis locis Fic.

μέλλει] μέλλοι Par. AD. Vind.
 DEF. Ven. C. Mon. B. Vat. H.
 Flor. ACUV. Ald. Optativo non
 magis hic locus, quam p. 459.
 E.

ἔφη] Ficinus legisse non vide-
 tur, quippe qui Socrati haec con-
 tinuat.

τοι ἐπιμελήσονται τάς τε μητέρας ἐπὶ τὸν σηκὸν ἄγοντες, ὅταν σπαργῶσι, πᾶσαν μηχανὴν μηχανώμενοι, ὅπως
D *μηδεμία τὸ αὐτῆς αἰσθήσεται, καὶ ἄλλας γάλα ἔχούσας ἐκπορίζοντες, ἐὰν μὴ αὐταὶ οἰκαναὶ ᾖσι, καὶ αὐτῶν τούτων ἐπιμελήσονται, ὅπως μέτριον χρόνον θηλάσσωνται, ἀγρυπνίας δὲ καὶ τὸν ἄλλον πόνον τίτθαις τε καὶ τρο-*

ἐπιμελήσονται] Ne hoc quidem
commate, quod vulgo apponunt,
a sequentibus divellendum visum.
σηκὸν] σικὸν Vind. E.

σπαργῶσι] Timaeus pag. 234:
σπαργῶσι. σπαραττομένη ὑπὸ¹
θλίψεως καὶ δεομένη ἐκπορίσεως
τινος. Quae explicatio mirum est
nisi ad hunc locum spectat. Cer-
te reliquorum, quos Ruhnkenius
indicavit, qui omnes indicasse
videtur, nulli convenit. An igitur
σπαργῶσι legit? Etiam scholia-
stes illis verbis est usus: τὸν
μαστὸν πλήρεις ἔχοντι γάλα-
ντος καὶ σπαράττονται ὑπὸ θλί-
ψεως δέονται τε τοῦ ἐπηριθῆναι
αὐτό.

πᾶσαν μηχανὴν μηχανώμενοι]
procurantes Fic.

D *αὐτῆς]* αὐτῆς Lob.

γάλα] om. Lob. Vind. B. Vat.
BM. Ven. C. Par. DK.

ἐκπορίζοντες] σπορπίζοντες
Vind. F.

αὐταὶ] Ita Par. A. Vind. E.
ipsae matres, quarum hoc pro-
prium est et naturale. Vulgo
αὐταὶ, et ita Ficinus: haē. Per
se satis id commodum, sed magis
illo ad captum librariorum.

ῳσι,] ὠσι. Steph. ὠσι. Astius
in pr. et sec. ed. ὠσι; Bekkerus,
Astius in tert. et Stallb. qui ea-
dem deinde in fine periodi nota
utentes hic saltem omittere eam
decebant. Sed praecedens Socra-
tis dictio pariter atque insequens
et huius ipsius progressus et ar-
gumentum et quae Glauco dicit
ita comparata sunt, ut neutro
loco ponenda videatur.

*καὶ αὐτῶν τούτων ἐπιμελή-
σονται]* providebunt quoque Fic.

ὅπως] cum tribus sequentibus
verbis om. Vind. F.

χρόνον] χόλον, vulgato in mar-

gine adscripto, Par. D. χρόνον
Bas. ab.

θηλάσσωνται] Θηλάσσωνται Lob.
Vind. BE. Vat. BM. Ven. B.
Ang. B. Flor. RT. Astius in sec.
et tert. ed. Bekkerus et Stallb.
in sec. Quod L. III. p. 429. D.
codicibus; L. III. p. 403. B. re-
latae ad οὗτος particulae ideo-
que adverbii potius, quam con-
junctionis vi praeditae tribuimus,
ut ὅπως δέξεται, ὅπως δόξει
scribentes coniunctivo praeferre-
mus futurum, id hoc loco exter-
nis internisque rationibus haud
ita cogentibus faciendum non pu-
tavi. Atticos primi quoque aoristis
coniunctivum cum ὅπως con-
struxisse exempla a grammaticis
collecta et a Bernhardyo synt.
p. 402. sq. indicata docent; ne-
que dubitandi ratio est, quin
quod in verbis, quorum aoristus
paullo longius a futuro distaret,
sine soloecismo fieri poterat, idem
in reliquis fecerint et quoties rēs,
ad quam consilium et voluntas
pertineret, et ipsa voluntas po-
tius significanda, quam eius rei
tempus ante oculos ponendum es-
set, coniunctivum aoristi potius,
quam futurum usurpaverint. Hoc
enim discriminē pro utriusque tem-
poris et modi potestate statuere,
ceterum in singulis locis codicum
ante omnia, deinde reliquarum
rerum rationem habere debemus.
Veluti hoc nostro coniunctivum
ideo quoque praelatum existimare
licet, ut sequens futurum παρα-
δώσονται cum ἐπιμελήσονται con-
iungendum, non ad ὅπως refe-
rendum esse intelligeretur, et ut
terminationis nimia similitudo evi-
taretur; quamquam id per se le-
vius et adversus codices nullius
momenti esse appareret. Practerea

φοῖς παραδώσουσι. Πολλὴν δαστώνην, ἔφη, λέγεις τῆς παιδοποιίας ταῖς τῶν φυλάκων γυναιξί. Πρόπει γὰρ, ἦν δ' ἐγώ. τὸ δ' ἐφεξῆς διέλθωμεν δὲ προθυμούμεθα. ἐφαμεν γὰρ δὴ ἐξ ἀκμαζόντων δεῖν τὰ ἔνγονα γίγνεσθαι. Ἀληθῆ. Ἄρούσι γυναιξὶ μέτριος χρόνος Ε ἀκμῆς τὰ εἶκοσιν ἔτη γυναικὶ, ἀνδρὶ δὲ τὰ τριάκοντα;

notabilis est mediī usus, quem tetigit Bernhardy I. c. p. 344. pro quo Antiatticista p. 99, 13. θηλάξειν ex libro tertio Civitatis, in quo non legitur, afferens acti-
vum in suo codice invenisse vide-
tur, nisi forte Atticistarum prae-
cepto, quos Lobeckius ad Phryn. p. 468. de matribus θηλάξειν,
non θηλάξεσθαι praedicandum
docuisse ostendit, hunc ipsum
Platonis locum opposuit et ita in-
telligi voluit, ut si θηλάξειν
ἀξιοῦσιν, οὐ θηλάξεσθαι λέγειν
scripsisset; id quod alteram eius
glossam: θηλάξειν ἀντὶ τοῦ δι-
δωσι θηλήν. Φρύνιχος Μονοτρό-
πω. comparanti magis verisimile
fit. De lactentibus hic agi, non
de lactentibus, verba αὐτῶν τού-
των demonstrant.

ἀγρυπνίας] ἀργυρωνίας Vat. H.
ἀγρυπνίας Flor. ACTV.

τὸν ἄλλον πόνον] τῶν ἄλλων
πόνων Vat. H. Flor. V. perpe-
ram.

τίτθαις] ταῖς τίτθαις Ang. B.
Flor. R. τίτθαις Par. A. et a
m. pr. Vind. F. Bekkerus, Astius
in tert. ed. et Stallb. Cf. Vol. I.
p. 56, a.

τε] γε Vind. F. Ang. B. Flor. R.

τροφοῖς] τροφῆς Vind. E.
Has Ficinus cum illis coniungens
aut Latinae linguae inopia com-
pulsus tantum nutricibus posuit.

παραδώσουσι.] παραδώσουσιν.
Bekkerus. imperabunt Fic.

ταῖς] τῆς, sup. αῖ, Vind. F.
γυναιξί.] γυναιξίν. Bekkerus.
ἐφεξῆς] ἐφ' ἐξῆς Ald. Bas. ab.
τὸ δ' ἐφεξῆς — οὐαὶ φρονήσεως.
pag. 461. A. excerpit Stobaeus
serm. CXV. p. 594.

δ] ω̄, sup. vulgato, Ven. B.
προθυμούμεθα] προμηθούμε-
θα Lob. Mon. B. Vat. BM. Ven.

C. et int. vers. B. Par. DK. Flor.
TU. Stallbaumius in prima ed.
προύθεμεθα Vind. F. Ang. B.
Flor. R. Stob. quod sibi non dis-
plicere idem Stallb. in sec. ed.
demonstravit. Vulgata lectio vera
et a Ficino non male explicata
est: *quod maxime intendimus*.
Socrates magno cum studio et
cupiditate hanc rem exponit, ut
ipse p. 458. A. confitetur. προ-
θυμεῖσθαι plerumque cum verbis,
sed interdum cum pronominibus
construitur. Vid. Heindorfius ad
Lys. §. 11. Cf. Xenoph. Cyrop.
VI. 1, 19: πάντες ἀνιστάμενοι
συμπροθυμήσεσθαι ταῦτ' ἐφα-
σαν. Apol. Socr. §. 9: ἐγὼ ταῦ-
τα οὐδὲ προθυμήσομαι.

δὴ] δὴ ἡ̄, εἰ a m. s. super
ἡ̄ posito, Vind. F.

ἔξ ἀκμαζόντων] εξάκμ. Lob.
ἔξακμ. Vind. F. ἔξ om. Stob.
Trinc.

δεῖν] om. Lob. Vind. B. Vat.
BM.

Ἀληθῆ.] Aldus et Stephanus
perperam hoc cum proximo γίγνε-
σθαι continuant. In Lob. Mon.
B. Bas. b. puncto interposito se-
paratum, sed mutatae personae
indicio, quod in codicibus pleris-
que duobus punctis (:) in edi-
tionibus (quamquam in Ald. Bas.
ab. non ubique) littera maiuscula
fieri solet, destitutum est. Duo
puncta habent Par. A. Vind.
BDEF. Ven. BC. Vat. B. maius-
culam Stob. Bas. a. Astii secun-
da et recentiores. Neque Fici-
num vera distinctio fugit.

ξυνδοκῇ] ξυνδοκῇ Flor. AU. E
et a m. pr. Mon. B.

εἶκοσιν] εἶκοσι Vind. EF. Flor.
ACRTV. Stob.

ἔτη] ἔτι Bas. ab.
γυναικὶ] γυναιξὶ Flor. T.

Tὰ ποῖα αὐτῶν; ἔφη. Γυναικὶ μὲν, ἦν δ' ἐγώ, ἀρξα-

Tὰ ποῖα αὐτῶν;] Quis horum modus? Fic. Sed totius loci interpretationem Ficinianam adscripsi, quo magis eum liberius hic versatum et sententiam universam, non singula verba reddere conatum esse intelligatur. So. An non tibi quoque videtur moderatum adulti roboris tempus esse mulieri quidem annos virginis, viro autem triginta? Glau. Quis horum modus? So. Ut videlicet mulier a vigesimo aetatis anno incipiens usque ad quadragesimum pariat: vir autem, postquam acutissimum sui cursus vigorem transierit, annos scilicet triginta, inde usque ad annos quinque et quinquaginta procreet. In his annos scilicet triginta haud dubie perspicuitatis gratia et secundum mentem Platonis a se adiecit, verba τῇ πόλει ut supervacanea praeter scriptoris mentem omisit, Glauconis autem interrogationem talem fecit, quam superioribus atque insequentiibus convenire existimaret, verborum ipsorum rationem non habuit. Quae quomodo mihi intelligenda videantur, Vol. I. p. 174, a. significavi. Quum enim Socrates aptum tempus floris mulieri vicesimum, viro tricesimum aetatis annum esse dixisset, Glauco non quod omnino nesciret, quid Socrates sibi vellet, sed accusatorem eius rei expositionem desiderans quaerit, ad quaenam a mulieribus et viris praestanda respiciens aptum eis illud potissimum tempus dicat. Cui Socrates mulieri ad hoc aptum esse respondet, ut in publicum pariendi initio inde facto ad quadragesimum annum usque eo munere fungatur, viro autem, ut maxime proclivi vitae spatio decurso indidem publice generare incipiat et per viginti quinque annos deinceps officio satisfaciat. τὸ ποῖον quum alibi, tum p. 459. A. eodem modo uberiori explicationi eliciendae inservire vidimus, ne-

que accusativi aut genitivi cum eo coniuncti caussam dicere mihi necessarium puto. Non minus perspicuum videtur hac demum interpretatione adhibita et articuli ad εἰκοσιν ἑτῇ et τριάκοντα appositi, cuius idem usus est Tim. p. 21. A: ἐγγὺς ἥδη τῶν ἐνενήκοντα ἑτῶν, et infinitivorum τίττειν et γεννᾶν rationem constare. Denique sic consentaneum habemus, quod Leg. L.III. p. 721. A. B. et VI. 785. B. de tempore matrimonii viris ineundi praescribitur; cui quod repugnare videtur praeceptum VI. 772. D. ita conciliari potest, si a quinto et vicesimo aetatis anno circumspicere uxorem iuvenis iubeatur. Verba enim sunt haec: ὁπότε τις οὖν οἱ δῆμοι τῶν πέντε οἱ εἴκοσι γεγονότων ἑτῇ σπονδῶν οἱ σπονδούμενος ὑπὸ ἄλλων οἰτὲ νοῦν ἔαντω οἱ πρόποντα εἰς παιδῶν ιουωνίαν οἱ γένεσιν ἔξενορηνει πιστεύει, γαμεῖτω μὲν πᾶς ἐντὸς τῶν πέντε οἱ τριάκοντα ἑτῶν· τὸ δὲ πρόπον οἱ τὸ ἀρμόττον ὡς γενή ζητεῖν, πρῶτον ἐπανούσατω. Aliter de nostro loco statuit Schleiermacherus, cuius interpretatio haec est: Dünkt dir das nun auch die rechte Zeit der vollen Kraft, zwanzig Jahre für die Frau und dreissig Jahre für den Mann? — Aber welche? — Dass die Frau mit dem zwanzigsten Jahre anfangend bis zum vierzigsten dem Staat gebähre, der Mann aber die Zeit der grössten Stärke im Laufen übergehn lasse, und von da an dem Staat erzeuge bis zum fünf und funfzigsten Jahre. Scilicet τὴν ὀξυτάτην δρόμον ἀκμὴν proprie dictam autumat et quia viginti illis et triginta annis non tempus ineundi, sed spatium obeundi matrimonii definitum a Socrate putat, virum supra viginti quinque annos natum vulgo ad cursum tardioreum visum statuere cogitur, ut si quis eorum duntaxat, qui

461 μένη ἀπὸ εἰκοσιέτιδος μέχρι τετταρακονταέτιδος τίκτειν

valetudinis, non victoriae caussa current, minus iam valere currendo diceretur, eum statim omnes viginti quinque annis maiorem esse intellexerint ideoque Socrati pro illo aetatis anno hanc debilitatem nominare licuerit. Quod etiam si credibile esset, tamen non hic erat tali designationi locus, nisi forte ob id ipsum, quod cursui minus idonei forent, ad nuptias idoneos visos credimus. Ac vereor equidem, ne illa interpretatio nullo alio fundamento nitatur, nisi verbis τὰ ποῖα αὐτῶν ita intellectis, ut primo aspectu intelligenda videntur: *quiam sunt isti viginti mulieris, triginta viri anni?* quibus ita responderi par erat, ut initium et finis certo demonstraretur; quod quum in priore parte propriis verbis factum esset, idem in altera Schleiermacherus desiderasse eaque ob rem metaphoricum illorum verborum sensum parum aptum iudicasse videtur. Certe ipsa primae iuventutis comparatio cum prima stadii parte, quam celerrime emetiri cursores solent, nulla ratione improbari hoc loco potest, quippe quae caussam significet, cur eam aetatis partem transactam esse oporteat, priusquam liberis procreandis opera detur. Nam vitae ἀνυψη sive flos duplex est, prouti vel motu concitari homo vel constitisse corpore et mente cogitatur. Hanc Plato ἀνυψη σώματός τε καὶ φρονήσεως, illam τὴν δέξιντάτην δρόμον ἀνυψη appellat, qua vi gente ac fervente minime talis esse solet vir, quem Leg. L. VI. p. 775. et alibi in nuptiis requirit, cui consentit Aristoteles Polit. L. VII. c. 14. p. 251. Goettl. Ad rem igitur aptissima est comparatio. Neque vero nominum et verborum a curriculo ad vitam translatorum insolens est usus. Sic κύπτειν βίον et τέλος βίον tragici dicunt, quorum locos indicavit Monkius ad Eurip.

Hippol. 86. βαλβίδα λυπηδὸν βίον legimus Medeae v. 1240. Pors. ad senectutem pervenire ἐλθεῖν λευκῆς ἐς δρόμον ηλικίης incerto poëtae dicitur apud Iacobium anim. in anthol. Vol. III. p. 3. p. 651. Alia eodem pertinentia collegit Dissenius ad Pind. Boeckh. p. 404. Quod genus loquendi non ita assurgere supra pedestris orationis et Platonicae modum arbitror, ut propterea verba ἐπειδὸν τὴν δέξιντάτην δρόμον ἀνυψη παροῦ ex poëta aliquo petita censem, quae Stallbaumii opinio est, qui in reliquis cum Schleiermachero facit, sed illa non proprie dicta agnoscit.

γυναικὶ πεντεπαιπεντηνοτάτοντος] laudant Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 415. et Theodoretus Therap. L. VIII. p. 941. Sch.

μὲν] δὲ τεῦτα Ursini cod. Theod.

εἰκοσιέτιδος] Ita Par. A. Ang. B. Vat. H. εἰκοσιέτιδος Vind. EF. Flor. ACV. Stob. et a m. pr. Ven. B. εἰκοσαέτιδος Eus. Theod. εἰκοσιέτιδος Astius in secunda ed. εἰκοσαετίδος reliqui codices et editiones. Quum praecepto Atticistarum de non mutanda numeralium in compositis terminatione, de quo Maittaireius pag. 47. ed. Sturz. et Lobeckius ad Phryn. p. 407. conferendi, codex optimus cum asseclis suis (Vat. H. Vind. E.) et cun duabus diversae familiae adscriptis (Ang. B. Vind. F.) suffragetur, parere non dubitavi. De accentu autem, quem praeter grammaticos modo significatos Choeroboscus apud Bekkerum anecd. p. 1375. ab Atticis ita positum tradit, accusativus ἔξετιν Leg. L. VII. p. 794. C. in omnibus libris extans dubitationem nullam relinquit. Ab oxytono enim ἔξετίδα fieri debuisse. Et Aristoph. Lys. 643. δεκέτης etiam Bekkerus edidit, qui hoc loco praeter consuetudinem vulgatae tenax fuit et Stallbaumium

τῇ πόλει, ἀνδρὶ δὲ, ἐπειδὴν τὴν ὁξυτάτην δρόμου
ἀκμὴν παρῇ, τὸ ἀπὸ τούτου γεννῆν τῇ πόλει μέχρι
461 πεντεκαιπεντηκονταέτους. Ἀμφοτέρων γοῦν, ἔφη, αὕτῃ
ἀκμὴ σώματός τε καὶ φρονήσεως. Οὐκοῦν ἐάν τε πρε-
σβύτερος τούτων ἐάν τε νεώτερος τῶν εἰς τὸ ποινὸν
γεννήσεων ἄφηται, οὔτε ὅσιον οὔτε δίκαιον φήσομεν τὸ

Astiumique in tertia ed. tenaces
fecit.

μέχρι τετταρακονταέτιδος] om.
Lob. Vind. B. Vat. M. Theod.
in quo tamen ab Ursino suppleta
sunt. Accentum nominis vulgo in
penultima positum secundum Par.
A. Vind. F. Vat. B. Ang. B. qui
τετταρακοντοέτιδος habet, et Eu-
sebium retraxi. ττ pro σσ in Par.
A. Vind. DEF. Vat. BH. Ven.
BC. Ang. B. Flor. ACRV. scrip-
ptum et a Bekkerio restitutum
est. Astius in sec. ed. τετταρα-
κονταέτιδος scripserat, in tertia
Bekkerio obtemperavit.

δὲ] δ' Theod.

δρόμον] δρόμον Eus. Bas. ab.
δρόμην Stob. cod. A. δραμόντι
Ursini codex Theod.

τὸ ἀπὸ τούτου] Haec in unum
contrahunt Vind. BDE. in duo
Mon. B.

πεντεκαιπεντηκονταέτους]. Co-
dices mei et editiones ante Bek-
kerum hoc in plura divisum ha-
bent, Mon. B. cum Flor. U. πέντε
καὶ πεντηκοστοῦ ἔτους, Lob.
Vind. BD. Eus. et tacentibus de
Par. K. Bipontinis editiones πέν-
τε καὶ πεντηκονταέτους (Astii
sec. πέντε καὶ πεντηκοντούτους)
Vind. EF. Stob. cod. B. et unus
Ursini codex Theod. πέντε καὶ
πεντηκονταέτους. In altero Ur-
sini codice erat πέντε καὶ πεν-
τηκονταέτους. Bekkerus praeter
supra positam Monacensis libri
discrepantiam nihil nisi πεντεκαι-
πεντηκονταέτους ex Vat. M. af-
fert, quod ipsum in Theodoreto
vulgatum est. Neque Stallbau-
mius reliquorum Florentinorum
mentionem facit, ut hi quoque
divisionem haud dubie vitiosam
habere videantur.

Ἀμφοτέρων] Ficinus ad σώ-461
ματος et φρονήσεως retulisse
ideoque non expressisse videtur:
Profecto in iis aetatis vigor
animi corporisque consistit.

γοῦν] οὖν Lob. Vind. BD.
Vat. BM.

ἀκμὴ] η ἀκμὴ Lob. Vind. BD.
τῶν εἰς τὸ ποινὸν γεννήσεων]
εἰς τὸ ποινὸν γεννήσεως Vind.
BD. Vat. M. et a. m. pr. Lob.
εἰς τὸ ποινὸν γεννήσεων e. corr.
generationem in communi Fic.

φήσομεν] θήσομεν Vind. E.
Vat. H. Flor. ACTV. φήσομεν
cum θη super φή Vind. D. Ven.
B. Cf. ad B.

φιτίνοτος] φιτίοντος Vind.
E. φιτρόντος Vat. H. φύνοντος
Vind. F. φύνοντος Ang. B. Flor.
T. In Vind. D. a. m. pr. vulga-
tum erat, sed a. m. s. φυτεύον-
τος scriptum est, quod Astius in
pr. ed. exhibuit, in tertia item,
nisi fallor, exhibere volens typ-
thetae culpa φυτεύοντες dedit,
fortasse offensus verbo poëtico,
quod tamen Leg. L. VIII. p. 879.
D. (φυτῆσαι καὶ τεκεῖν) sine nota
intactum reliquit. Genitivus pen-
det ab ἀμάρτημα.

ὅς] Huic in Vat. B. a. m. sec.
δ' additum.

δ'] ἐὰν Vind. E.

λάθη] Mon. B. a. m. s. o inter
ultimam et penultimam litteram
superscriptum habet.

γεννήσεται] Ita Par. A. Vind.
DF. Vat. BH. Ven. BC. Flor.
ACRV. Vulgo γενήσεται, quod
quum ita demum aptum sit, si
nascendi significacione accipiatur,
alteram lectionem a codicibus fir-
miorem, quae idem significat,
praetuli. Si non latuerit foetus
praeter legem susceptus, ne in

ἀμάρτημα, ὡς παῖδα φιτύοντος τῇ πόλει, ὃς, ἀν λάθῃ,
γεννήσεται οὐχ ὑπὸ θυσιῶν οὐδ' ὑπὸ εὐχῶν φὺς, ἃς
ἐφ' ἐκάστοις τοῖς γάμοις εὔξονται καὶ ἴέρειαι καὶ ἱερεῖς
καὶ ἔντυπασσα ἡ πόλις ἐξ ἀγαθῶν ἀμείνους καὶ ἐξ ὀφε-
λίμων ὀφελιμωτέρους ἀεὶ τὸν ἐκγόνους γίγνεσθαι, ἀλλ' Β
ὑπὸ σκότου μετὰ δεινῆς ἀκρασίας γεγονώς. Ὁρθῶς,

lucem quidem edetur, sed antea
opprimetur, quemadmodum infra
C. de alio genere praecipitur; si
latuerit, edetur quidem, sed in-
fausto omine, quippe non inter
sacrificia satus. Utrum Ficinus
legerit, non appetet, quum ver-
bum participio φὺς iuxterit et
pro duobus unum orietur parum
accurate posuerit.

οὐχ] οὐκ Bas. b.
φὺς, ἃς] φύσας Vind. F. Ven.
C. φῆσας, sup. φύσας, Par. K.
φῆσας cun ὑ sup. η et int. vers.
addito φὺς super vacuo spatio
Vat. B. φύσας ἃς Par. A. θύ-
σας ἃς Vind. D (vulgato in mar-
gine adscripto) E. Vat. H. Flor.
ACV.

ἐφ'] om. Vind. D (in margine
habet.) E. Flor. ACV. et a m.
pr. Ven. B. „pro γε habet Par.
A.“ Bekk.

ἐκάστοις] Huic Vat. B. a m.
s. γάρ additum habet.
ἱέρειαι] ἴέρεια Ang. B. Vat.
M. editi ante Astium.

ἐξ ὀφελίμων] ἐξωφ. Vind. F.
ἐξ ὀφελήμων Vind. E.

ἀεὶ] om. Fic.
γίγνεσθαι] γίνεσθαι Mon. B.
(Flor. U.) editiones ante Astium,
taentibus Bip.

B ἀκρασίας] ἀκρατίας Vind. F.
Ang. B. Flor. R. Bekkerus et in-
tert. ed. Astius. ἀκρατείας Lob.
Vind. BD. Mon. B. Vat. BHM.
Par. DK. Flor. ACTUV. Stall-
baumius. *incontinentia* Fic. Ego
editionum ante Bekkerum scrip-
turam auctoritate Par. A. Ven.
BC. Vind. E. restituī, quia dis-
soluta impudensque licentia, de
qua hic sermo est, nomine ιρά-
σεως et temperamenti contrarium
significante aptissime notari vide-

batur. παρὰ τὸ μὴ συγκενδᾶσθαι
s. συγκενδᾶσθαι (κενερᾶσθαι,
quod Lehmannus Luciani T. VIII.
p. 206. pro vulgato κενερᾶσθαι
ex editione quadam Basileensi re-
petit, vitiosum est.) dictam ἀκρα-
σίαν lexicographi veteres, Hesychius,
Suidas, Bekkerianus anecd.
p. 366, 12. et Phaborinus agno-
scunt, cognatamque τῇ ἀκρασίᾳ
et tamen diversam faciunt Suidas
et Phaborinus, qui etiam adiecti-
vum ἀκράσιος inde derivatum no-
runt. Atque hos non sui aevi
consuetudine deceptos veteribus
affinxisse aliquid, quod eis inau-
ditum esset, fidem faciunt codi-
ces et editiones Demosthenis et
Aeschini consensu ἀκρασίαν ex-
hibentes Olynth. II. p. 22. §. 18.
Bekk. (τὴν καθ' ἡμέραν ἀκρα-
σίαν τοῦ βίου καὶ μέθην καὶ
νορδανισμοὺς οὐ δυνάμενος φέ-
ρειν, ubi vel μέθης vocabulum
de mutatione cogitare vetat.) in
Aristog. II. p. 103. §. 25. (ενόρ-
σετε γάρ τὴν μὲν [παρανομίαν]
τὰ τῆς μανίας καὶ τῆς ἀκρασίας
καὶ τῆς πλεονεξίας, τὸν δὲ τὰ
τῆς φρονήσεως καὶ σωφροσύνης
καὶ δικαιοσύνης ἔργα διαπρατ-
τομένους) in Timarch. pag. 281.
§. 95. (η δὲ βδελυρὰ φύσις καὶ
ἀνόσιος η τούτου ἀεὶ τῶν αὐ-
τῶν ἐπεθύμει καὶ καθ' ὑπερβο-
λὴν ἀκρασίας ἐτερον ἐφ' ἐτέρῳ
ἐπίταγμα ἐπέταττε) ut de Ari-
stotelis et recentiorum locis una
cum illis a Lobeckio ad Phryn.
p. 525. allatis taceam. Quod au-
tem Phrynicus app. soph. p. 20.
(Bekk. anecd. p. 21, 21.) ἀκρα-
σία damnat et ἀκρατία dici in-
bet, non ad hoc nostrum, cuius
et longum est, sed ad alterum a
κρατεῖσθαι perperam et contra ana-

Ἐφη. Ὁ αὐτὸς δέ γ', εἶπον, νόμος, έάν τις τῶν ἔτι γεννώντων μὴ συνέρξαντος ἀρχοντος ἀπῆται τῶν ἐν ἡλικίᾳ γυναικῶν· νόθον γὰρ καὶ ἀνέγγυον καὶ ἀνίερον φήσομεν αὐτὸν παῖδα τῇ πόλει καθιστάναι. Ὁρθότατα, Ἐφη. Ὅταν δὲ δὴ, οἶμαι, αὐτες γυναικες καὶ οἱ ἄνδρες

logiam ductum pertinet, quo usus est M. Argentarius epigr. 16. p. 245. T. II. Anthol. Iacobs. ἄλλος, ἐπεὶ πάσης γενέται ἀρρενίης, quod neque cum Stephano in thes. et Wytenbachio anim. in Plut. I. p. 209. per syncopen factum ex ἀρρενίᾳ, neque cum Poppone prol. in Thuc. I. p. 243. Thucydidi aliisque probis scriptoribus velut synonymum ἀρρενίας potius, quam ἀρρενία usurpatum dixerim. ἀρρενία mihi ab ἀρρένειοι non aliter, quam εὐσεβία ab εὐσέβεια et ὥφελια ab ὥφελεια, de quo Vol. I. p. 20, b. dixi, differre videtur, et ἡδονῶν ἀρρενία Tim. p. 86. D. vulgata et codicum tantum non omnium lectio vera, ἀρρενίας τῶν πράξεων Gorg. p. 525. A. secundum potiores libros a Bekkerio in ordinem receptum est. Qui si nostro loco idein exhiberent, equidem sequi non dubitassem.

τῶν] om. Par. K.

συνέρξαντος] ἔνν. Ven. B. Vat. H. Flor. AC. Bekkerus et Stallbaumius. Cf. Vol. I. p. 42, b. 44, b. 95, b. 233, a.

ἀνέγγυον] incestum Fic.

καὶ ἀνίερον] om. Mon. B.

φήσομεν] Ita Par. A. Vat. H. Vind. E. Flor. ACTV. asseremus Fic. θήσομεν cum φ super θ Vind. D. Ven. B. θήσομεν reliqui codices editique ante Bekkerum, quod ad verba ὁ αὐτὸς δὲ νόμος respiciunt alicui fortasse praefereendum videtur. Sed haec ipsa verba illo spectant, quod supra dictum est, οὔτε δοιον οὔτε δικαιον φήσομεν τὸ ἀμάρτημα, h.

e. peccatum non leve, sed facinus impium et iniustum esse dicemus; quod qui dicit, haud dubie gravissime de facinore pronuntiat et omnibus eo interdit. Iam nostro loco similiter de alio facinore statuendum Socrates ait, eiusque iudicii rationem reddit: spurium enim et sponsaliorum ac sacrorum beneficio orbatum civitati filium ab eo exhiberi dicemus. Iuvat hic ad praestantiam codicis Parisiensis quasi digitum intendere, cuius a vestigiis aberrantes eosdem in eodem verbo librarios supra a vero aberrantes habuimus, quos hoc loco cum eo verum videmus tenuisse.

τῇ πόλει] τῇς πόλεως, sup. vulgato, Par. K. om. Fic.

Ὀρθότατα] ὁρθώτατα Vind. F.

Ἐφη — ἀφήσομεν] om. Vat. B.

Ὅταν — ἐθέλωσι] citant Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 415. et Theodoretus Therap. L. VIII. p. 941. hoc prooemio usus: τὰ δὲ ἔξης οὐ γέλωτος, ἀλλὰ καὶ θρήνων ἄξια καὶ πνηὸς τοῦ παγκάλους ἀναλίσκοντος νόμους. λέγει γὰρ ταῦτα. Ὅταν δὲ αἱ γυναικες οὖτε ταῦτα etc. quorum ad extrema Ursinus hanc varietatem adnotavit: γνν. καὶ οἱ ἄνδρες. η ἄνδρες τοῦ.

ἐνθῶσι] ἐβέσσι Bas. b.

ἀφήσομεν] φήσομεν Ald. Bas. ab. et codices omnes uno fortasse excepto Flor. U. quem Stallbaumius discrepare a Stephano non ostendit. Etiam Ficinus dicemus. Veram lectionem ab Eusebio et

τοῦ γεννᾶν ἐκβῶσι τὴν ἡλικίαν, ἀφήσομέν που ἐλευθέρους αὐτὸὺς συγγίγνεσθαι ὡς ἀν ἐθέλωσι, πλὴν θυγατρὶ καὶ μητρὶ καὶ ταῖς τῶν θυγατέρων παισὶ καὶ ταῖς ἄνω C μητρός, καὶ γυναικας αὖ, πλὴν νιεῖ καὶ πατρὶ καὶ τοῖς τούτων εἰς τὸ κάτω καὶ ἐπὶ τὸ ἄνω, καὶ ταῦτα γ' ἥδη

Theodoreto servatam Stephanus tacito et incertum utrum de conjectura, an ex illis restituit.

πον] om. Ven. B. Vind. E. Vat. H. *πῶς* duo Theod. codices Sylburgii, *ὅπως* Ursini liber.

ἐλευθέρους αὐτὸὺς] αὐ. ἐλ. Ven. B. In Vat. B. ὅδε a m. s. interpositum.

συγγίγνεσθαι] ἔνγγίγν. Theod. ἔνγγίν. Vind. E. cum γ inter i et ν superscripto et Ursini codex Theod. συγγίν. Mon. B. Euseb. Ald. Bas. ab. Steph. ἔγγίγνεσθαι Vind. F. γίνεσθαι Vat. B.

ῳ] Ita Par. A. Lob. Vind. BDF. Ven. C. Ang. B. Flor. RTV. Vat. M. et a m. pr. B. ως Mon. B. Par. DK. Flor. U. Theod. ὁ Vat. H. Flor. AC. et margo Vind. D. ᾧ Ven. B. Vind. E. Euseb. Ficinus et editiones omnes. Masculinum *ῳ* item ut proximum αὐτὸὺς ad utrumque sexum relatum ferri adeoque praeferriri posse videtur, ne mulierum mentionem initio periodi parum apte factam statuere cogamur; exceptionis autem priorem partem ad viros spectare per se appareat, neque significacionem eorum post πλὴν desidero. *συγγίγνεσθαι* ad mulieres non minus, quam ad viros quadrat et a Polluce V. 92. sine discriminine cum aliis utrique sexui communibus verbis refertur. Usus tamen viris potissimum assignavit: de muliere unum tantum locum in promptu habeo, Antonini Liber. c. 41. p. 179. Teuch. de Cephalo Procrin tentante per hospitem, εἰ αὐτῷ συγγένοιτο. Sed ipsum grammaticorum silentium et verbi

origo ac significatio exemplis ut non indigemus facit.

ἐθέλωσι] ἐλθωσι Vind. F. ἐθέλωσιν Mon. B. a m. pr.

πλὴν] πρὶν Vind. E.

γυναικας] τὰς γυναικας Ven. C B. Vind. EF. Ang. B. Flor. ACRT. editi ante Bekkerum, quam lectio nem Astius in tert. ed. tenuit, ut debebat, quum in superioribus ᾧ tenuisset et αὐτὸὺς ad solos viros retulisset. Nobis vero, qui αὐτὸὺς utrosque designare statuerimus, hic quoque optimum codicem sequi et γυναικας pro ὅσον αὐτῶν γυναικές εἰσιν accipere licet.

αὐ.] om. Vind. F. Ang. B. Flor. R.

τοῖς] ταῖς Lob. Vind. BD. Vat. HM. In Vind. F. o cum litura scriptum.

τούτων] Ita Par. A. Vind. DEF. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. *eorundem* Fic. τῶν τοιούτων reliqui cum editis ante Bekkerum et Astio in tert. quoque ed. quod ita defendi potest, ut eos significare statuatur, qui, quum filii patresve ipsi non sint, secundum infra dicta instar eorum haberi debeant. Sed alterum hoc loco magis perspicuum et tamen eiusdem significacionis, si requiratur, capax est.

τὸ ἄνω] τῷ ἄνω Vind. E.

γ'] γε Lob. Vind. BD. γὰρ Par. K. sec. Bekk.

πάντα διακελευσάμενοι προθυμεῖσθαι μάλιστα μὲν μηδέ εἰς φῶς ἐκφέρειν κύημα μηδέ γε ἐν, ἐὰν γένηται, ἐὰν δέ τι βιάσηται, οὕτω τιθέναι, ως οὐκ οὖσης τροφῆς τῷ τοιούτῳ. Καὶ ταῦτα μέν γ', ἔφη, μετρίως λέγεται· πα-
D τέρας δὲ καὶ θυγατέρας καὶ ἡ νῦν δὴ ἔλεγες, πῶς δια-
γνώσονται ἀλλήλων; Οὐδαμῶς, ην δ' ἔγω· ἀλλ' ἀφ' ης
ἄν ήμέρας τις αὐτῶν νυμφίος γένηται, μετ' ἐκείνην δε-
κάτῳ μηνὶ καὶ ἐβδόμῳ δὴ ἡ ἄν γένηται ἔκγονα, ταῦτα
πάντα προσερεῖ τὰ μὲν ἄρδενα νιεῖς, τὰ δὲ θήλεα θυ-
γατέρας, καὶ ἐκεῖνα ἐκεῖνον πατέρα, καὶ οὕτω δὴ τὰ

διακελευσάμενοι — τοιούτῳ.] laudant Eusebius et Theodoreetus l. c.

προθυμεῖσθαι] Sylburgius ad Theod. προμηθεῖσθαι aptius cen-
sebat. Solet enim fere studium, quod verbo προθυμεῖσθαι signifi-
catur, ad efficiendum, non, ut hic, ad evitandum et cavendum
tendere ideoque verbo ipsi infinitivus sine negatione coniungi. Sed
nihil obstarē videtur, quo minus, ut ἐθέλειν μὴ κακὸν εἶναι et si-
milia dicuntur, ita et προθυμεῖ-
σθαι μὴ ἐκφέρειν dici potuerit:
studiose operam dare, ut ne ef-
ferant.

μὲν] om. Theod. Sed in Ur-
sini libro erat.

μηδέ εἰς] μὴ δ' εἰς Mon. B.
Ald. μηδεὶς Vind. F. μηδέ εἰ
Vind. E. μὴ εἰς Euseb. Theod.
probantibus Astio in sec. Stall-
baumio in pr. ed. Atque Astius
etiam in tertia μὴ sibi magis pla-
cere ostendit, Stallbaumius vero
in sec. nihil de eo dicit. μηδέ,
ne quidem, satis vulgare et h. l.
in primis aptum est ob illud μά-
λιστα μέν.

κύημα] Id cum reliquis Mon.
B. sed correctus, et in margine
γε κύημα a m. pr. exhibet. Ita-
que ante correctionem aliud ha-
buisse necesse est, quod nunc
recognosci nequit.

μηδέ γε ἐν] Ita Par. A. μηδέ
γ' ἐν Vind. E. Vat. H. Flor.

ACTV. μηδὲν reliqui codices,
Eusebius, Theod. et editiones.
Quum et magnitudo cautionis h.
l. satis apte significari et μηδὲν
facile ex μηδέ γε ἐν, hoc vero
ex illo vix oriri potuisse videa-
tur, Atticos autem inter omnes
constet οὐδὲ εἰς et μηδέ εἰς ubi
negatio augenda esset usurpasse,
optimum codicem pro interpolato
abiicere non sustinui, quamvis
alterum particulae γε inter μηδέ
et εἰς interpositae exemplum fru-
stra quaesivi. Nam quod Schneiderus
Vinariensis Sophocli Oed. Tyr. 276. impertivit, οὐδέ γ' εἰς
δύναται ἀνήρ, id soloecum est.
Sed quum non solum μηδέ, sed
etiam εἰς subiici sibi encliticam
γε patiatur, interposita ea non
magis offendor, quam particula
ἀν, quae saepe istum locum ob-
tinet.

τι] τις Ang. B. Flor. R. Theod.

τιθέναι] ἐκτιθέναι Euseb. edi-
tio ante Bekkerum.

λέγεται· πατέρας] λέγεται. Πα-
τέρας editi ante Astium. In Ald.
tamen πατ. minuscula scriptum.

θυγατέρας καὶ ἡ νῦν δὴ ἔλε-
γες] matres et ceteri cognati,
quos memorabas Fic. Pro ἔλεγες
Vind. E. ἔλεες habet.

ἀφ'] ἔφ' Lob. Vind. B. Vat. D.
M.

ἐβδόμῳ] ἐβδόμῃ iidem.

γένηται] γένοιτο Flor. T.

τούτων ἔκγονα παιδῶν παιδας, καὶ ἐκεῖνα αὖτις ἐκείνους πάππους τε καὶ τηθὰς, τὰ δὲ ἐν ἐκείνῳ τῷ χρόνῳ γεγονότα, ἐν ᾧ αἱ μητέρες καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν ἐγέννων, ἀδελφάς τε καὶ ἀδελφοὺς, ὥστε, ὃ νῦν δὴ ἐλέγομεν, Εἰς ἄλληλων μὴ ἄπτεσθαι· ἀδελφοὺς δὲ καὶ ἀδελφὰς δώσει ὁ νόμος συνοικεῖν, ἐὰν δὲ κλῆρος ταύτη ἔνυπιπτη, καὶ ἡ Πυθία προσαναιρῇ. Ὁρθότατα, ηδὲ δὲ ὅς. Ἡ μὲν δὴ ποινωνία, ὡς Γλαύκων, αὕτη τε καὶ τοιαύτη γνωναιῶν τε καὶ παιδῶν τοῖς φύλαξί σοι τῆς πόλεως· ὡς δὲ ἐπομένη τε τῇ ἄλλῃ πολιτείᾳ καὶ μακρῷ βελτίστη, δεῖ δὴ

vīeīs] *vīoūs* Lob. Vind. BD.
Vat. M.

δὲ] *om.* Lob. post θήλεα Vind. D.

θήλεα] θήλεια Vind. F. Flor.
R. θήλαια Bas. ab.

δὴ] *om.* Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

ἐκεῖνα αὖτις] ἐκεῖνοι αὖτις Ang. B.
ἐκείνους αὖτις Par. A. Ven. C. Vind.
F. Vat. H. Flor. AC. in quo veteris scripturae *EKEINAT* vestigium cernere mihi videor. ἐκεῖνος αὖτις Parmen. p. 154. E. ex Coislins. Bekkerus recepit.

τηθὰς] Ita Par. A. Vind. F.
Ang. B. Flor. R. *tīθas* Vind. E.
τιθας cum τι super θ Ven. C.
τιθας Vat. H. *tīθas* reliqui
cum editionibus ante Bekkerum.
τηθὰς Astius in tert. ed. quemadmodum apud grammaticos fere
legitur. Timaeus p. 256: τηθη·
μάμη. Bekkeri δικῶν onomast.
anecd. p. 193, 33: τηθη· πατρὸς ηδὲ μητρὸς μήτηρ, ηδὲ μάμην καλοῦσσιν. cf. lex. ib. p. 309,
29. THΩΗ, *avia*, bis memini le-
gere in Boeckhii Inscript. Vol. I.
p. 685. n. 1449, 8. et p. 915.
n. 558, b. 3. Inde ἐπιτηθη, ηδὲ μήτηρ τῆς μάμμης, Bekkeri lex.
anecd. p. 254, 10. et alibi. Cf.
quos Vol. I. p. 56, a. de altero
hic ante Bekkerum vulgato disse-
rentes laudavi, qui accentum in-
stabilem esse docent. Itaque non
est quod codici repugnetur.

δὲ] δὲ Vind. F.
αἱ μητέρες καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν] οἱ πατέρες καὶ αἱ μητέρες αὐτῶν Lob. Vat. B. et a m. s. Ven. B. οἱ πατέρες καὶ μητέρες αὐτῶν Vind. BD. Vat. M. *patres ipsorum matresque* Fic. Non sine ratione Plato et supra B. et hic matres priori loco posuisse videatur, quippe quarum ex aetate potius, quam ex patrum, utrum sorores et fratres necne essent, diiudicari deberet.

δὲ] *om.* Bas. b.
κλῆρος] κληρῶν Lob. Vind. B. E.
Vat. M.

ἔνυπιπτη] συμπ. Mon. B. (Par.
DK. Ang. B. Vat. HM. Flor. UV.)
Ald. Bas. ab. Steph.

προσαναιρῇ] προσανερῇ Vind.
E. Flor. ACRT. προσαναιρεῖ Vind. F.

Ὦρθότατα] ὄρθότατα Vind.
F.

Ἡ μὲν δὴ — καλά. 465. E.]
excerpsit Stobaeus serm. XXXXI.
p. 255. sqq. cuius tamen in co-
dice A. priora usque ad μάλιστα,
ἔφη. 462. A. desunt.

αὕτη τε καὶ] *om.* Fic.
ὡς δὲ] *om.* Lob. Vind. B. Vat.
BM. ὡδὲ Vind. F. Ven. C. Par.
DK. secund. Bekk. Stob. (ὡς δὲ
margo Gesn. unde Gaisfordius
recepit.) ὡς δὴ Vind. E.

βελτίστη] βελτίστη Stob. Gesn.
Ald. Bas. ab.

δεῖ] δὲ εἰ Vind. F.

τὸ μετὰ τοῦτο βεβαιώσασθαι παρὰ τοῦ λόγου. ἢ πῶς
 462 ποιῶμεν; Οὕτω νὴ Δία, ἢ δ' ὅς. Ἡρό' οὖν οὐκ ἥδε
 ἀρχὴ τῆς ὁμολογίας, ἐρέσθαι ἡμᾶς αὐτοὺς, τί ποτε τὸ
 μέγιστον ἀγαθὸν ἔχομεν εἰπεῖν εἰς πόλεως κατασκευὴν,
 οὗ δεῖ στοχαζόμενον τὸν νομοθέτην τιθέναι τοὺς νό-
 μους, καὶ τί μέγιστον κακὸν, εἴτα ἐπισκέψασθαι, ἀραι
 ἢ νῦν δὴ διήλθομεν, εἰς μὲν τὸ τοῦ ἀγαθοῦ ἵκινος ἡμῖν
 ἀρμόττει, τῷ δὲ τοῦ κακοῦ ἀναρμοστεῖ; Πάντων μά-
 λιστα, ἔφη. Ἐχομεν οὖν τι μεῖζον κακὸν πόλει, ἢ ἐκεῖ-
 Β νο, δ ἀν αὐτὴν διασπῆ παὶ ποιῆ πολλὰς ἀντὶ μιᾶς; ἢ

τὸ μετὰ τοῦτο] tamquam unum exhibent Lob. Vind. BDE. tamquam duo Mon. B. Ald. Bas. ab. τὸ μετατοῦ Vind. F.

ποιῶμεν] ποιοῦμεν Vind. F. a m. pr. editiones ante Bekkerum, tacentibus Bip. (an quid) age-
 mus? Fic.

462 Οὕτω] οὐ τὸ cum litura Vind. F.

ἢ δ' ὅς] om. Vind. F. Ang. B. ἐρέσθαι] Ita Mon. B. Stob. Trinc. Gesn. ἐρεσθαι Lob. Vind. BDEF. Stob. Gaisford. editiones ante Bekkerum.

ἔχομεν] om. Par. K. εἶχομεν Vind. E. Flor. ACR. In Vind. F. ἔχομεν cum litura in prima scriptum.

οὐ] οὐ Vind. F. Par. D. δὸ^o
 margo Par. D.

δεῖ] δὴ Vat. H. Flor. AC. et a m. pr. Vind. E. Idem et στοχα-
 ζομένον pro στοχαζόμενον Gais-
 fordius in Stob. cod. A. legi te-
 statur, cui haec priora deesse
 dixerat. Itaque ad codicem B.
 utrumque referendum videtur.

καὶ τί] καὶ τι Stob. Trinc.
 ἀραι] ἀραι Vind. F. Stob. Trinc.
 Ald. Bas. ab. In Stob. Gesn.
 Gaisf. Ald. Steph. Ast. pr. et sec.
 signo interrogandi, in Stob. Trinc.
 Bekkeri et prima Stallbaumii ed.
 nulla interpunctione a proximo
 ἐπισκέψασθαι distinctum est.

ἢ] Ante hoc Stob. Trinc. Bek-
 keri, Stallb. prima et Astii tertia
 ed. comma habent.

δὴ] om. Lob. Vind. BD. Vat.
 BM. Stob.

ἵκινος] εἶδος Flor. T. ὄχρας
 Stob. cod. B.

ἀρμόττει] ἀρμόττειν Vat. H.
 Flor. A.

τῷ] τῷ Lob. τῷ Vind. DEF.
 Mon. B. Ang. B. Vat. H. Stob.

ἀναρμοστεῖ] Pollux III. 58:
 καὶ τὸ τοῦ Πλάτωνος; ἀναρ-
 μοστεῖν. Cf. Soph. p. 253. A.
 261. E. Leg. III. 718. B.

τι] τι Vind. F. Stob. τῷ Stob.
 cod. A.

πόλει] πόλεως Par. K. Bas. b.
 ἢ ἐκεῖνο] om. Vind. B. Vat.
 M. ἢ om. Vind. D.

ἄν] om. Par. K. sec. Bip.
 αὐτὴν] αὐτὴν Lob. Vat. M. et
 a m. pr. Vind. B.

ποιῆ] Ita Lob. Vind. BDE.
 Mon. B. Ven. B. Vat. M. Flor.
 CTU. et a m. s. Par. A. ποιεῖ
 Vind. F. Vat. BH. Ven. C. Par.
 K. Ang. B. Flor. ARV. Stob.
 (Gaisf. ποιῆ) ποιοῖ Par. D. Ald.
 Bas. ab. Steph. Ast. pr. Idem
 Astius in sec. indicativum omissio
 ἢ praeferebat, in tertia Bekke-
 rum secutus est.

ἢ ἄν] δὲ δὴ Stob. Sed δὲ δεῖ B
 cod. A.

ξννδῆ] ξννδεῖ Par. A. Lob.
 Vind. E. Vat. BH. Ven. C. Flor.
 ACV. Stob. ξνδῆ Vind. F.

καὶ — ξννδεῖ] bis deinceps
 leguntur in Vind. E.

ποιῆ] Ita Lob. Vind. BDE.
 Mon. B. Vat. BM. Ven. B. Par.
 K. Ang. B. Flor. RU. et a m. s.

μεῖζον ἀγαθὸν τοῦ ὃ ἀν ἔνδη τε καὶ ποιῆ μίαν; Οὐκ ἔχομεν. Οὐκοῦν ή μὲν ἡδονῆς τε καὶ λύπης ποιωνία ἔνδει, ὅταν ὅτι μάλιστα πάντες οἱ πολῖται τῶν αὐτῶν γιγνομένων τε καὶ ἀπολλυμένων παραπλησίας χαίρωσι καὶ λυπῶνται; Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἡ δέ γε τῶν τοιούτων ἴδιωσις διαλύει, ὅταν οἱ μὲν περιαλγεῖς, οἱ δὲ περιχαρεῖς γίγνωνται ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς παθήμασι τῆς Σ πόλεώς τε καὶ τῶν ἐν τῇ πόλει; Τί δ' οὐ; Ἄρ' οὖν ἐκ τοῦδε τὸ τοιόνδε γίγνεται, ὅταν μὴ ἄμα φθέγγωνται ἐν τῇ πόλει τὰ τοιάδε φήματα, τό τε ἐμὸν καὶ τὸ οὐκ

Par. A. ποιεῖ Vind. F. Ven. C.
Vat. H. Flor. ACV. Stob. ποιοῦ
(Par. D. Flor. T.) Ald. Bas. ab.
Steph. Ast. pr. — Aristoteles Po-
lit. L. II. c. 1. pag. 28. Goettl.
ἔχει δὴ δυσχερείας ἄλλας τε πολ-
λὰς τὸ πάντων εἶναι τὰς γνω-
νας ποινὰς, καὶ δὶς ἦν αἰτίαν
φησι δεῖν νερομοθετήσθαι τὸν
τρόπον τοῦτον ὁ Σωκράτης, οὐ
φαινεται συμβαῖνον ἐν τῶν λό-
γων. ἔτι δὲ πρὸς τὸ τέλος, ὃ
φησι τῇ πόλει δεῖν ὑπάρχειν,
ὡς μὲν εἴρηται νῦν, ἀδύνατον,
πῶς δὲ δεῖ διελεῖν, οὐδὲν διώ-
ρισται. λέγω δὲ τὸ μίαν εἶναι
τὴν πόλιν πᾶσαν, ὡς ἄριστον
ὅτι μάλιστα λαμβάνει γάρ ταύ-
την ὑπόθεσιν ὁ Σωκράτης.

ἔννδει] ἔννδει εἰ Vat. B.

ὅτι μάλιστα] μάλιστα Stob.
cod. B. ὅτε μάλιστα Bas. b.

πολῖται] πολίται Lob. Vind.
F. Mon. B. Stob. (non Gaisf.)

λυπῶνται] λυτῶνται Stobaeus
Trinc.

ἴδιωσις] Antiatticista Bekkeri
aneqd. p. 100, 21: ἴδιωσις. Πλά-
των τετάρτῳ Πολιτικῶν. quod
huc pertinet. Cf. ἄλλοιωσις et
ὅμοιωσις p. 454. C.

ὅταν] In Vind. F. prima syl-
laba deleta.

γίγνωνται] γίγνονται Vind. F.
γιγνώσκωνται Stob. Trinc.

παθήμασι] μαθήμασι Stob.
Trinc.

C. τῆς] τοῖς Vind. F.

τῇ] om. Vat. H. Post πόλει
vulgo punctum faciunt. Sed hu-

ius enuntiationis forma eadem est,
quae proximae.

Tί δ' οὐ;] τι μὴν: Vind. D.
Ἄρ'] ἄρ' Vind. F. Mon. B.
(qui in superioribus quoque ali-
quoties ἄρ' exhibit pro ἄρ') Flor.
RU. Stob. Trinc. Gesn. Ald. Bas.
b. Ἅρ' Bas. a. Ex hoc autem —.
Fic. Idem Stephanus annot. p. 21.
in alia ista, quam tandem inven-
nisce dicit, huius loci lectione po-
situm fuisse ostendit, non ἄρ' ut
sit interrogatio. Scilicet apud
Cornarium, cuius eclogis illam
lectionem debebat, pag. 774.
ἄρ' expressum est, sed ἄρ' vo-
luisse Cornarium ex eius inter-
pretatione apparere: Numquid ex
hoc —?

τοιόνδε] τοιούτον Stob. cod. A.

τὰ τοιάδε φήματα, τό τε ἐμὸν
καὶ] bis deinceps scripta sunt in

Vind. F. Pro τὰ Stob. cod. B.

τῇ habet, τε in Vind. DE. Ven.
B. Vat. H. Flor. AC. deest. Re-

spexerunt huc Plutarchus et Iamblichus locis ab Astio et Stall-
baumio laudatis, Plutarchus mor.

p. 140. D: ὁ Πλάτων φησὶν εὐ-
δαιμονεῖ καὶ μακαρίαν εἶναι πό-
λιν, ἐν ᾧ τὸ ἐμὸν καὶ οὐκ ἐμὸν
ἡμιστεῖ φθεγγομένων ἀκούονται.

484. B: μάλιστα μὲν ὡς ὁ Πλά-
των παρήνει τοῖς πολίταις τὸ
ἐμὸν ἔξαιρεῖν καὶ τὸ οὐκ ἐμόν.

767. D: ὁ δ' ἀν "Ερως ἐπισκή-
ψῃ καὶ ἐπιπνεύσῃ, πρῶτον μὲν
ἐν τῆς Πλατωνικῆς πόλεως τὸ

ἐμὸν οὐχ ἔξει καὶ τὸ οὐκ ἐμόν.

Iamblichus de vita Pythag. c. 30.

ἐμόν; καὶ περὶ τοῦ ἀλλοτρίου κατὰ ταῦτά; Κομιδῆ μὲν οὖν. Ἐν ᾧτινι δὴ πόλει πλεῖστοι ἐπὶ τὸ αὐτὸ κατὰ ταῦτὰ τοῦτο λέγοντει τὸ ἐμὸν καὶ τὸ οὐκ ἐμὸν. αὕτη ἄριστα διοικεῖται; Πολύ γε. Καὶ ᾧτις δὴ ἐγγύτατα ἐνὸς ἀνθρώπου ἔχει; οἶνον ὅταν που ἡμῶν δάκτυλός του πληγῇ, πᾶσα ἡ κοινωνία, ἡ κατὰ τὸ σῶμα πρὸς τὴν ψυ-

§. 167. ed. Kiessl. ἀρχὴ τοίνυν ἐστὶ δικαιοσύνης μὲν τὸ κοινὸν καὶ ἵσον καὶ τὸ ἐγγύτατο ἐνὸς σώματος καὶ μιᾶς ψυχῆς ὁμοπαθεῖν πάντας καὶ ἐπὶ τὸ αὐτὸ τὸ ἐμὸν φθέγγεσθαι καὶ τὸ ἀλλοτρίον, ὥσπερ δὴ καὶ Πλάτων μαθὼν παρὰ τῶν Πυθαγορείων συμμαρτυρεῖ.

ταῦτα] ταῦτα Lob. Vind. BF. Stob.

Κομιδῆ — ταῦτα] om. Lob. Vind. B. Mon. B. Par. DK. Ven. C. Vat. BM. Ald. Bas. ab. Steph. qui quum in margine nihil nisi ὅταν ante λέγωσι deesse et Ficinum hunc locum aliter legisse videri monuissest, in adnotatione, ut supra ostendi, Cornarii supplementum tamquam aliam lectio- nem atque eandem, qua usus sit Ficinus, apposuit: Καὶ μάλα γε. Ἐν ᾧτινι οὖν πόλει οἱ πλεῖστοι πρὸς ταῦτὸ κατὰ ταῦτά. Id supplementum Astius, quum pri- mūm hos libros ederet, ob Ficini consensum (*Glau. Valde. So. In quacunque igitur civitate complurimi ad idem secundum eadem*) pro genuino habens recepit; in secunda editione adhibito Stobaeo, qui locum integrum servavit, Cor- narium non codice, sed Ficino duce usum intelligens ipse Stobaeum ita secutus est, ut pro δὲ, quod in eo erat, οὐν, pro τοὶ τὸ αὐτὸ, quemadmodum idem habet, πρὸς ταῦτὸ cum Cornario scriberet et cum eodem articulum ad πλεῖστοι adderet; in tertia denique, quum quae Bekkerus aliter quam Stobaeus exhibuisset, qua auctoritate miterentur, nesciret, οὐν cum δὴ, quod Stobaei cod. A. praebebat, com- mutavit; sed πρὸς temuit et ταῦ-

τὸ, ut magis Atticum fieret, littera ν auxit, neque articulum ante πλεῖστοι abiecit. Bekkeri lectio ex Par. A. Ven. B. Ang. B. Vat. H. petita eadem in Vind. DEF. est, nisi quod hic initio ηομηδὴ, Vind. D. ἐπιτοαντὸ ηε- ταταντὰ habet, et in Florentinis omnibus, quibus in sec. ed. Stallbaunius singulatim enumeratis mentionem eorum adiicit, quae Stobaeus discrepantia habet, quum in prima hoc tantum ostendisset: „codices nostri et Stobaeus locum plenum exhibent.“ πλεῖστοι articulum non recipit, quum Socrates non id dicat, eam civitatem optime constitutam esse, in qua maxima civium parti communia ista sint, sed ut quaeque plurimos habeat communiter ista pronuntiantes, ita optime constitutam videri. ἐπὶ cum accusativo, quod Iamblichi verbis confirmari Stallbaunius observavit, mihi ali- ter, quam huic, qui *idem spe- ciantes* intelligit, interpretandum videtur. Nam illud *spectare*, cuius obiectum solet per ἐπὶ cum accus. significari, cum consilio et efficiendi conatu coniunctum est, veluti quum Aristoteles Polit. L. VII. c. 13. pag. 247, 21. Goettl. legislatorem propterea, ὅτι ηοπαῖεν ἡσηγεν ἐπὶ τὸ τῶν πέλας ὄφειν, laudandum negat; quod autem proprie dicitur *spec- tare*, βλέπειν, ut possit accusativo iunctam ἐπὶ habere, quoniam idem est, quod ὅμως φέ- φειν, tamen plerunque dativo iunctam habet, neque vero per ellipsis reticeri ita poterat, ut λέγειν τι ἐπὶ τι is diceretur, qui conspecta re verbum aliquod de ea praedicaret. Evidem λέγειν

χὴν τεταμένη εἰς μίαν σύνταξιν τὴν τοῦ ἄρχοντος ἐν Δαύτῃ, ἥσθετό τε καὶ πᾶσα ἀμα ἔννήλγησε μέρους πονήσαντος ὅλη, καὶ οὕτω δὴ λέγομεν, ὅτι ὁ ἄνθρωπος τὸν δάκτυλον ἀλγεῖ· καὶ περὶ ἄλλου ὄτουοῦν τῶν τοῦ ἀνθρώπου ὁ αὐτὸς λόγος, περὶ τε λύπης πονοῦντος μέρους καὶ περὶ ἡδονῆς φαίζοντος. ‘Ο αὐτὸς γὰρ, ἔφη·

τὸ ἔμὸν ἐπὶ τὸ αὐτὸν eodem modo intelligo, quo φέρειν ὄνομα, φέρειν τι, ἐπὶ τὸ δὲ, ἐπὶ τὸ μὴ δὲ Soph. p. 237. C. D. dictum est, appellationem seu nomen meum in eandem rem conferre, quod loquendi genus a Stephano in alia eiusdem loci parte inconsulte quidem requisitum nescio quo iure Heindorfius omnino ut inauditum reprobaverit. Sane ἐπὶ τοῦτον τὸν παιδα λέγω τὸ ἔμὸν durius sonat, et dativum etiam nostro loco desiderans Wyttenbachius a Stallbaumio commemoratus communem dicendi usum sequebatur; sed aliquid tribendum est interpositis verbis, quae dum pronuntiantur loquentis pariter atque audientis animis alio conversus nonnihil discrepans a primis verbum, modo ne proximis repugnet, non tam fastidiose recusat, quam lector facere amat. Similiter Iamblichum ἐπὶ τὸ αὐτὸν τὸ ἔμὸν φθέγγεσθαι dixisse statuo, in cuius verbis genitivum praeferenți Küstero Kiesslingius ἐπὶ τὸ αὐτὸν simul significare obiicit, quod sic simpliciter dictum non probo. Ceterum pro ταῦτα Stob. Trinc. ταῦτα exhibet.

λέγοντι] λέγωσι Par. ADK. cum editis ante Astii sec. quod Cornario offensioni non fuit. μὴ λέγωσι Mon. B. Stallbaumius in utraque editione de hoc loco tacuit.

ἔμὸν] ἔμόν τε Ven. B.

οὖν] om. Ven. C. et a. m. pr. Par. D.

διοικεῖται] διοικεῖται Bas. b.

ἡτις] εἰ τις Vind. DE. Vat. H. Flor. ACT. Stob. cod. A.

οἶνον ὅταν] porro quotiens Fic. Ante haec signum interrogandi posui motus verbis Glauconis infra D. τοῦτο, δὲ ἐρωτᾶς.

τον] om. Ven. B. Vind. E. πονον Lob. Vind. BF. Vat. BM. Flor. R. et, ut videtur, Stob. cod. A. Nam quod in Gaisfordii editione haec nota: „τον] πονον cod. A.“ ad πον post ὅταν relata est, quum ibi non solum Gaisfordius, sed etiam Trinacvellus et Gesnerus πον ediderint, errore factum videtur.

ἡ πατὰ] καὶ Vind. F. Ang. B. Flor. R.

τεταμένη] τεταγμένη Vat. B. Ven. B. Vind. E. Stob. cod. B.

εἰς] om. Vind. D.

ἐν αὐτῇ] in ipsa anima Fic. D Eodem modo Schleiermacherus et Stallbaumius. Mihi αὐτῇ ad πονονταίν referendum videtur.

ἥσθετό] ἥσθητό Vind. F.

πᾶσα] post ἀμα Mon. B. Flor. U.

ἔννήλγησε] καὶ ἔνν. Ven. C. ἔννήλγε Vind. E. συνήλγησε Stob.

πονήσαντος] πονήσαντος Vat.

H. Flor. ACV.

λέγομεν] λέγωμεν Ald. Bas. ab.

δὲ] om. Vind. D.

ἀλγεῖ] ἀλγῆ Mon. B. a. m. pr.

περὶ ἄλλου ὄτουοῦν] de quavis alia parte et passione Fic. — οὐτοῦοῦν Lob. Vat. B. — ὅτον οὖν Vind. F.

τῶν] τῷ Ald. Bas. ab.

ὅ αὐτὸς λόγος] ὁ αὐτός τε λόγος Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Flor. CR. Ald. Bas. ab. ὁ αὐτός γε λ. Steph. Ast. pr. ὁ ἀπόλογος Stob. cod. A.

μέρους] μέρος Bas. ab.

καὶ τοῦτο, ὃ ἔρωτῆς, τοῦ τοιούτου ἐγγύτατα ἡ ἄριστα πολιτευομένη πόλις οἰκεῖ. Ἐνὸς δὴ, οἶμαι, πάσχοντος τῶν πολιτῶν ὅτιοῦν ἡ ἀγαθὸν ἡ κακὸν ἡ τοιαύτη πόλις Ε μάλιστά τε φήσει ἑαυτῆς εἶναι τὸ πάσχον καὶ ἡ ἔννησθήσεται ἄπασα ἡ ἔννηλυπήσεται. Ἀνάγκη, ἔφη, τήν γε εὗνομον. Ὡρα ἀν εἴη, ἦν δ' ἐγώ, ἐπανιέναι ἡμῖν ἐπὶ τὴν ἡμετέραν πόλιν καὶ τὰ τοῦ λόγου ὅμολογάματα σκοπεῖν ἐν αὐτῇ, εἰ αὐτὴ μάλιστ' ἔχει, εἴτε καὶ ἄλλη τις 463 μᾶλλον. Οὐκοῦν χρὴ, ἔφη. Τί οὖν; ἔστι μὲν που καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσιν ἄρχοντες τε καὶ δῆμος, ἔστι δὲ καὶ ἐν αὐτῇ; Ἔστι. Πολίτας μὲν δὴ πάντες οὗτοι ἀλλήλους προσεροῦσι; Πῶς δ' οὕ; Ἄλλὰ πρὸς τῷ πολι-

ἐγγύτατα] ἐγγύτατω Par. K.
ἡ] ἡ Vind. F. Stob. cod. B.

Ἐνὸς] Hic Socratis sermonem excipere editores ante Bekkerum fugit, Ficinum non item.

δὴ] om. Fic.

E φῆσει] φύσει Stob. Gesn. Bas. ab.

τὸ πάσχον] eum, qui sic affectitur Fic.

καὶ ἡ] ἡ om. Par. DK. Mon. B. (Flor. ACTUV.) Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr.

ἔννησθήσεται] συν. Lob. Vind. BDF. ἔννησθ. Bas. ab.

ἔννηλυπήσεται] ἔννηλυπ. Vind. F. ἔννηλυπησήσεται Flor. T. Stob. cod. A.

Ἀνάγκη — χρὴ, ἔφη.] om. Stob. cod. A.

γε] γ' Vind. F. Ang. B.

Ωρα] ὥρα Ang. B.

αὐτῇ] αὐτῇ Mon. B. Stob. Trinc. civitati huic (conveniant) Fic. αὐτῇ est ea potissimum. Cf. L. VII. p. 516. B.

μάλιστ'] omnium maxime. μάλιστα Lob. Vind. BEF. Stob.

οὖν; ἔστι] οὖν ἔστι Ald. Bas.

463 ab. De singulari cf. Vol. I. p. 122. που] om. Lob. Vind. BD. Vat. BM.

πόλεσιν] πόλεσι Vind. E. πόλεσι τε Lob. Vat. B. Ven. C.

δὲ] om. Vind. D.

αὐτῇ] αὐταῖς Bas. b. ταύτῃ Vind. F. Ang. B. Flor. AR. (Ad

hunc enim locum Florentinorum varietatem pertinere perperamque a Stallbaumio in V. L. ad proxima ἐν αὐτῇ post σκοπεῖν adscriptam esse ex Stobaci mentione, quem comitem eis adiunxit, et ex Vind. et Ang. consensu colligo.) Stob. (αὐτῇ margo Gesn.) ista Fic. αὐτῇ cum ictū pronuntiatum cogitari necesse est, contra ac Reisigius Coniectan. p. 96. sqq. fieri posse statuebat; quem hic locus fugerat et similis huic E: πασῶν ὧρα πόλεων μάλιστα ἐν αὐτῇ ἔνμφωνήσουσιν.

"Ἔστι.] "Ἔστιν. Bekkerus.

πάντες] πάντας Mon. B. Flor. U.

οὗτοι] om. Flor. T.

προσεροῦσι;] προσεροῦσιν; Bekkerus.

τῷ] τῷ Ang. B. Vat. H.

πολίτας] πολίτας εἶναι Flor. T. referente in sec. ed. Stallbaumio.

τι] ὁ τι Vind. D. τι καὶ Stob. cod. A. ed. Gaisf.

ὅ ἐν] οὖν Vind. E. Id suspicor ex οὖν ortum, cui simile τούπῃ Soph. p. 264. E. τούκει Tim. p. 25. D. legitur.

τοὺς ἄρχοντας] om. Stob. Trinc. Gesn. (Gaisfordius habet sine nota.)

ταῖς τί δὲ ἐν ταῖς ἄλλαις δῆμος τοὺς ἀρχοντας προσαγορεύει; Ἐν μὲν ταῖς πολλαις δεσπότας, ἐν δὲ ταῖς δημοκρατούμεναις αὐτὸς τοῦτομα τοῦτο, ἀρχοντας. Τί δὲ ἐν τῇ ἡμετέρᾳ δῆμος; πρὸς τῷ πολίτας τί τοὺς ἀρχοντάς φησιν εἶναι; Σωτῆράς τε καὶ ἐπικούρους, ἔφη. Τί δὲ οὗτοι τὸν δῆμον; Μισθοδότας τε καὶ τροφέας. Οἱ δὲ ἐν ταῖς ἄλλαις ἀρχοντες τοὺς δῆμους; Δούλους, ἔφη. Τί δὲ οἱ ἀρχοντες ἄλλήλους; Ξυνάρχοντας, ἔφη. Τί δὲ οἱ ἡμέτεροι; Ξυμφύλακας. Ἐχεις οὖν εἰπεῖν τῶν ἀρχόντων ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσιν εἴ τις τινα ἔχει προσειπεῖν τῶν ξυναρχόντων τὸν μὲν ὡς οἰκεῖον, τὸν δὲ ὡς ἄλλο-
462 τριον; Καὶ πολλούς γε. Οὐκοῦν τὸν μὲν οἰκεῖον ὡς

αὐτὸν] αὐτὸν Bas. b. om. cum duobus sequentibus Fic.

τοῦντομα] om. Vind. F. Ang. B. Flor. R. post *τοῦτο* Stob.

τοῦτο] *τοῦτ'* Lob. Vind. B. Vat. M. *τοῦτο τοὺς* Vind. F. Ang. B.

Τί δέ?] *Τί δαι.* Stob. Trinc.

δῆμος] δῆμος τοὺς ἀρχοντας Stob. cod. A.

τῷ] *τῷ* Stob. Trinc.

πολίτας] π. εἶναι Flor. T.

φησιν] nuncupabit Fic.

Σωτῆράς] σωτῆρός Ven. B.

B *Οἱ δέ?*] οἱ δὲ Vind. F. Stob. *Oīd'* Bas. b. om. Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C. καὶ Par. DK. Mon. B. Flor. U. Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr.

ἀρχοντες] δὲ Lob. Vind. B. Vat. BM. οἱ ἀρχοντες Par. DK. Mon. B. Flor. U. editi ante Ast. sec.

τοὺς δῆμους] om. Lob. Vind. B. Vat. BM.

Δούλους] *τοὺς δ.* Vind. E. *ἔφη*] om. Lob. Vind. B. Vat. M.

ἄλλήλους] ἄλλοίλους Mon. B. *Ξυνάρχοντας*] συν. Vind. E. Flor. ACTV.

ἔφη] om. Vat. B. *Τί δέ οἱ ἡμέτεροι;* *Ξυμφύλακας.*] om. Stob. *τί δέ ἡμ.* ξ. (Comisso οἱ) Vind. D. *τί δέ οἱ μέτεροι;* συμφ. Vind. E.—συμφ.

etiam Flor. ACTV. — Ξυνφύλ.

Vind. F.

Ἐχεις] ἔχει Par. K.

ἐν ταῖς] τῶν ἐν ταῖς Vind. F. Mon. B. Flor. RU. Bekkerus; a quo discessionem non fecisset, si verum esset, quod in comm. demonstrat, nusquam se, nisi in Vat. HM. τῶν omissum invenisse. At omittitur etiam in Vind. B. editisque ante Bekkerum omnibus, omittitur in Lob. Vind. DE. Flor. ACTV. Stob. neque a Bipontinis ex Par. K. assertur. Itaque magnam de Par. AD. Vat. B. Ven. BC. suspicionem iniici necesse est, quae si tamen iniusta et vana sit, equidem non repugnabo, quo minus τῶν locum obtineat: necessaria quidem repetitio articuli non magis est, quam L. III. p. 387. E. in verbis *τοὺς δρηγούντος τῶν ὀνομαστῶν ἀνδρῶν*, aut Criton. 47. A. τὰς δόξας τῶν ἀνθρώπων, quo utroque loco similis lectionis varietas exstat. Stallbaumius et in tert. ed. Astius cum Bekkero faciunt.

ἔχει] ἔχειν Vat. H. ἔχοι Flor. T.

τὸν δὲ — οἰκεῖον] om. Vind. E. *τὸν δέ* etc. Vind. D. Ang. B. Vat. H. Stob. *τῶν δέ* etc. Vind. F.

Καὶ] om. Vat. B.

οἰκεῖον] post ὡς Vind. F. Ang. B. Cf. Bernhardy synt. p. 166.

C έαυτοῦ νομίζει τε καὶ λέγει, τὸν δ' ἀλλότριον ὡς οὐχ
έαυτοῦ; Οὕτω. Τί δὲ οἱ παρὰ σοὶ φύλακες; ἔσθ' ὅστις
αὐτῶν ἔχοι ἀν τῶν ξυμφυλάκων νομίσαι τινὰ ἢ προσει-
πεῖν ὡς ἀλλότριον; Οὐδαμῶς, ἔφη παντὶ γὰρ, ὃς ἀν
ἐντυγχάνῃ τις, ἢ ὡς ἀδελφῷ ἢ ὡς ἀδελφῷ, ἢ ὡς πατρὶ¹
ἢ ὡς μητρὶ ἢ νιεῖ ἢ θυγατρὶ ἢ τούτων ἐκγόνοις ἢ προ-
γόνοις νομεῖν ἐντυγχάνειν. Κάλλιστα, ἦν δ' ἐγὼ, λέ-
γεις ἀλλ' ἔτι καὶ τόδε εἰπέ· πότερον αὐτοῖς τὰ ὄνό-

νομίζει τε καὶ λέγει] νομίζοι
τε καὶ λέγοι Lob. τε om. Vind.
E. Vat. H. Flor. ACT. et a m.
pr. Ven. B.

C τὸν δ'] τὸν δὲ Vind. F.

έαυτοῦ;] έαυτοῦ. editi ante
Astium.

Oὕτω.] Οὕτως. Bekkerus. οὐ-
τῷ γε Stob. Gesn. (cod. BN.)

Tί δὲ] τι δαι Par. A. τι δ'
Vind. F. Ang. B. Stob.

παρὰ σοὶ] παρά σοι Steph.
Ast. pr.

ὅστις] ὁ τις Vat. H. et cum
σ super τ Vind. E. Mon. B. in
quo σ a m. s. superscriptum.

ὡς] om. Ang. B. Stob. Gesn.
(cod. BN.)

ἄν] om. Mon. B.

ἐντυγχάνῃ] ἐντυγχάνοι Lob.
Vind. BDE. Vat. BM. Ven. B.
Stob. Trinc. et cum νη super
νοι Par. K. Optativus vitiosus
non est.

τις] om. Vind. F. Ang. B.
Stob. cod. A. Trinc. Gaisf. τις
ἄν Mon. B. Flor. U.

ἢ ὡς ἀδελφῆ] om. Vind. E.
ἢ ὡς ἀδελφῆ Vind. F. Ficinus
neque hoc ὡς neque sequentium
ullum reddidit.

ἢ ὡς πατρὶ] ἢ om. Vind. D.

ἢ ὡς μητρὶ] ὡς om. Lob.
Vind. BDF. Vat. BM. Ven. C.
Par. DK. Ang. B. Flor. R.

ἢ νιεῖ] ἢ ὡς νιεῖ Ven. B.
Ang. B. Vat. M. Flor. T. Stob.
Ald. Bas. ab. Steph. Ast.

ἢ θυγατρὶ] ἢ ὡς θυγατρὶ²
Flor. T. Stob. cod. B.

τούτων ἐκγόνοις ἢ προγόνοις]
τῶν τούτων ἐκγόνων ἢ προγόνων
Vind. B. Pro ἐκγόνοις Stobaeus
ἐγγόνοις, sed margo Gesn. ἐκγ.
habet; ἢ προγόνοις om. Ang. B.
Stob. cod. B.

νομεῖ] νομεῖ Stob. Trinc.

Κάλλιστα] μάλιστα Lob. Vind.
B. Vat. BM. et a m. pr. Ven. C.

ἀλλ' ἔτι — μάλιστα, ἔφη. 464.
A.] om. Stob. cod. A.

αὐτοῖς] έαυτοῖς Lob. Vind. B.
Vat. BM.

μόνον — ὄνόματα D.] om.
Vind. E.

οἰκεῖα] οἰκεῖον Stob. cod. B.
propinqua familiaria Fic. Conf.
Vol. I. p. 260, a. et Polit. p. 276.
B: μηδεμίαν εἶναι τέχνην ἐν
ἥμιν ἀξίαν τούτου τοῦ θρηπτι-
κοῦ προσδρήματος.

καὶ] om. Vind. D.

πατὰ] καὶ Stob. cod. N. Trinc. D

περὶ τε] Cornarius offensus,
nisi fallor, eo, quod in sequen-
tibus non inveniret alterum illud,
quod secundum τε exspectasset,
περὶ τε τὸν ἄλλον ante haec
excidisse statuebat p. 100. Fisch.
cui temere assensus est Stephanus
adnot. p. 21: „scribendum
est potius ex vet. περὶ τε τὸν
ἄλλον καὶ περὶ τὸν πατέρας.“
et in sec. ed. Astius περὶ τε τὸν
ἄλλον καὶ τὸν πατέρας in ipso
textu exhibens, in commentario
autem lemmati ex prima ipsius
editione petitio περὶ γε τὸν πα-

ματα μόνον οἰκεῖα νομοθετήσεις, ἥ καὶ τὰς πράξεις πάσας κατὰ τὰ δύναματα πράττειν, περὶ τε τοὺς πατέρας, Δόσα νόμος περὶ πατέρας αἰδοῦς τε πέρι καὶ κηδεμονίας καὶ τοῦ ὑπήκοον δεῖν εἶναι τῶν γονέων, ἥ μήτε πρὸς θεῶν μήτε πρὸς ἀνθρώπων αὐτῷ ἀμεινον ἔσεσθαι, ὡς οὕτε ὅσια οὕτε δίκαια πράττοντος ἀν, εἰ ἄλλα πράττοι, ἥ ταῦτα; αὐταὶ δοι, ἥ ἄλλαι φῆμαι ἐξ ἀπάντων τῶν πολιτῶν ὑμνήσουσιν εὐθὺς περὶ τὰ τῶν παίδων ὅτα καὶ

τέρας nil aliud, nisi Stobaenum τε pro γε habere subscribens. In tertia tandem in vulgata ac quievit. Cf. Vol. I. p. 167, a. Quamquam h. l. ne omissum quidem alterum illud, tantum paulisper dilatum et in fine sermonis positum est: καὶ περὶ τῶν ἄλλων ἔνγγενῶν.

νόμος] ὁ νόμος Vind. F. Ang. B. Flor. R.

πατέρος] πατέρα Stob. Trinc. Hic locus obversatus videtur auctori scholii Victoriani ad Hom. Il. XXIII. 371: καὶ Πλάτων κοινὰς εἶναι τὰς γυναικας ἐκέλευσεν, ὅπως οἱ γέροντες ὡς πατέρες τιμῶνται.

τε] με Bas. b.

περὶ καὶ] περὶ Vind. E.

καὶ τοῦ] καὶ τὸ Lob. Vind. BDEF. Mon. B. Par. D. Ang. B. Vat. HM. Flor. ACRTUV. quod nescio an ex eodem fonte fluxerit, ex quo Cornarium supra conjecturam hausisse vidimus. Sed ob id ipsum reprobandum est τὸ, ne obedientia erga parentes patribus opponi et alterum illorum dici videatur, circa quae versari debeat pietas. Nam quominus ad νομοθετήσεις hoc referatur, τε post περὶ impedit.

δεῖν] δεῖn Vind. E.

γονέων] γοναῖων idem.

αὐτῷ ἀμεινον] αὐτῷ ἀμεινον Stob. Sed in margine Gesn. vulgatum exstat, quod Gaisfordius recepit.

ὅσια οὕτε δίκαια] δ. οὕτε δ. Stob.

πράττοντος] πράττοντας Vind. F. Flor. RT. et ante corr. Mon. B. Pluralem Ficinus quoque et hic et paullo post adhibuit: utpote qui neque sancta neque iusta agant, si contra fecerint.

ταῦτα;] ταῦτα. Ald. Steph. qui etiam supra C. post εἰπέ tantum comma posuit.

αὐταῖ] αὐταὶ Ven. C. Par. DK. Vat. H. Flor. CT. cum editionibus ante Astii sec. qui Stobaeo duce usus est. ἥ αὐταὶ Ang. B. ἥ αὐτη Flor. R. ἥ αὐτη Vind. F.

δοι] om. Ang. B. in hac tua civitate Fic.

ἐξ ἀπάντων] ἐξαπ. Vind. F. ὑμνήσουσιν] om. Ven. B. a m. pr. Non opus est, ut ὑμνεῖν intransitivo sensu, nedum passivo, positum statuamus. φῆμαι illae omnium ex ore civium prodeentes canere dicuntur. Cf. Leg. L. XI. p. 927. A: πιστεύειν τε ταῖς ἄλλαις φῆμαις χρεὼν περὶ τὰ τοιαῦτα οὕτω πολλαῖσι καὶ σρόδοις παλαιᾶς οὖσαις, πιστεύειν δ' αὐτὸν καὶ τοῖς νομοθετοῦσι ταῦθ' οὕτως ἔχειν. Neque vero Critiae locus p. 118. B: τὰ δὲ περὶ αὐτὸν οἷον τότε ὑμνεῖτο πλῆθος καὶ μέγεθος καὶ πάλλος παρὰ πάντα τὰ νῦν ὄντα γεγονέναι, cuius vitiosa lectione ὑμνεῖτο πλ. Astius in sec. ed. ad nostrum illustrandum usus fuerat, iterum proferri debebat a Stallbaumio.

περὶ τὰς περὶ τε Vind. D. περὶ τε τὰ Lob. Vind. B. Vat. M. τῶν] om. Vat. H.

περὶ πατέρων, οὓς ἀν αὐτοῖς τις ἀποφήνη, καὶ περὶ
Ε τῶν ἄλλων ἔνγενῶν; Αὗται, ἐφῆ γελοῖον γὰρ ἀν εἴη,
εἰ ἄνευ ἔργων οἰκεῖα ὄνόματα διὰ τῶν στομάτων μόνον
φθέγγοιντο. Πασῶν ἄρα πόλεων μάλιστα ἐν αὐτῇ ἔνυ-
φωνήσουσιν ἐνός τινος ἡ εῦ ἡ κακῶς πράττοντος ὁ
νῦν δὴ ἐλέγομεν τὸ ὅημα, τὸ δὲ τὸ ἐμὸν εὖ πράττει,
ἡ δὲ τὸ ἐμὸν κακῶς. Ἀληθέστατα, ἡ δὲ ὅς. Οὐκοῦν
464 μετὰ τούτου τοῦ δόγματός τε καὶ δήματος ἔφαμεν ἔνυ-
φωνθεῖν τάς τε ἥδονάς καὶ τὰς λύπας κοινῆς; Καὶ ὁρ-
θῶς γε ἔφαμεν. Οὐκοῦν μάλιστα τοῦ αὐτοῦ κοινωνή-
σουσιν ἡμῖν οἱ πολῖται, ὁ δὴ ἐμὸν ὄνομάσουσι, τούτου

περὶ] adversus Fic. item alterum.

τις] om. Stob.

ἔνγενῶν;] ἔνγενῶν. Ald.
Steph.

E γὰρ] om. Vind. D.
ἄνευ ἔργων] sine officio Fic.
οἰκεῖα ὄνόμαται] ὄν. οἰκ. Ang.

B. Stob. ὄν. οἰκεῖν Vind. F.
μόνον] μόνων Par. K. secund.

Bekk. om. Lob. Vind. BD. Vat.
BM. Flor. T.

μάλιστα] om. Vind. B. Vat. M.
ἔνυφωνήσουσιν] Huic in Flor.

R. οἱ πολῖται superscriptum. uno
ore clamabunt omnes Fic. subru-
stice.

πράττοντος] πράσσοντος Par.
K. sec. Bip. Vulgo commate hoc,
in Ald. et Steph. etiam colo a
sequentibus separatur.

δὲ] ἡ, in marg. a m. sec. δὲ,
Mon. B.

νῦν] post δὴ Vind. D.

ἐλέγομεν] λέγομεν Vat. H.
Flor. ACTV. et a m. pr. Ven. B.

ὅημα, τὸ] τὸ om. Lob. Vind.
B. Par. K. sec. Bekk. Vat. M.
Stob. Trinc.

ὅτι — ἡ] om. Vind. F. ὅτι
etiam Lob. Vind. B. Vat. M.
omittunt.

Ἀληθέστατα] ἀλ. ἀν Vind. F.
Ang. B. ἀλ. αὐτὸν Stob. Trinc.
Vera loqueris Fic.

464 τὰς λύπας] τὰς om. Stob.

Καὶ] om. Ven. B. a m. pr.

γε] με Stob. cod. A. Sed is
h. l. deficere dictus est.

τοῦ αὐτοῦ κοινωνήσουσιν] in
eo invicem communicabunt Ficin.
quasi τούτον legisset. τοῦ αὐτοῦ
κοινωνεῖν s. τὸ αὐτὸν κοινὸν ἔ-
χειν ne pleonastice dictum videatur,
τοῦ αὐτοῦ cum μάλιστα
coniungendum est: illud, quod
meum appellabunt, maxime idem
omnibus commune erit.

ἡμῖν οἱ πολῖται] οἱ πολ. η.
Vind. F. Ang. B. Flor. R. Stob.
(πολῖται Lob. Vind. F. Mon. B.
Stob. Trinc. Gesn. Bas. b.)

ἐμὸν] ἐμονον Vind. F.

ὄνομάσονται] ὄνομάζονται Stob.
Gesn. Gaisf. Ald. Bas. ab. Steph.
Codices ὄνομάσονται, sed Ven. B.
cum ξ super σ.

τούτον] τούτω Flor. U. et
ante corr. Mon. B.

δὲ] δὴ Flor. RT. Stob. Trinc.

τε] τὴ Stob. Trinc. om. cod.
B.

μάλιστα] om. Fic.

κοινωνίαν — μάλιστα] om.
Vind. E.

ἔξονται;] ἔξονται; Bekkerus et
paullo post φύλαξιν; In editis
ante Bekkerum ἔξονται. et supra
post ὄνομ. ubi Bekkerus et Stall-
baumius interrogandi signum fe-
cerunt, item punctum erat. ἔξον-
ται; etiam Stob. Trinc. habet.

Ἄρ] ἄρ Vind. F. Mon. B.

ἡ τῶν γυναικῶν τε] τῶν γυ-
ναικῶν Vind. F. Ang. B. Flor.
R.

Πολὺ] πάνν Stob.

μὲν] post οὖν Bas. b.

δὲ κοινωνοῦντες οὗτοι δὴ λύπης τε καὶ ἡδονῆς μάλιστα κοινωνίαν ἔχουσι; Πολὺ γε. Ἄρούσαν τούτων αἰτία πρὸς τῇ ἄλλῃ καταστάσει ἡ τῶν γυναικῶν τε καὶ παιδῶν κοινωνία τοῖς φύλαξι; Πολὺ μὲν οὖν μάλιστα, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν μέγιστόν γε πόλει αὐτὸς ὀμολογήσαμεν ἀγαθὸν, ἀπεικάζοντες εὗρον οἰκουμένην πόλιν σώματι πρὸς μέρος αὐτοῦ λύπης τε πέρι καὶ ἡδονῆς ὡς ἔχει. Καὶ ὁρθῶς γ', ἔφη, ὀμολογήσαμεν. Τοῦ μεγίστου ἄρα ἀγαθοῦ τῇ πόλει αἰτία ἡμῖν πέφανται ἡ κοινωνία τοῖς ἐπικούροις τῶν τε παιδῶν καὶ τῶν γυναικῶν. Καὶ μάλιστα, ἔφη. Καὶ μὲν δὴ καὶ τοῖς πρόσθεν γε ὀμολογοῦμεν.

μὴν] μὴ Vind. D.

γε] Ita. Par. A. Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. Stob. τε reliqui cum editionibus ante Astii sec.

B *πόλει]* τῇ πόλει Par. K. πόλις Vat. B. a m. pr. πόλεσιν a m. s. πόλεως Bas. b.

πρὸς μέρος αὐτοῦ] πρὸς τὸ μ. αὐτὸν. Lob. Vind. BD. Vat. M. πρὸς μέρη αὐτὸν. Ven. B. *cum singularis partibus suis* (*circa voluptatem et dolorem quoquo modo communicantis*) Fic. πρὸς μέρος αὐτοῦ Astius in secunda scripsit, quem Bekkerus tacens et Stallbaumius nullo Florentinorum suffragante sequuntur. Quum utrumvis rectum sit et ad perspicuitatem nihil referat, ut eiusdem corporis, quod modo dictum est, non alias cuiuspiam rei partem significari moneamus, primum codicium consensio, deinde orationis forma respicienda est. Si σῶμα subiectum, aut pronomen post ἔχει vel ita locatum esset, ut necessario ab eo verbo afficeretur et cum dativo σώματι coniungi non amplius posset, nihil obstat, quo minus reflexivum praeferreretur: ὡς σῶμα πρὸς μέρος αὐτοῦ ἔχει, vel σώματι, ὡς ἔχει πρὸς μέρος αὐτοῦ. Propius enim haec loquendi forma ad illam accederet, quae reflexivum requirit: σῶμα ἀπόλεσε μέρος αὐτοῦ. Sed ut nunc verba habent, nullam offensionem accipi-

mus, quum eam rem, quam animo loquentis obiectam neque perse constantem ex casu obliquo agnovimus, (*σώματι*) porro demonstrari ab eo audimus.

λύπης] λύπας ante corr. Mon.

B. *πέρι]* περὶ Vind. B.

γ'] γε Stob. *ῷμολογῆσαμεν]* διμ. Bas. a. *πέφανται]* πέφυνεν Stob. cod. BN. Trinc. Gesn. (*πέφανται* cod. A. Gaisf.)

τῶν τε παιδῶν καὶ τῶν γυναικῶν] mulierum filiorumque Fic. In Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACV. τε post παιδῶν possum, in Stob. cod. A. omissum est.

μάλιστα] μάλιστα Lob. Vind. BDF. Stob.

μὲν] μὴν Stob.

τοῖς] ἐν τοῖς Ven. B.

γε] om. Vind. D. Par. K. Stob. Ast. sec. (Stob. cod. A. et Gaisf. habent γε.)

ῷμολογοῦμεν] διμολογοῦμεν Vind. DEF. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Stob. cod. A. et corr. Mon. B. (ante corr. ὥμ.) Praesens Ficinus quoque legit: *atqui et superioribus haec consonant.* idque Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius et in Stobaeo Gaisfordius receperunt. Imperfectum ad illud tempus pertinet, quo primum hac communione opus futurum ostenderat Socrates reliquosque assentientes habuerat, L. III.

ἔφαμεν γάρ πον οὕτε οἰκίας τούτοις ἰδίας δεῖν εἶναι
 Κούτε γῆν οὕτε τι κτήμα, ἀλλὰ παρὰ τῶν ἄλλων τροφὴν
 λαμβάνοντας μισθὸν τῆς φυλακῆς κοινῆ πάντας ἀναλί-
 σκειν, εἰ μέλλοιεν δύντως φύλακες εἶναι. Ὁρθῶς, ἔφη.
 Ἡρός οὖν οὐχ, ὅπερ λέγω; τά τε πρόσθεν εἰρημένα καὶ
 τὰ νῦν λεγόμενα ἔτι μᾶλλον ἀπεργάζεται αὐτοὺς ἀλη-
 θινοὺς φύλακας καὶ ποιεῖ μὴ διασπῆν τὴν πόλιν τὸ
 ἐμὸν ὄνομάζοντας μὴ τὸ αὐτὸν, ἀλλ' ἄλλον ἄλλο, τὸν
 μὲν εἰς τὴν ἑαυτοῦ οἰκίαν ἔλκοντα ὅτι ἀν δύνηται χω-

pag. 423. extr. seque tum nihil,
 quod non cum prius dictis (L. III.
 p. 416. D.) consentiret, postu-
 lasse affirmans simul id praesti-
 tum docet, quod p. 461. E. re-
 quisiverant, uti esset haec com-
 munio ἐπομένη τῇ ἄλλῃ πολι-
 τείᾳ.

ἰδίας] ἰδίως Stob. (non cod.
 A. Gaisf.) οἰκίας Vind. BD.

δεῖν] δεῖ Lob. Vind. BD. Vat.
 M.

τι] om. Vind. F. Ang. B. Flor.
 R. Stob.

λαμβάνοντας] λαμβάνοντες
 Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV.

ἀναλίσκειν] ἀν — Vind. D.
 nt. vers. a m. s. scriptum habet.

μέλλοιεν] μέλλομεν Vind. F.

δύντως] οὕτω Par. K. Flor. T.

Ἡρός] Ἡρός Vind. F.

λεγόμενα] λελεγμένα Stob.
 Trinc.

ἔτι μᾶλλον] maxime Fic.

αὐτοὺς] ἑαυτοὺς Vind. D.

ἀληθινοὺς] post φύλακας Vat.
 B.

μὴ] οὐ Ven. B.

τὸ ἐμὸν] ταύτην Stob. Trinc.

ὄνομάζοντας] ὄνομάζοντες Vat.
 H. Flor. ACTV.

ἄλλο] ἄλλα Vind. F.

ἄλλον] ἄλλον Lob. Vind. BD.
 Vat. M. In Mon. B. alterum λ
 int. vers. a m. s. scriptum.

ἄλλο]. ἄλλω Vat. H. ἄλλῳ Flor.
 ACTV.

τὸν μὲν] τὸ μὲν Ven. C. Vind.
 D. Ald. Bas. ab.

ἑαυτοῦ] αὐτοῦ Vind. F. Flor.
 A. Stob.

ἄν] ἄν Stob. cod. A. Trinc.

δύνηται] δύναται Stob. cod.
 A.

τὸν δὲ] τὸ δὲ Vind. D.

ἐτέρον] ἐταίρον Vat. M. In
 Vind. BD. αἱ super ἐ positum,
 sed in B. correctione deletum.

καὶ γυναικά] ὅτι γ. Stob. D
 Trinc.

ἐτέρον] sc. ὄνομάζοντας. In
 Mon. B. Flor. U. καὶ ἐταίρον,
 quod non reprehendere debebat
 Stallbaumius, qui hos accusativos
 ab ἔλκοντα pendere statueret.

ἐμποιοῦντας] sc. τῇ πόλει.

τὸν οἰκεῖον] οὐ τὸ οἰ. Stob.
 cod. AN. Trinc. τὸν οἰκίον Vind.
 E.

ἐπὶ τὸ αὐτὸν] ἐπιτοαντὸ Vind.
 BD. ἐπὶ τοαντὸ, gravi et leni
 deletis, Mon. B.

ὅμοιοπαθεῖς] ὁμοιοπαθεῖς Astius
 in sec. scripsit, in tert. scriben-
 dum coniecit, cui hic non esse
 locum Stallbaumius docuit. ὁμοιο-
 παθεῖς etiam in Stobaei ed.
 Gaisf. legitur sine nota.

εἶναι;] εἶναι. Ald. Steph. qui
 in superioribus praeter necessita-
 tem post ἄλλο, οὐσαν et ἰδίας
 interrogandi signum fecit.

Κομιδῆ] κομιδὴ Stob. κομηδὴ

φὶς τῶν ἄλλων κτήσασθαι, τὸν δὲ εἰς τὴν ἔαντοῦ ἐτέρων οὐδαν, καὶ γυναικά τε καὶ παιδας ἑτέρους, ὥδονάς D τε καὶ ἀλγηδόνας ἐμποιοῦντας ιδίων ὅντων ιδίας, ἀλλ' ἐνὶ δόγματι τοῦ οἰκείου πέρι ἐπὶ τὸ αὐτὸ τείνοντας πάντας εἰς τὸ δυνατὸν ὁμοπαθεῖς λύπης τε καὶ ὥδονῆς εἶναι; Κομιδῇ μὲν οὖν, ἔφη. Τί δέ; δίκαι τε καὶ ἐγκλήματα πρὸς ἄλλήλους οὐκ οἰχήσεται ἐξ αὐτῶν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, διὰ τὸ μηδὲν ἵδιον ἐκτῆσθαι πλὴν τὸ σῶμα, τὰ δ' ἄλλα κοινά; ὅτεν δὴ ὑπάρχει τούτοις

Vind. F. Κομιδῇ Ald. Bas. a.
Steph.

ἔφη] om. Ven. B.

Tι δέ;] τι δαί; Par. A. Stob.
Trinc. τι δὲ δή; Lob. Vind. BD.
Vat. M. τι δέ; αἱ Stob. cod. A.

δίκαι] δίκαι Vind. F. Ang. B.
Contra Aristoteles Polit. L. II.
c. 2. p. 37, 30. Goettl. ἐγκλήματα
δὲ καὶ δίκαι καὶ σας ἄλλα ταῖς
πόλεσιν ὑπάρχειν φησὶ κακά,
πάνθ' ὑπάρχει καὶ τούτοις.

ἔξ αὐτῶν] ἔξαντῶν Vind. F.
οἰχήσεται ἔξ αὐτῶν Ficinus per-
cessabunt interpretatus est.

ώς ἔπος εἰπεῖν] omnes (con-
troversiae accusationesque mutuae)
Fic. εἰπεῖν — ὑπάρχει om. Vind.
E.

μηδὲν] μηδὲν Vat. B. μηδένα
Ven. B. (Flor. C.) Stallbaumius
in sec. cum editionibus ante Bek-
kerum. μηδένα μηδὲν Bekkerus,
Astius in tert. et Stallbaumius in
pr. ed. quandoquidem nec pro-
prium quicquam, praeter corpus,
habebit, reliqua vero communia?
Fic. Equidem non video, quid
in codicum tantum non omnium
et Stobaei lectione reprehendi
possit, si αὐτοὺς ad ἐκτῆσθαι
ex proximo αὐτῶν repetatur, id
quod sequentia τὰ δ' ἄλλα κοι-
νὰ si minus flagitant, certe com-
mendant.

ἐκτῆσθαι] οὐκτῆσθαι Vind. D.
Par. K. sec. Bekk. Flor. T. Stob.
iudem fere, qui infra p. 469. D.
eodem modo a vulgata discrepant.
Sed L. VI. 505. B. unus tantum

Par. K. secund. Bekk. et Menon.
p. 97. E. nullus vulgatum ἐκτῆ-
σθαι non agnoscit. Neque Pro-
tag. pag. 340. D. aut Hipp. min.
p. 375. A. C. per codices dubi-
tare licet, quin ἐκτῆσθαι verum
sit. Etiam Phil. p. 58. D. recte
id a Bekkero ex Clark. Vat. A.
Ven. C. quibus Lob. accedit, re-
stitutum videtur. Sed Theaet.
p. 198. D. ubi de venatione du-
plice agitur, Platonem scripsisse
ἡ μὲν πρὸν ἐκτῆσθαι τοῦ οὐκτῆ-
σθαι ἔνεια mihi Lobeckius et
Schaeferus ad Phryn. pag. 762.
persuadere nondum potuerunt,
perlubentique accidit, quum in
Lob. utrobique οὐκτῆσθαι exara-
tum viderem. Idem liber prae-
stantissimus p. 199. A. ubi Bek-
kerus secundum Clark. Vat. A.
Ven. C. ὃ μέν τις ἐκτηται, μὴ
οὐκτῆσθαι ἀδύνατόν φαμεν εἶναι
edidit, vulgatum οὐκτηται tuetur.
Omnino rario apud Atticos forma
legitima est, quam secundum Eu-
stathii adnotationem ad Il. T. II.
p. 272, 30. Lips. (τὸ δὲ ἐκτῆσθαι
Αττικόν ἔστι καὶ αὐτὸ καὶ Ιω-
νικὸν δὲ ἀποβληθέντος τοῦ συμ-
φώνον τῆς αὐξήσεως) exspectari
poterat. Aeschili unum lócum ex
Prometh. 792. (ὅμμ' ἐκτημέναι)
Thomas Magister pro exemplo
posuit, cui alterum ex veteribus
praeter Platonem qui addiderit
non invenio.

τὰ δ'] τὰ δὲ Vind. F. Stob.

σθεν] πόθεν Vat. H. Flor. V.

δὴ] δὲ Stob. Trinc.

E ἀστασιάστοις εἶναι ὅσα γε διὰ χρημάτων ἢ παιδῶν καὶ
ξυγγενῶν κτῆσιν ἀνθρώποις στασιάζουσι; Πολλὴ ἀνάγκη,
ἔφη, ἀπηλλάχθαι. Καὶ μήν οὐδὲ βιαίων γε οὐδ' αἰνίας
δίκαια δικαιώσεις ἀν εἰεν ἐν αὐτοῖς. ήλιξι μὲν γὰρ ἡλικίας
ἀμύνεσθαι καλὸν καὶ δικαιόν που φέρομεν, ἀνάγκην
σωμάτων ἐπιμελεία τιθέντες. Ὁρθῶς, ἔφη. Καὶ γὰρ
465 τόδε ὁρθὸν ἔχει, ἦν δ' ἔγω, οὗτος ὁ νόμος· εἴ πού τίς

ἀστασιάστοις] ἀστασιάστον
Vind. F.

ὅσα] ὅσων Vind. E. ὅσω Vat.
H.

E γε] γε δὴ Vind. F. Ang. B.
καὶ] Ita Par. A. Vind. F. Ang.
B. Vat. H. Flor. ACRTUV. ἢ reliqui codices, Stobaeus, editi ante
Bekkerum et Ficinus.

ξυγγενῶν] συγγ. Vind. E.
κτῆσιν] ἀνθρώποισιν (ἀνοῖσιν)
idem. κτῆσει Vat. H.

ἀνθρώποις] ἀνθρώποις Stob.
cod. A.

στασιάζουσι;] Ita Lob. Vind.
B. et ante corr. Mon. B. στασιά-
ζουσι. reliqui cum Mon. B. cor-
recto editisque ante Bekkerum,
qui suo more ν addidit, quod h.
l. Mon. B. linea transversa super
τ significatum habet.

ἀνάγκη] post ἔφη Vind. F.
Ang. B. Flor. R. Stob.

ἀπηλλάχθαι. Καὶ] ἀπηλλάχθαι,
καὶ Ald. ἀπηλλάχθαι. καὶ Steph.
(non Lugd.) Καὶ — ἀτιμάσει 465.
A. om. Stob. cod. A.

οὐδὲ αἰνίας] om. Fic. οὐδὲ αἱ.
Stob. Timaeus lex. p. 15: αἰ-
νίας. ὑβρεως διη. quae glossa
etiam ad L. IIII. p. 425. D. et
nonnullos alias a Ruhnkenio indi-
catos locos pertinet. Aliter scho-
liastes ad h. l.

δίκαια] om. Vind. D.
δικαιώσ] δικαιός Vind. E.
εἰεν] om. Lob. Vind. B. Vat.
BM.

ἐν] ἐπ' Flor. T.
ἀμύνεσθαι] ἀμύνασθαι Ven.
B. Flor. C. In Vind. D. verbum
post καλὸν positum, sed inscri-

ptis litteris β α vulgatus ordo
restitutus est.

φέρομεν] θήσομεν Stob.

ἀνάγκην] Ita Par. A. Vind.
EF. et int. vers. D. Ang. B. Vat.
H. Flor. ACRTUV. Stob. ἀνάγκη
reliqui codices editionesque ante
Astii sec. (ἀνάγκη Lob. Mon. B.
Ald. Bas. ab.)

ἐπιμελεία] Ita, vel adscripto i
(ἐπιμελεῖαι) vel omissa (ἐπιμε-
λεῖα) Par. A. Ven. C. Vind. F.
et int. vers. D. Ang. B. Vat. H.
ἐπιμέλεια Vind. E. ἐπιμελεῖσις
Mon. B. Par. DK. Stob. Stall-
baumius in sec. ed. ἐπιμέλειαν
Vind. D. cum reliquis codicibus,
Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Lectio-
nem nostram eandemque Bekkeri
et in prima ed. Stallbaumii non
male interpretatus est Ficinus:
tutandis corporibus necessitatem
imponentes h. e. tutelam corpo-
rum necessariam esse declarantes.
Quod ipsi tutelae necessitas ponit
dicitur, quae re vera injungitur
hominibus, qui sese tueri iubentur,
insolentius fortassis, sed non
tale videtur, ut ἐπιμελεῖαι teneri
nequeat. Admota ad tutelam ne-
cessitate fit, ut non amplius ar-
bitrio singulorum relicta, sed
omnibus ἐν ἀνάγκη sit, quo modo
locutus est Lysias in Andoc.
p. 207. §. 8. Bekk. νῦν οὖν ὑ-
μῖν ἐν ἀνάγκη ἔστι βούλευσα-
σθαι περὶ αὐτοῦ.

τιθέντες] θέντες Lob. Vind.
BE. Vat. BM. Ven. B.

ἔφη] ἔ..ι, ante corr. ἔχει,
Vind. B. In Ald. comma, in
Steph. punctum minus appositum.

τῷ θυμοῖτο, ἐν τῷ τοιούτῳ πληρῶν τὸν θυμὸν ἡττον
ἐπὶ μείζους ἀν̄ λοι στάσεις. Πάνυ μὲν οὖν. Πρεσβυτέ-
ρῳ μὴν νεωτέρων πάντων ἄρχειν τε καὶ κολάζειν προσ-
τετάξεται. *Δῆλον.* Καὶ μὴν ὅτι γε νεώτερος πρεσβύτε-
ρον, ἀν̄ μὴ ἄρχοντες προστάτεσιν, οὔτε ἄλλο βιάζε-
σθαι ἐπιχειρήσει ποτὲ οὔτε τύπτειν, ὡς τὸ εἰκός. οἷμαι
δ' οὐδὲ ἄλλως ἀτιμάσει· ἵκανω γὰρ τῷ φύλακε κωλύοντε,

τόδε] καὶ τόδε Stob. τό γε
Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV.
τόδε γε Vind. D.

465 ἔχει] ἔφη Par. DK.

εἴ πον] εἴποι Vind. F. Ang. B.
εἴπερ Vind. E.

τῷ] τῷ Vind. F. et ante corr.
Mon. B. ω̄ Vind. E. τε Lob.
Vind. B. Vat. BM. γε Ven. B.
Ald. Bas. ab. Steph.

τῷ] γὰρ Stob. Trinc. Gesn.
γε margo Gesn. (τῷ cod. BN.
Gaisf.)

ἐπὶ μείζους] in maiores ma-
iorumve (transibit seditiones) Fic.

στάσεις] στάσις Stob. (Gaisf.
ex Platone στάσεις recepit.)

μὴν] μὲν Stob. (excepta Trinc.
quae μὴν habet) cum editis ante
Bekkerum, tacentibus Bip. quippe
Fic. Cf. B. et L. III. p. 410. B.

νεωτέρων] ὅτι νε. Ang. B.

πάντων] πάντη Stob. cod. B.
τάντη Trinc.

Καὶ μὴν] Constat praeterea
Fic. Repetebat igitur δῆλον in-
deque pendere ὅτι statuebat. Con-
tra Astius ὅτι in δ̄ mutandum
censem, idque Stallbaumius in sec.
unice sibi placere demonstrat,
quia non sine magna molestia δῆ-
λον animo repetatur. Scilicet
verba καὶ μὴν ὅτι γε ita inter
se copulata et cum ea contentione
dicta sunt, ut illi supplemento
locus non relinquatur. Minime
vero articulus, quo alter compa-
rativus caret, contra codices in-
trudendus, sed ω̄ς τὸ εἰκός per
anacoluthon pro εἰκός ἔστι acci-
piendum est. Similes locos ipse
Stallbaumius attulit ad Phileb.

20. D. ubi durior inconsequentia
est: τόδε γε μὴν, ω̄ς οἷμαι,
περὶ αὐτοῦ ἀναγναίότατον εἶναι
λέγειν.

πρεσβύτερον] πρὸς πρ. Vind.
E. Vat. H. Flor. ACV. πρεσβύ-
τερων Vind. F.

ἄρχοντες] οἱ ἄρχοντες Vind.
E. Mon. B. Flor. U. Bekkerus,
Astius in tert. ed. et Stallbau-
mius. At varii sunt in civitate
magistratus, neque semper eorun-
dem nedum omnium est, tale
quid mandare iunioribus.

ἄλλο] ἄλλω Vind. DE. ἄλλον
Stob. cod. N. Trinc. ἄλλως Mon.
B. Par. DK. Ang. B. Flor. RU.
Stob. cod. B. Gesn. Gaisf. edi-
tiones ante Bekkerum. om. Fic.

ἐπιχειρήσει] ἐπιχειρήσῃ Vind.
E. ἐπιχειρήσοι Lob. Vat. B.

ώς τὸ εἰκός] in unum coniun-
git Vind. B.

δ'] δὲ Lob. Vind. BDF. Stob.
οὐδὲ] οὐδὲ Flor. ACUV. Stob.
εὶ δὲ Par. D.

ἄλλως] ἄλλος Lob. Vind. BD.
(hic cum οὐ super οὐ) E. Vat.
B. (sup. ω̄) H. Ven. C. Par. DK.
secund. Bekk. Flor. ACUV. Ald.
Bas. ab.

ἵκανω] ἵκανὼ Vind. D. (sup.
ω̄) E. Ang. B. Vat. H. Flor.
ACTV. et margo R. ἵκανὼ τε
Par. K.

τῷ φύλακε] τῷ φύλακε Mon.
B. τῷ φύλακι Ang. B. Flor.
ACTV. τῷ φυλακικῷ Vind. E.

κωλύοντε] κωλύον τε Ald.
κωλύοντες Vind. F. κωλύονται
Vat. H. Flor. ACV. Stob. cod. A.
λύονται Vind. E. κωλύμαται Ang.
B. Flor. T. et margo R.

B δέος τε καὶ αἰδώς· αἰδὼς μὲν ὡς γονέων μὴ ἀπτεσθαι εἰργονούσα, δέος δὲ τὸ πάσχοντι τοὺς ἄλλους βοηθεῖν, τοὺς μὲν ὡς νίεῖς, τοὺς δὲ ὡς ἀδελφοὺς, τοὺς δὲ ὡς πατέρας. Ξυμβαίνει γὰρ οὕτως, ἔφη. Πανταχῇ δὴ ἐκ τῶν νόμων εἰργήνην πρὸς ἄλλήλους οἱ ἄνδρες ἀξονοῦσι; Πολλήν γε. Τούτων μὴν ἐν ἑαυτοῖς μὴ στασιαζόντων οὐδὲν δεινὸν, μή ποτε ἡ ἄλλη πόλις πρὸς τούτους ἥ

αἰδὼς μὲν] οὐλ αἰ. μ. Ang. B. Flor. R. (ad hunc enim nota in V. L. Stallbaumiī vitiōse expressa XX. pertinere videtur.) μὲν (omisso αἰδὼς) Vind. F. Stob. Gesn. (cod. BN.)

B εἰργονούσα] εἰργονούσα Stobaeus Tric.

δέος δὲ τὸ πάσχοντι τοὺς ἄλλους βοηθεῖν] Astius in sec. ed. μὴ post τὸ inserendum censet et τὸ βοηθεῖν seu τὸ μὴ βοηθεῖν absolute positum statuit ita, ut obiectum timoris contineat. Stallbaumius τὸ βοηθεῖν ab ipso nomine δέος sic regi putat, ut apud Demosthenem Θηβαίος α τεθνάναι τῷ φόβῳ et ἀποστόλους α τεθνᾶσι τῷ δέει. Denique Bernhardy synt. p. 355. τὸ — βοηθεῖν simplicem appositionem dicit, qualis sit L. VIII. p. 590. E. in verbis η τῶν παιδῶν ἀρχὴ, τὸ μὴ ἔχειν ἐλευθέρους εἶναι. Quid si τὸ ad δέος potius, quam ad βοηθεῖν referamus, ut sensus idem sit, ac si dictum esset δέος δὲ τὸ τῆς τῶν ἄλλων βοηθείας τῷ πάσχοντι. δέος ἔστι τοὺς ἄλλους βοηθεῖν quin recte dicatur, nemo ambigit: quidni etiam τὸ τοὺς ἄλλους βοηθεῖν δέος dicere liceat?

δὲ ὡς πατέρας] δ' ὡς πατ. Vind. F. Ang. B.

Ξυμβαίνει] συμβ. Vind. F. ἔφη] ἔχειν Vind. E. Ang. B. Flor. RT. ἔχει Flor. AC.

Πανταχῇ] πανταχοῦ Par. K. δὴ] ἀρε Ven. B. om. Lob. Vind. B. Vat BM.

ἀξονοῦσι] Ita Vind. E. Flor. ACV. ἀξονοῦσι Bekkerus secundum

Par. A. Ven. BC. Vat. H. scripsisse demonstrat. Apud Stobaeum est αὐξονοῦσι, sed in cod. A. ἀξονοῦσι. Editiones ante Bekkerum cum reliquis codicibus et Stob. marg. Gesn. ἀξονοῦσι habent. Ad interunctionem, quae in Vind. B. Stob. Trinc. Gesn. nulla est, sequentium caussa signum interrogandi a Bekkerio et Stallbaumio positum puncto reliquorum prae-tuli.

Πολλήν] πολύν Vind. E. μὴν] μὲν Vind. E. Vat. H. Stob. cod. B. μὴν, sup. ἐ, Vind. D. autem Fic. Quod servidiuscule hoc Socrates affirmat, indicio est, proximum illud, ex quo hoc concludit, non sine interrogatione ab eo pronuntiatum fuisse.

ἡ ἄλλη πόλις] οὐλ ἄλλη π. Vind. BD. Vat. M. civitas alia vel Fic. ut η pro η legisse videatur.

ἄλληλοις] ἄλλους Lob. Vat. BM. Vind. B. et, vulg. in margine addito, D.

διγοστατήσῃ] ζυγοστατήσει Vind. F.

Οὐ γὰρ οὖν] οὐγαροῦν Lob. Vind. BD. οὐ γαρ οὖν. Vind. F.

γε μὴν] γὰρ δὴ Stob. cod. A.

ἀπρόπειαν] ἀπρόπειαν, Mon. C B. Ald. Bas. ab.

οὐλ] om. Par. K.

ἄν] τὲ ἄν idem.

κολακείας] κολακίας Vind. E. Flor. R.

πένητες] Hoc Astius in sec. ed. ante κολακείας posuit, magis etiam probaturus, si post ἕσχονοι reiiciatur; in tertia suo loco reliquit, sed delendum iudicavit;

πρὸς ἀλλήλους διχοστατήσῃ. Οὐ γὰρ οὖν. Τά γε μὴν συμφότατα τῶν πακῶν δὶς ἀπρέπειαν ὄκνῳ καὶ λέγειν, οῶν ἀπηλλαγμένοι ἀν εἶν, πολακείας τε πλουσίων, πένητες, ἀπορίας τε καὶ ἀλγηδόνας ὅσας ἐν παιδοτροφίᾳ καὶ χοηματισμοῖς διὰ τροφὴν οἰκετῶν ἀναγκαίαν ἴσχουσι, τὰ μὲν δανειζόμενοι, τὰ δὲ ἔξαρνούμενοι, τὰ δὲ πάντως πορισάμενοι θέμενοι πάρα γυναικάς τε καὶ

cui assentiens Stallbaumius in utraque ed. uncinos circumdedidit. *Emivero electo nomine vel longius remoto aliquid ad perspicuitatem, post εἰεν vero posito etiam ad veritatem sententiae desideratur.* Nam quum mala ista pulsilla omnia ex paupertate redundant, ii, qui expertes eorum dicuntur, non tamquam pauperes expertes facti dici possunt. Quid quod omnino pauperes in his custodibus non magis, quam divites reperiuntur. Itaque πένητες non loco movendum, sed commate, quemadmodum Astius in pr. ed. fecit, a πλουσίων separandum et ita explicandum, ut ex verbis ὡν ἀπηλλαγμένοι ἀν εἶν supplementum structurae consimilis, sed sententiae diversae petatur, velut αἱς ἔνοχοι ἀν εἶν, quibus adulatio[n]ibus obnoxii forent pauperes. Similem breviloquentiam habent illa L. IIII. pag. 430. A: τὰ δύμματα ταῦτα δεινὰ ὄντα ἐκπλύξειν, ἢ τε ἡδονὴ, παντὸς χαλεστροίου δεινοτέρᾳ οὖσα τοῦτο δρᾶν καὶ πονίας, λύπη τε καὶ φόβος καὶ ἐπιθυμία, παντὸς ἄλλον δύμματος. Supplementum autem, quale nostro loco, adhibendum est Euthyphr. p. 14. E: φράσον δὴ μοι, τις ἡ ὡφέλεια τοῖς θεοῖς τυγχάνει οὖσα ἀπὸ τῶν δώρων, οῶν παρ' ἡμῶν λαμβάνοντος; ἢ μὲν γὰρ διδόσαι, παντὶ δῆλον. quorum in extremis post διδόσαι necesse est ἥτις τούτων ἡ ὡφέλεια τοῖς ἀνθρώποις τυγχάνει οὖσα secundum praecedentia subaudias. — Ficinus πολακείας τε πλουσίων, πένητες ita interpretatus

est: *adulationes certe aberunt, quibus adversus divites inopes uti solent.*

ἀπογλας τε] *sollicitudines item indigentium* Fic. τε om. Stob. Trinc.

ἀλγηδόνας] *ἀλγηδόνος* Mon. B. quod ad expediendam nominativi πένητες difficultatem excogitatum certe lenius Astiano remedium, ceterum eandem ob causam et ob pluralem, qui sequitur, improbandum est.

παιδοτροφίᾳ] Ita Par. A. Vind. DEF. Mon. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. Stob. cod. A. Trinc. Bekkerus et Stallbaumius in pr. ed. παιδοτροφίᾳ cum αἰς super α Ven. B. παιδοτρόφῳ Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. παιδοτροφίᾳ Stob. Ald. Bas. ab. Steph. Astius et Stallbaumius in sec. ed. hac addita declaratione, numerum pluralem sibi unice placere. (in) filiis nutriendis Fic.

χοηματισμοῖς] *σχηματισμοῖς* Par. K. sec. Bekk.

διὰ τροφὴν] *διατροφὴν* Lob. Vind. BDEF.

οἰκετῶν] *ἰκετῶν* Par. K. sec. Bekk. *domesticorum servorumque* Fic.

δανειζόμενοι] *δανιζόμενοι* Vind. E. *δανειζομένον* Vind. F.

τὰ δὲ] τὰ δ' Vind. EF. Ang. B. Vat. H. Stob.

ἔξαρνούμενοι] *ἔξαρνούμενοι* Stob. cod. A. Trinc. *ἔξωνούμενοι* Vind. E. *ἔξαρνονμένον* Vind. F.

πάντως] *πάντων* Vind. E.

θέμενοι] om. Stob. cod. A. Seponunt *praeterea* Fic.

οἰκέτας, ταμιεύειν παραδόντες, ὅσα τε, ὡς φίλε, περὶ αὐτὰ καὶ οἷα πάσχουσι, δῆλά τε δὴ καὶ ἀγεννῆ καὶ οὐκ D ἄξια λέγειν. Δῆλα γὰρ, ἔφη, καὶ τυφλῷ. Πάντων τε δὴ τούτων ἀπαλλάξονται ξήσουσί τε τοῦ μακαριστοῦ βίου, ὃν οἱ Ὀλυμπιονῖκαι ζῶσι, μακαριώτερον. Πῆ; Διὰ σμικρόν που μέρος εὑδαιμονίζονται ἐκεῖνοι ὡς τούτοις ὑπάρχει. ἢ τε γὰρ τῶνδε νίκη καλλίων, ἢ τὸ ἐκ τοῦ δημοσίου τροφὴ τελεωτέρα. νίκην τε γὰρ νικῶσι ξυμπά-463

οἰκέτας] γυναικας Vind. D.
ταμιεύειν παραδόντες] παρα-
διδόντες ταμιεύειν Stob. cod. A.
οἷα] ὅσα Lob. Vind. B. Vat.
BM. Ven. C. Par. DK. Bas. b.
δῆλά τε δὴ] Ita Par. A. Vind.
D. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV.
Bekkerus. δῆλά τε Vind. EF.
Ven. C. Par. D. Stob. δειλά,
sup. δῆλα, τε Par. K. δειλά τε
reliqui codices, margo Vind. D.
Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr. et
sec. δειλά τε δὴ Astius in tert.
ed. et Stallbaumius. et ipsa per
se cuique patent Fic. Duabus de
caussis Socrates ista enumeranda
negat, quod et per se pateant,
et quod parum decora sint. Qua-
rum priori Glauco ita assentitur,
ut nomen a Socrate pronuntiatum
repetere videatur: δῆλα γέρ.
Sed aliquanto maius firmamentum
nostrae lectionis est particula δὴ
prudenter omissa ab iis librariis,
quibus poëticum quidem, sed ne-
scio an ob id ipsum ab hoc loco
alienum et haud dubie sequenti
ἀγεννῆ officiens nomen δειλά pla-
ceret. Cuius particulae ea est
vis, ut nominis adhibiti rationem
et significationem apertam omni-
bus et extra dubium positam ar-
guat; quod utrumque in δῆλα
convenire, ab altero abhorrere
videtur.

ἀγεννῆ] ἀγενῆ Vind. D. Flor.
RT.

D ἔφη] δὴ Vind. F. Ang. B.

Πάντων τε] πάντων τὲ, nulla
post τυφλῷ interpunctione facta,
Ald. πάντοτε Stob. cod. B. Trinc.
πάντων δὲ Vind. D. (sup. τε) E.
Flor. ACTV. Stob. cod. A. Bas.

ab. πάντων δὴ Vat. H. πάντων
Stob. Gesn.

δὴ] δὲ Stob. cod. B.

ξήσουσί] ξήτονσί Stob. cod. A.
ξητήσουσί Par. K. Anttiatt. Bekk.
an. p. 97, 28: ξήσει. Πλάτων
Πολιτείας ξητῷ, οὐ ξήσεται.
Phryn. Pors. ξήσει. άντὶ τοῦ
ξήσεται. quod hoc spectare vide-
tur.

τε] δὴ Vat. H.

μακαριστοῦ] μακαριστον Vind.
F. beatissima Fic.

ὃν οἱ] οἶον Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

Ὀλυμπιονῖκαι] ὀλυμπιονίκαι
Lob. Vind. BEF. Mon. B. Stob.
Trinc. Gesn. ὀλυμπιονῖκαι editi.

Διὰ σμικρόν] διὰ σμικρότε-
ρον Ang. B. Flor. ART. δι' ἀς
μικρότερον Vind. F.

εὑδαιμονίζονται] εὑδαιμονί-
ζοντες Stob. Trinc.

ὑπάρχει] ὑπάρχοι Ald. Bas. ab.

ἢ τ'] ἢ τε Vind. F.

τοῦ] om. Vind. D.

τροφὴ] τροφὴ Stob. cod. A.

τελεωτέρα] Hic deficit Stob.
Trinc.

γάρ] om. Lob. Vind. BD. Mon.
B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK.

ξυμπάσης] ξυναπάσης Stob.
cod. A. ξυμπάσης Mon. B. a. m.
pr.

σωτηρίαν — πόλεως E.] bis
deinceps scripta sunt in Vind. F.
Pro σωτηρίαν Stob. cod. A. σώ-
τειρίαν habet.

ὅσων] ὕσον Flor. R. Vind. D.
et in prima scriptione F.

βίος] βί, sup. α, Stob. cod.
A.

ἀναδοῦνται] ἀναιδοῦνται Stob.

σης τῆς πόλεως σωτηρίαν, τροφῇ τε καὶ τοῖς ἄλλοις πᾶσιν, ὅσων βίος δεῖται, αὐτοὶ τε καὶ παῖδες ἀναδοῦνται καὶ γέρα δέχονται παρὰ τῆς αὐτῶν πόλεως ζῶντές εἰ τε καὶ τελευτήσαντες ταφῆς ἀξίας μετέχουσι. Καὶ μάλα, ἔφη, οὐαλά. Μέμνησαι οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, ὅτι ἐν τοῖς πρόσθεν οὐκ οἶδα ὅτου λόγος ἡμῖν ἐπέπληξεν, ὅτι τοὺς φύλακας οὐκ εὑδαίμονας ποιοῦμεν, οἷς ἔξον πάντα ἔχειν 466 τὰ τῶν πολιτῶν οὐδὲν ἔχοιεν; ἡμεῖς δέ που εἴπομεν,

cod. A. Timaeus lex. p. 30: ἀναδῆσαι τανίας ἐπιβάλειν.

E αὐτῶν] Ita Vind. B. et correctus in spiritu Mon. B. αὐτῶν Lob. Vind. DEF. Stob. Gesn. Ald. Bas. ab. Steph. αὐτῆς Par. K. sec. Bip. Ast. pr. (ab) ipsa (rep.) Fic.

πόλεως] πόλεων Stob. Gesn. ζῶντές τε] Ita Par. AD. Lob. Vind. BDEF. Mon. B. Ven. C. Ang. B. Vat. HM. Flor. ACRTUV. Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius in pr. ed. Reliqui codices (Vat. B. Ven. B. Par. K. de quibus certe Bipontini et Bekkerus tacent) editique τε cum Stobaeo omitunt, atque Stallbaumium in sec. ed. timor incessit, ne vivis sepultura paretur. Sed alterum participium cum suo aditamento haud secus, quam prius ad γέρα δέχονται referendum iisque verbis summam sententiae comprehensam esse vel Glauconis responsum docet. Itaque Socrates et vivos illos et mortuos praemissis a civibus suis affici demonstratus *afficiuntur*, inquit, *et vivi praemissi et mortui condignae sepulturae participes sunt*.

ταφῆς] ταφῆς δ' Vind. D.

ἀξίας] ἀξία cum litura in fine Vind. F. ἀξία Lob. Vind. B. et margo D. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. sec. Bekk. ἀξίως Ang. B. μετέχουσι.] μετέχουσιν. Bekkerus.

οὐαλά] πολλά Vind. F. οὐαλῶς Stob. cod. A.

πρόσθεν] ἐμπρόσθεν Vind. E. Respicit initium L. IIII.

466 ποιοῦμεν] Ita Par. A. Vind.

D. (sup. οἵ) E. Vat. H. Flor. ACTV. ποιοῦμεν reliqui codices et editiones omnes; quod quum per se magis legitimum, tum sequenti ἔχοιεν magis accommodatum est. Sed indicativum satis constat in hoc loquendi genere frequentari ita, ut optativum vel subsequentem habeat vel antecedentem, quo quasi temperamento scriptores videntur simul naturali sermonis vigori repraesentandarum rerum cupido morem gerere et obliquae orationis speciem servare voluisse. Sic L. III. p. 420. C: εἰ ήμας ἀνδριάντας γράφοντας προσελθών τις ἔφεγε λέγων, ὅτι οὐ τοῖς οὐαλίστοις τοῦ ζώον τὰ οὐαλίστα φάρμακα προστίθεμεν. οἱ γὰρ ὁφθαλμοὶ, οὐαλίστον δὲ, οὐκ ὀστεοίῳ ἐναλήμμένοι εἰν; οὐλὰ μέλανι. Contra L. I. p. 337. A: καὶ ταῦτ' ἐγὼ ἥδη τε καὶ τούτοις προϋλεγον, ὅτι σὺ ἀπονίνασθαι μὲν οὐκ ἐθελήσοις, εἰρωνεύσοις δὲ καὶ πάντα μᾶλλον ποιήσοις, η ἀπονοίνοι, εἰ τις τι σε ἔφωτά. pro quo aliqui ἔροιτο scripserunt. Multa utriusque modi exempla significavit Matthiae gramm. p. 1031. nonnulla Bernhardy synt. pag. 389. unum nostro simile Stallbaumius in sec. ed. Civ. L. VI. p. 490. D. Iam quum ferri posse indicativum nulla dubitatio esset, etiam praeferriri debere visus est primum propter codices, quorum qui optativum exhibit, non solum omnino inferiorum ordinum, sed etiam in sequentibus circa eandem rem dissidentes eoque magis suspectae fidei sunt, qui indicativum offe-

ὅτι τοῦτο μὲν, εἴ που παραπίπτοι, εἰσαῦθις σκεψόμεθα, νῦν δὲ τοὺς μὲν φύλακας φύλακας ποιοῦμεν, τὴν δὲ πόλιν ὡς οἶοι τ' εἶμεν εὑδαιμονεστάτην, ἀλλ' οὐκ εἰς ἐν ἔθνος ἀποβλέποντες ἐν αὐτῇ τοῦτο εὑδαιμον πλάττομεν; Μέμνημαι, ἔφη. Τέ οὖν; νῦν ἡμῖν δὲ τῶν ἐπικούρων βίος, εἴπερ τοῦ γε τῶν Ὀλυμπιονικῶν πολύ τε **B** καλλίων καὶ ἀμείνων φαίνεται, μή πη κατὰ τὸν τῶν σκυτοτόμων φαίνεται βίον ἢ τινων ἄλλων δημιουργῶν ἢ τὸν τῶν γεωργῶν; Οὐ μοι δοκεῖ, ἔφη. Ἀλλὰ μέντοι, δὲ γε καὶ ἐκεῖ ἔλεγον, δίκαιον καὶ ἐνταῦθα εἰπεῖν, ὅτι

runt, neque alibi sic interpolati esse solent et sequentia eo modo scripta hábent, ut corrigentem grammatici manum experti non videantur; deinde, quod horum librorum ductu talis optativi et indicativi per vices successio prodit, quae liberiorem sermonem deceat neque tamen nullam regulam sequatur. Scilicet eorum verborum, quae interposita et quasi tertio gradu a praesentia remota sunt, omnium modus optativus est, (ἔχομεν, παραπίπτοι, εἶμεν) reliquorum, quae ab ὅτι pendent, indicativus, praeter extremum, (πλάττομεν) quod forma legitima indutum excusatione non eget.

οἷς] εἰ οἷς Vind. E.

ἔχοιεν;] Signum interrogandi Bekkerus posuit. Item post πλάττομεν.

δέ που] Ita Par. ADK. sec. Bekk. Lob. Vind. BDF. Mon. B. Vat. BHM. Ven. C. Flor. UV. δὲ Vind. E. (Ven. B. Ang. B. Flor. ACRT.) Ald. Bas. ab. Steph. Astius.

εἴ που] εἴπον Lob.

εἰσαῦθις.] εἰς αὐθῖς Mon. B. σκεψόμεθα] ἐπισκεψόμεθα Vind. BD. Vat. M. σκεψώμεθα Vat. H. σκεψόμεθα Vind. F. Ang. B. Flor. R. quod ex conjectura ab Astio in sec. ed. positum et commendatum a Bekkerio in comm. Stallbaumius in pr. ed. recepit.

ποιοῦμεν] Ita Par. A. Vind. E.

et int. vers. D. Vat. H. Flor. ACTV. ποιῶμεν Ven. B. Bas. b. „Ex vet. ποιῶμεν assertur: sed legendum itidem fuerit πλάττωμεν pro πλάττομεν“ Stephan. annot. p. 21. ποιῶμεν Vind. D. cum reliquis codicibus et editionibus.

εἶμεν] Ita Par. A. Ven. C. Vat. H. Flor. ACTV. et margo Vind. D. ἡμεν Vind. E. εἰ μεν Vind. F. Par. D. εἶημεν Mon. B. Flor. U. ἔσμεν Vind. D. cum reliquis codicibus editisque ante Bekkerum.

εὑδαιμονεστάτην,] εὑδαιμονεστάτην. Ald. Steph. Pendet a πλάττομεν.

εὑδαιμον] τὸ εὑδαιμον Par. ADK. Flor. V. editiones ante Bekkerum; quae lectio teneri poterat, si nonnulli eorum codicum, qui optimum sequi solent, assensum praebuissent mendique suspicionem e proximo vocabulo suborti removissent. Id genus hominum, quod prae ceteris beatum est, praestantiae caussa τὸ εὑδαιμον dici poterat. Conf. Leg. L. V. p. 730. D: δέ δὲ καὶ ἔνγυη λάζων εἰς δύναμιν τοῖς ἄρχοντιν δέ μέγας ἀνήρ ἐν πόλει καὶ τέλειος οὗτος ἀναγορευέσθω νικηφόρος ἀρετῇ. Aeschyl. Sept. 283: ἀντηρέτας ἔχθροῖσι τὸν μέγαν τρόπον. Etiam Ficinus articulum invenisse videtur, qui verba ἀλλ' οὐκ — πλάττομεν ita interpretatus est: neque ad

εἰ οὕτως ὁ φύλαξ ἐπιχειρήσει εὐδαιμων γίγνεσθαι, ὥστε μηδὲ φύλαξ εἶναι, μηδ' ἀρκέσει αὐτῷ βίος οὗτος μέτριος καὶ βέβαιος καὶ, ὡς ἡμεῖς φαμέν, ἄριστος, ἀλλ' ἀνόητος τε καὶ μειρακιώδης δόξα ἐμπεσοῦσα εὐδαιμονίας πέρι δομήσει αὐτὸν διὰ δύναμιν ἐπὶ τὸ ἅπαντα τὰ C ἐν τῇ πόλει οἰκειοῦσθαι, γνώσεται τὸν Ἡσίοδον ὅτι τῷ ὄντι ἦν σοφὸς λέγων πλέον εἶναι πως ἡμισυ παντός. Ἐμοὶ μὲν, ἔφη, ἔνυμβούλῳ χρώμενος μενεῖ ἐπὶ τούτῳ τῷ βίῳ. Συγχωρεῖς ἀρα, ἦν δ' ἐγὼ, τὴν τῶν γυναικῶν ποιωνίαν τοῖς ἀνδράσιν, ἦν διεληλύθαμεν, παι-

uimam quandam eius partem, sed ad totam respicientes beatitudinem illam exquirere.

Mέμνημαι] μέμνησαι Vat. H.

Tí οὖν;] om. Fic. In editionibus ante Bekkerum *Tí οὖν νῦν* etc. sine distinctione scriptum, deinde post *βίος* in Ald. punctum, in Bas. ab. signum interrogationis positum, quod Stephanus et in sec. Astius ante *μή πη* fecerunt.

νῦν] post *ἡμῖν* Vind. DE. Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV.

οὐ] ὦ Bas. b.

εἴπερ] Ita Par. A. Vind. EF. et int. vers. D. Ang. B. Vat. H. Flor. RTV. quando Fic. *ὅπερ* Ven. C. *ώσπερ* Par. K. Flor. U. Bas. ab. *ὅσπερ* Vind. D. et reliqui codices, Ald. Steph. et recentiores. Sed in Lob. *περ* int. vers. est.

τοῦ] τὸν Flor. U. *τοῦτο* Vind. F. *οὐτός* Vind. E. om. Par. K.

γε] post *τῶν* Par. K.

Οἰνυπιονικῶν] οἰνυπιονίκων Vind. DEF. Flor. ACRTV. οἰνυπιονικῶν editi.

τε] γε Vind. F. Ang. B. Flor. R. *τε* καὶ Vind. E. Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV. *γε* καὶ Stallbaumius.

μή — φαίνεται B.] om. Vind. F.

πη] τοι Ang. B. Flor. R. (huius enim signum pro nota Flor. T. in Stallbaumii V. L. reponendum videtur.) *ποι* Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV. Et Vind. D. *οι* super *η* habet.

τὸν] om. Vind. D.

ἢ τὸν] ἢ Par. K. ἢ τὸ Vind. B.

ἔλεγον] ἔλεγομεν Vind. F. Ang.

B. Flor. AR.

καὶ ἔνταῦθα] *κάνταῦθα* Lob.

Vind. B. Vat. BM. Bekkerus et in tert. Astius. Confer Vol. I.

p. LVII. sq.

εἰ] om. Vind. D. et a m. pr. Ven. B.

μηδὲ] μὴ Flor. T. non Fic.

μηδ'] μὴ δὲ Bas. ab.

ἀρκέσει] ἀρκέσῃ Ven. B. Vat. H. Flor. ACV.

φαμέν] Ita Par. A. Vind. DEF.

Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. asserimus Fic. *ἔφαμεν* reliqui et editiones ante Bekkerum.

ἄλλ'] ἄλλὰ Vind. F.

καὶ μειρακιώδης] post δόξα Flor. T.

πέρι δομήσει] περὶ. δομήσει

Vind. B. περὶ δομήσῃ Vind. D.

περιορίζει Lob. Vat. M. ut etiam

Ficinus leguisse videtur: sed insana et puerilis exorta felicitatis opinio rapiat eum.

αὐτὸν] αὐτὴν Vind. DE. Flor. AC.

οἰκειοῦσθαι] οἰκοιοῦσθαι Lob. C

τῷ ὄντι] τωόντι Vind. DE.

om. Vat. H. — Locus Hesiodi est "Eog. 40.

ἔνυμβούλῳ] συμβ. Mon. B. Par. DK. Flor. RU. Ald. Bas. ab. Steph.

μενεῖ] μένει Vind. F. μένει Ang. B.

δείας τε πέρι καὶ παιδων καὶ φυλακῆς τῶν ἄλλων πολιτῶν, κατά τε πόλιν μενούσας εἰς πόλεμόν τε ιούσας καὶ ξυμφυλάττειν δεῖν καὶ ξυνθηρεύειν ὥσπερ κύνας
D καὶ πάντα πάντη κατὰ τὸ δυνατὸν ποιωνεῖν, καὶ ταῦτα προττούσας τά τε βέλτιστα πράξειν καὶ οὐ παρὰ φύσιν τὴν τοῦ θήλεος πρὸς τὸ ἄρδεν, ἢ πεφύκατον πρὸς ἄλλήλων ποιωνεῖν; Συγχωρῶ, ἔφη. Οὐκοῦν, ἦν δ' ἐγώ, ἐκεῖνο λοιπὸν διελέσθαι, εἰ ἄρα καὶ ἐν ἀνθρώποις δυνατὸν, ὥσπερ ἐν ἄλλοις ζώοις, ταύτην τὴν ποιωνίαν ἐγγενέσθαι, καὶ ὅπη δυνατόν; Ἐψῆς, ἔφη, εἰπὼν ἢ ἐμελλον ὑπολήψεσθαι. Περὶ μὲν γὰρ τῶν ἐν τῷ

καὶ παιδῶν]. Astius in tert. καὶ delendum censet probante in sec. Stallbaumio et Ficinum quoque aliud quid hic legisse suspicente. Nodum in scirpo.

πολιτῶν,] πολιτῶν; Stephanus, Bekkerus et Stallbaumius. Sed quae sequuntur epexegesi inserviunt.

δεῖν] δεῖ, sup. ἡ, Lob. Vat. M. δὴ Vind. BF. Ang. B. Ficinus haec inde a κατά τε πόλιν liberius reddidit: *ut una cum viris in pace gubernent, in bello militent, custodiant una.*

κύνας] κύνα Par. K.

D πάντη] πάντη Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius, ut solent. Cf. Vol. I. p. LXI.

ποιωνεῖν,] ποιωνεῖν; Stephanus et recentiores.

καὶ ταῦτα — ποιωνεῖν;] om. Lob. Vind. B. Vat. BM.

τὴν τοῦ θήλεος] τοῦ θηλέως Par. K.

ἡ] ἡ Vind. F. ἡ Vind. D.
 ἄλληλω] ἄλληλων Ven. B.

Συγχωρῶ] ξυνχωρῶ Flor. T.
 ὥσπερ] ὥσπερ καὶ Lob. Vind. BD. Mon. B. Vat. BM. Ven. B.

Par. DK. Flor. U. et Stallbaum. inductus ab Heindorfio ad Phaedon. p. 64. C. hunc constantem prope Graecorum usum affirman te. Non rarum est alterum καὶ ad nostrum sensum sine necessitate additum, sed Plato saepius

etiam omittere solet. En tria ex uno Phaedone exempla: p. 87. B: εἰνόνος γάρ τινος, ως ξοικε, πάγω ὥσπερ Σιμοίας δέομαι. pag. 88. E: πότερον πάκενος, ὥσπερ νῦμας φῆς, ἐνδηλός τι ἐγένετο ἀκθόμενος, ἢ οὐ. p. 100. C: σούπει δὴ, ἔφη, τὰ ἔξης ἐπείνοις, ἐάν τοι ξυνδοκῇ ὥσπερ ἐμοί.

ἥ] ἡ Vind. F. εἰ Vind. E. Vat. H. Flor. ACT. ὁ Ven. B. Bas. b. Steph. Ast. (*anticipasti,*) *quod* (ego interrogaturus eram.) Fic. Ad εἰπὼν supplere licet τὰ ταύτη, ut Glauco ab eadem parte sermonem se excipere atque in eandem dirigere voluisse dicat, quam Socrates praeoccupaverit. Cf. L. I. p. 338. D: ταύτη ὑπολαμβάνεις, ἡ δὲ κακουργήσαις μαλιστα τὸν λόγον.

γὰρ] om. Fic.

τῶν] om. Vat. H. Est neutrum.

τῷ] om. Par. K.

ἔφη] ἔφη Lob. Vind. B. Vat. E M.

πολεμήσονται.] πολεμήσονται Bekkerus.

"Οτι ποιηστεύσονται] militabunt profecto communiter, tam mares quam feminae Fic. — ποτνή — Vind. F. — στρατεύονται Ven. B. — στρατεύσονται Vind. E. Flor. C.

πρός γε] om. Fic.

πολέμω, οἷμαι, ἔφην, δῆλον ὃν τρόπον πολεμήσουσι. Εἶτας; ηδ' ὅσ. "Οτι κοινῇ στρατεύσονται καὶ πρός γε ἄξονσι τῶν παιδῶν εἰς τὸν πόλεμον ὅσοι ἀδροὶ, ἵν' ὥσπερ οἱ τῶν ἄλλων δημιουργῶν θεῶνται ταῦτα, ἢ τελεωθέντας δεήσει δημιουργεῖν· πρὸς δὲ τῇ θέᾳ διακονεῖν καὶ ὑπηρετεῖν πάντα τὰ περὶ τὸν πόλεμον καὶ θε- 467 ραπεύειν πατέρας τε καὶ μητέρας. ηδ' οὐκ ἡσθῆσαι τὰ περὶ τὰς τέχνας, οἷον τὸν τῶν κεραμέων παιδας, ὡς πολὺν χρόνον διακονοῦντες θεωροῦσι πρὸν ἀπτεσθαι τοῦ κεραμεύειν; Καὶ μάλα. Ἡ οὖν ἐκείνοις ἐπιμελέστερον παιδευτέον, ηδ' τοῖς φύλαξι τὸν αὐτῶν ἐμπειρίᾳ τε

εἰς] ἐκ, e corr. ἐσ, Mon. B.

ἀδροὶ] ἀδροὶ Vind. BDE. ἀνδρεῖοι Mon. B. Flor. U.

ἵν] ἵνα Flor. U.

οἱ] om. Vind. DF.

δημιουργῶν] δημιουργοὶ Lob.
Vind. BD. Vat. BM. Ven. B.
Bas. b.

ταῦτα] patrum suorum opera
Fic.

δημιουργεῖν.] Astius ex prae-
gresso ἵνα coniunctionem ὥστε
repeti iubens, a qua sequentes
infinitivi pendeant, pro colo com-
ma posuit; quae ratio neque ad
mutandam interpunctionem valet,
qua tamen cavendum erat, ne
διακονεῖν et ὑπηρετεῖν ad δεή-
σαι referrentur, neque vero omni-
no probabilis est, quum consilium
potius, quam effectum hoc loco
significandum esset. Contra Stall-
baumius infinitivos per genus quod-
dam attractionis e proximo δη-
μιουργεῖν originemducere sta-
tuens nihilo minus colon reliquit,
pro quo comma facere debebat,
ne proximum illud exiguum aut
nullam ad sequentia vim habuisse
videretur. Ego infinitivum δη-
μιουργεῖν hoc tantum effecisse
arbitror, ut, quum ad priorem
consilii partem indicandam ἵνα
cum coniunctivo adhibitum esset,
ad posteriorem infinitivus non
tamquam alienus ab ea significa-

tione quasi per vim arcesseretur,
sed utpote eadem praeditus sua
sponte sése offerret. Scilicet
ἄξονσι τὸν παιδας διακονεῖν,
etiamsi nullus intercessisset infiniti-
tus, tamen idem significaret,
quod ἄξονσι, ἵνα διακονῶσι,
qua de re cf. Matthiae gramm.
p. 1040. c. Itaque de duabus lo-
quendi formulis rem efficiendam
pariter designantibus altera coniunctionem
īnā cum coniunctivo
habens ut magis perspicua in
priori parte posita, altera solo
infinitivo utens in posteriori re-
cepta est, quum interiectum δη-
μιουργεῖν mutandi sermonis oc-
casionem praebuisset. Nullo au-
tem interiore et syntacticō nexu
inter δημιουργεῖν et διακονεῖν
obtinente colon aptius esse com-
mate appareat.

πρὸς δὲ] καὶ πρὸς Lob. Vind.
BD. Vat. M. et a m. s. B.

ηδ'] ηδ' Flor. V. et corr. Mon. B. 467
(a m. pr. ηδ)

ἡσθῆσαι] ἡσθῆσαι Vind. F.
τὰ] τὸν Par. K. sec. Bip.

τὰς τέχνας] τῆς τέχνης Lob.
Vind. BD. Vat. M.

οἶον] οἶ Vind. E.

χρόνον] χρόνων Bas. a.

θεωροῦσι] fingentes patres spe-
ctant Fic.

Ἡ] ηδ' Lob. Vind. BDE.

αὐτῶν] αὐτὸν Lob. Vind. BDF.

καὶ θέα τῶν προσηκόντων; Καταγέλαστον μέντ' ἄν,
ἔφη, εἶη. Ἀλλὰ μὴν καὶ μαχεῖται γε πᾶν ζῶον διαφε-
B ρόντως παρόντων ὃν ἀν τέκη. "Εστιν οὕτω. κίνδυνος
δὲ, ὡς Σώκρατες, οὐ σμικρὸς σφαλεῖσιν, οἷα δὴ ἐν πο-
λέμῳ φιλεῖ, πρὸς ἑαυτοῖς παιδας ἀπολέσαντας ποιῆσαι
καὶ τὴν ἄλλην πόλιν ἀδύνατον ἀναλαβεῖν. Ἀληθῆ, ἵν
δ' ἔγω, λέγεις. ἀλλὰ σὺ πρῶτον μὲν ἡγῆ παρασκευα-
στέον τὸ μή ποτε κινδυνεῦσαι; Οὐδαμῶς. Τί δ'; εἰ που
κινδυνευτέον, οὐκ ἐν ᾧ βελτίους ἔσονται πατορθοῦντες;
C Δῆλον δή. Ἀλλὰ σμικρὸν οἵει διαφέρειν καὶ οὐκ ἄξιον
κινδύνου θεωρεῖν ἢ μὴ τὰ περὶ τὸν πόλεμον παιδας

[Καταγέλαστον] παταγέλαστός
Vat. B. Ven. C. Par. K. secund.

Bip.

μέντ' ἄν] μὲν τὸν Mon. B.

μέντ' τὸν editi ante Ast. sec.

Cf. Vol. I. p. 177, a.
καὶ] om. Bas. b.

μαχεῖται] μάχεται Vind. F.

Ang. B. Flor. R. pugnat Fic.

ζῶον] ζῶον Ald. Bas. ab. ut
interdum. Cf. Vol. I. p. 60, b.

B ὡν] ὡν Vind. F.

οὕτω.] οὕτως. Bekkerus.

κινδυνος] ἕδυνος Vind. F.

Kīndynos Steph.

σμικρὸς] μικρὸς Lob. Vind.

BDE. Flor. ACTV. Par. K. sec.

Bip. nam Bekkerus de eo non
magis, quam de Vindobonensi aut
alio suorum ullo significationem
dedit. Itaque vereor, ut vulgata
lectio satis tuta sit. Cf. Vol. I.
p. 287.

σφαλεῖσιν] σφαλλεῖσιν Vind. E.

σφαλοῦσιν] cūm εἰ super οὗ Vind.

D. σφαλλοῦσιν Lob. Vind. B.

Vat. M.

δὴ] om. Lob. Vind. B. Vat.

BM. παιδας] καὶ τὸν παιδας Ang.

B. Flor. RT.

πρῶτον] forsani imprimis Fic.

μὲν] om. Vind. E. μὲ Mon. B.

a m. pr.

ἡγῆ] ἡγεῖ Mon. B. Astius, Bek-

kerus et Stallbaumius.

μὴ ποτε] μήποτε Ald. (Conf.

p. 473. D.) μηδὲ ποτε Bas. b.

μηδέποτε Ven. B.

κινδυνεῦσαι;] . κινδυνεῦσαι.
editi ante Astium.

Tt δ'; εἰ πον] τί δὴ. πον

Ven. B. τί δήπον Vind. E. Vat.

H. Flor. ACV. τί δὴ εἰ πον Flor.

T. τί δ' ἢ πον, subscripto a m.

s. ει sub ἢ; Mon. B. Tl δ' εἰ

πον éditiones ante Bekkerum.

βελτίους] βελτίως Ald. Bas.

ab.

δὴ. Ἀλλὰ] δὴ, ἀλλὰ Ald.

οἵει] εἶη Vind. D.

καὶ] om. Vind. E. Ven. C.

Par. DK. Vat. H. Flor. AC.

ἄξιον] ἄξιος Flor. AC.

κινδύνου] κινδύνον Par. K.

sec. Bip.

παιδας] τὸν παιδας Lob.

Vind. BD. Vat. BM. Ven. B.

Flor. RU. Ald. Bas. ab. Steph.

Ast. h. e. eos pueros, qui — vel

nostros pueros; quorum neutrum

ineptum. Sed remoto articulo

Socrates plurimum referre dicit,

ut qui adulti bellicosi futuri sint,

iam pueri res bellicas spectent;

id quod non minus aptum videtur.

Scholiastes utrum articulum lege-

rit, an non legerit, ex scholio,

quale Bekkerus et Ruhnkenius

ediderunt, perspici nequit: ὁ

νοῦς οὗτος. Ἄρα, ὡς Γλαύκων,

ἡγεῖ οὐκ εἶναι μέγιστον νέρδος

τὸ τὸν μέλλοντας γενήσεσθαι

(Ruhnken. γεννήσεσθαι). παιδας

ἐμπειροπολέμους μετὰ χρόνου

αὐτοπτεῖν ἢ μὴ τὰ περὶ πόλε-

μον; σχεδὸν δὲ τὸ Ομηρικὸν

παραφράζει. Πρῶτ' ἐλθὼν σὺν

τοὺς ἄνδρας πολεμικοὺς ἐσομένους; Οὐκ, ἀλλὰ διαφέρει πρὸς δὲ λέγεις. Τοῦτο μὲν ἄρα ὑπαρχτέον, θεωροὺς πολέμου τοὺς παιδας ποιεῖν, προσμηχανᾶσθαι δὲ αὐτοῖς ἀσφάλειαν, καὶ καλῶς ἔξει. η γάρ; Ναι. Οὐκοῦν, ην δὲ ἐγώ, πρῶτον μὲν αὐτῶν οἱ πατέρες, ὅσα ἄνθρωποι, οὐκ ἀμαθεῖς ἐσονται, ἀλλὰ γνωμονικοὶ τῶν στρατειῶν, ὅσαι τε καὶ μὴ ἐπικίνδυνοι; Εἰκός, ἔφη. Εἰς Δ μὲν ἄρα τὰς ἔξουσιν, εἰς δὲ τὰς εὐλαβήσονται. Ὁρθῶς. Καὶ ἀρχοντάς γέ που, ην δὲ ἐγώ, οὐ τοὺς φαυλοτάτους αὐτοῖς ἐπιστήσουσιν, ἀλλὰ τοὺς ἐμπειρίᾳ τε καὶ ἡλικίᾳ ἵκανοὺς ἡγεμόνας τε καὶ παιδαγωγοὺς εἶναι. Πρέπει

ὅχεσφι, διδασκόμενος πολέμῳ, Εὔφροβος. (II. XVI. 811.) In quibus παιδας si post μετὰ χρόνον transtuleris, nobiscum facientem scholiasten habebis, si ante μέλλοντας ponatur, articulum tuerit, sed alterum τοὺς post παιδας male omisisse statuendus est; sin locum suum obtineat, τοὺς παιδας πολεμικοὺς, omissis τοὺς ἄνδρας, legisse et παιδας adolescentes intellexisse videtur. Atque hoc magis probabile ex eo, quod Euphorbi mentionem iniicit, quod simul indicio est, v. 810. eum καὶ γάρ δὴ ποτε φῶτας ἐπέκοσι βῆσεν ἀφ' ἵππων, non cum Aristarcho καὶ γάρ δὴ τότε etc. legisse.

ἄνδρας πολεμικοὺς] milites Fic.

Οὐκ — η γάρ;] om. Vind. D. et, ut videtur, is, quo usus est auctor scholii ad proxime sequens Οὐκοῦν adscripti.

ἀλλὰ] ἀλλα Vind. F. a m. pr. διαφέρει] διαφέρειν Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV. referre Fic. qui in superioribus Num parum interesse censes posuit.

λέγεις. Τοῦτο] λέγεις, τοῦτο Ald.

πολέμον] post τοὺς παιδας Ven. B. Vind. E.

προσμηχανᾶσθαι] προμηχανᾶσθαι Lob. Vind. B. Vat. BM.

δὲ] δὲ, Mon. B.

καὶ] η καὶ Lob. η καὶ Vat. M.

In Vind. B. nonnihil spatii ante καὶ vacuum.

ἔξει] ἔξη Bas. b.
η γάρ] η γάρ Lob. om. Mon. B. Fic.

Οὐκοῦν] ἀντὶ τοῦ οὐχ οὕτως, καθ' ὑπόκοιτιν. (Bekk. ὑπόκοιτιν) scholiastes, quasi οὐκονν legisset et post ην δὲ ἐγώ plene interpunxisset, quemadmodum factum est in Bas. ab. in quibus etiam Πρῶτον maiuscula initiali exstat. Quod utrumque ita demum tolerabile videri poterat scholiastae, si superiora illa Οὐκ — η γάρ; in suo codice non invenerat.

αὐτῶν] post οἱ πατέρες Lob. Vind. BD. Vat. BM.

γνωμονικοὶ] γνωμονοὶ Vat. B. στρατιῶν] στρατιῶν Vind. EF. Ang. B. Flor. RT. (quibus in) castris (periculum insit, quibus non insit periculum.) Fic.

ὅσαι] ὅσαι Vind. F. cum litura in altero o.

ἐπικίνδυνοι;] ἐπικίνδυνοι; Ald. D Bas. ab. Steph. quod et ipsum ferri potest.

Εἰς] In Vind. D. § int. vers. est.

ἄρο] ἄρο Vind. E.
ἔξουσιν] ἔξουσιν Vind. B. et ante corr. D. Vat. M. et cum ἄ super ξ Lob.

εὐλαβήσονται] εὐλαβηθήσονται Lob. Vind. BD. Vat. M. (ad alia) minime Fic.

αὐτοῖς] αν. Flor. T.

γάρ. Ἀλλὰ γὰρ, φήσομεν, καὶ παρὰ δόξαν πολλὰ πολλοῖς δὴ ἐγένετο. Καὶ μάλα. Πρὸς τοίνυν τὰ τοιαῦτα, ὡς φίλε, πτεροῦν χρὴ παιδία ὅντα εὐθὺς, ἵν' ἂν τι δέηται πετόμενοι ἀποφεύγωσι. Πῶς λέγεις; ἔφη. Ἐπὶ τοὺς ἵππους, ἦν δ' ἐγὼ, ἀναβιβαστέον ὡς νεωτάτους, καὶ διδαχθέντας ἵππεύειν ἐφ' ἵππων ἀκτέον ἐπὶ τὴν θέαν

[Ἀλλὰ γὰρ] γὰρ om. Lob. Vind.

B. Vat. BM.

παρὰ δόξαν] παραδόξαν Vind.

DE. παραδόξων Lob. Vind. B.
Vat. M.

πτεροῦν] πτεροῦν Ang. B. Julianus in laudem Constantii p. 14. ed. Schaeff. καθάπερ ὁ γενναῖος ἥξιωσε Πλάτων οἰονεὶ πτερά τοῖς παισὶ (γρ. ποσὶ margo Spanhem.) καριζόμενον καὶ ἐπὶ τοὺς ἵππους ἀνάγοντα (Wytttenbachius malebat ἀναθέντα) ἄγειν εἰς (id Schaeferus ex margine Sp. pro vulgato ὡς suadente Wytttenbachio recepit) τὰς μάχας θεατὰς ἐσομένους ὡν οὐκ εἰς μακρὰν ἀγωνιστὰς ἔχοντης καταστῆναι.

ἵν'] ἵνα Vind. F.

δέη] δέοι Lob. Vind. B. Vat. BM.

πετόμενοι] πετώμενοι Vat. B. Ven. C. Vind. F. Conf. Vol. I. p. 132, b.

ἀποφεύγωσι.] ἀποφεύγωσιν. Vind. F. Flor. R. Bekkerus.

E διδαχθέντας] Ita secundum Lob. Vind. B. et int. vers. D. Ven. B. Vat. BM. Flor. RT. et int. vers. Ang. B. cum Bas. b. et Astii sec. scripsi pro διδαξαμένοντας, quod Ang. B. et reliqui codices exceptis Vind. D. et Mon. B. et editiones Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr. exhibent, quodque Stephanus annot. p. 25. (ad L. VII. p. 537. A.) et Schediasm. L. I. p. 19. frustra tuetur, quasi nondum edocatos, sed edocendos demum equitandi artem et ob id ipsum, ut doceantur, ad bellum spectaculum in equis duci pueros iubeat Socrates. Ita enim interpretatur: *Iam inde a prima pueritia tollendi sunt in equis: ducendique in equis ad bellum spectaculum, ut eos*

equitare doceamus. Quod quum a Socratis mente pariter atque ab ipsa re abhorreat, διδαξαμένοντας non aliter nisi transposita post ἵππεύειν particula καὶ tolerari posse appareat; cui rationi praeter codicum auctoritatem hoc obstat, quod, quo consilio equis imponendos statueret, Socrates sine caussa doceret, quales effectos et quid edocatos ad bellum duci vellet, quod magis dicto opus erat, non demonstraret. Hoc igitur reiecto διδαχθέντας e secundi ordinis codicibus recepi, longius sane illud ab optimorum vestigiis remotum, sed tamen meo iudicio et significatione vero proximum et inter ea, quae codices habent, maxime probabile. Nam διδαχθσαμένοντας, quod Vind. D. cum ἑντας super ησομένοντα exhibet, verum videri nequit: διδαξαμένοντας, quod in Mon. B. a manu secunda, ut videtur, e διδαξαμένοντας factum Bekkerus, Stallbaumius et in tert. ed. Astius praetulerunt, eo displicet, quod praeter exspectationem et temere mutata accusativi potestate pro puerorum descriptione, quales sint in bellum ducendi, magistrorum negotium describit, quo functos esse oporteat, priusquam eos illo ducant. Neque credibile est διδαξαμένοντας non solum in διδαχθέντας, sed in διδαξαμένοντας corrighendi caussa mutatum esse. Itaque casu et errore hoc in optimos irrepsisse dicendum erit, si διδαξαμένοντας pro genuino habeatur. Mihi vero codicum indolem et varietatem consideranti admodum verisimile fit Platonem δεδιδαξαμένοντας scripsisse, cuius formae insolentioris et depravatio

μὴ θυμοειδῶν μηδὲ μαχητικῶν, ἀλλ' ὅτι ποδωκεστάτων καὶ εὐηγνιωτάτων. οὕτω γὰρ κάλλιστά τε θεάσονται τὸ αὐτῶν ἔργον καὶ ἀσφαλέστατα, ἃν τι δέη, σωθήσονται μετὰ πρεσβυτέρων ἡγεμόνων ἐπόμενοι. Ὁρθῶς, ἔφη, μοι δοκεῖ λέγειν. Τί δὲ δὴ, εἶπον, τὰ περὶ 468 τὸν πόλεμον; πῶς ἐκτέον δοι τοὺς στρατιώτας πρὸς

in διδαξομένον et explicatio per διδαχθέντας et διδαχθησομένον aequo proclivis erat. Nec aliter Ficinus, immerito fortasse reprehensus l. c. a Stephano, haec interpretatur: *EQUITARE consuescent primis ab annis pueri, cumque hoc didicerint, equis ad spectaculum belli ducentur.*

ἔφ' ἵππων] ἔφιππων Vind. F.
ἔφ' ἵππων, Vind. BD. Steph.

ἀλλ' ὅτι] ἄλλῳ, e corr. ἄλλῳ,
Vind. F. ἄλλῳ Flor. R. Ang. B.
ἄλλ' ὅ τι Bas. a. (Stallb. sec.)

οὗτοι γὰρ] atque ita Fic.
κάλλιστά] μάλιστά Bas. b.
τε] om. Par. K. sec. Bekk.
αὐτῶν] αὐ. Lob. Vind. DF.
Ald. Bas. ab.

δέη] δέοι Lob. Vat. BM. et
cum η super οι Vind. B.

'Ορθῶς, ἔφη, μοι] 'Ορθῶς
ἔφη μοι Ald. Bas. ab. Bekkerus
et Stallbaumius in pr. 'Ορθῶς
(ἔφη) μοι Steph. 'Ορθῶς, ἔφη,
μοι Ast. pr. et sec. Cf. Vol. I.
p. 35, b.

468 Τί δὲ δὴ] — δὴ int. vers. ha-
bet Vind. D. Τί δαὶ δὴ Par. A.
Vat. H. Flor. ACV. quod recepit
Bekkerus. Me quo minus idem
facerem quum ea deterruerunt,
quae Vol. I. pag. 155. de dubia
optimi codicis in hac re auctoritate
exposita sunt, tum quod
caussam non viderem, cur Socrates
novam hancce digressionem
maiori cum affectu exordiendam
putaverit. Nec nihil tribuendum
continuatae orationi videbatur.
Quamquam enim erraverit Planudes
apud Bachmannum anecd. II.
81. in prosa oratione formulae τί
δαὶ nonnisi ante interpunctionem
locum concedens, quum Aristophanem
saepe τί δαὶ σύ; ut Lys.

136. Av. 136. Ach. 768. Bekk.
τί δαὶ σύ φήσ; Av. 1615. 1674.
τί δαὶ φέρεις; Ach. 730. et si-
milia dixisse constet, quae a poë-
tica licentia metriva necessitate
repitere temerarium sit, tamen
Platonis in dialogis fatendum est
codices saepius illi sententiae fa-
vere, quam adversari. Tim. p. 18.
A. vulgatam τί δαὶ τροφήν; qua-
tuor tantum libri, Par. A. Vat.
B. Mon. B. Flor. U. tuentur, re-
liqui omnes τί δὲ exhibent. Paullo
firmior Crat. p. 383. B. item vul-
gata lectio τί δαὶ Σωκράτει; ha-
betur, sed maior pars codicum
δὲ habent. Criton. p. 49. C. τί
δαὶ δῆ; numero et praestantia
librorum commendatur, et tamen,
quum sequatur τί δέ; alterum,
quod in XV. circiter codicibus
exstat, praferendum videtur.
Magis etiam incerta haec sunt,
quae Bekkerus exhibuit: Theaet.
p. 170. E: τί δαὶ αὐτῷ Πρωτα-
γόρᾳ; pag. 204. B: τί δαὶ δῆ;
Crat. p. 409. A: τί δαὶ η σελή-
νῃ; p. 423. D: τί δαὶ δὴ τόδε;
ut unius duorumve codicum ductu
mutata Euthyphr. p. 14. A. Apol.
p. 24. E. Parmen. p. 131. E. et
alibi taceam.

ἐντέον] ἐντέον Lob. Vind. EFB.
quem Bekkerus una cum Par. A.
Vat. BHM. Ven. BC. et Ang. E.
ἐντέον exhibere tradens ne in re-
liquis quidem spiritus rationem
habuisse videtur. ἀντέον Mon. B.
Par. DK. Flor. ACUV. Ald. Bas.
a. Steph. Ast. pr. *quaē servanda*
militibus et ad se invicem et ad-
versus hostes. Fic. ἀντέον sensu
carere non dixerim, quum et re-
gendi s. instituendi et agendi s.
vivendi significationem habere pos-
sit, quam utramque habet nomen

αὐτούς τε καὶ τοὺς πολεμίους; ἂρ ὁρθῶς μοι παταφαίνεται, ή οὖ; Λέγ', ἔφη, ποῖ ἄν. Αὐτῶν μὲν, εἶπον, τὸν λιπόντα τάξιν ή σπλα ἀποβαλόντα η τι τῶν τοιούτων ποιήσαντα διὰ πάκην ἂρα οὐ δημιουργόν τινα δεῖ παθιστάναι η γεωργόν; Πάνυ μὲν οὖν. Τὸν δὲ ξῶντα εἰς τοὺς πολεμίους ἀλόντα ἂρ οὐδεὶς διδόναι τοῖς θέλονσι Β χρῆσθαι τῇ ἄγρᾳ δτι ἀν βούλωνται; Κομιδῆ γε. Τὸν δὲ ἀριστεύσαντά τε καὶ εὐδοκιμήσαντα οὐ πρώτον μὲν

ἀγωγή. Sed codicum caussa utique praferendum est ἐκτέον, quod Astius in sec. ex Bas. b. recepit.

αὐτούς] Lob. Vind. BD. Mon. B. αὐ. Vind. EF. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr. quod ad priorem lectionis ἐκτέον significationem non ineptum erat.

ἄρ] ἄρα Vind. E. ἄρα Vind. F.

ποῖ ἄν] Ita Par. K. Vind. E. Flor. AC. Bekkerus. ποῖ ἀν Par. A. Vat. H. πη ἄν Flor. T. ποῖαν Vind. F. ποῖαν Lob. Vind. BD. Vat. BM. Ven. C. Par. D. ποῖα Ven. B. Ang. B. Flor. R. ποῖον Mon. B. Flor. UV. cum editionibus praeter Bekkerianam. quidnam? Fic. (omisso λέγε.) ποῖ ἄν breviter dictum accipio pro ποῖα ἀν ὄντα τὰ περὶ τὸν πόλεμον ὁρθῶς ἔχειν λέγεις. ἀν ad ποῖα pertinet et rerum illarum conditionem, quia incertum erat, qualis Socrati placeret, incertam et fortuitam ponit. Simili breviloquentia Sophocles Philoct. 568: πρὸς ποῖον ἀν τόνδ' αὐτὸς ὄνδυσσενς ἔπλει; Cf. Hermannus de particula ἀν L. III. cap. 4. pag. 11248. sq. et L. I. cap. 9. p. 11198. ad calcem thesauri Stephaniani ab Anglis editi.

Αὐτῶν] αὐτὸν Lob. Vind. BDEF. Ven. B. Par. K. secund. Bekk. Ang. B. Vat. HM. arbitror eum, qui — esse transmittendum Fic. Inest in αὐτῶν significatio prioris ex duobus, quae exponenda suscepit Socrates, quemadmodum ipsi inter sese agere debeant milites.

τάξιν] τὴν τάξιν Flor. T. τι τῶν τοιούτων] τοιοῦτό τι Vind. BD.

πάκην] πάκην Vind. E. Timaeus lex. p. 152: πάκην η πακία, ὡς πλάνη παὶ ζάλη. ubi cf. Ruhnkenius, a quo laudatus Eustathius ad II. XIII. 623. huius significationis, quae nostro loco obtinet, usum magis communem existimasse videtur, dum scribit: πάκη γὰρ οὐ μόνον η πακία πατὰ τοὺς περὶ Πλάτωνα, ἀλλὰ παὶ η δειλία. Sed neutra Platoni propria. Cf. praeter locos a Ruhnkenio allatos Eurip. Belleroph. apud Stob. serm. X. pag. 127. Aeschyl. Sept. 192.

ἄρα] ἄρα Vind. F. Ald. Bas. ab. ἄρ, Lob. Vind. BD. Vat. M.

δεῖ] δη Vind. F.

παθιστάναι] παθεστάναι Vind. E. Flor. C. παθιστᾶναι Vind. F.

γεωργόν] γεωργῶν Vat. H. a m. pr.

εἰς] εἰς Mon. B. cum litura. ab (hostibus) Fic.

τοὺς] om. Ven. B. πολεμίους] πολεμίον Par. D.

ἀλόντα ἄρ] ἀλ. ἄρ Vind. F.

θέλονσι] γέλονσι Vind. E. Ficinus hoc perperam cum δώρεὰν διδόναι construens verbum a se adiecit: etiam gratis reddere voluntibus relinquendum.

Κομιδῆ] πομηδή Vind. F. B

γε. Τὸν] γε, τὸν Ald.

ὑπὸ] ἐπὶ Par. K.

464 ἐπὶ στρατείας ὑπὸ τῶν συστρατευομένων μειρακίων τε καὶ παιδῶν ἐν μέρει ὑπὸ ἑκάστου δοκεῖ σοι χρῆναι στεφανωθῆναι; ἢ οὐ; Ἐμοιγε. Τί δέ; δεξιωθῆναι; Καὶ τοῦτο. Ἀλλὰ τόδ', οἶμαι, ἦν δ' ἔγα, οὐκέτι σοι δοκεῖ. Τὸ ποῖον; Τὸ φιλῆσαι τε καὶ φιληθῆναι ὑπὸ ἑκάστου. Πάντων, ἔφη, μάλιστα· καὶ προστίθημι γε τῷ νόμῳ, ἔως ἂν ἐπὶ ταύτης ὥσι τῆς στρατείας· καὶ μηδενὶ ἔξει- C ναι ἀπαρνηθῆναι ὃν ἂν βούληται φιλεῖν· ἵνα καὶ ἐάν

συστρατευομένων] στρατευο-
μένων Ven. B. a m. pr.

σοι] σει, sup. οι, Mon. B.

στεφανωθῆναι] στεφανωθῆ-
ναι Vind. F.

Tί δέ;] τί δαι; Par. A. Vat. H. Flor. ACV. quod si a prima manu sine correctione prescriptum est in Par. recipiendum puto, ut cum rei gravitate vocis intentio creuisse significetur. In Ald. Bas. ab. Tί δέ δεξ. sine interpunkione legitur.

δεξιωθῆναι] δεξιωθῆναι Lob. Vind. F. Vat. B. Ven. C. ἔξι-
θῆναι γρ. Par. A. secund. Bekk. ἔξισθῆναι idem in margine sec. Faehsium.

τόδ',] τόδ' editi ante Bekke-
rum.

οὐκέτι] οὐκ ἔτι Vind. DE.
Mon. B.

φιλῆσαι τε καὶ] om. Mon. B.
Fuisse qui φιλεῖν hac de re dici
nollent, Antiatticista Bekk. docet
p. 115, 22. et apud Valcken. ad
Ammon. p. 137. ed. Lips. φιλεῖν
φασὶ δεῖν λέγειν τὸ κατὰ ψυ-
χὴν, καταφιλεῖν δὲ καὶ κύσαι τὸ
διὰ τοῦ στόματος.

στρατείας] στρατίας, super-
scripto et rursus deleto ει, Mon.
B. στρατιᾶς Par. ADK. Ven. B.
Vat. H. Flor. ACT. Ald. Bas. ab.
quod vitium etiam Timaei lexicon
p. 239. invasit, ubi cf. Ruhnke-
nius.

C καὶ μηδενὶ] Ita Par. ADK. sec.
Bekk. Lob. Vind. BF. Vat. BM.

Ang. B. Mon. B. Flor. U. Reli-
qui cum Ald. Bas. ab. Steph.
Astio et in pr. ed. Stallbaumio
omiserunt καὶ, quod non intelli-
gerent ita positum esse, ut Glau-
co legem hoc capite augendam
recitare videatur. Similiter δὲ
post prooemium initio legis ipsius
speciem anacoluthi prae se fert
Leg. L. VIII. p. 854. D: τῷ
μὲν πειθομένῳ τὸν νόμον ἔξι
σιγῇ δεῖ, τῷ δὲ ἀπειθοῦντι με-
τά τὸ προσίμιον ἔδειν μέγα· ὅς
δ' ἀν iεροσυλῶν ληφθῆ, — ἐκ-
βληθήτω. Infinitivum ἔξειναι pro
imperativo accipere licet, comma-
tis autem loco, quod vulgo post
στρατείας faciunt, colon ponen-
dum idemque signum post φιλεῖν
tenendum fuit, ubi Astius et re-
centiores comma fecerunt. Sic
sensus hic est: quin etiam novum
legi caput in huius expeditionis
tempus adiicio: et ne cui liceat
negare, si quem osculari velit.
Ceterum Aristotelem, Lucianum,
Maximum et Plutarchum huc re-
spexisse monens Astius de Ari-
stotele erravit, si eundem eius
locum (nam numeros typotheta
vitiavit) in mente habuit, quem
Vol. I. p. 274, b. retuli. Pseu-
doplutarchi locus est p. 11. E:
τὸ δὴ τοῦ Πλάτωνος σπουδῆ καὶ
χαριευτισμῷ μεμιγμένον οὐ πα-
ραπλεπτέον. ἔξειναι γάρ φησι
δεῖν τοῖς ἀριστεύσασιν ὃν ἀν
βούλωνται τῶν καλῶν φιλῆσαι.
Lucianus (T. III. p. 110. Leh.)
et Maximus (dissert. XXIII. 4.)
Socratem huius legis auctorem
perhibentes Platonis sententiam,
non verba, referunt.

τίς του τύχη ἐρῶν ἢ ἄρδενος ἢ θηλείας, προθυμότερος ἢ πρὸς τὸ τάριστεῖα φέρειν. Καλῶς, ἣν δ' ἔγώ. ὅτι μὲν γὰρ ἀγαθῷ ὅντι γάμοι τε ἔτοιμοι πλείους, ἢ τοῖς ἄλλοις, καὶ αἰρέσεις τῶν τοιούτων πολλάκις παρὰ τοὺς ἄλλους ἔσονται, ἵν' ὅτι πλεῖστοι ἐκ τοῦ τοιούτου γίγνωνται, εἰρηται ἥδη. Εἴπομεν γὰρ, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν καὶ καθ' "Ομηρον τοῖς τοιοῖσδε δίκαιον τιμῆν τῶν νέων δῖσοι ἀγαθοῖ. καὶ γὰρ "Ομηρος τὸν εὐδοκιμήσαντα ἐν τῷ πολέμῳ νώτοισιν Αἴαντα ἔφη διηγείεσσι γεραίρεσθαι, ὡς ταύτην οἰκείαν οὖσαν τιμὴν τῷ ἥβωντί τε καὶ ἀνδρείᾳ, ἐξ ἣς ἀμα τῷ τιμᾶσθαι καὶ τὴν ἴσχυν αὐξήσει. Ορθότατα, ἔφη. Πεισόμεθα ἄρα, ἣν δ' ἔγὼ, ταῦτά γε

τον] τούτον Par. K. secundum Bekk.

τάριστεῖα] τ' ἀριστεῖα Vind. F. τάριστεῖον Vind. D. Ang. B. Vat. H. ἀριστεῖον Vind. E. Flor. ACT. τὸ ἀριστεῖον Ven. B.

τῶν τοιούτων] Ita Ven. B. sed superscriptis οὐ οὐ.

ἐν τοῦ τοιούτου] ex his Fic.

γίγνωνται] γίγνονται Vind. E.

Αλλὰ μὴν — αὐξήσει. D.] laudat Hermogenes de ideis L. II. p. 406. ed. Laur. inter exempla παραπλοκῆς τῶν ποιημάτων.

"Ομηρον] Ad hoc Mon. B. in inferiore margine a m. pr. scripta habet haec, quae ita, ut ibi exarata sunt, subieci. καὶ ποῦ ἀν εὗρωμέν ὄμηρον, προπωλοῦ φτιγάδα ὅντα, ἢ πῶς πεισόμεθα τὸν ἀνδρά μη οἰδότας μῆται ταῦτα μῆτ' ἄλλα ταριθέντα παρεκείνον· μᾶλλον μὲν οὖν σόλωνα εἰδομεν χάρην, ἢ σὲ τὸν φτιγαδεύσαντα:

τοῖς τοιοῖσδε] τοὺς τοιούτους Hermog. eiusmodi (iuvenes) Fic. Dativus est neutrius generis pendens ille a τιμῇ et ad sequentia referendus, quod febellisse videtur Bernhardum synt. p. 94. non febellit Schleiermacherum.

όσοι ἀγαθοί]. om. Fic.

D Aἴαντα] om. Mon. B. Flor. U. Par. DK. ante νώτοισιν exhibit Flor. T. post ἔφη Lob. Vind. B. Vat. BM. post γεραίρεσθαι Her-

mogenis ed. Laur. sed codex Rehdigeranus post νώτοισιν.

ἔφη] om. Vind. D. Locus Homeri est II. VII. 321.

διηγείεσσι] διηγείεσι Lob. Vind. E. Flor. ACV. Et in Mon. B. prius σ int. vers. est. διηγείεσι Vat. B. διηγείεσσι Ven. B. Vat. H. Flor. T. Animi caussa Francogalli La Pilloniere interpretationem huius loci apponere placuit: *Ajax porté sur les épaules de ses camarades en triomphe.*

ταύτην] τοιαύτην Hermogen. cod. Rehd.

οἰκείαν] om. Vind. B. Vat. M. post οὐσαν Hermog.

ἥβωντί] ἥβ. Vind. F.

ἐξ ἣς] ἐξης idem.

"Ορθότατα] ὁρθότατα idem. ἔφη. Πεισόμεθα] ἔφη πεισόμεθα Vind. B.

ἄρα] ἄρα Lob. Vind. B. ἄρα Vind. E.

ταῦτα] ταῦτα Steph. quem errorem ex male intellecto verbo πεισόμεθα profectum Astius in sec. corredit.

τοὺς ἀγαθοὺς] om. Vind. E.

καθόσον] καθ' ὅσον Mon. B.

νῦν δὴ] δὴ νῦν Lob. Vat. B. Flor. T. In Vind. E. δὴ int. vers. est. Cf. Vol. I. p. 318.

τιμήσωμεν] τιμήσωμεν Vind. E. et ante corr. F.

ἔδραις] ἔδρας Ald. V. II. VIII. 162.

Ομήρω. καὶ γὰρ ἡμεῖς ἐν τε θυσίαις καὶ τοῖς τοιούτοις πᾶσι τοὺς ἀγαθοὺς, καθόσον ἢν ἀγαθοὶ φαίνωνται, καὶ ὕμνοις καὶ οἷς νῦν δὴ ἐλέγομεν τιμήσομεν, πρὸς δὲ τούτοις ἔδραις τε καὶ κρέασιν ἵδε πλείους δεπάεσσιν, ἵνα Ε ἄμα τῷ τιμῆν ἀσκῶμεν τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας τε καὶ γυναικας. Κάλλιστα, ἔφη, λέγεις. Εἶν. τῶν δὲ δὴ ἀποθανόντων ἐπὶ στρατείας ὃς ἢν εὐδοκιμήσας τελευτήσῃ, ἂρδ' οὐ πρῶτον μὲν φήσομεν τοῦ χρυσοῦ γένους εἶναι; Πάντων γε μάλιστα. Ἀλλ' οὐ πεισόμενα Ἡσιόδῳ, ἐπειδάν τινες τοῦ τοιούτου γένους τελευτήσωσιν, ὡς ἄρα οἱ μὲν δαίμονες ἀγνοὶ ἐπιχθόνιοι τελέθουσιν, 469 Ἔσθλοὶ, ἀλεξίκακοι, φύλακες μερόπων ἀνθρώπων; Πει-

E ιρέασιν ἵδε] ιρέασιν, — ἵδε Steph. Ast. sec.

πλείους] πλείους Vind. B. Par. K. Vat. M.

δεπάεσσιν] δεπάεσσιν Vind. D. In Lob. prius. σ int. vers. scriptum:

τοὺς] om. Lob. Vind. B.
τῶν δὲ δὴ — ιριθῶσι; 469.
B.] laudat Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 387. Priora usque ad Πάντων γε μάλιστα tamquam ex decimo Civitatis libro refert Theodoretus Therap. Lib. VIII. p. 914. Sch. Eadem sine varietate exhibet Clemens Alex. Strom. L. III. p. 571, 3. Pott. Τῶν δὲ δὴ etc. Ald. Steph. Ast. pr. sec. Idem in tert. post Εἶν comma fecit.

ἐπὶ στρατείας] ἐπὶ στρατιᾶς Par. A. Vat. H. Flor. ACTV. ἐπιστρατιᾶς Vind. F. ἐπὶ (in uno Ursini cod. ἐν) στρατείαις Theodor.

τελευτήσῃ] τελευτήσοι Lob. ἄρδ'] ἄρδ' Vind. F.

φήσομεν] post εἶναι Theodor. Πάντων] πᾶν Euseb.

γε] om. Theod. excepto uno Ursini codice.

Ἄλλ' οὐ — μὲν οὖν. 469. A.] laudat Hermogenes l. ad C. citato. Deinde Hesiodo fide adhibita asseremus etc. Fic.

Ἡσιόδῳ,] Ἡσιόδῳ; Stephan. Locus Hesiodi est Ἐργ. 121. de

quo conf. Buttmanni Mythologus Vol. II. p. 22.

ἐπειδάν — τελευτήσωσιν] om. Par. DK. Mon. B. Flor. U.

τοῦ τοιούτου] τοῦ om. Hermogenes.

ἄρδα] ἄρδα Hermog. cod. Rehd. οἰ] ἡ Bas. a. quae cum Ald. 469

Bas. b. haec omnia sine distinctione ut prosam scripta habet. Contra Stephanus et recentiores duo versus quasi in editione poëtae fecerunt. Cf. Vol. I. p. 130, a.

τελέθωσιν] τελέθωσιν Vind. D. παλέονται Hermog. cod. Rehd. quo verbo Plato Crat. p. 397. E. in eodem Hesiodi versu est usus. Sed apud Theodoretum p. 915. in illo Cratily loco optimus Sylburgii codex totum versum ita exhibit, ut apud Hesiodum legitur: Τοὶ μὲν δαίμονές εἰσι Διὸς μεγάλον διὰ βούλας.

μερόπων] θνητῶν Hermogen. cod. Rehd. et Plato in Cratilo, ut codices Hesiodi. Atque haec quidem discrepantia levior et qualis memoriter recitantein decet: illud gravius, quod, quum Hesiodus hoc altero versu Ἔσθλοι, ἐπιχθόνιοι, φύλακες θνητῶν ἀνθρώπων naturam, sedem, munus

daemonum singulis singula nominibus significasset, Socrates ei tria ad naturam eorum spectantia ἀγνοὶ, ἐσθλοὶ, ἀλεξίκακοι tribuit; cuius mutationis seu emen-

σόμεθα μὲν οὖν. Διαπυθόμενοι ἄρα τοῦ θεοῦ, πῶς
χρὴ τοὺς δαιμονίους τε καὶ θείους τιθέναι καὶ τίνι δια-
φόρῳ, οὕτω καὶ ταύτη θήσομεν, ἢ ἀν εξηγῆται; Τί δ' οὐ
μέλλομεν; Καὶ τὸν λοιπὸν δὴ χρόνον ὡς δαιμόνων,
Β οὕτω θεραπεύσομέν τε καὶ προσκυνήσομεν αὐτῶν τὰς
θήκας; ταῦτα δὲ ταῦτα νομιοῦμεν, ὅταν τις γῆρας ἥ τινι
ἄλλῳ τρόπῳ τελευτήσῃ τῶν ὅσοι ἀν διαφερόντως ἐν τῷ
βίῳ ἀγαθοὶ κριθῶσι; Δίκαιον γοῦν, ἔφη. Τί δέ; πρὸς
τοὺς πολεμίους πῶς ποιήσουσιν ἡμῖν οἱ στρατιῶται; Τὸν

dationis fundamentum in Cratylus iactum, inde autem et consilium ethicum et simile illi est, quo eiusdem poëtae fabulam de aureo genere supra L. III. p. 415. mutatam vidimus. Aliter hac de re Buttmannus l. c. p. 24. in nota iudicavit. Ceterum huc referenda sunt Procli verba T. II. p. 200. Cous. οὕτω γάρ, οἶμαι, καὶ ὃ ἐν Πολιτείᾳ Σωκράτης δαιμονίας ἐπάλλεται τοὺς εὐ βεβιωότας καὶ ἐσ ἀμείνω ληξίν μεταστάντας καὶ τόπον ἀγιώτερον. scilicet ita, ut πατὰ σχέσιν δαιμονίας diceret, propter similitudinem.

ἀνθρώπων — τοῦ θεοῦ] om.
Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C.
Par. DK. Mon. B. Flor. U. Post
ἀνθρώπων editi ante Bekkerum
punctum habent.

πῶς] ἀν πῶς Ven. C. ἥ πῶς
reliqui, qui proxima illa omit-
tunt.

τίνι διαφόρῳ] quibus insigni-
bus praeципue decorare Fic.

οὕτω] ἥ οὕτω Mon. B. Flor.
U.

ταύτη] ταύτην Euseb.
ἥ] ἥ Vind. F. ἥ ἥ Lob. Vind.
B. Vat. M.

ἀν εξηγῆται] ἐκεῖνος εξηγεῖ-
ται Mon. B. Flor. U. (nam quod
in sec. ed. Stallbaumius ἀν ἐκεῖ-
νος εξηγῆται in Mon. B. Flor. U.
scriptum tradit, properanti excidi-
dit.) Pro signo interrogandi editiones
ante Bekkerianam punctum
habent.

Ti — κριθῶσι; B.] laudat Theodoreetus l. c. et inde a τὸν λοι-

πὸν Cyrilus adv. Julian. VI.
p. 204. B. atque in illius editio-
nibus et codicibus praeter unum
Ursini cum Platonice consentien-
tem priora ita leguntur: Τί δέ;
(sic etiam Ursini liber et inter
nostros Vind. E.) οὐ μέλλομεν
τὸν λοιπὸν χρόνον ὡς δαιμόνας
γεγονότας οὕτω θεραπεύειν τε
(id Urs. cod. om.) καὶ προσκυ-
νεῖν αὐτῶν τὰς θήκας;

δαιμόνων] εὐδαιμόνων Vind.
BE. Vat. HM. Flor. AC. δαιμό-
νας γεγονότας Euseb. δαιμόνας
γεγονότας τεθνεᾶτας Cyrill.

θεραπεύσομεν] θεραπεύσωμεν
Par. A.

τε] γε Mon. B. Par. DK. sec.
Bekk.

προσκυνήσομεν] προσκυνήσω-
μεν Par. A. Vind. E. in qua lec-
tione neque aoristus ad verba
τὸν λοιπὸν χρόνον, neque con-
iunctivus ad interrogationem aptus
est.

θήκας;] θήκας. Ald. Bas. ab. B
Steph. θήκας. Ast. sec. tert.
quod et ipsum probari potest,
dummodo in fine sermonis signum
interrogandi fiat.

ταῦτα] Ita Vind. D. Ang. B.
et, ut ait in utraque ed. Stall-
baumius, Flor. ACRTV. Reliqui
codices quidem omnes et editi
ante Astii sec. ταῦτα habent. τὰ
αὐτὰ Euseb. Theod. (ταῦτα unus
Ursini cod. ταύτη Iunt.) Cyr.
secundum quos Astius accentum
correxit.

δὲ] δὴ Cyr.
ταῦτα] ταῦτα Ven. B. ταύτη

ποῖον δή; Πρῶτον μὲν ἀνδραποδισμοῦ πέρι δοκεῖ δίκαιον
"Ελληνας Ἐλληνίδας πόλεις ἀνδραποδίζεσθαι, ἢ μηδ' ἄλλη
ἐπιτρέπειν κατὰ τὸ δυνατὸν καὶ τὸν ἐθίζειν, τοῦ Ἐλ-
ληνικοῦ γένους φείδεσθαι, εὐλαβούμενος τὴν ὑπὸ τῶν C
βαρβάρων δουλείαν; "Ολω̄ καὶ παντὶ, ἔφη, διαφέρει τὸ
φείδεσθαι. Μηδὲ Ἐλληνα ἄρα δοῦλον ἐκτῆσθαι μήτε
αὐτοὺς τοῖς τε ἄλλοις Ἐλλησιν οὕτω ἔνυμβον λεύειν;
Πάντα μὲν οὖν, ἔφη· μᾶλλον γ' ἀν οὖν οὕτω πρὸς τοὺς
βαρβάρους τρέποιντο, ἔαυτῶν δ' ἀπέχοιντο. *Tί δέ;*

Par. K. Mon. B. Flor. U. editi
ante Astii sec. om. Theod.

ὅταν] καὶ ὅταν Flor. T. Theod.
(in quo Sylburgius καὶ uncinis
inclusus) Astius in sec. et Stall-
baumius.

τινι ἄλλῳ] ἐτέρῳ τινὶ Cyr.
τελευτήσῃ] τελευτήσει Lob.
Flor. T. Ald. Bas. ab:
ἀν] om. Lob. Vind. B.

κοινῶσι;] *κοινεῖεν.* Vind. B.
κοινῶσιν; Bekkerus. *κοινῶσι.*
priorēs et Astius in tert. contra-
atque Glauco respondet.

Tί δέ;] *Tί δαί;* Par. A. Bek-
kerus. Cf. Vol. I. pag. 155., b.
Tί δὲ cum commate post πολε-
μίοντι Ald. Bas. ab.

πέρι] Vulgo comma additum
est (in Ald. punctum) quod ad
perspicuitatem non inutile, sed
grammatica ratione destitutum cum
Astio in pr. et sec. ed. sustuli.

ἄλλη] Ita Par. A. Vind. EF.
Ven. C. Par. D. Mon. B. Vat. H.
Flor. ACUV. *ἄλλην* Par. K. *ἄλ-*
λλοις Ang. B. Flor. RT. margo
Par. D. Stallbaumius. *ἄλλο* Bas.
b. *ἄλλω* Bas. a. *ἄλλῳ* Ald. Steph.
Astius cum reliquis codicibus. (*an*
potius ut neque) ab aliis (*fieri*
istud permittant) Fic. Quum
Graecos, qui Graecas civitates
seruituti addicere vetantur, non
singulares, sed civitatis vinculo
et ipsis consociatos cogitari ne-
cessere sit, recte eis *aliam civita-*
tem opponi nemo non intelliget.

κατὰ τὸ δυνατὸν] ac pro viri-
bus obstant Fic. ὃτι τοῦτο διαφέρει
Ἐλληνικοῦ] ἐλληνικοῦ Vind. E.
εὐλαβούμενος] εὐλαβούμενος
Vind. F.

διαφέρειν] διαφέρειν Vat. B. C
φείδεσθαι. Μηδὲ] φείδεσθαι,
μηδὲ Steph. Μηδὲ — απέχοιντο
laudat Eusebius praep. ev. L. XII.
p. 358.

ἐκτήσασθαι] ἐκτήσασθαι Vind. F.
Ang. B. Flor. AR. κεκτήσασθαι
Vind. D. Ven. B. Par. K. sec.
Bekk. Flor. T. Euseb. Cf. ad
p. 464. D.

ἔνυμβον λεύειν] Ita Par. A. Lob.
Vind. BDEF. Vat. BHM. Ven.
BC. Ang. B. συμβ. Mon. B. (Par.
DK.) Ald. Bas. ab. Stephan. et
Stallbaumius de Florentinis et de
Bekkero tacens. In secunda ta-
men ed. parum subtiliter sensum
huius loci interpretans pro τοῖς
τε ἄλλοις Ἐλλησιν οὕτω ἔνυμ-
βον λεύειν simpliciter μήτε τοὺς ἄλ-
λοις dici potuisse scribit. — Si-
gnum interrogandi ab editionibus
ante Bekkerum abest.

μᾶλλον] *facilius* ac *fortius*
Fic.

γ' ἀν] γὰρ Vind. F. ante corr.
μὲν Euseb.

οὖν] om. Lob. Vind. BDE.
Ven. B. Par. K. Vat. HM. Flor.
ACT.

ἔαυτῶν] *ἔαυτῷ* Vind. F.

δ'] δὲ Euseb.

δέ;] δαί; Par. A. Bekkerus.
δὲ sine interpunctione Ald. Bas.
ab.

σκυλεύειν, ἥν δ' ἔγω, τοὺς τελευτήσαντας πλὴν ὅπλων,
ἐπειδὴν νικήσωσιν, η̄ καλῶς ἔχει; η̄ οὐ πρόφασιν μὲν
D τοῖς δειλοῖς ἔχει μὴ πρὸς τὸν μαχόμενον ἵέναι, ὡς τι
τῶν δεόντων δρῶντας, δταν περὶ τὸν τεθνεῶτα κυπτά-
ξωσι, πολλὰ δὲ η̄δη στρατόπεδα διὰ τὴν τοιαύτην ἀρ-
παγὴν ἀπώλετο; Καὶ μάλα. Ἀνελεύθερον δὲ οὐ δοκεῖ
καὶ φιλοχρήματον νεκρὸν συλᾶν, καὶ γυναικειας τε καὶ
σμικρᾶς διανοίας τὸ πολέμιον νομίζειν τὸ σῶμα τοῦ τε-
θνεῶτος ἀποπταμένου τοῦ ἐχθροῦ, λελοιπότος δὲ ᾧ ἐπο-
E λέμει; η̄ οἵει τι διάφορον δοῶν τοὺς τοῦτο ποιοῦντας

σκυλεύειν] τὸ σκ. Flor. T.
νικήσωσιν] νικῆσονσιν Mon. B.

η̄] η̄ Vind. F. Mon. B. om.

Ang. B.

ἔχει;] ἔχει, Ald. Steph. Ast.
pr. ἔχει Bas. ab. Ast. sec.

η̄ οὐ] η̄ οὐκ η̄ Ven. B. Vat.
H. η̄ οὐ; η̄ Flor. ACRTV. an-
non? an Fic. η̄ οὐ. η̄ Vind. DE.
η̄ οὐ. Lob. Vind. BF. Ald. η̄ οὐ;
Mon. B. et reliquae editiones ante
Bekkerum, qui tacite falsam in-
terpunctionem sustulit tacitosque
asseclas Astium in tert. et Stall-
baumum nactus est.

ἔχει] ἔχον Mon. B. om. Lob.
Vind. B. Vat. BM.

τὸν] τῶν Ald. Bas. ab. pro
quo Stephanus τὸν in textu po-
nens in annotatione p. 21. dubi-
tat, an τὸ ponendum sit. τὸν co-
dices verum esse docent, τὸ tan-
tum in Flor. R. et, ut videtur,
in Ang. B. exstat, quem Bekke-
rus in comm. τὸ in hoc versu
omittere ostendit.

D τι] τε Vind. D. (τ superscripta
vocali.)

ὅταν περὶ τὸν τεθνεῶτα κυ-
πτάξωσι] — κυνπτάξωσι Ven. C.
quando inter cadavera voluntur
Fic.

δὲ] δὲ δὴ Vat. H.

διὰ τὴν τοιαύτην ἀρπαγὴν]
rapiendi cupiditatem Fic.

ἀπώλετο] ἀπώλητο Mon. B.
Signum interrogandi a Bekkerio
est.

Ἀνελεύθερον — διακολύσεις;

E.] habet Stobaeūs serm. CXXIII.
p. 620.

τε] om. Stob. Trinc. Gesn.
(Gaisf. ex cod. AB. recepit.)

σμικρᾶς] σμικρᾶς Vind. F.
Bas. b.

τὸ πολέμιον] τὸ om. editi ante
Bekkerum.

τι] τι Vind. F. Mon. B. Stob.
Trinc.

διάφορον] διάφοραν Par. K.
sec. Bip. διάφερον Ang. B. δια-
φέρον Flor. R.

κυνῶν] κυνῶν Stob. Trinc. E
οἰς] om. Vind. D. Stob. cod.
A. Trinc.

βάλλοντος] βαλόντος Par. A.
Bekkerus, Astius in tert. et Stall-
baumius in sec. ed. quod, si de
percussis canibus sermo est, prae-
ferendum, ceteroquin unius codi-
cis licet optimi testimonio non sa-
tis tutum censeo. Videtur autem
Socrates non de percussis tantum,
sed de omnibus canibus omnino
cogitasse eorumque hanc consue-
tudinem dicere, ut in lapides, qui-
bus percussi fuerint, saeviant,
iacientem ipsum neminem aggrediantur.
Nam ita demum similes
per omnia his illi sunt, qui mor-
tuos spoliant, vivis non solum il-
lis, sed quibuslibet manum inferre
non audent, quos ob id ipsum
parvo et muliebri animo praedi-
tos dicit. Itaque praesens Sto-
baei quoque et Ficini auctoritate
munitum tenui tenendumque in
Aristotelis loco Rhetor. L. III.
c. 4. existimō, ubi de similitudi-

τῶν κυνῶν, αἱ τοῖς λίθοις, οἵς ἀν βληθῶσι, χαλεπαί-
νουσι τοῦ βάλλοντος οὐχ ἀπτόμεναι; Οὐδὲ σμικρὸν, ἔφη.
Ἐατέον ἄρα τὰς νεκροσυλίας καὶ τὰς τῶν ἀναιρέσεων
διακωλύσεις; Ἐατέον μέντοι, ἔφη, νὴ Δία. Οὐδὲ μήν
που πρὸς τὰ ἵερὰ τὰ ὅπλα οἴσομεν ὡς ἀναθήσοντες,
ἄλλως τε καὶ τὰ τῶν Ἑλλήνων, ἐάν τι ἡμῖν μέλη τῆς
πρὸς τοὺς ἄλλους Ἑλληνας εὐνοίας· μᾶλλον δὲ καὶ φο- 470
βησόμεθα, μή τι μίασμα ἢ πρὸς ἵερὸν τὰ τοιαῦτα ἀπὸ^{τῶν}
τῶν οἰκείων φέρειν, ἐὰν μή τι δὴ δ θεὸς ἄλλο λέγῃ.
Ορθότατα, ἔφη. Τί δέ; γῆς τε τμήσεως τῆς Ἑλληνικῆς

nis (εἰκόνος) usū in prosa oratione disserens hoc exemplum commemorat: οἶον τὸ ἐν τῇ Πολιτείᾳ τῇ Πλάτωνος, ὅτι οἱ τοὺς τεθνεῶτας σκυλεύοντες ἔσινασι τοῖς οὐνιδίοις, ἢ τοὺς λίθοις δάκνει τῶν βαλλόντων οὐχ ἀπτόμενα. quem locum Stallbaumius in nota laudans secundum nonnullos βαλόντων scribit. Ceterum quod Toupii conjecturam emend. in Suid. p. 349. Lips. pro τοῖς λίθοις χαλεπαίνοντι secundum Suidae locum τοὺς λίθους περιχαίνοντι scribentis codices non confirmarunt, neque mirum est neque dolendum.

οὐχ ἀπτόμεναι] om. Stobaeus Trinc.

καὶ τὰς τῶν ἀναιρέσεων διακωλύσεις] victoriae namque ob-
sunt Fic. quem Stephanus in an-
not. p. 21. vere iudicat non aliud
legisse, sed Platonis sensum as-
secutum non esse. In Vat. H.
Flor. AV. super κωλύσεις scrip-
ptum est σκυλεύσεις. Signum in-
terrogandi Bekkero debetur, quem
Astius sequi noluit.

ἔφη] post νὴ Δία Vind. BD.
πρὸς τὰ ἵερα] in templum Fic.
μέλη] μέλλη Flor. ACT. μέλ-
λει Par. K. sec. Bip. Lob. Flor.
U:

τοὺς] om. Par. K.

470 *μᾶλλον δὲ καὶ] maxime vero*
Fic.

φοβησόμεθα] Ita Par. AK.
Vat. BH. Flor. ACTV. φοβηθη-
σόμεθα reliqui cum editis, quod

non minus probum, sed ob codi-
ces posthabendum erat, ut ὁ φε-
ληθῆσονται L. I. pag. 343. B.
εὐλαβηθῆσονται L. III. p. 410.
A. et huius libri pag. 467. D.
ἀχθεσθῆσονται L. X. p. 603. E.
et ipsum φοβηθῆσομαι Apol. p. 29.
B. quod nescio quam ob rem Bek-
kerus ex paucis codicibus pro
vulgato φοβήσομαι recepit. Quam-
quam nostro loco partim meorum
librorum ratio, partim quod Bek-
kerus vulgata intactam reliquit,
nonnihil dubitationis de Par. A.
et Vat. BH. iniicere potest. Ce-
terum in contrariam quoque par-
tem librarii nonnunquam errarunt,
ut Phaedon. p. 115. C. ubi προ-
θυμηθῆσόμεθα, et Symp. p. 194.
B. ubi θορυβηθῆσθαι tenen-
dum videtur.

ἢ] ἢ Vind. F.

ἵερὸν] τὸ ἵ. Mon. B. Flor. U.
τὰ τοιαῦτα] ταῦτα Lob. Vind.
B. Vat. BM.

φέρειν] φέρον Vind. B. φέρη
Vat. M.
λέγῃ. Ορθότατα] λέγει: ὁρ-
θώτατα Vind. F.

*Tί δέ;] Tί δαί; Par. A. Bek-
kerus. Tί δὲ sine interpunctione*
Ald. Bas. ab. et in sec. ed. Stall-
baumius, qui post ἐμπορίσεως si-
gnum interrogandi fecit, ubi in
illis et in reliquis comma est.
Mihi τε inter γῆς et τμήσεως in-
terpositum et haud dubie ad se-
quentia spectans eorumque mo-
vens exspectationem artiori horum
genitivorum et proximorum τι δέ;

καὶ οἰκιῶν ἐμπορήσεως ποῖόν τι σοι δράσουσιν οἱ στρατιῶται πρὸς τοὺς πολεμίους; Σοῦ, ἔφη, δόξαν ἀποφανομένου ήδέως ἀν ἀκούσαιμι. Ἐμοὶ μὲν τοίνυν, ἦν
B δ' ἔγώ, δοκεῖ τούτων μηδέτερα ποιεῖν, ἀλλὰ τὸν ἐπέ-

iuncturae obstare eosque magis-
cum inferioribus illis ποῖόν τι
σοι δράσουσιν coniungere vide-
tur. Atque eodem modo Socrates
p. 469. B. et C. τί δέ; usurpa-
vit. Ficinus Tί δέ; — πολεμίους;
ita interpretatus est: *An tui mili-
tes Graecorum, quibuscum pugna-
bunt, agros depopulabuntur ac
domos incident?*

τε τμῆσεως] τετμῆσεως Mon.
B. Ald. Bas. ab. τε καὶ τμῆσεως
Vind. E. Vat. H. Flor. ACV.
Quod Stephanus annot. pag. 21.
πέρι addendum existimat, eius
praepositionis haud raro compen-
dium fieri constat. Cf. Matthiae
gramin. p. 650.

τῆς] om. Lob. Vind. B. Vat.
M.

οἰκιῶν] οἰκῶν Vind. E.

ἀποφανομένου] ἀποφαίνομεν
οὐ Vind. F.

μὲν] om. Vind. D. Vat. H.
Flor. TV.

δοκεῖ] om. Flor. T. δοκεῖς
Vind. E. Flor. AC.

B μηδέτερα] γραὶ μητέρα margo
Flor. A.

ἀφαιρεῖσθαι,] Ex Ald. Bas.
ab. commissa revocavi, quod Stephanus et recentiores in punctum
mutaverunt. Sententia sua declara-
rata Socrates sine magno inter-
vallo se ad rationem eius redden-
dam paratum ostendit.

σοι] σει Mon. B. a m. pr.

Φαίνεται μοι — ἀλλοτρίου πό-
λεμος.] excerptis Stobaeus serm.
XXXI. p. 258. Sed in editione
Trinc. omissa sunt.

ταῦτα — εἶναι δύο] om. Vind.
D. Post ταῦτα Ven. B. Vind. E.
Vat. H. Flor. ACTV. et a m. s.
Par. A. cum Stobaeo editisque
ante Bekkerum articulum τὰ ad-
diderunt, quo scilicet pronomen
istud carere non posse videretur.

Neque non ferri aliquo modo pos-
sit. Sed eo delecto verborum con-
structio haec est: φαίνεται μοι
ταῦτα, πόλεμός τε καὶ στάσις,
ῶσπερ καὶ ὄνομάζεται δύο ὄνυ-
ματα, οὗτα καὶ εἶναι δύο. quae
faciliorem interpretationem habent,
quam illa: φαίνεται μοι ταῦτα
τὰ ὄνοματα, πόλεμός τε καὶ
στάσις, ωσπερ καὶ ὄνομάζεται
δύο, οὗτα καὶ εἶναι δύο. Quam-
quam concedendum est proxime
sequens ὄντα ita comparatum vi-
deri, ut ad ταῦτα τὰ ὄνοματα
potius, quam ad ταῦτα referri
debeat. Sed quoniam πόλεμος et
στάσις, quae per ταῦτα signifi-
cantur, tam nomina, quam res
sunt, illud ὄντα eatenus referri
ad ea potest et debet, quatenus
nomina sunt. Sic codicum aucto-
ritatem retinere licet.

δνεῖν] δνεῖν Lob. Vind. B.
Vat. M. Bekkerus et in tert. ed.
Astius; vereor, ut satis re explo-
rata, δνεῖν a Platone pariter at-
que ab reliquis illius aetatis scri-
ptoribus pro legitima genitivi et
dativi forma usurpatum esse mul-
torum locorum certa et varietatis
expers scriptura testatur. Eorum
partem Rückertus ad Symp. p. 113.
indicavit, quos hic répetere aliis-
ve addendis augere inutile putavi.
Contra pauci reperiuntur, quibus
δνεῖν non dicam omnium, sed mel-
liorum librorum auctoritate ita
commendetur, ut a Platone pro-
fectum videatur. Tales sunt Symp.
p. 192. E. penult. ubi Clark. Coisl.
Vat. A. Vind. A. Ang. C. Ven. E.
Ἐν δνεῖν εἰς γενέσθαι exhibent.
Ib. p. 211. C: ἀπὸ δνεῖν ἐπὶ¹
πάντα, quae vulgata eademque
optimorum, quamvis non plurimo-
rum librorum lectio est. Leg.
L. I. p. 638. E: (Ὥρη) ἀμφὶ²
σβητοῦντα ὑμῖν πόλεσι δνεῖν τῷ
λόγῳ διαμάχοιτ' ἀν. Ita Par. A.

τειον καρπὸν ἀφαιρεῖσθαι, καὶ ὃν ἔνειν, βούλει σοι λέγω; Πάντα γε. Φαίνεται μοι, ὥσπερ καὶ ὄνομάξεται δύο ταῦτα ὄνοματα, πόλεμός τε καὶ στάσις, οὗτοι καὶ εἶναι δύο, ὅντα ἐπὶ δυοῖν τινοῖν διαφοραῖν. λέγω δὲ

Vat. CM. Vind. C. Ricard. B. Flor. AMW. Voss. Ibid. L. VI. p. 754. E: (*τίμημα*) δνεῖν μναῖν, secundum Par. A. Vat. CM. Ang. B. Flor. A. Ald. Lovan. Ib. p. 774. D. ubi eadem verba in Par. A. Vat. CM. Flor. A. leguntur, superscripta tamen in Vat. C. di-phthongo οι. Ib. L. VIII. p. 846. C: εἰτ' ἐπὶ δνεῖν εἰτ' ἐφ' ὄπόσων (masculino) secundum Par. A. Vat. CM. Pal. C. Ricard. B. Flor. ACMW. Civ. L. VIII. p. 546. C: (*διαμέτρων*) ἀρχήτων δὲ δνεῖν secundum Par. A. Ven. C. Flor. C. Tim. p. 79. D: δνεῖν δὲ ταῦν διεξόδων οὔσαιν secundum optimum Vind. CCCXXXVII. Lob. Flor. BL. Par. SY. Amb. B. Vat. M. Euthyd. p. 306. A: ἐν δνεῖν κακοῖν secundum Clark. Flor. B. et fortasse ib. paullo ante ἐν δνεῖν ἀγαθοῖν secundum Vat. B. Flor. B. Paullo frequentiores ii loci sunt, quibus ita ut nostro secundi tertiique ordinis codices δνεῖν habent, quod fortasse pro maiori eorum vel numero vel pretio hic illic contra optimos recipiendum esset, si grammatici id aut magis Atticum aut nominativum Platoni usitatum tradidissent, aut denique ita commendassent, ut sufficiente ratione et lectione nisam securi viderentur doctrinam. Sed is, qui optime de hac re praecepit, lexici rhetorici auctor apud Eustathium ad Il. T. II. pag. 333, 8. 15. 17. Lips. nihil aliud tradidit, nisi Atticos *interdum* δνεῖν pro δνοῖν dixisse, apud veteres *raro* id inveniri, esse tamen a Thucydide usurpatum, et recentiores contra analogiam dualis ita scribere. Neque Phrynicus Ecl. p. 210. Lob. δνεῖν alteri praefert, tantum *probum* esse dicit, et simul eos reprehendit, qui pro dativo utantur, quem genitivus sit; cui praecepto

in scholiis Viteberg. ad Eurip. Hec. 45. repetito Platonis locus Leg. L. I. supra significatus repugnat. Artioribus etiam finibus non magis probabiliter usum eius circumscrabit grammaticus a Bachmanno editus anecd. T. II. p. 372, 2. δνεῖν δίχα τοῦ ἀρθρον γενιγῆς ἐπαγομένης dici tradens. Denique Heraclides apud Eustathium ad Od. T. II. p. 257, 35. δνεῖν recentissimis Atticis proprium, certe Platoni alienum censuisse videatur, dum docet τοὺς Ἀττικοὺς τὴν οἱ διφθογγον εἰς τὴν ει μεταποιεῖν, τὸ δνοῖν λέγοντας δνεῖν, καὶ τὸ οἵνοι οἴκει, καὶ τὸ ποῖος πεῖος. Nulla igitur caussa est, cur nostro loco Platonein δνεῖν scripsisse statuamus eamque formam ei unius adeo aut paucorum non optimorum codicum gratia impertiamus, quod Bekkerus pleniusque fecit. Cf. Criton. p. 52. A. 162, 16. (ubi Stallbaumius de codicibus vehementer falsus est.) Gorg. 473. D. 59, 7. 481. D. 77, 19. (quo loco δνεῖν Bekker eo magis suspectum esse debebat, quod in glossemate iteratum vide-ret.) 493. D. 101, 13. Theaet. 187. B. 271, 5. (ubi Stallbaumius δνοῖν tenens parum sibi constitut.) Crat. 418. D. 75, 21. (ubi idem vulgatain in nullo codice praeter Par. E. et Zittav. exstantem recte deseruit.) Symp. 192. E. 4. 408, 12. (ubi Bekkerus falso in Clark. δνεῖν legi perhibet.) Phaedon. 101. B. 93, 10. 102. D. 96, 15. Civ. VIII. 587. B. Tim. 53. C. 66, 19. 56. E. 73, 5. 63. C. 85, 14. Axioch. 366. C. 509, 33. Parm. 142. E. 36, 1. quo loco Bekkerus coniunctis Ven. A. Par. I. tribuit, quod singulis ib. 129. A. 8, 6. 143. D. E. 37, 19. 38, 1. 4. et Ambrosiano Civ. I. 351. E. concedendum non putavit. Eandem

τὰ δύο, τὸ μὲν οἰκεῖον καὶ ἔνγγενὲς, τὸ δὲ ἄλλότριον καὶ ὁθνεῖον. ἐπὶ μὲν οὖν τῇ τοῦ οἰκείου ἔχθρᾳ στάσις κένληται, ἐπὶ δὲ τῇ τοῦ ἀλλοτρίου πόλεμος. Καὶ οὐδέν γ', ἔφη, ἀπὸ τρόπου λέγεις. "Ορα δὴ καὶ εἰ τόδε **C** πρὸς τρόπου λέγω. φημὶ γὰρ τὸ μὲν Ἑλληνικὸν γένος αὐτῷ αὐτῷ οἰκεῖον εἶναι καὶ ἔνγγενὲς, τῷ δὲ βαρβαρῷ ὁθνεῖον τε καὶ ἄλλότριον. Καλῶς γε, ἔφη. "Ἑλληνας μὲν ἄρα βαρβάροις καὶ βαρβάρους "Ἑλλῆσι πολεμεῖν μαχομένους τε φήσομεν καὶ πολεμίους φύσει εἶναι, καὶ πόλεμον τὴν ἔχθραν ταύτην κλητέον. "Ἑλληνας δὲ "Ἑλλησιν, ὅταν τι τοιοῦτο δρῶσι, φύσει μὲν φίλους εἶναι, νοσεῖν δ' ἐν τῷ τοιούτῳ τὴν Ἑλλάδα καὶ στασιά-**D** ζειν, καὶ στάσιν τὴν τοιαύτην ἔχθραν κλητέον. Ἐγὼ μὲν, ἔφη, συγχωρῶ οὕτω νομίζειν. Σηόπει δὴ, εἶπον,

fere, quam nos in Platone, in Thucydide normam sequitur Pop-
po Vol. I. p. 224. sed Phrynichi sententiam de dativo fortassis haud spernendam dicit.

οὐθνεῖον] Pollux III. 55: τὸ δὲ οὐθνεῖος ποιητικάτερον. Πλάτων δὲ αὐτῷ μέχρι τοιούτῳ. Harpocratio: οὐθνεῖος ἐν τῷ κατὰ Στρατούλεοντος ἀντὶ τοῦ ἄλλότριος, ὡς καὶ παρὰ Πλάτωνι ἐν πρώτῳ Νόμων. (p. 629. E: τὸν οὐθνεῖον τε καὶ ἔξωθεν πόλεμον.) Photius: οὐθνεῖος. ἄλλογενῆς, ἔνος, ἄλλότριος. Ἰσαῖος καὶ Πλάτων. Cf. Protag. p. 316. C.

οὖν] om. Ven. B. Vind. DE. Mon. B. Vat. H. et in sec. edit. Stallbaumius, quod haud dubie ex glossemate ortum sit. Temere.

τῇ τοῦ οἰκείου] τῇ Mon. B. tan-
tum in margine et, ut videtur, a
m. s. habet.

οὐδέν] οὐδὲ Vind. F. Ang. B.
Vat. H.

γ'] γε Lob. Vind. BEF. Flor.
ACTV.

ἀπὸ τρόπου] ἀποτρόπου Bas.
ab. Cf. Bastius ad Gregor. p. 211.

καὶ εἰ] καὶ Vind. F. εἰ καὶ
Mon. B. Ang. B. καὶ, εἰ Astius
in pr. et Stallbaumius in sec. ed.
Cf. Vol. I. p. 134, b.

G τρόπου] τρόπον Par. D.

αὐτὸν] om. Mon. B.

αὐτῷ] αὐ. Vind. F.

γ'] γ' Ang. B.

πολεμεῖν μαχομένους] Ita Mon.

B. sed superscriptis β α. μαχομέ-
νους πολεμεῖν Vind. F. Ang. B.
Flor. R. et margo A. quem ver-
borum ordinem scriptor non quod
πολεμεῖν μαχομένους plane in
unam notionem coēant, quemad-
modum Stallbaumius statuit, sed
ideo improbasse videtur, quod non
tantum pugnantes, sed omni tem-
pore πολεμίους φύσει Græcos et
barbaros significare vellet.

φήσομεν] post καὶ Par. K.

πολέμους] πολέμους Vind. F.

τοιοῦτο] Ita Par. A. Lob. Vind.
DEF. Vat. BH. Ven. BC. Ang.
B. Flor. ACRTV. Bekkerus et in
tert. Astius. τοιοῦτον reliquae
cum reliquis codicibus editiones.

φύσει μὲν] post φίλους Vat.
B.

νοσεῖν] νοσεῖ cum litura in fine
Vind. F.

δ'] δὲ Lob. Vind. B.

τῷ] om. Vind. F. Ang. B. Flor.

R. καὶ στάσιν — νομίζειν.] om. D
Lob. Vind. B. Vat. BM.

συγχωρῶ] ἔνγκ. Vind. DEF.
Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor.
ACRT. et recentiores edd.

ὅτι ἐν τῇ νῦν ὁμολογουμένῃ στάσει, ὅπου ἂν τι τοιοῦτον γένηται, καὶ διαστῆ πόλις, ἐὰν ἔκατεροι ἔκατέρων τέμνωσιν ἀγροὺς καὶ οἰκίας ἐμπιπρῶσιν, ὡς ἀλιτηριώδης τε δοκεῖ ἡ στάσις εἶναι, καὶ οὐδέτεροι αὐτῶν φιλοπόλιδες· οὐ γὰρ ἂν ποτε ἐτόλμων τὴν τροφόν τε καὶ μητέρα κείρειν· ἀλλὰ μέτριον εἶναι τοὺς καρποὺς ἀφαι-
465 ρεῖσθαι τοῖς ιρατοῦσι τῶν ιρατουμένων, καὶ διανοεῖται Ε
σθαι ὡς διαλλαγησομένων καὶ οὐκ ἀεὶ πολεμησόντων.
Πολὺ γὰρ, ἔφη, ἡμερωτέρων αὕτη ἡ διάνοια ἐκείνης.
Τί δὲ δή; ἔφην· ἦν σὺ πόλιν οἰκίζεις οὐχ Ἑλληνὶς
ἔσται; Δεῖ γ' αὐτὴν, ἔφη. Οὐκοῦν καὶ ἀγαθοί τε καὶ
ἡμεροι εἴσονται; Σφόδρα γε. Ἀλλ' οὐ φιλέλληνες; οὐδὲ
οἰκείαν τὴν Ἑλλάδα ἡγήσονται οὐδὲ κοινωνήσουσιν ὄν-
περ οἱ ἄλλοι ἵερῶν; Καὶ σφόδρα γε. Οὐκοῦν τὴν πρὸς

οὔτω νομίζειν] ἔντω νομίζειν
Mon. B. om. Fic. (Assentior equi-
dem.)

Σκόπει δὴ] vides —? Fic.
ἐν τῇ νῦν — διαστῆ πόλις] in
seditiosa civitate Fic.

ὁμολογουμένῃ] ὁμολογουμένη
Vat. H. ὁμονυμένη cum ω super
δ et int. vers. addito η post γ
Vind. D.

τοιοῦτον] Ita Par. A. Ven. B.
Vind. E. Vat. H. Flor. ACV.
τοιοῦτο reliqui cum editis ante
Bekkerum.

ἔκατεροι] ἔκατέροις Vind. E.
τέμνωσιν] τέκνωσιν idem.
ὡς] om. idem. Est anacoluthon.

ἀλιτηριώδης] ἀλιτ.. Vind. B.
Timaeus lex. p. 23: ἀλιτηριώδες.
ἄμαρτωλὸν ἡ πλάνον. ἄλη γὰρ
ἡ πλάνη καὶ ἡ ἄμαρτία. An igitur
neutrūm hoc loco invenit? Cf.
reliqui loci a Ruhnkenio laudati,
qui plura de hac voce ad scholia
dicturus erat, et quos citavit
Wernsdorfius ad Himer. p. 138.
perniciosa Fic. immo impia.

ποτε] ποτ' Vind. F. Ang. B.
μέτριον εἶναι] satis esse fa-
ctum putarent Fic. Similiter Ste-
phanus annot. p. 21. ἡγοῦντο vel
ἐνόμιζον aut aliud eiusdem signi-
ficationis verbum deesse putabat.

Mihi infinitivus ad praegressum
δοκεῖ referendus videtur.

τῶν ιρατουμένων] aliorum Fic. E
διαλλαγησομένων] διαλλαγη-
σομένω Ven. B. a m. pr.

Πολὺ] πολλὴ, in marg. a m.
s. λὺ, Mon. B. profecto Fic.
γὰρ] om. Vind. D.

ἡμερωτέρων] ἡμερωτέρα Vind.
E.

ἐκείνης. Τί δὲ δή;] om. Fic.
οἰκίζεις] νομίζεις Par. K. sec.
Bekk.

Ἑλληνὶς] Ἑλληνες Vind. F.
ἔσται] om. Fic.

γ'] γε Vind. F.
ἔφη] ἔφην Vind. D.

ἡμεροι] ἡμέτεροι Vind. F. Ang.
B.

ἔσονται] om. Fic. In Vind. B.
nulla interpunctio, in Ald. pun-
ctum est.

Ἄλλ' οὐ] Quare —. Fic.
φιλέλληνες] φιλλέληνες Vind.
E.

οὐδὲ] οὐδ' Vind. F. Ang. B.
Flor. R. nempe —. Fic.

οἰκείαν] οἰκίεν Ven. B.
ὄνπερ] ὄσπερ Vind. BD. ut
Fic.

οἱ ἄλλοι] οἱ om. Ven. C. Par.
DK. Vind. F. Mon. B. Ang. B.
Flor. U. editi ante Bekkerum.

Καὶ] om. Vat. H.

471 τοὺς Ἐλληνας διαφορὰν, ὡς οἰκείους, στάσιν ἥγήσονται καὶ οὐδὲ ὀνομάσονται πόλεμον; Οὐ γάρ. Καὶ ὡς διαλλαγησόμενοι ἄρα διοίσονται; Πάνυ μὲν οὖν. Εὔμενῶς δὴ σωφρονιοῦσιν, οὐκ ἐπὶ δουλείᾳ πολάζοντες οὐδ' ἐπ' ὀλέθρῳ, σωφρονισταὶ ὅντες, οὐ πολέμιοι. Οὕτως, ἔφη. Οὐδ' ἄρα τὴν Ἐλλάδα Ἐλληνες ὅντες κερδοῦσιν οὐδὲ οἰκήσεις ἐμπρήσονται οὐδὲ ὁμολογήσονται οὐδὲ οὐδέτη πόλει πάντας ἔχθροντος εἶναι, καὶ ἀνδρας καὶ γυναικας καὶ παιδας, ἀλλ' ὀλίγους ἀεὶ ἔχθροντος

B τοὺς αἰτίους τῆς διαφορᾶς, καὶ διὰ ταῦτα πάντα οὔτε τὴν γῆν ἐθελήσονται κείρειν αὐτῶν, ὡς φίλων τῶν πολλῶν, οὔτε οἰκίας ἀνατρέπειν, ἀλλὰ μέχρι τούτου ποιή-

471 τοὺς] om. Flor. T.
οἰκείους] οἰκεῖον Vind. D.
ὄνομάσονται] ὄνομάζονται Vind. F. ante corr.

Ἐνύμενῶς δὴ σωφρονιοῦσιν] εν
μὲν ὡς δὴ σωφρονοῦσιν Vind. F.
σωφρονοῦσιν etiam Ald. Bas. a.
habent. pia itaque sententia et
temperato animo rem agent Fic.
δουλείᾳ] δουλείαν Vind. BF.
Vat. M.

ἐπ' ὀλέθρῳ — πολέμιοι] ἐπολέθρῳ — πολέμιοι Vind. F. ἐπολέμιοι, omissis mediis, Ang. B.
In Ald. Bas. ab. Steph. comma
post ὀλέθρῳ omissum et post πολάζοντες positum est.

σωφρονισταὶ] om. Fic.
οὐ πολέμιοι] ως οὐ π. Vind.
E. Vat. H. Flor. AC.

αὐτοῖς] Ita Mon. B. Flor. T.
sibi Fic. om. Lob. Vind. B. Vat.
BM. Ven. B. αὐτὸν Ven. C. Par.
DK. αὐτοῖς Vind. DEF. (Par. A.
Ang. B. Vat. H. Flor. ACRUV.)
cum editis; quod, quum proxime
sequens εἶναι cogitationem reverti
ad verbum ὁμολογήσονται iubeat,
minus aptum videtur.

ἀεὶ] om. Lob. Vind. B. Mon.
B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK.
Flor. U. admodum Fic.

B διαφορᾶς] διαφρορᾶς Vind. F.
Vat. H. Idem exhibere videntur
Flor. ACV. e quibus Stallbaumius
διαφορᾶς pro varia lectione af-

fert. Vulgo maiorem interpunctionem addunt.

διὰ ταῦτα] διαταῦτα Vind.
BDE.

τὴν] om. Lob. Vind. BD. Vat.
BM.

ἐθελήσονται] ἐθελήσονται Bas.
ab. ἐθέλονται Ven. B. Vind. E.
Vat. H. Flor. ACV.

οἰκίας] οἰκείας Ald. Bas. ab.
μέχρι οὐ] Ita Par. A. Vind. F.
Ven. C. Par. D. Ang. B. Mon. B.
Flor. RU. μέχοις Lob. Vind. BD.
Vat. M. μέχοις οὐ reliqui et editiones ante Bekkerum.

ἀναιτίων] ὅν — Vind. D. a m.
s. int. vers. habet. ἀναιτίως, quod
docto cuidam viro in mentem ve-
nisce Stallbaumius narrat, non
optimae notae vocabulum et vix e
codicibus recipiendum, nedum e
coniectura vulgatae, quae nihil
offensionis habet, substituendum
videtur. Ceterum nescio an hoc
respexerit Proclus T. III. pag. 62.
Cous. διὰ ταῦτα καὶ ὃ ἐν Πολι-
τείᾳ Σωκράτης ἀξιοῦ δύναμιν
ἔχειν τὴν πόλιν τοσάντην, ὅση
καὶ αὐτὴν καὶ τοὺς γείτονας αὐ-
τῆς ἀδικονμένους ὑπὲρ ἀλλήλων
δύναται σώζειν, ως τοῦ πολεμι-
κοῦ τέλους ὅντος τοῦ δικαίου
καὶ οὐ τῆς νίκης οὐδὲ τῆς λεψυ-
φαγώγιας οὐδὲ ἄλλου τινὸς τοι-
ούτου.

ἀλγούντων] ἀλγοῦντες Bas. b.
Etiam Lob. Ven. B. ες super ων

σονται τὴν διαφορὰν, μέχρι οὗ ἂν οἱ αἴτιοι ἀναγκασθῶσιν ὑπὸ τῶν ἀναιτίων ἀλγούντων δοῦναι δίκην. Ἐγὼ μὲν, ἔφη, δμολογῶ οὕτω δεῖν πρὸς τοὺς ἐναντίους τοὺς ἡμετέρους πολίτας προσφέρεσθαι, πρὸς δὲ τοὺς βαρβάρους ὡς νῦν οἱ Ἑλληνες πρὸς ἀλλήλους. Τιθῶμεν δὴ καὶ τοῦτον τὸν νόμον τοῖς φύλαξι, μήτε γῆν τέμνειν C μήτε οἰκίας ἐμπιπλάναι; Θῶμεν, ἔφη, καὶ ἔχειν γε καλῶς ταῦτά τε καὶ τὰ πρόσθεν. ἀλλὰ γάρ μοι δοκεῖς, ὁ Σώκρατες, ἐάν τις σοι τὰ τοιαῦτα ἐπιτρέπῃ λέγειν, οὐδέποτε μνησθῆσθαι ὃ ἐν τῷ πρόσθεν παρωσάμενος πάντα ταῦτα εἴρηκας, τὸ ὡς δυνατὴν αὔτην ἡ πολιτεία γενέσθαι, καὶ τίνα τρόπον ποτὲ δυνατή. ἐπεὶ δὲ γε, εἰ

exhibitent. Ficinus hoc praetermisit: *quatenus, qui discordiae causam dederunt, insontibus poenas solvant.* Significatur autem necessitas innocentibus quoque damnum inferendi, quo nocentes punire et ad pacem adigere cogantur.

μὲν] μὲν οὖν Vind. F. Ang. B. Flor. R.

δεῖν] δὴ Vind. D.

ἐναντίους] Ἑλληνας Mon. B. Flor. U. quem dum Stallbaumius in pr. ed. pro τοὺς ἐναντίους τοὺς ἡμ. habere ait τοὺς Ἑλληνας τοὺς ἀλλήλους: καὶ τοῦτο: τιθῶμεν δὴ τοῖς Ἑλλησι μήτε — triplicem varietatem, quae prorsus eadem in Mon. B. exstat, perperam hunc unum in locum coniecit, atque in sec. pro δεῖν πρὸς τοὺς ἐναντίους Monacensem et Florentinum πρὸς τοὺς Ἑλληνας τοὺς ἀλλήλους: καὶ τοῦτο: τιθῶμεν exhibere docens errorem non corredit, sed auxit. Ἑλληνας etiam Ficinus legisse videtur, qui οὕτω — προσφέρεσθαι ita esse Graecis pugnantibus repugnandum interpretatus est.

τοὺς ἡμετέρους] τοὺς om. Bas.b. προσφέρεσθαι, προσφέρεσθαι: Mon. B. ante corr. προσφέρεσθαι. e corr. ut Ald. Bas. ab. Atque ita saepe in illo codice punctorum, quae personae mutationem indicant, alterum erasum est.

PLATONIS OP. II.

Stephanus, Bekkerus, Stallbaumius et in tert. Astius colon fecerunt.

ἀλλήλους:] ἀλλήλους:, καὶ τοῦτο. Mon. B. Ficinus quum προσφέρεσθαι non recte intellexisset, hic aliquid interpolavit: *contra barbaros autem ita animatos esse debere, ut nunc Graeci contra Graecos affecti sunt.*

Tiθῶμεν — νιεῖς· D.] excerpit Stobaeus serm. XXXI. p. 258. Sed Trinc. omisit.

καὶ] om. Fic. τοῖς φύλαξι] τοῖς Ἑλλησι Mon. B. commate non postposito, sed anteposito. Eandem interpunctionem in Bekkeri editionem typothetae, opinor, culpa illatam Astius in tert. et Stallbaumius in utraque adsciverunt.

ταῦτα τε] ταῦτα γε Lob. Vind. C BDE. Ven. B. Vat. HM. Flor. ACTV. Bas. b.

γάρ] om. Stob. cod. A.

μοι] om. Vind. E.

τις σοι] τι σοι Ang. B. Flor. R. τισι Vind. F.

ἐπιτρέπῃ] ἐπιτρέποι Vat. B. Lob. ἐπιτρέπει Flor. V. ἐπιτρέπειν Ven. C.

μνησθῆσθαι] μνησθῆσεται Vat. H. et, sup. σθ, Flor. T. μνήσεσθαι Stob. cod. A.

ταῦτα] ante πάντα Lob. Vind. B. Vat. M. τὰ τοιαῦτα Ven. C.

γε] om. Flor. T.

G

γένοιτο, πάντ' ἀν εἴη ἀγαθὰ πόλει ἥ γένοιτο, καὶ ἡ
D σὺ παραλείπεις, ἐγὼ λέγω, ὅτι καὶ τοῖς πολεμίοις ἄριστ'
ἀν μάχοιντο τῷ ἥκιστα ἀπολείπειν ἀλλήλους, γιγνώ-
σκοντές τε καὶ ἀνακαλοῦντες ταῦτα τὰ ὄντα ἔαν-
τοὺς, ἀδελφοὺς, πατέρας, γίνεται· εἰ δὲ καὶ τὸ θῆλυ συ-
στρατεύοιτο, εἴτε καὶ ἐν τῇ αὐτῇ τάξει εἴτε καὶ ὅπισθεν
ἐπιτεταγμένον, φόβων τε ἔνεκα τοῖς ἐχθροῖς καὶ εἰ ποτέ
τις ἀνάγκη βοηθείας γένοιτο, οἶδ', ὅτι ταῦτῃ πάντῃ

πάντ'] πάντα Lob. Vind. BD.
πάν, omisso τ' et sequentibus sex
vocabus, Ang. B.

εἴη] οὖτι Flor. C.

ἀγαθὰ πόλει] ἀγαθὴ πόλις
Vind. BD. In Lob. et Vat. M. η
super ἡ et ις super ει adscriptum.
ἀγαθὰ πόλεως Vat. B.

ἥ γένοιτο] om. Stob. cod. A.

In Mon. B. punctis sunt notata. Ficinus h. l. *non dubito* addens, deinde ἐγὼ λέγω omittens sensum non male reddidit. Atque etiam in Graecis verbum, quo ὅτι γε etc. spectent, mihi non, ut Astio et Stallbaumio, omissum, sed per anacoluthon mutatum videtur, pro ὁμολογῶ vel alio similis significatioonis illato λέγω, quod .quum ob praepositum ἐγὼ nihil amplius, quam supplementum verborum ἡ σὺ παραλείπεις exhibere et per copulam eis coniunctum esse deberet, omissa copula, quemadmodum in contra positis solet omitti, in locum verbi ὁμολογῶ successit. Similiter Latine si dicas: *nam futurum esse, ut, haec si extiterit rei publicae forma, ei civitati, in qua extiterit, omnia bona contingant, etiam quae tu praetermittis, ego edico*, exspectationi verbis primis motae extremum edico utcunque satisfaciat. Itaque comma post παραλείπεις a recentioribus omissum restitui. Stallbaumius in sec. ed. verba ἡ σὺ παραλείπεις ἐγὼ λέγω lineis transversis ab reliqua oratione separavit.

D μάχοιντο] μάχοιτο Vind. E.
Vat. H. Flor. ACTV. Stob. Gesn.
Ald. Bas. ab.

τῷ] τὸ Vind. F. Vat. H.
ἀπολείπειν.] ἀπολίπειν Vind.

D. γιγνώσκοντές] γιγνώσκ. Lob.
Vind. BD. Mon. B. (Flor. ACTUV.)
Stob. Ald. Bas. ab. Steph. tacen-
tibus Bip. V. ad p. 472. A. co-
gnoscentes se invicem esse propin-
quos Fic.

τε] om. Vind. D.

ἔαντοὺς] Ita Par. A. Vind. E.
Vat. H. Flor. ACRTV. Stob. cod.
A. ἔαντοῖσος Ang. B. ἔαντοῖς
reliqui codices, Stob. Gesn. et
editi ante Bekkerum, quos sequitur
Matthiae gramm. p. 770. Mihi
accusativus quum ob codices prae-
ferendus, tum ad γιγνώσκοντές
concinnior et per se exquisitor
videtur. Conf. Bernhardy synt.
p. 122.

ἀδελφὸν] δελφὸν Vind. F.

συστρατεύοιτο] στρατεύοιτο
Vind. E. Vat. H. Flor. AC.

αὐτῇ] αὐτῇ Ald. Bas. ab.

ὅπισθεν] int. vers. Vind. F.

ἐπιτεταγμένον] ἐπιτεταγμένον
idem. ἐπιτεταγμένον Mon. B.

φόβων] Vind. F. ν int. vers.
additum habet. φόβον Vind. D.
Flor. R.

ποτέ] πωτέ Vind. F.

ταύτῃ πάντῃ] π. τ. Ang. B.
Flor. R. π. ταῦτι (ex emend.
ταύτι) Vind. F.

ἄμαχοι] ἄμαχον Vind. F.

οἴκοι] οἴκη idem.

γε] τε Lob. Vind. BF. Vat.
BM. Ven. C. Par. DK. Mon. B.
Flor. RU.

ἢ παραλείπεται] Haec Stephanus,
qui in textu cum prioribus
commate post γε facto post ἀγα-

ἄμαχοι ἀν εἶεν· καὶ οἴκοι γε ἂ παραλείπεται ἀγαθὰ,
ὅσα ἀν εἴη αὐτοῖς, δρῶ· ἀλλ' ὡς ἐμοῦ δμολογοῦντος Ε
πάντα ταῦτα ὅτι εἴη ἀν, καὶ ἄλλα γε μνοία, εἰ γένοιτο
ἡ πολιτεία αὕτη, μηκέτι πλειώ περὶ αὐτῆς λέγε, ἀλλὰ
τοῦτο αὐτὸν ἥδη πειρώμεθα ἡμᾶς αὐτοὺς πείθειν, ὡς
δυνατὸν καὶ ἡ δυνατὸν, τὰ δ' ἄλλα χαίρειν ἐῶμεν.
Ἐξαίφνης γε σὺ, ἦν δ' ἔγω, ὡσπερ καταδρομὴν 472
ἔποιήσω ἐπὶ τὸν λόγον μου, καὶ οὐ συγγινώσκεις

Theta nulla interpunctione usus est, in annot. p. 21. mavult quasi per parenthesin posita accipere, qua ratione contra verborum ordinem ἀγαθὰ ab ἂ divellitur artiusque cum ὅσα coniungitur. Ad sensum quidem verba ita construenda sunt: ὁρῶ, ὅσα ἀν εἴη αὐτοῖς ἀγαθὰ οἴκοι, ἂ παραλείπεται. Sed quoniam belli mentio praecedit, οἴκοι primum locum cum particula γε accepit, quam inversiōnem consimilis reliquorum verborum transiectio secuta est, ut iam hoc dici videatur: *ac domestica quoque praetermissa a te bona, quanta eis contingent, video.*

ὅσα] ὅσ Vind. F. Ang. B.

E πάντα ταῦτα] Ita Par. A. Lob. Vind. BF. Ven. C. Ang. B. Vat. M. Flor. R. om. Par. DK. Mon. B. ταῦτα πάντα reliqui codices editique ante Bekkerum et in pr. ed. Stallbaumius.

γε] om. Par. K. sec. Bekk.

ἡ] om. Vind. DE. Vat. H. Flor.

ACT.

αὕτη] τοιαύτη Ang. B. Flor.

RT.

αὐτὸν] post ἥδη Vind. F. Ang. B. Flor. R. αὐτοὶ Par. K. sec. Bekk.

472 ὡσπερ] post καταδρομὴν Lob. Vind. B. Vat. BM. iterum (*invassisit*) Fic.

συγγινώσκεις] γινώσκεις, praeposito a m. s. σὺ, Vat. B. συγγινώσκεις Mon. B. συγγινώσκει Vat. H. συγγινώσκεις Astius. συγγινώσκεις Bekkerus et Stallbaumius, cuius silentium Florentinos codices omnes cum Stephano et prioribus γ ante ν omittere signi-

ficat; solet enim magis Atticam huius verbi scripturam exhibentes singulatim indicare, ut paulo ante p. 471. D. γιγνώσκοντες in Flor. R. scriptum esse testatus est. Bekkerus negligentior in hac re fuit nec aliter, nisi per gravioris discrepantiae occasionem praetermissum in suis codicibus γ illud ostendit, ut hoc ipso loco de Vind. B. Mon. B. Par. K. tacens Vaticanum B. γιν. habere fortuito prodidit. Similiter Menon. p. 71. B. (326, 17.) vulgatain γιγνώσκῃ per codices retinendam non fuisse declaraturus γιγνώσκει in quinque suorum, γινώσκει in septem esse refert. Iam quum ipse ubique γιγνώσκω scribat, eam scripturam videri potest saltem in uno omnium optimo constanter servatam inventisse. Verum tamen in simili re animadversam optimi constantiam silentio non praeteriit et Parisensem A. semper γίγνομαι habere ad Civ. L. I. p. 329. D. adnotavit. Quod quum mémorandum putaverit, profecto verbi γιγνώσκω scripturae certe non minus controversae tantam auctoritatem detraxisse non videtur. Iure igitur, quum nusquam contrarium demonstratum sit, sumere licebit, quemadmodum Clarkianus interdum, ut Menon. l. c. Phaedon. p. 60. A. 116. C. 8. 82. D. 100. C. (his duobus in locis altero γ superscripto) γινώσκω exhibit, idem in Par. A. nonnunquam legi, ideoque per codices non ubique nec simpliciter, ut γίγνομαι, reiiciendum putare. Non magis grammaticorum caussa reiiciendum videtur.

στραγγευομένῳ. ἵνως γὰρ οὐκ οἰσθα, ὅτι μόγις μοι τὸ δύο

Idem Eustathius, qui γιγνώσκω rectius et Atticis usurpatum dicit, alterum et suavius sonans et antiquius et Homero frequentatum statuit ad Il. T. III. pag. 327, 32. Lips. Τὸ δὲ γίνωσκε καὶ ἀπλῶς τὸ γινώσκειν οἱ μὲν ὑστερον Ἀττικοὶ μετὰ καὶ δευτέρου γάμμα γιγνώσκειν φασὶν, ὡς καὶ ὁ πωμικὸς δηλοῖ, καθά καὶ τὸ γίνεσθαι γίγνεσθαι. "Ομῆρος μέντοι ἀρχαῖντερον ἄγνοεῖ καὶ ἐν ἀμφοῖν τὸ δεύτερον γάμμα. ἔστι δὲ δύμως ἀκριβέστερον τὸ τῶν ὑστερον, εἰ καὶ εὐφωνότερον τὸ τοῦ Ομήρου. Moeris autem Atticista, qui γίγνεται Ἀττικῶς, γίνεται Ἑλληνικῶς dici observat, de simili inter γιγνώσκω et γινώσκω intercedente discriminē facit. Denique ad rationem quod attinet, vera haud dubie meritoque a Valckenario ad Eurip. Phoen. 1396. probata est Heraclidis doctrina apud Eustathium ad Od. T. II. p. 25, 6. sqq. prioris γ in γίγνομαι et γιγνώσκω originem ab altero duplicato repetentis alterumque proinde necessarium et primitivum statuentis; et tamen hoc alterum γ temporis progressu in utroque verbo paullatim vel euphoniae gratia vel originis ignoratione obliterari coemptum tandem prorsus evanuisse recentioris aevi monumenta demonstrant. Quum igitur de certo quodam scriptore quaeritur, utrum veterem an recentiorem consuetudinem secutus esse videatur, si codices satis vestuti fideque digni supersunt, ad eos rem redire appetet; eorumque testimonio Plato γίγνομαι nunquam, γινώσκω interdum, sed raro scripsisse censendus est. Quibus tamen in locis scripserit, Bekkeri culpa factum est, ut diiudicari nondum possit: nostro, quinquam Vat. H. alterum γ habeat, quum sex mei totidemque Florentini et Vat. B. et secundum Bipontinorum silentium Par. K. et editiones antiquae id omittant, certe non temere idem fecisse arguar.

στραγγευομένῳ] Hanc ab I. Casp. Orellio in epist. crit. Conr. Orellii Memnoni addita p. 334. ex coniectura propositam, a Stallbaumio in pr. ed. probatam, in secunda receptam lectionem vulgatae στρατευομένῳ, quae in omnibus codicibus exstat, a manu antiqua in Vind. F. subscriptam huius libri auctoritate ad ipsius probabilitatem accedente alteri praferendam putavi quamquam et ipsi tolerabili. Poterat enim Socrates operam in describenda re militari positam cum ipsius militiae laboribus comparans licentiam, quae militibus in expeditionibus permitti solet, sibi negatam, vel dum ipse belli causa peregre abesset, incursionem in suos fines factam iocose conqueri, vel defatigationis suae rationem non habitam dolere, quomodo Ficinus στρατευομένῳ interpretatus est militiae laboribus iam defesso. Verum sequentia docent eorum, quae militanti ignosci aut condonari debeant, nihil eum de se confiteri: cunctationi et timori suo ignoscendum fuisse dicit, ὅτι εἰνότως ἄρα ὥκνον τε καὶ ἐδεδοίσειν οὐτῷ παράδοξον λέγειν λόγον. Quae ita comparata sunt, ut explicacionem verbi στραγγεύεσθαι continere videantur. Cf. Valckenarius animadv. ad Ammon. L. II. c. 13. ubi inscius huius loci interpretem et lectionis nostrae patronum egit: adeo omnia, quae de verbi origine, significatione, usu, in primis de eius perpetua et tantum non ubivis facta cum altero στρατεύεσθαι permutatione disputat, hic convenient. — Astius στρεφομένῳ coniiciebat, quod ad significationem non multum differt, ad mutationis facilitatem cum illo non comparandum est.

οὐκ οἰσθα] οὐκοῦ, in marg. vulgata a m. s. adscripta, Mon. B.

μοι] punctis notatum est in Mon. B.

δύο] Ita Ven. B. Vind. DE.

κύματε ἐκφυγόντι νῦν τὸ μέγιστον καὶ χαλεπώτατον τῆς

Vat. H. Reliqui codices editique ante Bekkerum δύω, quam formam a veteribus grammaticis Fischero ad Well. II. p. 155—158. et Sturzio ad Maitt. p. 46. commemoratis sine dubitatione Atticis concessam, a Dawesio et recentioribus, quos Matthiae gramm. p. 262. enumerat, poëtarum potissimum auctoritate et metri necessitate negatam Platonis codices singulares vel bini nonnunquam, plures et potiores perpaucis in locis nec usquam, nisi fallor, non dissentientibus quibusdam minime malis exhibent, ut fere abiudicanda ab eo videatur. Nam Phaedr. pag. 237. D. ut ab eis initium faciam, in quibus δύω vulgatum erat, δύω τινέ ἐστον ἵδεα ex XX. Bekkerianis tantum tres, Vat. A. Ven. C. Par. E. tueruntur, reliqui cum Lob. Goth. Mon. Stob. δύο habent, ut, etiamsi verum sit, quod Stallbaumius de Florentinis significat, in uno C. δύο, in reliquis sex δύω legi, tamen illud satis tutum habeamus. Idem statuendum de Symp. p. 178. B. ubi δύο τούτω a Bekkero secundum XII. inter XVII. repositum et in Lob. et Zitt. repertum a Stallbaumio ex nullo Florentinorum aut Vindobonensium allatum est. Et Epist. VII. p. 333. D. inter novem Bekkeri codices unus Vind. B. ex quinque Florentinis duo ἀδελφῶ δύω cum Stephano, reliqui δύο habent. Non magis vulgatum δύο unius vel paucorum dissensione dubium fieri potest his locis: Symp. 180. D: ἐπει δὲ δὴ δύω ἐστόν Par. K. Ib. δύω τῷ θεά Par. DK. Apol. 20. A: δύω νίξε Par. D. Vind. B. Hipp. mai. 301. D: οὐ γὰρ εῖς ἐσμὲν, ἀλλὰ δύω Par. e. Gorg. 481. D: δύω ὄντε Par. V. Soph. 228. E: δύω παθήματε Ven. A. Phaedon. 60. B: δύω ὄντε Ven. B. Civ. II. 360. B: δύω τοιούτω δακτυλίω Vind. B. Par. DK. III. 391. C: νοσήματε δύω Vind. B. 411. E: δύω τέχνα Vind. BE. Flor. T. IIII.

439. E: δύω ἡμῖν ὥρίσθω εἰδη
Vat. M. Polit. 265. A: δύω τινέ
δύω Lob. Iam pauci supersunt
secundum codices magis vel dubii
vel contrariam in partem inclinan-
tes: Tim. 31. B: δύω δὲ μόνω
secundum Vat. B. Ven. C. Vind.
A. et superscripto δύο Flor. BC.
et int. vers. Par. SY. Lob. δύο
— secundum reliquos, Par. A.
Vind. F. CCCXXXVII. etc. qui
praevalent. Soph. 254. D: τῷ γε
δύω sec. Clark. Coisl. Ven. AB.
Vind. A. Par. CFH. — δύο sec.
Vat. A. Ven. CD. Par. BE. Lob.
(Flor.) Phileb. 53. D: ἐστὸν δή
τινέ δύω sec. Clark. Coisl. Ven.
AD. Par. BCFH. — δύο secund.
Vat. A. Ven. BC. Par. E. Ang.
C. Lob. (Flor.) Polit. 269. E:
δύω τινέ θεά sec. Coisl. Ven.
BD. Vind. A. Par. BCFH. Lob.
(qui τινέ primo loco ponit.) δύο
— sec. Clark. Vat. A. Ven. AC.
Par. E. (Flor.) Postremo Hipparch. 228. E. ubi Bekkerus vul-
gatum δύο ante τῷ πιγράμματε,
quod tamen etiam in Lob. legitur,
infirma Barberini et Pal. B. au-
ctoritate contra Clark. Coisl. Vat.
A. Ven. BCD. Par. BCEFG. Ang.
C. Stallbaumius vero tacens de
Clark. pariter atque de VII. Flor.
unoque Vind. tenuit. Hic sane
δύω scribendum erat. Sed nostro
loco, quamvis a codicibus multo
firmius δύω primo aspectu vide-
tur, non frustra Ven. B. et Vind.
E. Vat. H. ab optimo, quem ille
in multis, hi in plerisque sequuntur,
discessionem fecerunt, quum
idem Par. A. L. VI. p. 509. D.
inter omnes unus δύω αὐτῷ εἶναι
exhibens huius rei arbiter non in-
corruptus appareat. Et Vaticanini
quidem dissensio suspecta eo esse
potest, quod L. III. p. 393. A.
in versu Homericō Ἀτρεΐδα δὲ
μάλιστα δύο cum Amb. C. ha-
bet: in Vind. et Ven. nulla eius-
modi suspicio cadit. Denique ali-
quid tribuendum erat Vindobo-
nensi D. diversi generis libro.
ἐκφυγόντι] ἔφυγον. τι Par.

τρικυμίας ἐπάγεις· ὃ ἐπειδὰν ἵδης τε καὶ ἀκούσης, πάνυ συγγνώμην ἔξεις, ὅτι εἰκότως ἄρα ὕκνουν τε καὶ ἐδεδοίκειν οὕτω παράδοξον λέγειν λόγον τε καὶ ἐπιχειρεῖν διασκοπεῖν. "Οσῷ ἀν, ἔφη, τοιαῦτα πλείω λέγης, ήτ-

B τον ἀφεθήσῃ ύφ' ἡμῶν πρὸς τὸ μὴ εἰπεῖν, πὴ δυνατὴ γίγνεσθαι αὕτη ἡ πολιτεία. ἀλλὰ λέγε καὶ μὴ διάτοιβε. Οὐκοῦν, ἦν δ' ἐγὼ, πρῶτον μὲν τόδε χοὴ ἀναμνησθῆναι, ὅτι ἡμεῖς ἔητοῦντες δικαιοσύνην οἶόν ἔστι καὶ ἀδικίαν δεῦρο ἥκουμεν. Χοή· ἀλλὰ τί τοῦτο; ἔφη. Οὐδέν.

DK. Mon. B. Flor. U. φυγόντι
margo Par. D. ἐφυγόντε Vind.
D. ἐφύγοντι Bas. b.

[τρικυμίας] τρικυμίας Vind. E.
[ἐπάγεις] ἐπάγεις; Mon. B. ἐ-
πάγεις, recentiores.

πάνυ συγγνώμην] π. γε συγγ.
Vind. D. πανηγγνώμην, συ in
in. a m. s. addito, Mon. B.

ὕκνουν τε καὶ] om. Fic.

ἐδεδοίκειν] ἐδεδοίκην Flor. V.
ἐδεδοίκη Astius in sec. et tert.
Bekkerus et Stallbaumius. Scilicet
Par. A. Ven. C. in ultima
correcti sunt. Confer Vol. I.
p. XXXII. sq.

λέγειν λόγον] Ita Par. ADK.
Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C.
λέγειν λέγειν ante corr. ut vide-
tur, Mon. B. λόγον λέγειν idem
correctus cum reliquis codicibus
editisque ante Bekkerum, quos in
pr. ed. Stallbaumius secutus
in sec. invitatus, ut ex eius adno-
tatione colligitur, deseruit. Fi-
cinus pro verbis λέγειν τε καὶ
ἐπιχειρεῖν διασκοπεῖν πυνη in-
gredi posuit.

λέγης] λέγεις Lob. Vind. BF.
Mon. B. Flor. ACV. Ald. Bas.
ab.

ἀφεθήσῃ] ἀφεθήσει Flor. R.
Astius, Bekkerus, Stallbaumius.
In Vind. D. ε secundae syllabae
e corr. accessit.

ύφ'] ύπδ Vind. F.

B εἰπεῖν] λέγειν Lob. Vind. B.
Vat. BM. et γρ Ven. B.

γίγνεσθαι] γίγνεται Vind. E.
Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV.
γίγνεται Vind. D.

καὶ] om. Par. K.

Οὐκοῦν] Ad hoc in m. Mon.
B. a m. pr. ἀπὸ τῶν ἐνταῦτα
λόγων μέχρι τέλους τῆς ἐ βίβλου
ἀναγγέον ὅλον. adscriptum est,
quae verba iudicium de huius par-
tis arguento ad siunnam totius
operis gravissimo continere viden-
tur, si quidem ἀναγγέον pro ἀ-
ναγναῖον accipere licet.

τόδε χοὴ] Ita Par. A. Vind.
DE. Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV.
Bekkerus et in tert. ed. Astius.
Reliqui χοὴ praepositum habent.

ἔητοῦντες] ἔητοῦντι Vat. H.

ἀδικίαν] ἀδικία Vat. B. Ven.
C. Par. D. Mon. B. Ald. Bas. a.

ἥκουμεν.] ἥκουμεν; Astius in pr.
et sec. Bekkerus et Stallbaumius;
quod ad sequentia minus aptum
videtur. Nam interrogatus Glau-
co, an hoc primum reputandum
esset, aut sine dubitatione utpote
re perpensa affirmare, aut sibi
non liquere, quo illa interrogatio
spectaret, respondere debebat:
affirmanti assentire et tamen, cur
tunc potissimum illud urgendum
esset, ambigere poterat.

Χοή· ἀλλὰ τί τοῦτο; ἔφη.
Οὐδέν. ἀλλ'] χοή: ἀλλὰ τοῦτο
ἔφη οὐδέν: ἀλλ Vind. F. cum
litura post ἔφη. Χοή. Ἀλλὰ etc.
Steph. In Vind. E. χοή omis-
sum, in Par. A. γ' ad τοῦτο ad-
iectum et a Bekkerio receptum,
a Stallbaumio propterea repudia-
tum est, quod nusquam in hac
formula additum reperiatur. Con-

ἀλλ᾽ ἐὰν εὔρωμεν, οἶον ἔστι δικαιοσύνη, ἄρα καὶ ἀνδραὶ τὸν δίκαιον ἀξιώσομεν μηδὲν δεῖν αὐτῆς ἐκείνης διαφέρειν, ἀλλὰ πανταχῇ τοιοῦτον εἶναι, οἶον δικαιοσύνη C ἔστιν; ή ἀγαπήσομεν, ἐὰν δτι ἐγγύτατα αὐτῆς ή καὶ πλεῖστα τῶν ἄλλων ἐκείνης μετέχῃ; Οὕτως, ἔφη ἀγαπήσομεν. Παραδείγματος ἄρα ἐνεκά, ην δ' ἐγὼ, ἐξητοῦμεν αὐτό τε δικαιοσύνην οἷόν ἔστι, καὶ ἀνδραὶ τὸν τελέως δίκαιον, εἰ γένοιτο, καὶ οἷος ἀν εἴη γενόμενος, καὶ ἀδικίαν αὐτὸν ἀδικώτατον, ἵνα εἰς ἐκείνους

ferri iubet Gorg. 448. B. 497. E. et Charm. 164. A. quos ipsos locos. Heindorfius cum hoc nostro comparaverat et per ellipsis verbi διαφέρει, quod Civ. I. 349. A. in plena dictione exstet, explicandos docuerat ad locum Charmidae §. 25. Mibi, quemadmodum in τι μοι τοῦτο Schaefero ad Lamb. Bosium pag. 598. et, quem is laudavit, Valckenario, ita in hac dictione et in simili τι τοῦτο; Hipp. mai. p. 293. A. verbum substantivum subaudiendum videtur: *quid hoc est? quam vim habet? quid sibi vult?* Neque vero caussam video, quae γε in tali interrogatione pronomini addi minus patiatur, quam in aliis, e. g. Hipp. mai. p. 289. B: τις γάρ ἀν αντείποι τούτῳ γε, ὁ Σωκράτες; Crat. p. 388. D: οὐδὲ τοῦτό γ' ἔχεις εἰπεῖν —; quem utrumque locum Bekkerus ita secundum codices constituit. Itaque non quo linguae usui particula repugnet, omittendam puto, sed quod minime necessaria h. l. et unius libri auctoritate parum tuta est, praesertim quoniam L. III. p. 395. A. etiam minus probabiliter in eodem codice item uno addita legatur. Cf. L. VIII. p. 554. B.

ἔστι] om. Lob. Vind. BD. Vat. BM. ἔστι Vind. F.

ἄρα] ἄρα Lob. Vind. BF. Flor. ACRTV. Ald. Bas. ab. et a m. pr. Vind. D. Mon. B.

δεῖν] om. Par. K.

τοιοῦτον] τοιοῦτο Ald. Bas. ab.

δικαιοσύνη] ή δικ. Flor. T. ipsa iustitia Fic.

ἐγγύτατα] post αὐτῆς Lob. C Vind. BD. Vat. M.

μετέχῃ] μετέχοι Lob. Vind. B. ἔφη] Maiorem interpunctionem Bekkerus posuit. In prioribus aut nulla aut minor erat.

ἐξητοῦμεν] ξητοῦμεν Lob. Vind. BDF. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. sec. Bekk. Ang. B. Mon. B. Flor. RU.

αὐτό] Ita Mon. B. a m. pr. αὐτήν a m. s.

δικαιοσύνην] δικαιοσύνη Par. K. sec. Bekk.

οἷον ἔστι] εἶναι Vind. D.

τελέως] Id ex Par. A. Vind. EF. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. accessit, in reliquis et in editionibus ante Bekkerum deest.

εἰ γένοιτο] Bekkerus ex conjectura ή γένοιτο scripsit Astiumque in tert. et Stallbaumum asseclas nactus est. Nescio, quid in vulgata omnium librorum lectione eos offenderit, quae mihi non sollicitanda videtur. Virum perfecte iustum quaesituri ea conditione rem suscepserant, si fieri et exsistere talis posset. Quis enim quaerat, quod esse non posse statuat? Utrum recte an securus illud ponerent, tum quidem parum curaverant. Sed *qua ratione* vir iustus efficeretur, ή γένοιτο, non quaesiverant.

ἀποβλέποντες, οἵοι ἀν ἡμῖν φαίνωνται εὐδαιμονίας τε πέρι καὶ τοῦ ἐναντίου, ἀναγκαζόμεθα καὶ περὶ ἡμῶν Δ αὐτῶν ὄμοιογεῖν, ὃς ἀν ἐκείνοις ὅτι ὄμοιότατος ἦ, τὴν ἐκείνης μοῖραν ὄμοιοτάτην ἔξειν, ἀλλ' οὐ τούτου ἔνεκα, ἵν' ἀποδείξωμεν, ὡς δυνατὰ ταῦτα γίγνεσθαι. Τοῦτο μὲν, ἔφη, ἀληθὲς λέγεις. Οἱει ἀν οὖν ἡττόν τι ἀγαθὸν ξωγράφον εἶναι ὃς ἀν γράψας παράδειγμα, οἷον ἀν εἴη ὁ κάλλιστος ἄνθρωπος, καὶ πάντα εἰς τὸ γράμ-

φαίνωνται] φαίνονται Bas. b.
ἀναγκαζόμεθα] ἀναγκαζόμεθα
Vind. f. Ald. Bas. ab.

D ὅτι] om. Lob. Vind. BD. Vat. BM.

ἐκείνης] Ita Par. ADK. Lob. Vind. EF. Vat. B. Ven. C. Flor. ACV. Ald. Bas. ab. ἐκείνοις reliqui codices cum Stephano et recentioribus. Et in Lob. οἱς super ἡς adscriptum est. ὄμοιος, ut Latinorum *similis*, cum genitivo construi posse quum ratio et analogia persuadet, tum grammaticorum testimonia docent. Priscianus T. II. pag. 182. Krehl. *Illi φίλος αὐτοῦ καὶ αὐτῷ, ὄμοιος, προσήκων, ξένος, συγγενῆς, ἀδελφιδοῦς καὶ τὰ ὄμοια.* Nos quoque *similis illius et illi, affinis, cognatus, hospes, necessarius, patruelis et similia.* In quibus quaē Aldina et eius asseclae post ὄμοια addita habent ὄμοιος εἰλι οἱ καὶ ὄμοιος τοῦ πατρὸς, eorum alterum nescio an ex Sophoclis Aiace 546. petitum sit: ὡ παῖ, γένοιο πατρὸς εὐτυχεστερος, τὰ δ' ἄλλ' ὄμοιος. Accedit Thomas Mag. p. 649. et qui περὶ συντάξεως scripsit Bekkeri anecd. p. 161, 1. qui ὄμοιότατος dativo iunctum ex Deinosthenis or. in Androt. §. 32. Bekk. afferens haud dubie alterius constructionis gnarus et memor fuit. Exempla quidem rara sunt et quae citari solent nec lectionis omnia nec interpretationis satis certae, velut Herodoti loco a

Thoma laudato L. III. c. 37. ubi de Cabirorum statuis sermo est, Thomas ἔστι δὲ καὶ ταῦτα ὄμοια τοῦ Ἡφαίστου cum parte codicium nostrorum legit, alii iisque potiores τοῖσι post ὄμοια inserunt, quod etiam si omissum a scriptore fuerit, nihilo minus genitivus non ab adiectivo, sed a repetendo ex superioribus statuarum nomine regi videtur. Xenoph. Anab. L. III. c. 1. §. 17. ὥστε ἡ πορεία ὄμοια φυγῆς ἐγίνετο τοῖς ὄπισθοφύλαξι vulgata lectio, sed in duobus optimis codicibus φυγῆ pro φυγῆς scriptum est. Aristoph. Pac. 519. (531.) quem locum una cum Xenophonte Bernhardy synt. p. 140. hic retulit, μῶν οὖν ὄμοιον καὶ γυλίον στρατιωτιοῦ; vel interpositum καὶ indicat γυλίον pendere a verbo πνεῖ ex antecedentibus οἷον δὲ πνεῖς, ὡς ἡδὺ κατὰ τῆς παρδίας, γλυκύτατον, ὥσπερ ἀστρατείας καὶ μύρου facile ascendo. Unus est adhuc extra dubitationem positus Aeliani locus ab Oudendorpio ad Thomam adhibitus H. A. L. VIII. c. 1. extr. τέτταρες ὄμοιοντος ἐκείνον πίνας ἔδωκεν οἱ, cuius tamen scriptoris auctoritas non ea est, qua Platonici loci scriptura dubia confirmari possit. Sed analogia respi cienda et codicum dignitas et ipsa genitivi difficultas, qui post prius ἐκείνοις librariis facile cum hoc permutandus, contra eius in locum de coniectura substituendus nemini videri poterat. His de caussis ἐκείνης in ordinem recepi.

ἴνα] ἵνα Lob. Vind. BF.

μα ἵκανως ἀποδοὺς μὴ ἔχη ἀποδεῖξαι, ὡς καὶ δυνατὸν γενέσθαι τοιοῦτον ἄνδρα; Μὰ Δί' οὐκ ἔγωγ', ἔφη. Τί οὖν; οὐ καὶ ἡμεῖς, φαμὲν, παράδειγμα ἐποιοῦμεν λόγῳ Εἰρῆσθαι πόλεως; Πάνυ γε. Ἡτόν τι οὖν οἴει ἡμᾶς εὗ λέγειν τούτου ἐνεκα, ἐὰν μὴ ἔχωμεν ἀποδεῖξαι, ὡς δυνατὸν οὕτω πόλιν οἰκήσαι, ὡς ἐλέγετο; Οὐδῆτα, ἔφη. Τὸ μὲν τοίνυν ἀληθὲς, ἦν δ' ἔγω, οὕτω εἰ δὲ δὴ καὶ τοῦτο προθυμηθῆναι δεῖ σὴν χάριν, ἀποδεῖξαι, πῆ μά-

Οἴει] *οἴει* Steph.

ἄν] post *οὖν* Vind. F. Ang. B. Flor. R.

οἶον] *οἶαν* Vind. E. *οἶος* Mon. B. Flor. U. et editiones ante Bekkerum et in pr. Stallbaumius, cui elegantius videbatur. Neutrūnus masculino iunctum inelegans non dixerim, sed mihi quoque *οἶον* minus placere fateor, quia praecedet παράδειγμα, ad quod referri non potest et tamen referendum videtur. Sed codices servari neutrūnus iubent. Certe Bekkerus in comm. *οἶος* uni Stephano, cui tamen Monacensem addere debebat liquido *οἶος* exhibentem, assignavit, *οἶον* a Bipontinis ex Par. K. a Stallbaumio ex Flor. ACRTV. enotatum, a me in Lob. Vind. BDF. inventum est.

εἶνα] *ἡ* Ven. B. Vind. E. Vat. H.

όν] *ον*, sup. litura, Vind. F.

ἔχη] Ita Par. AK. sec. Bekk. Ven. C. Vind. EF. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. *ἔχον*, e corr. *ἔχων*, Vind. D. *ἔχοι* reliqui cum editis ante Bekkerum.

ἀποδεῖξαι] Ita Par. A. Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACV. (non RT. ut in sec. ed. Stallbaumius suam ipsius priorem adnotationem pervertens dicit.) *ἐπιδεῖξαι* reliqui codices et editiones ante Bekkerum.

ἔγωγ] *ἔγωγε* Lob. Vind. BF.

φαμὲν] om. Fic. — Proclus in

Civ. p. 394, 13. a fine: παράδειγμα δέ, φησιν δὲ Σωκράτης, πόλιτείας ὁρθῆς καὶ τελέας γραφομεν.

οὖν] om. Bas. b.

E

εὗ] post *λέγειν* Mon. B. Flor. U. Bekkerus; qui quum vulgatum verborum ordinem reliquis codicibus suis cum Stephano communem esse non significaverit, alterum in pluribus reperisse vel repertum a se credidisse videtur, quos singulatim indicare vel neglexerit vel non potuerit. Nam Monacensem, quamvis magni eum faceret, reliquis omnibus ab eo praelatum, aut insolentiorem illam adverbii collocationem adeo pulchram ei visam esse vix credibile est.

οἰκήσαι] *οἰκίσαι* Vind. E. *οἰκεῖσαι* Bas. ab.

Tὸ μὲν — δημοσίᾳ. 473. E.] excerpst Stobaeus serm. XXXXI. p. 259. Sed in cod. A. priora usque ad πατακλύσειν 473. C. desunt, Trincavellus duō prima (Tὸ μὲν) et posteriora inde a γηνσίως τε 473. D. et Gesnerus extrema a verbis δοκῶ δὲ ib. omisit.

οὕτω] οὕτως Vind. D. Par. K. sec. Bip. Flor. T. Astius, Bekkerus et Stallbaumius. Cf. Vol. I. p. 398, a.

δὴ] δεῖ Par. K. secund. Bekk. om. Stob.

δεῖ] χρὴ Stob. In Vind. F. post δεῖ, non post χάριν comma est.

λιστα καὶ κατὰ τί δυνατώτατ' ἀν εἴη, πάλιν μοι πρὸς
τὴν τοιαύτην ἀπόδειξιν τὰ αὐτὰ διομολόγησαι. Τὰ ποῖα;
473 Ἄρ' οἶόν τέ τι πραχθῆναι ὡς λέγεται, η̄ φύσιν ἔχει
πρᾶξιν λέξεως ἥττον ἀληθείας ἐφάπτεσθαι, οὐκ εἰ μή
τῷ δοκεῖ; ἀλλὰ σὺ πότερον ὁμολογεῖς οὔτως, η̄ οὐ;
Ομολογῶ, ἔφη. Τοῦτο μὲν δὴ μὴ ἀνάγκαζέ με, οἷα
τῷ λόγῳ διήλθομεν, τοιαῦτα παντάπασι καὶ τῷ ἔργῳ
δεῖν γιγνόμενα ἀποφαίνειν· ἀλλ' ἐὰν οἶοι τε γενώμεθα
εὑρεῖν, ὡς ἀν ἐγγύτατα τῶν εἰρημένων πόλις οἰκήσεις,
φάναι ήμας ἐξευρηκέναι, ὡς δυνατὰ ταῦτα γίγνεσθαι,
B ἢ σὺ ἐπιτάττεις. η̄ οὐκ ἀγαπήσεις τούτων τυγχάνων;

δυνατώτατ'] δυνατώτ' Vind.
E. δυνατῶντες Bas. b. δυνατόν
τ' Lob. Vind. BD. Vat. M. δυνα-
τώτατα Stob. Superlativus fa-
cilitatem, quam relativam dicunt,
indicat.

εἴη] Pro eo lacuna est in Vind.
E.

τοιαύτην] αὐτὴν Par. K. Ast.
pr.

διομολόγησαι] διωμολόγησαι
Vind. DE. Stob. διομολογῆσαι
Lob. Vind. B. Vat. M. margo
Gesn. Ald. Bas. ab. δεῖ ὁμολο-
γῆσαι Vind. F. διαλόγησαι Mon.
B. corr. (vulgata in marg. a m.
pr. adscriptam habet.) ὁμολόγη-
σαι Ang. B.

Ἄρ'] Ἄρ' Vind. F.

473 η̄] η̄ Stob. (η̄ margo Gesn.
Gaisf.)

ἔχει πρᾶξιν] ἔχει πρᾶξειν,
(—χει e corr.) Vind. B.

λέξεως] post ἥττον Vind. E.

δοκεῖ] Ita Ven. C. Vind. F.
Mon. B. Flor. R. et in sec. Stall-
baumius. δοκοῖ Ven. B. Bekke-
rus, Astius in tert. et Stallbau-
mius in pr. δοκῆ Par. A. sed cor-
rectus, reliqui codices cum Ald.
Bas. ab. Steph. Ast. pr. et omis-
so in antecedentibus εἰ sec. Quum
coniunctivum ab ipsis codicibus
parum firmum esse appareat, non
est, quod h. l. in eo excusando
et a soloecismi macula purgando
laboremus: inusitatum in hoc di-
cendi genere et a Platonis sermo-

ne alienum ultro fatemur. Sed
de reliquis modis, qui solent cum
particulis καὶ construi, indica-
tivus, qui esse quosdam ab hoc
placito dissentientes significat,
optativo tantum fieri posse, ut
dissentiat aliquis; declaranti co-
dicum caussa praferendus erat,
non quod rei ipsi accommodatio
neset, quemadmodum Stallbau-
mius statuit. ἀν̄ quomodo expli-
candum videatur, Vol. I. p. 294,
b. ostendi; de indicativo cf. ibid.
p. 90, b. Optativum infra habes
p. 477. A. coniunctivum L. VIII.
p. 579. D. codices tenent.

σὺ] om. Par. DK. Mon. B.
Flor. U.

πότερον] πρότερον Lob. Vind.
B. Vat. BM. Ven. C. Par. K. et
a m. pr. D. Stob. Trinc.

ομολογεῖς οὔτως,] ὁμολογεῖς,
οὔτως; Mon. B.

Τοῦτο] τούτω Vind. E. τού-
τῳ Stob. (τοῦτο m. Gesn.)

ἀνάγκαζέ με] ἀνάγκαζε μὴ
Vind. E.

οἷα] ἡ Vind. D.

δεῖν] Ita Par. A. Vind. DEF.
Ven. B. Mon. B. Ang. B. Vat. H.
Stob. Trinc. Bekkerus. δεῖ Lob.
Vind. B. Vat. BM. Ven. C. Par.
DK. sec. Bekk. Stob. Gesn. Ald.
Bas. ab. δὴ Stob. Gaisf. Steph.
Astius et Stallbaumius, qui in
prima ed. quum e Florentinis li-

466 ἐγὼ μὲν γὰρ ἀν ἀγαπώην. Καὶ γὰρ ἐγὼ, ἔφη. Τὸ δὲ δὴ μετὰ τοῦτο, ὡς ἔοικε, πειρώμεθα ἡγεῖν τε καὶ ἀποδεικνύναι, τί ποτε νῦν πακῶς ἐν ταῖς πόλεσι πράττεται, δι' ὃ οὐχ οὕτως οἰκοῦνται, καὶ τίνος ἀν σμικροτάτου μεταβαλόντος ἔλθοι εἰς τοῦτον τὸν τρόπον τῆς πολιτείας πόλις, μάλιστα μὲν ἐνὸς, εἰ δὲ μὴ, δυοῖν, εἰ δὲ μὴ, ὅτι ὀλιγίστων τὸν ἀριθμὸν καὶ σμικροτάτων τὴν δύναμιν. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἐνὸς μὲν τοίνυν, ἣν C δ' ἐγὼ, μεταβαλόντος δοκοῦμέν μοι ἔχειν δεῖξαι ὅτι μεταπέσοι ἀν, οὐ μέντοι σμικροῦ γε οὐδὲ φαδίου, δυνατοῦ δέ. Τίνος; ἔφη. Ἐπ' αὐτὸ δὴ, ἣν δ' ἐγὼ, εἰμι,

bris nihil a Stephano discrepans allatum videret, non temere δὴ tamquam illorum lectionem retulit et retinuit, in secunda vero, quum didicisset, quid Bekkeriani haberent, silentio isti diffidere, non iterum sine dubitatione omnibus sex Florentinis δὴ assignare, nedum Venetum B. quem Bekkerius δεῖν exhibere docet, comitem eis adiungere debebat. Ceterum δὴ ferri potuisse, si per codices liceret, in promptu est; sed δεῖν nihilo deterius et ob anacoluthiae speciem post ἀνάγνωξε mutatum a Stephano videtur. Non male, quod ad hoc attinet, Ficinus: *ne me cogas igitur, ut, qualia verbis haec figuravimus, talia penitus digito indicare debeam.*

εὑρεῖν] om. Vind. D. εὑρῶν Stob. Trinc.

οὐκήσειε] οὐκήσειν Vind. F. φάναι] φάναι Vind. DF. Licet infinitivum hunc cum illo δεῖν ad μὴ ἀνάγνωξε referre ita, ut ἐπίτροπε vel simile quid subaudiatur; quod si placet, post ἀποφαίνειν comma pro colo ponendum est. Malim tamen cum Stallbaumio pro imperativo accipere.

ἔξενοημέναι] ἔξειρημέναι Vind. F.

B ἀν] om. Lob. Vind. BDE. Vat. BM. Ven. B. Stob.

ἐγὼ] ἐγωγε Stob.

Τὸ δὲ δὴ μετὰ τοῦτο] in unum contracta exhibit Vind. E. τὸ δὲ

δὴ μετατοῦτο Vind. DF. Mon. B. Ald. Bas. ab.

ἡγεῖν τε καὶ ἀποδεικνύναι] declarare Fic. τε om. Par. K. — ἀποδεικνῦναι Vind. BDF. Ald. Bas. ab.

δι' ὃ] διὸ Vind. EF. Flor. ACTV.

μεταβαλόντος] μεταβαλλόντος Par. K. sec. Bip.

ἔλθοι] ἔλθῃ Lob. Vind. BD. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. Mon. B. Flor. T. Stob. Trinc.

ὀλιγίστων] ὀλιγόστων Flor. T. a m. pr. ὀλιγοστῶν Lob. Vind. B. Vat. B. Ven. C. Par. K. sec. Bekk.

σμικροτάτων] πικροτάτων Vind. B. Vat. M.

μεταβαλόντος] μεταβαλλόντος C Ven. C. μεταβάλλοντος Ven. B. Vind. E. Vat. H.

δοκοῦμέν] δοκεῖ μέν Ald. Bas. ab. Steph. Stob. margo Gesn. Veram lectionem Astius in pr. ex Ven. C. Par. K. restituit.

μοι] om. Vind. B. Vat. M.

μεταπέσοι] μεταπείσοι iidem et Par. D.

σμικροῦ] σμικροῦ Stob.

δέ. Τίνος] δέτινος Vind. F.

αὐτῷ] αὐτῷ idem et Ang. B.

δὴ] om. Lob. Vind. BD. Vat. BM. Flor. T. δ' Vind. F. Ang. B. Flor. R.

ἢν δ'] ἢν Flor. R.

εἰμι] εἰμι Vind. F. εἰμι Mon. B. a m. pr.

ὅ τῷ μεγίστῳ προσηγάζομεν πύματι. εἰρήσεται δ' οὖν,
εἰ καὶ μέλλει γέλωτι τε ἀτεχνῶς ὥσπερ κῦμα ἐκγελῶν
καὶ ἀδοξίᾳ πατακλύσειν. σκόπει δὲ ὁ μέλλω λέγειν. Λέ-
γε, ἔφη. Ἐὰν μὴ, ἦν δ' ἐγώ, ἢ οἱ φιλόσοφοι βασι-

ὅ τῷ] ὅ τῷ Stob. Trinc.

προσηγάζομεν] Ita Vind. F. Ang. B. Flor. R. προσεικάζομεν Stob. προσεικάζομεν Par. ADK. Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C. Mon. B. Flor. U. Bekkerus. προ-
σεικάζομεν Ven. B. Vind. DE. Vat. H. Flor. ACTV. Stob. mar-
go Gesn. Ald. Bas. ab. Stephan. Astius et Stallbaumius. Denique προγνάζομεν Bekkerus in comm.
legendum statuit; cui Stallbaumius nihil nisi Symp. p. 216. C. et Gorg. p. 493. C. ubi augmen-
tum pariter omissum sit, et Butt-
mannum gramm. I. p. 328. obie-
cit, de altera lectionis illius par-
te, cui codices magis, quam vul-
gatae favere videret, sententiam
ferre supersedit. Mihi verbum προεικάζειν huic loco convenire
non videtur, quum ea significatio,
qua utique aptum esset, si pro
ἐν τῷ πρόσθετῳ εἰπάζομεν posset, ab eo aliena, ea vero,
quam potest habere, ut compa-
rationem antea, quam res ipsa
apparuissest, factam demonstret
(in voraus vergleichen, quemad-
modum Schleiermacherus interpre-
tatus est) hic quidem inutilis sit.
Nam eo ipso loco, quo primum
τὸ μέγιστον καὶ χαλεπώτατον
τῆς τοινυμίας commemorabatur,
p. 472. A. fluctus ille tam pro-
pinquus erat, ut caussa non es-
set, quod exiguum temporis spa-
tium inter comparationem et rei
ipsius representationem interpo-
situm peculiari verbo eoque ra-
rissimo in memoriam revocaretur.
Iam si προεικάζομεν vera scrip-
tura non est, tamen verae pro-
xima habenda et inter reliquas
secundum eam electio instituenda
est. Itaque προσηγάζομεν elegi,
quod quam facile in προεικ. abi-
re potuerit, Bastius ad Grego-

rium p. 712. demonstravit. De
augmento dubium non est, quin
Plato id interdum omiserit. Certe
Symp. l. c. εἰπασα, Phaedr.
pag. 248. A. εἰπασμένη, Polit.
p. 260. E. εἰπάζομεν in omnibus,
Gorg. l. c. ἀπήιπασε idque super-
scripto εἰ in uno Par. W. le-
gitur. Sed propterea non ubique
abstinuisse censendus est eo, quod
grammatici magno consensu Atti-
cum perhibent. Cf. Moeris eius-
que interpres p. 182. et scho-
liastes Dionysii Bekkeri anecd.
p. 804, 30. Neque Stallbaumius
Leg. L. VIII. p. 857. C. unius
Flor. A. suffragio ancipiti (nam εἰ
superSCRIPTUM habet) adiutus Bek-
kerum sequi dubitavit, qui ἀπη-
άσαμεν et ἀπηγάζομεν ex Ang.
B. et Vat. C. in quo item super-
scriptum est εἰ, pro ἀπει. quod
Par. A. utrobique correctus exhibet,
reposuit. Etiam Tim. p. 79.
D. ὃ δὴ καὶ προσηγάζομεν τῷ
τοῦ πύρτου πλέγματι secundum
optimi libri manū primā a
Bekkero editum est, quod sine
litura scriptum in Vind. F. in-
veni.

πύματι] συγήματι. Stob. (πύ-
ματι m. Gesn.)

δ'] om. Par. K.

μέλλει] μέλλοι Vind. BD. Mon.
B.

γέλωτι τε] γέλως τέ τις Mon.
B. Flor. U. Stallbaumius. Etiam
Astius hic haesit et ad conjectu-
ram prolapsus est. Socrates,
quum id, quod iamiam dicendum
erat, cum fluctu comparavisset,
qui aqua salsa perfundere et sub-
mergere nautas solet, nihilo mi-
nus dicturum se profitetur, etiamsi

λεύσωσιν ἐν ταῖς πόλεσιν, ἥ οἱ βασιλεῖς τε νῦν λεγό- D
μενοι καὶ δυνάσται φιλοσοφήσωσι γνησίως τε καὶ ἴκα-
νῶς, καὶ τοῦτο εἰς ταῦτὸν ἔνυπέσῃ, δύναμίς τε πολι-
τικὴ καὶ φιλοσοφία, τῶν δὲ νῦν πορευομένων χωρὶς ἐφ'

fore videat, ut veritas compara-
tionis eventu comprobetur et di-
ctum illud prorsus fluctus in mo-
dum, quocum comparasset, in se
erumpens risu acerbo et ignomi-
nia sese obruat. Minus recte Fi-
cinus: *quoniam suspicor, ne ef-
fusiore incredulorum risu inun-
dante penitus obruatur.* sed haud
dubie vulgatam lectionem secutus,

ἀδοξίᾳ] ἀταξίᾳ Stob. (ἀδο-
ξίᾳ m. Gesn.) ἀδοξία (Lob.) Mon.
B. Flor. U. Stallbaumius.

πατακλύσειν] παταλύσειν Stob.
(πατακλ. m. Gesn.)

δὲ] δὴ Vind. BD. Par. K. sec.
Bekk.

Ἐὰν] ἐὰν δὲ Lob. Vind. DF.
Vat. BM. Ven. C. Par. DK. Ang.
B. Flor. R. ἐὰν δὴ Vind. B. Mon.
B. Flor. U. Hoc πολυθρύλλητον
illud τοῦ Πλάτωνος, quemadmo-
dum in margine codicis Lob. di-
citur, a multis postea commemo-
ratum, quos Astius ad h. l. et
Ruhkenius ad Rutil. Lup. p. 21.
sq. indicarunt. Addo Alcinoum
isag. c. 33. p. 122, 1. Fisch.

βασιλεύσωσιν] βασιλεύωσιν
Stob. cod. A. et scholiastes Ari-
stidis p. 266. Fromm. ἐπεὶ Πλά-
των ἔφη, ὅταν βασιλεύσωσιν οἱ
φιλόσοφοι, ἥ βασιλεῖς φιλοσο-
φήσωσι, τότε εὐδαιμονήσειν τὰς
πόλεις. Etiam Ficinus dominen-
tur posuit, quum sit reges facti
fuerint. Sic Pausan. I. 11, 6.
Πλύδος βασιλεύσας, et Herodo-
tus I. 14. Γύγης τυραννεύσας,
et Plato paullo post φιλοσοφήσω-
σι, et L. III. p. 421. D. πλον-
τῆσας χυτεύς, Aristoph. Plut.
569. πλοντῆσαντες, Thuc. II. 42.
πλοντῆσειν, Plato Phaedr. 231.

D. εὐ φρονήσαντες, Hippocr.
T. II. p. 528. Kühn. φρονησάσης
τῆς ἀνθρώπου, Lysias adv. Sim.
§. 43. Brem. ἐπειδὴν βέλτιον
φρονήσωσιν, Plato Civ. IIII.
443. D. ἄρχαντα αὐτὸν αὐτοῦ,
Herod. I. c. ἐπεὶ τε ἡρές.

ταῖς — φιλοσοφήσωσι D.] om.
Stob. cod. B.

πόλεσιν] πόλεσι Stob. Trinc. D
Gesn.

βασιλεῖς] Ita codices omnes
etiam Par. A. Ven. C. sed hi in
ultimis litteris correcti, quo natus
Bekkerus βασιλῆς ab Astio in
sec. ex coniectura positum edidit.
Idem fecit in sec. Stallbaumius
codicum duorum illorum, ut sibi
visus est, auctoritate. V. Vol. I.
p. 157. cl. p. XXXXII. sq.

νῦν] post λεγόμενοι Flor. T.

καὶ δυνάσται] om. Stob. Trinc.
ante λεγόμενοι Stob. Gesn.

φιλοσοφήσωσι] φιλοσοφήσονται
Mon. B. φιλοσοφήσωσι Stob.
cuius ed. Trinc. h. l. deficere su-
pra ostendi. Neque Gesnerus pro-
xime sequentia γνησίως — ἀπο-
κλεισθῶσιν habet. (φιλοσοφήσω-
σι Gaisf.) Praeter mentem Pla-
tonis Iustinus M. Apol. I. p. 54.
C. postulationem extendit: ἔφη
γάρ που καὶ τις τῶν παλαιῶν,
ἄν μη οἱ ἀρχοντες φιλοσοφήσωσι
καὶ οἱ ἀρχόμενοι, οὐκ ἄν εἴη
τὰς πόλεις εὐδαιμονῆσαι.

τε] om. Lob. Vind. BD. Vat.
BM.

ταῦτὸν] ταντὸ Ven. B. Vind.
E. Flor. ACT. Stob. cod. A.

ἔνυπέσῃ] ἔνυπέσει Vind. F.
et, sup. η, Flor. R.

τηνάτερον αἱ πολλαὶ φύσεις ἐξ ἀνάγκης ἀποκλεισθῶσιν, οὐκ ἔστι κακῶν παῦλα, ὡς φίλε Γλαύκων, ταῖς πόλεσι, δοκῶ δὲ οὐδὲ τῷ ἀνθρωπίνῳ γένει, οὐδὲ αὕτη ἡ πολιτεία μή ποτε πρότερον φυῇ τε εἰς τὸ δυνατὸν καὶ φῶς ηλίου ἵδη, ἦν νῦν λόγῳ διεληλύθαμεν. ἀλλὰ τοῦτο ἔστιν, ὃ ἐμοὶ πάλαι ὄκνον ἐντίθησι λέγειν, ὁρῶντι, ὡς πολὺ παρὰ δόξαν δηθῆσται. χαλεπὸν γὰρ ἰδεῖν, ὅτι οὐκ ἀν-

ἐκάτερον] ἐκατέρων Vind. F.

φύσεις] φύσις Vind. E.

ἔξ ἀνάγκης] ὅτι Stob. cod. A.

εἶδεν. Lob. ἔξεν. Vind. DF.

ἀποκλεισθῶσιν] ἀποκλειστῶσι

Stob. cod. A. Ficinius haec inde

α τῶν δὲ νῦν ita interpretatur:

neque (quod nunc fit) a diversis

duo haec tractentur ingenii. At

sensus hic est: nisi maxima pars

ingeniorum, quae nunc ad alterum

separatum ab altero accen-

dunt, necessario ab utrovis exclu-

sa fuerint.

παῦλα] ante κακῶν Flor. T.

παύλα Ald. Bas. ab. Plutarchus

Numa p. 73. D: ἐναργὲς ἐξήνεγκε

παράδειγμα καὶ τεκμήριον τῆς

Πλατωνικῆς φωνῆς, ἣν ὑστερος

ἐπεῖνος οὐκ ὀλίγοις χρόνοις γε-

νόμενος ἐτόλμησεν ἀφεῖναι περὶ

πολιτείας, ὡς μία κακῶν παῦλα

καὶ λύσις ἀνθρώποις ἔστιν ἐκ

τινος τύχης θείας εἰς ταῦτὸ δια-

νοίᾳ φιλοσόφῳ βασιλικὴν συμπε-

σοῦσαν δύναμιν ἔγνωστη καὶ

ὑπερδέξιον τῆς κακίας τὴν ἀρε-

τῆν καταστῆσαι. Idem compar.

Demosth. et Cicer. p. 887. E. de

Cicerone: ἐμαρτύρησεν ἄμα τῷ

Πλάτωνι μαντευομένῳ παῦλαν

ἔξειν κακῶν τὰς πόλεις, δταν

εἰς ταῦτὸ δύναμις τε μεγάλη καὶ

φρόνησις ἐκ τινος τύχης χρη-

στῆς ἀπαντήσῃ μετὰ δικαιοσύ-

νῆς. Utrumque locum indicavit

Astius. Quod Plutarchus fortunae

mentionem fecit, ad Epist. Plat.

VII. p. 326. A. referendum vide-

tur: λέγειν τε ἡναγκάσθην ἐπαι-

νῶν τὴν ὄφθην φιλοσοφίαν, ὡς

ἐκ ταῦτης ἔστι τὰ τε πολιτικὰ

δίκαια καὶ τὰ τῶν ἰδιωτῶν πάν-

τα κατιδεῖν. κακῶν οὖν οὐ λή-

ξειν τὰ ἀνθρωπίνα γένη, πρὶν

ἄν ἡ τὸ τῶν φιλοσοφούντων ὄρ-
θως γε καὶ ἀληθῶς γένος εἰς ἀρ-
χὰς ἐλθῃ τὰς πολιτικὰς, ἡ τὸ
τῶν δυναστευόντων ἐν ταῖς πό-
λεσιν ἐκ τινος μοίρας θείας ὅν-
τως φιλοσοφήσῃ.

ὡς φίλε Γλαύκων] ὅτι Stob.
Gesn. Fic.

ταῖς πόλεσι] civitati Fic. ταῖς
πόλεσιν Stob. Gesn. (qui h. l.
deficit) et editiones ante Bekke-
rum.

δοκῶ] ἀλλὰ μὴ δοκῶ Stob.
cod. A. Gaisf.

δὲ] δ' Vind. E. Vat. H.

γένει,] γένει. Ald. Steph.

αὐτῇ] αὐτῇ Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

μή ποτε] μήτε Stob. cod. A.
Gaisf. φύη τε Lob. φυη τε Vind.
B. φυῇ τε Vat. M. μήποτε Ald.
Bas. ab. Steph. Ast. Sed est ne
unquam, non nunquam. Conf.
p. 467. B: τὸ μή ποτε κατανε-
σται, ut ne unquam periculum su-
beant.

φυῇ τε] φυῆτε Ald. Bas. ab.
φύη τε Lob. Par. K. sec. Bekk.
φυῆται Vind. F. Ang. B. Flor.
T. φύει τε Vind. B. Vat. M.

εἰς] ἐς Stob. cod. A. Gaisf. E.

ἴδη] ἴδοι Lob. Vind. B. Vat.
M.

ἢν] καὶ Stob. cod. A. Gaisf.
ἢν δὴ Vind. E.

πάλαι] πάλιν Lob. Vind. B.
Vat. BM. Ven. C. Par. DK. sec.
Bekk.

ὅρῶντι] ὅρῶντες Stob. cod. A.

παρὰ δόξαν] παραδόξαν Vind.
E. παραδόξων Stob. cod. A.

χαλεπὸν γὰρ ἰδεῖν] „Magis
placet quae assertur lectio, χαλε-
πὸν γὰρ πείθειν ὅτι οὐκ ἀν etc.“
Steph. annot. p. 21. Ea fuit Cor-

ἄλλη τις εὐδαιμονήσειεν οὕτε ἰδία οὕτε δημοσίᾳ. Καὶ ὃς ὩΣάκρατες, ἔφη, τοιοῦτον ἐνβέβληκας ὁμού τε καὶ λόγου, ὃν εἰπὼν ἥγον ἐπί σε πάνυ πολλούς τε καὶ οὐ φαύλους νῦν οὔτως οἶον φίψαντας τὰ ἴματα γυμνοὺς 474 λαβόντας ὅτι ἑκάστῳ παρέτυχεν ὄπλον, θεῖν διατεταμένους ὡς θαυμάσια ἐργασμένους· οὓς εἴ μη ἀμυνεῖ τῷ λόγῳ καὶ ἑκφεύξει, τῷ ὅντι τωθαζόμενος δώσεις δικην.

narii conjectura ecl. p. 100. Ficini interpretatione. nam huius facile persuadetur securi, quam contra omnes codices sine ratione Astius et in sec. ed. Stallbaunius receperunt.

ἄλλη] ἄλλη Mon. B. quod, si solum τις pro feminino haberi et de civitate accipi tuto posset, etiam praeferri deberet. Nam de ea, quae proxime dicta est πολιτείᾳ, ἄλλη intelligi nequit, sed referendum ad illam est, in qua philosophi regnent, quod ipsum ob interiectam huius civitatis mentionem paullo durius videtur. Adeo L. VI. p. 500. E.

εὐδαιμονήσειεν] εὐδαιμονήσειεν Ald. εὐδαιμονήσειεν Vat. H. Flor. ACT. et, γε vulgato; Ven. B. et, in marg. εὐδαιμονήσειεν, Vind. D. εὐδαιμονήσειεν Vind. E.

ὅς] ὁμ. Vind. F. ἐνβέβληκας] ἐνβέβληκας Flor. T. Ast. sec. Stallb. pr. ἐνβέβληκε, e corr. —ας, Vind. D.

ἐπί σε] ἐπὶ σὲ Vind. BD. Ald. Bas. ab. Astius in sec. et tert. Bekkerus et Stallbaunius, quem adiudicium grammatici praecipiunt. Et isólet prónominis momentuin gravius esse, quam praepositio- nis. Sed h. l. res aliter habet, quum de persona nulla dubitatio existere et pronomen salva perspicuitate etiam abesse possit.

οὐ] ὁμ. Vind. E. Vat. H. Flor. AC.

οἶον] ὁμ. Vind. E. φίψαντας] φίψαντες Bas. b.

474 γυμνοὺς] γυμνοῦν Vat. H. Flor. AC.

διατεταμένους] Ita Par. A. Lob. Vind. BDF. Ven. C. Vat. HM. Flor. ACUV. διατεταμέ-

νως, deleto a m. s. priore μ, Moi. Βαθατεταγμένον̄ reliqui codices et editi ante Astium, qui in sec. verum de conjectura editi. Eadem in eodem verbō discrepantia est L. VI. p. 501. C. ubi haec repetuntur. Ficinus pro hoc et proximo θεῖν impetum in te facturos posuit.

ἐργασμένους] ἐργασμένους Ven. O.

οὓς εἴ μη] οἵσ είμι Vind. E. ἀμυνεῖ] ἀμύνη Vind. BD. Mon. B. Par. DK. sec. Bekk. et A. sed correctus, Vat. M. Flor. TU. ἀμυνεῖ, sup. η, Lob. ἀμύνη Vind. F. ἀμύνη Ald. Bas. a. ἀμυνεῖς Vind. E. ἀμύνεις Ang. B.

ἑκφεύξει] Ita Vind. F. Flor. R. ἑκφεύξη, sup. ει, Lob. ἑκφεύξη Vind. BDE. Mon. B. Ald. ἑκφεύξη Bas. ab. Steph.

τῷ ὅντι] τωόντι Vind. DE.

τωθαζόμενος] θαυμαζόμενος Vind. E. τωθαγμαζόμενος Vind. F. τωθαζόμενος Ald. cui similis error glossam Hesychii θαξόμενος σκώπτων peperit. Timaeus lex. p. 261: τωθάζων. χλενάζων, σκώπτων, διασύρων. Vind. ibi Ruhnkenius, qui hoc et altero Platonis loco Hipp. mai. p. 290. A. ubi medium τωθάσεται legitur, significato ad utrumque con ferri iubet scholiasten. Sed no ster scholio caret, alteri adscriptum est σκώψει, λοιδορήσει, χλενάσει, quibus πανχάται addunt Suidas et Photius, ἐρεθίζει, παταναχάται, θωπεύει, παπο λογεῖ Hesychius. Cf. Piersonus ad Moer. p. 366. et Schneiderus ad Aristot. Polit. VII. 15, 8.

Ούκοῦν σύ μοι, ἦν δ' ἐγὼ, τούτων αἴτιος; Καλῶς γ',
ἔφη, ἐγὼ ποιῶν. ἀλλά τοί σε οὐ προδώσω, ἀλλ' ἀμυ-
νῶ οἶς δύναμαι· δύναμαι δὲ εὑνοίᾳ τε καὶ τῷ παρακε-
B λεύεσθαι, καὶ ἵσως ἂν ἄλλου τον ἐμμελέστερον δοι ἀπο-
κρινοίμην. ἀλλ' ως ἔχων τοιοῦτον βοηθὸν πειρῶ τοῖς
ἀπιστοῦσιν ἐνδείξασθαι, ὅτι ἔχει ἥ σὺ λέγεις. Πειρα-
τέον, ἦν δ' ἐγὼ, ἐπειδὴ καὶ σὺ οὕτω μεγάλην ξυμμα-
χίαν παρέχει. ἀναγκαῖον οὖν μοι δοκεῖ, εἰ μέλλομέν πη

ἦν δ' ἐγὼ] post τούτων Par.
K.

γ'] γε Vind. F. Flor. R.
ἄλλά τοι] ἄλλὰ τοῖς Vind. F.
ἄλλ' ἀτοῖς Ang. B.

τῷ] τὸ Vat. H.

B ἀποκρινοίμην] ἀποκρινοῦμαι
Lob. Vind. B. Vat. BM.

ἥ] ἥ Vind. E.

σὺ οὕτω] δοι οὕτω Vat. H.
δοι o. Flor. AC.

παρέχει] Ita Ven. C. Vat. H.
Flor. ACV. παρέχῃ Lob. παρέ-
χῃ Vind. BDEF. Vat. BM. Ven.
B. Ang. B. Flor. RT. et corre-
ctus Par. A. παρέχεις Par. DK.
Mon. B. Flor. U. cum editis ante
Bekkerum.

οὖν] om. Fic.

μέλλομέν] μέλλοιμι Mon. B. a
m. sec. μέλλει (vel μέλλῃ) μή a
m. pr.

πη] ποι Vat. B. om. Fic.

ἐπιφεύξεσθαι] ἐπιφεύξασθαι
Flor. AC.

οὓς λέγεις] eos Fic.

λέγοντες] λέγοντας Vat. H.
λέγομεν Vind. F.

τολμῶμεν φάναι] post δεῦν
ἄρχειν Flor. T. τ. φάναι idem
cum Vind. DF. Ald. Bas. ab.

γενομένων] γινομένων Lob.
Vind. BD. Vat. BM.

φύσει] om. Lob. Vind. BD.
(hic in m. habet.) Ven. B. Vat.
M.

C φιλοσοφίας] φιλοσοφία Vat. B.
τ'] τε Lob. Vind. B.

ἐν πόλει] Ita Par. A. Vind. F.
Vat. B. Ven. C. Ang. B. Flor.
RV. Bekkerus et in tert. Astius.
ἐν πολέμῳ Vind. B. Vat. M. ἐν
πολέμει, ex emend. —ω, Lob.
ἐν τῇ πόλει reliqui codices et

editi ante Bekkerum, quos Stall-
baumius sine ratione sequitur.

ἄνολονθεῖν τε τῷ ἥγουμενῷ]
sed ducentibus illis obtemperare
Fic.

εἶη] post ἔφη Lob. Vind. BF.
Vat. M. Ang. B. Flor. R.

τῇδε] τόδε Vind. E. Flor. C.
ἀμηγέπη] Ita Vind. F. Ald.
Steph. tacentibus de Par. K. Bi-
pontinis. ἀμηγέπη Lob. Vind.
BDE. Mon. B. Bas. ab. Ast. pr.
et secund. ἀμῇ γέ πῃ Bekkerus.
ἀμηγέπη Ast. tert. ἀμηγέπη Stall-
baumius. Timaeus lex. pag. 29:
ἀμηγέπη. ἐνὶ γε τρόπῳ, ἥ ὁπω-
σοῦν. Suidas et lexicon Bekkeri
aneqd. pag. 387, 16: ἀμηγέπη.
ὁπωσδήποτε, παθ' ὅτιον. λέγε-
ται δὲ καὶ ἀμωσγέπως καὶ ἀμό-
θεν. Moeris pag. 50: ἀμηγέπη,
Ἄττικᾶς. ἀμωσγέπως, Ἐλληνι-
κῶς. Thomas pag. 40: ἀμηγέπη
πάλλιον, ἥ ἀμωσγέπως. δηλοῖ δὲ
τὸ παθ' ἐνα τινὰ τρόπον. Sed
haec sufficiunt ad vulgatam ho-
rum scribendorum consuetudinem
demonstrandam, a qua discedens
Bekkerus hoc loco de codicibus
nihil nisi in Vat. B. Ven. C. Vind.
B. Par. K. ἀμηγέπη legi monet,
quasi qui in reliquis non solum
asperum, sed etiam circumflexum
et in tria divisionem invenerit.
Atqui Parisiensem A. ad Leg. V.
736. E. p. 390, 4. ostendit ἀμη-
γέπη solere exhibere, et sic ubi-
que in Ang. B. scriptum esse ad
Leg. VIII. 861. C. p. 135, 1.
testatur. Similiter ἀμωσγέπως
in Par. A. Vat. C. esse solere ad
Leg. I. 641. E. p. 213, 6. decla-
rat. Itaque quemadmodum Polit.
p. 278. D. ἀμῇ γέ πῃ et Protag.

ἐπιφεύξεσθαι οὓς λέγεις, διορίσασθαι πρὸς αὐτοὺς τοὺς φιλοσόφους τίνας λέγοντες τολμῶμεν φάναι δεῖν ἄρχειν, ἵνα διαδήλων γενομένων δύνηται τις ἀμύνεσθαι ἐνδεικνύμενος, ὅτι τοῖς μὲν προσήκει φύσει ἀπτεσθαί τε φιλοσοφίας ἡγεμονεύειν τ' ἐν πόλει, τοῖς δ' ἄλλοις μήτε C ἀπτεσθαι ἀκολουθεῖν τε τῷ ἡγουμένῳ. "Ωρα ἀν εἶη, ἔφη, ὁρίζεσθαι. "Ιδι δὴ, ἀκολούθησόν μοι τῆδε, έὰν αὐτὸ ἀμηγέπη ἴκανῶς ἔξηγησώμεθα. "Ἄγε, ἔφη. 'Ανα-

p. 323. C. et Phaedr. p. 228. C. ἀμῶς γέ πιως scripsit, et in comment. ad Polit. scripturam Veneti A. et Par. BCF. ἀμηγέπη, ad Protag. Coisl.ianini, Vat. B. Ven. BD. Ang. C. Pal. B. ἀμωσγέπως tamquam suae fundamentum commemoravit, ad Phaedrum autem Clarkianum, Coisl. Vat. A. Ven. A. Par. BCDFH. asperum, nil amplius, dedisse adnotavit, quo quidem loco Clarkianus secundum Gaisfordium ἀμωσγέπως exhibit, ita hoc nostro reliquos VII. codices in spiritu secum facere, de accentu et divisione nihil significare voluit. Quid quod Leg. V. 736. A. pag. 388, 17. in comm. Stephano ἀμῶς tribuit, a quo ipse secundum Ven. B. Vat. C. Ang. B. discedens ἀμῶς (*γέ πιως*) scripserit, quum Stephanus illo loco non minus, quam in reliquis, ἀμωσγέπως in unum vocabulum coniuncta habeat. Iam quod ad spiritum attinet, optimis codicibus repugnandi caussam non inventi, etsi Ionicum vel Doricum AMΟΣ, quod pronominis indefiniti vim habere dicitur, a quo grammatici illa repetunt, fere ubique ἀμὸς scribi solet, et ἀμόδεν vulgo Homeri Od. I. 10. ἀμηγέπη apud Lucianum Lexiph. T. V. p. 178. Lehm. et ἀμωσγέπως apud Lysiam in Agor. §. 7. et Aristoph. Thesmoph. 429. etiam a Bekkero editum est. Sed Acharn. 583. Bekkero teste codex Ravennas asperum habet, non lenem, quem Invernizzius (615.) vidit, et apud Eustathium in Od. Vol. I. p. 8, 32. sqq. Lips. post simplicia cum leni scripta haec

composita cum aspero scribuntur, et in scholio ad Leg. VII. 798. B. quod Ruhnkenius ad Tim. p. 26. edidit, omnia asperum habent. Quem si quis ab altero AMΟΣ, quod ἡμέτερος est, perperam in hoc translatum statuat, non minus probabiliter lenem, quem illud in Homericis carminibus pree fert, cum hoc communicatum vel discriminis caussa inventum a grammaticis statui posse concedat. In hoc igitur Bekkerum vel potius codices sequor. Sed divisioni primum obstat, quod ἀμῶς, ἀμῆ, ἀμόδεν neque apud Platonem neque, si ab extremo semel apud Homerum exstante discesseris, alibi usquam seorsum dicta inveniuntur. Nam grammaticos, Eustathium l. c. Apollonium Bekkeri anecd. 566, 3. 5. alios de origine compositorum disputantes simplicibus uti necesse erat. Deinde in hac parte aequa atque in priore codices respiciendi sunt; qui etsi nonnunquam duplē accentum impositum habent, ut Clarkianus Protag. 331. D. 8. (ἀμηγέπη) et fortasse Par. AFY. Vat. B. Tim. 52. C. ubi in optimo Vind. ἀμῶς γέ πιως legitur, plerunque ipso Bekkero teste unum exhibit. Sic Clarkianus Phaedri l. c. et Soph. p. 259. D. ubi Stephanus cum Aldo ἀμηγέπη, Bekkerus tacens, ut Leg. V. 739. C. et paullo post haec nostra D. ἀμῆ γέ πιη dedit. De i non subscripto v. Vol. I. p. LXI.

ἔξηγησώμεθα] αὐτὸ ἔξ. Vind.
E. ἔξηγησόμεθα Vind. F.
"Ἄγε] ἄγ' Vind. F. ἄγε δὴ Ven.

μιμησκειν οὖν σε, ἥν δ' ἐγώ, δεήσει, ἥ μέμνησαι, ὅτι
ὅν ἀν φῶμεν φιλεῖν τι, δεῖ φανῆναι αὐτὸν, ἐὰν ὁρθῶς
λέγηται, οὐ τὸ μὲν φιλοῦντα ἐκείνου, τὸ δὲ μὴ, ἀλλὰ
πᾶν στέργοντα; Ἀναμιμησκειν, ἔφη, ὡς ἔοικε, δεῖ· οὐ
D γὰρ πάνυ γε ἐννοῶ. Ἀλλω, εἶπον, ἐπορεπεν, ὡς Γλαύ-
κων, λέγειν ἂλλα λέγεις· ἀνδρὶ δ' ἐρωτικῷ οὐ πρόπει
ἀμνημονεῖν, ὅτι πάντες οἱ ἐν ὕρᾳ τὸν φιλόπαιδα καὶ

B. Vind. E. Ang. B. Vat. H.
(Flor. ACRTV.) Ald. Bas. ab.
Steph. Ast. et in pr. Stallb.

ἔφη. Ἀναμιμησκειν] ἔφη ἀν.
Ald.

ἥν δ'] ἥν δε Lob.

φιλεῖν τι, δεῖ] φιλεῖν. τι δεῖ
Par. A. φιλεῖν, τι δεῖ Ald. Bas.
ab.

πᾶν] πάντα Vind. F. et a m.
s. Flor. A.

Ἀναμιμησκειν] Ἀναμημησκειν
Ald.

ἔφη] τοίνυν Lob. Vind. B.
Vat. BM.

ἴσουε] ἔοικεν Vind. F. Flor.
RV.

δεῖ] δὴ Vind. F.

D ἐννοῶ] In Mon. B. alterum ν
a m. s. int. vers. adiectum.

"Αλλω" ἀλλ' ὡς Vind. F. ἀλλ'
ώς Par. D. ἄλλον margo Par. D.
Ald. Bas. a.

ἐρωτικῷ] qualis Glauco etiam
L. III. p. 402. E. apparuit.

πάντες οἱ ἐν ὕρᾳ] Plutarchus
Mor. p. 44. F: οἱ γοῦν ἐν ὕρᾳ
πάντες, ὡς φησιν ὁ Πλάτων,
ἀμηγέπη δάκνουσι τὸν ἐρωτικόν·
καὶ λευκοὺς μὲν θεῶν παιδας ἀ-
ναπαλῶν, μέλανας δὲ ἀνδρικοὺς,
καὶ τὸν γρυπὸν βασιλικὸν, καὶ
τὸν σιμὸν ἐπίχαριν, τὸν δὲ ὡ-
χρὸν ὑποκοριζόμενος μελίχρονν
ἀσπάζεται καὶ ἀγαπᾷ. Idem ib.
p. 56. C: ὡς πον καὶ Πλάτων
φησι τὸν ἐραστὴν οὐλεμα τῶν
ἐρωμένων ὄντα τὸν μὲν σιμὸν
καλεῖν ἐπίχαριν, τὸν δὲ γρυπὸν
βασιλικὸν, (βασιλιτικὸν cod. Lob.)
μέλανας δὲ ἀνδρικοὺς, λευκοὺς
δὲ θεῶν παιδας. τὸ δὲ μελίχρονν
οἶλος ἐραστοῦ προσποίημα εἶναι
ὑποκοριζόμενον καὶ εὐκόλως φέ-

ροτος τὴν ὀχρότητα. Cf. Wytt-
tenbach. anim. T. I. p. 388. ubi
Lucretium, Horatium, Tibullum,
Aristaenutum, Philostratum et Li-
banium hunc Platonis locum re-
spexisse ostendit. In margine
Mon. B. haec adscripta sunt:
θαυμάζω, τὸ παράδιγμα ὃ ἔχοι-
σω, ὡς ἀριστε:

τὸν φιλόπαιδα καὶ ἐρωτικὸν]
puerorum amatorem Fic.

ἀμηγέπη] in codicibus meis et
in editionibus prorsus eadem va-
rietate, qua supra C. scriptum
est.

δάκνουσι] δάκνουσι Vind. F.
ποιεῖτε] ποιεῖται idem. In se-
quentibus quod vulgo post καλοὺς
positum est interrogandi signum,
cum Astio in sec. ed. post παι-
δας εἶναι posui, ubi reliqui co-
lon vel punctum habent.

σιμὸς] Pollux II. 73: ἑνὸς
δὲ σκῆματα, γρυπὸς, ἐπίγρυπος,
οὖν καὶ βασιλικὸν οἶονται. σιμὸς
δὲ, ὃν εὐχαριν νομίζουσι. Πλά-
των δὲ καὶ σιμοπρόσωπον εἶπεν
ἐπὶ ἵππον. scilicet Phaedr. p. 253.
E. ubi etiam ἐπίγρυπος de equo
praestantiori dicitur. Nostrum lo-
cum memoriter a Pollice laudari
atque ita εὐχαριν pro ἐπίχαριν
ortum videri Kühnius observavit.
Tamen mirum, si etiam scripto-
ris oblitus est,

ἐπαινεθῆσται] ἐπαινεῖται Vind.
DE. Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV.
laudatur Fic.

νῦμῶν] ημῶν Par. DK. secun-
dum Bip.

τὸ] om. Vind. E.

δὴ] om. Vind. BDE. Mon. B.
Ven. B. Par. K. Vat. M. Flor.
TU. Ast. pr. Stallb. pr. Omisit

ἔρωτικὸν ἀμηγέπη δάκνοντες τε καὶ κινοῦσι, δουοῦντες
ἄξιοι εἶναι ἐπιμελείας τε καὶ τοῦ ἀσπάζεσθαι. ή̄ οὐχ οὕ-
τῳ ποιεῖτε πρὸς τοὺς καλούς· ὁ μὲν, ὅτι σιμὸς, ἐπίχα-
ρις κληθεὶς ἐπαινεθήσεται ύφ' ὑμῶν, τοῦ δὲ τὸ γρυπὸν
βασιλικόν φατε εἶναι, τὸν δὲ δὴ διὰ μέσου τούτων ἐμ-
μετρότατα ἔχειν, μέλανας δὲ ἀνδρικὸν ἰδεῖν, λευκοὺς Ε
δὲ θεῶν παῖδας εἶναι; μελιχλώρους δὲ καὶ τοῦνομα οἵει

etiam Aristaenetus, qui Epist. I. 18. p. 86. Boiss. hunc locum ita in suum usum convertit: καὶ ὁ μέν τις τῶν νέων, ὅτι σιμὸς, ἐπίχαρις πάρα σοὶ κληθεὶς ἐπαινεῖται· τοῦ δὲ τὸ γρυπὸν βασιλικὸν ἔφης· τὸν (cod. Vind. τὸ) δὲ διὰ μέσου (ita cod. μέσον edd. ante Abresch.) τούτων ἔρεις ἐμμετρότατα (cod. et edd. ἐμμετρότητα, quod Boiss. ex Pauwii coniectura corredit.) ἔχειν· μέλανας δὲ ἀνδρικὸν ὄνομάζεις· λευκοὺς δὲ θεῶν παῖδας προσειρηνᾶς. μελιχρώτους δὲ οἵει τοῦνομα τίνος ἄλλου ποίημα εἶναι, η̄ τοῦ ἔνόντος σοὶ πόθουν ὑποκοριζομένον τε καὶ φέροντος εὐχερῶς τὴν ὥχροτητα, εἰ μόνον ἐπὶ ὥρᾳ προσῆῃ; καὶ ἐνι λόγῳ πάσας προφάσεις προφασίῃ καὶ πάσας φωνᾶς ἀναφθέγγη, ὥστε διὰ φιλεραστείας μηδέν' ἀποβαλεῖν τῶν ἀνθούντων ἐν ὥρᾳ, ὥσπερ τὸν φιλοίνον δῷμεν πάγτα οἶνον ἐπὶ πάσης προφάσεως ἀσπαζομένους.

διὰ μέσου] διαμέσον Vind. DEF.

ἐμμετρότατα] ἐνμετρώτατα Vind. F. ἐμμετρότατα Bekkerus et in tert. Astius. Cf. ad p. 457. A. Vindobonensis auctoritas in aliis minime spernenda in hoc eo leviōr est, quod etiam ὀρθώτατα ubique exhibet.

E. μελιχλώρους] Ita γρ̄ Par. A. (in margine, secundum Faehsium) et scholiastes ad L. VI. p. 485. B. (φιλοτίμων καὶ ἔρωτικῶν] ὅτι ἔλεγεν, ὅτι τοιττυναρχοῦσιν οἱ φιλότιμοι πολλάκις, καὶ οἱ ἔρωτικοὶ συμπάσχοντες μελιχλώρους

καλοῦσι τὸν ὥχρούς.) μελιχλώρον Flor. U. quem licet Stallbaumius in sequentibus a Stephano discrepare non monuerit, tamen probabile est cum Mon. B. consentire, qui verba μελιχλώρους — ἐραστοῦ in Par. DK. prorsus omissa hunc in modum supplet: τὸ δὲ μελιχλώρον τίνος ἄλλου τοῦνομα οἵει εἶναι η̄ ἐραστοῦ. Ipse Par. A. et reliqui codices excepto Vind. D. in quo μελιχλώλον legitur, cum Ald. Bas. ab. Steph. μελιχλώρους exhibent, quod quia blanditiarum nihil in se habet, haud dubie vitiosum in μελιχλώρους mutandum esse primus statuit Lambinus ad Horat. Sat. I. 3, 38. deinde Stephanus annot. p. 21. litterarum vicinitate et Theocriti loco motus Id. X. 26: Βομβύκα χαρίεσσα, Σύραν παλέοντί τν πάντες, Ισχνάν, ἀλιόνανστον· ἐγὼ δὲ μόνος μελιχλώρον. Atque ita Astius in pr. et tert. Bekkerus et Stallbaumius scripserunt. Antea Stephanus μελιχρόόν vel μελιχρόόν coniecerat, quorum prius in margine Platonis una cum altero et in thesauro Tom. II. p. 378. D. simul cum Lambiniano propositum et Plutarchi loco posteriori commendatum a Stephano recipiendum censuerunt Boeckhius in Min. pag. 139. et Astius in sec. præter Plutarchum Lucretii auctoritate usi, qui L. III. v. 1154. indicem vocabulorum ab amantibus ad extenuanda amatarum vitia adhibitorum ita orditur: *Nigra μελιχρόος est, immunda et foetida αὐτοσμος*. Idem censuit Iacob-

τίνος ἄλλου ποίημα εἶναι, ἢ ἐραστοῦ ὑποκοριζομένου
τε καὶ εὐχερῶς φέροντος τὴν ὀχρότητα, ἐὰν ἐπὶ ὥρᾳ ἦ;
475 καὶ ἐνὶ λόγῳ πάσας προφάσεις προφασίξεσθε τε καὶ πά-
σας φωνὰς ἀφίετε, ὥστε μηδένα ἀποβάλλειν τῶν ἀν-
θούντων ἐν ὥρᾳ. Εἰ βούλει, ἔφη, ἐπ’ ἐμοῦ λέγειν περὶ¹
τῶν ἐρωτικῶν, ὅτι οὕτω ποιοῦσι, συγχωρῶ τοῦ λόγου
χάριν. Τί δ’; ἦν δ’ ἐγώ· τοὺς φιλοίνους οὐ τὰ αὐτὰ
ταῦτα ποιοῦντας ὁρᾶς· πάντα οἶνον ἐπὶ πάσης προφά-
σεως ἀσπαζομένους; Καὶ μάλα. Καὶ μὴν φιλοτίμους γε,
ώς ἐγῷ μαι, καθορᾶς, ὅτι ἀν μὴ στρατηγῆσαι δύνωται,

sius ad Philostrati Ic. I. 4: γρά-
φει μειράμιον οὐδὲ λευκὸν οὐδὲ ἐν
τρυφῆς, ἀλλ᾽ εὔψυχον καὶ πα-
λαιστρας πνέον, οἷον τὸ τῶν
μελιχρόων ἄνθος, οὓς ἐπαινεῖ
ὅτινος Ἀριστωνος. quem et ipsum
non aliter atque Plutarchum με-
λιχρόους Platonis in verbis legisse
dicas. At minime recentem ab
huius loci lectione Philostratum
illa exarasse patet, quippe qui
fortitudinis et palaestrae speciem
in mellis colore praeditis lauda-
tam hic putaverit, quae potius
nigris tribuitur. Neque vero Plu-
tarhus, nam Lucretium non vi-
deo qua ratione Boeckhius sua
ad Platonis norinam composuisse
statuerit, quum inter decem Grae-
ca, quae addit, nullum hinc re-
petitum sit, sed ne Plutarchus
quidem de scripto videtur Plato-
nica retulisse, ut pro lectionis
teste citari possit. Magis id de
Aristaeneto credibile, cuius μελι-
χρώτονς aequa facile in μελιχλώ-
ρονς atque in μελιχρόνς muta-
veris. Sed ut Plutarchus in co-
dice suo μελιχρόους legerit, ni-
hilo minus ex nostris μελιχλώρονς
scribendum est. Nam illud no-
men, nihil a vulgari sermone dis-
crepans, neque forma neque si-
gnificatione tale erat, ut statim
amatoris figmentum agnoscendum
dici posset: hoc utique mirum et
ad palloris dulcedinem indicandam
excogitatum ab aliquo, cuius pal-
lidae deliciae essent, videri de-
bebat. Accedit, quod μελαγχλώ-

ρονς multo facilius ex hoc, quam
ex illo oriri potuit.

δὲ] τε δὲ Vind. F.

οἵτι] εἴη Vind. D.

τίνος] Ita Mon. B. Flor. U.
Bekkerus et in pr. Stallbaumius.
τίνως Lob. Vind. BDEF. (Flor.
ACRTV.) Ald. Bas. ab. Steph.
Ast. et in sec. Stallb. quod scrip-
tor si ponendum putaret, potius
post ἄλλον (v. ad L. VI. p. 493.
D.) positurus erat, librarii vero
propter antecedens οἵτι interrogati-
vo praeferre poterant. Cf.
L. VIII. p. 573. A. Etiam Fi-
cinus τίνος legit, qui verba με-
λιχλώρονς — ὥρᾳ ἦ; sic reddi-
dit: pallidum autem adolescentem
quis appellavit, nisi amator ipse
blandiens quodammodo, et semi-
pallidi appellatione in ephebis
pallorem facile ferens?

ὠχρότητα] ὠχρόσητα Ald. ὠ-
χρότητα Bas. b.

πάσας] post προφάσεις Vind.
F. Flor. R.

προφασίξεσθε] προφασίξεσθαι
Vind. F. et, sup. ε, E.

οὕτω ποιοῦσι] ποιοῦσιν οὕτω 475
Par. K.

Τί δ’;] τι δαι Par. A. τι δε
Vind. EF. τι δέ Flor. ACRTV.
Signum interrogandi, quod Bas.
ab. post φιλοίνος, Stephanus
et Bekkerus post ὥρᾶς habent,
cum Stallb. sec. hic potius po-
nendum neque tamen cum eodem
δέ scribendum putavi.

ἦν δ’] ἦν Par. K. sec. Bip.
Flor. U.

τριττυαρχοῦσι, καὶ μὴ ὑπὸ μειζόνων καὶ σεμνοτέρων Β τιμῶνται, ὑπὸ δημιούροτέρων καὶ φανλοτέρων τιμώμενοι ἀγαπῶσιν, ὡς ὅλως τιμῆς ἐπιθυμηταὶ ὄντες. Κομιδὴ μὲν οὖν. Τοῦτο δὴ φάσι, ἢ μή· ἀρ' ὃν ἂν τινος ἐπιθυμητικὸν λέγωμεν, παντὸς τοῦ εἰδοντος τούτου φήσομεν ἐπιθυμεῖν, ἢ τοῦ μὲν, τοῦ δὲ οὐ; Παντός, ἔφη. Οὐκοῦν καὶ τὸν φιλόσοφον σοφίας φήσομεν ἐπιθυμητὴν εἶναι οὐ τῆς μὲν, τῆς δ' οὐ, ἀλλὰ πάσης; Ἀληθῆ. Τὸν ἀρα περὶ τὰ μαθήματα δυσχεραίνοντα, ἀλλως τε καὶ C : νέον ὄντα καὶ μήπω λόγου ἔχοντα, τί τε χρηστὸν καὶ

ποιοῦντας] ποιοῦντα Lob.
Vat. M.

δρᾶς·] δρᾶς, Bas. ab. Ställb.

Καὶ μάλα.] om. Vind. D.

φιλοτίμους] φιλοτίμως Vind.
E. Vat. H. Flor. AC.

γε] om. Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

τριττυαρχοῦσι] τριττυαρχοῦσι
Vind. F. Vulgatum Mon. B. in
contextu, sed in m. a m. pr. τρι-
τυαρχοῦσι habet, quemadmodum
Timaei lex. p. 260. τριτύς φυ-
λῆς μέρος τριτον, et in Harpo-
crat. cod. Vratisl. item τριτύς
ἔστι τὸ τριτον μέρος τῆς φυλῆς
scriptum est. Contra τριτύς,
τριττυαρχοῖ in lexico Bekkeri
aneqd. p. 306, 24. 25. et in scho-
lio ad h. l. legitur. Ceterum ap-
posite, nisi fallor, ad mores isto-
rum scriptor etiam tertium ab
imperatore gradum eis, si amplior-
rem consequi nequeant, sufficere
significat. Valesio tamen ad Har-
pocrat. p. 399. Lips. pro στρα-
τηγῆσαι melius φυλαρχῆσαι di-
citurus fuisse videbatur.

μειζόνων] μειζόνως Ald.

B τιμῶντας] τιμᾶσθαι Lob. Vind.
BF. Vat. BM. Ven. C. Mon. B.
Par. D. Flor. U. Ald. Bas. a. et,
sup. ὀνται, Ang. B. τιμῶμαι
Bas. b. De Flor. CT. Stallbau-
muis nihil significavit, reliquos
tres cum Stephano consentire
ostendit.

ὑπὸ — ἀγαπῶσιν] honorem ab
ignobilibus exigunt Fic.

ὅλως] ὅλος Ven. C.

τιμῆς] om. Flor. C.

ἐπιθυμηταὶ] ἐπιθυμητέοι Vind.
F.

Κομιδὴ] κομιδὴ idem.

Τοῦτο] om. Vind. E. καὶ τοῦ-
το Ang. B. Flor. RT.

δὴ] om. Vind. E. Flor. C. δε
Vind. F. δεὶ Ang. B.

φάσι] φᾶσι Mon. B. Vind. D.
φασι Vind. F. φασὶ Lob. Cf.
Vol. I. p. 407, b.

μή·] μή; Ald. Bas. ab. Fate-
beris hoc, an non? Fic.

ἀρ'] ἀρα Vind. EF.

οὐ] ὃν Ven. C. sec. Bekk. οὐ
Mon. B. et e corr. Flor. U. οὐν
Par. DK. Ald. Bas. ab. Steph.
qui in m. ὃν, in annotat. p. 22.
οὐν ὃν scribendum coniecit. ὃν
Astius iam in pr. secundum Ven.
C. dedit.

τινος] τινα Mon. B. et e corr.
Flor. U.

παντὸς τοῦ εἰδοντος τούτον]
om. Fic. In Flor. T. τούτον
post ἐπιθυμεῖν positum est.

σοφίας φήσομεν ἐπιθυμητὴν]
φ. σ. ἐ. Vind. F. Ang. B. Flor.
R. σ. ἐ. φ. Vind. D.

τί τε] τί δε Vind. F.

C

μὴ, οὐ φήσομεν φιλομαθῆ οὐδὲ φιλόσοφον εἶναι, ὥσπερ τὸν περὶ τὰ σιτία δυσχερῆ οὔτε πεινῆν φαμὲν οὕτ' ἐπιθυμεῖν σιτίων οὐδὲ φιλόσιτον, ἀλλὰ κακόσιτον εἶναι. Καὶ ὁρθῶς γε φήσομεν. Τὸν δὲ δὴ εὐχερῶς ἔστελοντα παντὸς μαθήματος γεύεσθαι καὶ ἀσμένως ἐπὶ τὸ μανθάνειν λόντα καὶ ἀπλήστως ἔχοντα, τοῦτον δ' ἐν δίκῃ φήσομεν φιλόσοφον. ἡ γάρ; Καὶ ὁ Γλαύκων ἔφη· πολλοὶ λόντα καὶ ἄτοποι ἔσονται σοι τοιοῦτοι. οὗ τε γάρ φιλοθεάμονες πάντες ἔμοιγε δοκοῦσι τῷ καταμανθάνειν

φήσομεν — ὥσπερ] om. Vind. F.

φιλομαθῆ] φιλομαθεῖν Par. K. sec. Bekk.

δυσχερῆ] δυσχαιρεῖ cum η super εῖ Vind. E.

πεινῆν] Ita hoc loco Ald. non omisso, ut plerumque, i subscripto. Cuius clarum vestigium in plurimorum codicum scriptura διαιτῶν pro διαιτᾶν a Bekkero ad Sophist. 226. B. p. 146, 18. commemorata superstes eis, quae Vol. I. p. LVIII. notavi, addendum.

σιτίων] σιτίου Vind. B. Vat. M.

φιλόσιτον] In Vind. D. η super ὁ positum.

δὴ] μὴ Vind. E. om. Flor. T. τοῦτον δ'] δ' om. Vind. D.

ἐν δίκῃ] ἐνδίκως Flor. T.

φήσομεν] φήσομεν Vind. F. Ang. B. Flor. R. — Ad hunc locum respexisse Plutarchum in Cic. p. 861. E. Astius monuit. EIus verba de Cicerone haec sunt: γενόμενος δ', ὥσπερ ὁ Πλάτων ἀξιοῖ τὴν φιλομαθῆ καὶ φιλόσοφον φύσιν, οἷος ἀσπάζεσθαι πᾶν μαθῆμα καὶ μηδὲν λόγου μηδὲ πάντειας ἀτιμάζειν εἰδος, ἐδόκην πως προδημότερον ἐπὶ ποιητικήν.

ἡ] ἡ Vind. F.

πολλοὶ]. πολὺ Vat. H. Flor. ACV.

D σοι] om. Fic.

οὗ τε] ὥστε Ald. Bas. ab. Stephan. Correxit in pr. Astius secundum Par. K. Ven. C.

πάντες] παντὶ Vind. E.

τῷ] τὸ Vind. F.

καταμανθάνειν] μανθάνειν Ven. B. quod ad disputationem aptius, sed a veritate alienum.

Cf. L. VII. p. 529. B.

ώς γ'] ὅσδ' Vat. H. δς δ' Flor. ACV. ως οὓς δεῖ γ' Ang. B. οὓς δεῖ Flor. T. et mārgo R. ut Stallbaumius in pr. demonstrat; quod magis verisimile, quam quod in sec. ait, ως οὓς δεῖ in illis exstare.

τοιαύτην] τὴν τοιαύτην Vind. E.

περιθέοντι] ἐπιθέοντι Mon. B. Flor. U.

κατὰ πόλεις] κατὰ κάμας Vind. E. in urbe Fic. Verum non Atticis solis urbana et ruralia erant Dionysia. Cf. Leg. L. I. p. 637. A. B.

κάμας] πόλεις Vind. E.

τούτους — φιλοθεάμονας. E.] laudant Clemens Alex. Strom. L. I. p. 373. Cyrillus adv. Julian. V. p. 179. E. Theodoretus Therap. L. I. p. 703. Schulz.

πάντας καὶ] ἀπαντάς καὶ τὸν Theodor. τὸν Astius in sec. recepit.

ἄλλους] ἄλλων Vind. EF. Ang. B. Flor. R.

τοιούτων] om. Vind. E.

τινῶν] τινὰς Vind. B. Vat. M. et, sup. ὕν, Lob. Vind. D.

μαθητικὸν] Ita Lob. Vind. B. E et a m. pr. Par. A. Vat. M. μαθητικὸν (Par. A. Vat. M. a

χαίροντες τοιοῦτοι εἶναι, οἵ τε φιλήκοοι ἀτοπώτατοι
467 τινές εἰσιν ὡς γ' ἐν φιλοσόφοις τιθέναι· οἱ πρὸς μὲν
λόγους καὶ τοιαύτην διατριβὴν ἔκόντες οὐκ ἀν ἐθέλοιεν
ἔλθεῖν, ὥσπερ δὲ ἀπομεμισθωτές τὰ ὡτα ἐπακοῦσαι
πάντων χορῶν περιθέουσι τοῖς Διονυσίοις οὕτε τῶν πα-
τὰ πόλεις οὕτε τῶν κατὰ κάμας ἀπολειπόμενοι. τούτους
οὖν πάντας καὶ ἄλλους τοιούτων τινῶν μαθητικὸς καὶ Ε
τοὺς τῶν τεχνυδρίων φιλοσόφους φήσομεν; Οὐδαμῶς,
εἶπον, ἀλλ' ὁμοίους μὲν φιλοσόφοις. Τοὺς δὲ ἀληθινοὺς,

m. s.) reliqui codices, Clem. Cyr. Theod. et Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr. μαθητικὸς Stephanus in m. adscripserat, sed in annot. p. 22. de altero tolerabilius sentit: „Si mendo caret haec scriptura, dicendum erit μαθηματικὸς non alios esse quam μαθητικὸς. quos nimis et φιλομαθεῖς videtur appellare. Sic autem ἐρωτηματικὸς antea non aliud quam ἐρωτητικὸς significare vidimus.“ Id pertinet ad locum Cratylī p. 398. E. ubi quum in contextu pro corrupto ἐρωτικὸς secundum Cornarium ἐρωτηματικὸς posuisset, in annot. pag. 15. an potius ἐρωτητικὸς scribendum fuerit, dubitat; quam dubitationem codices confirmarunt. Quamquam illo loco ἐρωτηματικὸς, Iquid in Clarkiano repertum videtur, non magis vitiōsum est, quam διηγηματικὸς apud Aristotelem Eth. Nic. L. III. 10, 2. ubi Zellius διηγητικὸς scripsit, quandoquidem sermo est de iis, qui omnino īterrogationibus, narrationibus uti solent. Similiter μαθητικὸς, quum rei discendae ratio non habetur, μαθηματικὸς dici poterunt, neque reprehendendum puto Stallbaumum, qui Sophist. p. 219. C. optimis codicibus μαθηματικὸν (εἶδος τεχνῶν) pro μαθητικὸν praebentibus vulgariter secundum eos mutaverit. Ubi vero obiecti s. rei, cui quis discendae vel deditus vel idoneus sit, significatio per genitivum vel alio modo accedit, ibi vereor ut

μαθηματικὸς recte dicatur, quippe quod obiectum (μαθηματικὸς) etiam per se solum indicet. Plutarchus quidem Mor. p. 513. D. ita locutus videtur: οἶον οἱ στρατιωτικοὶ πολέμων εἰσὶ διηγηματικοὶ. Sed διηγήματα magis incerti generis et definitione indigentia sunt, quam μαθήματα, neque secundum Plutarchum de Platonis sermone statui potest. Itaque μαθητικὸς praetuli.

τοὺς] om. Clem. excepto Hoeschelii codice.

τῶν] om. Cyr.

τεχνυδρίων] Vind. E. ṉ int. vers. habet. — τοὺς τῶν τεχνυδρίων φιλοσόφους hinc petuit Athenaeus loco ad ἐπαυτοτερίζοντι. p. 479. C. significato.

φήσομεν — φιλοσόφοις] om. Cyr. Pro φήσομεν Vind. F. Flor. R. Clem. Theod. θήσομεν, Ang. B. Flor. T. et margo R. εἴπωμεν exhibent.

μὲν] om. Mon. B. Flor. U. Par. DK. sec. Bekk. Theod.

φιλοσόφοις] φιλοσόφους Vind. F.

Τοὺς δὲ — φιλοθεάμονας.] iterum sine auctoris nomine laudat Clemens L. V. pag. 654, 1. Idem L. I. et Theod. τοὺς δὲ initio habet.

ἀληθινοὺς] ἀληθηνοὺς Vind. E.

ἔφη, τίνας λέγεις; Τοὺς τῆς ἀληθείας, ἦν δ' ἔγώ,
φιλοθεάμονας. Καὶ τοῦτο μέν γ', ἔφη, ὁρθῶς ἀλλὰ
πῶς αὐτὸς λέγεις; Οὐδαμῶς, ἦν δ' ἔγώ, φαδίως πρός
γε ἄλλον· σὲ δὲ οἶμαι δύολογήσειν μοι τὸ τοιόνδε. Τὸ
ποῖον; Ἐπειδὴ ἐστιν ἐναντίον οὐκόν αἰσχρῷ, δύο αὐ-
476 τὰ εἶναι. Πῶς δ' οὖ; Οὐκοῦν ἐπειδὴ δύο, καὶ ἐν ἐκάτε-
ρον; Καὶ τοῦτο. Καὶ περὶ δικαίου καὶ ἀδίκου καὶ ἀγα-
θοῦ καὶ κακοῦ καὶ πάντων τῶν εἰδῶν πέρι δι αὐτὸς
λόγος· αὐτὸς μὲν ἐν ἐκαστον εἶναι, τῇ δὲ τῶν πράξεων
καὶ σωμάτων καὶ ἀλλήλων κοινωνίᾳ πανταχοῦ φανταζό-
μενα πολλὰ φαίνεσθαι ἐκαστον. Ὁρθῶς, ἔφη, λέγεις.
Ταύτῃ τοίνυν, ἦν δ' ἔγώ, διαιρῶ, χωρὶς μὲν οὓς νῦν
δὴ ἔλεγες φιλοθεάμονάς τε καὶ φιλοτέχνους καὶ πρακτι-
κούς, καὶ χωρὶς αὖ περὶ ᾧ δι λόγος, οὓς μόνους ἂν
τις ὁρθῶς προσείποι φιλοσόφους. Πῶς, ἔφη, λέγεις;
Οἱ μέν που, ἦν δ' ἔγώ, φιλήκοοι καὶ φιλοθεάμονες

ἔφη] post τίνας Vind. D. post
λέγεις Lob. Vind. B. Vat. BM.
Clemens L. V. φιλοσόφους ad-
dit.

λέγεις] om. Cyr.

ἦν δ' ἔγώ] om. idem.

φιλοθεάμονας — ἦν δ' ἔγώ]
om. Vind. E.

τοῦτο] τοὺς Vat. H.

γέ] γε Lob. Vind. B.

αὐτῷ] αὐτῶ Vat. H. αὐτῷ
Flor. ACR.

ἄλλον] ἄλλων Vind. E. Vat.
H. Flor. ACTV.

ἐστιν] ἐστιν Lob.

οὐκόν αἰσχρῷ] οὐκόν αἰσχρῷ
Vind. E. Vat. H. οὐκόν αἰσχρὸν
Ang. B. αἰσχρῷ οὐκόν Flor. RT.
turpi pulchrum Fic.

δύο] δύο' Vind. F. δύω Flor.
RT.

αὐτῷ] αὐτῷ Vind. D.

476 εἶναι.] εἶναι; Vind. B.

ἐκάτερον; Καὶ τοῦτο. Καὶ]
ἐκάτερον, καὶ τοῦτον καὶ Ald.
ἐκάτερον; Καὶ τοῦτο. Καὶ Bas.

a. ἐκάτερον. Καὶ τοῦτο. Καὶ
Steph. Prius καὶ om. Vind. F.
Ang. B. Pro τοῦτο. Καὶ Vind.
F. τούτῳ καὶ habet.

περὶ] περὶ δὴ Lob. Vind. BF.
Vat. BM. Ven. C.

ἢν] om. Vind. EF. Vat. H.
Flor. ACR. post ἐκαστον ponit
Ang. B.

τῇ] Ita Vind. D. a m. s. τὸ a
m. pr.

πανταχοῦ] In Ven. B. ἡ su-
per οὐ adscriptum. πολλαχοῦ Lob.
Vind. BD. Vat. M.

Ταύτῃ — λέγεις; B.] om. Vind.
E.

φιλοθεάμονάς] φιλοθεάμονές
Vind. F.

πρακτικοὺς] πρακτικοὺς idem.
Ficinus hos tres ita descriptsit:
curiosos ad videndum, audiendum
artesque tractandas.

προσείποι] προσείπη Vind. B. B
Ven. B. Vat. M. προσείπη Flor.
C.

πον] ποι unus vel plures Bek-
keri, quorum significationem omis-
sit.

τὴν φύσιν] τὸν νοῦν Lob.
Vind. BD. Vat. BM. Par. DK.
Mon. B. Flor. U. Bas. b. et cor-
recti Ven. BC.

τάς τε καλὰς φωνὰς ἀσπάζονται καὶ χρόας καὶ σχήματα καὶ πάντα τὰ ἐκ τῶν τοιούτων δημιουργούμενα, αὐτοῦ δὲ τοῦ καλοῦ ἀδύνατος αὐτῶν ἡ διάνοια τὴν φύσιν ἰδεῖν τε καὶ ἀσπάσασθαι. "Εχει γὰρ οὖν δὴ, ἔφη, οὕτως. Οἱ δὲ δὴ ἐπ' αὐτὸ τὸ καλὸν δυνατοὶ λέναι τε καὶ δρᾶν καθ' αὐτὸ ἄρα οὐ σπάνιοι ἀν εἰεν; Καὶ μάλα. C 'Ο οὖν καλὰ μὲν πράγματα νομίζων, αὐτὸ δὲ κάλλος μήτε νομίζων μήτε, ἃν τις ἥγηται ἐπὶ τὴν γνῶσιν αὐτοῦ, δυνάμενος ἐπεσθαι, ὅναρ ἡ ὑπαρ δοκεῖ σοι ξῆν; σκόπει δέ. τὸ δύνειρά ττειν ἄρα οὐ τόδε ἐστὶν, ἐάν τ' ἐν ὑπνῷ τις ἐάν τε ἐγρηγορῶς τὸ ὅμοιόν τῷ μὴ ὅμοιον, ἀλλ' αὐτὸ ἥγηται εἶναι ὡς ἔοικεν; Ἐγὼ γοῦν ἀν, ἡ δ' ὁς, φαίην δύνειρά ττειν τὸν τοιοῦτον. Τί δέ; ο τάναντία τούτων ἥγούμενός τέ τι αὐτὸ καλὸν καὶ δυνάμενος καθορᾶν καὶ αὐτὸ καὶ τὰ ἐκείνου μετέχοντα καὶ οὔτε D τὰ μετέχοντα αὐτὸ οὔτε αὐτὸ τὰ μετέχοντα ἥγούμενος,

ἰδεῖν τε καὶ ἀσπάσασθαι] attingere Fic. τε om. Vind. D. — ἀσπάζεσθαι Vind. E.

ἐπ' αὐτὸ] ἐπαντὸ Vind. F. ὑπ' αὐτὸ Mon. B.

καθ' αὐτὸ] καθ' ἐαντὸ Lob. Vind. BD. Mon. B. Ang. B. Vat. M. καθεαντὸ Vind. F.

ἄρα] ἄρα Lob. Vind. F. Flor. RU.

σπάνιοι] Prius & Mon. B. int. vers. habet.

ἄν] om. Lob. Vind. BD. Mon. B. Par. DK. Vat. M.

C εἶεν] εἴεν Ald. οἴεν Bas. ab. αὐτὸ δὲ κάλλος] αὐτὸ δὲ κάλλος Vind. B.

ἐπὶ τὴν γνῶσιν αὐτοῦ] „Pos sunt haec verba vel praecedentibus vel sequentibus iungi, eodem manente sensu.“ Steph. annot. p. 22. At ipsa verborum collo catio indicat, utris iungenda sint.

ὑπαρ δοκεῖ] ὑπαρδος οει Vind. E.

δέ] igitur Fic. {δὲ sine inter punctione Ald. Bas. ab.

ἄρα] ἄρα Vind. F. Flor. ACV.

ἐάν τ'] ἐάν τε Lob. Vind. BDEF. Flor. ACRT.

τις] ἐστὶν Par. DK.

τε ἐγοηγορῶς] τε γοηγορῶς, corr. τ ἐγο. Vind. D. τε ἐγοηγό ρῶς Vind. F.

τῷ μὴ] τὸ μὴ cum punctis sub τὸ Mon. B. μὴ τὸ Par. K.

ἥγηται] ἥγεῖται Vind. BD. Flor. ACTV.

ὡς] ὡς Vat. H.

Ἐγὼ γοῦν] ἐγὼ γ' οὖν Vind. EF. ἐγωγ' οὖν Lob. Vind. BD. Mon. B. (Florentini) cum editis ante Bekkerum, qui tacito Ἐγὼ γοῦν scripsit. Cf. Vol. I. p. 30.

τὸν] τὸ Par. K. sec. Bekk.

δέ] δ' Vind. BD. δὲ sine inter punctione Ald. Bas. ab.

ἥγούμενός τέ τι αὐτὸ καλὸν] ἥγούμενος. τι αὐτοκαλὸν Vind. BD. (hic αὐτὸ καλὸν.) τε omittit etiam Vat. M. et αὐτοκαλὸν pro uno exhibit Vind. F. (qui contra affectus est) intelligitque quid ipsum pulchrum Fic.

καὶ οὔτε — ἥγούμενος] om. D Vind. B. καὶ ante οὔτε om. Vind. DE. Vat. H. Flor. AC.

ῦπαρ ἡ ὄναρ αὐτὸς δοκεῖ σοι ξῆν; Καὶ μάλα,
ἔφη, ὕπαρ. Οὐκοῦν τούτου μὲν τὴν διάνοιαν ὡς γι-
γνώσκοντος γνώμην ἀν ὁρθῶς φαίμεν εἶναι, τοῦ δὲ
δόξαν ὡς δοξάζοντος; Πάνυ μὲν οὖν. Τί οὖν, ἐὰν
ἡμῖν χαλεπαίνῃ οὗτος, ὃν φαμεν δοξάζειν, ἀλλ' οὐ γι-
γνώσκειν, καὶ ἀμφισβητῇ, ὡς οὐκ ἀληθῆ λέγομεν;
E ἔξομέν τι παραμυθεῖσθαι αὐτὸν καὶ πείθειν ἡρέμα ἐπι-
κρυπτόμενοι, ὅτι οὐχ ὑγιαίνει; Δεῖ γέ τοι δὴ, ἔφη.
"Ιδι δὴ, σκόπει, τί ἐροῦμεν πρὸς αὐτόν. ἡ βούλει ὥδε
πυνθανώμεθα παρ' αὐτοῦ, λέγοντες, ὡς εἴ τι οἶδεν,

αὐτὸς καὶ οὗτος] om. Fic.

μάλα] μάλι Lob. Vind. BDF.

Ang. B. Vat. M. Flor. R.

γιγνώσκοντος] γιγνώσκοντος

Vind. E. γιγνώσκοντες Vind. B.

Vat. M. γιγνώσκοντες cum o super ε Vind. D.

γιγνώμην] Ita Vind. F. a m. pr.
γιγνῶσιν Ang. B. Flor. T. et a m.
rec. Vind. F.

τοῦ δὲ] τοῦδε Vind. F.

δοξάζοντος] δόξαντος Vind.

D.

Τί οὖν] om. Fic.

χαλεπαίνῃ] χαλεπήνη editi ante
Bekkerum, qui praesens ex Par.
ADK. Vat. B. Ven. C. Vind. B.
Mon. B. Ang. B. restituit. Idem
est in Vind. DF. Flor. RU. χα-
λεπαίνειν habent Lob. Vat. M.
χαλεπήνη Vind. E. et, ut vide-
tur, Ven. B. Vat. H. de quibus
Bekkerus nihil ostendit, cum Flor.
ACTV.

γιγνώσκειν] γιν. Vind. DE:
Flor. ACTV.

οὐκ ἀληθῆ] οὐκ ἀλλως Bas.
b. οὐκ ιαλῶς Lob. Vat. M. Vind.
BD. (hic ἀληθῶς in m.)

λέγομεν;) Vulgo comma fa-
ciunt, quasi illud Τί οὖν etiam
ad sequentia pertineat.

ἔξομέν] ἔξομέν Ald.

E καὶ πειθεῖν ἡρέμα ἐπικρυπτό-
μενοι] sensimque et blande per-
suadebimus Fic. In Vind. F. ἡ-
ρέμα scriptum est. Cf. Vol. I.
p. 350, b.

ὑγιαίνει] ὑγιαίνοι Vind. BD.

"Ιδι δὴ] δὴ om. Par. K.

σκόπει] σκοπῶμεν Lob. Vind.

BD. (hic cum vulg. int. vers.)

Mon. B. Vat. BM. Flor. U. σκο-

ποῦμεν Ven. C. Par. DK.

ἡ βούλει] si vis Fic.

πυνθανώμεθα] πυνθανόμεθα
Ven. B.

φθόνος] φθόνως Vind. E.

ἀλλ' ἀσμενοι ἀν ἵδομεν εἰδό-
τα τι] sed gratum erit nobis et
ipsum scire aliquid et, quid sciat,
novisse Fic.

ἡμῖν] ὑμῖν Bas. ab.

εἰπὲ] εἰπε Vind. D. In Vind.
B. post εἰπὲ comma, post τόδε
vero ut in Ald. Bas. ab. nulla
interpunctio est.

ὁ γιγνώσκων] ὁ γεν. Vind. DE.

οὐ Lob. Vind. B. Mon. B. Vat.

BM. Ven. C. Par. DK. Flor. U.

γιγνώσκει] γιν. Vind. DE. Mon.

B. Par. K. sec. Bip. (γιγνώσκει
sec. Bekk.) Ald. Bas. ab. γιγνώ-

σκειν Lob. Vind. B. Vat. BM.

γιγνώσκων cum ει super altero
ω Ven. C. Par. D. Vulgatam

tuetur Proclus in Civ. p. 424, 24:

ἐπειδὴ δὲ ἀρχόμενος τοῦ περὶ

αὐτῶν σκέμματος δύο πεποίηται

ἔρωτήσεις, ἀξιόν τι καὶ περὶ

τούτων φάναι. τὴν μὲν οὖν προ-

τέραν τοιαύτην πεποίηται, εἰ

πᾶς ὁ γιγνώσκων τὶ γιγνώσκει,

ἡ οὐδέν. ἀντίφασις γάρ τὸ τις

καὶ τὸ οὐδεὶς, ὡς τὸ πᾶς καὶ

τὸ οὐ πᾶς. λαβὼν δὲ, ὅτι γι-

γνώσκει τὶ πᾶς ὁ γιγνώσκων, ἡ-

ρώτησε πάλιν δευτέραν ἔρωτη-

σιν, εἰ ὁ τὸ γιγνώσκων ὃν γιγνώ-

σκει, ἡ καὶ μὴ δην· ὡς διαφέ-

οὐδεὶς αὐτῷ φθόνος, ἀλλ' ἄσμενοι ἀν ιδοιμεν εἰδότα
τι· ἀλλ' ἡμῖν εἰπὲ τόδε· ὁ γιγνώσκων γιγνώσκει τί, η
οὐδέν; σὺ οὖν μοι ὑπὲρ ἐκείνου ἀποκρίνου. Ἀποκρί-
νοῦμαι, ἔφη, ὅτι γιγνώσκει τί. Πότερον δν, η οὐκ
δν; "Ον· πῶς γὰρ ἀν μὴ δν γέ τι γνωσθείη; Ἰκανῶς 477
οὖν τοῦτο ἔχομεν, καν εἰ πλεοναχῇ σκοποῦμεν, ὅτι τὸ
μὲν παντελῶς δν παντελῶς γνωστὸν, μὴ δν δὲ μηδαμῆ
πάντη ἄγνωστον; Ἰκανώτατα. Εἰεν· εἰ δὲ δή τι οὕτως
ἔχει, ως εἶναι τε καὶ μὴ εἶναι, οὐ μεταξὺ ἀν κέοιτο
τοῦ εἰλικρινῶς δντος καὶ τοῦ αὖ μηδαμῆ δντος; Με-

ρουσαν ταύτην τῆς πρὸ αὐτῆς
ποιησάμενος τὴν ἐρώτησιν. οὐ
γὰρ ἀν, εἰ τὸ τὸ καὶ τὸ δν ταύ-
τὸν ἦν, καὶ τὸ οὐδὲν καὶ τὸ μὴ
δν, εἰχε λόγον ἐρωτᾶν, εἰ ὁ τὶ¹
γιγνώσκων η δν η μὴ δν γιγνώ-
σκει. ταῦτον γὰρ ἦν ταῦτα ἐρω-
τᾶν καὶ εἰ ὁ τὶ γιγνώσκων γιγνώ-
σκει τί, η οὐδέν. ἂ δὴ πάντως
ἄποπα.

μοι] μοῦ Bas. b.

γιγνώσκει] γν. Vind. DE. Mon.
B. Ald. Bas. ab. οὐ γιγνώσκει
Lob. Vind. B. Vat. M.

δν] οὐ Bas. a.

οὐν δν; "Ον·] οὐν δν Par. K.
οὐν δν. Lob. Vind. B. Vat. M.
οὐν δν: Vind. D.

477 δν γέ] δν τέ Vind. E. οὐ γέ
Ald. Bas. a.

οὐν] ἀν Vind. D. om. Fic.

καὶν εἰ] si Fic. Immo etiamsi.
Cf. p. 473. A. et quae ibi adnotavi.
Sensum loci minime obscurum
bene declaravit Schleierma-
cherus: Astius et Stallbaumius
caeci fuerunt.

πλεοναχῇ] πλειοναχῇ Ven. B.
Vat. H. Flor. ACV.

σκοποῦμεν] σκοποῦμεν Ven. B.
Par. K. sec. Bip. σκοπῶμεν Vind.
B. et cum oī super ω D.

παντελῶς γνωστὸν] παντελῶς
ομ. Vind. E.

μηδαμῆ] μηδαμή Vind. F.
(μηδαμῆ editi ante Bekk.)

ἄγνωστον;] ἄγνωστον. editi
ante Astii sec.

ἴκανώτατα] ικανότατα Mon.
B. Ald. Bas. ab.

Εἰεν] om. Fic.

ἔχει] ἔχεις Bas. b.

ἀν κέοιτο — Μεταξύ.] om.

Vind. E.

εἰλικρινῶς] Ita Vind. BDF.
Mon. B. Ald. εἰλικρινοῦς Par. K.
sec. Bekk. εἰλικρινῶς Lob. Bēs.
ab. Steph. et recentiores, inter
quos Bekkerus de aspero in Vind.
B. Mon. B. h. l. et p. 478. D.
E. 479. D. VIII. 549. B. et in
Mon. B. (Lob. Vind. F.) Tim.
p. 45. B. conspicuo tacens ne re-
liquorum quidem codicum hacte-
nus rationem in his posterioribus
libris videtur habuisse. Alibi qui-
dem habuit et Symp. p. 211. E.
εἰλικρινὲς in plerisque, Phaedon.
p. 66. A. 1. εἰλικρινεῖ in Pār. I.
ib. 2. εἰλικρινὲς in Clarkiano,
Phileb. p. 53. A. et 59. C. idem
in Coisl. scriptum esse adnotavit,
quibus omnibus locis etiam Lob.
et altero Phaedonis Flor. I. asper-
rum habet. Sed Lob. praeterea
Phaedon. 81. B. εἰλικρινῆ, Symp.
181. C. εἰλικρινῶς, Phileb. 29.
B. εἰλικρινὲς exhibet, mirum, si
solus et ab omnibus, quos in his
dialogis multo quam in Civitate
praestantior liber comites habere
solet, derelictus, quod Bekkeri
et Stallbaumii silentio nondum
credo. Tamen, ne quid dissimul-
lēm, Phaedon. p. 67. A. etiam in
illo, et Tim. p. 45. B. in Vind.
CCCXXXVII. εἰλικρινὲς legitur,
ut vulgo Axioch. p. 370. C. Xen-
oph. Cyrop. VIII. 5, 14. Mem.
II. 2, 3. Aristot. de anima L. III.

ταξύ. Οὐκοῦν ἐπὶ μὲν τῷ ὅντι γνῶσις ἡν̄, ἀγνωσία
B δ' ἐξ ἀνάγκης ἐπὶ μὴ ὅντι, ἐπὶ τῷ μεταξὺ δὲ τούτῳ
μεταξύ τι καὶ ξητητέον ἀγνοίας τε καὶ ἐπιστήμης, εἴ τι
τύγχανε ὃν τοιοῦτον; Πάνυ μὲν οὖν. Ἡρό-

p. 51, 27. Sylb. et *εἰληνωνεῖται*
apud eundem de mundo cap. 5.
pag. 15, 2. Atque usitatum aliquando hanc pronuntiationem fuisse compositum ἀπειληνεῖσθαι docet, quod ex Synesio citavit Matthaei Lect. Mosq. II. 79. a Creuzero ad Plotinum de pulchro p. 266. laudatus et Schneiderus in lexico. At nihilominus simplex aspirari potuit, ut *εἰλεῖν* et alia Buttmanno gramm. I. p. 76. et in addendis commemorata, quorum in compositis asperi ratio ne ab Atticis quidem habetur. Iam quum origo nominis, quo ante Platonem et Xenophontem qui usus sit non invenio, satis probabiliter ab *εἰλη* repetatur, quae re cf. Etym. p. 298, 56. quem locum Rückertus ad Symp. p. 56. adhibuit, et Ruhnkenius ad Tim. pag. 264. *εἰληνωνῶς* non minus verum videtur, quam *εἰλῆσεων* Vol. I. p. 197. et 276. Neque si cum Guyeto et Valckenario, quibus Stallbaumius ad Phaedon. p. 52. (Bibl. Gr. Vol. I. sect. II.) assentitur, a volvendo derivare malis, ut proprie volubili agitatione secretum atque adeo cribro purgatum significare statuatur, asperum repudiare cogaris. Nam *εἰλεῖν* Atticis non inusitatum fuisse constat. V. Buttmanni Lexilogus II. p. 157. 19. quem merito secutus est in tertia lexici editione Passovius in *εἰλέω*, recte idem nostro nomini utrumque spiritum attribuens.

μηδαμῆ] *μηδαμὴ* Vind. F.
ἐπὶ μὲν] *εἰ* *ἐπὶ μὲν* Mon. B.
Flor. U. Stallbaumius, omissa in sequentibus post τῷ μεταξὺ particula δὲ, quam reliquorum quoque codicum pars maxima, Par. ADK. sec. Bip. Lob. Vind. EF. Ven. C. Flor. ACV. Vat. HM. et a m. pr. B. omittunt, alii, Ang.

B. Flor. R. et per additamentum a m. pr. Vind. F. ante τῷ μεταξὺ ponunt, alii denique, Vind. BD. in ἔργα mutatam habent, ut duorum tantum, Ven. B. et Flor. T. et antiquarum editionum auctoritate niti videatur. Nam ne Ficinus quidem δὲ expressit: *circa id, quod est, cognitio ipsa versatur: ignoratio ex necessitate circa id quod non est, circa medium istorum medium quoddam investigandum, scientiam inter et ignorantiam, si quid huiusmodi reperitur.* Tamen haec quoque auctoritas multo potior illa, cui Stallbaumius paruit, ideoque lectio vulgata, quum semel ab eis, quos sequi solemus, codicibus discedere cogamur, illi quamvis per se probabili praferenda. Commemorato illo inter id, quod est, et quod non est, interposito Socrates medium ei quoddam inter scientiam et inscientiam attributurus *an igitur*, inquit, *ita series habet: extremis quidem extrema, ei, quod est, scientia, quod non est, necessario inscientia assignanda erat, medio vero medium inter utramque querendum est?* quorum posterius, quoniam priore efficiebatur, tamquam alteram eius partem assert et particula μὲν initio prioris innexa quasi praenuntiat. Quam particulam non posse ad δὲ post ἀγνωσία referri et alterum δὲ post alterum ἐπὶ requirere non contenderim: immo vulgatam lectionem et eam, quae in Vind. F. Ang. B. Flor. R. exstat, tali opinioni acceptam referendam videri posse sentio; verum pari certe iure licet εἰ pro interpolato habere; atque id, quod haud dubie in hac periodo excidit, post μεταξὺ potius, quam post οὐκοῦν excidisse varia librariorum circa illam

μέν τι δόξαν εῖναι; Πῶς γὰρ οὐ; Πότερον ἄλλην δύναμιν ἐπιστήμης, η̄ τὴν αὐτήν; "Ἄλλην. Ἐπ' ἄλλῳ ὅρᾳ τέταυται δόξα καὶ ἐπ' ἄλλῳ ἐπιστήμη, πατὰ τὴν δύναμιν ἐκατέρᾳ τὴν αὐτῆς. Οὕτως. Οὐκοῦν ἐπιστήμη μὲν

partem tentamina persuadent, qui si nullam ibi lacunam invenissent, non illuc potissimum alii aliud supplementi caussa conieccissent.

ἡ̄ν] ἡ̄ν Vind. F. a. m. pr.

δ̄] δ̄ε Lob. Vind. BD.

ξ̄ ἀνάγνης] εξάν. Lob. ξ̄ξαν. Vind. BF. ξ̄ ἀνάγνη Vind. E.

ἐπὶ μῆ] Ita Par. A. Lob. Vind. BF. Vat. BM. Ven. C. Ang. B. Flor. R. Reliqui codices cum editionibus τῷ interpositum habent, quod non magis necessarium, quam paullo ante in verbis μῆ δν δὲ μηδαμῆ post τὸ μὲν παντελῶς ὄν.

ὄντι] ὄνται Flor. R.

τῷ] τὸ Vind. E.

τούτω] Ita Par. AK. Lob. Vind. E. Vat. BM. Ven. BC. Mon. B. Flor. ACTUV. Ald. Bas. ab. τούτων Vind. BDF. Flor. R. et, ut videtur, Par. D. Ang. B. cum Ficino, Stephano et Astio.

B τι] om. Ang. B.

ναὶ] om. Lob. Vind. BD. Vat. BM.

τε] om. Vind. BD.

τι] post δν habent Ang. B. Flor. R. Vind. F. isque τι et int. vers. a m. s. additum.

τυγχάνει] τυγχάνοι Vind. BD. Par. K. sec. Bekk.

τοιοῦτον] τοιοῦτο Lob. Vind. BD. Vat. BM. τοιοῦτος, delēto per lineam directam s, Mon. B. Signum interrogandi Bekkerus posuit.

Ἄρ] ἄρ Vind. F. οὐδὲν λέγομεν] post τι idem et Flor.

R. ἄλλην — τὴν αὐτήν] eandem — diversam Fic.

πατὰ τὴν δύναμιν ἐκατέρᾳ τὴν αὐτῆς] Vulgo ante Astii secund. legebatur πατὰ τὴν αὐτήν δύναμιν, η̄ πατὰ τὴν αὐτήν δύναμιν ἐκατέρᾳ τὴν αὐτῆς, quemadmodum scriptum est in Vind. E.

Vat. H. (Flor. ACRTV.) lectumque a Ficino: vel secundum potentiam eandem, vel secundum eandem utraque sui ipsius potentiam. Astius in Par. K. et Bas. b. quatuor priora, in hac etiam quintum η̄ et antepenultimum ἐκατέρᾳ omitti videns, πατὰ τὴν αὐτήν δύναμιν ἐκατέρᾳ τὴν αὐτῆς edidit, quam scripturam Bekkerus et Stallbaumius Par. A. Mon. B. Flor. U. auctoritate firmatam tenuerunt. Recte haud dubie, quod ad priora, Astius locum constituit, et verba πατὰ τὴν αὐτήν δύναμιν etiam in reliquis novem codicibus, qui η̄ retinent (Ven. B. haec omnia omisit) desunt, sed quomodo potentia utriusvis propria eadem dici et τὴν αὐτήν δύναμιν scribi a Platone potuerit, neque Astius docuit neque alias, opinor, docebit. Per opportunè igitur accidit, quod αὐτήν a Vind. F. abest, quod etiam de coniectura delendum erat, utpote ex vetere glossemate, quale vulgata ante Astium exhibebat, superstes. Fuerant enim qui male repetita nominis ἐπιστήμη littera extremā et responsione Glauconis inducti his verbis η̄ πατὰ τὴν δύναμιν ἐκατέρᾳ τὴν αὐτῆς alteram interrogationis partem contineri statuentes priorem supplendam putarent, atque ita πατὰ τὴν αὐτήν δύναμιν in margine post ἐπιστήμη interpolarent, unde αὐτήν etiam in eos codices immigravit, qui η̄ non receperunt. Unus autem ille, qui ab hoc errore immunis mansit, non solum η̄cum plerisque, sed etiam πατὶ post η̄ inter versus additum habet, quod in locum vitiōsi η̄ substituendum alicui poterat videri. Ceterum pro τὴν post ἐκατέρᾳ Lob. Vind. BD. Vat. BM. τῆς, pro αὐτῆς Lob.

ἐπὶ τῷ ὅντι πέφυκε, γνῶναι, ὡς ἔστι τὸ ὅν; μᾶλλον δὲ ὥδε μοι δοκεῖ πρότερον ἀναγκαῖον εἶναι διελέσθαι.

C Πᾶς; Φήσομεν δυνάμεις εἶναι γένος τι τῶν ὅντων, αἷς δὴ καὶ ἡμεῖς δυνάμεθα ἢ δυνάμεδα, καὶ ἄλλο πᾶν ὅτι-περ ἂν δύνηται; οἶον λέγω ὅψιν καὶ ἀκοὴν τῶν δυνά-μεων εἶναι, εἰ ἄρα μανθάνεις ὁ βούλομαι λέγειν τὸ εἴ-δος. Ἀλλὰ μανθάνω, ἔφη. Ἀκουσον δὴ ὃ μοι φαίνε-ται περὶ αὐτῶν. δυνάμεως γάρ ἐγὼ οὔτε τινὰ χρόαν δρῶ οὔτε σχῆμα οὔτε τι τῶν τοιούτων, οἶον καὶ ἄλλων πολλῶν, πρὸς ἢ ἀποβλέπων ἔνια διορίζομαι παρ' ἐμαυ-

D τῷ, τὰ μὲν ἄλλα εἶναι, τὰ δὲ ἄλλα· δυνάμεως δ' εἰς ἐκεῖνο μόνον βλέπω, ἐφ' ὃ τέ ἔστι καὶ ὃ ἀπεργάζεται, καὶ ταύτη ἐκάστην αὐτῶν δύναμιν ἐκάλεσα, καὶ τὴν μὲν ἐπὶ τῷ αὐτῷ τεταγμένην καὶ τὸ αὐτὸν ἀπεργαζομέ-

Vind. BDF. Par. K. sec. Bip. et
a m. pr. Mon. B. cum Ald. Bas.
ab. αὐτῆς exhibent.

Oūτως.] Ita Vind. DF. Flor.
RT. Reliqui mei et Florentini
cum editis ante Bekkerum oūτω.
Bekkerus, ut solet, tacet.

ἐπιστήμη] ἐπιστήμης editi ante
Ast. sec. tacentibus de Par. K.
Bip.

ἐπὶ] In Vind. F. εἰ super l
adscriptum.

γνῶναι] commate a praecedentibus
cum Stallb. sec. distinxii.

Cf. p. 478. A.

ἔστι] ἔστι Vind. D.

ώδε] ὥδε Vind. F. ὥδε Bas.
ab.

πρότερον] πρῶτον Par. K. se-
cundum Bekkerum.

Πᾶς;] sine interpunctione Vind.
B.

C γένος τι] γένος δὴ Vind. E.
Vat. H. Flor. ACTV.

ἢ δυνάμεθα] om. Lob. Vind.
BF. Vat. BM. Ven. C. Par. DK.
Mon. B. Flor. U.

ὅτιπερ] Vulgo in tria dividi-
tur.

δύνηται;] δύνηται. Ald. Bas.
ab. Steph. δύνηται. Astius pr.
sec. δύνηται, Bekkerus, Ast. tert.
et Stallb. quorum nihil ad φήσο-
μεν aptum videtur.

ὁ βούλομαι λέγειν τὸ εἶδος]
quod loquor Fic. Super εἶδος in
Vind. F. τὴν ἰδέαν αὐτὴν, in
Flor. R. ἤγονν τὴν ἰδέαν αὐτὴν,
et paulo post super δυνάμεως
in utroque ἤγονν ἰδέας. ταύτην
γὰρ καλεῖ δύναμιν legitur. —
Proclus in Civ. p. 417, 16: δυ-
νάμεως γάρ φησιν οὔτε χρόαν
οὔτε σχῆμα δρᾶν. Idem p. 425,
18: δυνάμεως γάρ φησι μήτε
σχῆμα μήτε χρῶμα δρᾶν.

οὔτε σχῆμα] οὔτε τι σχ. Vind.

E.

οὔτε] τέ οὐ Bas. b.

οἶον] οὖσιν Lob. Vat. BH. Ven.
BC. Par. DK. sec. Bekk. Ang. B.
Flor. TUV.

ἀποβλέπων] βλέπων Ven. B.
Vind. E. Vat. H. Flor. ACT.

δ' εἰς] δὲ εἰς Lob. Vind. BDF. D
τέ ἔστι] τε ἔστι Vind. F. Bek-
kerus, Ast. tert. et Stallb. Sed
praepositionis maior hic vis est,
quam verbi.

τῷ αὐτῷ] Ita Par. A. Vind.
BD. Vat. BH. Ven. C. τὸ αὐ-
τὸν cum reliquis editisque ante
Bekkerum Lob. sed utriusque ὡς su-
perscripto ὡς.

τεταγμένην] τεταγμένην Vind.
B. Vat. M. Flor. ACY. In Vind.
D. γ int. vers. est.

καὶ τὸ αὐτὸν ἀπεργαζομένην]

νην τὴν αὐτὴν καλῶ, τὴν δὲ ἐπὶ ἑτέρων καὶ ἑτερογαξομένην ἄλλην. τί δὲ σύ; πῶς ποιεῖς; Οὔτως, ἔφη. Λεῦρο δὴ πάλιν, ἦν δ' ἐγώ, ω̄ ἀριστε. ἐπιστήμην πότερον δύναμιν τινα φῆς εἶναι αὐτὴν, ἢ εἰς τί γένος τιθῆς; Εἰς τοῦτο, ἔφη, πασῶν γε δυνάμεων ἐόδωμενετε-
στάτην. Τί δέ; δόξαν εἰς δύναμιν, ἢ εἰς ἄλλο εἶδος οἴσομεν; Οὐδαμῶς, ἔφη. φῶς γὰρ δοξάζειν δυνάμενα, οὐκ ἄλλο τι, ἢ δόξα ἐστίν. Ἀλλὰ μὲν δὴ ὀλίγον γε πρότερον ὡμολόγεις μὴ τὸ αὐτὸν εἶναι ἐπιστήμην τε καὶ δόξαν. Πᾶς γὰρ ἀν, ἔφη, τό γε ἀναμάρτητον τῷ μὴ ἀναμαρτήτῳ ταῦτόν ποτέ τις νοῦν ἔχων τιθείη; Καλῶς, ἦν δ' ἐγώ. καὶ δῆλον, δτι ἑτερον ἐπιστήμης δόξα ὁμο- 478 λογεῖται ἥμιν. Ἐτερον. Ἐφ' ἑτέρων ἄρα ἑτερόν τι δυναμένη ἐκατέρα αὐτῶν πέφυκεν. Ἀνάγκη. ἐπιστήμη μέν

om. Lob. Vind. B. Vat. M.
δὲ ἐπὶ] δ' ἐπὶ Vind. BDE.
Vat. HM.
ἀπεργαξομένην] ἀπεργασομέ-
νην Vind. F. a m. pr.
ἄλλην] ἄλλον Lob. ante corr.
τινα] τινὰς Ald. τινὸς Bas. a.
φῆς] φῆς Vind. F. Cf. Vol. I.
p. 42, a.

αὐτὴν] „negotium lectori fac-
cessere non debet, quum et alibi
talis eius pleonasmus inveniatur.“
Steph. annot. p. 22. Cf. Hein-
dorfius ad Gorg. §. 84. quam-
quam illorum locorum ratio eo
diversa ab nostro est, quod no-
men longius a pronomine remo-
tum habent. Itaque post ἐπιστή-
μην paullisper subsistendum.

εἰς τί] εἰς τι Lob. Vind. B.
εἰς τὶ Ald. Bas. ab. Steph. qui
proinde εἰς τὶ γένος ἄλλο requi-
rebat l. c. *an in genus aliud re-
fers?* Fic.

τιθῆς] τιθῆς Vind. F.
Εἰς] εἰ Lob. Vind. B. Vat. M.
E τοῦτο] τοῦτ' Vind. D. (hic
vulgatum in m. habet.) E. Vat.
H. Flor. ACTV.

γε] *om.* Vind. E.
ἐόδωμενεστάτην] Mon. B. alterum q int. vers. a m. s. habet.
δέ] δαὶ Par. A. δὲ sine inter-
punctione Vind. BD. Ald. Bas.

ab. Post δόξαν vero Vind. D.
punctum, Ald. Bas. ab. cum Stephano comma habent.

οἴσομεν] θήσομεν Vind. BD.
Vat. M. (*an aliud quiddam esse*)
dicemus? Fic.

ώ] ὅ, sup. ω̄, Vind. D.
ἐστίν. Ἀλλὰ] ἐστίν, ἄλλὰ Ald.
Similiter paullo post δόξαν, πῶς
etc.

όλιγον] ὀλίγω Mon. B. ὀλίγῳ
Flor. U.

γε] τε Lob. Vind. B. Vat. M.
ώμολόγεις] ώμολογεῖς Bas. b.
τῷ μὴ ἀναμαρτήτῳ ταῦτόν] om. Ang. B. Ficinus inverso or-
dine *quod falli potest et quod non
potest.*

ποτέ] *om.* Lob. Vind. B. Vat.
BM.

Καλῶς, ἦν δ' ἐγώ. καὶ δῆλον]
Glau. Optime quidem. So. Con-
stat itaque Fic. sec. Bekkerum.
In Veneta 1517. omnia Socrati,
ut debent, assignantur.

ἐπιστήμης δόξα] δόξα ἐπιστή- 478
μης Ven. B. Vind. E. (Flor. C.)
editi ante Bekkerum.

ώμολογεῖται] ώμολογῆται Bas.
b.

ἄρα] *om.* Lob. Vind. B. Vat.
BM.

Ἐπιστήμη μέν] ἐπιστήμην
Vind. D.

γέ που ἐπὶ τῷ ὄντι, τὸ δὲ γνῶναι ὡς ἔχει; *Nal.* 468
Δόξα δὲ, φαμὲν, δοξάζειν; *Nal.* Ἡ ταῦτὸν, ὅπερ ἐπι-
 στήμη γιγνώσκει; καὶ ἔσται γνωστόν τε καὶ δοξαστὸν τὸ
 αὐτό; η ἀδύνατον; Ἀδύνατον, ἔφη, ἐκ τῶν ὀμολογη-
 μένων· εἰπερ ἐπ’ ἄλλῳ ἄλλῃ δύναμις πέφυκε, δυνάμεις

B δὲ ἀμφότεραι ἔστον, δόξα τε καὶ ἐπιστήμη, ἄλλῃ δὲ
 ἐκατέρᾳ, ὡς φαμέν. ἐκ τούτων δὴ οὐκ ἔγχωρεῖ γνωστὸν
 καὶ δοξαστὸν ταῦτὸν εἶναι. Οὐκοῦν εἰ τὸ δὲ γνωστὸν,
 ἄλλο τι ἀν δοξαστὸν, η τὸ δὲ εἶη; Ἄλλο. Ἡροὶ οὖν τὸ
 μὴ δὲ δοξάζει; η ἀδύνατον καὶ δοξάσαι τό γε μὴ δὲ;
 ἐννόει δέ. οὐχ ὁ δοξάζων ἐπὶ τὶ φέρει τὴν δόξαν; η

γέ] γάρ Par. K.

ἔχει] ἔχῃ Bas. a.

Δόξα] Ita Par. A. et a m. pr.
 D. Lob. Vind. BDEF. Vat.
 BHM. Ven. B. Ang. B. Flor. ACT.
 δόξαν reliqui cum editionibus ante Bekkerum.

φαμὲν] om. Fic. (*opinio autem opinari.*) Ante Bekkerum commata necessario aberant: δέ φαμεν δοξ.

Ἡ] η Vind. F.

ὅπερ] ὥσπερ Par. D. a m. pr.
 γιγνώσκει] γιν. Vind. D. Mon.

B. Ald. Bas. ab. Steph. γιγνώ-
 σκειν Vind. F.

η ἀδύνατον] καὶ ἀδ. Vat. B.

Ἀδύνατον] om. Ang. B.

ἔφη, εἰ] ἔφ, ηὲν Ald.

ῳμολογημένων] ὠμολογημένων
 Vind. E. Békkerus, Ast. tert. et
 Stallb. commate hoc a sequenti-
 bus distinguunt, quae tamen epex-
 egesin continent.

δυνάμεις] δύναμις Vind. E.
 et ante corr. F.

ἔστον] ἔστι Lob. Vind. B. Vat.
 M.

B ὡς φαμέν] Ita Par. A. Vind.
 DE. Vat. H. Flor. ACTV. Vul-
 go ὡς ἔφαμεν, quod Vind. D. in
 margine et reliqui libri habent
 et Ficinus legit: *ut est dictum.*
 Praeteritum magis ad illud εἰ τῷ
 ὠμολογημένων accommodatum vi-
 detur; sed haud dubie etiam tum
 in ea sententia erant, cui rei si-

gnificantiae praesens inservit. Cf.
 p. 466. B. ubi res paullo eviden-
 tior et Bekkerus codicem optimum
 sequi non veritus est.

δὴ] autem Fic.

ταῦτὸν—δοξαστὸν] om. Vind.
 F. Pro ταῦτὸν Lob. τὸ αὐτὸ,
 Vind. BD. Vat. B. τὸ αὐτὸ habent.

ἄν] om. Lob. Vat. BM. post
 δὲ ponit Vind. B.

εἰη;] εἰη η Vind. F. est di-
 cendum? Fic.

Ἡροὶ] Ἡροὶ Vind. F.

οὖν] οὐκ οὖν Vat. H. οὐκοῦν
 Vind. E.

δοξάζει] δοξάζει Ald.

καὶ] om. Fic.

τό γε] γε om. Lob. Vind. BF.
 Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par.
 DK. Ang. B. Flor. RU.

ἐπὶ τὶ] ἐπὶ Mon. B. ἐπὶ τι re-
 liqui mei et editi.

οἶος τε] οἶον τε Vind. DEF.
 Mon. B. Ven. C. Par. DK. Ang.
 B. Vat. H. Flor. ACRTUV.
 Astius et Stallbaumius. possibile
 est Fic. Non caussa videtur, cur
 negligentius locutum Socratem sta-
 tuamus.

δοξάζειν μὲν, δοξάζειν] δοξά-
 ζει μὲν, δοξάζει Vind. D.

γέ τι] τέ τι Mon. B.

δοξάζει] post ὁ δοξάζων Ven.
 B. Vind. E. Flor. C.

οῖός τε αὐτὸν δοξάζειν μὲν, δοξάζειν δὲ μηδέν; Ἀδύνατον.
 Ἄλλ᾽ ἐν γέ τι δοξάζει ὁ δοξάζων; Ναι. Ἄλλὰ μὴν μὴ
 ὅν γε οὐχ ἐν τι, ἀλλὰ μηδὲν ὀρθότατ' ἀν προσαγορεύ- C
 οιτο. Πάντη γε. Μή ὅντι μὴν ἄγνοιαν ἐξ ἀνάγκης ἀπέ-
 δομεν, ὅντι δὲ γνῶσιν. Ὁρθῶς, ἔφη. Οὐκ ἄρα δὲ
 οὐδὲ μὴ δὲν δοξάζει. Οὐ γάρ. Οὔτε ἄρα ἄγνοιαν οὔτε
 γνῶσις δόξα ἀν εἴη. Οὐκ ἔοικεν. Ἡρόδοτος τού-
 των ἐστιν, ὑπερβαίνοντας ἢ γνῶσιν σαφηνείᾳ ἢ ἄγνοιαν
 ἀσαφείᾳ; Οὐδέτερα. Ἄλλ᾽ ἄρα, ἦν δὲν ἐγώ, γνῶσεως
 μέν δοι φαίνεται δόξα σκοτωδέστερον, ἄγνοίας δὲ φα-
 νότερον; Καὶ πολύ γε, ἔφη. Ἐντὸς δὲν ἀμφοῖν κεῖται; D

μὴ δὲν — μηδὲν] om. Ang. B.
 Pro ὅν Lob. δὲν habet.

ὅρθότατ'] ὀρθώτατ' Vind. F.

C Πάντη γε.] πανύγε. Lob. In
 Ald. Bas. ab. comma pro puncto
 est.

μὴν] μὲν Vind. E. quidem Fic.
 μὴν paullo cupidius hoc ut valde
 ad rem pertinens proximo iungit:
 ipsa quidem argumentatio sequens
 οὐκ ἄρα δὲν οὐδὲ μὴ δὲν δοξάζει
 prius et hoc loco ponit iubebat.

ἐξ ἀνάγκης] εξάν. Lob. εξαν.
 Vind. BDF.

ἀπέδομεν] ἀποδώσομεν Flor.
 T.

γάρ. Οὔτε] γάρ, οὔτε Ald.

Ἡρόδοτος] ἄρα Vind. F.

Ἐντὸς] post τούτων Par. K.

ἐστιν,] Comma Stallbaumius in
 sec. posuit.

σαφηνείᾳ — ἀσαφείᾳ] σαφῆ
 εἶναι — ἀσαφεῖαι Vind. F. σαφη-
 νείᾳ — ἀσάφειᾳ Par. DK. Vind.
 E. Vat. H. (Florentini) cum editis
 ante Astii sec. qui Ficino du-
 ce vérum restituit. Cf. L. VI.
 p. 509. D.

Οὐδέτερα] Ita Par. A. Lob.
 Vind. BDEF. Mon. B. Ven. B.
 Ang. B. Vat. HM. Ald. Bas. ab.
 Οὐδέτερα cum reliquis Steph. et
 Astius in pr.

ἄρα] ἄρα Lob. Vind. BDF.

PLATONIS OP. II.

φανότερον] Ita Par. A. Vind.
 D. Vat. H. Flor. V. φανώτερον
 Mon. B. Flor. TU. φανερώτερον
 reliqui et editiones ante Bekke-
 rum. Cf. p. 479. D.

γε] γ' Vind. F. Ang. B.

Ἐντὸς] Ita Par. A. Vind. DE.
 Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor.
 ACRTV. ἐνὸς Lob. Vind. BF.
 Ven. C. Par. DK. secund. Bekk.
 Vat. M. ἐν Vat. B. a m. s. ἐν
 μέσῳ Mon. B. Flor. U. quam lec-
 tionem qui olim argumentorum
 vi et codicum auctoritate veram
 demonstratus erat, censor Ie-
 nensis Schützii (1808. N. 70.
 p. 556.) ab Astio citatus, pro-
 missio non stetit. El Ald. Bas.
 ab. Steph. Ast. pr. εἰ Ast. sec.
 cum commate post ἔφη, ut Glau-
 conis sermo continuetur. Confer
 Vol. I. p. 417.

δὲ] δὲ Vind. B. γ' Ast. sec.

ἀμφοῖν] ἀμφοῖν μεταξὺ editi D
 ante Bekkerum et Stallbaumius
 in pr. ubi Flor. ACUV. μεταξὺ
 post ἀμφοῖν servare ostendit. In
 sec. idem de Flor. ACRV. et de
 Par. A. Ven. B. Ang. B. Vat. H.
 praedicat, quos libros Bekkerus
 satis perspicue cum reliquis omnibus
 μεταξὺ ignorare declaravit.
 Stephanus in margine η δ', in
 annot. p. 22. τι δέ; pro εἰ δ'
 legi posse autemabat, quin με-
 ταξὺ sanum esset non dubitans.

κεῖται; Ναι.] κεῖται. Ast. sec.

Nai. Μεταξὺ ἄρα ἀν εἶη τούτοιν δόξα. Κομιδῇ μὲν οὖν· Οὐκοῦν ἔφαμεν ἐν τοῖς πρόσθεν, εἴ τι φανείη οἶνον ἄμα ὃν τε καὶ μὴ ὃν, τὸ τοιοῦτον μεταξὺ κεῖσθαι τοῦ εἰλικρινῶς ὅντος τε καὶ τοῦ πάντως μὴ ὅντος, καὶ οὕτε ἐπιστήμην οὔτε ἄγνοιαν ἐπ' αὐτῷ ἔσεσθαι, ἀλλὰ τὸ μεταξὺ αὐτὸν φανὲν ἀγνοίας καὶ ἐπιστήμης; Ὁρθῶς. *Nῦν* δέ γε πέφανται μεταξὺ τούτοιν ὁ δὴ καλοῦμεν δόξαν. *Πέφανται.* Ἐκεῖνο δὴ λείποιτ' ἀν ἡμῖν εὑρεῖν,

Μεταξὺ ἄρα] „Potius fortasse scribendum ἄρα, quo significetur Itáne: ut post δόξα interrogatio- nis nota ponatur.“ Steph. annot. p. 22. Eam notam posuerant Bas. ab. nec prorsus inepta erat, quam- quam conclusioni affirmatio con- gruit. Sed ἄρα hoc loco ferri non potest. — Proclus in Tim. p. 76, 5. a fine: καὶ αὐτῇ μὲν ἡ δύναμις (ἡ δόξα) λόγος οὐσα ὡς πρὸς τὴν αἰσθησιν ἀλογός ἐστιν ὡς πρὸς τὴν γνῶσιν τῶν ὅντων ὅντων· ἡ δὲ αἰσθησις ἀ- πλῶς ἀλογος. διὸ καὶ ἐν Πολι- τείᾳ μέρον αὐτὴν τὴν δόξαν λέ- γων γνώσεως ἀπεφήνατο καὶ ἀγνοίας.

τούτοιν — φανείη] om. Vind. E.

δόξα] ἡ δόξα (Flor. UV.) editi ante Bekkerum.

Κομιδῇ] κομιδὴ Vind. F.

ὃν τε] οὔτε Ald.

τοιοῦτον] τοιοῦτο Lob. Vind. BD. Vat. BM.

εἰλικρινῶς] Ita Lob. Vind. BDEF. Mon. B. Ald. εἰλ. Bas. ab. et sequentes, tacentibus de Par. K. Bip. V. ad p. 477. A.

τε] om. Flor. T.

πάντως] παντελῶς idem.

ὅντος, τὸ ὅντος. Ald. ὅντος; Bas. ab. Steph.

οὔτε ἐπιστήμην οὔτε ἄγνοιαν] οὔτ' ἐπ. οὔτ' ἄγν. Lob. Vind. B. Vat. M.

τὸ τῷ Lob. τῷ Vind. B. Vat. M.

φανὲν] φαμὲν Vind. D. Par. K. sec. Bekk. Bas. b.

γε] om. Flor. T.

τούτοιν] τούτων Vind. E. τού- την Mon. B. a m. pr.

ἢ] ἢ Mon. B. a m. pr. ἢν a m. s.

Πέφανται — ἔστιν, τὸ E.] om. Lob. Vind. B. Vat. BM.

δὴ] δὲ Ven. B. λείποιτ' λείποι τ' Ald.

ἔστιν] ἔστιν Vind. F. εἰλικρινὲς] Ita Lob. Vind. BDF. Mon. B. Ald. εἰλ. Vind. E. Bas. ab. Steph. et recentiores, ut su- pra D.

ἴνα — προσαγορεύωμεν] Mon. B. bis deinceps scripta, sed sub prioribus puncta habet. ut si nobis patcat, opinabile quiddam merito nuncupemus Fic. veram inter- punctuationem secutus, quae Schleiermacherum non fecellit. Vulgo non post φανῆ, sed post εἰναι comma faciunt magno veritatis detimento. Cf. p. 479. D. Vind. F. utrobique comma habet. Pro ἴνα in Lob. Vind. B. Vat. M. ἵνα exstat.

προσαγορεύωμεν] προσαγορεύ- ομεν Vind. B.

ἄκροις] ἄκροισι Flor. V. In Vind. F. ἄκροις cum commate scriptum est ita, ut parum ab ἄκροισι differat. Conf. Vol. I. p. 222. sq.

ἀποδιδόντες] ἀποδιδόντι Vind. E.

ἢ] ἢ Vind. B. Ald. Bas. ab.

Οὐτω] Οὐτως. Bekkerus et Astius in tert. Idem est in Vind. F.

λεγέτω μοι, φήσω, καὶ ἀπο- κρινέσθω ἐχοηστὸς] percontabor eum Ficinus, qui paullo post in- ter oὐτω et τούτων percontabor,

ώς ἔοικε, τὸ ἀμφοτέρων μετέχον, τοῦ εἶναι τε καὶ μὴ εἶναι, καὶ οὐδέτερον εἰλικρινὲς ὁρθῶς ἀν προσαγορευόμενον, ἵνα ἐὰν φανῇ, δοξαστὸν αὐτὸν εἶναι ἐν δίκῃ προσαγορεύωμεν, τοῖς μὲν ἄκροις τὰ ἄκρα, τοῖς δὲ μεταξὺ τὰ μεταξὺ ἀποδιδόντες. ή οὐχ οὗτως; Οὗτω. Τούτων δὴ ὑποκειμένων λεγέτω μοι, φήσω, καὶ ἀποκρινέσθω ὁ χρηστὸς, ὃς αὐτὸν μὲν καλὸν καὶ ἰδέαν τινὰ αὐτὸν κάλλους μηδεμίαν ἡγεῖται ἀεὶ μὲν κατὰ ταῦτα

inquam, hunc in modum interpolauit, liberius quidem ille, sed a mente scriptoris minime aberrans. Scilicet φήσω hic non, ut alibi et ut infra φήσουμεν post ὡ ἄριστε, ipsi alloquio insertum neque ad formam verborum, sed ad argumentum et sententiam referendum esse ex eo intelligitur, quod λεγέτω et ἀποκρινέσθω, non λέγεται et ἀποκρίνονται circumposita habet, quibus formis compellans bonum virum Socrates necessario uti debebat, poteratque hic locus ad oppositam quandam eiusdem verbi rationem L. III. p. 415. A. illustrandam adhiberi. Itaque Socrates his positis ad dicendum sibi que respondendum excitaturum h. e. percontaturum sese dicit illum, quem primum describit verbis ὁ χρηστὸς etc. usque ad τὰλλα οὕτω, deinde ut praesentem, qualēm iam hic fingit, alloquitur ex descriptione petito interrogandi exordio: τούτων γὰρ δὴ, ὡ ἄριστε etc. in quibus γὰρ nihil aliud significat, nisi esse hanc continuationem sermonis iam inchoati, neque alio spectat, nisi ad haec nostra λεγέτω μοι, φήσω, καὶ ἀποκρινέσθω, quae consequentiā habere perperam negat Schleiermacherus, novam a verbis πολλὰ δὲ τὰ καλὰ structuram fieri statuens, nihil curans particulam μὲν inter αὐτὸν et καλὸν interiectam. — Pro ἀποκρινέσθω Lob. ἀποκρινέτω habet.

479 ὃς αὐτὸν] ὃς αὐτὸν, 'e corr. αὐτῶν, τὸ Vind. F. αὐτὸς Bas. a. quem errorem notans Stephanus „in quodam veteri libro“

καὶ αὐτὸν μὲν etc. scriptum esse perhibet pag. 22. αὐτὸν Vind. B. sine accentu et linea infra ducta cum καλὸν iunctum habet, ut p. 476. C. αὐτὸν δὲ κάλλος.

τινὰ] unam Fic.

αὐτοῦ] αὖ τοῦ Lob. Par. DK. sec. Bekk. Vat. M. τοῦ Vind. B. κάλλος] καὶ κάλλος Bas. b. ηγεῖται] ηγῆται Vind. F. Mon. B. Ven. B. Flor. ACRUV. ηγηται Par. DK. sec. Bekk.

ἀεὶ μὲν]. Particulam μὲν vulgo et in maiore codicum parte omissem ex Par. A. Vind. DE. Ven. B. Vat. H. Flor. ACV. recipiendo putavi, quia repetita discriminis inter id, quod esse iste negat et qualia statuit esse, intercedentis significatio minime ab hoc loco aliena neque alio modo commodius facienda, codicum autem dissensio potius praetermissionem particulae a librariis, qui eam superfluam existimarent, profectam, quam interpolationem alibi sane, ut L. VI. p. 492. A. semel et iterum, factam aut calami errorem arguere videbatur. Exemplis iterati μὲν a Dorvillio ad Charit. p. 399. sq. et p. 543. Lips. collatis non utor, quippe partim corruptis, ut huius libri p. 473. C. δοκεῖ μέν, Herodot. L. VI. c. 101. ἐπιπτον μέν, partim ita comparatis, ut utrique μὲν suum respondeat δὲ vel expressum vel cogitatione addendum, ut Leg. L. V. p. 735. D. καὶ τὰς μὲν τύραννος μὲν ὡν etc. Isocr. Paneg. p. 57. extr. Bekk. Xenoph. de venat. 13, 10. neque alterum nostro genium

ώσαντως ἔχονσαν, πολλὰ δὲ τὰ καλὰ νομίζει, ἐκεῖνος δὲ φιλοθεάμων καὶ οὐδαμῆ ἀνεχόμενος, ἀν τις ἐν τὸ καλὸν φῆ εἶναι καὶ δίκαιον καὶ τἀλλα οὕτω. τούτων γὰρ δὴ, ω̄ ἄριστε, φήσομεν, τῶν πολλῶν καλῶν μᾶν τι ἔστιν, δὲ οὐκ αἰσχρὸν φανήσεται; καὶ τῶν δικαίων, οὐκέτιν ἄδικον; καὶ τῶν ὁσίων, δὲ οὐκ ἀνόσιον; Οὐκέτιν, ἀλλ’ ἀνάγκη, ἔφη, καὶ καλά πως αὐτὰ καὶ αἰσχρὰ φανῆναι, καὶ οἵσα ἄλλα ἐρωτᾶς. Τί δέ; τὰ πολλὰ διπλάσια ἥτ-

novi; sed quod perspicuitatis gratia Phaedon. p. 108. B. factum videmus in verbis τὴν μὲν ἀνά-
θατον καὶ τι πεποιηνταν τοι-
οῦτον, ἡ φύων ἀδίκων ἡμιέ-
νην ἡ ἄλλα ἄττα τοιαῦτα εἰ-
γασμένην, ἀ τούτων ἀδελφά τε
καὶ ἀδελφῶν ψυχῶν ἔργα τυγχά-
νει ὅντα, ταῦτην μὲν ἀπας φεύ-
γει, ubi codex Augustanus alterum μὲν post ταῦτην omittit,
idem insigniendae et distinguenda
notionis causa h. l. fieri potuisse videtur. Hanc enim vim
μὲν communem habet cum γε,
quod quia solum ἀεὶ afficeret ne-
que de opposito cogitari iuberet,
minus aptum hic erat. Cf. Vol. I.
p. 229, a. et p. 310. sq.

κατὰ ταῦτα] κατὰ ταῦτα Vind.
BF. καταταῦτα Lob.

ώσαντως ἔχονσαν] ω̄ σώμα-
τες ἔχονσαν Lob. Vat. M. ἔχον-
σαν ω̄ σώματες Vind. B.

ἐκεῖνος δὲ φιλοθεάμων καὶ] Haec verba, quae Ficinus et pul-
chris rebus spectandis deditus in-
terpretatur, in Ven. B. omissa,
Astius in sec. et tert. Bekkerus
et Stallbaumius in pr. uncis in-
cluserunt; cuius suspicionis ego
nullam excusationem invenio, nisi
in corrupta veterum editionum in-
terpunctione, quas illi post ἔχον-
σαν punctum vel colon, post νο-
μίζει nullam incisionem, post φι-
λοθεάμων comma habentes in al-
tero tertioque et ipsi (Stallbaumius etiam in sec.) secuti offend-
sionem accipere potuerunt. Iam

comitate post νομίζει posito lo-
cum per se cuivis clarum fore
spero.

οὐδαμῆ] οὐδαμοῦ Ven. B. Vind.
E. Vat. H. Flor. ACTV. Bas. b.
(οὐδαμῆ Steph.)

ἄν] ἔάν Par. K. sec. Bekk.

τἀλλα] τἀλλα Lob. τ' ἄλλα
Vind. E. τἀλλα Vind. BF. Mon.
B. Steph. Ast.

τι ἔστιν] τι ἔστιν Lob. Vind.
BDF. Mon. B. Ald. Bas. ab. τι
ἔστιν Steph. Ast. pr. sec.

οὐκ αἰσχρὸν] οὐκ αἰσχρὸν
Mon. B. Flor. U. non turpe etiam
Fic.

καὶ — ἀδικον;] om. Vat. H.

ὅσιων] ὁσίου Bas. b.

δὲ] om. Vind. F.

ἄλλ' ἀνάγκη] ἄλλα ἀνάγκη
Lob. ἄλλανάγκη Vind. F.

Τί δέ; τὰ πολλὰ] τὰ δὲ τὰ B
πολλὰ Vind. F. Flor. R. τι δαι
τὰ π. Par. A. Vat. H. Flor.
ACTV. Τί δὲ τὰ π. Ald. Bas. ab.
δὲ Ficinus omisit.

ἡμίσεα] ἡμίσυα Vind. F.

διπλάσια] διπλασία idem.

δὴ] δὲ Flor. T.

μᾶλλον ἀ] ἄλλο δ Vind. E.

φήσωμεν] φήσομεν Vind. F.
Flor. R. Ald. Bas. ab. ἀ ἀν φή-
σωμεν, ταῦτα Ficinus talia in-
terpretatus est.

τάναντία] τούναντία Vind. E.

Οὐκέτιν, ἀλλ' ἀεὶ] οὐκέτιν ἄλλα εἰ
Vind. F.

τόν τι ἡμίσεα, ἢ διπλάσια φαίνεται; Οὐδέν. Καὶ μεγάλα δὴ καὶ συμφρὰ καὶ ποῦφα καὶ βαρέα μή τι μᾶλλον ἢ ἀν φήσωμεν, ταῦτα προσρηθήσεται, ἢ τάναντία; Οὐκ, ἀλλ' ἀεὶ, ἔφη, ἐκαστον ἀμφοτέρων ἔξεται. Πότερον οὖν ἔστι μᾶλλον, ἢ οὐκ ἔστιν ἐκαστον τῶν πολλῶν τοῦτο, ὃ ἄν τις φῆ αὐτὸ εἶναι; Τοῖς ἐν ταῖς ἔστιασεσιν, ἔφη, ἐπαμφοτερίζουσιν ἔοικε καὶ τῷ τῶν παίδων αἰνίγματι, τῷ περὶ τοῦ εὐνούχου τῆς βολῆς πέρι

ἔξεται] ἔχεται Vind. F. et cum
xi super χ Ang. B.

οὖν] om. Fic.

ἔστι] ἔστι Vind. BD. Ald. Bas.
ab. Steph. ἔστι Vind. F. Ast. pr.
sec.

τοῦτο] τοὺς Bas. b.

ταῖς] ταῖς Ald.

ἔστιασεσιν] ἔστι Mon. B.

C ἐπαμφοτερίζουσιν] Timaeus lex. p. 107: ἐπαμφοτερίσαι· εἰς ἀμφιβόλιαν ἀγαγεῖν τὸν λόγον. quam glossam Ruhnkenius ad verba Euthyd. p. 300. D. ὃ ἀδελφός τον ἔξημφοτέρους τὸν λόγον, in quibus Timaeus ἐπημφοτερίσαι legerit, pertinere ostendens verissime ad nostrum locum ineptam esse innuit. Nam ut possit ἐπαμφοτερίζειν transitivam significacionem habere, quam lexicon Bekkeri anecd. p. 258, 4. ei tribuit, ἐπαμφοτερίσαι τὸ τὰ σαφέστερα εἰς ἀμφιβόλον περιστῆσαι iūdem verbis, quibus Etymologicum ἐξαμφοτερίσαι, interpretans, hic certe intransitivum est et ambiguas enuntiationes ipsas eandem rem negantes atque affirmantes et in conviviis ioci caussa proponi solitas denotat, quale aenigma de eunucio est, quod exempli loco subiicitur, τὸ συμποσιακὸν ἔκεινο γοιφῶδες πρόβλημα, ut Eustathius in H. T. II. p. 209, 7. Lips. appellat. Verum tamen fieri potuit, ut Timaeus secus statueret et generis indicio anci-
piti, quod plerumque ad masculu-

linum spectare solet, deceptus τοῖς ἐπαμφοτερίζουσιν pro masculino haberet et verbum, ut iam debebat, transitiva potestate praeditum atque eodem fere modo, quo in Euthydemo, explicandum putaret. Simile quid Athenaeo accidisse videmus, qui L. X. p. 452. C. hoc ipsum aenigma, Panarcis secundum Clearchum inventum, a Platone in quinto Legum commemorari his verbis scribit: τοὺς τῶν τεχνηδοίων φιλοσόφους (ex huius libri p. 475. E.) τοῖς ἐν ταῖς ἔστιασεσιν ἔφη ἐπαμφοτερίζουσιν ἔοικέναι καὶ τῷ τῶν παιδῶν αἰνίγματι, τῷ περὶ τοῦ εὐνούχου τῆς βολῆς πέρι τῆς νυκτερίδος, φησιν αἴφοι αὐτὸν αὐτὴν (id cod. Pal. et ed. pr. omittunt) αἰνίττονται βαλεῖν.

ἔοικε] ως ἔοικε Lob. Vind. B.
Vat. M.

αἰνίγματι, τῷ] αἰνίγματι ἔοικε iūdem et Vat. B.

τοῦ] τῶν Vind. E.

βολῆς] βολῆς Ald. Bas. ab.
quod praeente Ficino et in ecl.
p. 100. Cornario corredit Stephanus.

πέρι] περὶ codices a me visi
et editiones ante Bekkerum. Ste-
phanus in annot. pag. 22. ubi ab
Eustathio ad II. l. c. exhibitam
aenigmatis solutionem celato au-
ctoris nomine proponit, περὶ,
quod antea inter τῆς et νυκτερί-
δος collocari voluerat, plane tol-
lendum censem, eumque Astius in

τῆς νυκτερίδος, ὡς καὶ ἐφ' οὗ αὐτὸν αὐτὴν αἰνίττονται βαλεῖν· καὶ γὰρ ταῦτα ἐπαμφοτερίζειν, καὶ οὕτ' εἶναι οὕτε μὴ εἶναι οὐδὲν αὐτῶν δυνατὸν παγίως νοῆσαι οὕτ' ἀμφότερα οὕτε οὐδέτερον. "Εχεις οὖν αὐτοῖς, ἦν δ' ἔγώ,

prima ed. secutus est ita, ut simul καὶ ante τῆς βολῆς inserret, cuius additamenti auctorem Ficinum habere putans Grynaeum habebat, qui illius interpretationem *aenigmati puerorum circa eunuchum de vespertilionis percussione in aen. puer. de eunucho et vespertilionis percussione mutavit.* In sec. Stephanum simplificiter sequi maluit, in contextu tamen εὐνούχον βολῆς καὶ περὶ τῆς νυκτὸς posuit, partim Cornario duce, qui τῷ περὶ τῆς τοῦ εὐνούχον βολῆς, καὶ περὶ τῆς νυκτὸς scribendum coniecit. Nihil praeter accentum mutandum esse primus, quod sciam, Benedictus ostendit in Coniecturis a. 1805. editis p. 11. atque ita scripserunt Bekkerus, Ast. tert. et Stallb. Cf. Bernhardy synt. pag. 163. et pag. 201.

ὡς] om. Par. K. sec. Bip. φ Flor. ACRTV. Vind. DEF. Ang. B. Vat. H. Athen. Astius in sec. et tert. et Stallbaumius. Idem ex Athenaeo recipiendum statuerat Stephanus annot. p. 22. secutusque est Schleiermacherus ea ratione, quod Plato simpliciorem *aenigmati* formam praeter eunuchum et vespertilionem nihil nisi fruticem, ut ipse interpretatur, et pumicem continentem respexisse videatur. Sed hoc ipsum illud est, de quo dubitatur. Quamquam enim simplicissimum quodque in hoc genere idem et antiquissimum esse a vero non abhorret ideoque eam formulam non immerito primam dixeris, quam Athenaeus ante verba supra relata et scholion alterum ad nostrum locum et Suidas in *αἴνος* exhibent, tamen Platoni secundam in priori scholio et in fine Anthologiae extantem atque ab

Eustathio l. c. et ab anonymo περὶ τρόπων pag. 7. sq. (Musei crit. Vratislav. 1820.) explicatam nondum cognitam aut respectu non dignam visam fuisse pro certo affirmari nequit. Athenaei verba haec sunt: καὶ τὸ Πανάρηνος δ' ἐστὶ τοιοῦτον, ὃς φησι Κλεάρχος ἐν τῷ περὶ γοῖφων, ὅτι βάλοι ἔνλιψε τε καὶ οὐ ἔνλιψε παθημένην ὄρνιθα καὶ οὐκ ὄρνιθα ἀνήρ τε καὶ οὐκ ἀνήρ λίθῳ τούτων γάρ ἐστι τὸ μὲν νάρθηξ, τὸ δὲ νυκτερίς, τὸ δὲ εὐνούχος, τὸ δὲ κίσσηρις. καὶ Πλάτων δὲ ἐν πέμπτῳ Νόμῳ μημονεύει τοὺς τῶν τεχνυδρῶν etc. Hic si nihil praetermisit, hosce versus ante oculos habere potuit, quos ex margine Par. A. a Ruhnkenio et Bekkerio editos secundum Broendstedii emendationem in Bredovii Epistolis Parisiensibus pag. 132. propositam subscripsi: Ἀνθρωπος οὐκ ἄνθρωπος, ἄνθρωπος δὲ ὄμως, Ὄρνιθα κούνιθ ὄρνιθ, ὄμως ὄρνιθα δὲ, Ἐπὶ ἔνλιου τε κούνι ἔνλιου παθημένην λίθῳ βάλων με κούνι λίθῳ διώλεσεν. quorum fortasse primo praefixus erat is, qui loco primi apud Suidam est: Αἴνος τις ἐστιν, ὡς ἀνήρ τε κούνι ἀνήρ, extremus autem idem, quem Suidas extremum ponit: λίθῳ τε κούνι λίθῳ βάλων διώλεσεν. Secunda formula in priori scholio haec est: Κλεάρχου γεφός. Αἴνος τις ἐστιν, ὡς ἀνήρ τε κούνι ἀνήρ Ὄρνιθα κούνι ὄρνιθ λίθων τε κούνι λίθων Ἐπὶ ἔνλιου τε κούνι ἔνλιου παθημένην λίθῳ τε κούνι λίθῳ βάλοι τε κούνι βάλοι. in quibus tertio versui assestum τε κούνι παθημένην quamvis ab Eustathio et anonymo receptum et in margine codicis Mon. B. (ἀνήρ κούνιανήρ, ὄρνιν κούν-

ὅτι χρήση, ἡ ὅποι θήσεις καλλίω θέσιν τῆς μεταξὺ οὐσίας τε καὶ τοῦ μὴ εἶναι; οὔτε γάρ που συνταδέστερα μὴ ὄντος πρὸς τὸ μᾶλλον μὴ εἶναι φανήσεται οὔτε φανότερα ὄντος πρὸς τὸ μᾶλλον εἶναι. Ἀληθέστατα, D

ὅριν, παθημένην κούκαθημένην. βάλε πονβάλε. λιθῳ πονλίθῳ.) etiam reliquis duobus tamquam magis ad rem pertinens praelatum, iure delerunt Broendstedius et Bekkerus, neque in suo exemplari invenit Brunckius. In hac igitur sex habes ἐπαμφοτερίζοντα non inepte composita, quorum dimidiam partem Plato unico illo ὥσ breviter et tamen intelligentibus satis perspicue significare potuit, instrumentum dico et conditionem iacentis et eventum. Itaque quam codices optimi eam particulam praebent, non solum auctoritas eorum observanda, sed etiam res dubia secundum eos decernenda et notitia alterius formulae Platoni adjudicanda videtur.

καὶ ἐφ' οὐ] καὶ ἐφον Lob. κέπφον Vind. B. Vat. M. καὶ φάντες Par. DK. φάντες Mon. B. Flor. U.

αἰνίττονται βαλεῖν] βαλεῖν αἰνίττονται καὶ οὐ βαλεῖν Mon. B. Flor. U.

ταῦτα] καὶ ταῦτα Mon. B.

ἐπαμφοτερίζειν] Ita Mon. B. sed cum duobus punctis sub ν. ἐπαμφοτερίζει Vind. E. Astius in sec. et tert. Stallbaumius in pr. et Schleiermacherus, (*haec enim*) *ambigua sunt* Fic. Infinitivus a verbo ζοινε pendet, quod non ita multo ante item post ἐπαμφοτερίζοντι possum hic eo facilius intelligitur; nisi forte mavis ex sequente δυνατὸν colligere cognatum ἀνάγνη loquentis animo obversatum infinitivi caussam existisse. Stallbaumius ex verbo αἰνίττονται per zeugma οἴονται vel simile quoddam intelligendum statuit, quasi haec vulgaris quae-

dam multorum opinio, non ex ipsis penetralibus Platonicae philosophiae deprompta sententia sit.

αὐτῶν] αὐτὸν Vind. F. Ang. B. Flor. R.

δυνατὸν] om. Vind. D.

παγίως] Nescio an non casu acciderit, quod Phrynicus Bekkeri anecd. p. 41, 16. in explicando verbo ἐπαμφοτερίζειν hoc ipso vocabulo usus est: τὸ μὴ παγίως ἐν τι βούλευεσθαι καὶ πράττειν, ἀλλὰ καὶ τόδε καὶ τόδε διανοεῖσθαι.

νοῆσαι] responderi Fic.

οὐτ'] οὐτε Vind. DF. Flor. AC.

οὐτε] οὐτ' Lob. Vind. B. Vat. M.

οὐδέτερον] οὐδέτερα Mon. B.

οὖν] om. Fic.

χρήση] χρήσει Astius, Bekkerus et Stallbaumius.

ὅποι] ὅπῃ Lob. Vind. BDEE. Vat. BM. Ang. B. Flor. RT. ὅπον Par. DK. Mon. B. Flor. U.

θήσεις] θείσεις Bas. ab.

συνταδέστερα] συνταδεστέρα Vind. F. obscurior Fic.

μὴ ὄντος] τοῦ μὴ ὄντος Mon. B.

πρὸς — φανήσεται] om. idem.

μὴ εἶναι — μᾶλλον D.] om. Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. Flor. U.

φανότερα]. Ita Par. A. Ven. D. B. Vind. E. Vat. H. Flor. AC. φάντερα Mon. B. Flor. V. Ald. Bas. ab. Idem et paullo post ὄντας pro ὄντος in Ven. C. legi

ἔφη. Εὔρήκαμεν ἄρα, ὡς ἔοικεν, δτι τὰ τῶν πολλῶν πολλὰ νόμιμα καλοῦ τε πέρι καὶ τῶν ἄλλων μεταξύ που κυλινδεῖται τοῦ τε μὴ ὄντος καὶ τοῦ ὄντος εἰλικρινῶς. Εὔρήκαμεν. Προωμολογήσαμεν δέ γε, εἴ τι τοιοῦτον φανείη, δοξαστὸν αὐτὸν, ἀλλ' οὐ γνωστὸν δεῖν λέγεσθαι, τῇ μεταξὺ δυνάμει τὸ μεταξὺ πλανητὸν ἀλισκόμενον.

E. Θμολογήκαμεν. Τοὺς ἄρα πολλὰ καλὰ θεωμένους, αὐτὸν δὲ τὸ καλὸν μὴ δρῶντας μηδ' ἄλλῳ ἐπ' αὐτὸν ἄγοντι δυναμένους ἐπεσθαι, καὶ πολλὰ δίκαια, αὐτὸν δὲ τὸ δίκαιον μὴ, καὶ πάντα οὕτω, δοξάζειν φέρομεν ἀπαντα, γιγνώσκειν δὲ ὅν δοξάζουσιν οὐδέν. Ἀνάγκη, ἔφη. Τί

perhibet Astius in sec. quem codicem Bekkerūs haec omnia omittere testatur. Fortasse in margine scriptam habet lectionem Al-dinam. φανερώτερα reliqui codices, Steph. Ast. pr. sec. ut p. 478. C. clarior Fic. perperam utrumque comparativum ad θέσιν referens.

ὄντος] ὄντως Ald. Bas. ab. τοῦ ὄντος idque ante φανώτερα Mon. B.

νόμιμα] νόμημα Vind. E.

τοῦ τε μὴ ὄντος καὶ τοῦ ὄντος εἰλικρινῶς. Εὔρήκαμεν.] Vind. E. (Ven. B.) Flor. AC. et editiones ante Bekkerum: τοῦ τε ὄντος καὶ τοῦ μὴ ὄντος. Εἰλικρινῶς εὔρήκαμεν. Nec aliter Ficinus: (media inter) omnino ens et omnino non ens volvuntur. Glau. Invenimus plane. Bekkerus mutata secundum codices negationis sede interpunctionem eam, quam in Mon. B. et fortasse in aliis viderat, adhibuit et locum in integrum restituit. In Vind. F. neque post ὄντος neque ante Εὔρήκαμεν interpunctio est. εἰλικρινῶς ego secundum Lob. Vind. BDF. Mon. B. Ald. scripsi. V. ad p. 477. A.

τοιοῦτον] τοῦτον Ven. C. τούτων Lob. Vind. BD. (hic vulg. in m.) Yat. BM. Par. DK. Mon. B. Flor. U.

λέγεσθαι] λεγέσθω Par. K. sec. Bip.

τῇ μεταξὺ] His praepositum in editis ante Bekkerum καὶ unus Par. D. a m. s. habet expressissime an sua sponte inseruit Ficinus: et cum medium pervagetur, media comprehendi potentia. In appositione, cuius haec instar sunt, neque καὶ ferri, neque ἀτε, quod Stallbaumius pro eo desiderat, desiderari debet.

πλανητὸν] πλανητῶν Vind. E. ἀλισκόμενον.] ἀλισκόμενον; Lob. Vind. B.

Θμολογήκαμεν] θμολογήσαμεν Ven. B. cum editis ante Bekkerum.

πολλὰ καλὰ] pulchra haec multa Fic.

δὲ τὸ καλὸν] δὴ τὸ καλὸν E. Vind. B. Vat. M. et a m. pr. B. ἄλλῳ] ἄλλῳ Vind. F.

τὸ δίκαιον] καὶ δίκαιον Ang. B.

πάντα] alia Fic.

φέρομεν ἀπαντα,] φέρομεν; ἀπαντα. Lob. Vind. B. φέρομεν: ἀπαντα: Vind. D.

γιγνώσκειν] γιν. Vind. E.

οὐδέν.] οὐδέν; Lob. Vind. B.

Tί δὲ αὐ τὸν] Stephanus et Astius in pr. et sec. post αὐ signum interrogandi, deinde post ὄντα cum Ald. Bas. ab. comma

δὲ αὐτὸς αὐτὰ ἔκαστα θεωμένους καὶ ἀεὶ πατὰ ταῦτὰ
ώσαις ὄντα; ἂρούσι γιγνώσκειν, ἀλλ' οὐ δοξάζειν;
Ἀνάγκη καὶ ταῦτα. Οὐκοῦν καὶ ἀσπάζεσθαι τε καὶ φι-
λεῖν τούτους μὲν ταῦτα φήσομεν, ἐφ' οἷς γνῶσις ἐστιν,
ἔκείνους δὲ, ἐφ' οἷς δόξα; ἢ οὐ μημονεύομεν, ὅτι φω- 480
νάς τε καὶ χρόας καλὰς καὶ τὰ τοιαῦτα ἔφαμεν τούτους
φιλεῖν τε καὶ θεᾶσθαι, αὐτὸ δὲ τὸ καλὸν οὐδὲ ἀνέχε-
σθαι ὡς τι ὅν; Μεμνήμεθα. Μὴ οὖν τι πλημμελήσο-
μεν φιλοδόξους καλοῦντες αὐτοὺς μᾶλλον, ἢ φιλοσό-
φους; καὶ ἄρα ἡμῖν σφόδρα χαλεπανοῦσιν, ἀν οὗτω
λέγωμεν; Οὐκ, ἀν γ' ἔμοι πείθωνται, ἔφη· τῷ γὰρ ἀλη-

posuerunt. Pro δὲ in Par. A.
Vat. H. Flor. ACV. δαλ legitur,
Stephanus et recentiores δὲ ha-
bent. δὲ non solum in Lob. Vind.
DEF. Flor. U. Ald. Bas. ab. sed
etiam in Vind. B. Mon. B. ex-
stat, quod tacens Bekkerus idem
in aliis neglexerit. Quamquam
de Par. K. Bipontini quoque ta-
cent, et Flor. RT. cum Stephano
facere videntur. Pro αὐτὸν
Lob. Vind. BF. αὐτὸν exhibe-
tent.

καὶ ἀεὶ] καὶ om. Fic.

ταῦτὰ] Ita Lob. Vind. BDEF.
Vat. BHM. Ven. B. Ang. B. Flor.
ACV. τὰ αὐτὰ reliqui cum edi-
tionibus ante Bekkerum. Conf.
Vol. I. p. LVIII.

οὐ] Ita Mon. B. a m. pr. οὐν
a m. s. om. Ven. B.

γιγνώσκειν] γιν. Vind. D. (Flor.
RU.) Ald. Bas. ab. Steph. δοξά-
ζειν Flor. T.

ἀλλ' οὐ] ἀλλὰ μὴ Lob. Vind.
BD. Vat. M. ἀλλά Vat. BH.
Vind. E. Flor. ACTV.

δοξάζειν] γιγνώσκειν Flor. T.

Οὐκοῦν — ταῦτα] om. Vind.
E.

καὶ ἀσπάζεσθαι] καὶ om. Fic.
480 δὲ ἐφ'] δὲ ἐφ' Vind. F. Ang.
B.

καλὰς] τινὰς Vind. DE. Vat.
H. Flor. ACV. (colores) quosdam
Fic.

τοιαῦτα] τοιαῦτ' Vind. F. Ang.
B. Vat. H. Flor. ACV.

πλημμελήσομεν] Ita Vindob.
BDEF. Mon. B. Ven. C. Ang. B.
Vat. H. Flor. RTU. et corr. Par.
A. πλημμελήσωμεν reliqui cum
editis ante Astium, qui in pr. ed.
secundum Ven. C. et Stephanii
coniecturam in margine proposi-
tam verum restituit.

καλοῦντες] post αὐτοὺς Lob.
Vind. BD. Vat. BM. Flor. T.

καὶ] κἄν Ven. B. Bas. b. Ast.
pr.

ἄρα] Ita Vind. F. Flor. RT.
et correctus in accentu Mon. B.
Reliqui mei et Flor. cum editis
ante Bekkerum ἄρα habent, quod
Stephanus in m. cum illo permu-
tandum aut κἄν ἄρα, quod in
quibusdam exemplaribus sit, scri-
bendum censebat. Ficinus pro
utroque quanquam posuit.

χαλεπανοῦσιν] χαλεπαινοῦσιν
Vind. D. et ante corr. F.

λέγωμεν;] Ita Mon. B. λέγω-
μεν. editi ante Astii sec.

ἄν γ' ἔμοι] Ita Ven. B. Vind.
DE. Vat. H. Flor. ACTV. ἄν γέ
μοι reliqui editique ante Bekke-
rum. Cf. Vol. I. p. 7.

πείθωνται] πείθονται Vind.
F. et, sup. ω, E.

θεῖ χαλεπαίνειν οὐ θέμις. Τοὺς αὐτὸ ἄρα ἔκαστον τὸ
ὸν ἀσπαζομένους φιλοσόφους, ἀλλ' οὐ φιλοδόξους πλη-
τέον; Παντάπασι μὲν οὖν.

ἀσπαζομένους] qui — admis-
rantur et diligunt Fic.

πλητέον;] Ita Lob. πλητέον.
editi ante Bekkerum.

οὖν.] οὖν. οἱ μὲν δὴ φιλόσο-
φοι: ἦν δὲ ἐγώ: Vind. F.

Τέλος πολιτειῶν εἰς: Lob. τέλος:
ε. Vind. D. a m. s. Τέλος
τοῦ πολιτειῶν, ἢ περὶ δι-
καιον πέμπον (πέμπον Bas.)
λόγον. Ald. Bas. ab.

ΛΟΓΟΣ ΕΚΤΟΣ.

469 Οἱ μὲν δὴ φιλόσοφοι, ἦν δ' ἐγώ, ὁ Γλαύκων, καὶ οἱ 484
μὴ διὰ μακροῦ τινὸς διεξελθόντος λόγου μόγις πως
ἀνεφάνησαν, οἵ εἰσιν ἐκάτεροι. Ἰσως γὰρ, ἔφη, διὰ
βραχέος οὐδὲ δάδιον. Οὐ φαίνεται, εἶπον. ἐμοὶ γοῦν ἔτι

Πλατωνος πολιτειῶν, στ. Lob.
πολιτειῶν λόγος ἔκτος Vind. B.
S. Vind. E. ἔκτος: Vind. F. Flor.
R. πλάτωνος πολιτειῶν ἔκτη Mon.
B. Flor. U. (πολιτιῶν hic.) ΠΛΑΤΩΝΟΣ ΠΟΛΙΤΕΙΩΝ, Η ΠΕΡΙ ΔΙΚΑΙΟΥ ΛΟΓΟΣ ΕΚΤΟΣ.
Ald. Bas. ab. Flor. ACV. ΠΟΛΙΤΕΙΩΝ ΔΙΑΛΟΓΟΣ ἔκτος Stephan. s Bekkerus et Stallb. pr.

484 Οἱ] ε. Vind. E.

διὰ] om. Ven. B. a. m. pr.

μακροῦ] μακροῦ Vat. H. Flor.
ACT.

διεξελθόντος] διεξελθόντες
Vind. F.. Ang. B. Flor. R. Astius
in sec. ed. cuius in addendis no-
minativum hunc absolutum statuit,
refragante verborum dispositione.
διεξεληλυθότος Mon. B. Flor. U.
quamquam hunc Stallbaumius in
pr. ed. διεξεληλυθότος, in secunda
ἔληλυθότος, quam lectionem Bek-
kerus e Monacensi perperam re-
fert, exhibere demonstrat.

λόγον] τοῦ λόγον Vind. E.
(Ven. B. Vat. H. Flor. ACT.)
cum editionibus ante Astii sec.
Articulum Stallbaumius, qui διε-
ξελθόντος non a praepositione
διὰ regi, sed absolute positum
esse et λόγον ipsum διὰ μακροῦ
τινὸς διεξελθεῖν dici putaret,
omittere non debebat. Sed pro-
noinen quoque τινὸς isti inter-
pretationi obstat. Mihi διὰ ut in

Glauconis responso, ita in his
Socratis verbis id significare vi-
detur, cuius quasi adminiculo non
sine labore effectum esset, ut
philosophorum indoles tandem ap-
pareret. Nec frustra additum est
διεξελθόντος. Non prius enim
apparuerat, quam ad finem per-
venisset longa disputatio.

πως] πον. Vind. B.

ἀνεφάνησαν] ἀν ἐφάνησαν
Vind. F.

οὗ] Ita Par. A. et a. m. pr.
Ven. C. quos secutus est Bekke-
rus. Reliqui codices editionesque
οἱ exhibit, cuius interdum lo-
co ὅς poni a Platone Heindorfius
ad Phaedr. §. 46. demonstravit.
Aliud exemplum est infra p. 493.
B. et L. VIII. p. 559. A: προε-
λώμενα δή τι παράδειγμα ἐπα-
τέον (επιδημιῶν) αἴ εἰσιν, ἵνα
τύπω λάβωμεν αὐτάς; et Menon.
p. 92. C: τούτονς γοῦν οἱδα,
οἵ εἰσιν. ubi secundum unum
Coisl. parum constanter οἱοι prae-
ferentem Bekkerum merito dese-
ruit Buttmannus. Cf. Hermannus
ad Soph. Ai. 1238. — Ficinus:
Quales philosophi sint, et quales
qui alieni a philosophia, o Glau-
co, vix tandem longa oratione
constitit. Is quidem οἱοι legisse
videtur, sed eius auctoritas nihil
contra illos codices valet.

γοῦν] οὖν Vind. E. vero Fic.

δοκεῖ ἂν βελτιόνως φανῆναι, εἰ περὶ τούτου μόνου ἔδει δηθῆναι, καὶ μὴ πολλὰ τὰ λοιπὰ διελθεῖν μέλλοντι κα-
B τόφεσθαι, τί διαφέρει βίος δίκαιος ἀδίκου. Τί οὖν,
ἔφη, τὸ μετὰ τοῦτο ἡμῖν; Τί δ' ἄλλο, ἢν δ' ἐγὼ, ἢ
τὸ ἔξῆς; ἐπειδὴ φιλόσοφοι μὲν οἱ τοῦ ἀεὶ κατὰ ταῦτα
ωσαύτως ἔχοντος δυνάμενοι ἐφάπτεσθαι, οἱ δὲ μὴ, ἀλλ'
ἐν πολλοῖς καὶ πάντας ἵσχουσι πλανώμενοι οὐ φιλόσο-
φοι, ποτέρους δὴ δεῖ πόλεως ἡγεμόνας εἶναι; Πῶς οὖν
λέγοντες ἂν αὐτὸ, ἔφη, μετρίως λέγοιμεν; Οπότεροι ἀν-

δοκεῖ] δοκοῦ Lob. Vind. B.
Vat. BM. et a m. s. Ven. B.

βελτιόνως] Ita Par. A. Mon.
B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV.
et a m. sec. Vind. F. βελτιόνος
cum ω super ο. Vind. E. βελτιον-
ώς Ven. C. Par. DK. et a m.
pr. Vind. F. βελτιον reliqui co-
dices cum editis ante Bekkerum
et Astio in tert. Cf. Buttinannus
gramm. II. p. 269, qui tamen Al-
cib. I. p. 127. E. βελτιόνως σχη-
σομεν a Bekkerō ex uno Coisl.
pro βελτιον σχ. receptum recte
non admisit.

τούτου μόνου] μόνον τούτου
Vind. F. Ang. B. Flor. R. τοῦτο
μόνον Lob. Vind. B. Vat. M.

πολλὰ τὰ] πολλάττα Par. K.
sec. Bekk. πόλλ' ἄττα Mon. B.

μέλλοντι] μᾶλλον τι Flor. RT.

B βίος] post δίκαιος Vind. B.
Vat. M.

τὸ] om. iidem et Lob. το Mon.
B.

μετὰ τοῦτο] μετατοῦτο Vind.
B. Mon. B. Ald. Bas. ab.

δὲ] om. Fic.

τὸ ἔξῆς] το ἔξῆς Lob. τὸ ἔξῆς
Ald. Bas. ab. Hoc internam, με-
τὰ τοῦτο contra ac Rückertus ad
Symp. pag. 27. statuit, externam
consequentiam significat.

ταῦτα] ταῦτα Lob.

ωσαύτως] ωσαύτος Mon. B.
a m. pr.

δυνάμενοι] διαγοούμενοι Vind.
E.

ἐφάπτεσθαι] ἀπτεσθαι Flor.
T.

οί] εἰ Vat. M. et a m. pr.
Vind. B.

πάντως] παντοῖος Vind. E.
Flor. R. et γρ. Ven. C. Id re-
ponendum suspicabatur in sec. ed.
Astius, reposuit in utraque Stall-
baumius, quem non reprehendam.
Sed tamen quod ita comparatum
est, ut πάντα γίγνεσθαι, quod-
libet fieri, non recuset, πάντως
ἔχειν, omnimodis se habere, dici
potuisse videatur. Certe non multo
aliter τὸ πάντως χαίρειν dicitur
Gorg. p. 495. B. et πάντως προ-
πηλανεῖ ib. p. 527. A. Ficinus
haec πάντως an παντοῖος ἴσχον-
ται mutabilia interpretatus est.

ἵσχουσι] ἔχουσι Vind. E. ἴσχου-
σιν idque post πλανώμενοι Lob.
Vind. B. Vat. BM.

οὐ] οἱ Lob. Vat. BM. et a m.
pr. Vind. B.

δὴ δεῖ] δεῖ δὴ Par. DK. et
corr. Vind. E. cum editis ante
Bekkerum. δὴ δὴ Vind. E. ante
correctionem.

εἶναι;] εἶναι, Ald. εἶναι, Steph.
non vitiōse; nam interrogatio non
directa, et totum hoc ἐπειδὴ φι-
λόσοφοι — ἡγεμόνας εἶναι de-
claratio illius est, quod τὸ ἔξῆς
dictum erat; quam ipsam ob rem
δὴ δεῖ πότιus, quam δεῖ δὴ scri-
bendum fuit. Itaque unum inter-
rogandi signum post ἔξῆς positi-
tum, vel, ibi si colon fieret, (ut
L. I. p. 349. C. extr.) hic post
εἶναι ponendum sufficiebat: ta-
men perspicuitatis causa utrobi-
que posse praestat. Cf. L. III.
p. 396. B. pr.

ἢν δ' ἔγω, δυνατοὶ φαινονται φυλάξαι νόμους τε καὶ ἐπιτηδεύματα πόλεων, τούτους καθιστάναι φύλακας. C
 Ὁρθῶς, ἔφη. Τόδε δὴ, ἢν δ' ἔγω, ἄρα δῆλον, εἴτε τυφλὸν εἴτε ὁξὺ ὁρῶντα χοὴ φύλακα τηρεῖν ὀτιοῦν. Καὶ πᾶς, ἔφη, οὐ δῆλον; Ἡ οὖν δοκοῦσί τι τυφλῶν διαφέρειν οἱ τῷ ὄντι τοῦ ὄντος ἐκάστου ἐστερημένοι τῆς γνώσεως καὶ μηδὲν ἐναργὲς ἐν τῇ ψυχῇ ἔχοντες παράδειγμα μηδὲ δυνάμενοι ὥσπερ γραφῆς εἰς τὸ ἀληθέστατον ἀποβλέποντες κάκεῖσε ἀεὶ ἀναφέροντές τε καὶ

δυνατοὶ φαινονται] possunt
 Fic. δ. φαινονται Vind. E. Bas.
 ab.

τε] om. Vind. BE. Vat. H.
 Flor. ACTV. et a m. pr. Ven. B.
 πόλεων] civitatis Fic.

C καθιστάναι] sc. λέγοντες, h.
 e. κελεύοντες.

Ὁρθῶς] δῆλον Ang. B. Vind. F.
 Τόδε δὴ] Ita Vind. E. Flor.
 T. Stallbaumius in pr. ed. τόδε
 δὲ Vind. F. Flor. ACRV. Stallb.
 in sec. τόδε δ' Lob. Vind. B.
 Mon. B. Flor. U. qui duo dein-
 ceps ἢν γ' ἔγω exhibit, quoium
 medio librarius Monacensis littera
 α, praecedenti autem δ' littera β
 imposita τόδε γ' ἢν δ' ἔγω legi
 voluit. Τὸ δὲ δὴ editiones ante
 Bekkerum, qui Τόδε, omissio δὴ,
 edidit atque in comm. τόδε in
 Par. ADK. Ven. C. Vind. B. Vat.
 BHM. Ang. B. τόδε γ' a m. sec.
 in Mon. B. τόδε δ' in Vat. M.
 τόδε δὲ in Ang. B. τὸ δὲ δὴ apud
 Stephanum extare docet, de Ven.
 B. nihil, de Par. K. silentio Bi-
 pontinorum suspectum, de Mon.
 B. mancum, de Vind. B. falsum,
 de Vat. M. et Ang. B. repugna-
 tia tradens. Neque vero abru-
 ptum illud τόδε per se probabile
 est. Itaque quum esset inter δὴ
 et δὲ seu δ' eligendum, prius
 ob codices potissimum optimae fa-
 miliae adscriptos, tum ipsius caus-
 sa secundum ea, quae Vol. I.
 p. 147, a. observata sunt, praetuli.
 Idem legisse videtur Fi-
 cinus: *Hoc itaque perspicuum
 est —.*

ἄρα] ἄρα Flor. R. Bekkerus
 et Stallbaumius, hic cum signo
 interrogandi post ὀτιοῦν, quod
 in Bekkeri editione, nisi forte
 ἄρα ipso inscio pro ἄρα irrepit,
 operarum culpa omissum videtur.
 Sed interrogationi minus convenit
 Glauconis responsum, quam affir-
 mationi, cui ἄρα, scilicet, inser-
 vit.

οξὺ] Ita Mon. B. sed cum
 obelo sub ὑ et superscripto a m.
 s. νν.

ὁρῶντα] ὁρῶν Par. DK. Mon.
 B. Flor. U.

φύλακα] h. e. custodis loco.
 τὸν φ. Ven. B. Vind. E. Flor. C.
 editi ante Bekkerum.

τὸ] ἦ Lob. Vind. B. Vat. HM.
 εἰ Vind. F. εἰ Ang. B.

οὖν] om. Fic. οὖν οὐ Flor.
 U. et cum punctis a m. s. sub
 οὐ factis Mon. B.

τι] om. Lob. Vind. B. Vat.
 BM. Par. DK. et a m. pr. Ven.
 C. σοι Mon. B. Vind. E. (Ven.
 B. Vat. H. Flor. CU.) cum edi-
 tis ante Bekkerum. *tibi* Fic. Cf.
 Vol. I. p. 167. extr.

διαφέρειν] οὐ δ. Mon. B. Flor.
 U.

τῷ ὄντι] τωόντι Vind. E.
 γραφῆς] Ita Par. ADK. sec.
 Bekk. Lob. Vind. B. et a m. pr.
 F. Vat. BHM. Ven. BC. Flor.
 ACV. Reliqui et Vind. F. a m.
 s. editique ante Bekkerum γρα-
 φεῖς. Cf. Vol. I. p. 157, a.

εἰς] om. Vind. E.

ἀεὶ] om. Fic.

D θεώμενοι ὡς οἶόν τε ἀκριβέστατα, οὕτω δὴ καὶ τὰ ἐνθάδε νόμιμα καλῶν τε πέρι καὶ δικαιῶν καὶ ἀγαθῶν τίθεσθαι τε, ἐὰν δέη τίθεσθαι, καὶ τὰ κείμενα φυλάττοντες σώζειν; Οὐ μὰ τὸν Δία, η̄ δ' ὅς, οὐ πολὺ τι διαφέρει. Τούτους οὖν μᾶλλον φύλακας στησόμεθα, η̄ τοὺς ἔγνωκότας μὲν ἔκαστον τὸ ὄν, ἐμπειρίᾳ δὲ μηδὲν ἐκείνων ἐλλείποντας μηδ' ἐν ἄλλῳ μηδενὶ μέρει ἀρετῆς ύστεροῦντας; "Ἄτοπον μέντ' ἀν, ἔφη, εἴη ἄλλους αἰρεῖσθαι, εἴλ γε τἄλλα μὴ ἐλλείποντο· τούτῳ γὰρ αὐτῷ 485 σχεδόν τι τῷ μεγίστῳ ἀν προέχοιεν. Οὐκοῦν τοῦτο δὴ

D πέρι] περὶ Vind. E.

Δία] δι' Lob. Vind. BE. Vat. HM.

διαφέρει] διαφέρειν Mon. B. Flor. TU. Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius. διαφέρει impersonale est, ut pag. 496. A. ubi etiam meliores libri διαφέρειν exhibent, errore satis frequenti. Vid. L. V. p. 467. C. 469. C. Sed nostro loco a manu emendatura illatum videtur in Mon. B. et Flor. U.

οὖν] om. Fic.

τὸ ὄν] quod vere est Fic.

δὲ] quoque idem.

μηδὲν] μηδὲ ἐν Vind. E. sed elevato nonnihil priori ε. μὴ δὲ ἐν Vind. F.

μηδενὶ] μηδεῖ Mon. B. a m. pr.

τἄλλα] τὰ ἄλλα Vind. E. τἄλλα Vind. B. et a m. pr. F. Mon. B. Steph.

τούτῳ γὰρ αὐτῷ] τοῦτο γὰρ αὐτὸν Vind. F. Ang. B. γὰρ Ficinus omisit.

προέχοιεν] προσέχοιεν Lob. Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. sec. Bekk. Flor. U. et a m. pr. Vind. B.

λέγωμεν] λέγομεν Lob. Vat. BH. Flor. ACTV.

ἔσονται] ἔσομεθα Par. K.

ἔχειν;] ᔁχειν. Ald.

ἀρχόμενοι] L. V. p. 474. B.

δεῖ] Pro eo δεῖ Bekkerus in Par. AD. Vat. B. Ven. BC. et Vind. B. Stallbaumius in Flor. T. cui in sec. ed. codices AC.

addit, scriptum esse testantur, quemadmodum legitur in Ald. Bas. ab. Sed Vind. B. cum reliquis quatuor a me collatis δεῖ exhibet, cui propter finitam post οὐταμάθεῖν periodum, et quod L. V. l. c. hoc *primum* considerandum esse dictum non fuerat, accedente nonnulla de quinque codicibus istis suspicione δεῖ praferre non sustinui. Etiam Stallbaumius sensisse huiuscmodi aliquid videtur.

ἐάν] ὅτι ἐάν Vind. E. non male. εἴ τι ἐάν Vind. F. Flor. AC.

οὐκ ἄλλους] οὐκάλλους Vind. F.

Τοῦτο μὲν δὴ — φθορᾶς.] Hoc loco usus est Themistius ab Astio laudatus or. XXI. p. 250. B. C. Hard. hunc in modum: Τὰ δὲ λοιπὰ ξητητέον σύμβολά τε καὶ γνωρίσματα, ἀ πάσα ἀνάγη τοῦ φιλοσόφου ἐγνεγαράχθαι τῇ διανοίᾳ μᾶλλον, η τοῖς Πελοπίδαις τὸν ἐλεφάντινον ὄμον. τί δὴ μετὰ ταῦτα ὁ πάνσοφος Πλάτων ἐπίσημον ποιεῖ τῆς τῶν ψυχῶν εὐγενείας; ἐγὼ ὑμῖν ἀναγνώσομαι ἐφεξῆς ἐν τῶν ἐκείνον ὄχημάτων, ὥσπερ ἐν τοῖς διηκοστηρίοις οἱ ὄχητορες ἐν τῶν τοῦ νόμου γραμμάτων. Τοῦτο μὲν δὴ ὁ μολογείσθω τῆς φιλοσόφου φύσεως περὶ δτι μαθήματος δέοι οὐστοι παντὸς, ἀλλ' ὃ ἀν ἐκείνην δηλοῖ τὴν οὐσίαν, τὴν ἀεὶ οὐσαν καὶ μὴ

λέγωμεν, τίνα τρόπον οἷοι τ' ἔσονται οἱ αὐτοὶ πάκεῖνα καὶ ταῦτα ἔχειν; Πάντα μὲν οὖν τούτου τοῦ λόγου ἐλέγομεν, τὴν φύσιν αὐτῶν πρωτον δεῖ καταμαθεῖν. καὶ οἶμαι, ἐὰν ἐκείνην ἴκανῶς ὁμολογήσωμεν, ὁμολογήσειν καὶ ὅτι οὗτοί τε ταῦτα ἔχειν οἱ αὐτοὶ, ὅτι τε οὐκ ἄλλους πόλεων ἡγεμόνας δεῖ εἶναι, η̄ τούτους. Πῶς; Τοῦτο μὲν δὴ τῶν φιλοσόφων φύσεων πέρι ὁμολογήσθω ἡμῖν, ὅτι μαθήματός γε ἀεὶ ἐρῶσιν, ὃ ἂν αὐτοῖς δηλοῖ ἐκείνης τῆς οὐδίας, τῆς ἀεὶ Βούσης καὶ μὴ πλανωμένης ὑπὸ γενέσεως καὶ φθορᾶς.

πλανωμένην ύπὸ φθορᾶς
καὶ γενέσεως. Ακούετε οὖν τοῦ νομοθέτου διοριζομένον τὰ μαθήματα, ὃν ἐραστὰς χοεών εἶναι τὸν φιλοσόφους, καὶ μὴ ἔνγχωροῦντος συγχεῖν μηδὲ ἔνυμφέσιν ἀπαντα ὥσπερ εἰς Μύνονον μίαν. quae quum non de scripto, sed memoriter recitata esse appareat, ad nostrum locum, praesertim sanum, emendandum nihil faciunt, ipsa leviter corrupta sic emendanda videntur: φύσεως πέρι, ὅτι μαθήματός γ' ἐρᾶ, οὐτοι παντὸς, ἀλλ' etc. Etiam Plutarchus Cic. p. 861. E. huc simul atque ad L. V. p. 475. C. respexit: γενόμενος δ', ὥσπερ ὁ Πλάτων ἀξιοῦ τὴν φιλομαθῆναι φιλόσοφον φύσιν, οἶος ἀσπάζεσθαι πᾶν μαθῆμα καὶ μηδὲν λόγου μηδὲ παιδείας ἀτιμάζειν εἴδος, ἐδένη πως προδυνμότερον ἐπὶ ποιητικὴν.

ὁμολογήσθω] *primum constet*
Fic. ὁμολογείσθω Vind. BE. Ven.
B. Vat. H. Flor. ACTV. In Lob.
et Vat. M. δὲ εἰ super ὁ et η
scripta sunt.

ἀεὶ] ἀν Lob. Vind. B. Vat. M.
B. δὲ] Ita Par. A. Vind. EF. Vat.
H. Flor. ACTV. et a m. pr. Ven.
C. Reliqui codices editionesque ante Bekkerum ὄσα habent, quod sine offensione tulerunt Stephanus adnot. p. 22. Astius in commentario et Matthiae grammatis. p. 811. Non desunt exempla numeri pluralis similiter post singu-

larem illati. Cf. Vol. I. p. 169, b. Tim. p. 38. A: τὸ δὲ ἀεὶ πατὰ ταῦτα ἔχον ἀκινήτως οὔτε ποεσθύτερον οὔτε νεωτερον προσῆνει γίγνεσθαι — τὸ παράπαν τε οὐδὲν ὄσα γένεσις τοῖς ἐν αἰσθῆσει φερομένοις προσῆψεν. Sed adverbii ἀεὶ ea vis est, ut certam quandam unoquaque tempore ab illis amatam disciplinam cogitari iubeat, cuius indolem et naturam potius, quam universi generis, in quo continetur, complexum definiri consentaneum est, praesertim quum coniunctivus particulae ἀν iunctus sequatur. Neque eos, qui δὲ in ὄσα mutarunt, si mutatio consulto est facta, ad praecedentia respexisse, sed genitivo, qui sequitur, prospicere eumque, quia cun verbo δηλοῦ construi non posse videretur, ab ὄσα regi voluisse puto. Est vero ille partitivus rectissimeque declaratus ab Astio l. c. minus recte ad ipsum δηλοῦν relatus a Bernhardyo synt. p. 151. perperam denique a Stephano l. c. ab omisso φύσεως repetitus, quod praecessisset „genitivus pluralis φύσεων, licet non de eadem redictus;“ cuius erroris sui iterum errans participem facit Ficinum haec ita interpretatum: *quod semper eam diligunt disciplinam, qua illis notior fiat natura illa, quae semper est neque generatione et corruptione mutatur.*

αὐτοῖς] αὐτῆς Lob. Vind. B.
Vat. M.

Ωμολογήσθω. Καὶ μὴν, ἦν δ' ἐγὼ, καὶ ὅτι πάσης αὐτῆς, καὶ οὕτε σμικροῦ οὕτε μείζονος οὕτε τιμωτέρου οὕτε ἀτιμοτέρου μέρους ἐκόντες ἀφίενται, ὥσπερ ἐν τοῖς πρόσθεν περὶ τε τῶν φιλοτίμων καὶ ἐρωτικῶν διήλθομεν. Ὁρθῶς, ἔφη, λέγεις. Τόδε τοίνυν μετὰ τοῦτο σκόπει εἰ ἀνάγκη ἔχειν πρὸς τούτῳ ἐν τῇ φύσει οὐ ἀν μέλλωσιν ἔσεσθαι οὖσας ἐλέγομεν. Τὸ ποῖον; Τὴν ἀψεύδειαν καὶ τὸ ἐκόντας εἶναι μηδαμῇ προσδέχεσθαι τὸ ψεῦδος, ἀλλὰ μισεῖν, τὴν δ' ἀλήθειαν στέργειν. Εἰκός γε, ἔφη. Οὐ μόνον γε, ὡς φίλε, εἰκὸς, ἀλλὰ καὶ πᾶσα ἀνάγκη τὸν ἐρωτικῶν τον φύσει ἔχοντα πᾶν τὸ ξυγγενές τε καὶ οἰκεῖον τῶν παιδικῶν ἄγαπην. Ὁρθῶς, ἔφη.

Ωμολογήσθω] ὁμολογείσθω
Vind. B. Ven. B. Vat. M. Flor.
ACTV. ὁμολογήσθω Vind. E.
ἀμολογείσθω Vat. H. ὁμολογήσθω cum ὁ et εἰ super ὡς et η̄
Lob. et Ven. C.

καὶ ὅτι] καὶ om. Lob. Vind. B.
Mon. B. Vat. BM. Flor. U.

πάσης αὐτῆς] scil. οὐσίας;
quod quum proximum et tale sit,
ut sensu salvo subaudiri possit,
imperior faciunt, qui μαθήσεως
seu ἐπιστήμης ex illo μαθήματος
scilicet eruendum eoque haec re-
ferenda statuunt. Eius enim, quod est,
τῆς οὐσίας, multae secun-
dum Platonem partes sunt, quas
ideas appellabat et dignitate quo-
que, decore, praestantia inter se
differre censebat, quarum aliae
aliarum ope disciplinarum inda-
gantur atque cognoscuntur, uni-
versae vero ipsam illam οὐσίαν
efficiunt, cuius amantes necessa-
rio disciplinas quoque omnes amo-
re complectuntur. Simul intelli-
gitur, cur paullo ante δηλοῖ τῆς
οὐσίας dicere maluerit, quam τὴν
οὐσίαν.

καὶ] om. Par. K.

σμικροῦ] μικροῦ Flor. V.

οὕτε ἀτιμοτέρου] om. Bas. b.

μέρους] γένους Flor. T. mar-
go Flor. R. et γε Ang. B.

ἐν τοῖς πρόσθεν] L. V. p. 474.

D. sqq.

τε] γε Par. DK. Ald. Bas. ab.

Steph. Ast. sec.

καὶ] om. Par. D. a m. pr.

Τόδε] τὸ δὲ Vind. E.

μετὰ τοῦτο] μετατοῦτο Mon.
B. Ald. Bas. ab.

οὐ] Ita Vind. F. a m. pr. η̄
a m. s.

ἐλέγομεν] λέγομεν Lob. Vind. C
BF. Mon. B. Par. DK. sec. Bip.
Ang. B. Vat. M. Flor. U.

Τὸ ποῖον;] om. Vind. B. Se-
quentia adhibuit Themistius ab
Astio laudatus or. XXI. p. 257.
C: τέταρτον δὲ τύπον εἶναι φα-
σιν τὴν ἀψεύδειαν καὶ τὸ ἐκόντας
εἶναι μηδὲν μηδαμῇ προσδέχε-
σθαι τὸ ψεῦδος, ἀλλὰ μισεῖν,
τὴν δὲ ἀλήθειαν στέργειν. ἄγα-
μαι οὖν ἐγὼ καὶ ταῦτη τὸν νο-
μοθέτην etc.

ἐκόντας] ἐκοντα Flor. T.

μηδαμῇ] μηδαμῇ editiones ante
Bekkerum.

γε] δὴ Vind. E. γ' Vind. F.
Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV.
Stallb.

γε] om. Vind. E.

φίλε] φίλος Lob. Vind. B.
Vat. M.

τοῦ] τοῦ Lob. ante corr. τῇ
Par. DK.

⁷Η οὖν οἰκειότερον σοφίᾳ τι ἀληθείας ἀν εὑροις; Καὶ πῶς; η δ' ὅς. ⁷Η οὖν δυνατὸν εἶναι τὴν αὐτὴν φύσιν φιλόσοφόν τε καὶ φιλοψευδῆ; Οὐδαμῶς γε. Τὸν ἄρα D τῷ ὄντι φιλομαθῆ πάσης ἀληθείας δεῖ εὑθὺς ἐκ νέου ὅτι μάλιστα ὁρέγενθαι. Παντελῶς γε. Ἀλλὰ μὴν δτῷ γε εἰς ἔν τι αἱ ἐπιθυμίαι σφόδρα φέπουσιν, ἵσμεν που ὅτι εἰς τᾶλλα τούτῳ ἀσθενέστεραι, ὥσπερ φεῦμα ἐκεῖσε ἀποχετευμένον. Τί μήν; ⁷Ωι δὴ πρὸς τὰ μαθήματα καὶ πᾶν τὸ τοιοῦτον ἐργάνηκασι, περὶ τὴν τῆς ψυχῆς, οἷματι, ἥδονὴν αὐτῆς καθ' αὐτὴν εἶεν ἀν, τὰς δὲ διὰ τοῦ σώματος ἐκλείποιεν, εἰ μὴ πεπλασμένως, ἀλλ' ἀληθῶς φιλόσοφός τις εἴη. Μεγάλη ἀνάγκη. Σώφρων μὴν ὁ γε E

ἀγαπᾶν. ⁷Ορθῶς] ἀγαπᾶν, ὁρ-

θῶς Ald.
⁷H] ἡ Vind. F.
οὖν] om. Fic.

ἄν] om. Lob. Vind. B. Vat.
M. ante ἀληθείας Vind. F. Ang.
B. Flor. RT.

⁷H] ἡ Bas. b. ἡ Vind. F.

D τῷ ὄντι] om. Fic. τωόντι
Vind. E. τῶν ὄντι Ven. B.
δεῖ] δὴ Vind. F. ante corr.
ὅτῳ] Ita Vind. F. sed corre-
ctus.

ἵσμεν που ὅτι] om. Fic.
τᾶλλα] τᾶλλα Vind. BEF.
Mon. B. Steph.

ὥσπερ] ὡς Par. D. corr. Sed magis crediderim ad sequens ⁷Ωι eam varietatem spectare, et vero post illam, quae ad ἀποχετευμένον spectat, in commentariis Bekkeri posita et tamen eo versus numero notata est, ut huc referri debeat.

ἐκεῖσε] alio Fic.

ἀποχετευμένον] ἀποχετευόμε-
ναι Vind. F. Ang. B. Flor. R.
Stallb. pr. ἀποχετευμένον Par.
K. sec. Bekk. Mon. B. et in Par.
D. ἐ super ὡς positum. ἀποχε-
τευόμενον (Ven. B.) Ald. Bas.
ab. Steph. Ast. Genus participii
ad proximum nomen accommoda-
tum est, ut L. III. p. 401. D.

PLATONIS OP. II.

ἄγονσα. Similia, non eadem, illa sunt, quae Vol. I. p. 320, b. no-
tavi. Ceterum lectionem a Stall-
baumio in prima ed. receptam
Themistius secutus videtur or.
XXII. p. 269. D: δτῷ γὰρ ἀνδρὶ¹
εἰς ἔν τι τοιοῦτον (κυβείαν, κι-
θαριστικὴν etc.) αἱ ἐπιθυμίαι
πᾶσαι φέπουσιν, τούτῳ δὲ οὐκ
ἄν εἰς τάμενω γίγνοντο φιλίαι
Ισχυραὶ, ὥσπερ φεῦμα ἐπὶ τὸ
πρανέστερον ἀποτετραμμέναι.
Sed idem or. XXI. p. 260. A.
πᾶσαι αὐτῷ, inquit, αἱ τῆς ψυ-
χῆς ἐπιθυμίαι ἀπὸ τῶν μαθημά-
των ἐκεῖσε ἀποχετεύσονται ὥσπερ
φεῦμα ἐπὶ τὸν πρανέστερον τό-
πον.

δὴ] δὲ Mon. B. Par. DK. Flor.
U. Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr.
αὐτῆς] τὴν Ang. B. Flor. R.
καθ' αὐτὴν] καθαντὴν Vind.
F. καθ' ἐαυτὴν Flor. R.
εἶεν] εἰς ἔν Vind. F.

ἐκλείποιεν] ἐκλίποιεν Vind. B.
Cupiditates illius totia ad disci-
plinas conversae animique volu-
ptatem appetentes circa corporis
voluptates flaccescere dicuntur.
Ad τὰς repetendum ex superiori-
bus est περὶ. Cf. Vol. I. p. 365,
a. b.

πεπλασμένως] πεπλασμένος
Par. K. et a. m. s. Flor. C.

ἀλλ'] ἀλλὰ Vind. F.
μὴν ὁ γε] γε μὴν ὁ Par. K. E
Flor. U. γε μὴν ὁγε Mon. B.

K

τοιοῦτος καὶ οὐδαμῆ φιλοχρήματος· ὃν γάρ ἔνεκα χρήματα μετὰ πολλῆς δαπάνης σπουδάζεται, ἄλλω τινὶ μᾶλλον, ἢ τούτῳ προσήκει σπουδάζειν. Οὕτω. Καὶ μήν 486 που καὶ τόδε δεῖ σκοπεῖν, ὅταν ιρίνειν μέλλῃς φύσιν φιλόσοφόν τε καὶ μή. Τὸ ποῖον; Μή σε λάθη μετέχουσα ἀνελευθερίας· ἐναντιώτατον γάρ που σμικρολογία ψυχῇ μελλούσῃ τοῦ ὅλου καὶ παντὸς ἀεὶ ἐπορέξεσθαι θείου τε καὶ ἀνθρωπίνου. Ἀληθέστατα, ἔφη. Ἡπούντινος οὐνύπαρχει διανοίᾳ μεγαλοπρέπεια καὶ θεωρία παντὸς μὲν χρόνου, πάσης δὲ οὐσίας, οἵον τε οἵει τούτῳ μέγα τι δοκεῖν εἶναι τὸν ἀνθρωπίνου βίον; Ἄδυνατον, ἢ δ' ὁς.

B Οὐκοῦν καὶ θάνατον οὐ δεινόν τι ἡγήσεται ὁ τοιοῦτος;

οὐδαμῆ] οὐδαμῆ Steph. Huc respexit Proclus in Alcib. T. II. p. 255. Cous. ἐπεὶ καὶ ἐν Πολιτείᾳ στοιχεῖον ἔφατο καὶ τοῦτο τῆς φιλοσόφου φύσεως εἶναι, τὸ τῶν χρημάτων ὑπεροπτικόν.

μετὰ πολλῆς δαπάνης] Oxy-

morum.

ἄλλω τινὶ] post μᾶλλον Flor. T. ἄλλωι τι Lob. ἄλλο τι Vind. B. Vat. M.

προσήκει] om. Vind. F.

Οὕτω.] Οὕτως. Bekkerus et Stallbaumius.

486 μέλλῃς] μέλλεις Flor. V. μέλλη Par. D. Etiam in Mon. B. s a m. s. demum expressum.

φύσιν] φύσει Flor. T.

Μή] μή γε Vind. F.

λάθη] λ. ψυχῇ Ang. B. Flor.

RT.

ἀνελευθερίας] ἐλευθερίας Lob. Vind. B. Vat. M. Conf. Vol. I. p. 232, a.

σμικρολογία] μικρολογία Vind. E. Flor. ACTV. Alcinous isag. c. 1: ἐναντιώτατον γάρ μικρολογίας ψυχῇ μελλούσῃ θεωρεῖν τὰ θεῖα καὶ ἀνθρωπίνα.

ἐπορέξεσθαι] ἐπορέγεσθαι editi ante Bekkerum.

Ἡπούντινος οὐνύπαρχει διανοίᾳ ὥ — διάνοια Vind. E. Vat. M. hic cum altero acuto super οἱ et αἱ super ultima. ἢ — διάνοια Vat. H. ὥ — διάνοιας Vind. B. Mon. B. Ang. B. Flor. RTUV. et ὥ super ἢ

scriptum habent Lob. Ven. C. Par. D. αἱ super αἱ Lob. Ὡι — διάνοιας Astius in secunda et Stallbaumius receperunt, Ficini quoque interpretatione et M. Antonini auctoritate adducti, qui τῶν εἰς ἔαντὸν L. VII. c. 35. hoc Πλατωνικὸν posuit: Ὡι οὐνύπαρχει διάνοια μεγαλοπρεπής καὶ θεωρία — οὐσίας, ἀραι οἵει τούτῳ — "Ηιστά γε, quae non ad verbum descripta ex codice esse apparet. Ficinum quidem non intercedo quo minus ὥ et διάνοιας legisse credamus, quamquam in sequentibus paullo liberius versatus videtur: Nempe cui cogitationis adest magnificentia et totius temporis totiusque substantiac contemplatio, humana vita magnum quid videri non potest. Glau. Non profecto. So. Num mortem hic terribilem existimabit? Glau. Minime. Sed facile intelligitur, quid illam lectionem perpererit. διάνοια non facultatem actionem mentis, sed ipsam mentem significat, ut infra E: ἔμμετρον ἀραι καὶ εὐχαριστητῶμεν πρὸς τοῖς ἄλλοις διάνοιαι φύσει. multisque locis, quos indicat Heindorfius ad Phaedr. §. 34. Huic igitur τούτῳ recte et quasi sua sponte succedit. Sic Gorg. p. 523. E: καὶ τὸν ιριτὴν δεῖ γυμνὸν εἶναι, τεθνεῶτα, αὐτῇ τῇ ψυχῇ αὐτῇ τῇ ψυχῇ θεω-

470 Ἡκιστά γε. Δειλῆ δὴ καὶ ἀνελευθέρῳ φύσει φιλοσοφίας ἀληθινῆς, ὡς ἔοικεν, οὐκ ἀν μετείη. Οὐ μοι δοκεῖ. Τί οὖν; ὁ κόσμος καὶ μὴ φιλοχόηματος μηδ' ἀνελεύθερος μηδ' ἀλαζῶν μηδὲ δειλὸς ἐσθ' ὅπη ἀν δυσξύμβολος ἢ ἄδικος γένοιτο; Οὐκ ἔστι. Καὶ τοῦτο δὴ ψυχὴν σκοπῶν φιλόσοφον καὶ μὴ εὐθὺς νέου ὄντος ἐπισκέψει, εἰ ἄρα δικαία τε καὶ ἡμερος, ἢ δυσκοινώνητος καὶ ἀγρία. Πάνυ μὲν οὖν. Οὐ μὴν οὐδὲ τόδε παραλείψεις, ὡς ἐγῷ μαι. Τὸ ποῖον; Εὔμαθῆς, ἢ δυσμαθῆς. Καὶ προσδοκᾶς ποτέ τινά τι ἵκανῶς ἀν στέρξαι, ὃ πράττων ἀν ἀλγῶν τε πράττοι καὶ μόγις σμικρὸν ἀνύτων; Οὐκ ἀν γένοιτο. Τί δ'; εἰ μηδὲν ὥν μάθοι σώζειν δύ-

ροῦνται ἔξαιρηνης ἀποθανόντος ἑπάστον, ἔρημον πάντων τῶν συγγενῶν καὶ παταλιπόντα ἐπὶ τῆς γῆς πάντα ἐκεῖνον τὸν κόσμον, ἵνα δικαία ἡ κοίσις ἦ. ubi non offendit Stallbaumius. Ceterum huc pertinent verba Procli in Parm. T. V. p. 90. Cous. διὸ καὶ ἐν Πολιτείᾳ ταῖς φιλοσόφοις φύσεσιν ἀπονέμει τὸ μεγαλόπρεπες, ὡς ὑψους καὶ μεγέθους ἀντεχομένας.

οἶει] post τούτῳ Vind. E. εἴη Par. K.

δοκεῖν] δοκεῖ Ald. Bas. ab. In Mon. B. —εῖν correctum exstat, in Vind. F. ν altera scriptio additum est.

B τοιοῦτος;] τοιοῦτος. Ald. Stephan.

δὴ] Ita Par. A. Mon. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACTUV. δὲ reliqui libri cum editis ante Bekkerum.

ὡς ἔοικεν] ante ἀληθινῆς Lob. Vind. B. Vat. BM. om. Fic.

μετείη] μετήσει Vind. F. μετεῖοι Par. K. sec. Bip. μετέρην Ald. Bas. a.

Τί οὖν;] om. Fic.

ὅπη] ὅποι Par. K. sec. Bekk. Conf. 487. A. Vid. Lobeck. ad Phryn. p. 271.

δυσξύμβολος] δυσξύμβολος Vind. F.

Οὐκ ἔστι] οὐκέτι Vat. H. Οὐκ ἔστιν Bekkerus.

ἐπισκέψει] Ita Vind. F. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRT. et Themistius or. XXI. p. 254. B. cuius verba, quia nullo negotio possunt ab unoquoque emendari, sic ut vulgo leguntur adscripti. ἀλλ' εὐ δὴ ποιῶν ὁ λόγος μεταβέβην ἐφ' ἔτερον τῶν γνωρισμάτων, μάλιστα καὶ τοῦτο ψυχὴν ἔξετάξον φιλόσοφόν τε καὶ μὴ. ἐπισκήψει γάρ ἡ κοινωνική τε καὶ ἡμερος πρὸς τὸν παδείας ἐπιθυμοῦντας, ἢ δυσκοινώνητος δὲ καὶ ἀγρία. — Reliqui codices et editiones ante Astiūn ἐπισκέψη habent.

δικαία] δίκαια Vind. F.

δυσκοινώνητος] τε vulgo ante Bekkerum et in Astii tertia ed. additum non nisi in Lob. Vind. B. Ven. B. et Vat. BM. legitur, a Themistio tamen et ipso lectum videtur.

ἢ δυσμαθῆς] om. Mon. B.

τι] om. Lob. Vind. B. Mon. B. Vat. B. Ven. C. Par. DK. Flor. U. illud Fic.

ἵκανῶς] om. Fic.

ἀλγῶν] ἀργῶν Flor. T.

σμικρὸν] σμικρὸν Vind. F. ἀνύτων] ἀνύττων Ven. B. Vat. H. Flor. UV. editiones ante Bekkerum. Soph. pag. 230. A. unus ex undeviginti Par. F. ἀνύττειν, 261. B. quatuor cum Stephano. ἀνύττων, Symp. 217. C. unus Par. F. ἥνυττον, Leg. VIII.

ναιτο, λήθης ὡν πλέως, ἀρό ἀν οἶσ τ' εἴη ἐπιστήμης μὴ κενὸς εἶναι; Καὶ πῶς; Ἀνόνητα δὴ πονῶν οὐκ, οἴει, ἀναγκασθήσεται τελευτῶν αὐτόν τε μισεῖν καὶ τὴν τοιαύ-

D την πρᾶξιν; Πῶς δ' οὖ; Ἐπιλήσμονα ἄρα ψυχὴν ἐν ταῖς ίκανῶς φιλοσόφοις μή ποτε ἐγκρίνωμεν, ἀλλὰ μνημονικὴν αὐτὴν ξητῶμεν δεῖν εἶναι. Παντάπασι μὲν οὖν. Ἄλλ' οὐ μὴν τό γε τῆς ἀμούσου τε καὶ ἀσκήμονος φύσεως ἄλλοσέ ποι ἀν φαιμεν ἔλκειν, η εἰς ἀμετρίαν. Τί μήν; Ἀλήθειαν δὲ ἀμετρίᾳ ἥρηξυγγενῆ εἶναι, η ἐμετρίᾳ; Ἐμμετρίᾳ. Ἐμμετρον ἄρα καὶ εὔχαριν ξητῶμεν πρὸς τοῖς ἄλλοις διάνοιαν φύσει, ην ἐπὶ τὴν τοῦ ὄντος E ιδέαν ἐκάστου τὸ αὐτοφυὲς εὐάγωγον παρέξει. Πῶς

881. A. Ven. B. et Stobaenus
ἀνύττονσι, Axioch. 369. D. nullus e Bekkeri codicibus
quod vulgatum est, habet. Sed
lenem omnes ubique tenent.

δ'; ελ] δεῖ Vind. F.-a m. pr.
Signum interrogandi Bekkerus pos-
suit.

πλέως] πλέος Mon. B. a m.
pr. ἀνάπλεως Vind. F. Ang. B.
Flor. T. et in m. A.

ἄρο] ἄρο Vind. F. — nonne
erit scientia vacuus? Fic.

Ἀνόνητα] ἀνόητα Par. A. (ad-
scripta sec. Faehsium in margine
vulgata) et a m. pr. Ven. C. Ea-
dem varietas est Tim. p. 44. C.
ἀνήνυτα, quod Astius ad Leges
p. 213. et in tert. ed. a Platone
profectum suspicatur, minus aptum
est. Nam ἀνήνυτος πόνος Phry-
nicho interprete Bekk. anecd.
p. 13, 26. ὁ πολὺς est καὶ ὃν
οὐχ οἶσ τε διανύσαι.

δὴ] δὲ Ven. C. Mon. B. Par.
DK. editi ante Bekkerum; non
minus recte. vero Fic.

οἴει] om. Fic. οἴει ὡς Flor.
T. (οἴει) Steph. Astius in pr. et
sec. et Stallb. in sec. comma prius
non ante οἴει, sed ante negationem
ponentes inusitatum loquendi genus
introducunt. Cf. L. VII. p. 530.
B. et Hipp. mai. pag. 298. A:
εἰ ἀποκριναμέθα τῷ θρασεῖ
ἔκεινον ἀνθρώπῳ—οὐκ ἀν, οἴει,
αὐτὸν τοῦ θρασούς ἐπίσχομεν;

In tert. Astius et in pr. Stallbau-
mius secundum Bekkerum utrum-
que comma sustulerunt. Priores
tantum post πονῶν incident.

ἀναγκασθήσεται] ἀναγκασθή-
σεσθαι Lob. Vind. B. Mon. B.
Vat. BM. Par. K. Flor. U.

τελευτῶν] τελευτῶν Lob. Vind.
BE. Mon. B. Ald. Bas. ab.

αὐτόν] αὐ. Vind. BEF.

ἐγκρίνωμεν] ἐννο. Vind. F. D
ηγίνωμεν editi ante Bekkerum,
tacentibus de Par. K. Bipontinis.

ξητῶμεν δεῖν εἶναι] εἰ. δ. ξ.
Flor. T. Pro δεῖn Ven. B. a m.
pr. et Vind. E. δεῖ habent.

μὴν] μὴ Par. A. Ang. B. edi-
tiones ante Bekkerum, tacentibus
Bipontinis, quod Astius in comm.
ad L. I. p. 365. ad φῶμεν tum
vulgatum referens, si ἀν cum
ἔλκειν construebat, recte sine of-
fensione tulit, ferrique etiam nunc
recepto optativo φαιμεν ad eum-
que relata, ut debet, particula
ἄν posset, si Socrates verendum
negaret, ne illud aliqua conditio-
ne proposita statuere possent. Cf.
Vol. I. p. 116, b. Sed conditio-
nis significatio etsi non omnino
inepta, tamen non ita necessaria
h. l. erat, ut dictione minus usi-
tata οὐ μὴ φαιμεν ἀν uti scri-
ptorem cogeret. Neque vero co-
dices magnam dubitationem re-
linquent. Ἄλλ' οὐ μὴ sequente

δ' οὖ; Τί οὖν; μή πη δοκοῦμέν σοι οὐκ ἀναγκαῖα ἔκαστα διεληλυθέναι καὶ ἐπόμενα ἀλλήλοις τῇ μελλούσῃ τοῦ ὄντος ἵκανως τε καὶ τελέως ψυχῇ μεταλήψεσθαι; Ἀναγκαιότατα μὲν οὖν, ἔφη. Ἐστιν οὖν ὅπη μέμψῃ 487 τοιοῦτον ἐπιτήδευμα, ὃ μήποτ' ἂν τις οἶστε τε γένοιτο ἵκανως ἐπιτηδεῦσαι, εἰ μὴ φύσει εἴη μνήμων, εὔμαθῆς, μεγαλοπρεπῆς, εὐχαριτούσης, φίλος τε καὶ ἔνγγενῆς ἀληθείας, δικαιοσύνης, ἀνδρίας, σωφροσύνης; Οὐδέ τὸν δὲ Μωμός, ἔφη, τό γε τοιοῦτον μέμψαιτο. Ἄλλ', ἦν δέ ἐγώ, τελειωθεῖσι τοῖς τοιούτοις παιδείᾳ τε καὶ ἡλικίᾳ ἄρα οὐ μόνοις ἀν τὴν πόλιν ἐπιτρέποις; Καὶ δέ Ἀδείμαντος ὩΣώποτες, ἔφη, πρὸς μὲν ταῦτά σοι οὐδεὶς ἀν οἶστε τ' **B**

γε bis deinceps legitur Polit. p. 290. A. B.

τε] om. Vind. E. et a m. pr. Ven. B.

ἄλλοσέ] ἄλλο σέ Ald. Bas. a. ποι ἀν] ποίαν Vind. F. a m. pr. πη ἀν Vind. E. Mon. B. Par. DK. editiones ante Bekkerum.

φαῦμεν] Ita Par. A. Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. BC. Bas. b. φαῦμεν Vind. F. Ang. B. θεῖμεν Vind. E. θέμεν Vat. H. φῶμεν Mon. B. Par. DK. Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr. et sec. De Florentinis Stallbaumius tacet. Vix credi potest omnes φῶμεν habere.

ἀμετρίαν.] ἀμετρίαν; Ald. Bas. ab. Pollux III. 167. τὴν ἐν τῷ ποδὶ καὶ πρὸς τὴν λύρα ἀμετρίαν ex Platone affert. — Ficinus hanc Socratis ἔνσιν ita interpretatur: Absona praeterea et inconcinnata natura ad intemperiem semper trahit. ήγη] ήγει Vind. F. Ang. B. recentiores.

ἢ ἀμετρία;] an cum temperie potius? Fic.

Ἐμμετρία.] om. Lob. Vind. F. Vat. M.

ἢν] ἢ Mon. B. cum litura. ἰδέαν] εἰδέαν, sup. a m. s. i., Vind. F.

E *εὐάγωγον] καὶ εὐάγ. Vind. E. Flor. RT.*

Τί οὖν;] om. Fic.

δοκοῦμέν] δοκῶμέν Lob. Vind. B. Vat. M.

οὖν ἀναγκαῖα] οὐκ ἀναγκαῖα Vind. E.

τελέως] τελείως Mon. B. Flor. U.

Ἀναγκαιότατα] ἀναγκαιότατον Mon. B.

οὖν] om. Fic. 487 μέμψῃ] μέμψει Vind. F. Ang. B. Flor. R. recentiores.

ἵνανως] ἵκανὸς Lob. Vind. BE. Vat. M.

μνήμων, εὔμαθῆς] perspicax, memor Fic.

τε] δέ Vind. F.

ἔνγγενῆς] συγγ. Vind. E. Flor. ACV.

ἀνδρίας] ἀνδρείας Lob. Vind. F. Flor. ACRTV. Stallb. Conf. Vol. I. p. 115. et quae ad p. 490. C. notavi. — Hanc virtutum enumerationem respicit Proclus T. II. p. 289. et T. V. p. 184. Cous.

τοιοῦτον] τοιοῦτο Lob. Vind. B. Vat. BM.

Ἄλλ', ἦν] ἄλλην Vind. F. a m. pr. ἄλλ', ἦν Vind. E. Particularum Ficinus omisit.

τελειωθεῖσι] τελειωθῶσι Par. K. sec. Bip.

παιδεία — ἡλικίᾳ] παιδεία — ἡλικίᾳ Ald. Bas. ab.

ἄρα] ἄρα Vind. EF. om. Mon. B.

ἀν] om. Vind. E. Vat. H. Flor. T. et a m. pr. Ven. B.

ἐπιτρέποις] ἐπιτρέπεις Flor. T. et, sup. oī, Vind. E.

εῖη ἀντειπεῖν· ἀλλὰ γὰρ τοιόνδε τι πάσχουσιν οἱ ἀνού-
οντες ἐκάστοτε ἢ νῦν λέγεις· ἥγοῦνται δὲ ἀπειρίαν τοῦ
ἐρωτᾶν τε καὶ ἀποφίνεσθαι ὑπὸ τοῦ λόγου παρ' ἐκαστον
τὸ ἐρώτημα σμικρὸν παραγόμενοι ἀθροισθέντων τῶν
σμικρῶν ἐπὶ τελευτῆς τῶν λόγων μέγα τὸ σφάλμα καὶ
ἐναντίον τοῖς πρώτοις ἀναφαίνεσθαι, καὶ ὥσπερ ὑπὸ^C τῶν πεττεύειν δεινῶν οἱ μὴ τελευτῶντες ἀποκλείονται
καὶ οὐκ ἔχουσιν ὅτι φέρωσιν, οὕτω καὶ σφεῖς τελευ-
τῶντες ἀποκλείεσθαι καὶ οὐκ ἔχειν ὅτι λέγωσιν ὑπὸ^C
πεττείας αὐτὸν ταύτης τινὸς ἐτέρας, οὐκ ἐν ψήφοις, ἀλλ᾽
ἐν λόγοις, ἐπεὶ τό γε ἀληθὲς οὐδέν τι μᾶλλον ταύτη
ἔχειν. λέγω δὲ εἰς τὸ παρὸν ἀποβλέψας. νῦν γὰρ φαίη
ἄν τις δοι λόγῳ μὲν οὐκ ἔχειν καθ' ἐκαστον τὸ ἐρωτώ-
μενον ἐναντιοῦσθαι, ἔργῳ δὲ δοῦν, ὅσοι ἐπὶ φιλο-

B ἀντειπεῖν] ἀντιπεῖν Vind. E.
τοιόνδε τι] τοῖον δέτι Vind. F.
ἢ] int. vers. habet idem.

νῦν] om. Fic.

τε] om. Vind. EF. Ven. B. et
a m. pr. C. Vat. H. Flor. ACRTV.
ὑπὸ τοῦ λόγου] om. Fic. ἀπὸ
τ. λ. Ald. Bas. a.

τὸ ἐρώτημα] om. Fic.

παραγόμενοι] παραγενόμενοι
Vind. EF. παραγγένομενοι Ang. B.
ἀθροισθέντων] ἀθρ. δὲ Ang.
B. Flor. R. et int. vers. a m. s.
Vind. F.

σμικρῶν] μικρῶν Flor. ACV.
ἐπὶ τελευτῆς] ἐπιτελευτῆς Vind.
E.

μέγα τὸ σφάλμα] μετὰ τὸ σφ.
Flor. ACV. post errorem atque
fallaciam Fic.

ἀναφαίνεσθαι] ἀποφαίνεσθαι
Lob. Vind. B. Vat. BM. Est ana-
coluthon.

ὥσπερ] ὡς Ven. C. a m. pr.

C ἀποκλείονται] ἀποκλείονται
cūm duobus punctis sub priori. u
Mon. B. ἀποκλείονται Vind. B.
coērentur et concluduntur Fic.

φέρωσιν] Ita cum editis unus
Vind. E. Reliqui codices omnes
φέρουσιν habent, neque aliter
ante correctionem scriptum fuit
in Mon. B. sed ex emendatione
factum est λέγουσιν, cui statim

subiungitur ὑπὸ πεττείας etc. de-
cem vocabulis omissis.

σφεῖς] σφᾶς Par. K. secundum
Bekk.

τελευτῶντες] τελευτῶνται idem
sec. Bekk. et Vat. M. et a m. s.
Par. D. Etiam Lob. —τῶνται
superscriptum vulgato habet. τε-
λευτῶν τε Ald. Bas. a.

ἀποκλείεσθαι] cogi concludique
Fic.

ἔχειν] ἔχουσιν Vat. B.

λέγωσιν] ἀν λέγωσιν Flor. T.
λέγουσιν Flor. U. (Mon. B.) λέ-
γοιεν Vind. B.

αὐτὸν] οὖν Par. K. sec. Bekk.

λόγοις,] λόγοις. Ald. Bas. ab.
Steph.

τό γε] τό γ' Vind. F. Ang. B.

ταύτη] ταύτην Par. A. Vind.
E. Vat. H. Cf. var. lect. L. V.
p. 469. A. ex Eusebio notatam.

Scilicet —ηι non minus facile in
ην corrumpi poterat, quam —ωι
in —ων, de quo cf. interpretes
ad Gregor. Cor. p. 266. ταύτη

est eo modo, quo Socrates rem
habere dicat et disputandi arte
evincat. Prorsus ab huius loci
sensu aberravit Ficinus haec inde
ab ὑπὸ πεττείας ita interpretatus:
verbis veluti calculis circum-
clusos: quandoquidem verum sit

σοφίαν δομήσαντες μὴ τοῦ πεπαιδεῦσθαι ἔνεκα ἀψάμε- D
νοι νέοι ὅντες ἀπαλλάττωνται, ἀλλὰ μακρότερον ἐνδια-
τρίψωσι, τοὺς μὲν πλείστους καὶ πάνυ ἀλλοκότους γι-
γνομένους, ἵνα μὴ παμπονήρους εἴπωμεν, τοὺς δὲ ἐπιει-
κεστάτους δοκοῦντας ὅμως τοῦτο γε ὑπὸ τοῦ ἐπιτηδεύ-
ματος, οὐδὲ σὺ ἐπαινεῖς, πάσχοντας, ἀχρήστους ταῖς πό-
λεσι γιγνομένους. Καὶ ἐγὼ ἀκούσας Οἴει οὖν, εἶπον,
τοὺς ταῦτα λέγοντας ψεύδεσθαι; Οὐκ οἶδα, ηδὲ ὅς·
ἀλλὰ τὸ δοκοῦν ἡδέως ἀν ἀκούοιμι. Ἀκούοις ἀν, Ε
ὅτι ἔμοιγε φαίνονται τὰληθῆ λέγειν. Πῶς οὖν, ἐφη,
εὗ ἔχει λέγειν, ὅτι οὐ πρότερον κακῶν παύσονται αἱ
πόλεις, πρὸν ἀν ἀνταῖς οἱ φιλόσοφοι ἀρξασιν, οὓς
ἀχρήστους ὅμολογοῦμεν αὐταῖς εἶναι; Ἐρωτᾶς, ηδὲ δ' ἐγὼ,
ἔρωτημα δεόμενον ἀποκρίσεως δι' εἰκόνος λεγομένης.

nihil haec duo inter se discrepare.
Cf. quae Schaeferus in adnotatio-
ne ad Gregor. Cor. pag. 60. de
Steinbrychelii explicatione huius
loci retulit.

ἔχειν] ἔχει Flor. T.

δὲ εἰς] δὲ εἰς Lob. Vind. BF.
δὴ 's Vind. E. ante corr. δὲ εἰ
Mon. B. a m. pr.

ἀποβλέψεις.] In Bas. ab. punc-
tum ante hoc participium posi-
tum est. Astius, Bekkerus et
Stallbaumius colon fecerunt.

τις σοι] τι σοι Vind. F. τισοι,
inserto a. m. s. altero σ, Món. B.
τις, omissio σοι, Ang. B. Flor.
T.

λόγῳ] λόγον Vind. E.

καθ' ἔκαστον τὸ ἐρωτώμενον]
his quae proponuntur Fic. καθέν.
τ. ἐ. Vind. EF.

φιλοσοφίαν.] φιλοσοφίας Ald.
Bas. ab.

πεπαιδεῦσθαι] παιδεύεσθαι
Vind. E. Ven. B. Vat. H. Flor.
ACTV. προπεπαιδεῦσθαι editi
ante Bekkerum.

D ἀπαλλάττωνται] ἀπαλλάττον-
ται Vind. F. Flor. RTV.

ἐνδιατρίψωσι] ἐνδιατρίψωσιν
Vind. B.

ἀλλοκότους] absurdos et a re-
bus hominum alienos Fic. Timaeus

lex. p. 24: ἀλλόποτον· ἔξηγλα-
γμένον. Cf. Ruhnkenius et Bek-
keri anecd. pag. 14. Blomfield.
Gloss. in Aesch. Sept. v. 804.

παμπονήρους] Pollux VI. 162.
παμπόνηρον in magno numero
verborum ex πᾶν a Platone com-
positorum refert.

δὲ] δὲ Vind. E. Vat. H. om.
Vind. F.

ὅμως] ὅμως Lob. Vind. B.
ὅμως δὲ Vind. F. Ang. B. Flor.
R.

ὑπὸ] ἐπὶ Lōb. Vind. B. Vat.
BM. Ven. C. Par. DK. secundum
Bekkerum.

ἐπιτηδεύματος] ἐπιτιθεύματος
Mon. B.

ἐπαινεῖς] ἐπαινῆς Ald. Bas.
ab.

ηδὲ ὅς·] Recentiores pro colo
comma habent.

τὸ δοι] τὸ σοι Ast. sec. per-
peram.

Ἀκούοις ἀν] His Ficinus addit E
si id roges.

Πῶς—λέγειν] om. Lob. Vind.
B. Vat. BM. Eorum loco Vat.
B. a m. s. καὶ habet. Pro ἔχει
in Bas. b. ἔχει legitur.

ἐγὼ] ηγὼ Ald. ἐγὼ τὸ Par. K.
εἰκόνος] εἰκόνως Vind. E.

Σὺ δέ γε, ἔφη, οἶμαι, οὐκ εἴωθας δι' εἰκόνων λέγειν.
Εἶν, εἶπον· σκώπτεις ἐμβεβληκώς με εἰς λόγον οὗτο
 488 δυσαπόδεικτον; ἄκουε δ' οὖν τῆς εἰκόνος, ἵν' ἔτι μᾶλ-
 λον ἴδης, ὡς γλίσχως εἰκάξω. οὗτῳ γὰρ χαλεπὸν τὸ
 πάθος τῶν ἐπιεικεστάτων, ὃ πρὸς τὰς πόλεις πεπόνθα-
 σιν, ὥστ' οὐδὲν ἔστιν ἐν οὐδὲν ἄλλο τοιοῦτον πεπονθός,
 ἀλλὰ δεῖ ἐκ πολλῶν αὐτὸν ἔνναγαγεῖν εἰκάζοντα καὶ

δέ γε] δ' Lob. Vind. B. Vat. BM. (quos tres Bekkerus tantum γε omittere dicit.) λέγε Vind. F. εἰκόνων] οἰκόνων Vind. F. εἰ-
 κόνος Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV. per similitudinem
 Fic.

Εἶν] om. Fic.

σκώπτεις] σκώπτει Ven. C. σκώπτη Lob. σκώπτη Vind. B. Vat. M. et, sup. εἰς, B.

δυσαπόδεικτον] δυσαπόδεικτον Ang. B.

488 γλίσχως] γλίσχως Ald. γλί-
 σχως εἰκάζων est γλιχόμενος τοῦ
 εἰκάζειν (ut Phaedon. p. 117. A. γλιχόμενος τοῦ ζῆν καὶ φειδόμε-
 νος οὐδενὸς ἔτι δύντος cl. Criton.
 pag. 53. E. γλίσχως ἐπιθυμεῖν
 ζῆν) qui tanta cupiditate compa-
 randi tenetur, ut aegre ab eo
 divelli se patiatur nec prius si-
 mile dimittat, quam cum pul-
 viscule excusserit, unde fit, ut
 vel ieuniae, exiles, anxie quaes-
 sitae, vel putidae, verbosae, au-
 dientibus taedium creantes com-
 parationes exsistant. Cf. Wytt-
 tenbachius anim. in Plut. T. I.
 p. 269. sq. Bekkeri anec. p. 32,
 8. 348, 32.

γὰρ] om. Fic.

τὸ πάθος] πάθος Par. A. Vind.
 E. Vat. H. Flor. ACV. et a m.
 pr. Ven. B. quod displicere non
 minus debet, quam si Latine di-
 catur tam *iniqua conditio optimorum est ea, quia apud civitates utuntur*. Atque ut possit articu-
 lus mora inter χαλεπὸν et πάθος
 interiecta sine ambiguitate omis-
 sus videri, quemadmodum est
 L. III. pag. 413. E. et locis ibi
 Vol. I. p. 316. citatis, tamen lib-
 brariorum potius, quam scriptoris

negligentia omissum crediderim,
 praesertim quum Faehsio teste in
 margine codicis optimi exstet.
 Nam quod Bekkerus simpliciter
 narrat in Par. A. legi γε πλῆθος
 (pro πάθος) ille τὸ πλῆθος in
 eius margine scriptum refert.
 Ceterum infra p. 491. C. extr.
 eosdem codices Par. A. Vind. E.
 Vat. H. et a m. pr. Ven. B. in
 aperto vitio consentientes vide-
 mus.

ώστε] ὥστε Vind. BEF.

οὐδὲ] οὐδὲ Vind. E.

ἐν οὐδὲν] ἐν οὐδὲν̄ Lob. Vind.
 B. et addito i altera scriptione
 F. Mon. B. Vat. BM. Par. DK.
 et a m. s. Ven. C.

ἄλλο] ἄλλω Vind. B. Mon. B.
 Par. K. Vat. M. et a m. s. Ven.
 C.

τοιοῦτον] Ita Par. A. Lob.
 Vind. EF. Vat. BHM. Ven. BC.
 Ang. B. Flor. ACRTV. τοιοῦτο
 Par. K. sec. Bekk. τοιοῦτό τι
 Vind. B. τοιοῦτο Mon. B. Flor.
 U. (Par. D.) cum editis ante Bek-
 kerum.

πεπονθός] πεπονθὼς Vind.
 F. πάθος Vind. E. In Mon. B.
 punctis notatum est.

ἀλλὰ] quare Fic.

δεῖ] δὴ Vind. F. et ante corr.
 E.

ἀπολογούμενον] ὑπεραπολο-
 γούμενον Vind. F. ὑπὲρ ἀπολ.
 Ang. B. Ficinus verba εἰκάζον-
 ται καὶ ἀπολογούμενον ὑπὲρ αὐ-
 τῶν ita convertit: comparare
 cum his denique, et cuiusque in-
 vicem explicare rationēm.

γραφεῖς] γραφῆς Astius in sec.
 et tert. ed. et Bekkerus, contra
 codices. Cf. Vol. I. p. 157, a.

ἀπολογούμενον ὑπὲρ αὐτῶν, οἷον οἱ γράφεις τραγελά-
φους καὶ τὰ τοιαῦτα μιγνύντες γράφουσι. υόδον γὰρ
τοιουτονὶ γενόμενον εἴτε πολλῶν νεῶν πέρι εἴτε μιᾶς·
ναύκληρον μεγέθει μὲν καὶ ὁώμη ὑπὲρ τοὺς ἐν τῇ νηὶ^τ
πάντας, ὑπόκωφον δὲ καὶ ὁρῶντας βραχύ τι καὶ B
γιγνώσκοντα περὶ ναυτικῶν ἔτερα τοιαῦτα, τοὺς δὲ ναύ-
τας στασιάζοντας πρὸς ἄλλήλους περὶ τῆς πνευμάτως,

μιγνύντες] μιγνύντες Vind. F.
Mon. B. Ald. Bas. ab.

νόσησον] νοητὸν Vind. E.

γὰρ] om. Fic.

τοιουτονὶ] τοιοῦτον Vind. F.
Ang. B. τούτονὶ Vind. E. Vat.
H.

μιᾶς] μιᾶς, Lob. Vind. B. Vulgo post μιᾶς nulla interpunctione utuntur et post ναύκληρον comma ponunt, quasi πολλῶν νεῶν πέρι ναύκληρος dici possit eodem sensu, quo ναύκληρος πολλῶν νεῶν, quemadmodum ἀρετῆς πέρι διδασκάλοντο Plato dicit Menon. p. 90. B. εἶδος λόγων πέρι Civ. L. III. p. 392. A. et alia, quae, etsi summo sensu salvo carere praepositione possunt, nexus tamen laxiorem minusque necessarium, quam qui solo genitivo indicatur, significant et fere additum verbum habent, quo praepositio aequa atque ad nomen respiciat. Sed dominum inter et rem possessam nexus intercedit vel maxime necessarius, eoque minus hic periphrasi isti locus erat, quod plurimum ille an unius navis dominus esset nihil referre diceretur, quae enuntiatio simplicem rationis ipsius, cui genitus inservit, declarationem postulabat. Neque vero ad verbum respicere praepositio potest, quum γίγνεσθαι νεῶν πέρι ναύ-
κληρον non magis, quam εἰναι probabile sit, τοιοῦτον γίγνεσθαι autem sensum prorsus alienum exhibeat et dominum cogitari iubeat tales erga naues sese praestantem, qualem sequentia docent. Accedit, quod ad universam pluribus scilicet partibus

constitutram similitudinem potius, quam ad unam eius partem nec ipsam gravissimam advertendus Adimantus erat, qui sensus nostra interpunctione efficitur: Fac huiuscemodi aliiquid de multis navibus, sive de una mavis; accidisse: dominum robore omnes superare nautas etc. Atque ita fere finita comparatione infra E. τοιού-
των δὴ περὶ τὰς ναῦς γιγνομένων dicit: quum talia navibus accidunt. Initio vero comparationis genitivo utitur, quia nihil aliud nisi fines, intra quos γενόμενον illud versetur, describere et de navibus sermonem futurum demonstrare vult: exposita re proprius idem ad naues admovet ipsaque eo affici accusativo significat. Quod discrimen quum ex utriusque casus natura prodit, tum loco Leg. L. VIII. pag. 869. E. confirmatur: καὶ τὰ μὲν δὴ βίαιά τε καὶ ἀκούσια καὶ κατὰ τὸν θυμὸν γιγνόμενα περὶ φόνον μετρίως εἰρήσθω· τὰ δὲ περὶ τὰ ἐκούσια καὶ κατ’ ἀδικίαν πᾶσαν γιγνόμενα τούτων πέρι καὶ ἐπιβούλης δι’ ἡττας ἡδονῶν τε καὶ ἐπιθυμιῶν καὶ φθόνων, ταῦτα μετ’ ἐκεῖνα ἡμῖν λεπτέον. Hic eandem rem primum accusativo (φόνον), deinde, quia idem casus ad eius rei partem (τὰ ἐκούσια) adhibitus est, genitivo (τούτων) utpote latius quid designante positam videmus. Conf. Bernhardy synt. p. 261. et 262. et quae ex Sturzii disputatione Schaeferus in indice Apollonii refert p. 672.

πάντας] ἄπαντας Vind. E.
(Ven. B. Flor. C.) cum editionibus ante Bekkerum.

έκαστον οιόμενον δεῖν κυβερνᾶν, μήτε μαθόντα πώποτε τὴν τέχνην μήτε ἔχοντα ἀποδεῖξαι διδάσκαλον ἐαυτοῦ μηδὲ χρόνον, ἐν ᾧ ἐμάνθανε, πρὸς δὲ τούτοις φάσκοντας μηδὲ διδακτὸν εἶναι, ἀλλὰ καὶ τὸν λέγοντα, ὡς διδακτὸν, ἐτοίμους κατατέμνειν, αὐτοὺς δὲ αὐτῷ ἀεὶ τῷ ναυαλήρῳ περικεχύσθαι δεομένους καὶ πάντα ποιοῦντας, ὅπως ἀν σφίσι τὸ πηδάλιον ἐπιτρέψῃ, ἐνίοτε δ', ἀν μὴ πείθωσιν, ἀλλὰ ἄλλοι μᾶλλον, τοὺς μὲν ἄλλους ἢ ἀποπιννύντας ἢ ἐκβάλλοντας ἐκ τῆς νεώς, τὸν δὲ γενναῖον

B μήτε ἔχοντα] μήτ' ἔχοντα Flor.

T. ἐαυτοῦ] ἐαυτῶν Bas. b.

ἐμάνθανε] ἐμάνθανεν Vind.

F. ὡς διδακτὸν] ὡς δυνατὸν Par.

K. ἐτοίμους] ἐτοίμου Bas. b.

C ἀεὶ] om. Fic.

περικεχύσθαι] περὶκεχύσθαι Ald.

ἀν σφίσι] ἀν σφίσι Bekkerus, Astius in tert. et Stallb. Sed oppositi his alii sunt.

ἐπιτρέψῃ] ἐπιστρέψῃ Bas. b. Reliquae. editiones ante secundam Astii cum Par. D. Mon. B. Flor. U. ἐπιτρέψοι habent. Cf. Engelhardt ad Lach. p. 15. sq. δ'] δὲ Vind. F. om. Ang. B.

ἄλλα] ἄλλα Vind. B. ἄλλα Bas. b. et scholiastes in lemmate apud Ruhnkenium et Bekkerum: ἄλλα ἄλλοι] ἄλλα μᾶλλον πείθωσιν, ἀπὸ κοινοῦ.

ἀποπιννύντας] ἀποπιννύντας Vind. F. Ang. B.

ἐκβάλλοντας] ἐκβαλόντας Par. K. sec. Bekk. Vat. H. Flor. AC.

νεώς] νέως Vind. E. et paulo post.

μανδραγόρα] μανδραγόρα Ald. De mandragora cf. Wyttenbachius anim. in Plut. T. I. p. 179. et Sprengelius ad Dioscoridem L. III. c. 76.

ἢ μέθη] ἢ μέθη Vind. F.

ἢ τινι ἄλλῳ] om. Fic.

συμποδίσαντας] ξυμπ. Flor.

T. Stallb.

ἐνοῦσι] ἐνοῦσιν Vind. B.

πλεῖν ὡς] πλειόνως Bas. b. πλεῖον ὡς Lob. Vind. BF. Mon. B. Vat. BM. Ven. BC. Flor. U. πλὴν ὡς Vind. E. Vat. H. Flor. ACV. πλεῖν εἰς Vind. F. Ang. B. Flor. R.

τὸ εἰνὸς] τοεικὸς Lob.

τοὺς τοιούτους] scil. πλεῖν. In Vind. B: legitur τοῦς τοιούτους, quod etiam Stephanus in margine pro v. l. posuit. Ficinus haec inde a πλεῖν, pro quo πλὴν legisse videtur, sic interpretatus est: sed ita ducentes, ut huiusmodi homines ducere verisimile est.

ξυλλαμβάνειν] συλλ. Lob. Vind. D

B. ξυλλαμβ. Vind. F.

ἢ] ἢ Vind. E.

ἀρξοντες] Ita Par. A. Vind. EF. Ven. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. ἀρξωσιν reliqui et editiones ante Astii sec. Cf. Vol. I. p. 371, a.

πέρι] Eius loco lacuna est in Vind. F. περὶ Vind. BE.

μηδ'] μηδὲ Vind. F.

ἐπαιῶντες] Ita Par. A. Vind. E. et a m. pr. F. Vat. BH. Ven. BC. Flor. ACTV. Reliqui codices et editiones omnes ἐπαιῶντες (Ald. Bas. ab. ἐπαιώντας) habent, quod per syntaxin necessarium scribarum errore, quem p. 487. C. a quibusdam commis-

ναύκληρον μανδραγόρα ἥ μέθη ἥ τινι ἄλλῳ συμποδίσαντας τῆς νεώς ἀρχειν χρωμένους τοῖς ἐνοῦσι, καὶ πίνοντάς τε καὶ εὐωχούμενους πλεῖν, ὡς τὸ εἰκὸς τοὺς τοιούτους, πρὸς δὲ τούτοις ἐπαινοῦντας, ναυτικὸν μὲν παλοῦντας καὶ κυβερνητικὸν καὶ ἐπιστάμενον τὰ κατὰ D ναῦν ὃς ἀν ἔνναμβάνειν δεινὸς ἥ, ὅπως ἀρξουσιν 471 ἥ πειθοντες ἥ βιαζόμενοι τὸν ναύκληρον, τὸν δὲ μὴ τοιοῦτον φέγοντας ὡς ἄχρηστον, τοῦ δὲ ἀληθινοῦ κυβερνήτου πέρι μηδ' ἐπαιτοντες, ὅτι ἀνάγκη αὐτῷ τὴν

sum vidimus, in optimis codicibus depravatum videri poterat, nisi infra E. oīōμενοι pro vulgato oīōμενος in omnibus libris manu scriptis (unius Par. D. in margine oīōμενον legitur, in Mon. B. εīōμενοι vitio illi familiari scriptum est) et in Bas. b. extaret idque nulla ratione librariis imputari posset. Nam quod Stallbaumius in sec. ed. „re diligenter“ (in prima enim non quidem ἐπαιτοντες, sed consensu codicum permotus oīōμενοi receperat) errorem scribendi natum exinde arbitratur, „quod librarii, praecedens illud ὅπως ἀρξουσιν ἥ πειθοντες ἥ βιαζόμενοι in animo retinentes, subjecti, quod vocant, diversitatem non satis diligenter“ animadverterint, unde omnes oīōμενοi, multi etiam ἐπαιτοντες scripserint, quis illos credat, quem proximum φέγοντας intactum reliquissent, primum in ἐπαιτοντας nonnullos eosque diligentissimos, deinde longo intervallo omnes in oīōμενος offendisse? Contra si Plato ἐπαιτοντες scripserat et oīōμενοi, fieri vix poterat, quin prius vitiosum quibusdam et in accusativum mutandum videretur: alterum ipsa distantia tutum erat. Sed quae a rebus externis petuntur veritatis indicia, ea nostrae lectioni supersunt. Ad sensum vero dura quidem est nominativi successio, sed non sine exemplis. Phaedr. p. 241. D. quum Socrates dixisset ἀλλ' ἥδη οἱ τέλος

ἐχέτω δ· λόγος, Phaedrus καίτοι φύην γε, inquit, μεσοῦν αὐτὸν καὶ ἐρεῖν τὰ ἵσα περὶ τοῦ μὴ ἔρωντος, ὃς δεῖ ἐπείνῳ χροῖσεσθαι μᾶλλον, λέγων ὅσα αὐτὸν ἔχει ἀγαθά. quasi in proximo non φύην μεσοῦν αὐτὸν, sed ἐδόκει μοι μεσοῦν vel simile quid pronuntiasset. Ad eum locum Heindorfius alium adscripsit per eandem enallagen etiam ambiguum factum, Leg. L. X. p. 885. C: ἀξιοῦμεν δῆ, παθάπερ νῦντις ἡξιώκατε περὶ νόμων, ποὺν ἀπειλεῖν ήμιν συληρῶς νυμᾶς, πρότερον ἐπιχειρεῖν πειθεῖν καὶ διδάσκειν, ὡς εἰσὶ θεοὶ, τεκμήρια λέγοντες ίνανά. quorum extrema ita conformata sunt, ut initio non hos, qui loquuntur, sese aliquid velle demonstrasse, sed illis, quos alloquuntur, idem iniunctum esse credas per imperativum πειθάσθε. Similiter nostro loco periodi praelongae eoque facilius mutationem recipientis finis ita institui potuisse videtur, ut si principium νοείσθω οἱ τοιούτοι γενόμενον fuisset. Ac nescio, an ipsi nominativi illi, quos Stallbaumius commemorat, quibus perperam diversos aliquos ab hisce ignorantibus et opinantibus significari statuit, substituendi casus eiusdem occasionem non librariis, sed scriptori dederint. Qui si etiam φέγοντες posuisset, ne excusatione quidem egeret: nunc φέγοντας propter ἐπαινοῦντας tenuit, mox velut impatiens tenoris diu servati paullisper de via deflexit.

ἐπιμέλειαν ποιεῖσθαι ἐνιαυτοῦ καὶ ὡρῶν καὶ οὐρανοῦ
καὶ ἄστρων καὶ πνευμάτων καὶ πάντων τῶν τῇ τέχνῃ
προσηκόντων, εἰ μέλλει τῷ ὅντι νεώς ἀρχικὸς ἔσεσθαι,
E ὅπως δὲ κυβερνήσει, ἐάν τέ τινες βούλωνται ἐάν τε
μή, μήτε τέχνην τούτου μήτε μελέτην οἰόμενοι δυνατὸν
εἶναι λαβεῖν ἄμα καὶ τὴν κυβερνητικήν. τοιούτων δὴ
περὶ τὰς ναῦς γιγνομένων τὸν ὡς ἀληθῶς κυβερνητικὸν
οὐχ ἥγη ἀν τῷ ὅντι μετεωροσκόπον τε καὶ ἀδολέσκην
489 καὶ ἀχρηστόν σφισι καλεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἐν ταῖς οὕτῳ
κατεσκευασμέναις ναυσὶ πλωτήρων; Καὶ μάλα, ἔφη δὲ
Ἄδείμαντος. Οὐ δὴ, ἦν δὲ ἐγὼ, οἷμαι δεῖσθαι σε ἔξε-

ὡρῶν] ὁρῶν Vind. F. ὡραι
anni tempestates sunt, quarum
suum cuique ingenium est, quem
admodum et anno ipsi, qui pro-
pterea ab eis distinguitur; ne quis
ὡρῶν per abundantiam aut per
ἕν διὰ δυοῖν adiectum aut de sin-
gulorum dierum partibus cum
Schleiermachero et Stallbaumio
dictum putet.

τῇ] om. Vind. F. Ang. B. Flor.
R.

μέλλει] μέλλοι Vind. BE. Flor.
T.

τῷ ὅντι νεώς] τωόντι νεώς
Vind. E.

δὲ] τε Lob. Vind. B. Vat. BM.
Ven. B. et in sec. ed. Stallbaum-
mius Astii coniecturam in tert.
propositam secutus, non animad-
vertens hoc, quod verbis ὅπως
κυβερνήσει, ἐάν τέ τινες βού-
λωνται ἐάν τε μή continentur, mi-
nus etiam artis exercitationisve
rem atque ipsum illud, quo ars
gubernatoria constet, istis videri,
quam quae in proximis vero gu-
bernatori necessaria esse demon-
stratum est, ideoque recte, post-
quam ne illa quidem necessaria
intelligere dicti sunt, ita conti-
nuāri orationem: ut vero guber-
net, seu qui velint seu nolint, id
neque arte neque exercitatione
effici putant, quarum qui compos-
factus sit, simul gubernatoriam
artem teneat. Et tamen nulla
est regendi ars, quin regendorum

assensum dissensionemque nihil
curans id unice respiciat, quod
eis commodum et utile est. Quae
Platonis sententia pluribus expli-
cata legitur Polit. p. 293. qui lo-
cus nostrum, praecipue verba
ἐάν τέ τινες βούλωνται ἐάν τε
μή, egregie illustrans ab inter-
pretibus negligi non debebat.

κυβερνήσει] κυβερνήσῃ Lob.
Vind. BEF. Mon. B. Par. DK.
sec. Bekk. Ang. B. Vat. HM.
Flor. ACRTUV. Tantus consen-
sus dubitationem de reliquis qua-
tuor codicibus Bekkeri iniicit.
Nihilo minus coniunctivus ferri
nequit, quum ὅπως ad τούτου
spectans modum et rationem poti-
tius, quam finem significet. Cf.
Vol. I. p. 274, a.

βούλωνται] βούλευονται Par. E
DK. sec. Bekk.

οἴομενοι] Ita Bas. b. Ast. sec.
Stallb. pr. et omnes codices. Cf.
quae supra ad ἐπαλοντες dicta
sunt. οἴομένοις Ald. Bas. a.
Steph. Ast. pr. tert. Bekk. Stall-
baum. sec.

τοιούτων] τοιοῦτον Vind. F.

δὴ περὶ τὰς ναῦς γιγνομένων] om. Ang. B. δὴ π. τ. ν. γιγνόμε-
νον Vind. F.

ὡς] om. Vind. E. Vat. H. et
a m. pr. Ven. B.

ἥγη] ἥγοι Ang. B. Flor. R.
ἥγει, sup. ḥ, Vind. F. ἥγει Ast.
sec. tert. Bekk. Stallb.

ταξιομένην τὴν εἰκόνα ἰδεῖν, ὅτι ταῖς πόλεσι πρὸς τοὺς ἀληθινοὺς φιλοσόφους τὴν διάθεσιν ἔοικεν, ἀλλὰ μανθάνειν δὲ λέγω. Καὶ μάλ’, ἔφη. Πρῶτον μὲν τοίνυν ἐκεῖνον τὸν θαυμάζοντα, ὅτι οἱ φιλόσοφοι οὐ τιμῶνται ἐν ταῖς πόλεσι, δίδασκέ τε τὴν εἰκόνα καὶ πειρῶ πείθειν, ὅτι πολὺ ἀν θαυμαστότερον ἦν, εἰ ἐτιμᾶντο. Β' Ἀλλὰ διδάξω, ἔφη. Καὶ ὅτι τοίνυν τἀληθῆ λέγεις, ὡς ἄχροντοι τοῖς πολλοῖς οἱ ἐπιεικέστατοι τῶν ἐν φιλοσοφίᾳ· τῆς μέντοι ἀχροντίας τοὺς μὴ χρωμένους κέλενε αἰτιᾶσθαι, ἀλλὰ μὴ τοὺς ἐπιεικεῖς. οὐ γὰρ ἔχει φύσιν αὐβερνήτην ναυτῶν δεῖσθαι ἄρχεσθαι ὑψῷ αὐτοῦ, οὐδὲ

τῷ ὄντι] τωντι Vind. E. τῷ ὄντι Mon. B.
μετεωροσκόπον τε] μετεωροσκόποντε Ald.

489 πατεσιενασμέναις] πατεσιενασμέναις Vat. H.
μάλα] μάλ' Vind. F. Mon. B.
Ang. B. Flor. R. maxime quidem
Fic.

Οὐ] Ita Vind. F. a m. pr.
οὐτω a m. s.
ἢν δὲ ἔγω] post οἶμαι Vind.
E.

δεῖσθαι σε] δ. σοι Vind. F. σε
δ. Par. K.

τὴν] διὰ τὴν Ven. B. Vind.
EF. Flor. AC. — Ficinus haec
Οὐ δὴ οἶμαι etc. ita explicuit:
*Haudquam opus esse arbitror,
ut tibi latius explicem, quemadmodum ad propositae comparationis imaginem ita in civitatibus affecti sunt adversus veros philosophos cives, ut in eiusmodi navibus ad verum gubernatorem nautae: sed intelligere te existimo.*

μανθάνειν] μανθάνεις Lob.
Vind. B. Vat. M. λείπει χοὴ a m.
s. sup. habet Vind. F.

μάλ'] μάλα Vind. EF. Flor.
ACRTUV. Stallb.

διδασκέ τε] διδάσκεται Vind.
F. a m. pr.

B. λέγεις] λέγειν Vind. E. Vat.
H. Flor. AC. et, sup. σ, Ven. B.

Idem legit Ficinus: *Adiicias et hoc praeterea, vera loqui eos, qui dicunt. Sed ὅτι cum infinitivo stare h. l. non potest. Neque vero λέγεις quum praecedentium caussa, tum ob sequens οὐ λενε stare posse videtur, ideoque λέγει a Stephano in margine commentatum primum ab Astio in sec. deinde in Par. D. inventum a Bekkero et Stallbaumio receptum est; quorum nullum in his, quae infra D. leguntur, καὶ ἔγω συνεχώρησα ἀληθῆ σε λέγειν, offendisse miror, quae haud dubie ad illa p. 487. E: ἀκούοις ἀν, ὅτι ἔμοιγε φαίνονται τἀληθῆ λέγειν referenda, si Adimanti personam ubique ab eo, quem loquentem facit, accurate distingui volumus, pro vitiatis habere et, id quod Schleiermacherum non fugit, σε in γε mutare debemus. Sed distinguendi necessitas nulla erat, quum Adimantus illius sententiam ita retulisset, ut ipse minime alienus ab ea videretur. Itaque Socrates non irridicule praeter expectationem persona mutata animum eius perspectum sibi significans dicas illi, inquit, verum te dicere inutiles vulgo optimos eorum, qui philosophantur, dicentem.*

ὑψῷ αὐτοῦ] ὑπ' αὐτῶν Par.
DK. ὑπ' αὐτοῦ Vind. E. Mon. B.
(Vat. H. Flor. ACUV.) cum editis ante Bekkerum.

τοὺς σοφοὺς ἐπὶ τὰς τῶν πλουσίων θύρας ἵέναι, ἀλλ᾽ ὁ τοῦτο νομψευσάμενος ἐψεύσατο, τὸ δὲ ἀληθὲς πέψυνεν, ἐάν τε πλούσιος ἐάν τε πένης πάμνη, ἀναγκαῖον
C εἶναι ἐπὶ λατρῶν θύρας ἵέναι, καὶ πάντα τὸν ἄρχεσθαι δεόμενον ἐπὶ τὰς τοῦ ἄρχειν δυναμένου, οὐ τὸν ἄρχοντα δεῖσθαι τῶν ἀρχομένων ἄρχεσθαι, οὗ ἂν τῇ ἀληθείᾳ τι ὄφελος ἦ. ἀλλὰ τοὺς νῦν πολιτικοὺς ἄρχοντας ἀπειπάζων οἷς ἄρτι ἐλέγομεν ναύταις οὐχ ἀμαρτήσει, καὶ τοὺς ὑπὸ τούτων ἀρχήστους λεγομένους καὶ μετεωρολέσχας τοῖς ὡς ἀληθῶς κυβερνήταις. Ὁρθότατα, ἔφη. Ἐκ τε τοίνυν τούτων καὶ ἐν τούτοις οὐ δύσκολον εἴδοκεν τὸ βέλτιστον ἐπιτήδευμα ὑπὸ τῶν τάναντία ἐπι-

ἐπὶ] εἰς Lob. Vind. B. Vat. M.
 πλουσίων] πλησίον Vat. B.

ὁ τοῦτο νομψευσάμενος] qui
 hoc primus iactavit Fic. Pro
 τοῦτο Vat. B. et Lob. τούτου
 cum circumflexo super acuto et
 o super ultima habent. Verbum
 νομψεύεσθαι, quod iam ad
 L. III. pag. 436. D. monendum
 erat, Timaeus in lexicon rétulit
 p. 154: *κενόμαψενται πεπιθάνενται*. ubi cf. Ruhnkenius. In
 scholio ad nostrum locum Eubulus
 nescio quis cum Socrate colloquens
 τοὺς σοφοὺς ὅρᾶν ἐπὶ¹
 τὰς τῶν πλουσίων θύρας πα-
 θεύδοντας ideoque malle se di-
 vitem esse, quam sapientem di-
 xisse dicitur. Mihi Plato Simoni-
 dem potius tetigisse videtur,
 quem Aristoteles Rhetor. L. II.
 c. 16. Hieronis uxori eadem fere
 respondisse tradit, quo divitias
 prae sapientia expetendas esse
 doceret. Cf. Civ. L. I. p. 335.
 E.

πάμνη] πάμνης Vind. E.

C λέναι] εἶναι Vind. F. Ang. B.

ναύταις] αὐταῖς Vind. F. a.
 m. pr. In Mon. B. ν a m. sec.
 int. vers. additum.

ἀμαρτήσει] Ita Par. A. Vind.
 EF. Ven. C. Ang. B. Vat. H.
 Flor. ACRV. ἀμαρτήσεις Lob.

Vind. B. Vat. BM. Ven. B. ἀ-
 μαρτήσῃ (Par. DK. Flor. TU.)
 Mon. B. Ald. Bas. ab. Steph.

μετεωρολέσχας] μετωρ. Ald.
 ὡς] om. Vind. F. Ang. B.
 Flor. R.

Ὦρθότατα] ὁρθώτατα Vind.
 F.

βέλτιστον] μέγιστον Vind. B.
 Vat. M.

ἐπιτηδευόντων.] ἐπιτηδευόν-
 των, recentiores.

πολὺ] πολλὴ Par. K. D

γίγνεται] γίν. Vind. BE.

φιλοσοφίᾳ] Ita Bekkerus se-
 cundum Par. ADK. (tac. Bipont.)
 Ven. C. Vat. H. quibus accedunt
 Mon. B. Vind. EF. Astius in tert.
 et Stallbaumius secundum Flor.
 UV. pro φιλοσοφίᾳ, quae reli-
 quorum et priorum editionum le-
 ctio non deterior est, scripserunt.
 Ang. B. φιλοσοφίαν habet.

τὰ τοιαῦτα] τοιαῦται Bas. b.
 ταῦτα Vind. E. τὰ τοιαῦτα ad-
 versus τάναντία positum.

φῆς] φῆς Vind. F. Cf. Vol. I.
 p. 42, a.

δὲ] δ' Vind. BE.

ἀληθῆ] ἀληθῆς Lob. Vind. BF.
 Flor. R. τάληθές Vat. B. Ven.

τηδενόντων· πολὺ δὲ μεγίστη καὶ ἴσχυροτάτη διαβολὴ D γίγνεται φιλοσοφίᾳ διὰ τὸς τὰ τοιαῦτα φάσκοντας ἐπιτηδεύειν, οὓς δὴ σὺ φῆς τὸν ἔγκαλοῦντα τῇ φιλοσοφίᾳ λέγειν, ὡς παμπόνηροι οἱ πλεῖστοι τῶν ἰόντων ἐπ' αὐτὴν, οἱ δὲ ἐπιεικέστατοι ἀχρηστοί, καὶ ἐγὼ συνεχώρησα ἀληθῆ σε λέγειν. η̄ γάρ; Ναί. Οὐκοῦν τῆς μὲν τῶν ἐπιεικῶν ἀχρηστίας τὴν αἰτίαν διεληλύθαμεν; Καὶ μάλα. Τῆς δὲ τῶν πολλῶν πονηρίας τὴν ἀνάγκην βούλει τὸ μετὰ τοῦτο διέλθωμεν, καὶ ὅτι οὐδὲ τούτου φιλοσοφίᾳ αἰτίᾳ, ἀν δυνώμεθα, πειραθῶμεν δεῖξαι; Πάνυ μὲν οὖν. E Ἀκούωμεν δὴ καὶ λέγωμεν ἐκεῖθεν ἀναμνησθέντες, ὅθεν διῆμεν τὴν φύσιν, οἷον ἀνάγκη φῦναι τὸν παλόν τε

C. quibus perperam Vind. B. ad-
dit Bekkerus.

σε] τε Lob. Vind. BF. Vat.
BM. Ven. C. Par. DK. sec. Bekk.
γε Mon. B. Flor. U. V. ad λέ-
γεις B.

η̄] η̄ Vind. F.

αἰτίαν] ἐτίαν Mon. B. a m.
pr.

διεληλύθαμεν] ἐληλύθαμεν
Vat. H. Flor. AV.

Τῆς δὲ] τῆςδε Ald. Tῆςδε Bas.
ab.

τὸ μετὰ τοῦτο] τομετατοῦτο
Lob. Vind. BE. Mon. B. Ald. τὸ
μετατοῦτο Vind. F. Bas. ab.

διέλθομεν] διέλθομεν Ald.
Bas. ab.

τούτους] τούτους cum ων su-
per ovs Vat. B.

E Ἀκούωμεν δὴ πολὺ λέγωμεν] ἀ-
νούομεν δὴ λέγομεν Vind. F. Per-
gamum ad haec Fic.

διῆμεν] διήειμεν editi ante
Bekkerum, quam formam (διῆει-
μεν) h. l. Lob. Vind. B. Vat. BM.
L. I. p. 328. B. (η̄ειμεν) paullo
plures, sed ne ibi quidem optimi,
Epist. VII. p. 345. A. (διεξῆει-
μεν) unus Par. b. Phaedonis vero
p. 59. D. (εἰσηειμεν vel η̄ειμεν)
Augustano excepto omnes exhibent.
Reliquis locis, quos Matthiae gramm. pag. 417. indicavit
(Civ. X. 609. B. διῆμεν. Prot.
316. A. προσῆμεν. 362. Euthyd.

304. B. ἀπῆμεν.) nulla est de contracta forma librorum dissen-
sio, nisi quod Clarkianus in fine Protagorae ἀπῆμεν sic ut Phae-
don. l. c. Augustanus et Civ. L. I.
Wind. E. η̄ιμεν habet. Platonis
igitur codices non obstare vide-
ntur, quo minus Elmsleii a Mat-
thiae l. c. relata diphthongi
improbationem in hac quidem per-
sona probemus. Et Bekkerus quo-
que in Phaedone εἰσῆμεν edidit.
Ad interpunctionem quod attinet,
comma a plerisque editoribus (u-
nus Bekkerus, quem in pr. ed.
Stallbaumius ut fere in omnibus
huc spectantibus imitatur, verba
ἀνούομεν δὴ usque ad ἐσόμενον
sine ulla incisione scripsit) ante
τὴν φύσιν pōsitum post ea verba
collocavi, quia cum sequentibus
construi sine molestissima tauto-
logia nequeunt et haud dubie ad
praecedentia ἀναμνησθέντες et
διῆμεν, quin etiam ad ἀνούομεν
et λέγωμεν referri debent, hoc
sensu: audiamus igitur et dicam-
mus illinc memoria repetentes,
ubi exposuimus naturam, qua
praeditus esse debeat vir bonus
et honestus futurus. Nam ὅθεν
per attractionem pro ὅπον pōsi-
tum videtur. Denique inter διῆ-
μεν et τὴν Vind. F. η̄σται vel
η̄σται superscriptum habet, quod
quid sibi velit non video.

φῦναι] φῦναι Lob. Vind. E.

490 πάγαθὸν ἐσόμενον. ἡγεῖτο δ' αὐτῷ, εἰ νῷ ἔχεις, πρῶτον μὲν ἀλήθεια, ἢν διώκειν αὐτὸν πάντως καὶ πάντη ἔδει, ἢ ἀλαζόνι ὅντι μηδαμῆ μετεῖναι φιλοσοφίας ἀληθινῆς. Ἡν γὰρ οὕτω λεγόμενον. Οὐκοῦν ἐν μὲν τοῦτο σφόδρᾳ οὕτω παρὰ δόξαν τοῖς νῦν δοκουμένοις περὶ αὐτοῦ; Καὶ μάλα, ἔφη. Ἄρ' οὖν δὴ οὐ μετρίως ἀπολογησόμεθα, ὅτι πρὸς τὸ ὃν πεφυκὼς εἴη ἀμιλλᾶσθαι ὁ γε ὅντως φιλομαθῆς καὶ οὐκ ἐπιμένοι ἐπὶ τοῖς δοξα-

πάγαθὸν] πάγ. editi ante Ast.
καὶ αγαθὸν Vind. F.

490 ἡγεῖτο] ἡγεῖτω Lob. ἡγεῖ τῷ
Vat. H.
δ'] δὲ Vind. EF.
αὐτῷ] αὐτῶν Vind. EF. Ang.
B. margo Flor. A. αὐτοῦ Mon.
B.

νῷ] ἐν φῳ margo Flor. A. ἐν νῷ Flor. RT. Vind. EF. Ang. B. et int. vers. a m. s. adscripta praepositione Vind. B. Mon. B. Eadem a Stephano in m. commendatam Astius ne in tertia quidem ed. omittendam putavit. Vulgatam et ratio et linguae usus tuetur. Quemadmodum in dictiōnibus νῷ λαβεῖν (Herodot. III. 143. V. 91. VIII. 19. cl. III. 41. 51. ubi codices quidam ἐν addunt) φρενὶ λαβεῖν (Herod. VIII. 10. ubi item sunt qui ἐν additum habeant) λόγῳ λαβεῖν (Leg. I. 638. C. et saepe. cf. Boeckhius ad Min. p. 124.) λογισμῷ λαβεῖν (Parmen. 130. A.) ita in hac dative instrumenti est, quo perceptum animo, τὸ εἰλημένον, quo minus excidat, retinetur. Atque ita Euthyphr. p. 2. B. quem locum etiam Bekkerus in comm. conferri iussit, εἰ τινα νῷ ἔχεις Πιττέα Μέλιτον vel Μέλιτον omnes libri uno Ven. B. excepto pro vulgato εἰ τιν' ἐν νῷ ἔχεις habent, et Herodot. V. 92. cuius Stallbaumius mentionem fecit, Περιανδρος δὲ συνιεῖς τὸ ποιηθὲν καὶ νόῳ λογων, ὡς οἱ ὑπετίθετο Θρασύβουλος τοὺς ὑπειρόχους τῶν ἀστῶν φονεῦσαι constans et certa lectio est. Sed ubi infinitivus sequitur, ut supra

L. I. pag. 344. D. (ἐν νῷ εἰχεν ἀπιέναι) II. 362. D. (ἔγῳ μὲν ἐν νῷ εἰχόν τι λέγειν) praespositio abesse nequit.

πάντως] πάντων Lob.
ἔδει] ἔδη Mon. B. a m. pr.
debet Fic.

ἀλαζόνι ὅντι] ἀλαζόνιόντι Lob. Timaeus lex. pag. 21: ἀλαζών· φενδῆς. Cf. Ruhnkenius et synag. Bekkeri anecd. p. 374, 20: Πλάτων δὲ ἀλαζόσιν ἀντὶ τοῦ φενύσταις.

μηδαμῆ] μηδαμῆ editi ante Bekkerum.

ἐν] ἐν Vind. F. a m. pr.
μὲν] μὲν οὖν Par. K. secundum Bekk.

οὕτω] ante σφόδρᾳ Lob. Vind. B. Vat. BM. male. οὕτω ex Adimanti verbis repetitum et praeceps dictum est pro οὕτω λεγόμενον ἦν.

παρὰ δόξαν] παραδόξαν Vind. E. Quod opinionibus opinionem tribuit, cui id repugnet, quod ipsi dixerint, negligentius fortasse factum est, sed minime tale, ut corruptelae suspicionem iniicere possit, non magis, quam illud οὕτω, in quo Stallbaumius haesit. παρὰ δόξαν idem significat, quod ἐναντίον. Conf. L. VII. p. 534. A.

αὐτοῦ;] αὐτὸν. Lob. Vind. B. Vat. M. αὐτοῦ. editi ante Bekkerum.

μάλα] μάλ' Vind. F. Ang. B.
Ἄρ'] ἄρ' Vind. F.
ἀπολογησόμεθα] ἀπολογηθησόμεθα Par. K. Astius in sec. offensus optativis sequentibus ἀπελογησάμεθα scripsit, quod si in

ξομένοις εἶναι πολλοῖς ἐκάστοις, ἀλλ' οἱ καὶ οὐκ ἀμ- B
βιλύνοιτο οὐδ' ἀπολήγοι τοῦ ἔρωτος, ποὶν αὐτοῦ δὲ ἔστιν
ἐκάστου τῆς φύσεως ἄψασθαι, ὡς προσήκει ψυχῆς ἐφά-
πτεσθαι τοῦ τοιούτου· προσήκει δὲ ἔνγγενει· ὡς πλη-
σιάσας καὶ μιγεὶς τῷ ὅντι ὄντως γεννήσας νοῦν καὶ ἀλή-
θειαν γνοίη τε καὶ ἀληθῶς ξώη καὶ τρέφοιτο καὶ οὗτοι
λήγοι ὡδῖνος, ποὶν δ' οὐ; Ως οἶόν τ', ἔφη, μετριάτατα.
Τί οὖν; τούτῳ τι μετέσται ψεῦδος ἀγαπᾶν, η̄ πᾶν τού-

codicibus esset, probari posset. Quamquam enim Socrates tum, quum primum philosophi naturam describeret, non sui defendendi caussa, quippe nondum a quoquā impugnatus, eum id, quod est, non posse non amare dixerat, postea tamen, quum esset ob vehementiorem veri amorem philosopho contra omnium sententiam attributum reprehensus, eadem illa descriptione ad sese defendendum usurpus iam egisse caussam suam asseverare poterat. Sed libri omnes in futuro consentiunt, et vere futura erat, nondum praeterita, defensio. Itaque recte habet ἀπολογησόμεθα. Quoniam vero id, quo constituta es- set defensio, iam dictum, et Socratis intererat hoc significare, nihil novi aut inauditi ad illud παραδόξον tuendum requiri, sed sua sponte id ex ante dictis et concessis effici, pro indicativis, quos futurum sequi oportebat, optativos posuit, εἴη et ἐπιμένοι, eundemque modum in reliquis te- nuit, quae quamvis totidem verbi supra nondum dicta, argumen- to tamen eis, quae dicta erant, adeo coniuncta sunt, ut ea quoque iam dixisse sibi vide- retur.

πεφυνώς] πεφυνός a. m. pr. Vind. B. et Mon. B. habebant; idem a. m. s. in Vind. E. scri- ptum est.

ὄντως] οὖτως Lob. Vat. M. Par. DK. sec. Bekk. οὖτω Vind. B. Mon. B. Par. K. sec. Bip.

ἐπιμένοι] ἐπιμένει Vind. F. Ang. B. Flor. R. Ven. B. Par. K.

δοξαζομένοις] δοξαμένοι Bas.

ab.

ἀμβιλύνοιτο] Cf. Vol. I. p. 427, B
a.

οὐδ'] οὐδὲ Vind. E. Flor. ACTV. et Themistius Or. XXI. p. 256. B. ubi verba οἱ καὶ us- que ad ἔρωτος de alia re usur- pavit.

ὁ ἔστιν] ὁ ἔστιν editi ante Bekkerum.

προσήκει] προσήκοι Vat. H. cum editionibus ante Bekkerianam.

τοιούτον·] τοιούτον. Ald. Bas. ab. Steph. τοιούτον — Ast. pr. τοιούτον, Ast. sec. τοιούτον; Bekk. Ast. tert. Stallb. qui omnes infra post ποὶν δ' οὐ punctum habent.

ἔνγγενει] συγγ. Vind. E. Flor. ACV.

τῷ ὅντι] τωάντι Vind. E. In Ven. B. editisque ante Bekkerum ὅντι post ὄντως legitur.

γεννήσας] γεννήσασι Par. DK. sec. Bip.

γνοίη τε] γνοίη τε ἀν Mon. B. Flor. U.

ἀληθῶς] ὡς ἀλ. Vind. E.

ξώη] ξ. τε Vind. F. Ang. B.

οὖτω] οὖτω δὴ iidem et Flor. R.

λήγοι] λήγει Lob. Vind. B.

Vat. BM. λήγη Vind. F. Flor. R.

Tί οὖν;] om. Fic.

τούτῳ τι] τι τούτῳ Vind. F. In Flor. R. editisque ante Bek- kerum τι omissum, in Lob. Vind. BE. Mon. B. cum acuto scriptum est.

μετέσται] μελέσθαι Par. K. sec. Bip.

C ναντίον μισεῖν; Μισεῖν, ἔφη. Ἡγουμένης δὴ ἀληθείας οὐκ ἄν ποτε, οἶμαι, φαιμεν αὐτῇ χορὸν πακῶν ἀκολουθῆσαι. Πῶς γάρ; Ἀλλ' ὑγιές τε καὶ δίκαιον ἥδος, ὃ καὶ σωφροσύνην ἐπεσθαί. Ορθῶς, ἔφη. Καὶ δὴ τὸν ἄλλον τῆς φιλοσόφου φύσεως χορὸν τί δεῖ πάλιν ἔξ ἀρχῆς ἀναγνάζοντα τάττειν; μέμνησαι γάρ που, ὅτι ξυνέβη προσῆκον τούτοις ἀνδρίᾳ, μεγαλοπρέπεια, εὐμά-

C *Μισεῖν*] om. Vind. F. Ang. B.
[*Ἡγουμένης — ἀκολουθῆσαι.*] excerpsit Stobaeus serm. XI.
p. 137.

δὴ] δὲ Vind. E. Stob. cod. A.
ed. Gaisf. δὲ τῆς Stob. Gesn. δὲ
καὶ Trinc.

ποτε] ποτ' Lob. Vind. B. Vat.
M.

οἶμαι] οἶμε Mon. B. a m. pr.
φαιμεν] φαιμὲν Vind. F. Stob.
χορὸν] χορῶν Vind. E. ante
corr.

ἀκολουθῆσαι] ἀκολουθήσειν
Mon. B. Flor. U.

Πῶς γάρ; „Ab eadem per-
sona fortasse continuari haec pos-
sent πῶς γάρ; ἀλλ' ὑγιές τε
etc.“ Steph. adn. p. 22. Possent;
sed paullo tamen maiore cum ani-
mi motu, quam qui huic loco con-
veniret.

δίκαιον] μέτριον cum editis
ante Bekkerum unus Ven. B. qui
tamen δίκαιον pro varia lectione
adscriptum habet, quod plane ne-
cessarium est, ne una omnium
praestantissima iustitia omissa sit,
neve temperantia moderationem,
a qua non differt, sequi dicatur.
Quod autem supra pag. 485. E.
eadem secundum inter virtutes et
proximum a veritatis amore locum
obtinet, iustitia post fortitudinem
denuo commemoratur, qua in re
Stallbaumius offendit, additum
ὑγιές docet Socratem hic alteram
quasi faciem veritatis respicere
eiusque amorem eum intelligi
velle, qui non rebus, ut sunt,
cognoscendis, sed dictorum facto-
rumque constantiae a dolo et fal-
lacia abhorrenti studeat. Conf.
Leg. I. p. 630. B: *πιστὸς μὲν*

γὰρ καὶ ὑγιὴς ἐν στάσεσιν οὐκ
ἄν ποτε γένοιτο ἄνευ ἔνυπάσης
ἀρετῆς.

δεῖ] δὴ Bas. b.

ἔξ ἀρχῆς] ἔξαρχῆς Lob. Vind.
B. Par. K. sec. Bip.

ἀναγνάζοντα] Ita omnes codi-
ces praeter Ven. B. qui ἀναλαμ-
βάνοντα cum editis habet. Etiam
Ficinus pro hoc et sequente τάτ-
τειν unum recensere ponens vide-
tur ἀναγνάζοντα potius, quam
ἀναλαμβάνοντα legisse et non
reddidisse, quia non intelligeret.
Ego vero non intelligo, quid re-
centiores a codicum lectione reci-
pienda absterruerit. Quum in su-
perioribus Socrates inde a p. 485.
B. omnia, quibus indolem philo-
sopham exornaverat, bona neces-
sario ex ipso sapientiae amore
deinceps progreedi et naturali in-
ter se vinculo contineri probasset,
ita ut etiam adversarii, quorum
deinde Adimantus partes suscep-
terat, unumquodque concedere
cogerentur, quinque in proximo
verbis ἀλλ' ὑγιές τε etc. alteram
quoque viam ad idem probandum
patere innuisset, nunc iteratam
eius rei expositionem supervaca-
neam dicturus *quid opus est*, in-
quit, *reliquum philosophae natu-
rae ornamentorum agmen denou-
cum necessitatis demonstratione
ordinare?* ἀναγνάζειν et homi-
nem et sermonem, qui argumen-
tis vincat assensionemque quasi
expugnet, satis frequenter dici
inter omnes constat. Neque in
hoc sententiarum nexu et post
illa, quae Adimantus p. 487. di-
xerat, metuendum erat, ne quis
ἀναγνάζοντα ad χορὸν referen-

δεια, μνήμη. καὶ σοῦ ἐπιλαβομένου, ὅτι πᾶς μὲν ἀναγ-
κασθήσεται δύολογεῖν οἵς λέγομεν, ἔάσας δὲ τὸν λό- D
γον, εἰς αὐτὸν ἀποβλέψας, περὶ ὃν δὲ λόγος, φαίη
ὅρῶν αὐτῶν τὸν μὲν ἀχρήστους, τὸν δὲ πολλοὺς κα-
κοὺς πᾶσαν κακίαν, τῆς ἥδη διαβολῆς τὴν αἴτιαν ἐπι-
σκοποῦντες ἐπὶ τούτῳ νῦν γεγόναμεν, τί ποδ' οἱ πολλοὶ
κακοὶ, καὶ τούτου δὴ ἔνεκα πάλιν ἀνειλήφαμεν τὴν τῶν

dum putaret, quasi singulae vir-
tutes in chorūm cogi, non au-
dientes ad assentendum adigi di-
cerentur. ἀναλαμβάνοντα vero
haud dubie ex ἀνειλήφαμεν, quod
infra D. legitur, factum est ab
aliquo, qui ἀνεγνάζοντα non in-
telligeret.

τάττειν] τίττειν Lob. Vind. B.
Vat. M.

πον] om. iidem et Vat. B.
τούτοις] τούτονς Ald. Bas. a.
ἀνδρία] ἀνδρεία Lob. Vind.
BF. Flor. ACRTV. Stallb. Pro-
bum esse ἀνδρεία etiam Aristophanis
locus docet Nub. 506: *ἄλλ’ ἵθι χαίρων τῆς ἀνδρείας*
οὐνεια ταύτης. Hoc tamen loco
Vindobonensis E. cum vulgata
consensus magis, quam Bekkeri
silentium ab eo recipiendo me de-
terrunt.

ενύμαθεια] ενύμαθία Ang. B.
Flor. RT.

μνήμη] om. Ang. B.
σοῦ] τοῦ Vind. E.

D *ἔάσας δὲ τὸν λόγον*] ἔάσαι
δὲ τ. λ. Vind. E. verbisque nostris
omissis Fic.

φαίη] Cf. ad L. V. p. 466. A.
τὸν μὲν] μὲν om. Par. A.
Vind. E. Vat. H. Flor. AC. (par-
tim Fic.).

τὸν δὲ πολλοὺς] partim Fic.
ut πολλοὺς non legisse videatur.

ἥδη] om. Par. A. Vind. EF.
Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV.
sane Fic. Stephanus in m. pro
τῆς ἥδη vel τῆς δὴ, quod Stall-
baumius in pr. ed. probabat, vel
potius τῆσδε τῆς, quod Astius in
tert. commendavit, scribendum
esse coniecit, quorum neutrum
codices comprobarunt. Neque vero

eiicienda secundum optimum co-
dicem particula, sed errore si-
mili ei, quo paullo ante μὲν, in
eo eiusque asseclis omissa, cete-
rum cum Stallbaumio in sec. paul-
lulum trajecta statuenda et ad
ἐπισκοποῦντες, non cum Bern-
hardyo synt. p. 323. ad διαβολῆς
referenda videtur. Pro interpo-
lata enim ob ipsam collocationis
insolentiam haberi nequit, ad δια-
βολῆς autem relata criminacionem
ex eo demum, quod iste alios
philosophantium inutiles, pleros-
que vero pessimos dixisset, nat-
tam significaret; aliud enim ἥ-
δη διαβολὴ nihil esse potest,
nisi quae iam exstitit et esse
coepit, quum antea nulla fuisse;
id vero, quod iste dixerat, tan-
tum abest, ut occasionem crimi-
nanda philosophiae dederit, ut
ipsum criminacionem iam divulgat-
am continuerit, quemadmodum
Socrates pag. 489. C. ostendit;
contra cum ἐπισκοποῦντες con-
structa sensum optimum praebet:
quum tu illud obiecisses, nos iam,
quod proximum faciendum vide-
batur, ad investigandam crimi-
nationis caussam conversi nunc
ad hanc pervenimus quaestionem.
Ad positurae licentiam simile est
Sophocleum Oed. Tyr. 1245: *κα-
λεῖ τὸν ἥδη λάϊον πάλαι νευρόν.*
διαβολῆς] μεταβολῆς Ang. B.
Flor. T.

ἐπισκοποῦντες] ἀποσκοποῦν-
τες Mon. B. Flor. U.

ἐπὶ τούτῳ] ἐπιτούτων Vind. E.
ἐπὶ τόντων Ang. B. *ἐπὶ τούτων*
Vind. F.

πολλοὶ κακοὶ] κακοὶ πολλοὶ^b
Bas. b.

ἀληθῶς φιλοσόφων φύσιν καὶ ἐξ ἀνάγκης ὡρισάμεθα.
 Ε "Εστιν, ἔφη, ταῦτα. Ταῦτης δὴ, ἦν δὲ ἔγώ, τῆς φύ-
 σεως δεῖ θεάσασθαι τὰς φθορὰς, ὡς διόλλυται ἐν πολ-
 λοῖς, σμικρὸν δέ τι ἐκφεύγει, οὓς δὴ καὶ οὐ πουηροὺς,
 ἀχρόίστους δὲ καλοῦσι· καὶ μετὰ τοῦτο αὖτις μιμού-
 491 μένας ταῦτην καὶ εἰς τὸ ἐπιτήδευμα παθισταμένας αὐ-
 τῆς, οἷαὶ οὖσαι φύσεις ψυχῶν εἰς ἀνάξιον καὶ μεῖζον
 ἔαντων ἀφικνούμεναι ἐπιτήδευμα πολλαχῆ πλημμελοῦσαι
 πανταχῆ καὶ ἐπὶ πάντας δόξαν οἵαν λέγεις φιλοσοφίᾳ
 προσδηψαν. Τίνας δὲ, ἔφη, τὰς διαφθορὰς λέγεις; Ἐγώ
 δοι, εἶπον, ἀν οἴος τε γένεσιν, πειράσομαι διελθεῖν.
 τόδε μὲν οὖν, οἷμαι, πᾶς ἡμῖν ὁμολογήσει, τοιαύτην
 φύσιν καὶ πάντα ἔχονταν, ὅσα προσετάξαμεν νῦν δὴ, 472
 Β εἰ τελέως μέλλοι φιλόσοφος γενέσθαι, ὀλιγάκις ἐν ἀν-
 θρώποις φύεσθαι καὶ ὀλίγας. η οὐκ οὔει; Σφόδρα γε.

ἀληθῶς] ὡς ἀλ. Vind. B. Mon.
 Flor. U. Stallb. pr.
 ἐξ ἀνάγκης] ἐξεν. Vind. BE.
 E θεάσασθαι] θεάσεσθαι Ang.
 B.
 φθορὰς] φθορᾶς Vind. F.
 διαφθορὰς Ang. B. Flor. RT.
 διόλλυται] διώλλυται Vind. F.
 διόλληται Vind. E. διόλλυνται
 Par. K. sec. Bip. In Mon. B.
 alterum λ a m. s. int. vers. ad-
 ditum.
 οὓς δὴ] Ante haec Ficinus
 nempe et hoc animadvertisendum
 addidit.
 μετὰ τοῦτο] μετατοῦτο Vind.
 BE. Mon. B. Ald. Bas. ab.
 αὖτας] αὐτὰς Vind. F. et
 scholiastes sec. Ruhnk. (αὖτας
 sec. Bekk.)
 491 αὐτῆς] αὐτοῖς; sup. ης, Vat.
 B.
 φύσεις] φύσης Mon. B. a m.
 pr.
 ἀφικνούμεναι] ἀφικόμεναι
 schol. In Mon. B. o a m. pr.
 omissum.
 πολλαχῆ] πολλαχοῦ Par. K.
 πανταχῆ] πανταχοῦ idem. pas-
 sim Fic.
 καὶ ἐπὶ πάντας] καὶ ἐπιπάντ.
 Vind. E. om. Fic.

φιλοσοφίᾳ] φιλοσοφία Ald.
 Bas. ab.
 δὲ] δὴ Vind. B. Vat. M.
 διαφθορὰς] διαφθορὰς Vat. B.
 διαφορὰς Vind. E.
 ἀν] εάν Lob. Vind. B. Vat.
 BM.
 πειράσομαι] πειράσωμαι Vind.
 F. Ang. B. Flor. R.
 ὁμολογήσει] ὁμολογήσαι Vind.
 F.
 πάντα] πάντ' idem et unus
 vel plures Bekkerianorum, qui
 notam omisit. Fuerit Ang. B.
 προσετάξαμεν] προετάξαμεν
 Par. K.
 δὴ] δὲ, sup. η, Vind. F.
 τελέως] τελείως Mon. B. Flor.
 U.
 μέλλοι] μέλλει Par. K. sec.
 Bip. Astius in tert. et Stallbau-
 mius praeeunte Matthiae gramm.
 p. 942. et Heindorfium ad Par-
 men. §. 71. conferri iubente, qui
 nonnulla exempla dictionis εἰ μέλ-
 λει apposuit, in quibus indicati-
 vus ita, ut ipso Parm. loco, sane
 requiritur. Nostro loco etsi ferri
 μέλλει posset, tamen μέλλοι ob
 praeteritum προσετάξαμεν plane
 legitimum est.

Τούτων δὴ τῶν ὀλίγων σκόπει ὡς πολλοὶ ὅλεθροι καὶ μεγάλοι. Τίνεις δή; "Ο μὲν πάντων θαυμαστότατον ἀκοῦσαι, δτι ἐν ἔκαστον ὃν ἐπηγένεσαμεν τῆς φύσεως ἀπόλλυσι τὴν ἔχουσαν ψυχὴν καὶ ἀποσπᾶ φιλοσοφίας. λέγω δὲ ἀνδρίαν, σωφροσύνην καὶ πάντα, ἢ διήλθομεν. "Αποπον, ἔφη, ἀκοῦσαι. "Ετι τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, C πρὸς τούτοις τὰ λεγόμενα ἀγαθὰ πάντα φθείρει καὶ ἀποσπᾶ, κάλλος καὶ πλοῦτος καὶ ἴσχὺς σώματος καὶ ἔνγγενεια ἐόδωμένη ἐν πόλει καὶ πάντα τὰ τούτων οἰκεῖα. ἔχεις γὰρ τὸν τύπον ὃν λέγω. "Ἐχω, ἔφη· καὶ ἥδεως γ' ἀν ἀκριβέστερον ἢ λέγεις πνθοίμην. Λαβοῦ τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, δλον αὐτοῦ ὁρθῶς, καὶ σοι εὔδηλόν τε φανεῖται, καὶ οὐκ ἄτοπα δόξει τὰ προειδημένα περὶ αὐτῶν. Πῶς οὖν, ἔφη, κελεύεις; Παντὸς, ἦν D δ' ἐγὼ, σπέρματος πέρι ἡ φυτοῦ, εἴτε ἐγγείων εἴτε

B ὀλίγας] Stephanus in m. ὀλίγοις coniecit vel ἐν ὀλίγοις, quemadmodum Ficinus legerit: raro in paucisque oriri. Sed haec Ficini verba sensum vulgatae codicumque omnium lectionis accurate declarant.

ἥ] ἦ Vind. E. "H Ald.

καὶ μεγάλοι] om. Vind. E. maximique Fic.

"Ο μὲν] Nam quod Fic.

θαυμαστότατον] θαυμασιώτατον Vind. E.

ἀποσπᾶ] ποσπᾶ idem. plerunque detorquet Fic.

ἀνδρίαν] ἀνδρείαν Lob. Vind. F. Flor. ACRTV. Stallb. Conf. ad p. 490. C. notata.

ἢ διήλθομεν] ἢ νῦν δὴ δι. Vat. M.

τοίνυν] om. Lob. Vind. B. Vat. BM. Fic. ἔτι τοίνυν, porro vero, in enumerationibus dici solet ubi ventum est ad aliquid, quod maxime argumento coniunctum maximeque nunc commemorandum et superioribus addendum videtur. Sic paullo post p. 493. A. Criton. p. 52. C: ἔτι τοίνυν ἐν αὐτῇ τῇ διῃ ἐξῆν σοι

φυγῆς τιμῆσασθαι, εἰ ἐβούλον: Phaedon. p. 109. A: πρῶτον μὲν τοίνυν, ἦ δ' ὅς, τοῦτο πέπεισμαι. Καὶ ὁρθῶς γ', ἔφη ὁ Συμμίας. "Ετι τοίνυν, ἔφη, πάμεγά τι εἶναι αὐτό.

κάλλος] om. Mon. B.

ῶν] ὃν Vind. B. Vat. M.

γ' ἀν] γὰρ Vind. F. Ang. B.

Flor. R.

πνθοίμην] ποιθοίμην, sup. a m. s. v, Vind. F.

τοίνυν] om. Fic.

εὔδηλον τε] ἐνδηλόν τε Vind.

B. Vat. M. τε om. Vat. B.

ἄτοπα] ἄτοπον Par. DK.

δόξει] δοξάζει Bas. b.

προειδημένα] dicta Fic.

αὐτῶν] αὐτοῦ Lob. Vind. BF. Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. Ang. B. Flor. RTU.

Παντὸς] πάντως Par. A. Vind. E. Vat. H. et a m. pr. Ven. B. Contrario errore Tim. p. 51. A. Par. A. Vind. CCCXXXVII. et pauci deteriores παντὸς pro πάντως scriptum habent.

σπέρματος πέρι ἡ φυτοῦ] φ. D π. ἦ σπ. Mon. B. Flor. U. ἡ φυτοῦ om. Fic.

ἐγγείων] ἀγγείων Flor. AC. et, sup. ε, Vat. H.

τῶν ξώων, ἵσμεν, ὅτι τὸ μὴ τυχὸν τροφῆς, ἡς προσήκει ἐκάστῳ, μηδ' ὥρας μηδὲ τόπου, ὅσῳ ἀν ἔρδωμενέστερον ἦ, τοσούτῳ πλειόνων ἐνδεῖ τῶν πρεπόντων· ἀγαθῷ γάρ που νακὸν ἐναντιώτερον, η τῷ μὴ ἀγαθῷ. Πῶς δ' οὐ; "Ἐχει δὴ, οἶμαι, λόγον τὴν ἀρίστην φύσιν ἐν ἀλλοτριωτέρᾳ οὖσαν τροφῇ νακίου ἀπαλλάττειν τῆς Ε φαύλης. "Ἐχει. Ούκοῦν, ἦν δ' ἔγώ, ὡς Ἀδείμαντε, καὶ τὰς ψυχὰς οὔτω φῶμεν τὰς εὑφυεστάτας νακῆς παιδαγωγίας τυχούσας διαφερόντως νακὰς γίγνεσθαι; η οἵει τὰ μεγάλα ἀδικήματα καὶ τὴν ἄκρατον πονηρίαν ἐκ φαύλης, ἀλλ' οὐκ ἐκ νεανικῆς φύσεως τροφῇ διολομέ-

ἔρδωμενέστερον] ἔρρωμενέστερος Vat. H. Flor. AC. ἔρρωμενέστερος Vind. E. *generosius ac vehementius* Fic.

ἐν ἀλλοτριωτέρᾳ οὖσαν τροφῇ] ἐν ᾧ οὖσα τροφῇ Vind. F. *si sub adversa forma nutritiatur* Fic. Inde Heusdius spec. pag. 29. ἐν ἀλλοτρίῳ τροφεῖσαν τροφῇ scribendum coniecit, parum eleganter, ut mihi videtur, et male offensus comparativo, qui propriam h. l. vim obtinet. Socrates enim hoc dicit, ex duabus naturis, quarum una optima, altera vilis sit, ubi neutri conveniens nutritio obtigerit, optimam peius ea re affici et maius detrimentum capere, quam vilem, quia magis adversa et aliena nutritione utatur, quam illa. Pluribus enim opus habens plura sibi deesse sentiat necesse est: πλειόνων ἐνδεῖ τῶν πρεπόντων.

νακίου ἀπαλλάττειν] *deteriorē evadere* Fic. Id vero neque ex antecedentibus efficitur neque omnino verum neque verbis Graecis significatum est, quae quomodo intelligenda putem, modo dixi. Minime igitur probandum, quod ex Boeckhii conjectura in Min. p. 103. proposita Stallbaumius in textum receptit, νακίου ἀπαλλάττειν.

φαύλης. "Ἐχει.] φαύλης ἔχειν. Lob. Vind. B. Nec aliter in Vat. M. scriptum videtur, ex quo Bek-

kerus ut ex Vind. B. ἔχειν enotavit, de interpunctione tacuit.

παιδαγωγίας] παιδαγωγίας E Vind. B. Pollux II. 20: καὶ ἡ παιδαγωγία παρὰ Πλάτωνι. Cf. Tim. p. 89. D.

γίγνεσθαι;] γίνεται Ald. Steph.

ἄκρατον] ἀκροτάτην γρ Ven. B. *extremam* Fic.

τροφῇ] μορφῇ Flor. C. om. Lob. Vind. B. Vat. M.

διολομένης] Ita Par. A. Ven. C. Flor. C. (ut quidem in sec. Stallbaumius docet; in pr. διεχομένης in Flor. C. διολλυμένης in Flor. V. a m. s. scriptum idque a Bekkero receptum tradiderat.) et, sup. a m. s. v, Vind. F. *corrupto (ingenio)* Fic. διελομένης Vat. H. διεφθαρμένη Vind. E. διολλυμένης reliqui codices editionesque praeter Bekkerianam; quod ferri nequit. Non dum corrumptitur natura, sed quum corrupta est, egregia illa facinora edit. Nostram lectionem tuetur et Pausaniae locus ab Astio iam significatus L. VII. c. 17. §. 3. Bekk. ἀπιδόντι οὖν ἐς τοῦτο μοι τοῦ Νέρωνος τὸ ζεγον ὁρθότατα εἰρηνέναι Πλάτων ἔφαίνετο, ὁ Αριστωνος, δύόσα ἀδικήματα μεγέθει καὶ τοιμήματι ἐστιν ἡ περιηρότα, οὐ τῶν ἐπιτυχόντων εἴναι ταῦτα ἀνθρώπων, ψυχῆς δὲ γενναίας ὑπὸ ἀτόπου παιδείας διεφθαρμένης.

γίγνεσθαι] γενέσθαι Flor. T.

νης γίγνεσθαι, ἀσθενῆ δὲ φύσιν μεγάλων οὕτε ἀγαθῶν οὕτε κακῶν αἰτίαν ποτὲ ἔσεσθαι; Οὐκ, ἀλλὰ, ἦ δ' ὃς, οὗτως. Ἡν τοίνυν ἔθεμεν τοῦ φιλοσόφου φύσιν, ἀν 492 μὲν, οἷμαι, μαθήσεως προσηκούσης τύχη, εἰς πᾶσαν ἀρετὴν ἀνάγκη αὐξανομένην ἀφικνεῖσθαι, ἐὰν δὲ μὴ ἐν προσηκούσῃ σπαρεῖσά τε καὶ φυτευθεῖσα τρέφηται, εἰς πάντα τάνατίαν αὖ, ἐὰν μὴ τις αὐτῇ βοηθήσας θεῶν τύχη. ἦ καὶ σὺ ἡγῆ, ὁ σπερ οἱ πολλοὶ, διαφθειρούμενος τινὰς εἶναι ὑπὸ σοφιστῶν νέους, διαφθείροντας δέ τινας σοφιστὰς ἴδιωτικοὺς, ὅτι καὶ ἄξιον λόγου, ἀλλ' οὐκ αὐτοὺς τοὺς ταῦτα λέγοντας μεγίστους μὲν εἶναι σο-

οὕτε — οὕτε] vel — vel Fic.
ἔσεσθαι;] ἔσεσθαι. Ald.

Οὐκ, ἀλλὰ] οὐκ ἀλλὰ Vind.
E. οὐκ ἀλλα Vind. F. Ficinus
Adimantum Non certe respondentem fecit.

Ἡν] ἡν Vind. E.

492 μὲν] μὴ Lob. Vat. M. et punctis circumpositis Vind. B.

τύχη] τύχοι Lob. Etiam Vind.
F. οἱ super η adscriptum habet.
ἀρετὴν] ἀρετὴν μὲν Ald. Bas.
ab. Steph. Ast. pr.

αὐξανομένην] Ita Bekkerus
secundum Par. ADK. de quo Bi-
pontini tacent, Ven. C. Vat. BM.
Vind. B. Mon. B. Ang. B. quibus
accidunt Lob. et Vind. F. αὐξο-
μένην Vind. E. et quantum ex
Bekkeri et Stallbaumii silentio
efficitur, Ven. B. Vat. H. Flo-
rentinique omnes cum editis ante
Bekkerum. semper proficiendo Fic.
Immo dum adolescit.

μὴ ἐν] ἐν μὴ editiones ante
Bekkerum, qui secundum eosdem
codices, qui αὐξανομένην prae-
buerunt, μὴ ἐν scripsit, de Ven.
B. Vat. H. iterum nihil ostendit.
μὴ ἐν mei quoque et Florentini
omnes habent et Bipontini ex
Par. K. enotarunt. Cf. Leg. L. II.
p. 671. D: μὴ μετὰ ἀρχόντων
ἀθούσιων. Eurip. Phoen. 536:
οὐκ εὐ λέγειν χρὴ μὴ ποτὶ τοῖς
ἔργοις καλοῖς. et alia exempla
inter ea, quae Fischerus contulit
ad Criton. p. 187. sq.

σπαρεῖσά τε καὶ φυτευθεῖσα]

Haec Astius in tert. uncis inclu-
sit, quum in pr. et sec. sine no-
ta transisset. Neque vero du-
bitandum est, quin Socrates eis
usus sit, ut statim ab initio vi-
tae educationem vim suam exse-
rere demonstraret. — In Ven. C.
τε omissum est.

αὐτῇ βοηθήσας θεῶν] αὐ. θ.
β. Lob. θ. αὐ. β. Vat. M. θ. αὐ-
τῷ β. Vind. B. αὐτῇ βοηθεῖσας
(a m. s. id correctum in —ήσας)
θεῶν Vind. F.

τύχη] τύχοι Lob.

ἡ] ἡ Lob. Vind. B.

ἡγῆ] ἡγεῖ Vind. F. et recentio-
tiores.

διαφθειρούμενος] δ. μέν Mon.
B. Flor. U. Stallb. μὲν saepe in-
terpolatum est. Cf. Vol. I. p. 162,
a. n. 7. 184, a. n. 1.

ὅτι καὶ ἄξιον λόγου] Haec
verba Ficinus non omisisse, sed
perperam intellexisse videtur,
quum ita sit interpretatus: *An tu*
quoque putas, quemadmodum mul-
ti, verum esse quosdam ado-
lescentes a sophistis corrumpi,
corruptores vero eorum sophistas
quosdam esse privatos: ac non
eos potius etc. Inter recentiores
unus Astius in tert. verum sen-
sum assecutus est: — *et corru-*
ptores esse sophistas privatos,
adeo ut sit dignum quod comme-
reteret. Scilicet nonnullam cor-
rumpendi vim sophistis Socrates
concedit, sed hoc ipsum corrum-
pere rem nullius momenti esse

φιστὰς, παιδεύειν δὲ τελεώτατα καὶ ἀπεργάζεσθαι οὗντος βούλονται εἶναι καὶ νέους καὶ πρεσβυτέρους καὶ ἄνδρας καὶ γυναικας; Πότε δή; ἦ δ' ὅς. "Οταν, εἶπον, ξυγκαθεξόμενοι ἀθρόοι πολλοὶ εἰς ἐκκλησίας ἢ εἰς δικαστήρια ἢ θέατρα ἢ στρατόπεδα ἢ τινα ἄλλον κοινὸν πλήθους ξύλλογον ξὺν πολλῷ θορύβῳ τὰ μὲν ψέγωσι τῶν λεγομένων ἢ πραττομένων, τὰ δὲ ἐπαινῶσιν, ὑπερβαλλόντως ἕκάτερα καὶ ἐκβοῶντες καὶ κροτοῦντες, πρὸς δ' αὐτοῖς αὖ τε πέτραι καὶ ὁ τόπος, ἐν φῶ ἢ ἀν οἴσιν, ἐπηχοῦντες διπλάσιον θόρυβον παρέχωσι τοῦ ψόγου καὶ ἐπαι-

ostendit. — καὶ om. Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV. et a m. pr. Ven. B.

τοὺς] om. Vind. E. Vat. H. Flor. AC.

B παιδεύειν δὲ τελεώτατα] π. τε τελ. Ang. B. Flor. R. Vind. F. docere item prorsus Fic.

νέους] νέονος Vind. E.

ἄνδρας] αἱδρας Ald.

δή] δέ Lob. Vind. B. Vat. BM. et a m. s. Ven. B.

ξυγκαθεξόμενοι] συγκ. Vind. F. Flor. R.

ἐκκλησίας ἢ εἰς δικαστήρια] δικ.. ἢ εἰς ἐκκλ. Lob. Vind. B. Vat. M.

θέατρα] εἰς φ. Flor. T.

πλήθους] τοῦ πλ. Mon. B.

ξύλλογον] σύλλ. Vind. B. Mon.

B. Flor. U.

ξὺν] σὺν Vind. F.

ψέγωσι] ψέγονται idem et Flor. T.

πραττομένων] πρατταμένων Ald.

δὲ] δ' Vind. E. Vat. H.

ἐπαινῶσιν] ἐπαινοῦσιν Vind. F.

C δ' αὐτοῖς] δέ αὐ. Vind. E. Flor. ACTV.

αὖ τε πέτραι καὶ ὁ τόπος, ἐν φῶ ἢ ἀν οἴσιν] parietes quoque et laquearia Fic. Videntur rupes foro Attico imminentes et theatrum Atticum significari. — Pro πέτραι in Mon. B. a m. pr. erat παίτραι.

παρέχωσι] παρέχονται Vind. F.

τοῦ ψόγου καὶ ἐπαίνοι] lau-

dantium ipsorum vituperantiumque Fic. Inter ψόγον et καὶ Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Flor. ACRT. cum editis ante Bekkerum τε interpositum habent.

δή] δέ Vind. F. Ang. B. Flor. R. et, sup. δή, Par. K. Matthiae gramm. p. 1209. hunc locum inter eos referens, qui δή in apodosis habeant, non animadvertisit δέτεν initio proximi sermonis ad πότε δή referendum ideoque post ἐπαίνοι plene interpungendum esse.

τῷ τοιούτῳ] τοῖς τοιούτοις Ang. B. Flor. R. In Vind. F. οἷς —οῖς a m. s. superscriptum est.

τὸ λεγόμενον] τὸν λ. Vind. E. Vat. H. (adolescentem) illum Fic. „Affertur et alia lectio, τὸν λεγόμενον: sed mendosam esse putto. Sic supra [p. 13. ad Theaet. 209. B.] τῶν λεγομένων, pro illicis ipsis verbis τὸ λεγόμενον, quae proverbiis praefiguntur, irrepsisse ostendimus.“ Steph. annot. p. 22.

τίναι] τίναι ἢ Mon. B. Flor. U.

ἴσχειν] ἔχειν Lob. Vind. B. Vat. BM. Bas. b.

αὐτῷ] rumoribus hisce (obsistere) Fic. Referendum est ad νέον.

ἰδιωτικὴν] ἰδιώτην Vind. F.

κατακλυσθεῖσαν] κατακλυσθεῖσαν Lob. Vat. B. Par. K. sec. Bekk. κατακλυσθεῖσαν sec. Bip. κατακλυσθεῖσαι Vind. E.

vou. ἐν δὴ τῷ τοιούτῳ τὸν νέον, τὸ λεγόμενον, τίνα οἵει καρδίαν ἴσχειν; ἢ ποίαν ἀν αὐτῷ παιδείαν ἰδιωτικὴν ἀνθέξειν, ἵν οὐ κατακλυσθεῖσαν ὑπὸ τοῦ τοιούτου ψύχου ἡ ἐπαίνου οἰχήσεσθαι φερομένην κατὰ φοῦν ἥ ἀν οὗτος φέρῃ, καὶ φῆσειν τε τὰ αὐτὰ τούτοις καλὰ καὶ αἰσχρὰ εἶναι, καὶ ἐπιτηδεύσειν ἄπερ ἀν οὗτοι, καὶ ἔσεσθαι τοιοῦτον; Πολλὴ, ἥ δ' ὅς, ὁ Σώκρατες, ἀνάγκη. D
Καὶ μὴν, ἥν δ' ἔγω, οὕπω τὴν μεγίστην ἀνάγκην εἰρήνημεν. Ποίαν; ἔφη. Ἡν ἔργῳ προστιθέασι λόγῳ μὴ πείθοντες οὗτοι οἱ παιδευταί τε καὶ σοφισταί. ἥ οὐκ

τοῦ] om. Lob. Vind. B. Vat. M.

οἰχήσεσθαι] οὐκ οἰχ. iidem et Bas. b. οὐκ ante οἰχήσεσθαι „ex quodam vet.“ asserri monuit etiam Steph. p. 22. eamque particulam ita tantum locum habere posse statuit, si loco suo pellatur ea, quae est ante κατακλυσθεῖσαν. „nam duas quidem negationes apud Graecos in multis loquendi generibus magis negare non ignoro, verum hae non diversis eodem tamen pertinentibus verbis iungentur, sed uni eidemque οἰχήσεσθαι. neque enim οὐ quale est ante participium κατακλυσθεῖσαν cum ipso iungitur, sed cum οἰχήσεσθαι: quanvis non scribatur, οὐκ, sed οὐ.“ cuius adnotationis extrema pars mihi parum digna Stephano videtur.

φερομένην κατὰ φοῦν] κ. ḥ. φ. Ven. B. κ. νοῦν φ. Vind. E.

ἥ] οἱ Ven. B. Vind. E. Mon. B. Vat. H. Flor. ACTUV. Stallb. pr.

φέρῃ] φέροι Ven. B. Vind. E. In Ald. punctum, in reliquis fere editionibus signum interrogandi appositum est, cuius loco ob sequentium nexūm artiorem cum Ast. pr. sc̄. comma feci. Nam quod verbi φῆσειν aliud atque verbi οἰχήσεσθαι subiectum est, non obstat, quo minus verba ipsa pariter ad οἵει referenda et non aliter distinguenda sint, quam si legeretur: οὐκ οἵει τὴν παιδείαν αὐτῷ οἰχήσεσθαι, καὶ αὐτὸν

φῆσειν. Quid quod ne commate quidem dirimenda forent, nisi interiectum esset ἥ ἀν οὗτος φέρῃ. Nam illud αὐτὸν non per ellipsis omissum, sed ex superioribus repetendum est, quasi οὐκ οἵει αὐτὸν τῆς παιδείας ἐπικήσεσθαι vel ἐπεσεῖσθαι praecessisset. Simili modo subiectum mutatur Phaedon. p. 64. E: Οὐκοῦν ὅλως δοκεῖ τοι, ἔφη, ἥ τοῦ τοιούτου πραγματεία οὐ περὶ τῷ σῶμα εἶναι, ἀλλὰ παθόσον δύνεται ἀφεστάναι αὐτοῦ, πρὸς δὲ τὴν ψυχὴν τετράφθαι; Ἐμοιγε. in quibus verbum δύνεται sequentia ἀφεστάναι et τετράφθαι ad τὸν τοιοῦτον potius, quam ad eius πραγματείαν pertinere docet.

ἐπιτηδεύσειν] ἐπιτηδεύειν Ald. Bas. ab. In Vind. F. σ int. vers. a m. pr. positum.

οὗτοι,] οὗτοι; Steph.

τοιοῦτον;] τοιοῦτον. Ald. Bas. ab.

προστιθέασι] τιθέασι Flor. T. D
Praepositio ad eos spectat, quibus necessitas admovetur. Perperam Stallbaumius in sec. comma, quo Stephanus non inepte post προστιθέασι erat usus, post λόγῳ posuit alterumque post μὴ πείθοντες addidit et haec verba sic interpretatus est: quam ipso facto orationi adiungunt, non utentes persuasione, prudentes isti magistri atque sophistae. quasi οὐ πείθοντες esset.

ἥ] ἥ Lob.

οῖσθα, ὅτι τὸν μὴ πειθόμενον ἀτιμίαις τε καὶ χρήμασι καὶ θανάτοις κολάζουσι; Καὶ μάλα, ἔφη, σφόδρα. Τίναι οὖν ἄλλον δοφιστὴν οἴει ἡ ποίους ἰδιωτικοὺς λόγους

E ἐναντία τούτοις τείνοντας προτίθειν; Οἷμαι μὲν οὐδένα, ἢ δ' ὅς. Οὐ γὰρ, ἦν δ' ἔγω, ἀλλὰ καὶ τὸ ἐπιχειρεῖν πολλὴ ἄνοια. οὔτε γὰρ γίγνεται οὔτε γέγονεν οὐδὲ οὖν μὴ γένηται ἀλλοῖον ἥθος πρὸς ἀρετὴν παρὰ τὴν τούτων παιδείαν πεπαιδευμένον, ἀνθρώπειον, ὃ ἔταιρε· θεῖον μέντοι κατὰ τὴν παροιμίαν ἔξαιρωμεν λόγου· εὗ γὰρ κρήτη εἰδέναι, ὅτιπερ ἀν σωθῆ τε καὶ γένηται οἶον 493 δεῖ ἐν τοιαύτῃ καταστάσει πολιτειῶν, θεοῦ μοῖραν αὐτὸ

τὸν] τὸ Par. A. Vat. H. Flor. ACV. quod non omnino ineptum, sed multo deterius est.

μάλα] μάλ' Vind. F. Ang. B.

Tίνα] τίν' iidem et Flor. R.

ποίους] quos alios Fic.

E τούτοις] τούτοις Ald. Bas. ab. sec. Bekk. πειθοντας Lob. Vind. B. Vat. M.

προτίθειν] προτίθεαι Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV.

Oīmai μὲν οὐδέναι] Nullius certe orationem Fic. Fortasse οὐδένες legit.

ἦν δ' ἔγω] om. Lob. Vind. B. Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. Flor. U.

γίγνεται οὔτε γέγονεν] γέγονεν οὔτε γίγνεται Mon. B. Flor. U. (neque enim) fuit unquam nec est Fic.

οὐδὲ] οὐδ' Vind. BE. Conf. Vol. I. p. 206, a.

πεπαιδευμένον] παιπαιδ. Vind. E.

ἔξαιρωμεν] excipiamus Fic. ἔξαιρω Vind. E. (Ven. B. Flor. CT.) Ald. Bas. ab. Steph. ἔξαιρω Ast. sec. quemadmodum vulgatam corrigendam esse ostenderat Heindorfius ad Theaet. §. 51. ἔξαιρομεν Vind. F. Par. DK. Ang. B. Flor. R. Ven. C. sec. Ast. ἔξαιροῦμεν Mon. B. Flor. U. ἔξαιρωμεν Par. A. Lob. Vat. BHM. Vind. B. Flor. AV. Ven. C. sec. Bekk. quod servatum in pr. Astius in tertia ed. et Stall-

baumius praeeunte Bekkero properispomenon fecerunt. Cf. Rückertus ad Symp. p. 24. quem iam Vol. I. p. 240, a. in eadem re citav.

λόγον] λόγον Lob. Ald. Bas. ab. „in praeced. edit. male λόγον. unde male quidam interpretantur cum Erasmo, Divinum excipio sermonem.“ Steph. in m.

σωθῆ τε] σωθῆτε Ald. Bas. ab. τε om. Flor. T.

δεῖ] δή Vind. F. Ang. B. Flor. R.

αὐτὸ] αὐτὸς Vind. F. Ang. B. 493

πανῶς] πανῶν Ald. Bas. a.

Οὐδ' ἔμοι ἄλλως] οὐδὲ μοι ἄλλ' ὡς Vind. E.

"Ἐκαστος] "Ἐκαστον Ang. B. Steph. Ast. sec. In Mon. B. s cum litura, sed a m. pr. exaratum est. „In praeced. edit. scriptum est ἔκαστος, quum tamen sequatur παιδεύειν et παλεῖν. At Fic. quum deberet ἔκαστον mutare in ἔκαστος [immo ἔκαστος in ἔκαστον] maluit, retinendo ἔκαστος, ex παιδεύειν et παλεῖν facere παιδεύει et παλεῖ. vertit enim, Quisque eorum qui privatim accepta mercede homines eruditint, quos quidem sophistas et aemulos artium appellant, nihil aliud docendum putat, quam multorum sententias, in quibus consentiunt, quoties congregantur: atque hanc sapientiam vocat. Genuina tamen lectio est ἔκαστον cum illis infinitivis, quia pen-

σῶσαι λέγων οὐ κακῶς ἔρεις. Οὐδ' ἐμοὶ ἄλλως, ἔφη, δοκεῖ. "Ετι τοίνυν σοι, ἦν δ' ἐγώ, πρὸς τούτοις καὶ τόδε δοξάτω. Τὸ ποῖον; "Ἐκαστος τῶν μισθαρούντων ἰδιωτῶν, οὓς δὴ οὗτοι σοφιστὰς καλοῦσι καὶ ἀντιτέχνουσι ἥγοῦνται, μὴ ἄλλα παιδεύειν, ἢ ταῦτα τὰ τῶν πολλῶν δόγματα, ἂ δοξάζονται, ὅταν ἀθροισθῶσι, καὶ σοφίαν ταύτην καλεῖν, οἶόν περ ἐν εἰ θρέμματος μεγάλου καὶ ἴσχυροῦ τρεφομένου τὰς δόγμας τις καὶ ἐπιθυμίας κατεμάνθανεν, ὅπη τε προσελθεῖν χρὴ καὶ ὅπη Βῆψασθαι αὐτοῦ, καὶ ὅποτε χαλεπώτατον ἢ πραότατον καὶ ἐκ τίνων γίγνεται, καὶ φωνὰς δὴ ἐφ' οἷς ἐκάστοτε

dent haec a verbo δοξάτω." Steph. p. 22. Qui si paullo minus festinasset, neque nominativum non ferendum, neque Ficinum non alio in errore versatum statuisse. Nam δοξάτω σοι ἐκαστος παιδεύειν nullam reprehensionem habet; Ficinus autem procul dubio ita legebat: ἐκαστος τῶν μισθαρούντων ἰδιωτῶν, οὓς δὴ σοφιστὰς καλοῦσι καὶ ἀντιτέχνουσι, ἥγοῦνται μὴ ἄλλα παιδεύειν etc. et ἥγοῦνται προοίονται δεῖν accipiebat.

οὓς] οὓς τε Vind. F. In Flor. A. ὅτε super οὓς δὴ scriptum est.

ταῦτα] om. Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACV.

δόγματα] om. Vind. F. Ang. B. Flor. R.

ἄν] om. Vat. B.

εἰ] ἢ Vind. F. a m. pr.

κατεμάνθανεν] κατελάμβανεν Flor. T.

B ὅπη τε] ὅποι τε Vind. E.

αὐτοῦ] αὐτόν. Lob.

χαλεπώτατον] χαλεπώτατα Par. K.

πραότατον] πραότατα idem. πραότερον Vind. B. et, sup. τ super εῷ, Vat. M. (πρα. Bas. ab. Steph. Ast. pr. sec.)

τίνων] Mon. B. exterrimum ν int. vers. a m. s. habet.

ἐφ' οἷς ἐκάστοτε] Ita Vind. E. ἄς ἐφ' ἐκάστοις Mon. B. Flor. U. Schleiermacherus et Stallbaumius. ἐφ' οἷς ἐκάστος reliqui codices

editionesque praeter Astii secundam, in qua ἄς ἐφ' οἷς ἐκάστοτε ex coniectura scriptum est. „Torsit me hic locus tum propter ἐκαστος, et οἷς, quod ad verborum ἀνοικοθίαν seu orationis structuram, tum propter φθέγγεσθαι, quod ad sensum attinet: tandem vero suspicatus sum ἐκαστος quidem in ἐκαστον, et οἷς in αῖς, at φθέγγεσθαι in φθέλγεσθαι mutari debere. ut sit hic loci huius sensus. Et voces quas quum effert unumquodque illorum animalium (quamvis singulari antea usus fuerit) solet demulceri. Id est, quas quum effert, indicant ipsum demulceri. Sic tamen et Fic. vertit quasi legeretur, καὶ φωνὰς δὴ ἄς ἐκαστος ἐφ' ἐκάστοις εἰώθε φθέγγεσθαι. nam ἐκαστος etiam retinet: quamvis non habeamus (ut opinor) quo restringere possimus. Verum ita ille, Voces item quas in singulis quisque solet exprimere, quum tamen haec praecesserint, Veluti si quis vasti cuiusdam animalis bruti, robusti admodum, et ab homine enutriti, iras et cupiditates singulas observaverit, quāve ratione adire hoc deceat, qua attractare: item quando vel ferocius est, vel mitius: et ex quibus caussis tale fiat. Quodsi extaret in quopiam exemplari haec lectio, καὶ φωνὰς ἄς ἐφ' ἐκάστοις ἐκαστον εἰώθε φθέγγεσθαι, minime reiiciendam censerem.“ Steph. ann. p. 22. sq.

εἰλθε φθέγγεσθαι, καὶ οἵας αὖ ἄλλου φθεγγομένου
ἡμεροῦται τε καὶ ἀγοιαίνει, παταμαθὼν δὲ ταῦτα πάντα
ξυνουσίᾳ τε καὶ χρόνου τριβῇ σοφίαν τε παλέσεις καὶ
ώς τέχνην συστησάμενος ἐπὶ διδασκαλίαν τρέποιτο, μη-
δὲν εἰδὼς τῇ ἀληθείᾳ τούτων τῶν δογμάτων τε καὶ ἐπι-
θυμιῶν, ὅτι καλὸν η̄ αἰσχόν η̄ ἀγαθὸν η̄ πανὸν η̄ δί-
C καιον η̄ ἄδικον, ὄνομάζοι δὲ πάντα ταῦτα ἐπὶ ταῖς τοῦ
μεγάλου ξώου δόξαις, οἷς μὲν χαίροι ἐκεῖνο, ἀγαθὰ

Nisi sequentia oīas αὖ ἄλλου
φθεγγομένου nostrum φθέγγεσθαι
ad ipsum animal referri iuberent,
ἐφ' oīs ἔκαστος retineri et pro
ἐπὶ τούτοις ἀ ἔκαστος accipi at-
que ita explicari posset, ut ani-
mal ad ea, quae quisque adeun-
tium pronuntiare soleat, et ipsum
voces quasdam emittere dicatur.
Ac nescio an non aliter Ficinus
haec intelligi voluerit et *voces exprimere* ea significatione dixe-
rit, qua ab optimis quibusque et
a Caesare Gall. L. I. c. 32. §. 3.
dictum est. Verum et sequentia
obstant, et ipsum εἰλθε multo
magis animali, quam adeuntibus
convenire appareat. Quum igitur
vulgata et codicum plurimorum
lectio ferri non posse videretur,
quam minime ab ea discedendum
et secundum librum haud conte-
mendum. ἔκάστοτε pro ἔκαστος
scribendum, Monacensem vero
emendationein quamvis speciosam
procul habendam putavi. oīs, ut
initio huius libri oī, pro oīoīs
positum, et sensus loci hic est:
atque etiam *voices animalis co-*
gnosceret, quibus occasionibus eas
quoties offerantur mittere soleat.
Quod qui novit, ex vocibus col-
ligere potest, quid animali acci-
derit et quo modo affectum sit,
idque etiam utilius nutricio isti
videri debet, quam ex occasio-
bus colligere posse, quas voces
animal missurum sit, qui sensus
Monacensis lectionis est.

oīas] oīas Mon. B. Par. DK.
Vat. HM. Flor. U. cum editis
ante Bekkerum, quod aequa pro-
babile erat.

ἡμεροῦται τε καὶ ἀγοιαίνει] irritatur vel placatur Fic. Stephanus annot. p. 23. particulam ual (immo utramque, τε καὶ,) in η̄ mutandam vel pro ea accipien-
dam statuit, quorum neutrum ve-
rum. τε καὶ est vel — vel.

παταμαθὼν δὲ] Nescio, cur Matthiae gramm. p. 1247. de re-
petita post parenthesin particula
δὲ agens hunc locum conferri ius-
serit, nisi forte optativos, qui
sequuntur, non ab illo εἰ ante
θρέμματος, quod cum indicativo
πατεμάνθανεν constructum vide-
ret, sed a verbis oīov περὶ ἀν-
pendere statuens haec omnia (εἰ θρέμματος — ἀγοιαίνει) paren-
thesis loco habuit. Sed illud ἀν
non esse ad παλέσεις referendum
subiecti defectus arguit, quum
oīov περὶ τις, εἰ παταμάθοι
dicendum fuisse, eodemque mo-
do, quo in κανεὶ εἰ et ὥστε καὶ, ad
omissum εἰη pertinet vel nulli
verbo adiunctum per se fere (*et-
wa*) significat. Optativus autem
in sequentibus plane legitimus,
indicativus in praecedentibus ideo
positus videtur, quod neminem
sanum illi rei cognoscenda ope-
ram dare simul significaret. Eum
vero, qui daret, sapientiam hanc
vocare magis iam credibile erat.

ταῦτα πάντα] singula Fic.
πάντα om. Ven. B. a m. pr.

ξυνουσίᾳ] συν. Vind. F.
παλέσεις] παλέσειεν idem.

ἐπὶ διδασκαλίαν] ἐπιδιδ. Vind.
E. ἐπὶ διδασκαλία Par. K. sec.
Bip.

καλῶν, οῖς δὲ ἄχθοιτο, κακὰ, ἄλλον δὲ μηδένα ἔχοι λόγον περὶ αὐτῶν, ἀλλὰ τάναγκαια δίκαια καλοῖ καὶ καλὰ, τὴν δὲ τοῦ ἀναγκαίου καὶ ἀγαθοῦ φύσιν, ὅσον 473 διαφέρει τῷ ὅντι, μήτε ἑωρακώς εἴη μήτε ἄλλῳ δυνατὸς δεῖξαι. τοιοῦτος δὴ ὁν, πρὸς Λιός, οὐκ ἄτοπος ἐν σοι δοκεῖ εἶναι παιδευτής; "Ἐμοιγ' ἔφη. Ἡ οὖν τι τούτου δοκεῖ διαφέρειν δ τὴν τῶν πολλῶν καὶ παντοδαπῶν ξυνίοντων ὁργὴν καὶ ἡδονὰς κατανευοηκέναι σοφίαν ἥγού-

C ὄνομάζοι δὲ] ὄνομάζει δὲ Lob. Vind. B. Ven. B. Vat. M. (nisi forte Bekkerus Venetum perpetram pro Vindobonensi, quem omisit, significavit.) ὄνομάζοι τὲ Ang. B. Flor. R. ὄνομάζεται, e corr. ὄνομάζει τὲ, Vind. F.

πάντα ταῦτα] singula Fic. ταῦτα πάντα Lob. Vind. BEF. Vat. BHM. Ven. B. Par. K. Ang. B. Flor. ACRTV. Stallb. πάντα haud dubie gravius h. l. quam ταῦτα, contra ac paullo ante, ubi ταῦτα merito in omnibus codicibus priorem locum tenuit, qui hic alteri recte in Par. A. Mon. B. Ven. C. Par. D. Flor. U. editisque reliquis assignatur. Sensus enim non is, quem Matthiae p. 1168. et Stallbaumius statuunt, quem alibi dictio ὄνομάζειν τι ἐπί τινι habet, sed hic videtur: omnibus his nominibus secundum magni animalis opinones uteretur, ita ut eis utens totus penderet ab istis opinionibus; quemadmodum ἐπί τινι εἶναι et similia dicuntur.

χαίροι] χαίρει Lob. Vind. F. Ven. C. Par. K. Vat. HM. Flor. ACRT. In Vind. B. χαίροι cum corr. in o scriptum est.

ἐκεῖνο] ἐκεῖνα Flor. AC. et, commate anteposito, Vind. E.

ἀγαθὰ] ἀγαθὸν Vat. B. Vind. F. et, sup. ἄ, Lob.

ἔχοι] ἔχει Vind. F. Flor. RT.

τάναγκαια] τάναγκαια Ald.

καλοῖ] καλοτη Vind. B. καλεῖ

Vind. F. Vat. M. Flor. RT. et,

sup. οἱ, Par. K.

τῷ ὅντι] τωόντι Vind. E.

ἄλλῳ] aliis Fic.

δυνατὸς] δυνατὸν Bas. b.

δεῖξαι.] δεῖξαι. Astius. Matthiae gramm. p. 1017. etiam minore cum interpunctione haec legere videtur.

ων] ὁν Vind. F.

δοκεῖ] Ita Par. A. Vind. F. Mon. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. Bekkerus et in pr. Stallb. δοκῆ reliqui codices Bekkeri, Lob. Vind. B. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr. δοκοή Ast. sec. probante Matthiaeο l. c. δοκῆ Vind. E. Ast. tert. Stallb. sec. videbitur Fic. Cf. L. III. p. 422. B: εἰς πύντης ὡς οἰόν τε κάλλιστα ἐπὶ τοῦτο παρεσκενασμένος δνοῖν μὴ πύνται, πλονσίον δὲ καὶ πιόνοιν οὐκ ἐν δοκεῖ τοι δαδίως μάχεσθαι; quo loco item δοκῆ in parte codicum et in editionibus antiquis legitur, neque Stallbaumius ἄν ad infinitivum pertinere non vidit, quod nostro, cuius prorsus eadem ratio est, negat.

"Ἐμοιγ'] ἔμοιγε Lob. Vind. B.

Ἡ] ἡ Vind. EF.

οὐν] om. Fic.

τι] τι Vind. E. om. Vind. F.

τούτου] τοῦτο, a m. s. τούτω, Vind. F.

ό] ὁ Vind. E. Idem in Vind. F. ante lituram fuisse videtur.

ὅτι Lob. Vind. B. Par. DK. Vat. M. et a m. pr. Vat. B. Ven. C.

ό τὸ Mon. B. Flor. U. et a m. s. Vat. B. ὅστις margo Par. D.

σοφίαν] σοφίας Mon. B.

D

μενος, εἴτ' ἐν γραφικῇ εἴτ' ἐν μουσικῇ εἴτε δὴ ἐν πολιτικῇ; ὅτι μὲν γὰρ, ἐάν τις τούτοις ὁμιλῇ ἐπιδεικνύμενος ἡ ποίησιν ἡ τινα ἄλλην δημιουργίαν ἡ πόλει διακονίαν, κυρίους αὐτοῦ ποιῶν τοὺς πολλοὺς πέρα τῶν ἀναγκαῖων, ἡ Διομήδεια λεγομένη ἀνάγκη ποιεῖν αὐτῷ ταῦτα, ἡ ἀν οὗτοι ἐπαινῶσιν· ὡς δὲ καὶ ἀγαθὰ καὶ

εἴτ' ἐν μ.] εἴτ' ἐμ. Mon. B.

δὴ] δὲ Vind. E.

ὅτι μὲν γὰρ] patet enim quod

Fic. supplens quod scriptorem omisisse putaret. Etiam Stallbaumius ellipsis statuit verborum δῆλον seu φανερόν ἔστι, eamque comparat illi, quae post εἰ μὲν usitata est. Sed Diomedeam, qualis in proverbio sit, necessitatem illi iniungi manifestum dicere Socrates vix poterat ita, ut hoc manifestum supplendum relinqueret, neque exemplum talis ellipsis a Stallbaumio aut ab aliquo eorum, quos citavit, allatum est. Itaque constructione potius excidisse scriptorem, et quum ὅτι μὲν γὰρ, ἐάν τις τούτοις ὁμιλῇ, ταῦτα ποιεῖ, οὐ διαμαστὸν, ἄλλᾳ καὶ πάννῃ ἀναγκαῖον ἔστι vel simile in animo habuisse, ad necessitatis significationem augendam posteriora conformasse et particulae ὅτι initio positae oblitum esse dixerim.

ὁμιλῇ] ὁμιλοῦ ante corr. Vind. F.

ἢ] om. Ald. Bas. a.

τινα ἄλλην] ἄλλην τινὰ Lob. Vind. B. Vat. M. Bas. b. minus bene. τις praepōni solet, ubi incerti notio, ἄλλος, ubi diversi praevalent. Sic paullo ante p. 492. B. ἡ τινα ἄλλον ποιὸν πλήθονς ξύλογον. 496. C: ἡ γάρ ποντινι ἄλλῳ ἡ οὐδενὶ τῷ ἔμπροσθεν γέγονε. et saepe alibi; ideoque fit, ut, quoties particula comparans ἡ sequitur, fere ἄλλος τις, certe multo frequentius hoc, quam τις ἄλλος dictum inventiatur. Cf. Phaedr. p. 245. E. 258. A. 268. D. Contra semel in

eodem dialogo p. 273. A. — Ficinus τινα ἄλλην δημιουργίαν alterius artis opus interpretatus τινα neglexit.

πόλει] πόλεως Bas. b. Idem in Flor. T. super vulgato adscriptum et a Stephano in m. ut melius notatum est. („Malim πόλεως, ut in uno vet.“) Cf. Bernhardy synt. p. 93.

αὐτοῦ] Ita Bekkerus unum Ven. B. antestatus, de reliquis et de vulgata scriptura tacens. Etiam Mon. B. αὐτοῦ, Vind. B. punctum pro spiritu super a possum, reliqui mei cum Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Stallb. αὐτοῦ habent, quod Ficino quoque placuit, qui exhibeatque vulgo iudicandi operis auctoritatem ultra necessaria scrispsit. αὐτοῦ Astius et Stallbaumius ad praegressa ποίησιν, δημιουργίαν et διακονίαν referentes et verba πέρα τῶν ἀναγκαῖων sequentibus inngentes necessitatis significationem ultra modum et inaudito loquendi genere augent, contra illius, qui sese multitudini probari studet, abiectionem non satis notant. Quamvis enim parum digne faciat qui multitudinis iudicio opera sua subiiciat idque ratum habeat, quod illi de eis iudicaverint, et quamvis credibile sit eiusmodi artificem nihil facere, quod populo minus placere suspicetur, dici tamen nequit nullo modo fieri posse, quin ea faciat, quae illi placent, quia inter faciendum obliiscī decretorum multitudinis et ingenii sui impetu ferri ad alia et meliora potest. Sed qui semetipsum et totum poteſtati

καλὰ ταῦτα τῇ ἀληθείᾳ, ἥδη πώποτέ του ἡκουνσας αὐτῶν λόγον διδόντος οὐ καταγέλαστον; Οἷμαι δέ γ', ἦ δ' ὅς, οὐδὲ ἀκούσομαι. Ταῦτα τοίνυν πάντα ἐννοήσας Ε ἐκεῖνο ἀναμνήσθητι· αὐτὸ τὸ καλὸν, ἀλλὰ μὴ τὰ πολλὰ καλὰ, ἦ αὐτό τι ἔκαστον καὶ μὴ τὰ πολλὰ ἔκαστα ἔσθ' ὅπως πλῆθος ἀνέξεται ἢ ἡγήσεται εἶναι; Ἡκιστά γ', ἔφη. 494

eius tradiderit, eum quasi mancipium oportet in omnibus eius sententiam sequi. Verum enim vero quodammodo omnes, qui opera sua vel artis vel virtutis spectari et publice extare volunt, populi iudicio se subiicere approbandique et reprobandi arbitrium ei permittere coguntur: ipsi probare vulgi approbationem non coguntur; et si quis tamen huins quoque rei necessitatem sibi imponit, is πέρα τῶν ἀναγνώσθων υπόλοις αὐτοῦ ποιῶν τοὺς πολλοὺς dici potest. Itaque cum Bekker et αὐτοῦ scribendum et comma, quod Ald. Bas. ab. et Astius post πολλοὺς, Stephanus et in sec. Stallbaumius ibidem et post ἀναγνώσθων posuerunt, priori loco delendum putavi.

Διομήδεια] Ita Lob. Vind. BEF. et a m. s. Mon. B. item Ald. Bas. ab. *Διομήδεια* Mon. B. a m. pr. Steph. et recentiores, tacito analogiam vulgarem seuti, quam hoc non pertinere docet Aristophanis versus Eccles. 1029: *Kαὶ ταῦτ' ἀνάγκη μοῦστι;* B. *Διομήδειά γε.* Itaque ad ἥδνέπεια et reliqua, quae Passovius in tabula prosodica II. ff. recensuit, hoc adnumerandum, ceterum quod scholiastes Aristophanis de Thracum rege Diomede commentus est, illius loci gratia fictum et magis probabile id videtur, quod in scholio ad nostrum locum de Tydei filio narratur.

λεγομένη] λ. ἦ Lob. Vind. B. Vat. M. λ. ἦ Vat. B. λ. ἦ Ven. C. λ. ἦ Ven. B. In Vind. F. post λεγομένη et post ἀνάγκη litura est.

ποιεῖν] ποιεῖ Vind. F. cum litura in fine.

ταῦτα] πάντα (Ven. B.) editi ante Bekkerum.

ως] εἰ Lob. Vind. B. ἐς Vat. M.

δὲ καὶ] καὶ om. Vind. F. Flor. R. et Astii pr. et sec. ed. typothetae negligentia. Bekkerus, qui δὲ καὶ cum reliquis edidit, in comm. crit. δὲ καὶ pro δὲ in Vat. HM. legi tradens, nisi erravit, ως δὲ καὶ καὶ in utroque invenierat.

ἀγαθὰ καὶ καλὰ] καλὰ καὶ ἀγαθὰ Lob. Vind. BF. Vat. BM. Ang. B.

τον] om. Par. K.

δέ γ'] δέ γε Vind. EF.

Ταῦτα τοίνυν πάντα] πάντα E τοίνυν ταῦτα Vind. F. Ang. B. Flor. R.

ἐκεῖνο] et illud Fic.

ἀναμνήσθητι.] ἀναμνήσθητι, Steph. Ast. pr. sec. Priores nullam, posteriores plenam interpunctionem habent.

καλὰ,] om. Ven. B. a m. pr. καλά. Ald. Bas. ab. Steph.

αὐτό τι] αὐτόθι Steph. Ast. pr. tac. Bip.

καὶ] καὶ ἀλλὰ Ang. B. Flor. RT. quamquam hi utrum habeant καὶ, an omittant, Stallbaumius ambiguum reliquit.

ἔκαστα] ἔκαστα. Ald. ἔκαστα, Bas. ab. Steph.

ἢ] om. Vind. F.

γε] γε Lob. Vind. B.

Φιλόσοφον μὲν ἄρα, ἦν δ' ἐγὼ, πλῆθος ἀδύνατον εἶναι. Ἀδύνατον. Καὶ τοὺς φιλόσοφοῦντας ἄρα ἀνάγκη ψέγεσθαι ὑπ' αὐτῶν. Ἀνάγκη. Καὶ ὑπὸ τούτων δὴ τῶν ἰδιωτῶν, ὅσοι προσομιλοῦντες ὅχλῳ ἀρέσκειν αὐτῷ ἐπιθυμοῦντι. Δῆλον. Ἐκ δὴ τούτων τίνα δοξᾶς σωτηρίαν φιλόσοφῳ φύει, ὥστ' ἐν τῷ ἐπιτηδεύματι μείνασαν πρὸς τέλος ἐλθεῖν; ἐννόει δ' ἐκ τῶν ἔμπροσθεν.

B Ὅμοιολόγηται γὰρ δὴ ἡμῖν εὐμάθεια καὶ μνήμη καὶ ἀνδρία καὶ μεγαλοπρέπεια ταύτης εἶναι τῆς φύσεως. Ναί. Οὐκοῦν εὐθὺς ἐν πᾶσιν ὁ τοιοῦτος πρώτος ἔσται ἐν ἄπασιν, ἄλλως τε καὶ ἐὰν τὸ σῶμα φυῇ προσφεροῦσα τῇ

Φιλόσοφον] φιλοσόφων Vind. E. Verba φιλόσοφον μὲν οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, πλῆθος ἀδύνατον γενέσθαι sine auctoris nomine posuit Clemens Al. Strom. L. V. p. 655, 11. Bekkerus et Stallb. haec et proxime sequentia Socratem interrogantem faciunt, illa vero ναὶ υπὸ τούτων etc. quorum tamen ratio eadem, non item. Mihi propter μὲν haec omnia affirmationi propriora videntur. Ceterum post εἰναὶ etiam Lob. interrogationis notam habet.

ἄρα ἀνάγκη] αὐτ. ἄρα Vind. F. Ang. B. Flor. R.

ψέγεσθαι] ψεύδεσθαι Par. K. sec. Bekk.

ὑπ' αὐτῶν] ὑπ' αὐτοῦ Bas. b. ab eo (sc. vulgo) Fic. Cf. Bernhardy synt. p. 288.

Ἀνάγκη.] καὶ ἀνάγκη Vind. F.

αὐτῷ] αὐτὸν Vind. F. a m. pr. αὐτοῦ Flor. AC.

ἐπιθυμοῦντι.] ἐπιθυμοῦσιν. Bekkerus. Ficinus hanc Socratis ἔγγνιτιν ita contraxit: *Et a quibusque populo placere volentibus.*

B ἀνδρία] ἀνδρείᾳ Lob. Vind. F. Flor. ACRTV. Stallbaum. ut p. 491. B.

ταύτης] ταύτη Vind. E.

φύσεως.] φύσεως; Ald. Bas. ab.

ἐν πᾶσιν] apud omnes Fic. Potius inter omnes sc. aequales. Recte vero hoc masculinum esse statuit Ficinus, quod circumposita εὐθὺς et ὁ τοιοῦτος arguunt, quorum prius etiam ineuntis aetatis significationem continet, ut propterea opus non sit Geerii coniectura diatr. in politices Plat. principia p. 58. πᾶσιν pro πᾶσιν requirentis, quod Astius in sec. edidit, in tertia, ut Stallbaumius, probabile sibi videri ostendit, addita tamen altera coniectura εὐθὺς ἐν παιδός. Neque vero ambiguitas ob sequens ἐν ἄπασιν vulgato adversaria, immo minor, quam in Geerii lectione est, si πᾶσιν masculinum esse certum est. Similiter πᾶσιν et ἄπασιν ad diversas res spectare videntur Leg. L. IIII. p. 723. C: τὸ μέγατοι μεγάλων πέρι λεγομένων νόμιτον καὶ συνιδῶν εἰ δομοὶς προοιμιάζεσθαι προστάττομεν, οὐκ ἀν ὄρθως λέγοιμεν. οὐδὲ γάρ ἄσματος οὐδὲ λόγου παντὸς δεῖ τὸ τοιοῦτον δοξᾶν, καίτοι πέφυκέ γε εἶναι πᾶσιν, ἀλλ' οὐ χρηστέον ἄπασιν. sc. προοιμίοις.

δ τοιοῦτος — ἄπασιν] om. Vind. B. Vat. M.

πρώτος] post ἔσται Par. K. Antiatl. Bekk. an. pag. 111, 16: πρώτον τοὺς ἀρίστους. Πλάτων Πολιτείᾳ, Ἡρόδοτος πρώτω.

ψυχῇ; Τί δ' οὐ μέλλει; ἔφη. Βουλήσονται δὴ, οἶμαι, αὐτῷ χρῆσθαι, ἐπειδὴν πρεσβύτερος γίγνηται, ἐπὶ τὰ αὐτῶν πράγματα οἵ τε οἰκεῖοι καὶ οἱ πολῖται. Πῶς δ' οὕ; Τροκείσονται ἄρα δεόμενοι καὶ τιμῶντες, προ-
καταλαμβάνοντες καὶ προκολακεύοντες τὴν μέλλονσαν αὐτοῦ δύναμιν. Φιλεῖ γοῦν, ἔφη, οὗτοι γίγνεσθαι. Τί οὖν οἴει, ἵν δ' ἔγω, τὸν τοιοῦτον ἐν τοῖς τοιούτοις ποιήσειν, ἄλλως τε καὶ ἐὰν τύχῃ μεγάλης πόλεως ἀν καὶ ἐν ταύτῃ πλούσιός τε καὶ γενναῖος καὶ ἔτι εὐειδῆς καὶ μέγας; ἂρ οὐ πληρωθήσεσθαι ἀμηχάνον ἐλπίδος, ἥγονται μενον καὶ τὰ τῶν Ἑλλήνων καὶ τὰ τῶν βαρβάρων

ἐν ἐπασιν] Haec verba Mon. B. punctis ab antecedentibus et a sequentibus distincta quasi Adimanti exhibit; cui rationi ad ambiguitatem, de qua supra dixi, evitandam excogitatae proxime sequentia repugnant.

φυῆ] φυῆ προσφυῆ cum linea sub altero Mon. B.

προσφερῆς] προσφέρεις Vind. F. προσμερῆς Vind. E. Vat. H. Flor. C. προσφερῆς Vind. B. Flor. AUV. cum editis ante Beckerum, tacentibus Bipontinis. „Legitur etiam προσφερῆς τῇ ψυχῇ: quam lectionem alteri praefero.“ Steph. annot. pag. 23. Utrum Ficinus legerit, ambiguum est: si corpus natura nactus sit animo conforme. Masculinum Stephanus non sine causa praeferebat, quia longius ab interpolationis specie remotum est, eleganterisque verbum φυῆ ad prius subiectum, quam ad novum (*σῶμα*) idque genitivo αὐτοῦ aegre carens refertur.

ἐπειδὴν πρεσβύτερος γίγνηται] cum adoleverit Fic. Pro γίγνηται Par. DK. Mon. B. Flor. U. editique praeter Beckerum. omnes γένηται habent, quod Stallbaumio unice verum videtur, quia sententia haec sit: *quum aetate magis provectus fuerit*. Eam tamen sententiam nihil obstabat quo mi-

nus ita declararet Socrates: *quum primum provectioris aetatis esse incipiat*. ἐπειδὴν etiam alibi cum praesente poni constat; eius vero temporis, quo quis πρεσβύτερος dici possit, initium incertum est; denique illorum intererat tali iuvene primo quoque tempore uti. Simili fere modo πρεσβύτεροι γιγνόμενοι L. II. p. 378. D. dicuntur.

αὐτῶν] αὐ. Lob. Vind. BEF. Ald. Bas. ab.

πολῖται.] πολῖται. Lob. Vind. E. πολῖται; Ald. Bas. ab.

ἄρα] δὲ ἄρα Ven. B. Vind. E. C Vat. H. Flor. ACRTV.

δύναμιν] *virtutem atque potentiam* Fic.

γοῦν] om. Fic.
οἴει] post ἵν δ' ἔγω Par. DK. Mon. B. Flor. U. editi ante Beckerum.

ἵν] om. Ven. C.

ποιήσειν,] ποιήσειν. Ald. ποιήσειν; Bas. ab. Steph. Ast. pr. μέγας;], μέγας. Ald. Bas. ab. ἄρ]

Vind. F.

πληρωθήσεσθαι] πληρωθήσεται Ven. B.

ἐλπίδος,] ἐλπίδος; Ald. Bas. ab. Steph.

Ἐλλήνων — βαρβάρων] β.—έ. Lob. Vind. B. Vat. M.

D ίκανὸν ἔσεσθαι πράττειν, καὶ ἐπὶ τούτοις ὑψηλὸν ἔξαιρειν αὐτὸν, σχηματισμοῦ καὶ φρονήματος κενοῦ ἀνευ νοῦ ἐμπιπλάμενον; Καὶ μάλιστα, ἔφη. Τῷ δὴ οὔτω διατιθεμένῳ ἐάν τις ἡρέμα προσελθὼν τάληθῆ λέγῃ, ὅτι νοῦς οὐκ ἔνεστιν αὐτῷ, δεῖται δὲ, τὸ δὲ οὐ κτητὸν μὴ δουλεύσαντι τῇ κτήσει αὐτοῦ, ἀλλὰ εὐπετεῖς οἶει εἶναι εἰσακοῦσαι διὰ τοσούτων κακῶν; Πολλοῦ γε δεῖ, ηδὸν. Ἐὰν δὲ οὖν, ηδὸν ἔγω, διὰ τὸ εὖ πεφυκέναι καὶ Ε τὸ ξυγγενὲς τῶν λόγων εἴς αἰσθάνηται τέ πη καὶ κάμ-

ίκανὸν ἔσεσθαι] Ι. εἶναι Vind.

B. Vat. M. sufficere Fic.

πράττειν,] Ita Ald. πράττειν. Bas. ab. πράττειν; Steph. et recentiores. Sed ἔξαιρειν cum πληρωθῆσεσθαι potius, quam cum ἔσεσθαι aut πράττειν construendum esse satis per se liquet.

D ἔξαιρειν] ἔξαιρειν Vind. F. ἔξαιρειν Vind. E. Vat. H. Ang. B. Flor. ACRTV. quemadmodum Stephano annot. p. 23. scribendum videbatur. Cf. Vol. I. p. 52, b. et Bernhardy synt. p. 371.

αὐτὸν] αὐτὸν Vind. EF. ξαντὸν Mon. B.

σχηματισμοῦ καὶ φρονήματος κενοῦ] φρ. ιε. καὶ σχ. Lob. Vind. B. Vat. BM. Similes dictiones congesit Wyttenbachius ad Plut. I. pag. 70. Cf. Ruhnkenius ad Tim. p. 245.

ἀνεῦ νοῦ] Prinstererius Pro-sopogr. Plat. p. 105. Stallbaumio referente hæc verba ex glosse-mate orta suspicatur, cui suspi-cioni ansam praebere potuit Themistius, qui. or. XXI. p. 251. B. hunc locum imitatus ista omisit: καὶ ἐπὶ ταύτῃ τῇ ἔξουσίᾳ ὑψηλὸν ἔξαιρειν αὐτὸν, φρονημα-tismoū ἐμπιπλάμενον. Sed quae sequuntur, ὅτι νοῦς οὖν ἔνεστιν αὐτῷ, ea genuina esse docent, eademque Damascius apud Suidam in *Εὐπειθίος*, quem locum Wyttenbachius indicavit, legisse videtur: κενοῦ φρονήματος ἀνευ νοῦ ἐμπιπλαμένων. Ceterum Petavius ad locum Themistii hunc nostrum citans nescio quo auctore

ita scribit: καὶ ἐπὶ τούτοις ὑψηλὸν ἔξαιρειν αὐτὸν σχήματος κενοῦ, ἀνεῦ νοῦ, ἐμπιπλάμενον. et φρονήματος pro σχήματος scribendum censem.

μάλιστα] μάλιστα Vind. E.

δὴ] μὴ Lob. Vind. B. Vat. M. om. Fic.

διατιθεμένῳ] Ita Lob. sed superscriptis ε super τι et ει super θε. Praesens istarum rerum, quae animum adolescentis corrumpunt, continuationem demonstrat.

ἡρέμα] ηρέμα. Mon. B. ante corr. Ficinus hoc cum tribus sequentiibus ita declaravit: *amice moneat dicens*.

τάληθῆ] τάληθῆ Ald. Bas. ab.

ἔνεστιν] ἔστιν Flor. T. et a m. pr. Ven. B.

τὸ δὲ] τόδε Vind. E. om. Vind. F.

κτητὸν] τακτὸν Ald. Bas. a.

δουλεύσαντι τῇ κτήσει]. δουλεύσαντα τῇ κτίσει Vind. F.

εἰσακοῦσαι] Pollux L. II. 82: Πλάτων δὲ ἔννήκοοι καὶ εἰσακοῦσαι. Est audiendo quasi introrsus ad se recipere.

δεῖ] om. Vind. EF.

δὲ οὖν] om. Vind. B. Vat. M.

ξυγγενὲς] συγγ. Mon. B. (Par. DK. Flor. ACRTUV.) Ald. Bas. ab. Steph. In Mon. B. commate perperam a τῶν λόγων distingui-

πτηται καὶ ἔλκηται πρὸς φιλοσοφίαν, τί οἰόμεθα δράσειν ἐκείνους τοὺς ἡγουμένους ἀπολλύναι αὐτοῦ τὴν χρείαν τε καὶ ἐταιρείαν; οὐ πᾶν μὲν ἔργον, πᾶν δ' ἔπος λέγοντάς τε καὶ πράττοντας καὶ περὶ αὐτὸν, ὅπως ἂν μὴ πεισθῇ, καὶ περὶ τὸν πειθοντα, ὅπως ἂν μὴ οἴσται ἦ, καὶ ίδιᾳ ἐπιβουλεύοντας καὶ δημοσίᾳ εἰς ἀγῶνας καθιστάντας; Πολλὴ, ἦ δ' ὁς, ἀνάγκη. "Εστιν οὖν ὅπως 495 δι τοιοῦτος φιλοσοφήσει; Οὐ πάνυ. Ορᾷς οὖν, ἦν δ' ἐγώ, δτι οὐ κακῶς ἐλέγομεν, ὡς ἄρα καὶ αὐτὰ τὰ τῆς

tur. Cf. L. III. p. 402. A: δι² οἰνειότητα.

εἰς αἰσθάνηται] οἷς αἱ. Vind. E. Par. K. sec. Bekk. ἥδ' αἱ. Lob. Vind. B. Vat. M. εἰσαἰσθ. Vind. F. αἰσθ. (omisso εἰς) Ang. B. διαισθάνηται Mon. B. Flor. U. et Stallbaumius, nesciens, quid isto εἰς faciendum sit. Scilicet τὸν οὐτω διατιθέμενον ex superioribus in mente habens non videbat hic non iam eundem, sed unum aliquem ex eodem numero designari eumque ἔνα dici, quia de pluribus idem praedicari non posse videretur.

E τέ] ex Par. A. Ven. C. a Bekkerō additum et a Stallbaumio in sec. receptum est, quod utique illorum librorum auctoritati tribui debet. Reliqui eo carent.

ἔλκηται — δράσειν] ἔλεγκται — δράσσειν Vind. F.

ἀπολλύναι] ἀπολλῦναι idem. Ficinus hoc cum sex sequentibus perperam monitoris illius usu et consuetudine adolescentem corrumphi interpretatus ideoque a Stephanō p. 23. notatus est.

ἐταιρείαν] ἐταιρίαν Lob. Vind. BEF. Ang. B. Vat. M. Cf. Vol. I. p. 137, a. Pro signo interrogandi Ald. Bas. ab. comma appositum habent.

οὐ] νοὶ Bas. b. Idem Stephanus p. 23. „in uno vet. exemplari“ legi ostendens vulgatae postponit, ea tamen servata infi-

nitivum διατελέσειν vel οὐ πανεσθαι in fine periodi post καθιστάντας desiderat, quia δράσειν haud apte repeteretur. Contra Astius in comm. participia, quae sequuntur, ad οἰόμεθα refert et infinitivorum loco posita statuit, quasi οἷμα σε λέγοντα idem significare possit, quod οἷμα σε λέγειν, atque, ut possit, hic non futuri potius, quam praesentis temporis participia ponenda fuisse. Mihi haec participia gerundiorum vim habere et appositiōnis modo ad verba τί δράσειν referenda videntur: quemadmodum illos transacturos putas? non omnia tentando etc.?

δ' ἔπος λέγοντας] δὲ προσλέγοντας Ven. C. Par. DK. δὲ δῆμα προσλέγοντας Mon. B. et a m. s. Flor. U. δ' ἔπη λέγοντας Vat. B. In margine Par. D. λόγον scriptum est.

αὐτὸν] αὐτῶν Vind. F.

ἀγῶνας] ἀγῶνα Ven. B. cum editis ante Bekkerum:

φιλοσοφήσει] φιλοσοφήσῃ Vind. 495 F. Mon. B.

Ορᾷς] ἄρα Par. A. Vind. E.

ἄρα Flor. AC. οὖν] om. Lob. Vind. B. Vat. BM. Fic.

ἦν] int. vers. a m. s. Vind. F.

ἐλέγομεν] λέγομεν Vind. E. Vat. H. Flor. T. Cf. p. 491. B. ὡς — δτον} om. Vind. F. καὶ αὐτὰ] om. Fic.

φιλοσόφου φύσεως μέρη, δταν ἐν πακῇ τροφῇ γένηται,
αἵτια τρόπου τινὰ τοῦ ἐκπεσεῖν ἐκ τοῦ ἐπιτήδευματος,
καὶ τὰ λεγόμενα ἀγαθὰ, πλοῦτοί τε καὶ πᾶσα ἡ τοιαύ-
τη παρασκευή; Οὐ γὰρ, ἀλλ' ὁρθῶς, ἔφη, ἐλέχθη.
Οὗτος δὴ, εἶπον, ὡς θαυμάσιε, ὅλεθρός τε καὶ δια-

B φθορὰ τοσαύτη τε καὶ τοιαύτη τῆς βελτίστης φύσεως
εἰς τὸ ἄριστον ἐπιτήδευμα, ὀλίγης καὶ ἄλλως γιγνομέ-
νης, ὡς ἡμεῖς φαμέν. καὶ ἐκ τούτων δὴ τῶν ἀνδρῶν
καὶ οἱ τὰ μέγιστα πακὰ ἐργαζόμενοι τὰς πόλεις γίγνον-
ται καὶ τοὺς ἴδιώτας, καὶ οἱ τάγαθὰ, οἱ ἀν ταύτῃ
τύχωσι ϕνέντες· σμικρὰ δὲ φύσις οὐδὲν μέγα οὐδέποτε
οὐδένα οὕτε ἴδιώτην οὕτε πόλιν δρᾷ. Ἀληθέστατα, ἡ

C δ' ὅς. Οὗτοι μὲν δὴ οὕτως ἐκπίπτοντες, οἷς μάλιστα

πακῇ] post τροφῇ Mon. B.
Flor. U.

γένηται] Huic in Vind. F. int.
vers. a m. s. γε praescriptum.

αἵτια] αἵτια Vind. EF. Par.
DK. sec. Bekk.

τρόπον] τρόπον Ald. Bas. a.
τρόπη Bas. b.

ἐπιτήδευματος,] ἐπιτήδευμα-
τος; Steph. Bekk. Stallb.

πλοῦτοί] πλούτει Vind. F.

παρασκευή] παρασκευή Ald.
Bas. a.

Οὐ] οὐ Mon. B. Ald. Bas. ab.
γὰρ,] γὰρ: Vind. E. γὰρ;
Vind. B.

δὴ] om. Fic.

διαφθορὰ] φθορὰ Mon. B.

τοσαύτη τε καὶ τοιαύτη] talis
ac tanta Fic. τε om. Par. K.

B ἄριστον] ἄριστον ante corr.
Vind. F.

ἐπιτήδευμα,] Perperam Stephanus p. 23. comma delendum
censet, ut intelligamus γιγνομέ-
νης ὀλίγης εἰς τὸ ἄριστον ἐπιτή-
δευμα. Verba εἰς τὸ ἄριστον
ἐπιτήδευμα ad ὅλεθρος et δια-
φθορὰ referenda esse quum ipso-
rum collocatio ostendit, tum prae-
positionis εἰς usus et significatio
docet.

ὀλίγης] om. Flor. T.

καὶ ἄλλως] admodum Fic.

φαμέν] diximus idem.

καὶ τοὺς ἴδιώτας] om. Par.

DK. Mon. B. Flor. U. καὶ τοὺς
ἴδιωτας Lob. Vind. B. Vat. BM.
Ven. C.

οἱ τάγαθὰ] οἱ τάγ. Vat. B.
Ven. B. Par. D. οἱ τάγαθα Ald.
Bas. ab. οἱ τάγ. Stephanus, quo-
cum Bekkerus Ἄγ. B. Vat. HM.
et Mon. B. consentire tradit; sed
in Mon. οἱ τὰ ἀγαθὰ legitur, et
οἱ mei omnes habent.

οἱ ἀν] οἶον Vind. F. οἱ ἀν
Par. K. sec. Bekk. Ald. Bas. ab.
unde Stephanus in m. coniecit οἱ
vel ἦ ἀν τύχωσι, ταύτῃ. qua
mutatione opus non esse Astius
docuit, recte sensum vulgatae
hunc declarans: si qui forte huc
(ad bonum et virtutem) feruntur.
Minus recte Schleiermacherus;
neque Ficinus haec satis intelle-
xisse videtur, verba καὶ οἱ τά-
γαθὰ usque ad ϕνέντες ita inter-
pretatus: atque item qui sunt et
privatis et civitatibus bonorum in-
gentium auctores.

φύσις] φύσαν Ang. B.

μὲν] om. Lob. Vind. B. Mon.
B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK.
sec. Bekk. Flor. U.

προσήκει] οὐ πρ. Lob. Vind. C
B. Vat. M. quod verum putat
Stallbaumius: „etenim vix ex antecedentibus τοῦτο τὸ ἐπιτήδευ-
μα commode hic repetieris.“ Sa-
me verba τοῦ ἐκπεσεῖν ἐκ τοῦ
ἐπιτήδευματος longius remota

προσήκει, ἔρημον καὶ ἀτελῆ φιλοσοφίαν λείποντες αὐτοὶ τε βίον οὐ προσήκουντα οὐδ' ἀληθῆ ξῶσι, τὴν δὲ ὥσπερ δόγμαντην ξυγγενῶν ἄλλοι ἐπεισελθόντες ἀνάξιοι ἥσχυνάν τε καὶ ὀνείδη περιηψαν, οἷα καὶ σὺ φῆς ὀνειδίζειν τοὺς ὀνειδίζοντας, ὡς οἱ ξυνόντες αὐτῇ οἱ μὲν οὐδενὸς, οἱ δὲ πολλοὶ πολλῶν κακῶν ἄξιοι εἰσι. Καὶ γὰρ οὖν, ἔφη, τά γε λεγόμενα ταῦτα. Εἰκότως γ', ην δ' ἐγὼ, λεγόμενα. καθοδῶντες γὰρ ἄλλοι ἀνθρωπίσκοι κενὴν τὴν χώραν ταύτην γιγνομένην, καλῶν δὲ ὄνομάτων καὶ προσχημάτων μεστὴν, ὥσπερ οἱ ἐκ τῶν εἰργμῶν εἰς τὰ D ιερὰ ἀποδιδράσκοντες, ἄσμενοι καὶ οὗτοι ἐκ τῶν τεχνῶν ἐκπηδῶσιν εἰς τὴν φιλοσοφίαν, οἱ ἀν κομψότατοι ὅντες τυγχάνωσι περὶ τὸ αὐτῶν τέχνιον. ὅμως γὰρ δὴ

sunt, sed nihil obstat, quo minus ex proxime sequentibus φιλοσοφίᾳ hoc referatur. Neque apparet, cur μάλιστα οὐ dicere maluerit, quam ἡμίστα. Ficinus Oὐτοὶ usque ad αὐτοὶ τε sic convertit: Cum plerique ad philosophandum natura idonei ab hoc studio detorquentur, philosophiamque imperfectam et desolatam destituant.

λείποντες] λείποντες Ven. C. λιπόντες (Par. DK.) Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr. sec.

ἀληθῆ] ἀλιθῆ Ald.

ξυγγενῶν] συγγ. Vind. E. Flor. ACV.

ἐπεισελθόντες] ἐπεισιόντες Vind. B.

φῆς] φῆς Vind. F. commemo-
rabas Fic.

οἱ μὲν] οἱ μὲν οὖν Vind. F.

κακῶν] καλῶν Vind. E.

εἰσι.] εἰσίν. Bekkerus.

ταῦτα] τοιαῦτα Vind. E. In Vind. F. cum sex sequentibus ob homoecoteleuton excidit.

γ'] γε Vind. E. Flor. ACRTV.

γὰρ ἄλλοι] γὰρ οἱ ἄλλοι Vind. F. Ang. B. Flor. R. profecto alii plerique Fic. γὰρ αὖ ἄλλοι Mon. B. Flor. U. Bekkerus et Stallbaumius.

προσχημάτων] Timaeus lex. p. 221: πρόσχημα προπάλνυμα τοῦ ἥθους, ἢ πρόφασις. quorūm

neutrū ad nostrū locū quadrat, posterius ad Hipp. mai. p. 286. A. haud ineptū videtur. Hic vero idem est, quod καλλώπισμα, quo nomine declaratur a Thoma Mag. p. 758. Cf. Vol. I. p. 135, b.

εἰργμῶν] εἰρητῶν Par. K. D

ἄσμενοι] In Ald. Bas. ab. com-
ma post ἄσμενοι, non ante id
positum.

καὶ οὗτοι] om. Fic.

τὴν] om. Vind. B. Vat. H. Flor. V.

οἱ ἀν] οἱ ἀν Par. D. Ald. Bas. ab. οἱα cum litura Vind. F.

τυγχάνωσι] τυγχάνουσι Vind. F. περιτυγχάνωσι Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK.

τὸ αὐτῶν] αὐτὸ Par. DK. τὸ αὐτὸ Lob. Vind. B. Vat. BM. Ven. C. τὸ αὐτῶν Vind. EF. Ald. Bas. ab. non vitiose.

τέχνιον] Ita Par. K. sec. Bip. Lob. Vind. BEF. Mon. B. τεχνίον editi. Bekkerus et Stallbaumius de codicibus tacent. Cf. Buttmannus gramm. II. pag. 334. qui τεχνίον unius loci Diphili apud Athen. L. II. p. 55. D. scriptura vulgata satis tutum habere non debebat. Nunc et ibi τεχνίον scribendum videtur, uti scrispsit Dindorfius, qui de codicibus et vētustis editionibus pariter atque Schweighaeuserus τεχνίον exhib-

πρός γε τὰς ἄλλας τέχνας καίπερ οὕτω πραττούσης φιλοσοφίας τὸ ἀξιώμα μεγαλοπρεπέστερον λείπεται, οὗ δὴ ἐφιέμενοι πολλοὶ ἀτελεῖς μὲν τὰς φύσεις, ὑπὸ δὲ τῶν τε-

bens tacet, et Sueton. Ner. c. 40. τὸ τέχνιον πᾶσα γαῖα τρέφει pro vulgato τεχνίον restituendum. Ceterum quod ante τέχνιον in Mon. B. Flor. U. interpolatum est ἀεὶ, quod Bekkerus et Stallbaumius receperunt, non magis h. l. mihi genuinum videtur, quam L. II. p. 360. A. aut III. 397. B. ubi iidem ex eisdem id scriptori obtruserunt.

πρός γε] πρός τε Vind. B. Vat. M. Ald. Bas. a.

μεγαλοπρεπέστερον] μεγελοπ. Ald.

ἐφιέμενοι] ἐφιέμενοι Ald. Bas. ab.

δὲ] in Vind. F. deletum.

τε] δὲ Vind. F.

δημιουργῶν] τῶν δ. Lob. Vind. E. Vat. M. δημιουργῶν Vat. B.

E συγκεκλασμένοι] συγκεκλεισμένοι Vat. H. Flor. ACV. συγκεκλειμένοι Vind. E. ξυγκεκλασμένοι Par. A. Bekkerus; quem sequi non dubitassem, si vel unus reliquorum codicum accederet, quo minus scribae potius, quam familiæ deberi hoc εἶ videretur.

ἀποτεθρυμμένοι] ἀποτεθρωμένοι Mon. B. ἀποτεθρωμένοι Stephanus in m. ut variam lectionem habet. Idem in Flor. U. exstare videtur, quamquam Stallbaumius eam lectionem in utraque editione cum Bas. b. communicat, quae ἀποτεθρωμένοι habet, ut videri possit hoc potius, quam ἀποτεθρωμένοι. scribere et in Flor. U. Bas. b. repertum significare voluisse. Sed quoniam ipse Basileensem posteriorem non magis, quam priorem aut Aldinan Stephanianam oculis suis perlustravit, sed Astium in eorum lectionibus referendis secutus est, Astius autem h. l. Basileensem b. „ἀποτεθρωμένοι (ἀποτεθρωμένοι?)“ exhibere scriptis (etiam Bipontini ἀποτεθρωμένοι

σμένοι ex illa editione attulerunt) Stallbaumio rem incertam ita definire placuit, ut ἀποτεθρωμένοι, quod ex Flor. U. enotatum videret, etiam in Bas. b. legi decerneret. Sed ea, ut dixi, ἀποτεθρωμένοι habet, et in Lob. super antepenultima vulgatae av scriptum est. Utrumque ex interpretatione vulgatae originem ducere videtur. Magis ancesps iudicium est de alia lectione, ἀποτεθρωμένοι, quam Stallbaumius in pr. ed. marginem Flor. A. in sec. marginem Flor. U. exhibere dicit, quamque Timaeus in suo codice inventam bis in lexico posuit, p. 44: ἀποτεθρωμένοι ἀπηγριωμένοι. εἰληται δὲ πατὰ μεταφροὰν ἀπὸ τῶν τεθρών, ἀπερ ἐλὸν ἄγονα ναὶ ἄγοια φυτά. et p. 248: τὰς ψυχὰς ἀποτεθρωμένοι. ἀντὶ τοῦ ἀπηγριωμένοι ναὶ ἄγονοι. Ad priora Ruhnkenius: „Cum Timaeo ad verbum congruit Lexicon Sangerm. MS.“ (Bekkeri anecd. p. 437, 3: ἀποτεθρωμένοι. ἀπηγριωμένος. εἰληται δὲ πατὰ μεταφροὰν τὴν ἀπὸ τῶν θρών, ἀπερ ἐστὶν ἄγονα ναὶ ἄγοια φυτά. — Θρώνων Bekkerus de Ruhnkenii conjectura scriptis pro τεθρών, quod. in. codice est.) „At Suidas et ex eo Apostolius Proverb. p. 40. legunt ἀποτεθρωμένοι et τεθρών, Apostolius etiam λάχανα pro φυτά. Eandem glossam sic scriptam e Timaeo repetit scholastes Platonis: ἀποτεθρωμένοι. ἀπηγριωμένοι. εἰληται πατὰ μεταφροὰν τὴν ἀπὸ τῶν θρών, ἀεστὶ βοτάνη τις ἄγοια ναὶ ἄγονος.“ Mibi non fit verisimile auctorem huius scholii ἀποτεθρωμένοι legisse, neque insolentia verbi ἀποθρυοῦσθαι, aut adiuncto συγκεκλασμένοι, aut denique Philonis loco τεθρωμένον ναὶ κατεσγότος ναὶ αἰσχίστον

χνῶν τε καὶ δημιουργιῶν ὥσπερ τὰ σώματα λελόβηνται,
οὗτοι καὶ τὰς ψυχὰς συγκεκλαδμένοι τε καὶ ἀποτεθρυμ- Ε
μένοι διὰ τὰς βανανσίας τυγχάνουσιν. η̄ οὐκ ἀνάγκη;

βίον componentis tantum effici
puto, quantum Ruhnkenius, qui
Timaeum monstro lectionis decipi
se passum miratur. Quod autem
Hemsterhusio interpretationem et
procurationem monstri tentanti
atque ἀποθρυνοῦσθαι ut ἀπορ-
νεοῦσθαι, ἀπολιθοῦσθαι, ἀπο-
θηριοῦσθαι eum dici statuenti,
qui in iunceam quasi et insensilem
omnis boni naturam mutetur, con-
tra ἀποτεθρυμμένην ψυχὴν προ-
τεθρυμμένην non magis, quam
defractos mores pro fractos fe-
renti Ruhnkenius obiecit, ἀπο-
θρύπτεσθαι pro θρύπτεσθαι non
minus dicere licuisse, quam ἀπο-
θραύσεσθαι pro θραύσεσθαι, et
si tamen displiceat, levissima mu-
tatione legi posse ἀποτεθρυμμένοι,
attriti, confecti, id quo iure
egregie disputatum contra Hem-
sterhusium dixerit Stallbaumius,
non assequor, quum et praeposi-
tionis, qua ille maxime offendeb-
atur, vis ab eo neglecta et vul-
gatae patrocinio deserto etiam
nova lectio proposita sit. Quid
quod ne Toupium quidem satis
refellere Ruhnkenius videtur, cuius
interpretationem lectionis ἀπο-
τεθρυμμένοι emend. in Suid.
T. III. p. 191. (p. 467. ed. Lips.)
exhibitam: *qui animas habent de-*
missas et in terram more iunci
palustris declinatas propterea
prorsus alienam pronuntiat, quoniā
rei naturae repugnet: iuncum
enim tam rectum stare, ut
ne ventorum quidem vi sternatur.
Verum hoc, neque Toupio inco-
gnitum; sed is de capite iuncī in
terram prono cogitabat atque in-
de metaphoram ductam statuebat.
Parum sane probabiliter; sed eam
ob caussam, quod capitū incli-
natio in iuncō minime insignis
nec talis est, ut ideo animum
demissum habens in iuncum mu-
tatus dici possit. Atque omnino
θρύον, quamvis ἔγονον et ἀ-

γοιον, quum neque humi serpat,
neque rigoris aut asperitatis quic-
quam in se habeat, non facile
verbo ad humilem aut insensilem
animum notandum idoneo, quale
hic requiritur, originem dare po-
tuit. Praeterea valde mirum,
quod, si Plato illos ἀποτεθρυμ-
μένοις dixerat, nemo eorum,
qui verbis Platonicis saepe et
multum utuntur, ut Themistius
et reliqui, hoc item usurpavit.
Contra ἀποτεθρυμμένοι τὰς ψυ-
χὰς propria verbi θρύπτειν et
praepositionis significatione ser-
vata dici possunt ii, quorum ani-
mis quasi arboribus cacumina de-
fracta et vires ad enitendum ne-
cessariae debilitatae sunt; idque
alteri, συγκεκλασμένοι, multo ma-
gis convenire liquet. Has igitur
ob caussas ἀποτεθρυμμένοι ser-
vandum putavi. Idem Astio, qui
in pr. ed. Timaci lectionem rece-
perat, in sec. et tert. placuit;
sed quod in comm. ait ἀπὸ in
compositione significare rei per-
fectionem vel confectionem, ideo-
que ἀποτεθρυμμένοι esse pror-
sus seu penitus fractos seu con-
fractos, quemadmodum Ficinus
interpretatus sit, non animadver-
tit ad ea verba, quae primitivam
præpositionis significationem ad-
mittant, translatam illam adhiberi
non posse, θρύπτειν autem h. l.
non ita dici, ut Latini *frangere*
metaphorice dicebant (quo sensu
Stephanus in thesauro Tom. I.
p. 1594. A. hunc locum respiciens
ἀποτεθρυμμένον fractum deliciis,
luxu corruptum, mollem redditum
et imbecillem, velut fractas deli-
ciis vires habentem interpretatur)
quod ab opificibus et βανανσίοις
prorsus alienum est. — Ficino
utrum συγκεκλασμένοι an ἀπο-
τεθρυμμένοι *confracti* visi sint,
non constat: habet *depressi* atque
confracti.

τὰς] τῆς Mon. B.

*Kai μάλα, ἔφη. Δυκεῖς οὖν τι, ἢν δ' ἔγω, διαφέρειν
αὐτοὺς ἵδειν ἀργύριον πτησαμένου χαλκέως φαλακροῦ
καὶ σικροῦ, νεωστὶ μὲν ἐπειδή περιεπειπόντος τοῦ
496 δεσπότου τὴν θυγατέρα μέλλοντος γαμεῖν; Οὐ πάντα,
ἔφη, διαφέρει. Ποιὸν ἄττα οὖν εἰκὸς γεννᾶν τοὺς τοιού-
τους; οὐ νόθα καὶ φαῦλα; Πολλὴ ἀνάγκη. Τί δέ; τοὺς* 474

*βανανσίας] βανασίας Vind. B.
τυγχάνοντος] τυγχάνοντες Mon.*

B. Flor. U.

ἢ] ἢ Lob.

οὖν ἀνάγκη] οὐκανάγκη Vind.

E.

οὖν] om. Fic.

*φαλακροῦ καὶ σικροῦ] parvo
calvoque idem. φαλ. καὶ σικροῦ καὶ
μικροῦ Vind. E. Hunc locum respe-
xit Themistius ab Ast. laudatus or.
V. p. 64. C: τὸν φαλακρὸν δὲ
καὶ τὸν χαλκέας, τὸν ἐπιτιθε-
μένον τῇ δεσποίνῃ ὁ φανενθεί-
ση, οὖν ἐποίει Πλάτων δημιουρ-
γὸν ἀνθρωπίνης μακριότητος.
et or. XXI. p. 246. D: τί γὰρ
ἄλλο ἔστι, πρὸς Διός, ἢ (id de-
lendum videtur) ὁ χαλκεὺς ἐπεί-
νος, ὁ φαλακρὸς καὶ σικρὸς,
ὁ νεωστὶ τῶν δεσμῶν λελυμένος,
ὁ τὸ σεμνὸν ἰμάτιον περιθέμε-
νος, μέλλων ἐπιχειρεῖν τῇ δε-
σποίνῃ;*

ἐν βαλανείῳ δὲ λελουμένον] om. Vind. B. Vat. M. Pro βα-
λανείῳ Vind. E. ante corr. βα-
λανίῳ habebat.

*νεονορὸν] Timaeus lex. p. 185:
νεονορὸν. νεωστὶ εἰογασμένον.
Eandem glossam Photius (Pors.
p. 295, 21.) et Suidas a Ruhn-
kenio citati exhibent.*

ἱμάτιον] ἱμάτον Ald.

*παρεσκευασμένον] παρεσκευ-
ασμένον Bas. a.*

*μέλλοντος γαμεῖν] (qui) in ma-
trimonium sibi coniunxit Fic.*

496 *διαφέρει] διαφέρειν Ven. B.
Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV.
differre existimo Fic.*

*Ποιὸν ἄττα] ποιὸν ἄττα Vind.
E. ποιὸν ἄττα nulla interpunctione*

*praecedente Ald. Ποιὸν ἄττα Bas.
ab. ποιάττα Lob. Vind. B. ποι-
άττα Vind. F.*

οὖν] om. Vat. H. Fic.

*τοιούτους;] τοιούτους Ald.
Bas. ab.*

*δέ] δαι Par. A. Vat. H. Flor.
ACV.*

*αὐτῆς] αὐτοῖς Par. DK. Ang.
B. Vat. H. Flor. ACR. Ald. Bas.
ab. et cum litura Vind. F. αὐ-
τοῖς Vind. E.*

μὴ] om. Vind. E. Flor. ACT.

*πατ' ἄξιαν] παταξίαν Vind.
EF.*

*ποιὸν ἄττα] ut supra Lob.
Vind. BEF. Bas. ab.*

*διανοήματά] Pollux L. II. 228:
καὶ διανόησις, ὡς Πλάτων. καὶ
διανοήματα. Cf. pag. 504. E.
Tim. p. 71. B.*

ἄρι] ἄρι Vind. EF.

οὐγάρσ] οὔτως Vind. F.

οὐδὲν] οὐδὲ Vat. H. Flor.

ACV.

*οὐδὲ φρονήσεως ἄξιον ἀληθι-
νῆς ἔχόμενον] οὐδὲ φρ. ἄξιον ὡς
ἀλ. ἔχ. Ven. C. οὐδὲ φρ. ἀλ. ὡς
ἄξιον ἔχ. Vind. F. Flor. R. οὐδὲ
φρ. ἀλ. ἄξιον ἔχ. Ang. B. nihil
dignum, nihil prudentiae verac
conveniens Fic. Ficini auctoritate
Stephanus in m. coniecit οὐδὲ
ἄξιον οὐδὲ φρονήσεως ἀληθινῆς
ἔχόμενον, quibus Astius in pr.
ed. locum in contextu concessit.
Idem in sec. et tert. veterem le-
ctionem restituit, sed ἄξιον in
sec. ut insiticum uncis inclusit,
quod Stallbaumius imitatus est,
in tert. suspectum sibi videri sub
contextu demonstravit. Quum ve-
ra sententia pariter digna vera*

ἀναξίους παιδεύσεως, ὅταν αὐτῇ πλησιάζοντες διμιλῶσι μὴ πατέρα ἀξίαν, ποῖον ἄπτα φῶμεν γεννῆν διανοήματά τε καὶ δόξας; ἂρούχος ἀληθῶς προσήκοντα ἀκοῦσαι σοφίσματα καὶ οὐδὲν γνήσιον οὐδὲ φρονήσεως ἄξιον ἀληθινῆς ἔχομενον; Παντελῶς μὲν οὖν, ἔφη. Πάντα μικρον δή τι, ἔφην ἐγὼ, ὡς Ἀδείμαντε, λείπεται τῶν πατέρων ἀξίαν διμιλούντων φιλοσοφίᾳ, ἣ που ὑπὸ φυγῆς Βαταληφθὲν γενναῖον καὶ εὗ τεθραμμένον ἥδος, ἀπορίᾳ

intelligentia atque ei coniuncta dici possit, quidni utroque nomine simul appellatam a scriptore statuamus? praesertim quum coniuncta illi esse nequeat, nisi ea digna est. Itaque ἄξιον appositionis modo ad ἔχομενον referendum, ut τέλεον ad λελεγμένον Polit. p. 280. E: ἀλλ' οὐκ ἔστι πω τέλεον, ὡς παῖ, τοῦτο λελεγμένον. πολὺν ad γιγνόμενον Leg. L. I. pag. 633. B: τὸ περὶ τὰς παροτρήσεις τῶν ἀλγήδονῶν πολὺ παροτρήσεις γιγνόμενον. et similia haud rara, eademque brevitate Latine dicere liceat nihil, quod vera dignum intelligentia nitatur.

Πάντα μικρον] Ita Par. AD. Vind. B. Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Flor. U. πάντα σμικρὸν. Lob. Par. K. Vind. F. πάντα σμικρὸν reliqui codices, Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Formam a Bekkerio receptam bis ut Platonicam commemorat Pollux L. III. 163. et L. VI. 163. Eadem vulgata est Leg. L. X. p. 903. C. et Theaet. pag. 174. E. pro πάντα σμικρὸν optimi codices πάντα μικρα exhibent, quod Bekkerus merito prae-tulit.

ἔφην ἐγὼ] ἔφη ἦν δ' ἐγὼ Par. A. Vat. H. ἦν δ' ἐγὼ Ven. B. Vind. E. Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius. Illud non inusitatum, (cf. p. 507. A. L. I. p. 337. E. 341. D. III. 399. A. 413. A. III. 425. E. 426. B. 427. E. 428. D. 439. C.) sed tamen aliquanto rarius, quam hoc, citius in hoc corrumpi a librariis, quam effungi ex eo potuit.

λείπεται] om. Ven. B. a. m. pr.

πατέρα ἀξίαν] παταξίαν Vind. EF.

ἢ πον] ἢ πον cum circumflexo B super ἢ Lob. ἢ ποῦ Vind. F. ἢ πον Ald. Steph. Ast.

ὑπὸ φυγῆς] υποφυγῆς Vind. E.

παταληφθὲν] παταλειφθὲν Vind. EF. Mon. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. Astius in sec. et Stallbaumius in pr. ed. qui otium ad philosophiam (exilio) nanciscuntur Fic. In sec. Stallbaumius παταληφθὲν restituit et secundum C. Fr. Hermannum interpretatur ab exsilio deprehensos seu quibus exsiliū accidit, quo sensu ἐνυφορὰ dicatur aliquem παταλαβεῖν. Cui interpretationi non solum ὑπὸ φυγῆς, pro quo φυγῆ ponendum erat, sed etiam hoc obstat, quod huiuscēmodi viro exsiliū minime calamitosum, sed opportunum potius et faustum videri debet. Evidem παταλαμβάνειν eadem significatio-ne, qua paullo post πατέχειν dictum accipio et per exsiliū retentos intelligo, qui, si in civitate mansissent, haud dubie philosophiam deseruissent, et oxymorum hoc arbitror simile illi, quod p. 485. E. notavi. Ceterum παταλειφθὲν, quod etiam Heusdio placuisse Geerius de polit. Plat. p. 68. refert, non damno, modo ne υπὸ cum illo in ἀπὸ mutetur, qua mutatione facta ex fuga superstites dicerentur, quum ii, quibus exsiliū retinendae philosophiae caussam attulerit, υπὸ

τῶν διαφθερούντων κατὰ φύσιν μεῖναν ἐπ' αὐτῇ, η̄ ἐν σμικρῷ πόλει ὅταν μεγάλη ψυχὴ φυῇ καὶ ἀτιμάσασα τὰ τῆς πόλεως ὑπερίδῃ· βραχὺ δέ πού τι καὶ ἀπ' ἄλλης τέχνης δικαιώσαν εὑφυὲς ἐπ' αὐτὴν ἀν ἔλθοι. εἴη δ' ἀν καὶ ὁ τοῦ ἡμετέρου ἐταίρου Θεάγους χαλινὸς οἶος κατασχεῖν· καὶ γὰρ Θεάγει τὰ μὲν ἄλλα πάντα παρε-

C σκεύασται πρὸς τὸ ἐκπεσεῖν φιλοσοφίας, η̄ δὲ τοῦ σώματος νοσοτροφία ἀπείργουσα αὐτὸν τῶν πολιτικῶν

φυγῆς καταλειφθῆναι sc. τῇ φιλοσοφίᾳ dici potuisse videantur.

γενναῖον] Primum v Mon. B. int. vers. a m. s. habet.

ἀπορίᾳ τῶν διαφθερούντων] philosophiae adversis occupationibus liberi Fic. — διαφερόντων cum ḥ super ε Vat. B.

κατὰ φύσιν] καταφύσιν Vind. E.

σμικρῷ] μικρῷ idem.

ψυχὴ] ψυχῆ Vind. EF.

ὑπερίδῃ] ὑπερίδοι Lob.

πού τι] τι πον Ang. B. Vind. F. Flor. R.

ἀπ' ἄλλης] πάλλης Vind. F.

τέχνης] τέχνη μεταλαβοῦσα Ang. B.

ἀτιμάσαν] ἀτιμάσασα Par. DK. Vind. F. Flor. U. Idem in Mon. B. scriptum, sed punctis notatum fuit, quibus a m. s. deletis ultimae syllabae linea subiecta et in m. littera ν posita est. Ficinus haec a βραχὺ inde sic convertit: ac multo magis contemptis reliquarum artium opificiis. quo duce Stephanus p. 23. τὰ ante ἀπ' ἄλλης inserendum et ante εὑφυὲς hypostigmen ponendam, vel etiam καὶ τὸ ἐπ' ἄλλας τέχνας δικαιώσαν εὑφυὲς, legendum putat. Frustra. Obiectum participii ἀτιμάσαν nullo negotio e verbis ἀπ' ἄλλης τέχνης petendum.

ἀν ἔλθοι] Ante Astii sec. ἀνέλθοι scribebatur, quod ille ex coniectura divisit, divisumque legitur in Ven. B. Mon. B. Ste-

phanus l. c. ἀνέλθη malebat, quod in Vind. B. Vat. M. exstat. Reliqui ἀνέλθοι habent.

ἐταίρον] ἐτέρον Bas. ab.

κατασχεῖν] κατασχῇ Vind. F.

παρεσκεύασται] in eo statu fuerant Fic.

νοσοτροφία] Adelianus V. H. C L. III. c. 15: λέγει δὲ καὶ Πλάτων τὸν Θεάγην φιλοσοφῆσαι δὲ οὐδὲν ἄλλο, η̄ διὰ τὴν νοσοτροφίαν εἰργούσα γὰρ αὐτὸν ἐκείνη τῶν πολιτικῶν συνήλασεν εἰς τὸν τῆς σοφίας ἔρωτα.

οὐδὲ ἄξιον] οὐδὲ ἄ. Vind. F. Ang. B. Flor. R. nunc non decet Fic.

οὐδενὶ] οὐδὲν Vind. F. Cf. Apol. p. 17. B; οὐτοι μὲν οὐν, ὥσπερ ἔγω λέγω, η̄ τι η̄ οὐδὲν ἀληθὲς εἰργήσαν. in quibus verba η̄ τι η̄ vulgo omissa ex codicibus optimis, inter quos Lob. est, recipienda fuisse Bekkerus sero intellexit. Similiter iam Herodotus L. III. c. 140: ἀναβέβητε δ' η̄ τις η̄ οὐδείς κω παρ ημέας αὐτῶν. tum Xenophon et alii, quos Valckenarius significavit.

οἱ γενόμενοι καὶ γενόμενοι] Ita Par. ADK. sec. Bekk. Vind. F. Vat. B. Ven. C. Flor. RU. et cum ενο super ενό Lob. οἱ γενόμενοι Ang. B. οἱ γενόμενοι Ven. B. a m. pr. quicunque gustant Fic. οἱ γενόμενοι καὶ γενόμενοι reliqui codices (Mon. B. in prioris participii litteris εν correctus) et editi omnes, quasi inter paucos illos esse possint,

κατέχει. τὸ δ' ἡμέτερον οὐκ ἄξιον λέγειν, τὸ δαιμόνιον σημεῖον· ηγάρ πού τινι ἄλλῳ ηγούδειν τῶν ἔμπροσθεν γέρονε. καὶ τούτων δὴ τῶν ὀλίγων οἱ γενόμενοι καὶ γενόμενοι, ὡς ἡδὺ καὶ μακάριον τὸ πτῆμα, καὶ τῶν πολλῶν αὐτὸν ἴκανως ἰδόντες τὴν μανίαν, καὶ ὅτι οὐδεὶς οὐδὲν ὑγίεστις ἡπος εἰπεῖν περὶ τὰ τῶν πόλεων πράττει, οὐδὲν ἔστι ξύμμαχος, μεθ' ὅτου τις ἵων ἐπὶ τὴν τῷ δι- D καίῳ βοήθειαν σώζοιται, ἀλλ' ὥσπερ εἰς θηρία ἄν-

qui non experiantur signum divinum, quod tamen eis contigit, a quibus proinde discerni debuerint illi, qui experiantur; aut, si γενόμενοι eodem pertineat, quo γενόμενοι, et rei dulcedinem suavitatemque experientes significet, num inter eos, qui quum maxime vel identidem experientur, et qui aliquo tempore experti sunt, tantum discriminem intercedit, ut praesens vel cerebra experientia simul cum praeterita tribuenda eis fuerit? Nonne satis est vel semel illud gustasse? Itaque γενόμενοι praetuli: horum paucorum in numero relati, seu quibus contigit inter eos referri, et partem eorum fieri. Sic Leg. L. VI. p. 754. D: οἱ δὲ δὴ γενόμενοι τῶν ἐπτὰ καὶ τριάκοντα. et supra L. II. p. 360. A: τῶν ἀγγέλων γενέσθαι. Neque sine caussa sic potius, quam οὗτοι δὴ οἱ ἔλιγοι, γενόμενοι scriptum est. Scilicet non per se, sed divino numine tales facti et illorum in numero constituti sunt. αὐτὸν ināνως] om. Fic.

τὰ] om. Par. K.

πράττει] πράττοι Lob. Vind. BE. Vat. BHM. Ven. B. Flor. ACTV.

ἔστι] ἔτι Vind. F. ante corr.

ξύμμαχος] socius aliquis et adiutor Fic.

μεθ' ὅτου] μεθότου Vind. BF.

D τὴν τῷ δικαίῳ βοήθειαν] Pro τὴν βοήθειαν (βοήθειαν Ald.) Mon. B. Par. DK. Flor. U. τὴν βοήθειαν, pro τῷ δικαίῳ autem omnes, ut videtur, codices cum editis τῶν δικαίων exhibent, uno

Vind. F. excepto, qui τῷ δικαίῳ a m. pr. scriptum et ν a m. sec. int. vers. utrique additum habet. Cuius libri satis vetusti et boni auctoritatem secutus sum, quia earum significationum, quas vulgata habere potest, nulla apta, ea vero, quae apta est, vulgatae non certo inesse videtur. Nam η τῶν δικαίων βοήθεια auxilium est vel a iustis vel rebus in iustis (cf. Xen. Mem. II. 6, 25: τοῖς φίλοις τὰ δίκαια βοήθειν) vel contra iustos seu iusta (cf. Plat. Gorg. p. 509. C: βοήθειαν δευτέραν τὴν τοῦ δευτέρου ιακοῦ καὶ τοίτην τὴν τοῦ τοίτον) latum vel ferendum: iustis vel hominibus vel rebus ferendum nescio an. Platonii quidem semper η τοῖς δικαίοις βοήθεια dicatur. Sic Gorg. p. 522. D: αὔτῃ γάρ τις βοήθεια ἔστω πολλάκις ημῖν ὡμολόγηται ιστορίῃ εἴναι. Theaet. p. 168. C: τῷ ἔταιρῷ τοις εἰς βοήθειαν. Alcib. I. p. 116. A: τὴν ἔρα ἐν τῷ πολέμῳ τοῖς φίλοις βοήθειαν. Omnino Platonem hanc dativi structuram frequenter usurpasse ad p. 493. D. observatum est; neque ea, quae Matthiae gramm. p. 681. commemoravit, τῷ τῶν θεῶν θύματα, η τοῦ θεοῦ λατρεία et similia cum hac dictione comparari possunt, quum substantiva illa non actionem, sed rem vel statum, et genitivi non obiectum, sed possessorem vel originem significant. Ceterum facillime —αι in —αι mutari ad p. 487. C. monui.

σώζοιται] σώζοι τ' Vind. E. Ald.

θρωπος ἔμπεσῶν οὐτε ξυναδικεῖν ἐθέλων οὐτε ίκανὸς
ἂν εἰς πᾶσιν ἀγρίοις ἀντέχειν, πρὶν τι τὴν πόλιν ἦ
φίλους ὄντος, προαπολόμενος ἀνωφελῆς αὐτῷ τε καὶ
τοῖς ἄλλοις ἀν γένοιτο, ταῦτα πάντα λογισμῷ λαβὼν
ἥσυχίαν ἔχων καὶ τὰ αὐτοῦ πράττων, οἶον ἐν χειμῶνι
κονιορτοῦ καὶ ζάλης ὑπὸ πνεύματος φερομένου ὑπὸ¹
τειχίον ἀποστάς, δρῶν τοὺς ἄλλους καταπιμπλαμένους
Ε ἀνομίας ἀγαπᾶ, εἴ πη αὐτὸς καθαρὸς ἀδικίας τε καὶ
ἀνοσίων ἔργων τόν τε ἐνθάδε βίον βιώσεται καὶ τὴν
ἀπαλλαγὴν αὐτοῦ μετὰ καλῆς ἐλπίδος ἰλεώς τε καὶ εύ-

ἔμπεσῶν] ἔμπεσῶν Vind. E.
εἰς] τοὺς Par. DK. et, ut vi-
detur, Flor. T. quem Stallbaumius
in pr. ίκανὸς ἂν πᾶσιν cum Par.
K. exhibere tradit.

προαπολόμενος] προσαπολό-
μενος Vind. EF. Flor. AC.
αὐτῷ] αὐ. Lob. Vind. EF.

γένοιτο,] In editionibus ante
Bekkerum plenius hic interpungit-
tur, Bekkerus autem, quem Stall-
baumius et Astius secuti sunt,
commati lineam abruptae construc-
tionis indicem addidit. Sed nu-
meri mutationes proximis tam est
accommodata, ut omnia legitimo
tenore procedere videantur.

λαβὼν] λαβόντες Flor. R. λα-
βωντες Ang. B. λαβὼν, sup. a
m. s. ὄντες, Vind. F. Similiter
in sequentibus ἔχοντες, πράττον-
τες, δρῶντες, ἀγαπῶσιν et αὐ-
τοὶ καθαροὶ Flor. R. ἔχωντες,
πράττοντες, δρῶντες, ἀγαπῶ-
σιν cum α super penultima, αὐ-
τοὶς et καθαροὶς coniunctis utris-
que lectionibus Ang. B. οντες
super ultimis participiorum ἔχων
et πράττων, ντες super ultima
in ὑποστάς, (pro quo ὑποστά-
σεις in Flor. R. scriptum esse di-
citur) τες super ultima in δρῶν,
πῶσιν super ἀγαπᾶ, οι et οι
super αὐτὸς et καθαρὸς Vind.
F. a m. s. habet, et Ficinus quo-
que ubique pluralem loco singu-
laris posuit.

αὐτοῦ] αὐ. Lob. Vind. EF.
Ald. Bas. ab.

ζάλης] Photius Pors. pag. 44.
Lips. ζάλη· μεγάλη ἔειλλα. ἀπὸ

τοῦ σφόδρα ἀλίξεσθαι. καὶ ζά-
πλοντος ὁ σφόδρα πλούσιος. Πο-
λείσιος οἶον ἐν χειμῶνι ὑπὸ κο-
νιορτοῦ καὶ ζάλης ὑπὸ πνεύμα-
τος φερομένου ὑπὸ τειχίου ὑπὸ-
στάς. Eadem fere Suidas habet
in ζάλη, quae in ed. Basil. ita
scripta sunt: Ζάλην. μεγάλην ἔλα:
ἀπὸ τοῦ σφόδρα ἀλίξεσθαι. καὶ
ζάπλοντος, ὁ σφόδρα πλούσιος:
πλέοντος πολιτεία. οἶον ἐν χειμῶνι
ἀπὸ κονιορτοῦ; καὶ ζάλης ὑπὸ²
πνεύματος φερομένου ὑπὸ τειχίου
ὑποστάς. Longius a nostris codi-
cibus et a veritate discedit The-
mistius or. VIII. p. 104. C. hunc
locum ita laudans: ὅσπειρι ἐν ζά-
λῃ κονιορτοῦ, φησιν ὁ Πλάτων,
ὑπὸ πνεύματος φερομένου ὁρῶν-
τες τοὺς ἄλλους καταπιμπλαμέ-
νους ἀδικίας τε καὶ ἀνόμων ἔρ-
γων αὐτοῦ στάντες ὑπὸ τειχίου
τό γε μὴ τὰ αὐτὰ παθεῖν τοῖς
πολλοῖς νέοδος ηγήσονται. Lon-
gissime vero Maximus Tyr. diss.
V. p. 34. Steph. (XXI. p. 416.
Lips.) συνυποσταλεῖς, φησιν ὁ
Σωρόπτης, ὑπὸ τὸ τειχίου τοὺς
ἄλλους δρῶ ζάλη καὶ ἀμηχανία
κινωμένους. Ficinus haec οὖν
φερομένου parum accurate in-
terpretatus est: ac velut in pro-
cella, dum et turbo agitatur et
venti perflant et offunditur pul-
vere coelum. ζάλη hic imbrex
significat vento agitatum, μετὰ
ὄμβρου πνοὴν, ut est apud He-
sychium, cuius prima explicatio,
συστροφὴ ἀνέμων μεγάλων (με-
γάλη ἔειλλα Photii) ad alterum
Platonis locum Tim. pag. 43. C.

μενής ἀπαλλάξεται. Ἀλλά τοι, ηδ' ὅς, οὐ τὰ ἐλάχιστα
ἄν διαπολέμενος ἀπαλλάττοιτο. Οὐδέ γε, εἶπον, τὰ 497
μέγιστα, μὴ τυχὸν πολιτείας προσηκούσης· ἐν γὰρ
προσηκούσῃ αὐτός τε μᾶλλον αὐξήσεται καὶ μετὰ τῶν
ἰδίων τὰ κοινὰ σώσει. Τὸ μὲν οὖν τῆς φιλοσοφίας ὡν
ἔνεκα διαβολὴν εἴληφε, καὶ ὅτι οὐ δικαίως, ἐμοὶ μὲν
δοκεῖ μετρίως εἰρηνῆσθαι, εἰ μὴ ἔτ' ἄλλο λέγεις τι σύ.
Ἀλλ' οὐδὲν, ηδ' ὅς, ἔτι λέγω περὶ τούτου· ἀλλὰ τὴν
προσηκούσαν αὐτῇ τίνα τῶν νῦν λέγεις πολιτειῶν;
Οὐδ' ἡντιναοῦν, εἶπον, ἀλλὰ τοῦτο καὶ ἐπαιτιῶμαι, B

apposita est, quem post nostrum laudant Suidas et Photius. *χαλάζης*, quod Astius in sec: pro *ξάλης* h. l. scribendum coniiciebat, merito in tert. ed. non iterum proposuit, neque *ξάλη* ita intelligendum est, quod Stallbaumius statuere videtur, qui Astio glossam lexici Coislin. obiicit: *ξάλη· ή ταραχὴ τῆς θαλάσσης, καὶ ή χάλαζα.*

ὑπὸ πνεύματος] *ὑποπνεύματος* Vind. E.

ὑπὸ τείχουν] *ὑποτείχιον* idem. *ὑπὸ τείχουν* Vind. F. a m. pr. *ὑπὸ τοιχίου* Mon. B. Flor. U. *intra parietes* Fic.

ἀποστάς] Ita Par. A. Vind. F. et Basilius loco ab Astio comm. p. 544. relato. *στὰς* Flor. V. *ὑποστάς* reliqui cum edit. ante Bekkerum. *tuti permanent* Fic. Cf. Polit. p. 272. E: εἰς τὴν αὐτοῦ περιωχὴν ἀπέστη. Sympos. 175. B: ἐνίστε ἀποστάς ὅποι ἀν τύχῃ, ἔστημεν. Vid. Schaeferus ad Hecubam Porsoni Lips. 1824. p. 61. sq. Eadem significatione Latini *absistere* dicunt. Sic Plautus alibi et Mil. II. 2, 46: *illuc sis vide, quemadmodum abstitit.*

E *τὸν τε ἐνθάδε βίον*] om. Fic. *βιώσεται*] *βιώσονται* Flor. R. et, sup. ε, Ang. B. In Vind. F. ov super ε a m. s. scriptum est.

αὐτοῦ] *αὐτῶν* Flor. R. et, sup. οὐ, Ang. B. *αὐτοῦ*, sup. a m. s. ὡν, Vind. F.

ἴλεως] Vind. F. *ῳ* a m. sec. super ὡς habet; item εἰς super ultima nominis εὐμενῆς.

ἀπαλλάξεται] *ἀπαλλάξονται* Flor. R. et, sup. ε, Ang. B. *ἀπαλλάξεται*, sup. οὐ, Vind. F. ἀν] om. Lob. Vind. BE. Ven. B. Vat. HM. Flor. ACTV.

ἀπαλλάττοιτο. Οὐδέ] *ἀπαλλάττοιτο*. οὐδέ Ald. *ἀπαλλάττοιτο*, οὐδέ Bas. ab.

αὐξήσεται] *proficiet emicabitque* Fic.

μετὰ τῶν ιδίων τὰ κοινὰ] Ita Par. AK. sec. Bekk. et corr. in μετὰ D. Vind. F. Mon. B. Ang. B. Flor. RU. et margo A. et a m. pr. Ven. C. *τὰ τῶν ιδίων τὰ κοινὰ* Ald. Bas. ab. *τὰ τῶν ιδίων καὶ τὰ τῶν κοινῶν* Leb. Vind. BE. Vat. BHM. Ven. B. Flor. ACTV. *τὰ τῶν ιδίων καὶ τὰ κοινὰ* Steph. Ast. pr. sec.

ἐμοὶ] *ἐμοὶ* Vind. F. *εἰρηνῆσθαι*,] *εἰρηνῆσθαι*. Bas. ab. Bekk. *εἰρηνῆσθαι*. Steph.

ἔτ'] *ἔτι* Lob. Vind. BE. *τούτον*] *τούτῳ* Vind. F. *αὐτῇ*] *αὐτοῖς* Lob. Vind. BE. Vat. BHM. Ven. C. Ang. B. *philosophis* Fic. *αὐτῆς* Ald. Bas. ab. quod Stephanum ex conjectura correxisse eius annotatio p. 23. docet, in qua dubitat, utrum *αὐτῇ*, an *αὐτοῖς* secundum Ficinum scribendum sit.

τίνα] *τίνᾳ* Vind. F. *τῶν*] *τῆς* Par. K. *πολιτειῶν*;] *πολιτειῶν*. Ald. Steph.

ἡντιναοῦν] *ἡντιν' οὐν* Vind. B. F. Ang. B. *ἡντιν' οὐν* Flor. R. ἀλλὰ — *ἐπιτηδευμάτων* C.] ex-

μηδεμίαν ἀξίαν εἶναι τῶν νῦν πατάστασιν πόλεως φιλοσόφου φύσεως· διὸ καὶ στρέφεσθαι τε καὶ ἄλλοιοῦσθαι αὐτὴν, ὡσπερ ξενικὸν σπέρμα ἐν γῇ ἀλλη σπειρόμενον ξείτηλον εἰς τὸ ἐπιχώριον φιλεῖ κρατούμενον λέναι, οὗτο καὶ τοῦτο τὸ γένος νῦν μὲν οὐκ ἴσχειν τὴν αὐτοῦ δύναμιν, ἀλλ' εἰς ἄλλότριον ἥθος ἐκπίπτειν· εἰ δὲ λήψεται **C** τὴν ἀρίστην πολιτείαν, ὡσπερ καὶ αὐτὸς ἀρίστον ἔστι, τότε δηλώσει, ὅτι τοῦτο μὲν τῷ ὅντι θεῖον ἦν, τὰ δὲ

cerpsit Stobaeus serm. XXXXI.
p. 259. om. Trinc.

τῶν] τὴν Par. K. Stob. excepto cod. A. secundum quem Gaisfordius τῶν scripsit.

πατάστασιν — διὸ] πατάστα διὸ, omissis mediis, Ang. B.

ὡσπερ] utque Fic. Et καὶ ante ὡσπερ inserendum coniecit in m. Stephanus. Contra Stallbaumius haec appositionis modo addita censem et colo a praecedentibus distinguit, quae ratio alibi iniri potest, huic loco propter maiorem sequentium ambitum, praecipue vero propter illud μὲν post νῦν, quod deinceps dicendis intentum magis, quam antea dictorum explicationem molientem animum prodit, non convenit. ὡσπερ arte cum praecedentibus cohaeret, minus arte οὕτω, sed ita, ut ne hoc quidem pleniorum interpunktionem admittat. Refertur enim ad ὡσπερ, non aliter ac si id nullo cum superioribus nexus coniunctum, sed ipsius adverbii demonstrativi caussa positum esset; quae negligentia sermonem familiarem haud dedecet et in his dialogis frequentissima est.

γῇ] τῇ Vind. F.

ξείτηλον] ξείτηλον idem.

τὸ γένος] τὸ om. Vind. E.

ἴσχειν] ἴσχον, omissa post δύναμιν particula ἀλλ', Stobaeus (excepto cod. A. qui ἴσχυν et ἀλλ' habet) et editi ante Bekkerum, qui de Ven. B. tacet, reliquos infinitivum et particulam

habere testatur. Accedunt his Florentini meique omnes. Bipontini ex Par. K. tantum ἴσχειν, non etiam ἀλλ' enotaverunt. Finianus ἴσχον legisse videtur: *ita et hoc genus, propria nunc amissa virtute, in alienam speciem permutatur.* Neque Astius in tert. ed. Bekkerum sequi voluit.

αὐτοῦ] αὐ. Lob. Vind. EF.

ἥθος] Ita Par. A. Ven. C. Vind. F. Ang. B. Stob. cod. A. Reliqui codices cum editis εἶδος habent, quod satis bonum et ad γένος magis accommodatum videri non nego. Sed tamen philosopha indoles, quamvis retinere vim ac virtutem suam nequeat, nunquam ita mutari potest, ut in aliud genus aliamque naturam transeat, non magis, quam ex semine peregrino indigenae plantae species provenit. Itaque εἰς ἄλλότριον εἶδος ἐκπίπτειν non proprie dicetur, sed metaphorice, in alieni generis similitudinem abire; atque id ipsum proprie dictum est εἰς ἄλλότριον ἥθος ἐκπίπτειν, a sui generis more desciscere et alienum induere. Ceterum Budaeus comm. p. 745. ed. Basil. 1556. hunc locum laudans nescio qua auctoritate εἰς ἄλλότριον εἶδος τῆς πολιτείας ἐκπίπτει scripsit, quod prorsus ineptum est additamentum.

ἐκπίπτειν] ἐκπίπτει Lob. Vind. BE. Vat. BHM. Ven. BC. Flor. ACTUV.

C τότε] πότε Stob. cod. A.
μὲν] μὲν τι Par. K. Ast. pr. sec.

ἄλλα ἀνθρώπινα, τά τε τῶν φύσεων καὶ τῶν ἐπιτηδευμάτων. δῆλος δὴ οὖν εἰ, ὅτι μετὰ τοῦτο ἐργάζει, τίς αὕτη ἡ πολιτεία. Οὐκ ἔγνωσ, ἔφη· οὐ γὰρ τοῦτο ἔμελλον, ἀλλ' εἰ αὕτη, ἣν ἡμεῖς διεληλύθαμεν οἰκίζοντες τὴν πόλιν, ἥ ἄλλη. Τὰ μὲν ἄλλα, ἥν δ' ἔγω, αὕτη· τοῦτο δὲ αὐτὸν ἐργάζη μὲν καὶ τότε, ὅτι δεήσοι τι ἀξεῖ ἐνεῖναι ἐν τῇ πόλει λόγον ἔχον τῆς πολιτείας τὸν αὐτὸν, D ὅνπερ καὶ σὺ, ὁ νομοθέτης, ἔχων τοὺς νόμους ἐτίθεις.

τῶν ὕντι] τωόντι Vind. E.

δὲ] om. idem.

καὶ τῶν] καὶ τὰ τῶν Vind. B. F. Par. DK. Ang. B. Flor. R. Ast. sec.

δῆ οὖν] autem Fic.

μετὰ τοῦτο] μετατοῦτο Vind. BE.

ἔργάζει] Ita Par. A. Ven. C. et a m. pr. Wind. F. Reliqui mei (et Bekkeriani) cum editis ante Astium ἔργα.

Οὐκ ἔγνωσ] οὐκ ἔγνω, addita a m. s. s., Mon. B. οὐκ ἔγνων Wind. E. Flor. ACT. οὐκ ἔγωγε, in m. ἄλλως. οὐκ ἔγνων, Flor. R. ἄλλον οὐκ ἔγνων οὐκ ἔγωγε Ang. B. In Wind. F. ἔγνωσ a m. s. in ἔγωγε mutatum est.

ἔμελλον] ἔμελλον Ald.

εἰ] ἥ Vind. B. Vat. M.

αὕτη] Ita Par. A. αὕτη Ven. C. αὕτη reliqui editionesque ante Bekkerum, quod multo est deterioris. Et αὕτη in responsione est.

ἥν] ἥν Lob.

ἄλλα] ἄλλα Ald.

αὕτη — ἐνεῖναι] om. Mon. B. Par. DK. Flor. U. Pro αὕτη Wind. E. αὕτη habet.

αὐτὸν] om. Fic.

τότε] Videtur L. III. p. 423. E. respici.

δεήσοι] Ita Par. A. Wind. F. Ven. C. Ang. B. Flor. R. Bekkerus, Astius in tertia et Stallbaumius in sec. ed. Ceteri δεήσει.

ἐνεῖναι] ἐν εἶναι Par. A. Wind. F. Ang. B.

ἔχον τῆς] ἔχοντα τῆς Par. DK. Mon. B. ἔχων τῆς Wind. F. ante corr. ἔχοντες Vind. E. τῆς Vat. B.

ὅνπερ] ὥσπερ Vind. F. Ang. D B.

ἐτίθεις] ἐτίθης Par. K. Bekkerus et in tert. Astius. Eandem formam optimo iure Bekkerus L. VII. p. 528. D. restituit et Gorg. p. 500. B. vulgati ἐτίθον loco secundum meliores codices, quibus Lob. Wind. G. et ἐτίθειν exhibentes Flor. FP. accedunt, ἐτίθην scripsit. Sed Menex. p. 236. B. συνετίθει non videtur cum συνετίθη, quod Par. EF. et a m. pr. Ven. B. habent, permittandum, multo vero minus ἐτίθει Leg. I. 630. E. et 631. A. contra omnes codices veteresque editiones corrigendum fuisse, quod Bekkeri exemplo fecit Stallbaumius, ἐτίθη sine nota in contextu ponens et tamen in Menexeno συνετίθει retinens. Eodem modo statuendum de ἡφίει Lys. p. 222. B. pro quo Bekkerus ex conjectura scripsit ἡφίη, et de ἡφίει Lach. p. 183. E. cuius terminacionem intactam reliquit, initium secundum Ven. B. Par. G. auxit et πατηφίει edidit. Quod autem ad ἡφίειν attinet, quod Euthyd. p. 293. A. unius Ang. C. auctoritate Bekkerus in ἡφίην mutavit, rationes a Buttmanno gramm. I. p. 542. ad vulgatam defendendam allatas probare non possum et vel sine codice ἡφίην scribi debuisse censeo.

'Ερδήθη γὰρ, ἔφη. Ἄλλ' οὐχ ἴκανῶς, εἶπον, ἐδηλώθη, φόβῳ ὃν ὑμεῖς ἀντιλαμβανόμενοι δεδηλώνατε μακρὰν καὶ χαλεπὴν αὐτοῦ τὴν ἀπόδειξιν, ἐπεὶ καὶ τὸ λοιπὸν οὐ πάντας ὁρᾶστον διελθεῖν. Τὸ ποῖον; Τίνα τρόπον μεταχειρίζομένη πόλις φιλοσοφίαν οὐδὲ διολεῖται. τὰ γὰρ δὴ μεγάλα πάντα ἐπισφαλῆ, καὶ, τὸ λεγόμενον, τὰ καλὰ Ε τῷ ὄντι χαλεπά. Ἄλλ' ὅμως, ἔφη, λαβέτω τέλος ἡ ἀπόδειξις τούτου φανεροῦ γενομένου. Οὐ τὸ μὴ βούλεσθαι, ἦν δ' ἔγω, ἀλλ' εἴπερ, τὸ μὴ δύνασθαι διακωλύσει παρὸν δὲ τὴν γ' ἐμὴν προσθυμίαν εἴσῃ. σκόπει δὲ καὶ νῦν, ὡς προσθύμως καὶ παρακινδυνευτικῶς μέλλω λέγειν, ὅτι τούτωντίον, ἢ νῦν δεῖ τοῦ ἐπιτηδεύματος τούτου πόλιν ἀπτεσθαι. Πῶς; Νῦν μὲν, ἦν δ' ἔγω,

ἐδηλώθη] om. Mon. B. Par.
DK. Flor. U.

ὑμεῖς] *ἡμεῖς* Lob. Vind. B.
Ald. Bas. ab. Idem in Mon. B.
ante correctionem erat.

καὶ χαλεπὴν] post *αὐτοῦ* Par.
K.

ἀπόδειξιν,] *ἀπόδειξιν.* Ald.
Bas. ab. Steph.

καὶ] om. Fic.

πάντως] Bekkerus *πάντων* re-
quirit. Contra Stallbaumius. *πάν-*
τῶς hic similiter cum superlativo
iunctum monet, ut διαφερόντως
Tim. p. 23. C. et *πάννυ* quibus-
dam Luciani locis. Non opus est
exemplis, ut *πάντως* ὁρᾶστον
omnino et omnibus modis facillim-
um dici potuisse demonstretur.
Quo enim alio modo dicerent?
Neque illud metuendum, ne res,
quae omnino facillima esse nege-
tur, partim esse facillima affir-
mari videatur. Nam eadem mo-
deratione οὐ *πάντως* ὁρᾶστον di-
cebant, qua οὐ *πάννυ* ὁρᾶσιον.

δὴ] om. Vind. B.

τὰ καλὰ τῷ ὄντι χαλεπά] Cf.
scholiastes ad Cratyl. p. 384. A.
qui in Civitate quoque hoc pro-
verbio usum Platonem animadver-
tit. Usus est iam supra L. IIII.
p. 435. C. — *τωάντι* — Vind. E.

E *εἴπερ,]* Comma Astius in sec.
ponendum ostendit. Antea dee-
rat.

τὸ] τῷ Vind. F. τῷ τὸ Ang.
B.

διακωλύσει] κωλύσει Mon. B.
Flor. U. Par. K. sicc. Bip.

γ' ἐμὴν] γε μὴν Vind. F. Ald.
Bas. ab.

εἴσῃ] εἰσει Vind. F. Flor. R.
et, sup. η, Ang. B. cum recen-
tioribus.

σκόπει] σκόπη Vind. E.

δὲ] age Fic.

ἢ] οὖν Vind. E.

πόλιν] Ita Par. ADK. Löb.
Vind. BEF. Vat. M. et fortasse
a m. pr. B. Ven. C. Ang. B.
Mon. B. Flor. ACRTUV. *πάλιν*
Ven. B. Vat. H. (et a m. s. B.)
Ald. Bas. ab. Steph. quod frustra
tueri conatus est Grossmannus,
theologus Lipsiensis, vir praé-
stantissimus, epistolae ad Mat-
thiaeum et Ramshornium Altenbur-
gi III. Kal. Febr. MDCCXXVII.
datae p. 7.

ἀπτεσθαι] μὴ ἀπτ. Vind. B.

Νῦν μὲν] Porro nunc Fic.

οἵ] οἱ Bas. b. εἰ Ang. B. Flor.
R. Vind. E. et a m. s. F.

καὶ] punctis notatum in Mon.
B. om. Fic.

τὸ μεταξὺ] τομεταξὺ Löb. 498
Vind. E. et a m. s. B. Ald.
Steph.

οἰκονομίας] οἰκονομίας τε Ven.
B. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. ta-
centibus de Par. K. Bip.

οἱ καὶ ἀπόμενοι μειοάκια ὅντα ἄρτι ἐκ παιδῶν τὸ με- 498.
 ταξὺ οἰκονομίας καὶ χρηματισμοῦ πλησιάσαντες αὐτοῦ
 τῷ χαλεπωτάτῳ ἀπαλλάττονται, οἱ φιλοσοφάτατοι ποιού-
 μενοι· λέγω δὲ χαλεπώτατον τὸ περὶ τοὺς λόγους· ἐν
 δὲ τῷ ἔπειτα, ἐὰν καὶ ἄλλων τοῦτο πραττόντων παρα-
 καλούμενοι ἐθέλωσιν ἀκροαταὶ γίγνεσθαι, μεγάλα ἡγοῦν-
 ται, πάρεργον οἰόμενοι αὐτὸ δεῖν πράττειν· πρὸς δὲ τὸ
 γῆρας ἐκτὸς δή τινων ὀλίγων ἀποσβέννυνται πολὺ μᾶλ-
 λον τοῦ Ἡρακλείτειον ἡλίου, ὅσον αὐθις οὐκ ἔξαπτον- B
 ται. Λεῖ δὲ πᾶς; ἔφη. Πᾶν τούναντίον· μειοάκια μὲν
 ὅντα καὶ παιδας μειοακιώδη παιδείαν καὶ φιλοσοφίαν
 μεταχειρίζεσθαι τῶν τε σωμάτων, ἐν ᾧ βλαστάνει τε
 καὶ ἀνδροῦται, εὗ μάλα ἐπιμελεῖσθαι, ὑπηρεσίαν φιλο-

αὐτοῦ] αὐτῷ Par. K. In Ang. B. ὡ super οὐ positum.

χαλεπωτάτῳ] Hoc in textu per compendium scriptum in Mon. B. sed in m. adscripto χαλεπώτατον explicatum est.

ἀπαλλάττονται] paulo post discedunt Fic. Respicere debebat μειοάκια ὅντα.

οἱ φιλοσοφάτατοι ποιούμενοι] οἱ φιλοσοφάτατα ποι. Vind. E. etiam qui sapientiae apprime studiosi fore existimantur Fic. Pro ποιούμενοι Astius in sec. δοκούμενοι coniecit, cuius significacionem illud h. l. ut L. VII. p. 538. C. (τῶν ἄλλων ποιούμενων οἰ-
νείων) et VIII. 573. B. (ἐπιθυ-
μίας ποιούμενας χρηστάς) habere videtur. Nam fieri φιλοσοφάτα-
τοι, ut Stallbaumius interpretatur, dum philosophiae valedicunt,
non amplius possunt. Cf. Passo-
vii lexicon in ποιεῖν 3, b.

τὸν] om. Mon. B.

καὶ] om. Fic. Male Stephanus et Astius in pr. et sec. comma anteposuerunt. ἐὰν καὶ ἐθέλωσιν coniungenda sunt.

γίγνεσθαι] γίν. Vind. B.

ἡγοῦνται] ἡγούμενοι Ven. B. Flor. V. Cornarius ecl. p. 100. ἡγοῦνται in ἀγαίονται vel ἀρ-
νοῦνται mutandum censebat, quas coniecturas Stephanus p. 23. iure improbat.

ἀποσβέννυνται] ἀποσβέννυνται Vind. F. Flor. R.

πολὺ μᾶλλον τοῦ Ἡρακλείτειον] μᾶλλον πολὺ τοῦ ἥρακλείτον iidem et Ang. B. πολὺ etc. Ald.

οὐκ] οὐχ Bas. a.

δὲ] ergo Fic.

Πᾶν τούναντίον] om. Vind. B. Vat. M. Bekkerus et Stallbaumius interpunctione sublata sequentibus haec iungunt, cui rationi μὲν adversatur. Ego pro puncto priorum colon cum Astio posui.

παιδας] παιδεῖς, sup. ας, Ven. B.

φιλοσοφίαν] σοφίαν Vind. F. Ang. B.

τῶν τε σωμάτων] τῶν δὲ σ. Vind. F. Non aliter scriptum videtur in Flor. R. de quo Stallbaumius ita: τῶν δὲ σωμάτων] τε Flor. R.

ἀνδροῦται] Ita omnes codices uno Ven. B. excepto, qui cum Ald. Bas. ab. Steph. (tacentibus Bip.) ἀδροῦται habet, quod a Bekkero servatum Astius quoque in tert. ed. et Stallbaumius servarunt. Quum haec omnia ad pueros spectent, corpora eorum adolescentia ἀνδροῦσθαι dici posse videntur, h. e. virilia et virili robore praedita fieri. Neque propterea, quod alibi fere homines ipsi ἀνδρούμενοι, ἀνδρωθέντες,

σοφίᾳ πτωμένους· προϊούσης δὲ τῆς ἡλικίας, ἐν ᾧ ἡ ψυχὴ τελειούσθαι ἔργεται, ἐπιτείνειν τὰ ἐκείνης γυμνά·
C σια· ὅταν δὲ λήγῃ μὲν ἡ ὁρώμη, πολιτικῶν δὲ καὶ στρατειῶν ἐκτὸς γίγνηται, τότε ἥδη ἀφέτους νέμεσθαι καὶ μηδὲν ἄλλο πράττειν, ὅτι μὴ πάρεργον, τοὺς μέλλοντας εὐδαιμόνως βιώσεσθαι καὶ τελευτήσαντας τῷ βίῳ τῷ 475 βεβιωμένῳ τὴν ἐκεὶ μοῖραν ἐπιστήσειν πρέπουσαν. Ως ἀληθῶς μοι δοκεῖ, ἔφη, λέγειν γε προθύμως, ὡς Σώκρατες· οἷμαι μέντοι τοὺς πολλοὺς τῶν ἀκούοντων προθυμότερον ἔτι ἀντιτείνειν οὐδ' ὅπωστιοῦν πεισομέ-

ἡνδρωμένοι, ἔξανδρονύμενοι etc. appellari solent, veluti Eurip. Herc. fur. 42. Phoen. 32. Suppl. 713. Aristoph. Eq. 1238. Herodot. I. 123. III. 10. 155. V. 92, 19. VI. 52, 9. Aristot. Eth. Nic. X. 9, 9. Zell. verbum a corporibus alienum pronuntiandum et contra codices agendum puto.

εὖ μάλα] om. Fic.

ὑπηρεσίαν] ὑπηρεσία Lob. Vind. BE. Vat. HM. ὑπηρεσίῃ Flor. AC.

φιλοσοφίᾳ] φιλοσοφίᾳ Lob. Vind. BE. Vat. BHM. Ven. C. Par. K. Ang. B. Flor. ACRTV. Basilius M. T. II. pag. 182. C: τοσοῦτον ἀνθετέον αὐτοῦ (τοῦ σώματος) ὅσον, φησὶ Πλάτων, ὑπηρεσίᾳν φιλοσοφίᾳ πτωμένους. Et ὑπηρεσίᾳν φιλοσοφίᾳς πτωμένους formula hinc petita dicit Theistius or. XXI. p. 260. A.

ἐν ᾧ] His Par. K. μάλιστα superscriptum habet.

τελειούσθαι] τελεοῦσθαι Lob. Vind. BEF. Mon. B. Vat. BHM. Ven. C. Par. DK. sec. Bekk. Flor. ACRTUV. Bekkerus et Stalbaumius, quae forma usitator Platonii sine codicum discrepantia L. V. p. 466. E. paucis non optimis dissentientibus Leg. L. II. p. 672. C. Symp. 192. A. paullo pluribus neque malis alteram exhibentibus (in his Mon. B. a Bekkerio praetermisso) supra L. II. p. 377. B. legitur. Item τελεος et τελέως in his dialogis multo frequentiora sunt. Conf.

Rückertus ad Symp. p. 180. Sed τέλειος-infra L. VIII. p. 546. B. et Leg. V. 730. D. et τέλειον Phaedon. pag. 110. A. codicum omnium consensu firmantur, atque ipsum τελειωθῶσι huius libri pag. 487. A. extra dubitationem positum videmus. Similiter poëtas Atticos utroque usos esse constat. Itaque res ad codices redit, quorum optimus nōstro loco cum uno bono (Ven. B.) altero-que diversi generis (Ang. B.) insolentius tenens non contemnen-
dus, nedum L. VIII. p. 587. E. in τελειωθεῖσῃ, pro quo tantum Vat. B. Ven. C. Par. DK. et Lob. τελεωθ. exhibitent, deserendus videtur. De Polit. p. 272. D. mihi non liquet, utrum cum Bekkerio ἐτελεώθη secundum Clark. Vat. A. Ven. C. an cum reliquis ἐτελειώθη scribi praestet, sed prius tutius puto.

ἐπιτείνειν] ἐπιτείνει Vat. H. Flor. ACV.

ἐκείνης] ἐκείνων Vind. E. Flor. ACTV.

λήγῃ] λέγῃ Ald. Bas. a. Lob. Vind. B. Vat. M.

στρατειῶν] στρατιῶν Vind. EF. Ven. B. Par. DK. Vat. H. Flor. ACTV. Ald. Bas. ab. στρατιω-
τῶν Lob. Vind. B. Vat. M.

ἥδη] om. Vind. F.

βιώσεσθαι] βιώσασθαι Mon. B. ante corr.

τελευτήσαντας] τελευτήσασθαι Bas. b.

μοῖραν] μοῖραν Vind. E.

νους, ἀπὸ Θρασυμάχου ἀρξαμένους. Μὴ διάβαλλε, ἵν
δ' ἔγω, ἐμὲ καὶ Θρασύμαχον ἄρτι φίλους γεγονότας, Δ
ούδε πρὸ τοῦ ἔχθρους ὅντας πείρας γὰρ οὐδὲν ἀνήσο-
μεν, ἔως ἂν ἡ πείσωμεν καὶ τοῦτον καὶ τοὺς ἄλλους,
ἡ προῦργον τι ποιήσωμεν εἰς ἐκεῖνον τὸν βίον, ὅταν
αὗθις γενόμενοι τοῖς τοιούτοις ἐντύχωσι λόγοις. Εἰς
μικρόν γ', ἔφη, χρόνον εἴρηκας. Εἰς οὐδὲν μὲν οὖν,
ἔφην, ὡς γε πρὸς τὸν ἄπαντα. τὸ μέντοι μὴ πείθεσθαι
τοῖς λεγομένοις τοὺς πολλοὺς θαῦμα οὐδέν· οὐ γὰρ
πώποτε εἶδον γενόμενον τὸ νῦν λεγόμενον, ἀλλὰ

ἐπιστήσειν] ἐπὶ στήσειν Lob.
ἔφη] ἔφην Par. K. sec. Bip.
γε] τε Vind. EF. Flor. ACR.
om. Vat. H. Flor. T.

ἀντιτείνειν] Huic in m. Mon.
B. a m. s. ἀν praepositum est.
Stephanus in m. ἀντιτείνειν con-
iectit, quam conjecturam Astius
quum in comm. Ficini quidem in-
terpretationi (*arbitror autem plu-*
rimos, cum haec audiverint, prom-
ptius quoque repugnaturos, abs te
minime persuasos) congruere, sed,
quia praesens rem certius signifi-
cat, necessariam non esse statuis-
set, in tertia ed. ipse suo nomine
proposuit atque in interpretatione
secutus est. Mihi praesens alium
eumque minime ineptum sensum
efficere videtur hunc: tu magno
cum studio agis, sed maius etiam
eorum studium puto, qui a te
dissentunt, hoc est, plerorumque,
qui talia dicentem te audiunt.

ἀπὸ Θρασυμάχου] ἀποθρασυ-
μάχου Vind. E.

διάβαλλε] διάβαλε Ang. B.
Flor. R. et a m. s. Vind. F.

Θρασύμαχον] ἀρξαμένους ad-
dunt Lob. Vind. B. Vat. B. Ven.
C. Par. DK. sec. Bip. Flor. U.
Mon. B. (hic cum punctis) et
Bas. b.

D γεγονότας] In Lob. εναι super
νότας legitur.

πρὸ τοῦ] προτοῦ Steph.

πείρας] πείρας Vind. F.

πείσωμεν] πείσομεν Lob. Vind.
BF. Flor. R.

ἄλλους] om. Lob. Vind. B.
Vat. M.

ποιήσωμεν] ποιήσομεν Lob.
Vind. BF. Flor. R. — Proclus
in Alcib. T. II. pag. 226. Cous.
οὗτος γὰρ δὴ καὶ ὁ ἐν Πολιτείᾳ
Σωκράτης περὶ Θρασυμάχου φη-
σίν, ὅτι εἰ καὶ πρὸς τὸ πάρὸν
μὴ πέπεισται μοι, πρός γε τὸν
ἔπειτα βίον εἴη ἀν τι προύργον
γεγονός. — Sequentia usque ad
λόγοις Ficinus ita convertit: *ad*
eam vitam, in quam cum perve-
nerint, haec dicta reperient.

μικρόν] μικρόν Ang. B. Flor.
R. μικρόν cum a super i Vind.
F. σμικρόν Ven. B. Flor. C. et
recentiores. Cf. Vol. I. p. 287, a.
ubi Flor. C. oblitus sum.

γ'] γε Lob. Vind. B.
εἴρηκας. Εἰς] εἴρηκας, εἰς
Ald.

οὐδὲν μὲν] Ita Mon. B. ante
corr. οὐδέν' e corr.

εἶδον] ἴδον Vind. F. (Ven. C.
Par. D. Ang. B. Flor. ACRTUV.
de quibus quidem Bekkerus et
Stallbaumius tacent, ut consen-
tire cum Stephano videantur.) Ald.
Bas. ab. Steph. Ast. pr. tacenti-
bus de Par. K. Bipontinis, quem
Bekkerus εἶδον habere testatur.
ἴδον ferri non posse Matthiae
gramm. p. 313. pr. ed. iam ob-
servaverat, sed πώποτ', quod
idem probabili conjectura ductus
a Platone positum etiam sec. ed.
p. 449. suspicatur, codices non
confirmarunt.

Ε πολὺ μᾶλλον τοιαῦτ' ἄττα δῆματα ἐξεπίτηδες ἀλλήλοις
ώμοιωμένα, ἀλλ' οὐκ ἀπὸ τοῦ αὐτομάτου ὥσπερ νῦν
συμπεσόντα· ἀνδρα δὲ ἀρετῇ παρισωμένον καὶ ώμοιω-
μένον μέχρι τοῦ δυνατοῦ τελέως ἔργῳ τε καὶ λόγῳ,
δυναστεύοντα ἐν πόλει ἑτέρᾳ τοιαύτῃ, οὐ πάποτε
499 ἐωράκασιν οὕτε ἔνα οὕτε πλείους. ή οἶει; Οὐδαμῶς γε.
Οὐδέ γε αὖ λόγων, ὡς μακάριε, καλῶν τε καὶ ἐλευθέ-
ρων ἵκανῶς ἐπήκοοι γεγόνασιν, οἷων ζητεῖν μὲν τὸ ἄλη-
θεῖς ξυντεταμένως ἐκ παντὸς τρόπου τοῦ γνῶναι γάριν,
τὰ δὲ ιουψά τε καὶ ἐριστικὰ καὶ μηδαμόσε ἄλλοσε τεί-
νοντα, η̄ πρὸς δόξαν καὶ ἔριν, καὶ ἐν δίκαιοις καὶ ἐν

πολὺ] πολλοὶ Vind. E. Vat. H.
Flor. ACTV. om. Fic.

E τοιαῦτ' ἄττα] τοιαῦτάττα Loh.
Vind. BF. τοιαῦτα ἄττα Vind. E.
τοιαῦτι γρ Par. A.
αὐτομάτον] αντ. Ald. cum leni
super ν.

συμπεσόντα] ξυμπ. Vind. EF.
Flor. ACTV. Stallb.

παρισωμένον καὶ ώμοιωμένον]
παρισωμένον καὶ ώμοιωμένον
Vat. B.

ἔργῳ τε καὶ λόγῳ] Comma a
prioribus editoribus ante haec
positum Bekkerus recte postpo-
suit. Vitiosam interpunctionem
etiam Ficinus secutus est: *virum*
autem, quoad fieri potest, virtute
perfectum, ac summopere factis
et dictis tali quadam in civitate
potentem.

499 οἶει] καὶ οἶει Lob. Vind. B.
Vat. M.
ἐλευθέρων] ἐλευθερίων Par. K.
sec. Bip.

ἵκανῶς] om. Fic.
ἐπήκοοι] ἐπείκοοι Bas. ab.
γεγόνασιν] γεγόνασιν Vind.
E.

οἶων] Ita Par. A. (cum o super
ω.) Mon. B. Flor. U. et a m. s.
Vat. B. οἶον, sup. ων, Ven. B.
οἶον reliqui cum editis ante Astii
sec.

ξυντεταμένως] συντ. Vind. F.
Flor. R. ξυντεταγμένως Lob.

Vind. B. Vat. M. ξυντεταμένως
ante corr. Mon. B.

τρόπον] προσώπον Par A. ad-
scripto tamen, ut Faehsius tradit,
in m. vulgato.

ἐριστικὰ] ἐρειστικὰ Vind. EF.
καὶ μηδαμόσε] καὶ om. Ald.
Bas. a. Fic. Ast. sec. In tert.
restituit, sed eiiciendum suspicatur.

δόξαν] opinionem, inanem glo-
riam Fic.

ἀσπαζομένων] ἀσπαζόμενοι
Vind. E.

τότε] om. Fic. B.

δεδιότες] δεδειότες Vind. F.
ante corr.

τάληθον] τοῦ ἀληθοῦς Vind.
EF. Flor. ACR. τῆς ἀληθοῦς
Vat. H.

οὕτε πόλις] ὅτε π. Vind. E.
οὐδέ γ'] οὐδ' Vind. E. Flor.

T. Etiam in Ven. B. Vat. H. γ'
omissum esse Bekkerus refert.

μή ποτε] μήποτε Ald. Bas. ab.
Steph. Ast. Cf. ad L. V. p. 473.
D.

τέλεος] τέλος Vind. F. Vat. H.
τέλειος Vind. E. Ang. B. Flor.
RT.

οὐλίγοις] τε addunt Lob. Vind.
B. Vat. M. et a m. s. Ven. B.

κευλημένοις] κευληρωμένοις
Lob. Vind. B. Mon. B. (hic cum
punctis sub ρω.) Vat. BM. Par.
DK. sec. Bekk. Flor. U. Ficinus
haec a verbis καὶ οὐ πονηροῖς
ita interpretatus est: *qui nec mali*

ιδίαις συνουσίαις πόρρωθεν ἀσπαξομένων. Οὐδὲ τούτων, ἔφη. Τούτων τοι χάριν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ ταῦτα Β προορώμενοι ἡμεῖς τότε καὶ δεδιότες ὅμως ἐλέγομεν ὑπὸ τάληθοῦς ἡναγκασμένοι, ὅτι οὕτε πόλις οὕτε πολιτεία ούδε γ' ἀνήρ δομοίως μή ποτε γένηται τέλεος, πρὶν ἂν τοῖς φιλοσόφοις τούτοις τοῖς ὄλιγοις καὶ οὐ πονηροῖς, ἀχρήστοις δὲ νῦν κεκλημένοις ἀνάγκη τις ἐκ τύχης παραβάλῃ, εἴτε βούλονται εἴτε μὴ, πόλεως ἐπιμεληθῆναι καὶ τῇ πόλει κατήκοοι γενέσθαι, ἢ τῶν νῦν ἐν δυναστείαις ἢ βασιλείαις ὅντων νίέσιν ἢ αὐτοῖς ἐκ τινος θείας ἐπιπνοίας ἀληθινῆς φιλοσοφίας ἀληθινὸς ἔρως Σ

nec inutiles sunt, ut vulgo existimantur.

παραβάλῃ] Ita Ven. B. Vat. H. Flor. AC. cum editis. *contigerit* Fic. *παραβάλλῃ* Vind. E. *παραβάλῃ* Flor. T. *περιβάλλῃ* Vat. B. *περιβάλῃ* reliqui codices, quod quamquam defensionem recipit, quum *περιβάλλειν* significationem iniungendi et imponendi habeat (e. g. Eurip. Ion. 843: *τυραννίδ' αὐτῷ περιβαλεῖν ἔμελλε γῆς*) et substantivi loco infinitivus (*ἐπιμεληθῆναι, γενέσθαι*) certe non vitiosus videatur, tamen alterum ut per se probabilius et reliquis dictionibus ἔρως ἐμπέσῃ, ἀνάγκη γέγονεν (C) ἀνάγκη γένηται (500. D.) accommodatus neque a codicibus prorsus infirmum, in facillima illarum praepositionum permutatione, de qua Vol. I. p. 436, a. dixi, sine periculo teneri potest.

κατήκοοι] *κατήκοοι* Ven. C. Scholiastes: *κατήκοοι, ἀντὶ τοῦ κατακονόμενοι*. In eandem sententiam Ficinus (*vel a civibus exaudiuntur*) et Schleiermacherus haec interpretati sunt, sed Schleiermacher pro *κατήκοοι* Plato *κατηκόω* scripsisse videtur, cui assentitur Stallbaumius, simul conferri iubens illa p. 502. B: ἀλλὰ μὴν, ἦν δ' ἐγώ, εἰς ἵκενδος γενομένος, πόλιν ἔχων πειθομένην, πάντ' ἐπιτελέσαι τὰ νῦν ἀπιστούμενα. At eo ipso loco civium

obedientia tamquam res non solum facultate non magis, quam philosopha principis natura carens, sed etiam sua sponte et sine ulla vi secutura proponitur, ut vix videatur nostro loco tamquam necessitate aliqua fortuita exprimenda commemorari et ita curae civitatis a philosophis suscipiendae coniungi potuisse. Haec vero cura, utpote ab invitis et civitatis aliquin periturae gratia suscipienda, obedientia erga civitatem appellari eamque suscipientes τῇ πόλει κατήκοοι γενέσθαι dici poterant, etiam si non ipsa civium voce vocarentur ad rei publicae administrationem. Quum autem haec quoque vox accessura et legislator philosophis gubernaculum civitatis traditus esset, multo magis illam dictionem probabilem videri necesse est. Iam confer illa L. VII. p. 520. D: ἀπειθήσοντες οὖν ἡμῖν, οἵτινες, οἱ τρόφιμοι ταῦτ' ἀκούοντες καὶ οὐκ ἔχειςσοντες ἔνυπονεῖν ἐν τῇ πόλει ἔκαστοι ἐν μέσοι, τὸν δὲ πολὺν χρόνον μετ' ἀλλήλων οἴκεῖν ἐν τῷ καθαρῷ; et quae sequuntur usque ad εὖ οἴκον μένην p. 521. A. et *κατήκοοι* non sollicitandum esse intelliges. Nam quod ad nominativum attinet, pro quo dativus exspectari poterat, interpolatum βούλονται idoneam excusationem praebet.

νίέσιν] *νίέσσαι* Vind. F.

ἐμπέσῃ. τούτων δὲ πότερα γενέσθαι η̄ ἀμφότερα ὡς ἄρα
ἔστιν ἀδύνατον, ἐγὼ μὲν οὐδένα φημὶ ἔχειν λόγον. οὐ-
τῷ γὰρ ἐν ἡμεῖς δικαίως παταγελώμεθα, ὡς ἄλλως εὐ-
χαῖς ὅμοια λέγοντες. η̄ οὐκ οὔτως; Οὔτως. Εἰ τοίνυν
ἄκροις εἰς φιλοσοφίαν πόλεως τις ἀνάγκη ἐπιμεληθῆναι
η̄ γέγονεν ἐν τῷ ἀπείρῳ τῷ παρεληλυθότι χρόνῳ, η̄ καὶ
νῦν ἔστιν ἐν τινι βιοβαρικῷ τόπῳ πόδια που ἐκτὸς
D ὅντι τῆς ἡμετέρας ἐπύψεως, η̄ καὶ ἔπειτα γενήσεται,
περὶ τούτου ἔτοιμοι τῷ λόγῳ διαμάχεσθαι, ὡς γέγονεν
η̄ εἰρημένη πολιτείᾳ καὶ ἔστι καὶ γενήσεται γε, ὅταν
αὗτῇ η̄ Μοῦσα πόλεως ἐγκρατῆς γένηται. οὐ γὰρ ἀδύ-

C δὲ πότερα] δ' ὁπότερα Mon.
B. δὲ ὁπότερα Ven. B. Flor. U.
et a m. s. Vat. B. (a m. pr. δὲ
π.) cum editis ante Bekkerum,
quemadmodum infra p. 509. A. et
alibi. Sed πότερον eadem signi-
ficatione dici Heindorfius ad The-
aet. p. 145. A. docuit.

ἔστιν] ἔστιν Lob. Vind. E. Ald.
Bas. ab.

ἔχειν] post λόγον Vind. E.

ἄν] om. Vat. B.

παταγελώμεθα] παταγελώμεθα
(Lob.) Ald. Bas. ab.

λέγοντες] λέγονταις Mon. B.
ante corr.

Οὔτως] om. idem.

ἄκροις] ἄκρος Vind. B.

τις] τε Vind. E. Vat. H. Flor.
ACV.

ἀνάγκη] εἰς ἀνάγκην Par. K.
om. Lob. Vind. B. Vat. M.

ἐπιμεληθῆναι] ἐπιμεληθῆ Par.
DK. sec. Bekk.

η̄] η̄ Bas. b.

τῷ παρεληλυθότι] Cf. Vol. I.
p. 147, a. b.

ἔστιν] ἔστιν Bekkerus, Astius
in tert. et Stallb. νῦν vim mai-
orem habet.

πον ἐκτὸς] om. Lob. Vind. B.
Vat. BM. ἐκτὸς om. Ven. B. editi
ante Bekkerum.

D περὶ τούτου] in hoc certe re-
rum statu Fic.

εἰρημένη] ἡμετέρα Vind. E.

αὗτῇ] αὐτῇ Par. A. Ven. B.
Vind. E. Vat. H. Flor. AC.

η̄] om. Vind. F. Ang. B.

γένηται] εἶναιται Vind. E.

ἀδύνατος] ἀδύνατον Flor. T.
et editiones ante Bekkerum, qui
de Par. A. Ven. B. tacet, reli-
quos ἀδύνατος habere testatur.
Ficinus utrum legerit, incertum,
sed videtur ἀδύνατον legisse:
fieri certe id potest.

δύολογεῖται] concessa fuerunt
Fic. In Ald. non punctum, sed
comma appositum.

Καὶ] om. Vat. B.

ὅτι] om. Ald. Bas. ab. Steph.

ἔρεις ;] Ita Vind. E. Ald. Bek-
kerus, Astius in tert. et Stallb.
ἔρεις. reliquae editiones.

πατηγόρει.] πατηγόρει, Steph. E
Ast. pr. tert. πατηγόρει. Ast. sec.

ἄλλοιαν τοι] Ita Par. ADK.
sec. Bekk. Ven. C. Mon. B. ἀλλ'
οἷαν τοι Vind. F. Bas. b. ἀλλ'
οἱ αὐτοὶ Vind. E. ἀλλ' οἷαν τοι

Lob. Vind. B. (Flor. ACRTUV.)
Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr. tert.

verum quid (eos opinaturos exi-
stimas) Fic. De reliquis Bekkeri
codicibus non constat. Verum
Astius in sec. de conjectura exhibi-
bit.

ἔζονσιν] ἔζονσιν Lob. Vind. B.
Ven. B. Flor. T.

ἔὰν] Ita Par. A. Vat. H., et
fortasse Ven. C. “ἐν reliqui co-

dictes et Ald. Bas. ab. Steph. Ast.
pr. tert. Stallb. pr. εἰ Ast. sec.

ἔὰν etiam scholiastes legit, cuius
explicatio haec est: ὅτι εἴμετά-
βολον τὸ τῶν πολλῶν πλῆθος,

δηλοῖ καὶ Ὅμηρος ἀπεικάξων τὴν

νατος γενέσθαι, ούδ' ἡμεῖς ἀδύνατα λέγομεν· χαλεπά
δὲ καὶ παρ' ἡμῶν ὅμολογεῖται. Καὶ ἐμοὶ, ἔφη, οὕτω
δοκεῖ. Τοῖς δὲ πολλοῖς, ἦν δ' ἐγὼ, ὅτι οὐκ αὖ δοκεῖ,
ἔρεις; "Ισως, ἔφη. Ὡ μακάριε, ἦν δ' ἐγὼ, μὴ πάνυ Ε
οὕτω τῶν πολλῶν κατηγόρει. ἀλλοίαν τοι δόξαν ἔξουσιν,
ἐὰν αὐτοῖς μὴ φιλονεικῶν, ἀλλὰ παραμυθούμενος καὶ
ἀπολυόμενος τὴν τῆς φιλομαθείας διαβολὴν ἐνδεικνύῃ
οὓς λέγεις τοὺς φιλοσόφους, καὶ διορίζῃ ὥσπερ ἄρτι
τὴν τε φύσιν αὐτῶν καὶ τὴν ἐπιτήδευσιν, ἵνα μὴ ἥγων- 500
ταὶ σε λέγειν οὓς αὐτοὶ οἴονται. ἦ καὶ ἐὰν οὕτω θεῶν-
ται, ἀλλοίαν τοι φήσεις αὐτοὺς δόξαν λήψεσθαι καὶ

ὅμην αὐτῶν οὔμασι παντοίων
ἀνέμων καὶ τοῖς τοιούτοις. ἀλλὰ
καὶ νῦν τοῦτο λέγει, ὅτι καὶν
λόγῳ τις αὐτοῖς ἐνδείξηται τὴν
ἄληθην φιλοσοφίαν, καὶν αὐτῷ
ἔργῳ τοιοῦτος ἡ φαινόμενος, ὁχ-
δίως ἀν πείσει αὐτοὺς, καὶ το-
σούτῳ δῆλον, δῶσω ἀν εἰεν πλεί-
ονς. καὶ γὰρ οἱ πλειόνες μᾶλλον
τῇ τῆς ὑλῆς ἀταξίᾳ ἀναλογοῦσι
καὶ μᾶλλον εὐάλωτοι πρὸς ἐνά-
τερα, ἥπερ οἱ ὀλιγώτεροι. Nec
non Ficinus: si non contentionis
studio, sed amicis monitis, disso-
luta philosophiac adversa calu-
mnia, ostendas, quos potissimum
viros appellas philosophos, et, ut
nuper, distinguas etc.

αὐτοῖς] αὐτοῖς Ven. B. Par.
K. sec. Bip. Ast. tert. Stallb. pr.
ἔξουσιν ἐν αὐτοῖς, etiam Butt-
mannus coniecerat teste Morgen-
sternio symb. crit. 1815. p. 4.

μη] εἰ μη Mon. B. Par. K.
Stallb. pr.

τὴν] om. Lob. Vind. B. Vat.
M.

φιλομαθείας] φιλομαθίας Vind.
EF. Ven. B. Ang. B. Vat. H.
Flor. RT.

ἐνδεικνύῃ] Ita Par. ADK. sec.
Bekk. Ven. C. Mon. B. ἐνδει-
κνύει Vind. F. Ang. B. Flor.
ACR. ἐνδεικνύει Vind. E. ἐν-
δεικνύει Flor. T. ἐνδεικνύει Lob.
Vind. B. Ven. B. Vat. BM. (Flor.
UV.) Ald. Bas. ab. Steph. Ast.
pr. tert. ἐνδεικνύει Ast. sec. Stallb.
pr.

οὓς] οἶους Ang. B. Flor. RT.
λέγεις] „, λέγεις vel λέγει Flor.

AC.“

διορίζῃ] Ita iidem, qui ἐνδει-
κνύῃ habent, et Flor. TUV. διο-
ρίζει iidem, qui ἐνδεικνύει, et
Ast. sec. Stallb. pr. διορίζειν
Vind. E. διορίζον Lob. Vind. B.
Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr.
tert. Idem in reliquis Bekkerianis
existare videtur, de quibus
nihil ostendit.

τὴν τε] τε om. Lob. Vind. B.
Vat. BM.

ἦ καὶ] καὶ Vind. EF. Ven. B. 500
Ang. B. Flor. ACRT. probante

Schleiermacher et siae interro-
gatione haec dicta existimante.

ἦ οὐκ Mon. B. Flor. U. Stallbau-
mius. ἦ καὶ Astius in sec. et tert.

cum colo post ἀποκριεῖσθαι, ubi
Ald. punctum habet. Ficinus: vel

si ita conceperint, falli eos op-
inione dixeris nec ad proposita re-
spondere? Si vulgata lectionem

sequimur, hanc ἀλλοίαν δόξαν
diversam ab illa, quam Socrates

plerisque habitueros esse asseve-
raverant, eique et veritati contra-
riam intelligere debemus. Id, quia

notio τοῦ ἀλλοίον necessario re-
lativa et ubique ad proximum re-
ferenda est, fieri posse videtur.

Quemadmodum igitur Socrates ἀλ-
λοίαν τοι δόξαν ἔξουσιν inquiens

respexerat illa, quae Adimantus
de vulgi opinione ominatus fue-
rat, eamque diversam et philoso-

phiae faventem fore, si vera eis

ἄλλα ἀποκρινεῖσθαι; ή̄ οἵτινα τινὰ χαλεπαίνειν τῷ μὴ χαλεπῷ ή̄ φθονεῖν τῷ μὴ φθονεῷ ἄφθονόν τε καὶ πρῶτον ὅντα; ἐγὼ μὲν γάρ σε προφθάσας λέγω, ὅτι ἐν ὀλίγοις τισὶν ἥγοῦμαι, ἀλλ' οὐκ ἐν τῷ πλήθει χαλεπὴν οὔτω
 B φύσιν γίγνεσθαι. Καὶ ἐγὼ ἀμέλει, ἔφη, ξυνοίομαι. Οὐκοῦν καὶ αὐτὸ τοῦτο ξυνοίει, τοῦ χαλεπῶς πρὸς φιλοσοφίαν τοὺς πολλοὺς διακεῖσθαι ἐκείνους αἰτίους εἶναι τοὺς ἔξαθεν οὐ προσῆκον ἐπεισκενωμάνότας, λοιδορούμένους τε αὐτοῖς καὶ φιλαπεχθημόνως ἔχοντας καὶ ἀεὶ περὶ ἀνθρώπων τοὺς λόγους ποιουμένους, ἥκιστα

philosophi imago ostenderetur, pro certo pronuntiaverat, ita Adimantus, etiam si veram imaginem videant, nihilo minus aliter eis, atque Socrates speret, visum iri affirmaturus simili confidentia ἀλλοίαν τοι δόξαν ληψονται καὶ ἄλλα ἀποκριοῦνται dicere idque num facturus sit, a Socrate interrogari poterat. Quae interrogatio quum negationis vim habeat, non exspectato responso altera item negativa adiicitur: η̄ οἵτινα etc. Ceterum ne reliquae quidem lectio-nes, quarum alteram Schleiermacherus, alteram Stallbaumius se- cutus est, ad sententiam ineptae, sed perquam languidae videntur.

οὔτω] αὐτῷ Vind. F. Ang. B. Flor. ACR. αὐτῷ Flor. T. αὐτῷ Vind. E.

τοι] τε Ang. B. Stallbaumius in sec. probante Schleiermacherus, cuius tamen rationi τοι non ita ut Stallbaumio obstabat. Servatis vero verbis η̄ καὶ hoc quoque servandum esse appetet. Nec frustra codices etiam qui cum Ang. B. facere solent, id retinent.

ἀποκρινεῖσθαι] ἀποκρινεῖσθαι Par. A. Vat. H. Conf. Vol. I. p. 52, b. collecta, secundum quae, si unus et alter illius familiae liber accessisset, praesens recipi poterat.

η̄ οἵτινα] an censes, inquam Fic.

ἄφθονον] Antiatticistes Bekk.

pag. 81, 29: ἄφθονον· τὸν μὴ φθονοῦντα. Πλάτων Πολιτείας τετάρτῳ. quod ad nostrum locum pertinere puto.

γάρ σε] γάρ σε Vind. E. Bekkerus, Astius in tertia et Stallbaumius, quasi Socrates ἐγὼ μὲν dicens non omnino aliis, sed Adimanto soli sese opponeret.

γίγνεσθαι] γενέσθαι Vind. E.

ἀμέλει] om. Fic. Bekkerus et Stallbaumius commate a praece- dente ἐγὼ separant, quo admissio non iam adverbii, sed imperativi vim habere statuendum est, cui usus repugnat. Cf. Schneiderus ad Cyrop. V. 2, 13.

ξυνοίει] ξυνοίον Mon. B. Flor. B. U. In Ald. nulla interpunctio, in Bas. ab. Steph. interrogandi nota apposita est.

τοῦ] τὸ Vind. B.

διακεῖσθαι] διακοεῖσθαι Lob. ante corr.

ἐκείνους] post αἰτίους Vind. E.

οὐ] ως μὴ Mon. B. Flor. U. Par. K. οὐ μὴ Ald. Bas. ab. Steph. Idem a m. s. in Par. D. positum videtur, quem Bekkerus a m. pr. οὐ προσῆκον cum reliquis habere testatur.

ἐπεισκενωμάνότας] ἐπεισκενωμάνότας, sup. ω, Vind. E.

λοιδορούμένους] λοιδορούμένους Vind. F. λοιδορούμένη Par. K.

αὐτοῖς] Vulgo αὐτοῖς, quod

φιλοσοφίᾳ πρέπον ποιοῦντας. Πολύ γ', ἔφη. Οὐδὲ γάρ που, ὡς Ἀδείμαντε, σχολὴ τῷ γε ὡς ἀληθῶς πρὸς τοῖς οὖσι τὴν διάνοιαν ἔχοντι κάτω βλέπειν εἰς ἀνθρώπων πραγματείας καὶ μαχόμενον αὐτοῖς φθόνου τε καὶ C δυσμενείας ἐμπίπλασθαι, ἀλλ' εἰς τεταγμένα ἄττα καὶ κατὰ ταῦτα ἀεὶ ἔχοντα δρῶντας καὶ θεωμένους οὐτ' ἀδικοῦντα οὕτ' ἀδικούμενα ὑπ' ἀλλήλων, κόσμῳ δὲ πάντα καὶ κατὰ λόγον ἔχοντα, ταῦτα μιμεῖσθαι τε καὶ ὅτι μάλιστα ἀφομοιοῦνται. ή οἵει τινὰ μηχανὴν εἶναι, ὅτῳ τις ὁμιλεῖ ἀγάμενος, μὴ μιμεῖσθαι ἐκεῖνο; Ἀδύνα-

Ficinus homines conviciis passim lassunt interpretatus ad τοὺς πολλοὺς, Stallbaumius ad philosophos refert per synesin ex praecedenti φιλοσοφίᾳ petendos. Neutrum in istos ἐπεισκενωμακότας, quales supra p. 495. C. de scripti sunt, cadere videtur, quippe qui et vulgo placere et ob philosophiam, quam profitentur, magni fieri cupiant. Invicem vero obtrectare, alter alteri philosophi nomen tribendum negare, ita philosophiae ipsi magnam invidiām conflare solent. Itaque αὐτοῖς scripsi.

ποιουμένους,] ποιουμένους;
Steph.

πρέπον] πρέποντας Par. DK.
πρέποντα Mon. B. Flor. U. Stallbaumius.

ποιοῦντας.] Vulgo ποιοῦντας; Ita scilicet initium periodi comparatum erat, ut cum interrogatione terminatum iri videretur. Sed Adimantus ei, quod Socrates in fine dixerat, assentiens interrogationem paullatim in affirmationem abisse docet, quemadmodum Vol. I. p. 228. in negationem conversam vidimus. Atque ipsa illa οὐκοῦν καὶ αὐτὸ τοῦτο ξυνοἴει ita pronuntiari poterant, ut magis affirmantis essent, quam dubitantis; et οὐκοῦν a scholiaste per τοιγάροῦν explicatur.

C πραγματείας,] πραγματείας.
Ald.

φθόνον] φόνον Vat. H.
ἐμπίπλασθαι] ἐμπιπλᾶσθαι

Vind. F. Ald. Bas. ab. ἐμπίπλασθαι Ven. B. Cf. Vol. I. p. 283.
εἰς] εἰ Vind. F.

τεταγμένα] τεταγμέν' Vind. F.
Ang. B.

ἄττα] ἄττα Lob.

ταῦτα] ταῦτα Vind. F.

δρῶντας καὶ θεωμένους] contemplatur Fic.

ἀδικούμενα] ἀδικούμενον Par.
AK. Lob. Vind. BE. Vat. BHM.
Ven. C. Flor. ACTV. Etiam
Par. D. vulgatam cum litura et
Ven. B. or super ultima eius syllaba exhibit. Erroris originem
demonstrat Bastius comm. pal.
p. 818.

καὶ] om. Vat. B. a m. pr.

μιμεῖσθαι] μιμεῖσθαι Ald.
Bas. a. Ad hos infinitivos expli-
candos zeugmate opus non vide-
tur: οὐκ ἔστιν αὐτοῖς σχολὴ κά-
τω βλέπειν, ἀλλὰ μιμεῖσθαι per
se clara sunt.

ὁμιλεῖ] ὁμιλεῖ Vind. E.

ἀγάμενος] Ita Lob. sed cum o
super ἀ. ἀγάμενος Ald. Bas. a.
quo Stephanus p. 23. ἀγάμενος
postquam multo aptius esse do-
cuit, „ideo, inquit, veteri libro
de eo in contextum recipiendo
sum assensus, praesertim quum
et Fic. agnoscat.“ (cui cum amore
admirabundus adhaeret.) ἀγασθαι
tamen ποιητικὸν, saltem ποιητι-
κώτερον fātetur; quod Platonis
secus visum. Cf. L. I. p. 329.
D. II. 367. E.

μὴ] om. Vind. F. Vat. H. Flor.
AC.

τον, ἔφη. Θεῖω δὴ καὶ ποσμίῳ ὁ γε φιλόσοφος διαιτῶν
D πόσμιός τε καὶ θεῖος εἰς τὸ δυνατὸν ἀνθρώπῳ γίγνεται·
διαβολὴ δ' ἐν πᾶσι πολλῇ. Παντάπασι μὲν οὖν "Αν
οῦν τις, εἶπον, αὐτῷ ἀνάγκη γένηται ἢ ἐκεῖ δρᾶ, με-
λετῆσαι εἰς ἀνθρώπων ἥθη καὶ ἴδιᾳ καὶ δημοσίᾳ τιθέ-
ναι καὶ μὴ μόνον ἑαυτὸν πλάττειν, ἀλλα κακὸν δημιουρ-
γὸν αὐτὸν οἴει γενήσεσθαι σωφροσύνης τε καὶ δικαιο-
σύνης καὶ ἔμπασης τῆς δημοτικῆς ἀρετῆς; "Ηκιστά γε,
ἥ δ' ὅς. 'Αλλ' ἐὰν δὴ αἰσθῶνται οἱ πολλοὶ, ὅτι ἀληθῆ
E περὶ αὐτοῦ λέγομεν, καλεπανοῦσι δὴ τοῖς φιλοσόφοις

Θεῖω δὴ — θεοφιλῆ ποιῆσειαν.
501. C.] laudat Eusebius praep.
L. XII. p. 348: θεῖω δὴ καὶ πό-
σμῳ ὁ γε etc.

ὅς γε] ὅτε Bas. b.

πόσμιός τε καὶ θεῖος] *divinus*
ipse atque *decorus* Fic.

D γίγνεται] γίγνεται Euseb.

δὲ] δὲ Vind. F. Euseb.

πᾶσι] πάσῃ Vind. F. ante
corr.

οὖν] int. vers. a m. s. Vind.

E.

γένηται] γίγνηται idem.

μελετῆσαι] μελέτοσαι Mon. B.
καὶ μὴ μόνον ἑαυτὸν] neque
se tantum, sed et alios Fic. Pro
μόνον Vind. F. πόνον habet.

ἄλλα] ἄλλα Flor. ACTV. ἀλλὰ
Vat. B. a m. pr.

πανὸν] Priorem syllabam Vind.
F. int. vers. a m. s. habet.

δημιουργὸν] δὴ δημ. Euseb.
Ast. sec.

αὐτὸν] post οἴει Ven. B. Vind.
E. Vat. H. Flor. ACTV.

δημοτικῆς] δημωτικῆς Mon. B.
δεσμωτικῆς Vind. F.

Ἄλλ' ἐὰν δὴ] Si Fic.

αἰσθῶνται] αἰσθῶνται Flor.

R.

E ἀπιστήσουσιν] ἀπιστήσουσιν
Vind. F. ante corr. Sequentia
Hierocles de providentia L. II.
apud Photium cod. CCL. p. 464,
b. 13 — 27. Bekk. hunc in mo-
dum contracta exhibet: καὶ τοῦ-
το ἐν Πολιτείᾳ παραδίδωσι, τοὺς

φιλοσόφους λέγων ἔρχοντας ταῦς
πόλεσιν ἐφεστάνται, ἵνα ληξωσί¹
ποτε τῶν πανῶν, καὶ ὡς οὐκ ἄν
ποτε εὐδαιμονήσει πόλις, (ita
Bekkerus secundum codices pro
vulgato εὐδοκιμήσεις πόλεις scri-
psit.) εἰ μὴ αὐτὴν διαγράψειαν
οἱ τῷ θεῖῳ παραδείγματι κρώ-
μενοι. τίς δ' ὁ τρόπος τῆς δια-
γραφῆς; ὅτι λαβόντες ὕσπερ πί-
νανα πόλιν τε καὶ ἥθη ἀνθρώ-
πων πρώτον μὲν παθαρὰν ποιή-
σειαν, καὶ μετὰ τοῦτο ὑπογρά-
ψαντο ἄν τὸ σχῆμα τῆς πολι-
τείας, ἐπειτα, οἷμαι, ἀπεργα-
ζόμενοι αὐτὴν πνηνὰ ἄν ἐπατέ-
ρωσε ἀποβλέποτεν, πρός τε τὸ
φύσει δίκαιον καὶ παλὸν καὶ σω-
φρον καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα, καὶ
πρὸς (ὡς in codicibus est.) ἐπει-
νο αὖ, ὃ τοῖς ἀνθρώποις ἐμπο-
τεῖ, (id codices omittunt.) ὡς καὶ
(ita codices pro καὶ ὡς) "Ομηρος
ἔφη, τὸ θεοειδές τε (γ. τι) καὶ
θεοείκελον, καὶ τὸ μὲν ἔξαλετ-
φοιεν, τὸ δὲ πάλιν ἐγγράφοιεν,
ἔς ὅτι (ὅτον cod. Paris. bombyc.)
μάλιστα τὰ ἀνθρώπινα ἥθη θεο-
φιλὴ ποιήσειαν.

ἄν ποτε] ἀπόντε Ven. C. Ad
sequentia cf. L. V. p. 473. E.

παραδείγματι] παραδείματι
Ald.

ἥ] ἥν Mon. B. Flor. U.

ἐάνπερ] ἐὰν Lob. Vind. B.
Vat. M.

δὴ] post τίνα Vat. B.

καὶ ἀπιστήσουσιν ἡμῖν λέγοντες, ὡς οὐκ ἄν ποτε ἄλλως εὑδαιμονήσειε πόλις, εἰ μὴ αὐτὴν διαγράψειαν οἱ τῷ θείῳ παραδείγματι χρώμενοι ζωγράφοι; Οὐ χαλεπανοῦσιν, ἥ δ' ὅς, ἐάνπερ αἴσθωνται. ἀλλὰ δὴ τίνα λέγεις τρόπον τῆς διαγραφῆς; Λαβόντες, ἥν δ' ἔγὼ, 501
ώσπερ πίνακα πόλιν τε καὶ ἥθη ἀνθρώπων πρῶτον μὲν 476 οἶσθ', ὅτι τούτῳ ἄν εὐθὺς τῶν ἄλλων διενεγκεῖν, τῷ μήτε ἴδιώτου μήτε πόλεως ἐθελῆσαι ἄν ἄψασθαι μηδὲ γράφειν νόμους, πρὸν ἥ παραλαβεῖν καθαρὰν ἥ αὐτοὶ

501 διαγραφῆς; Λαβόντες] διαγραφῆς λαβόντες sine interpunctione Vind. E. Alteri Vind. F. a m. sec. οἱ φιλόσοφοι superscriptum habet.

ἥθη] post ἀνθρώπων Flor. T. ἄν, ὅ] ἄν ὅθεν Flor. R. ὅθεν, e corr. ὅθεν, Vind. F. ὅθεν Ang. B. Pro commate, quod cum Astio interposuimus, reliqui editores pūctum fecerunt.

ἄλλ' οὖν οἶσθ'] an nescis — ? Fic. cuius auctoritate Astius ἄλλ' οὖν οἶσθ — ; scripsit, idem in Bas. b. exstare falso nuntians. Quod Socrates Adimantum hoc iam scire ponit, id eodem, quo alia in his sermonibus, pertinet, ut prius habita cum eo colloquia respicere videatur. — οἶσθα Lob. Vind. B.

εὐθὺς] praeципue Fic.

διενεγκεῖν] διενέγκοντεν Mon. B. Flor. U. Bekkerus et Stallbaumius. διενέγκειν Euseb. ex quo Astius in sec. et tert. διενέγκειαν fecit, parum tenax eius, quod recte ad Alcib. p. 305. observaverat. Stephanus p. 24. ὅτι aut expungendum, aut sicuti post οἴδα, εν̄ οἶδα, ἵσθι, εν̄ ἵσθι, ita etiam post οἶσθαι posse πλεονάξειν statuendum censebat. Cf. Phaedon. p. 63. C: γῦν δὲ εν̄ ἵστε, ὅτι παρ' ἄνδρας τε ἐλπίζω ἀφίξεσθαι ἀγαθούς· καὶ τοῦτο μὲν οὖν ἄν πάννυ δισχυρισαίμην· ὅτι μέντοι παρὰ θεούς δεσπότας πάννυ ἀγαθούς ἥξειν, . εν̄ ἵστε, ὅτι, εἴπερ τι ἄλλο τῶν τοιούτων,

δισχυρισαίμην ἄν καὶ τοῦτο. ad quem locum Heindorius duo Xenophontos ex Cyropaedia adscripsit nostro simillimos L. V. c. 4. §. 1: ἐκ δὲ τοῦ Γαδάτα iππικον τῶν δυνατῶν τις ἀνδρῶν ἐπεὶ ἔώρα αὐτὸν ἀφεστηκότα ἀπὸ τοῦ Ἀσσυρίου, ἐνόμισεν, ὅτι, εἰ τι οὗτος πάθοι, αὐτὸς ἄν λαβεῖν παρὰ τοῦ Ἀσσυρίου πάντας τὰ Γαδάτα. οὕτω δὴ — πελεύει — λέγειν τῷ Ἀσσυρίῳ, ὅτι, εἰ βούλοιτο ἐνεδρεῦσαι, λαβεῖν ἄν Γαδάταν καὶ τοὺς σὺν αὐτῷ. quae quum optimorum codicum fide merito pro veris habentur, ne nobis quidem διενεγκεῖν mutare et orationem particulae ὅτι caussa, quam saepe obliquae addi constat, erigere licebit. Etiam quia significantem infinitivus in obliqua oratione sequitur Epinom. p. 982. D. τοῦθ' ἡμῶν τοῖς πολλοῖς αὐτὸν τούναντίον ἔδοξεν, ὅτι τὰ αὐτὰ καὶ ὡσαντώς πράττειν, ψυχὴν οὐν ἔχειν. Eusebiūn autem iam supra L. I. p. 347. A. pro infinitivo vidimus usitatiorem modum exhibere, quo loco Mon. B. perperam a Bekkero cum Stephano consentire traditur. Habet cum plerisque δεῖν, non δεῖ.

ἴδιώτου] ἴδιώτην Vat. H.

ἐθελῆσαι ἄν] ἐθελῆσαιεν Euseb.

γράφειν] γράφει Vind. E.

πρὸν ἥ] πρωνή Vind. F. Ald. Bas. ab. ἥ πρὸν Vat. B.

καθαρὰν] haec purgata Fic.

ποιῆσαι. Καὶ ὁρθῶς γ', ἔφη. Οὐκοῦν μετὰ ταῦτα οἵει
ὑπογράψασθαι ἀν τὸ σχῆμα τῆς πολιτείας; Τί μήν;
B Ἐπειτα, οἶμαι, ἀπεργαζόμενοι πυκνὰ ἀν ἐκατέρωσε ἀπο-
βλέποιεν, πρός τε τὸ φύσει δίκαιον καὶ οὐλὸν καὶ σῶ-
φρον καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα καὶ πρός ἐκεῖνο αὖ, ὃ ἐν
τοῖς ἀνθρώποις ἐμποιοῖεν, ξυμμιγνύντες τε καὶ οεραν-
νύντες ἐν τῷ ἐπιτηδευμάτων τὸ ἀνδρείελον, ἀπ' ἐκεί-
νου τεκμαιρόμενοι, ὃ δὴ καὶ "Ομηρος ἐκάλεσεν ἐν τοῖς

ποιῆσαι.] ποιῆσαι; Ald. Bas.

ab. (Ast.)

γ'] γε Euseb.

Οὐκοῦν] οὐκ ἀν Vat. H. Flor.
ACV.

μετὰ ταῦτα] μεταταῦτα Lob.
Vind. B. Mon. B. Ald. Bas. ab.
οἵει] εἴη Vind. E.

ὑπογράψασθαι] ὑπογράψεσθαι
Ang. B.

B ἐκατέρωσε] Ita Vind. F. Mon.
B. Ang. B. Flor. RU. Hierocles,
Euseb. Ast. sec. ἐκατέρωσ' Bek-
kerus, Astius in tert. et Stallbau-
mius. ἐκατέρως reliqui codices et
editiones.

ἐκεῖνο] Ita Vind. F. ante corr.
ἐκείνῳ e corr.

αὖ, ὃ ἐν τοῖς ἀνθρώποις ἐμ-
ποιοῖεν,] Ita Ven. B. Ald. Bas.
a. Steph. (tacentibus Bjp.) Ast.
pr. et sec. αὐτὸν ἐν τ. ἀ. ἐ. Lob.
Vind. B. Par. K. sec. Bekk. Vat.
M. Bas. b. αὐτὸν ἐν τ. ἀ. ἐ. re-
liqui codices, inter quos Flor. T.
ἐμποιοῖεν, Mon. B. τὸ linea nota-
tum et pro eo ὃ a m. s. in marg.
scriptum habet. atque iterum ad
humana: et ad superioris illius
exemplar humana disponent Fic.
qui et ipse τὸ legisse videtur.
Idem Bekkerus, Astius in tert. et
Stallbaumius receperunt et post
ἀνθρώποις incisionem fecerunt,
quo facto ἐμποιοῖεν ad sequentia
relatum copula caret, qua cum
ἀποβλέποιεν iungatur. Itaque
Astius καὶ ποιοῖεν pro eo scri-
bendum, Stallbaumius ἀποβλέ-
ποιεν in ἀποβλέποντες mutan-

dum, Schleiermacherus, qui et
ipse Bekkeri lectionem sequitur,
τε ante ξυμμιγνύντες ponendum
suscipatur: quorum nihil non du-
rius longiusve a codicum scriptu-
ra distans, quam vulgatum vide-
tur. Accedit quod, quum alterum
illud, quo pictores respiciant,
aliud esse non possit, nisi ipsa
imago, quam informant, seu si-
mulacrum iusti, pulchri et reli-
quorum, quod efficere in tabula
rasa student, id ipsum non sine
magna ambiguitate τὸ ἐν τοῖς ἀν-
θρώποις diceretur, quibus verbis
propter opposita τὸ φύσει δίκαι-
ον καὶ οὐλὸν vel virtutum illarum
species in vivis hominibus obvia
potius, quam adumbrata in ta-
bula, vel idea quaedam *humanae*
iustitiae pulchritudinisque diversa
ab illo *natura iusto pulchroque*
significari videretur. His de caus-
sis vulgatam lectionem restituī,
in qua sensus certus et aptus,
optativus autem ad hypotheticam
orationis formam legitime accom-
modatus est.

ξυμμιγνύντες] συμμ. Vind. E.
ξυμμιγνύντες Vind. F. Mon. B.
Eus. Ald. Bas. ab.

τε] om. Vind. E.

οεραννύντες] οεραννύντες Vind.
F. Mon. B. Eus.

ἀνδρείελον] Timaeus lex.
p. 36: ἀνδρείελον· χρόα ἐπιτη-
δεῖα ὡς πρὸς ἀνδρός μίμησιν.
quae explicatio non magis in hunc
locum quadrat, quam in alterum
Cratyl. p. 424. E. ubi pictores
interdun multos colores miscere
dicuntur, οἷον ὅταν ἀνδρείελον

ἀνθρώποις ἐγγιγνόμενον θεοειδές τε καὶ θεοείκελον.
Ορθῶς, ἔφη. Καὶ τὸ μὲν ἄν, οἶμαι, ἐξαλείφοιεν, τὸ
δὲ πάλιν ἐγγράφοιεν, ἔως ὅτι μάλιστα ἀνθρώπεια ἥθη C
εἰς ὅσον ἐνδέχεται θεοφιλῆ ποιήσειαν. Καλλίστη γοῦν
ἄν, ἔφη, ἡ γραφὴ γένουτο. Ἄρον, ἦν δὲ ἐγὼ, πεί-
θομέν πη ἐκείνους, οὓς διατεταμένους ἐφ' ἡμᾶς ἐφησθα
ἴεναι, ὡς τοιοῦτος ἔστι πολιτειῶν ζωγράφος ὃν τότε
ἐπηνοῦμεν πρὸς αὐτοὺς, δι' ὃν ἐκεῖνοι ἐχαλέπαινον, ὅτι

σπενάζωσιν ἢ ἄλλο τι τῶν τοιού-
των. Utrobius hominis imaginem
significat.

[Ἐγγιγνόμενον] ἐγγιν. Vind. E.

θεοείκελον] θεοείκελον Lob.
θεωείκελον Ald. Bas. a.

C ὥστε Lob. Vind. B. Vat.
BM. Quod vulgo additum legitur
ἄν, quum nonnisi in Par. DK.
Mon. B. Flor. U. et apud Euse-
biūm exstet, recte omissum est a
Stallbaumio in sec. ed. Cf. Leg.
L. VI. p. 752. C: εἰ δὲ μείναι-
μένη πως τοσοῦτον χρόνον, ἔως
οἱ γενσάμενοι παῖδες τῶν νόμων
καὶ ἔνντοναρέντες ικανῶς ἔννή-
θεισ τε αὐτοῖς γενόμενοι τῶν
ἀρχαιοειδῶν τῇ πόλει πάσῃ ποι-
νωνήσειαν. Phaedon. p. 59. D:
περιεμένομεν οὖν ἐκάστοτε, ἔως
ἀνοιχθεῖ τὸ δεσμωτήριον. Ib.
101. D: ὡσαντως ἄν διδοίης (λό-
γον) ἄλλην αὐτὸπόθεσιν ὑποθέ-
μενος — ἔως ἐπὶ τι ικανὸν ἔλ-
θοις. Quibus omnibus locis id,
quoad usque facere aliquid aliquis
ostenditur, intra eiusdem cogita-
tionem quidem versari, sed sine
dubitacione ei futurum esse vel
fieri tamen posse videri significa-
tur. Sed ubi id tale est, ut a
facientis voluntate pendeat, arbi-
trarii significatio per particulam
ἄν accedere potest. Itaque et
nostro loco ferri quodammodo po-
terat ἄν, et Phaedonis loco pro-
ximo paullo ante verba citata
recte habet vulgata: εἰ δέ τις
αὐτῆς τῆς ὑποθέσεως ἔχοιτο,
χαίρειν ἔργης ἄν καὶ οὐν ἀπονοί-
ναιο, ἔως ἂν τὰ ἀπ' ἐπείνης ὁρ-
μηθέντα σπέψαιο. neque opus

est, ut ἄν in αὐτῷ mutetur, quem-
admodum Stallbaumius opinatur,
qui, dum ἄν optativo ab ἔως pen-
denti iungi posse simpliciter ne-
gat, discrimen significationis ne-
glexit et nostrum ἔως cum altero,
quod est *quamdiu*, confundens
dissimiles locos Theaet. p. 155.
A. et Menon. 97. C. pro simili-
bus habuit.

[Ἀνθρώπεια] τὰς ἀ. Vind. F.
Ang. B. Flor. R. Euseb. (Hier.)
Ast. sec. tert. male. ὅτι μάλιστα
non pleonastice additum, sed ad
ἀνθρώπεια referendum est, quod
Schleiermacherum non fugit.

Καλλίστη] καλλίστη Vind. E.
ἔφη] om. Ven. B. Vind. E.
Vat. H. Flor. ACTV.

ἡ] om. Lob. Vind. B. Mon. B.
Vat. BM. Par. DK. Flor. U.

[Ἄρον] Ἄρον Vind. F.

ἢν δὲ] om. Vind. E.

πείθομένη] πνθόμενοι idem.
πείθομένη] Vat. H. Flor. AC.
Male Stephanus p. 24. πείθομεν
desiderat.

ἐκείνους] κείνους Vind. F. Ang.
B. ἐκείνοι Vind. E.

διατεταμένους] διατεταμέ-
νους, e corr. διατεταμένους, Mon. B. διατεταγμένους Ven. B.
Ang. B. (Flor. RT.) cum editis
ante Astii sec. V. L. V. p. 474.
A. In Vind. F. super δια a m.
s. ἀντι scriptum est.

τότε] τότε Vind. F.

[Ἐπηνοῦμεν] ἐπαινοῦμεν Flor.
T. ἐπονοῦμεν Vat. B. Mon. B.
superscripto alter η, alter αι su-
per πο.

ὅτι] ὅτε Mon. B. Flor. U.

τὰς πόλεις αὐτῷ παρεδίδομεν, καὶ τι μᾶλλον αὐτὸν νῦν ἀκούοντες πραῦνονται; Καὶ πολύ γε, ἢ δ' ὅς, εἰ σω-
D φρονοῦσι. Πῆ γὰρ δὴ ἔξουσιν ἀμφισβητῆσαι; πότερον
 μὴ τοῦ ὄντος τε καὶ ἀληθείας ἐραστὰς εἶναι τοὺς φιλο-
 σόφους; Ἀτοπον μέντ' ἂν, ἔφη, εἶη. Ἀλλὰ μὴ τὴν
 φύσιν αὐτῶν οἰκείαν εἶναι τοῦ ἀρίστου, ἢν ἡμεῖς διήλ-
 θομεν; Οὐδὲ τοῦτο. Τί δέ; τὴν τοιαύτην τυχοῦσαν τῶν
 προσηκόντων ἐπιτηδευμάτων οὐκ ἀγαθὴν τελέως ἔσεσθαι
 καὶ φιλόσοφον, εἴπερ τινὰ ἄλλην; ἢ ἐκείνους φήσειν
 Ε μᾶλλον, οὓς ἡμεῖς ἀφωρίσαμεν; Οὐ δή που. Ἐτι οὖν
 ἀγριανοῦσι λεγόντων ἡμῶν, ὅτι πρὸν ἂν πόλεως τὸ φι-
 λόσοφον γένος ἐγκρατεῖς γένηται, οὕτε πόλει οὕτε πολί-

καὶ τι] Ita Wind. E. Flor.
 ACTV. *καὶ τι* Par. A. Vát. H.
καὶ ἔτι reliqui codices editique,
 quod qui retinent, ita interpretari
 necesse habent, ut placati
 animi, quo illi nunc utantur,
 tranquillitas maior dicatur indi-
 gnatione; qua antea usi sint.
 Nam quod ipsa verba suadent,
 ut ad *ἔτι μᾶλλον* cogitetur ἢ *τό-*
τέ, ὅτε αὐτὸν ἐπηγοῦμεν πρὸς
αὐτούς, id ob sequentia δι' ὃν
ἐπεῖνοι ἔχαλέπαινον fieri nequit,
 nisi eodem tempore et *χαλεπαι-*
νειν et *πραῦνεσθαι* eos dici sta-
 tuimus. Illi vero interpretationi
 ea, quam nostra lectio simplicem
 et facilem habet, ob id ipsum
 haud dubie praeferenda, neque
 codicum auctoritas ita comparata
 est, ut deteriorem sequi cogamur.
 Itaque cum Schleiermachero τι
 practuli, cui etiam Adimanti πο-
 λὺ melius, quam vulgato respon-
 det. Nec aliter Ficinus: *nunc*
vero aequiori animo hoc audiunt?

αὐτῷ] om. Ang. B. Wind. F.
αὐτῷ Mon. B.

πραῦνονται] πραῦνονται Ald.
πολύ] maxime Fic.

εἰ σωφρονοῦσι] ἢ, e corr. εἰ,
σωφρονοῦσι Wind. F. ἢν σωφρο-
 νοῦσι Lob. εἰ φρονοῦσι, sup.
 σω inter εἰ et φρ, Vat. B. ἢν
σωφρονῶσι Ven. B. Wind. B.

Vat. M. Ald. Bas. ab. Steph. εἰ
σωφρονοῦσιν Bekkerus. ἢν σω-
 φρονῶσι non vitiosum, sed minus
 usitatum. Cf. Vol. I. p. 376, a.

γὰρ δὴ] nunc Fic. D

τοῦ ὄντος] eorum quae vere
 sunt idem.

μέντ' ἂν] μὲν τ' ἂν Wind. E.
 Mon. B. μὲν τὰν Wind. F.

ἔφη] post εἶη Wind. E.

δέ] δαι Par. A.

ἀγαθὴν] ἀγαθὸν Ald. Bas. ab.

τινὰ] τιν' Wind. F. τὴν' Ang.
 B.

φήσειν] φύσει Wind. F. Ang.
 B. φῆσεις Par. DK. Mon. B.
 (Flor. RTU.) cum editis ante
 Bekkerum. (vel eos) probabunt
 (magis) Fic. Quamquam huius
 infinitivi eadem, quae proximi
ἔσεσθαι ratio reandi potest, ut ab
ἔξοντι λέγειν pendere statuatur,
 quam dictionem a Socrate in lo-
 cum eius, quam posuerat, *ἔξον-*
τιν ἀμφισβητῆσαι substitutam es-
 se ex eo colligitur, quod οὐκ ἀ-
 γαθὴν, non μὴ dixit, qua ratio-
 ne probata sensus minime incom-
 modus procedit hic: *poteruntne*
dicere hanc naturam non perfecte
bonam et philosopham futuram,
aut sese illos praelaturos esse,
quos nos exclusimus? tamen φῆ-

ταις πανταν παῦλα ἔσται, οὐδὲ ἡ πολιτεία, ἣν μυθολογοῦμεν λόγῳ, ἐργῷ τέλος λήψεται; Ἰσως, ἐφη, ἡτον. Βούλει οὖν, ἣν δ' ἐγώ, μὴ ἡττον φῶμεν αὐτοὺς, ἀλλὰ παντάπασι πράους γεγονέναι καὶ πεπεῖσθαι, ἵνα εἰ μή 502 τι ἄλλο, αἰσχυνθέντες ὁμολογήσωσι; Πάνυ μὲν οὖν, ἐφη. Οὗτοι μὲν τοίνυν, ἣν δ' ἐγώ, τοῦτο πεπεισμένοι ἔστων· τοῦτο δὲ πέρι τις ἀμφισβητήσει, ὡς οὐκ ἀντύχοιεν γενόμενοι βασιλέων ἔκγονοι ἢ δυναστῶν τὰς φύσεις φιλόσοφοι; Ούδ' ἀν εἰς, ἐφη. Τοιούτους δὲ γενομένους ὡς πολλὴ ἀνάγκη διαφθαρῆναι, ἔχει τις λέγειν; ὡς μὲν γὰρ χαλεπὸν σωθῆναι, καὶ ἡμεῖς ξυγχωροῦμεν· ὡς δὲ ἐν παντὶ τῷ χρόνῳ τῶν πάντων οὐδέποτ' Β

τειν οἱ ἔσεσθαι pro φάναι rece-
ptum, hoc autem pariter cum illo
λέγειν ad ἔξοντι referendum sta-
tuere malim: poteruntne hos non
fore perfecte bonos dicere, aut
illos potius tales futuros affirma-
re? Aliter Stallbaumius: „φήσεων
dicitur perinde ac si praecessis-
set Πῆ γὰρ οὖτις ἔξειν αὐτοὺς
ἀμφισβητήσαι, ο. τ. λ.“ cui sub-
scriberem, si μὴ ἀγαθὴν praec-
cessisset.

E δή] δέ Vat. H.

οὖν] om. Fic.

ὅτι] om. Ald. Bas. ab.

φιλόσοφόν] φιλόσον Vind. E.

πόλει] πόλεως Par. K.

πολιτεία] πολιτεία Mon. B.

μυθολογοῦμεν] μυθολογῶμεν
Vind. B. Vat. M.

οὖν] om. Lob. Vind. B. Vat.
BM.

ἡν] ἡν' Vind. E.

μὴ] om. Lob. Vind. B. Vat.
BM. Ven. C. Par. DK.

ἵνα] ἵν' Vind. E.

502 εἰ] om. Vat. H. Flor. V. et
Ficinus: ne forte erubescentes ali-
quid aliud confiteantur.

ἄλλο] Astius in tert. ἀλλὰ
coniecit; non male. V. p. 509. C.

όμολογήσωσι;] ὁμολογήσωσιν;
Bekkerus.

τοῦτο] τοῦτον Vind. F.-Ang.
B.

ἔστων] ἔσταν Vind. E.

τις] τις Vind. E. Ald. Bas. ab.
τις Lob. Vind. B. Mon. B. Steph.
Ast. pr. sec. τῆς Vind. F. Interrogativum per se haud ineptum
ei, quod Adimantus respondet,
minus convenit.

ἀμφισβητήσει, ὡς] ἀμφισβητήσεως Vind. F.

ἔγγονοι] ἔγγονοι Vind. F.

τὰς] οἱ τὰς Lob. Vind. B. Vat.
M. Bas. b. Steph.

πολλὴ] πολλούς, sup. ἡ, Par.
K.

τις] τις Vind. B.

λέγειν; ὡς etc.] Ita Lob. Vind. BE. Mon. B. Bekkerus et Stallb.
λέγειν. ὡς etc. Ald. Bas. ab. Steph.
λέγειν. ὡς etc. Ast. pr. sec. λέ-
γειν (ὡς—ξυγχωροῦμεν), Astius
in tert. pessime ὡς μὲν et ὡς δὲ
divellens. Socrates ita interrogat,
ut Adimantum negaturum exspectet,
eiusque exspectationis ratio-
nem addit: ὡς μὲν γὰρ etc.

γὰρ] om. Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

ξυγχωροῦμεν] συγχ. Mon. B.
Vind. F. Flor. RU.

δὲ] δ' Lob. Vind. BE. Vat.
HM.

οὐδέποτ'] οὐδέποτε Vind. EF. B

οὐδ' ἀν εἰς σωθείη, ἔσθ' ὅστις ἀμφισβητήσει; Καὶ πῶς; Ἀλλὰ μὴν, ἦν δ' ἐγὼ, εῖς ἵκανός γενόμενος, πόλιν ἔχων πειθομένην, πάντ' ἐπιτελέσαι τὰ νῦν ἀπιστούμενα. Ἰκανὸς γάρ, ἔφη. Ἀρχοντος γάρ που, ἦν δ' ἐγὼ, τιθέντος τοὺς νόμους καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα, ἀδιεληλύθαμεν, οὐδὲ δὴ που ἀδύνατον ἐθέλειν ποιεῖν τοὺς πολίτας. Οὐδ' ὁπωστιοῦν. Ἀλλὰ δὴ ἀπερ ήμην δοκεῖ, δόξαι καὶ ἄλλοις θαυμαστόν τι καὶ ἀδύνατον; Οὐκ οἶ-

C μαι ἐγωγε, η δ' ὅς. Καὶ μὴν ὅτι γε βέλτιστα, εἴπερ δυνατὰ, ἵκανῶς ἐν τοῖς ἐμπροσθεν, ὡς ἐγῷ μαι, διηλθομεν. Ἰκανῶς γάρ. Νῦν δὴ, ὡς ἔοικε, ξυμβαίνει

οὐδ' ἀν εῖς] οὐδὲν εῖς Vind.
F. ἀν οὐδεὶς Lob. Vind. B. Vat.
BM.

ὅστις] ὅτις Ven. C. Par. DK.
sec. Bekk. Vat H. et, ut videtur,
a m. pr. Mon. B.

ἀμφισβητήσει] Ita Par. DK.
sec. Bekk. Mon. B. Flor. U. ἀμ-
φισβητήσεως Ven. C. ἀμφισβη-
τήσει reliqui codices cum editio-
nibus ante Astii sec. qui in addendis vel ἀν adiiciendum vel
ἀμφισβητήσει scribendum docuit.
Cf. Vol. I. p. 91, a. Pro signo
interrogandi Stephanus punctum
habet.

Καὶ πῶς;] om. Mon. B.
γενόμενος] om. Mon. B. natu-
ra sic institutus Fic.

πάντ'] πάντα Lob. Vind. B.
ἐπιτελέσαι] ἐπιτελέσαι Par. DK.
sec. Bip. Vind. E.

Ἄρχοντος γάρ που] Porro si
princeps aliquis Fic. ἢ. γάρ δὴ
που Lob. Vind. B. Vat. M.

τιθέντος] τιθέντα Par. K.
διεληλύθαμεν,] διεληλύθαμεν;
Vind. B.

πολίτας. Οὐδ'] πολίτας οὐδ'
Vind. E.

ὁπωστιοῦν.] ὁπωστιοῦν. Vind.
E. ὁπως. τί οὖν. Vind. F.

δὴ ἀπερ] μὴν ὁπερ Par. DK.
sec. Bekk. Mon. B. μὴν ἀπερ
Ald. Bas. a. Steph. Ast.

καὶ] Ita Mon. B. a m. pr. ἀν
a m. s.

θαυμαστόν τι καὶ ἀδύνατον]

θ. τε π. ἢ. Vind. E. Mon. B.
Par. DK. Flor. TU. θ. τ π. ἢ.
Vind. B. θαυμαστὰ καὶ ἀδύνατα
Bas. b. „Legitur etiam θάυμα-
στά τε καὶ ἀδύνατα“ Steph. in
m.

Οὐκ οἶμαι ἐγωγε] Non, ut ar-
bitror. Fic.

γε] om. Lob. Vind. BE. Vat. C
BM.

βέλτιστα, εἴπερ δυνατὰ,] βέλ-
τιστα: Vind. E.

περὶ τῆς νομοθεσίας] Rectius
in Ald. Bas. ab. Steph. comma
his postpositum, quam in Astii
pr. et sec. antepositum est.

λέγομεν] ἐλέγομεν Vat. H.
Flor. C.

Ξυμβαίνει] ξυμβαίνειν Par. K.
sec. Bekk.

Ούνοιν] om. Fic.
τοῦτο] τοῦτο idque post μό-
γις Vind. E.

μόγις] Ita Par. A. Vind. EF.
Mon. B. Ven. B. Ang. B. Vat.
H. Flor. ACRTUV. μόλις reliqui
et editiones ante Bekkerum, qui
uno Axiochi loco p. 368. B. μό-
λις cum omnibus codicibus tenuit,
in reliquis paucis, quibus idem
vulgatum erat, μόγις scripsit,
partim iubentibus codicibus, ut
hic et L. X. p. 620. C. Apol. 21.
B. 27. C. Phaedon. 108. B. par-
tim refragantibus, ut Theaet.
p. 142. B. ubi γ tantum in tri-
bus Parisiensibus CEF. super-

ἥμιν περὶ τῆς νομοθεσίας ἄριστα μὲν εἶναι ἡ λέγομεν,
εἰ γένοιτο, χαλεπὰ δὲ γενέσθαι, οὐ μέντοι ἀδύνατά γε.
Συμβαίνει γὰρ, ἐφη. Οὐκοῦν ἐπειδὴ τοῦτο μόγις τέλος
ἔσχε, τὰ ἐπίλουπα δὴ μετὰ τοῦτο λεκτέον, τίνα τρόπον Δ
ἥμιν καὶ ἐκ τίνων μαθημάτων τε καὶ ἐπιτηδευμάτων οἱ
σωτῆρες ἐνέσονται τῆς πολιτείας, καὶ κατὰ ποίας ἡλι-
πίας ἔκαστοι ἐκάστων ἀπτόμενοι; Λεκτέον μέντοι, ἐφη.
Οὐδὲν, ἦν δ' ἔγω, τὸ σοφόν μοι ἐγένετο τὴν τε τῶν
γυναικῶν τῆς πτήσεως δυσχέρειαν ἐν τῷ πρόσθεν παρα-
λιπόντι καὶ παιδογονίαν καὶ τὴν τῶν ἀρχόντων κατά-
στασιν, εἰδότι, ὡς ἐπίφθονός τε καὶ χαλεπὴ γίγνεσθαι ἥ

scriptum, et p. 160. E. ubi in uno Par. B. a m. s. et in duobus CH. et Hipp. min. p. 364. C. ubi in Ven. BD. quibus Flor. R. accedit, μόγις invenit, et Tim. 85. C. 86. A. quorum locorum priori omnes, posteriori plerosque μόλις cum Stephano exhibere ostendit. Sed in Theaeteto praestantissimus Lob. et bini Florentini, in Timaeo vero optimus Vind. CCCXXXVII. formam a Bekkerio receptam magnopere commendant, qua quum alibi Platonem crebro usum esse codicum consensus doceat (supra L. I. p. 350. D. Phaedr. 240. E. 254. C. Symp. 190. C. 213. D. Lys. 222. B. Epist. II. 313. C. 314. A. singuli aut bini, summum quatuor dissentient) in Hippia quidem, ut in Axiocho, μόλις ferrendum, in ceteris μόγις scribendum videtur. Unus est Euhydemi locus p. 282. D. (415, 6 Bekk. τὸ μὲν ἐμὸν παραδειγματοῦν, ἰδιωτικὸν ἵσως καὶ μόγις διὰ μαρων λεγόμενον) ubi nescio an μόλις, in quo omnes libri, undeviginti numero, in iisque Clarkianus consentiunt, servari debuerit. Nam et alia Plato singularia habet, ut θελάσσης, de quo cf. Vol. I. p. 21, a. et in hoc ipso vocabulo Thucydides, qui plerunque μόλις usurpavit, alteram tamen formam semel et iterum admisit. Cf. Bekkerus ad

Thuc. L. I. c. 12. et Poppo Vol. I. p. 208.

μετὰ τοῦτο] μεταποῦτο Vind. BE. Mon. B. Ald. Bas. ab.

τίνα — Λεκτέον Δ.] om. Vind. E. Pro τίνα Ang. B. ὄντιναν, Vind. F. Flor. R. ὄντινα habent.

καὶ ἐν] καὶ om. Vind. F. Ang. D. B.

ἐνέσονται] ἐσόνται Ven. B. Vat. H. (Flor. ACTV.) cum editis ante Bekk. instructi erunt Fic.

ἐκάστων] ἐκάστω Vind. F. ἀπτόμενοι;] Signum interrogandi Bekkerus fecit.

μέντοι] μέν τοι Steph.

Οὐδὲν] οὐδὲ Vat. B. a m. pr. σοφόν] σωφρόν Lob. Vind. B. Vat. B. Mon. B. Ven. BC. Par. DK. sec. Bekk. Flor. U.

δυσχέρειαν] ante τῆς πτήσεως Lob. Vind. B. Vat. BM. difficultatem atque molestiam Fic.

παραλιπόντι] παραλειπόντι Ald. Bas. a. παραλείποντι Vat. H. Flor. TV.

εἰδότι] εἰδ' ὅτι Vind. E. τε] om. Vind. F. Ang. B.

χαλεπὴ] χαλεπὰ Ald. Bas. a.

γίγνεσθαι] γίγνεται Vat. B. Mon. B. γίγνεσθαι cum τι super οὐ Ven. B. λέγεσθαι Vind. F.

η] Ita Ven. B. et e corr. Vat. B. η̄ Vind. E. εἰλ η̄ Mon. B. Flor. U. Stallb. η̄ reliqui cum editis ante Astium, qui in sec. η̄ in textu posuit, in comm. η̄ a Stephano in m. primum, tum

παντελῶς ἀληθῆς· νῦν γὰρ οὐδὲν ἡττον ἥλθε τὸ δεῖν
 E. αὐτὰ διελθεῖν. καὶ τὰ μὲν δὴ τῶν γυναικῶν τε καὶ παί-
 δων πεπέρανται, τὸ δὲ τῶν ἀρχόντων ὥσπερ ἐξ ἀρχῆς
 μετελθεῖν δεῖ. ἐλέγομεν δ', εἰ μνημονεύεις, δεῖν αὐτοὺς
 503 φιλοπόλιδάς τε φαίνεσθαι βασανιζομένους ἐν ἥδοναῖς τε
 καὶ λύπαις καὶ τὸ δόγμα τοῦτο μήτ' ἐν πάνοις μήτ' ἐν
 φόβοις μήτ' ἐν ἄλλῃ μηδεμιᾷ μεταβολῇ φαίνεσθαι ἐκ-
 βάλλοντας, ἢ τὸν ἀδυνατοῦντα ἀποκριτέον, τὸν δὲ παν-
 ταχοῦ ἀκήρατον ἐκβαίνοντα ὥσπερ χρυσὸν ἐν πυρὶ βασα-
 νιζόμενον στατέον ἀρχοντα καὶ γέρα δοτέον καὶ ζῶντι
 καὶ τελευτήσαντι καὶ ἄθλα. τοιαῦτ' ἄττα ἦν τὰ λεγό-

annot. p. 24. commendatum re-
 cepisse profitetur, in tert. vero
 praeceunte Bekkero recepit, quo
 nihil verius. Neque illud Ste-
 phanum fugit, verba ἡ παντελῶς
 ἀληθῆς tantum ad τῶν ἀρχόν-
 των κατάστασιν pertinere. Scili-
 cet magistratum constitutionem
 Socrates L. III. p. 414. A. ita
 pertractaverat, ὡς ἐν τύπῳ, μὴ
 δὲ ἀκριβείας, εἰρηνοῦται, quibus
 verbis accuratiorem quandam eius
 rei expositionem designabat, quam
 h. l. invidiae et difficultatis ti-
 more adhuc subterfugisse confite-
 tur. ἡ ineptum esse apparebat,
 etiam si cum Cornario εἰδότι ὡς
 ἐπιφθονά τε καὶ χαλεπὰ γίγνε-
 σθαι, ἡ παντελῶς ἀληθῆ scriba-
 tur, neque a Ficino apte reddi
 potuit: noscebam enim, quam in-
 vidiosa res esset factuque diffici-
 lis, vel omnino vera. Sed εἰ καὶ
 non magis probabile videtur,
 quam accuratissimum quodque ob
 id ipsum et difficillimum factu
 esse soleat.

γὰρ] autem Fic.

E. αὐτά] αὐτὴν Vind. F. Ang. B.
 Flor. AR. αὐτὸ Stalb. sec. per
 incuriam.

δὴ] om. Vind. E.

τε] om. Lob. Vind. B. Mon. B.
 Vat. BM. Par. DK. Ven. C. Flor.
 U.

ἐξ ἀρχῆς] ἐξαρχῆς Lob. Vind.
 BF.

μνημονεύεις] μνημονεύειν Vind.
 F.

μήτ' ἐν πόνοις] μήτε ἐν π. 503
 Flor. R. μήτ' ἐν φόνοις Bas. b.
 μήτ' ἐν ἄλλῃ] μήτε ἐν ᾧ. Vind.

F. μεταβολῇ] μεταβολὴ idem.
 πανταχοῦ ἀκήρατον ἐκβαίνον-
 τα] qui passim sincerus et incor-
 ruptus evadit Fic.

γέρα] γέρας Lob. Vind. B.
 Vat. M. Antiat. Bekk. p. 87, 22 :
 γέρα. Πλάτων ἔντοντος Πολιτείας.
 Etiam L. III. p. 414. A. V. 460.
 B. 465. D. VII. 516. C.

τελευτήσαντι καὶ ἄθλα.] τελευ-
 τήσαντι καὶ ἄθλα Ald. τελευτή-
 σαντι. καὶ ἄθλα Bas. ab. τελευ-
 τήσαντι. καὶ ἄθλα Vind. E. — ἄ-
 θλα. Mon. B. Vitiosa interpunc-
 tione post τελευτήσαντι deceptus
 Ficinus sequentia perperam sic
 convertit: Praemia vero talia
 sint, qualia communiter dicta
 sunt, breviter hoc percurrente et
 quasi tergiversante sermone, quip-
 pe cum res, ut nunc sunt, movere
 timeremus.

τοιαῦτ' ἄττα] τοιαῦτάττα Vind.
 EF. Ald. Bas. a. τοιαῦτα ἄττα
 Vind. B. Flor. T. τοιαῦτα ἄττα
 Lob.

παρακαληπτομένου] „παρα-
 καληπτεσθαι fortasse Par. A.“
 Bekk.

πεφοβημένου] πεφοβημένον B
 Ald. Bas. a.

Ἀληθέστατα] Vera Fic.

μέμνημαι] μέμνησαι Flor. U.
 et, sup. a m. s. μ., Mon. B.

μενα παρεξιόντος καὶ παρακαλυπτομένου τοῦ λόγου, πεφοβημένου κινεῖν τὸ νῦν παρόν. Ἀληθέστατα, ἔφη, Β λέγεις· μέμνημαι γάρ. "Οκνος γὰρ, ἔφην, ὡς φίλε, ἐγώ, εἰπεῖν τὰ νῦν ἀποτετολμημένα· νῦν δὲ τοῦτο μὲν τετολμήσθω εἰπεῖν, διτι τοὺς ἀκριβεστάτους φύλακας φιλοσόφους δεῖ καθιστάναι. Εἰρησθω γὰρ, ἔφη. Νόησον δὴ, ὡς εἰκότως ὀλίγοι ἔσονται σοι. ἦν γὰρ διήλθομεν φύσιν δεῖν ὑπάρχειν αὐτοῖς, εἰς ταῦτα ἔνυμφύεσθαι αὐτῆς τὰ μέρη ὀλιγάκις ἐθέλει, τὰ πολλὰ δὲ διεσπασμένη φύεται. Πῶς, ἔφη, λέγεις; Εὔμαθεῖς καὶ μνήμονες Κ καὶ ἄγχίνοι καὶ ὅξεῖς καὶ ὅσα ἄλλα τούτοις ἐπεται, οἶσθ',

["]Οκνος] Ita cum reliquis omnibus (nam de Par. K. quem Bekkerus omisit, Bipontinorum exstat testimonium) Mon. B. a m. pr. et scholiastes, qui ὄκνος· ἀνάδυσις, εὐλάβεια, ἀναβολή ad h. l. adscripsit. ὄκνον margo Par. D. et, ὡς in margine posito, a m. s. Mon. B. ὄκνον editiones omnes. Cf. L. V. p. 450. D: διὸ δὴ καὶ ὄκνος τις αὐτῶν ἀπτεσθαι· quae de hac eadem redicta nullam dubitationem relinquunt, quin ὄκνος genuinum sit. De ellipsi imperfecti ἦν Schaeferus melet. p. 44. egit. Addo Aeschin. adv. Ctes. §. 71. Bekk. ὥντες ἐν μέσῳ, καὶ παρημεν τῇ ὑστεροιᾳ εἰς τὴν ἐκπλησίαν.

ἔφην, ὡς φίλε, ἐγώ,] ὡς φίλες ἔφην ἐγώ Vind. F. Ang. B. ἔφην ἐγώ ὡς φίλε Vind. B. Comma post ἐγώ Stephanus et recentiores omittentes pronomen ad ὄκνον referunt, quod longius distat et facile eo caret. Servata vero codicum lectione necessario ad ἔφην referendum est, cui aliquoties additum ad p. 496. A. ostendi. Neque interpositus vocativus ullam offensionem habet. Conf. Heindorius et Stallbaumius ad Phaedon. p. 78. A.

τὰ νῦν] τανῦν Vind. F.

μὲν] μὲν δὴ idem et Ang. B. Flor. R.

καθιστάναι] καθεστάναι Lob. Vat. B. Bas. b. Id Stallbaumius in sec. recepit, quia absurdum

sit dicere eos, qui sint diligentissimi civitatis custodes, reddi oportere philosophos. At sensus vulgatae idem est atque si dixisset ὅτι τὸν τοὺς ἀκριβεστάτους φύλακας καθιστάναι μέλλοντα φιλοσόφους δεῖ καθιστάναι. Ficinus quoque minus accurate haec interpretatus est: Nos vero in praesentia id asserere audeamus, quod custodes diligentissimi optimi esse debent philosophi.

ὡς εἰκότως ὀλίγοι ἔσονται σοι] quam pauci tales erunt Fic.

ἦν γὰρ] εἰ γὰρ Vind. F. ἦν γὰρ δὴ Vind. E. (Fior. ACT.) cum editis ante Bekkerum.

εἰς] οἷς εἰς Lob. Vind. B. Vat. BM.

αὐτῆς] αὐτοῖς Ang. B. Vat. H.

ἐθέλει] ἐθέλειν Vind. F. τὰ πολλὰ] ταπολλὰ Lob. Steph. διεσπασμένη] διεσπασμένη Vind. E. διεσπασμένα Ang. B. Flor. T. Steph. Ast. Stallb. pr. „In praeced. edit. διεσπασμένη: alteram autem lectionem agnoscit et Fic.“ Steph. p. 24. (partes) disiunctae (nascuntur) Fic. Ut hic φύσιν, ita μογάδα Phileb. pag. 15. B. διεσπασμένη dicit. Ceterum διεσπασμένα, si per codices licuisset, ferri potuisse appareat,

φύεται] φείνεται Mon. B. Par. DK. sec. Bekk. Flor. U.

καὶ ὅσα ἄλλα τούτοις ἐπεται] C om. Fic.

ὅτι οὐκ ἐθέλουσιν ἄμα φύεσθαι καὶ νεανικοί τε καὶ μεγαλοπρεπεῖς τὰς διανοίας οἶοι κοσμίως μετὰ ἡσυχίας καὶ βεβαιότητος ἐθέλειν ξῆν, ἀλλ' οἱ τοιοῦτοι ὑπὸ ὀξύτητος φέρονται ὅπη ἀν τύχωσι, καὶ τὸ βέβαιον ἄπαν αὐτῶν ἔξοιχεται. Ἀληθῆ, ἔφη, λέγεις. Οὐκοῦν τὰ βέβαια αὖτα ἥθη καὶ οὐκ εὐμετάβολα, οἷς ἂν τις⁴⁷⁷

D μᾶλλον ὡς πιστοῖς χρήσαιτο, καὶ ἐν τῷ πολέμῳ πρὸς τοὺς φόρους δυσκίνητα ὄντα πρὸς τὰς μαθήσεις αὖ ποιεῖ ταῦτον· δυσκινήτως ἔχει καὶ δυσμαθῶς ὁσπερ ἀπονεναρκωμένα, καὶ ὑπονού τε καὶ χάσμης ἐμπίπλανται,

καὶ νεανικοί] καὶ νεανίσκοι
Vind. E. Flor. ACTV. Heindorfius ad Theaet. p. 144. A. *καὶ* hoc loco delendum et ante οἶοι inserendum suspicabatur, quod utrumque Astius in sec. et tert. fecit, quasi iuvenilis animus et magnificus tranquillitatis et stabilitatis amans esse soleat. Stallbaumius in pr. nostrum *καὶ* uncis inclusit et οἶοι secundum duos codices in οὖν mutavit, in sec. uncos removit et *καὶ οἶοι* cum Heindorfio et Astio diversa tamen sententia scripsit. Vulgatam sanam esse perspexit recteque explicuit Schleiermacherus, sed nominativis εὐμαθεῖς, μνήμονες, ἀγχίνοι, ὀξεῖς, νεανικοί, μεγαλοπρεπεῖς subiectum significari statuens duo postremos perincommodo locatos et subiecti descriptionem verbis ad praedicatum pertinentibus inscite interpellatam fateri coactus est. Mili praedictati significatio eis inesse, subiectum verbis οἶοι κοσμίως — ἐθέλειν ξῆν declarari videtur, hoc sensu: *Qui ita a natura comparati sunt, ut moderate, tranquille, graviter vivere velint, simul dociles, memores, sagaces, acuti unimoque iuvenili et magnifico praediū esse non solent.* Sic omnia usque ad τὰς διανοίας unum enuntiationis membrum efficiunt, nec sine ratione duo extrema utpote mores spectantia a quatuor prioribus ad intellectum referendis separata sunt.

οἶοι] οἱ οὐ, vulgato in margine adscripto, Flor. T. *οὖν* Par. DK. Flor. U. et, ut videatur, a m. pr. Mon. B. *οἶοι* idem a m. s. habet.

κοσμίως] κοσμίω Vind. F.

ἡσυχίας καὶ βεβαιότητος] ἡσυχίας καὶ ἡμερότητος Lob. Ven. B. Vat. M. Bas. b. *ἡμερότητος καὶ ἡσυχίας* Vind. B. *ἡμερότητος* in Flor. T. int. vers scriptum et a Stephano in m. pro varia lectione notatum est.

οἱ τοιοῦτοι] οὐ τοιοῦτοι Vat. B. *οὐ τοιοῦτοι οἶοι* Lob. Vind. B. Vat. M. Sunt ii, qui tales sunt, quales tranquillitatis amantes non esse consueverunt.

ὑπὸ] ὑπὲ Vind. F. Ang. B.

ὅπη] ὅποι Vind. E. (Ven. B.) editiones ante Bekkerum.

αὐτῶν ἔξοιχεται] τάνταν ἔξοιχεται Vind. F. *ταῦταν ἔξέρχεται* Ang. B. *ἔξι αὐτῶν ἔξέρχεται* Flor. T. *ἔξι αὐτῶν οἰχεται* Vind. E. (Ven. B. Flor. C.) Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Verbo *ἔξοιχεσθαι* usus est Homerus Il. VI. 379: *ἢ ἐς Αθηναίης ἔξοιχεται* —; et Sophocles Oed. Col. 863. Reis. — Ficinus: *stabilitatis omnis et gravitatis expertes.*

οὐκ εὐμετάβολα] οὐ μετάβολα Ven. B. a m. pr.

μᾶλλον] maxime Fic.

χρήσαιτο] χρήσηται Lob. Vind. D

ὅταν τι δέη τοιοῦτον διαπονεῖν. Ἐστι ταῦτα, ἔφη.
 Ἡμεῖς δέ γ' ἔφαμεν ἀμφοτέρων δεῖν εὖ τε καὶ καλῶς
 μετέχειν, η̄ μήτε παιδείας τῆς ἀκριβεστάτης δεῖν αὐτῷ
 μεταδιδόναι μήτε τιμῆς μήτε ἀρχῆς. Ὁρθῶς, η̄ δ' ὅς.
 Οὐκοῦν σπάνιον αὐτὸν οἶει ἔσεσθαι; Πῶς δ' οὕ; Βασα-
 νιστέον δὴ ἐν τε οἷς τότε ἐλέγομεν πόνοις τε καὶ φόβοις Ε
 καὶ ἥδοναῖς, καὶ ἔτι δὴ ὁ τότε παρεῖμεν, νῦν λέγομεν,
 ὅτι καὶ ἐν μαθήμασι πολλοῖς γυμνάζειν δεῖ σκοποῦντας,
 εἰ καὶ τὰ μέγιστα μαθήματα δυνατὴ ἔσται ἐνεγκεῖν, εἴτε
 καὶ ἀποδειλιάσει ὕσπερ οἱ ἐν τοῖς ἄλλοις ἀποδειλιῶντες. 504

B. Vat. BM. χρήσεται Ven. C.
 Par. DK.

καὶ] τὰ καὶ Mon. B. Par. DK.
 Flor. U. Ast. sec.

δυσκύνητα] δυσκύνητα Vind.
 E.

ἀπονενδονωμένα] νενερωμέ-
 να Mon. B. Vat. BM. Ven. C.
 Par. DK. sec. Bekk. Flor. C.
 νενερωμένα Lob. Vind. B.

καὶ χάσμης] καὶ int. vers. a
 m. s. habet Mon. B.

ἐμπίπλανται] ἐμπίπλαται Mon.
 B. ἐμπίμπλαται Flor. C. a m. s.
 "Ἐστι ταῦτα, ἔφη] ἔστιν ἀλη-
 θῆ ἔφη ταῦτα λέγεις Ang. B.
 Ἀληθῆ, ἔφη, ταῦτα λέγεις mar-
 go Flor. R.

γ' ἔφαμεν] ἔφαμεν Vat. B. γε
 φαμὲν Vind. F. Ang. B. margo
 Flor. R. γε ἔφαμεν Vind. E.

σπάνιον] ἐπανιὸν Vind. F.
 Βασανιστέον] βασανιστέος Mon.
 B. Par. D. Flor. U.

τε οἷς] τοὺς Ang. B.

E δὲ τότε] δέ τε Vind. B. Vat. M.
 δὲ Vind. F. in m. a m. s. habet.
 παρεῖμεν] ἐπαρεῖμεν Vind. F.
 a m. pr. παρημένεν Ven. B. Flor.
 T. Bekkerus, nescio quo grammatico auctore.

λέγομεν] λέγωμεν Lob. Vind.
 BE. Ven. B. Vat. M. Flor. T.
 Cf. L. V. p. 471. C. extr.

πολλοῖς] plurimis Fic.
 γυμνάζειν] Hunc locum Proclo

T. V. p. 266. Cous. obversatum
 opinor, dum verba Parmenidis
 p. 135. D. ἐλκυσσον δὲ σαντὸν
 καὶ γύμνασαι μᾶλλον διὰ τῆς δο-

υούσης ἀχρήστου εἶναι καὶ πα-
 λουμένης ὑπὸ τῶν πολλῶν ἀδο-
 λεσχίας explicaturus πρὸ πάντων
 ἄξιον, inquit, ἐκεῖνο διορίσα-
 σθαι, τί τὸ γυμναστικὸν τῆς
 διαλεκτικῆς ταῦτης· καὶ γὰρ ὁ
 ἐν Πολιτείᾳ Σωκράτης γυμνάζειν
 φησί δι' αὐτῆς τοὺς παιδενομέ-
 νους. quamquam ad rem aequem
 appositus erat ille L. VII. p. 539.
 D: ἀρκεῖ δὴ ἐπὶ λόγων μεταλή-
 ψει μεῖναι ἐνδελεχώς καὶ ξυντό-
 νως μηδὲν ἄλλο πράττοντι, ἀλλ'
 ἀντιστρόφως γυμναζομένῳ τοῖς
 περὶ τὸ σῶμα γυμνάσιοις ἔτη δι-
 πλάσια, η̄ τότε;

δυνατὴ] In Ven. B. super ult-
 imum scriptum est ὅς, et δυνατὸς
 requirit Stallbaumius in sec. quia
 ad δυνατὴν vix ex antecedentibus
 η̄ φύσις αὐτοῦ intelligatur. Sane
 nomen φύσις longius abest, et
 verbi ἀποδειλιάσει subiectum ho-
 minem ipsum potius, quam eius
 naturam esse additum οἱ ἀποδει-
 λιῶντες arguit. Nihilo minus,
 quam ferendi facultas natura-
 sit, et per totum hunc locum eius-
 dem subiecti significatio varie fiat,
 et quae primum φύσις et φύ-
 σθαι dicta erat, pro ea mox ho-
 mines ipsos, tum η̄θη, deinde
 rursus homines (ἐμπίπλανται),
 post hominem (αὐτῷ), denique
 η̄θος (αὐτό) dici videamus, vul-
 gatam retinendam censeo.

ἀποδειλιάσει] ἀποδειλιάσει Vind.
 F.

ἀποδειλιῶντες] trepidant at-
 que deficiunt Fic.

Πρόεπει γέ τοι δὴ, ἔφη, οὗτω σκοπεῖν. ἀλλὰ ποῖα δὴ λέγεις μαθήματα μέγιστα; Μνημονεύεις μὲν που, ἦν δ' ἐγώ, ὅτι τριττὰ εἰδη ψυχῆς διαστησάμενοι ἔννεβι-βάζομεν δικαιοσύνης τε πέρι καὶ σωφροσύνης καὶ ἀν-δρίας καὶ σοφίας, ὃ ἔκαστον εἶη. Μὴ γὰρ μνημονεύων, ἔφη, τὰ λοιπὰ ἄν εἴην δίκαιος μὴ ἀκούειν. Ἡ καὶ τὸ Β προδόξηθὲν αὐτῶν; Τὸ ποῖον δὴ; Ἐλέγομέν που, ὅτι ὡς μὲν δυνατὸν ἦν κάλλιστα αὐτὰ κατιδεῖν, ἀλλη μα-κροτέρα εἴη περίοδος, ἦν περιελθόντι καταφανῇ γίγνοι-το, τῶν μέντοι ἔμπροσθεν προειδημένων ἐπομένας ἀπο-

δὴ] om. Par. K. Flor. T.

ἔφη] om. Vind. B. Vat. M.

ἀλλὰ] *Allā* editiones ante Bi-
pontinam et Astius in pr. Etiam
in Vind. E. ante ἀλλὰ signum
mutatae personae exstat.

μέγιστα; Μνημονεύεις] μέγι-
στα, *μν.* Ald.

ὅτι] ὅτε Mon. B. Flor. U.

ἔννεβιβάζομεν] συν. Mon. B.
Par. DK. Flor. RU. Ald. Bas.
ab. Steph. Timaei glossam p. 241.
συμβιβάσει. (*συμβιβασέι* est apud
Photium Porsoni) εἰς συμβιβασιν
καὶ ὁμολογίαν ἔλθειν περὶ τίνος
a Ruhnkenio male hoc relatam,
neque συμβιβάξειν, ut ille puta-
bat, neutraliter hic positum esse
recte monuit Astius. Cf. L. IIII.
p. 427. E. sqq. quo loco variis
rationibus componendis virtutum
definitiones, quales in civitate
esse viderentur, quasi conquire-
bant, quo facto simili methodo
usi p. 441. E. sqq. colligebant,
quid eaedem in singulari homine
essent; atque hunc ipsum cona-
tum Socrates nunc designat.

πέρι καὶ] καὶ περὶ Vind. F.
Ang. B.

ἀνδρίας] ἀνδρείας Lob. Vind.
F. Fior. ACRT. Stallb.

εἴη] εἴη; Vind. B.

λοιπὰ] λοιπ' Vind. F. Vat. M.
Flor. R.

εἴην] εἴη Lob. Vind. BF.
Vat. BM. Ven. C. Ang. B.

μὴ ἀκούειν] His Ficinus abs-
te inseruit. Post ἀκούειν Bas.
ab. commna habent.

Ἡ] Ἡ Lob. Vind. BEF.

καὶ] om. Mon. B. Par. K. sec.
Bip. Flor. U. in m. habet Par.
D.

προδόξηθὲν] προσρηθὲν Par. K.
προρηθὲν Ald. Bas. ab.

ὅτι] ὡς, sup. a. m. pr. ὅτι, B
Vind. F.

ὡς μὲν δυνατὸν ἦν] ὡς ἐσαὲν
δυνατὸν ἦν Vind. E. ἐσμὲν δυ-
νατὸν ἦν Vind. F. δυνατὸν μὴν
ἦν Bas. b. δυνατὸν μὲν ἦν (Ven.
B.) Steph. Ast. tacentibus Bip.
ἦν ut ἔχειν et similia dictum.

κάλλιστα] μάλλιστα, in m. a
m. s. κ, Mon. B.

ἀλλη] ἀλλ' Ἡ Par. D. ἀλλ' Ἡ
Ven. C. ἀλλ' εἰ Lob. Vind. B.
Vat. BM. Par. K. sec. Bip. ἀλλὰ
Ven. B. Par. K. sec. Bekk. Mon.
B. a m. s. (ἀλλη a m. pr.) Ald.
Bas. ab. Steph. Ast. Cf. Vol. I.
p. 394, b. ἀλλη etiam Ficinus
legit, ceterum totum locum ita
pervertit: *Diximus certe ampliori
quodam alio orationis circuitu
exactius εα* posse cognosci: ve-
rum commodius esse, ut demon-
strationes superioribus magis con-
sentaneas induceremus.

δειξεις οιόν τ' εῖη προσάψαι. καὶ ὑμεῖς ἐξαρκεῖν ἔφατε, καὶ οὕτω δὴ ἐδῆθη τὰ τότε τῆς μὲν ἀκριβείας, ὡς ἐμοὶ ἔφαίνετο, ἐλλιπῆ, εἰ δὲ ὑμῖν ἀρεσκόντως, ὑμεῖς ἂν τοῦτο εἴποιτε. Ἀλλ' ἐμοιγε, ἔφη, μετρίως· ἔφαίνετο μὴν καὶ τοῖς ἄλλοις. Ἀλλ', ὡς φίλε, ηὗ δ' ἐγώ, μέτρον C τῶν τοιούτων ἀπολεῖπον καὶ ὅτιοῦν τοῦ ὄντος οὐ πάντα μετρίως γίγνεται· ἀτελὲς γάρ οὐδὲν οὐδενὸς μέτρον. δοκεῖ δ' ἐνίστε τισιν ἵκανως ἥδη ἔχειν καὶ οὐδὲν δεῖν περαιτέρω ζητεῖν. Καὶ μάλ', ἔφη, συχνοὶ πάσχουσιν αὐτὸν διὰ φαντασίαν. Τούτον δέ γε, ηὗ δ' ἐγώ, τοῦ

περίοδος] ἡ π. Lob. Vind. B.
Vat. M.

περιελθόντι] περὶ ἐλθόντι Ald.
τῶν] τῶν Vind. E. De genitivo ab ἐπομένας pendente cf. Bernhardy synt. p. 148.

οιόν τ' εῖη] οιόν τε εἶναι, praeposito int. vers. ὡς, Vind. F. ως οιόν τ' εἶναι Ang. B. ως οιόν τε εἶναι Flor. R.

οὕτω] οὕτε Vind. F.

ἔφαίνετο] φαίνεται ante corr.
Vind. F.

ὑμῖν ἀρεσκόντως] om. Ang. B.
εἴποιτε] εἴπητε Lob. Vind. B.
Ven. B.

ἔφη] om. Vat. B.

μὴν] om. Vat. H. μὲν Vind. E. μὴ Bas. b. δὲ Ven. B. Flor. T. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Suum assensum Adimantus quem ita declarasset, ut de reliquis nihil affirmare velle videretur, hos quoque assensos recordatus *profecto*, inquit, *videbatur et reliquis*. Cf. L. III. pag. 410. B.: αὐτὰ μὴν τὰ γνωνάσια etc. Ficinus neque hanc particulam neque interpunctionem post μετρίως curans Adimanto haec tribuit: *At moderate dictum et mihi et aliis est visum.*

C ἀπολεῖπον] Ita cum editis
Vind. F. Ang. B. Flor. ACRTV.

et, ut Faehsius refert, margo Par. A. ἀπολεῖπων Par. A. ipse, Vind. E. Ven. B. Vat. H. ἀπολεῖπων Ven. C. ἀπολεῖπων cum ὁ super ω Lob. Vat. B. ἀπολεῖπον Vind. B. Mon. B. Par. DK. Vat. M. Flor. U.

ὅτιοῦν] ὅτονοῦν Vind. E.
Etiam Mon. B. t cum litura habet.

τοῦ ὄντος] τοιοῦτος γρ Par. A. Idem Faehsius in eius codicis margine extare testatur.

μετρίως] μέτρον γρ Par. A. (in m. teste Faehsio.) Id Bekkerus in textum recipiens ex lepide dicto frigidum effecit. Nam quum Adimantus *commode* sibi exponi visa dixisset illa, quibus tamen ad veritatem nonnullū de- esset, pro modo et mensura harum rerum imperfectum quoddam et a veritate remotum posuerat, idque Socrates *parum commode* fieri demonstrat.

μέτρον] μέτρον Lob. Vind. B.
Vat. M. Ald. Bas. a. μέτρος Bas. b. μετρίως, quod Bekkerus et Stallbaumius vulgatum ferunt, nusquam exstat.

δεῖν] δεῖ Lob. Vind. BF. Vat. BHM. Ven. C. Par. DK. sec. Bekk. Ang. B. Flor. ACRTV.

μάλ'] μάλα Lob. Vind. B.

δέ γε] δέ Ficinus non reddi-
dit. γε om. Bas. b.

παθήματος ἡκιστα προσδεῖ φύλακι πόλεώς τε καὶ νόμων.
Εἰνὸς, ἦ δ' ὅς. Τὴν μακροτέραν τοίνυν, ὡς ἐταῖρος,
D ἔφην, περιτέον τῷ τοιούτῳ, καὶ οὐχ ἡττον μανθάνοντι
πονητέον, ἷ γυμναζομένῳ· ἦ δὲ νῦν δὴ ἐλέγομεν, τοῦ
μεγίστου τε καὶ μάλιστα προσήκοντος μαθήματος ἐπὶ¹
τέλος οὕποτε ἥξει. Οὐ γὰρ ταῦτα, ἔφη, μέγιστα, ἀλλ'
ἔτι τι μεῖζον δικαιοσύνης τε καὶ ὡν διήλθομεν; Καὶ
μεῖζον, ἦν δ' ἔγω, καὶ αὐτῶν τούτων οὐχ ὑπογραφῆν
δεῖ ὕσπερ νῦν θεάσασθαι, ἀλλὰ τὴν τελεωτάτην ἀπερ-
γασίαν μὴ παριέναι. ἦ οὐ γελοῖον ἐπὶ μὲν ἄλλοις συμ-

ἡκιστα προσδεῖ φύλακι] Ita
Par. DK. Mon. B. Flor. TU.
ἡκιστα προσδεῖται φύλακι Par.
A. Lob. Vind. BEF. Ven. C.
Ang. B. Vat. HM. Flor. ACRV.
ἡκιστα προσδεῖται φύλακη Vat.
B. Ven. B. Ald. Bas. ab. Steph.
Ast. sec. ἡκιστα προσδεῖ τῷ φύ-
λακι Ast. pr. a custode — esse
debet alienissimum Fic. Quum
optimorum codicum lectio integra
servari non posset, φύλακι ut
simplicius et sequenti τῷ τοιού-
τῳ convenientius ex ea servare
inalui, quam προσδεῖται. Idem
fecit Bekkerus, Astius in tert. et
Stallb.

πόλεώς τε] τε καὶ πόλεως
Par. K. superpositis, ut Bekke-
rus tradit, duobus punctis super
τε.

ἦ δ' ὅς] ἦν δ' ἔγω Vind. B.
Vat. M. et ante corr. Lob.

ἔφην] ἔφη Lob. Vind. B. Vat.
M.

D μανθάνοντι] μανθάνοντι Ald.
Bas. a.

πονητέον] ποιητέον Mon. B.
Par. K. sec. Bip.

ἦ γυμναζομένῳ — μεγίστου τε]
om. Par. A. ἷ γυμναζομένῳ etc.
Ald. ἷ γυμναζομένῳ etc. Bas. b.
Pro altero ἷ Par. K. εἰς habet.

μάλιστα] μάλα Par. D. μόνον
Mon. B. Flor. U.

ἔτι] ἔστι Ven. B. Par. K. sec.
Bekk. ἔστι sec. Bip.

τι] om. Lob. Vind. BF. Ang.
B. Vat. M.

τε] om. Lob. Vind. B. Vat. M.

Καὶ] ναὶ Mon. B. Flor. U.

μεῖζον] μ. τούτων Par. K.

αὐτῶν τούτων] sc. δικαιοσύ-
νης τε καὶ ὡν διήλθομεν. quod
Stallbaumium fugere non debebat.

νῦν] νῦ Par. K.

τὴν τελεωτάτην ἀπεργασίαν
μὴ παριέναι] absolutam rationem
comprehendere Fic.

ἦ] ἦς Vind. F. In Vind. E.
mutatae personae signum praefixum.

ἄλλοις] ἄλλον Vind. F. Flor.
AC.

συικοῦ] Ita Par. A. Vind. F.
Mon. B. Ven. C. Ang. B. Flor.
RTUV. μικροῦ reliqui et editio-
nes ante Astii sec. Cf. Vol. I.
p. 287, b. in rebus minimis Fic.

ἀξίοις] ἀξιοῖς Vind. F.

ἀνοιβέστατα καὶ παθαρώτατα] E
παθαρώτατα καὶ ἀνοιβέστατα
Vind. F. Ang. B. Flor. R.

μὴ] οὐ Par. K. om. Vat. H.
Flor. AC.

ἀξιοῦν] post εἶναι Vind. E.

Καὶ μάλα, ἔφη, ἀξιοὺ τὸ δια-

ηροῦ ἀξίοις πᾶν ποιεῖν συντεινομένους, ὅπως ὅτι ἀκρι- Ε
βέστατα καὶ ναθαρώτατα ἔξει, τῶν δὲ μεγίστων μὴ με-
γίστας ἀξιοῦν εἶναι καὶ τὰς ἀκριβείας; Καὶ μάλα, ἔφη,
ἀξιον τὸ διανόμα. ὃ μέντοι μέγιστον μάθημα καὶ περὶ
ὅτι αὐτὸς λέγεις, οἵτινες τοῦ ἄνδρος σε, ἔφη, ἀφεῖναι μὴ ἐρω-
τήσαντα, τί ἐστιν; Οὐ πάντα, ἦν δ' ἐγώ· ἀλλὰ καὶ σὺ
ἔρωτα. πάντως αὐτὸς οὐκ ὀλιγάκις ἀκήποας, νῦν δὲ ἡ
οὐκ ἐννοεῖς ἢ αὖ διανοῆ ἐμοὶ πράγματα παρέχειν ἀντι- 505
λαμβανόμενος. οἷμαι δὲ τοῦτο μᾶλλον, ἐπεὶ ὅτι γε ἡ
τοῦ ἀγαθοῦ ἰδέα μέγιστον μάθημα, πολλάκις ἀκήποας,

νόημα] καὶ μάλιστη ἔφη ἀ. τὸ δ. Vind. BF. Ang. B. *Ridiculum prorsus* Fic. Ea, ut videtur, interpretatione seducti Astius, Schleiermacherus, Stallbaumius verba ἀξιον τὸ διανόμα eiicienda vel improbanda vel corrigenda existimantur; qui si Adimantum haec non tam respondere quaerenti anno ridiculum istud sit Socrati, quam contrarium postulanti suffragari statuissent, nullam, opinor, offensionem accepissent. Certe maximarum rerum accuratissimas fieri debere explanationes sententia sapienti non indigna videtur. Nomen vero διανόμα inter Platonica relatum supra vidimus p. 496. A.

μέγιστον] μάγιστον Vind. B.

περὶ ὅτι] περιότι Vind. F. a m. pr.

οἴτι] om. Vat. H. οἴτον Bas. b.

τιν'] τίν' Vind. B. Ald. Bas. ab. τίνα, a m. s. τινα, Vind. F.

ἄν] om. Vind. F. Ang. B.

σε] om. Ang. B. sese aliquem contenturum Fic.

μὴ] μὲν Flor. C.

ἔρωτήσαντα] ἔρωτήσατα Vind. B.

ἀλλὰ] Ἀλλὰ Ald. Bas. ab. Steph.

ἔρωτα] ἔρωτα Ald. Bas. ab.

πάντως] Vind. F. int. vers. a m. s. γὰρ addit, quod additum

est in Aeschyli Prom. 333: καὶ νῦν ἔασον, μηδέ σοι μελησάτω πάντως γὰρ οὐ πείσεις νιν. Et inest in Socratis verbis ironica caussae, cur interrogare eum iubeat, significatio. Ei vero solum πάντως sufficere exempla ab Heindorfio ad Theaet. §. 3. a Rückert ad Symp. pag. 8. et a Stallbaumio ad h. l. adscripta docent. Similiter Aeschylus Prom. 1050: πάντως ἐμέ γ' οὐ θανατώσει.

νῦν δὲ — ἀκήποας 505. A.] om. Vind. B. Vat. M.

ἢ οὐκ] ἢ om. Vind. E. Mon. B.

ἢ αὖ] vel potius Fic. αὖ ad initium libri V. spectat et ad injectam ab eodem Adimanto de uxorum communione quaestionem operosissimam, quo loco Socrates verbo ἐπιλαμβανεσθαι usus erat p. 450. A.

διανοῇ] διανοεῖ, sup. a m. s. ἢ, Vind. F. διανοεῖ recentiores.

ἀντιλαμβανόμενος.] ἀντιλαμ- 505 βανόμενος: Vind. E.

ἰδέα] εἰδέα Vind. F. a m. pr.

μέγιστον] μέγιστο Ald.

πολλάκις ἀκήποας] πολλάκις μὲν αὐτοὺς ἥδη καὶ πρότερον ἀκηπούνται φησίν, ὡς ἄρα τοῦτο ἐστι τὸ ἀγαθὸν, οὐ πάντα ἔφίσται. Proclus in Civ. p. 425, 20. a f.

ἡ δίκαια καὶ τὰλλα προσχρησάμενα χοήσιμα καὶ ὡφέλιμα γίγνεται. καὶ νῦν σχεδὸν οἶσθ', ὅτι μέλλω τοῦτο λέγειν, καὶ πρὸς τούτῳ, ὅτι αὐτὴν οὐχ ἵκανῶς ἴσμεν· εἰ δὲ μὴ ἴσμεν, ἄνευ δὲ ταύτης εἰ ὅτι μάλιστα τὰλλα ἐπισταίμεθα, οἶσθ', ὅτι οὐδὲν ἡμῖν ὅφελος, ὥσπερ οὐδὲν εἰς τητήμεθά τι ἄνευ τοῦ ἀγαθοῦ. ἢ οἵτι τι πλέον εἶναι πᾶσαν πτησιν ἐκτῆσθαι, μὴ μέντοι ἀγαθήν; ἢ πάντα τὰλλα φρονεῖν ἄνευ τοῦ ἀγαθοῦ, καὶ τὸν δὲ καὶ ἀγαθὸν μηδὲν φρονεῖν; Μὰ Δι' οὐκ ἔγωγε, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν

ἢ] ἢ Vat. H. et a m. pr.
Vind. F.

δίκαια καὶ] Ita Par. A. Vind.
E. Vat. H. Flor. ACV. δὴ καὶ Lob. Vind. B. Vat. M. Flor. T.
καὶ δίκαια καὶ reliqui codices cum editis. Paullo auctius etiam Proclus l. c. p. 426: εἰπὼν γὰρ, ὅτι ἡ τοῦ ἀγαθοῦ ἑδέα μάθημα τὸ μέγιστόν ἐστιν, ἢ καὶ τὰ δίκαια καὶ τὰλλα προσχρησάμενα χοήσιμα καὶ ὡφέλιμα ἀποτελεῖται, καὶ ὅτι αὐτὴν οὐχ ἵκανῶς ἴσμεν etc. cuius tamen auctoritas, quum potius rem spectaverit, quam verba, neque ad recipientum articulum, quem in secunda Stallbaumii ed. V. C. F. Rostius sine ratione desiderabat, neque ad tuendam particulam καὶ aduersus optimos codices valet.

τὰλλα] τὰλλα Vind. BF. Mon. B. Steph. Ast. τ' ἄλλα Vind. E. οἶσθ'] scito Fic. item paullo post.

τούτῳ] τοῦτο Vat. H.
εἰ δὲ μὴ ἴσμεν] om. Ven. B. a m. pr.

ἄνευ δὲ ταύτης] et sine ipsa Fic. Repetito δὲ offensus Morgensternius symb. 1815. pag. 18. ἄνευ γε ταύτης malebat, assentiente in tert. Astio, dissentiente Stallbaumio in sec. et verborum εἰ δὲ μὴ ἴσμεν sententiam cum quadam gravitate iterari statuente; sed exempla, quibus utitur, minus apta esse ipse sensit. Sunt enim partim talia, quale Apol. p. 38. A. ἐάν τ' αὐτὸν λέγω, ὅτι καὶ τυγχάνει μέγιστον ἀγαθὸν δύ-

ἀνθρώπῳ τοῦτο, ἐκάστης ἡμέρας περὶ ἀρετῆς τοὺς λόγους ποιεῖσθαι, — ταῦτα δ' ἔτι ἡττον πεισεσθέ μοι λέγοντι. quae ad anacoluthon pertinent; partim bimembrem habent enuntiationem alteri item bimembri sic oppositam, ut membrum utrinvis suo δὲ instructum sit, velut Phaedon. p. 78. C: οὐκοῦν ἀπερ ἀεὶ πατὰ ταῦτα καὶ ὡσαύτως ἔχει, ταῦτα μάλιστα εἰνός εἶναι τὰ ἀξύνθετα, τὰ δὲ ἄλλοτε ἄλλως καὶ μηδέποτε πατὰ ταῦτα, ταῦτα δὲ εἶναι τὰ ἀξύνθετα; Nostro vero loco id, cui alterum δὲ insertum est, ad prius membrum ita se habet, ut hoc ipsum ad antecedentia, nec quicquam offenditioni esset, si omissio altero εἰ verba sic continuarentur: εἰ δὲ μὴ ἴσμεν, ἄνευ δὲ ταύτης ἄλλο δτιοῦν ἐπιστάμεθα, οἶσθ', ὅτι etc. Itaque non particulae δέ, sed coniunctionis εἰ repetitae ratio reddenda est, quae quum primum cum indicativo, deinde cum optativo constructa sit, alteram conditionem aliter atque priorem comparatam et ignorationem quidem boni ut rem in facto positam, cognitionem autem reliquorum absque boni scientia ut probabilitate si minus facultate carentem cogitatam esse consequitur, quae ipsa repetitae voculae conditionalis caussa exstitit.

τὰλλα] τὰλλα Vat. H. „ut solet.“ τὰλλα iidem, qui supra. τ' ἄλλα Vind. E.

καὶ τόδε γε οἰσθα, ὅτι τοῖς μὲν πολλοῖς ἡδονὴ δοκεῖ εἶναι τὸ ἀγαθὸν, τοῖς δὲ κομψοτέροις φρόνησις. Πῶς δ' οὖ; Καὶ ὅτι γε, ὡς φίλε, οἱ τοῦτο ἥγονύμενοι οὐκ ἔχουσι δεῖξαι, ἡτις φρόνησις, ἀλλ' ἀναγνάζονται τελευτῶντες τὴν τοῦ ἀγαθοῦ φάναι. Καὶ μάλα, ἔφη, γελοίως. Πῶς γὰρ οὐχὶ, ἦν δ' ἐγὼ, εἰ δινειδίζοντές γε, ὅτι οὐκ οἴσμεν τὸ ἀγαθὸν, λέγουσι πάλιν ὡς εἰδόσι; φρόνησιν γὰρ αὐτό φασιν εἶναι ἀγαθοῦ ὡς αὐτὸν εὑνιέντων ἡμῶν, ὅτι λέγουσιν, ἐπειδὴν τὸ τοῦ ἀγαθοῦ φθέγξωνται ὅνο-

ἐπισταίμεθα] ἐπιστάμεθα Vind.
F. Flor. RT.

οὐδὲ εἰ] οὐδεῖ Vind. F.

B. *κεντήμεθα*] *κεντήμεθα* Beckerus, Astius in tert. et Stallbaumius. Indicativus, quem Beckerus plerosque cum Stephano exhibere ostendit, non minus probandus hic, quam paullo ante in εἰ δὲ μὴ οἴσμεν.

ἢ οἴτε — τοῦ ἀγαθοῦ] om.
Vind. E.

πλέον] πλεῖον Lob. Vat. B.

εἶναι] εἰδέναι Par. ADK. Lob.
Vind. B. Vat. BM. Ven. C. εἶναι
et εἰδέναι non raro a librariis
confusā sunt, e. c. Phaedon.
pag. 101. B. Cf. Schaeferus ad
Gregor. Cor. p. 249.

ἐκτῆσθαι] *κεντήσθαι* Par. K.
sec. Bekk.

τἄλλα] τἄλλα iidem, qui su-
pra.

ἀνεν τοῦ ἀγαθοῦ] Haec verba
Stallbaumius in sec. uncis inclu-
sit ut spuria, Morgensternii su-
spicionem l. c. propositam secu-
tus. Mihi non supervacanea vi-
dentur. Eo enim, quod quis re-
liqua omnia excepto bono intelli-
git, efficitur, ut nihil, quod pul-
chrum et bonum sit, intelligat.

Μὰ Διὶ] μάδι Ald.

ἔγωγε] ἔγωγε Vind. EF.

τόδε γε] τόδε γ' Ang. B. Vat.
H. γε om. Lob. Vind. B. Mon. B.
Vat. BM. Ven. C. Par. DK. sec.
Bekk. Ficinus initium horum
(Ἄλλα μὴν — πολλοῖς) praeter

consuetudinem contraxit: *Pluribus*
vero. — Proclus in Civ. p. 426:
τούτων οὖν ὅηδέντων ἐπήγαγεν,
ὅτι τὸ ἀγαθὸν οἱ μὲν φρόνησιν,
οἱ κομψότεροι, λέγοντιν, οἱ δὲ
ἡδονῆν· οἷς καὶ οἱ ἀκροατὴς ὡς
γνωρίμοις συνεχώρησε καὶ ἡξιώ-
σεν γνῶναι τὴν τοῦ Σωτηρίου
περὶ τούτων κρίσιν. ὁ δὲ, ὅτι
μὲν οὐκ ἔστι τὸ ἀγαθὸν φρόνη-
σις οὐδὲ ἡδονὴ, συντόμως
ἔδειξεν. ἐρωτώμενοι γάρ, φησιν,
οἱ ταῦτα διορίζοντες, εἰ πάσα
φρόνησις τὸ ἀγαθὸν, οἶον καὶ
ἡ τῶν ἔντινων σκευαστῶν καὶ ἡ
τῶν ἄλλων, οὐκ ἀξιοῦσιν, ἀλλὰ
προστιθέασι τὴν τοῦ ἀγαθοῦ
φρόνησιν ἀγαθὸν εἶναι, γελοῖον
τι πάσχοντες, ἐν τῷ δόρῳ τοῦ
ζητουμένου τὸ ζητούμενον αὐτὸ^ν
παραλαβόντες, καὶ αὐδίς τὴν
ἡδονὴν ἀγαθὸν τιθέντες ἀναγνα-
ζόμενοι ὅμοιογενεῖς ἡδονὰς εἶναι
τινας κακὰς περιάγονται εἰς τὸ
λέγειν εἶναι τινα κακὰ τῶν ἀγα-
θῶν· τοῦτο δὲ ἀδύνατον.

Πῶς δ' οὐ; — φρόνησις,] om.
Ang. B. Inter δεῖξαι et ἡτις
φρόνησις Ficinus si interrogentur
interpolavit.

ἄλλ'] ἄλλὰ Vind. F.

ἀναγνάζονται] ἀναναγνάζονται
cum punctis sub altero να Mon.
B. ἀναγνάζονται Ald.

φάναι] φάναι Vind. F.

οὐν οἴσμεν] οὐνίσμεν Mon. B. C

ἀγαθοῦ] ἀγαθὸν Vind. E. Ast.
sec. tert. Stallb. pr. Cf. Proclus.

ἐπειδὴν τὸ] τὸ om. Flor. T.

φθέγξωνται] φθέγξοντο Vind.
E.

μα. Ἀληθέστατα, ἔφη. Τί δαί; οἱ τὴν ἡδονὴν ἀγαθὸν
δοξιζόμενοι μῶν μή τι ἐλάττονος πλάνης ἔμπλεοι τῶν
ἔτερων; ἢ οὐ καὶ οὗτοι ἀναγκάζονται διμολογεῖν ἡδονὰς
εἶναι κακάς; Σφόδρα γε. Συμβαίνει δὴ αὐτοῖς, οἷμαι,
D διμολογεῖν ἀγαθὰ εἶναι καὶ κακὰ ταῦτα. ἢ γάρ; Τί μήν;
Οὐκοῦν ὅτι μὲν μεγάλαι καὶ πολλαὶ ἀμφισβητήσεις περὶ
αὐτοῦ, φανερόν; Πῶς γὰρ οὖ; Τί δέ; τόδε οὐ φανε-
ρὸν, ὡς δίκαια μὲν καὶ καλὰ πολλοὶ ἐν ἔλοιντο τὰ δο-
κοῦντα, κανὸν μὴ ἥ, ὅμως ταῦτα πράττειν καὶ πεντῆσθαι
καὶ δοκεῖν, ἀγαθὰ δὲ οὐδενὶ ἔτι ἀρκεῖ τὰ δοκοῦντα
πτᾶσθαι, ἀλλὰ τὰ ὄντα ξητοῦσι, τὴν δὲ δόξαν ἐνταῦθα

[Ἀληθέστατα] *Vera loqueris Fic.*

Tί δαί;] Ita Par. A. Flor. ACV. quod huic loco valde aptum
cum Stallbaumio in sec. vulgato
τί δέ praetuli. τί δὴ Mon. B.

μῶν] μήν Vind. F.

μή τι] μή τοι Vind. E.

πλάνης] in m. a m. s. habet
Mon. B.

ἔμπλεοι] -ἔμπλεο Lob. Vind. B.

Vat. M. ἔμπλεοι Vind. F.

ἔτερων] ἔταιρων Vind. E. Vat.
H.

ἢ] ἢ Lob. εἰ Vind. E.

οὐ] om. Lob. Vind. BE. Vat.

HM. οὐ; Ald. οὐ; Bas. ab. omnes
cum committit post ἔτερων.

ἡδονὰς — διμολογεῖν] om. Vind.

E.

Συμβαίνει] Συμβαίνει Steph.
a quo Bekkerus Par. A. Mon. B.
dissentire non ostendit. Sed Mon.
B. cum reliquis habet ξ. Contra
de Par. K. tacent Bipontini.

οἷμαι] om. Par. K. Flor. R.
ante αὐτοῖς positum est in Vind.
F.

D κακά] κατὰ Vind. F.

ταῦτα] ταῦτα Lob. Vind. B.

τὰ αὐτὰ Vind. F. Flor. R.

ἢ] ἢ Vind. F. et editi ante
Astii sec.

Τί δέ; — καλὰ] om. Vind. F.
Τί δὲ τόδε etc. Ald. Bas. ab.
quae utraque post φανερὸν si-
gnum interrogandi habet. τί δαί
etc. Vat. H. Flor. ACV. quod
Stallbaumius in sec. ascivit. —

Proclus l. c. p. 426: καὶ δὴ καὶ
αὐτὸς ἐδίδαξεν ἐπαγαγὼν, ὅτι
δίκαια μὲν καὶ καλὰ πολλοὶ ἐν
ἔλοιντο καὶ τὰ δοκοῦντα πεντῆ-
σθαι, ἀγαθὰ δὲ οὐδενὶ ἀρκεῖ
τὰ δοκοῦντα πτᾶσθαι, ἀλλὰ τὰ
ὄντα ξητοῦσιν.

καὶ καλὰ] καὶ int. vers. a m.
s. habet Mon. B.

ἢν μὴ ἥ] Ita Lob. Vind. B.
Vat. BM. κανὸν μὴ εἰν reliqui cum
editionibus ante Astii sec. qui
κανὸν εἰ μὴ εἰν de conjectura scri-
psit idque in tert. tenuit. Nec
aliter Stallbaumius in pr. Idem
in sec. cum Bekkerio coniunctivum
recepit.

ταῦτα] ταῦτα Mon. B. qui in
antecedentibus comina non post
εἰν, sed post δοκεῖ habet.

καὶ πεντῆσθαι] καὶ om. Vat.
B.

καὶ δοκεῖν] et videri hominibus
haec habere Fic. Quidni absolute
dictum sumamus: et speciem prae-
se ferre? Certe Astii conjectura
καὶ διώσει nihil opus est.

δὲ] om. Vind. E. Vat. H. Flor.
AC.

οὐδενὶ] οὐδὲν Vind. F. Ang.
B. Flor. R.

πτᾶσθαι] γρᾶσθαι Par. D.
ζεῖσθαι Par. K.

ξητοῦσι] omnes quaerunt Fic.

ἢδη] om. idem.

ἀτιμάζει;] ἀτιμάζει. Ald.

μάλα] maxime quidem Fic.

ηδη πᾶς ἀτιμάξει; Καὶ μάλα, ἔφη. "Ο δὴ διώκει μὲν Ε
ἄπασα ψυχὴ καὶ τούτου ἔνεκα πάντα πράττει ἀπομαν-
τενομένη τι εἶναι, ἀποροῦσα δὲ καὶ οὐκ ἔχουσα λαβεῖν
ἴνανῶς, τί ποτ' ἐστὶν, οὐδὲ πίστει χρήσασθαι μονίμῳ,
οἷς καὶ περὶ τὰλλα, διὰ τοῦτο δὲ ἀποτυγχάνει καὶ τῶν
ἄλλων, εἰ τι ὄφελος ἦν, περὶ δὴ τὸ τοιοῦτον καὶ το-
σοῦτον οὕτω φῶμεν δεῖν ἐσκοτῶσθαι καὶ ἐκείνους τὸν 506
βελτίστους ἐν τῇ πόλει, οἷς πάντα ἔγχειριοῦμεν; "Ηκι-
478 στά γ', ἔφη. Οἶμαι γοῦν, εἶπον, δίκαιά τε καὶ καλὰ
ἀγνοούμενα ὅπῃ ποτὲ ἀγαθά ἐστιν, οὐ πολλοῦ τινὸς
ἄξιον φύλακα πειτῆσθαι ἀν ἐαυτῶν τὸν τοῦτο ἀγνοοῦν-

"Ο δὴ] ὁ δὲ Ven. B. Bonum quidem Fic.

E πάντα] om. Vind. E. Flor. C. et a m. pr. Ven. B.

πράττει] Ita Vind. F. sed cum litura in fine.

τι εἶναι] „τι εἶναι pro τὰ εἶ-
ναι Flor. T.“ An τὰ pro τι ha-
bet?

ἀποροῦσα δὲ] dubitat tamen Fic.

ποτ' ἐστὶν] ποτέστιν Vind. F.
ποτε ἐστὶν Vind. E.

χρήσασθαι] χρῆσθαι Ven. B.
Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV.
Bas. b.

οἵα] οἵαι; e corr. οἵαι, Vind.
F. οἵαι Bekkerus in decem suis
invenisse ait, de uno Ven. B. ta-
cens, sed Vind. B. habet οἵα, ut
Lob. Vind. E. et Ald. et in Mon.
B. legitur οἵα. οἵα Bas. ab.
Steph. Ast. pr. sec. tacentibus
Bipontinis et de Florentinis Stall-
baumio.

τὰλλα] τὰλλα Vind. BF. Mon.
B. Steph. Ast. τὰ ἄλλα Vind. E.
Flor. ACTV.

διὰ τοῦτο δὲ] διατοῦτο δὲ
Lob. Vind. BF. διὰ τοῦτο δὴ
Mon. B. διατὸ το δὲ Ald. διὰ τὸ
τόδε Bas. a. διὰ τοῦτο Bas. b.
atque iccirco Fic. De repetito δὲ
supra ad A. dictum; hic tamen
non per anacoluthon illatum, sed
perspicuitatis gratia iterum positum
videtur, de quo genere Buttman-

nus egit in excursu ad Demosthe-
nis Midianam p. 152.

εἰ τι ὄφελος ἦν] cum quid
utile sit iudicare pergit Fic. Pro
εἰ in Vind. E. ὡν, in Vat. H.
Flor. ACV. ὁ legitur.

δὴ] δὲ Par. K.

τοιοῦτον] τοιοῦτο Vind. E.
Mon. B. Par. K. sec. Bip. Flor.
U.

ἔγχειριοῦμεν] committimus Fic. 506
γ'] γε Vind. B.

ἀγνοούμενα] Ficinus addidit
ut nunc fere accidit.

ποτὲ — φύλακα] om. Vind. F.
In φύλακα reliqui mei et Flo-
rentini cum plerisque Bekkerianis
et Bas. b. consentiunt: φύ-
λακη, quod reliquae editiones ante
Bekkerum exhibent, tantum in
Par. DK. de quibus Bipontini et
Bekkerus tacent, repertum vide-
tur. Id Stephanus in m. ita re-
tinendum censebat, si ἄξια lege-
retur: „ut dicat illorum bonorum
possessionem non magno pretio
fore custodi.“ Scilicet nesciebat,
quid post πειτῆσθαι in codicibus
esset.

ἄν ἐαυτῶν] Ita Par. ADK.
Vind. F. Mon. B. Ven. C. Flor.
UV. ἄν ἐαυτῶν Vat. B. ἄν ἐαυ-
τῶι Lob. Vind. B. Ang. B. Vat.
M. Flor. RT. ἄν ἐαυτὸν Ven. B.
Vat. H. Flor. AC. (haud multi
faciendum sane custodem) se
ipsum exhibere posse Fic. αὐτὸν
Vind. E. εἰπερ εἶνας γνῶναι αὐ-

τα· μαντεύομαι δὲ μηδένα αὐτὰ πρότερον γνώσεσθαι ἵκανως. Καλῶς γάρ, ἔφη, μαντεύη. Οὐκοῦν ήμιν ἡ πολιτεία τελέως οεκοσμήσεται, ἐὰν δὲ τοιοῦτος αὐτὴν Β ἐπισκοπῆ φύλαξ, δὲ τούτων ἐπιστήμων; Ἀνάγκη, ἔφη. ἀλλὰ σὺ δὴ, ὁ Σωκρατες, πότερον ἐπιστήμην τὸ ἀγαθὸν φῆς εἶναι, η̄ ἡδονὴν, η̄ ἄλλο τι παρὰ ταῦτα; Οὗτος, η̄ν δὲ ἐγὼ, ἀνὴρ καλὸς, ἡδονα παὶ πάλαι παταφανῆς, δὲ τι οὐκ ἀποχρήσοι τὸ τοῖς ἄλλοις δοκοῦν περὶ

τὰ Ald. Bas. ab. Steph. et Astius, qui simul ἀγνοοῦντα pro ἀγνοούμενα scribendum et μὴ inter τοῦτο et ἀγνοοῦντα inserendum in tert. suspicatur, in secunda et φύλακι et ἀγνοούμενα servavit, μὴ vero post τοῦτο inseruit, quarum lectionum neutra non inepta videtur. Aldinam in promptu est originem debere illi φύλακι, quo recepto quum cognitio iustorum et pulchrorum, nisi rationis, qua eadem bona essent, cognitio accederet, nullius pretii futura custodi civitatis dici vide-retur, verba δὲ ἔαντων pro ineptis et vitiosis haberi necesse erat, et quoniam in sequentibus Socrates ipsam iustorum et pulchrorum cognitionem ne contingere quidem eis, qui rationem illam perspectam non habeant, posse demonstrat, exstitit qui iam hic eandem sententiam cum dubitatione pronuntiatam ab eo existimans illorum in locum haec εἰπει τοκὸς γνῶναι αὐτὰ substi-tueret. Aliud glossema paullo post. deprehendemus. Ceterum ἔαντων ad φύλακα referendum, non ad ἀγνοοῦντα, quo retulit Bernhardy synt. p. 151. interie-ctum articulum non respiciens.

τοῦτο] μὴ ταῦτα Vind. E.
ἀγνοοῦντα.] ἀγνοοῦντα; Vind. BE.

δὲ] δὴ Vind. F. Flor. AR.
μηδένα] μὴ Vind. F. μηδὲ ἂν ξενα Mon. B. (μηδὲ) Flor. U. Stallbaumius.

πρότερον] post γνώσεσθαι Mon. B. (Par. DK.) cum editis ante Bekkerum, qui perperam Mon.

inter mutati ordinis auctores re-fert, de Par. DK. nihil ostendit. Sed Bipontinorum silentium et ipsorum librorum indeles et co-gnatio consentire eos cum Mon. et editionibus antiquis verisimile facit.

ἵκανως] Mon. B. et a m. sec. margo Flor. U. πὸν ἀν περὶ αὐτὸν τάγαθον ὅ ἐστι γνῶ addunt, quod glossema ineptum est. Nam ipsam boni naturam Socrates et supra p. 505. A. satis perspectam hominibus negavit et infra D. E. explicare recusat. Itaque ad πρότερον ex superioribus supplendum est πὸν ἀν ὅπῃ ποτὲ ἀγαθά ἐστι γνῶ. Etiam Ficinus quam bonum addens a vero aberravit.

μαντεύη] μαντεύει Vind. F. et recentiores.

τελέως] παντελῶ Lob. Vind. BF. Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. Flor. ACU. Bekkerus et Stallbaumius. (perfecte Fic.)

ἀλλὰ] ἀλλὰ Ald. Bas. ab. B Steph.

φῆς] φῆς Mon. B. Vind. F.

η̄ ἡδονὴν,] η̄ ἡδονήν; Steph. Bekk. Ast. in tert. et Stallb. quod Adimanto e Socrate non tam utrum ex duobus, quorum neutrum ei placere iam sciret, quam quid omnino bonum statueret, sciscitanti minus aptum vi-detur.

παρὰ ταῦτα] παραταῦτα Vind. E.

Οὗτος] οὗτος Vind. F. Ang.

αὐτῶν. Οὐδὲ γὰρ δίκαιον μοι, ἔφη, ὁ Σώκρατες, φαίνεται τὰ τῶν ἄλλων μὲν ἔχειν εἰπεῖν δόγματα, τὰ δ' αὐτοῦ μὴ, τοσοῦτον χρόνον περὶ ταῦτα πραγματευόμενον. Τί δ'; ἦν δ' ἔγω· δοκεῖ δοι δίκαιον εἶναι περὶ ᾧ τις μὴ οἶδε, λέγειν ως εἰδότα; Οὐδαμῶς γ', ἔφη, ως εἰδότα, ως μέντοι οἰόμενον ταῦθ', ἢ οἴεται, ἐθέλειν λέγειν. Τί δέ; εἶπον· οὐκ ἥσθισαι τὰς ἀνευ ἐπιστήμης δόξας, ως πᾶσαι αἰσχραί; ὃν αἱ βέλτισται τυφλαῖ; ἢ

B. *Iam diu compertum habeo, Adimante, etc. Fic.*

ἀνὴρ ναλὸς] Ita Par. ADK. Lob. Vind. B. Vat. M. Flor. TV. cum editionibus praeter Bekkerianam, quae secundum reliquos codices ναλὸς pro ναλὸς exhibet, ut maior post ἀνὴρ, quo loco Vind. E. etiam punctum habet, quam ante ἥσθια pauca facienda sit: *heus, inquam, tu, probe iam dudum apparebat* etc. cui rationi, si codices inberent, accedere non recusarem, quamquam illud οὐτος ἀνὴρ paullo severius sonans (cf. Gorg. pag. 467. B. 489. B. 505. C.) et interpositum ἡν δ' ἔγω assensum nonnihil remoraretur: nunc vulgatam optimi codicis auctoritate munitam teneo, ut compellatio magis benevolia simul et iocosa sit: *heus tu, inquam, vir eximie, iam dudum apparebat* etc. verborum autem dispositio similis illi Symposii initio: ὁ Φαληρεὺς, ἔφη, οὐτος Ἀπολλόδωρος, οὐ πέριμένεις; Pronominis et casus usum explicuit Lennepius ad Phalar. ep. 19. De epitheto ναλὸς cf. Heindorfius ad Hippiae initium. Quod ad interpunctionem attinet, signo exclamandi, quo Astius et Stallbanius post ναλὸς usi sunt, non magis hic locus est, quam post ὁ Σώκρατες et similia.

ἥσθια] οἶσθια Vat. H. et ante corr. Vind. F.

σοι] σοὶ editiones ante Astii secundam.

ἀποχρήσοι τὸ] ἀποχρήσοιτο

Vind. F. ἀποχρήσει τὸ Lob. Vind. BE. Vat. BM. Ven. B. Flor. T.

Οὐδὲ γὰρ] *Haud Fic.*

ἔφη] om. Lob. Vind. B. Vat. M. μὲν] om. Vind. E. Vat. H. Flor. ACT. et a m. pr. Ven. B.

τὰ δ'] τὸ δ' Lob. Vind. BEF. Vat. BM. Ven. B. Ang. B. Flor. ACRT.

αὐτοῦ] αὐτοῦ Vind. EF. Mon. B. Ald. Bas. ab:

τοσοῦτον] post χρόνον Ang. B. Flor. R. et commate apposito Vind. F.

περὶ ταῦτα πραγματευόμενον] in his versatum Fic.

Tί δ';] τί δαὶ Par. A. Vat. H. Flor. ACV. τί δὲ Vind. E. Flor. T. Tί δ', Steph. Piores nullam interpunctionem habent.

Οὐδαμῶς γ'] οὐδ. γε Vind. E. γ om. Mon. B.

ταῦθ'] ταῦτα Vind. F.

Tί] τὲ Vind. B. Haec usque ad δοξάζοντες excerpit Stobaeus ecl. L. II. c. 8. fr. 35. Heer. p. 200. Cant.

δέ] δαὶ Flor. ACV. In Ald. Bas. ab. ne hic quidem interpunctione est.

εἶπον] om. Stob.

ἐπιστήμης] ἐπιστήμας Vind. E.

πᾶσαι] ἄπασαι Stob.

αἰσχροῖ;] αἰσχροί. Ald. αἰσχροῖ, Stob. Bas. ab. Ast.

ῶν] τῷ Vat. H. Flor. AC.

τυφλαῖ;] τυφλαῖ. Stallb. sec.

δοκοῦσί τι δοι τυφλῶν διαφέρειν ὁδὸν ὁρθῶς πορευομένων οἱ ἄνευ νοῦ ἀληθές τι δοξάζοντες; Οὐδὲν, ἔφη. Βούλει οὖν αἰσχρὰ θεάσασθαι, τυφλά τε καὶ σκολιά,

D ἐξὸν παρ' ἄλλων ἀκούειν φανά τε καὶ παλά; Μὴ πρὸς Διός, ηδὸς, ὡς Σώκρατες, δὲ Γλαύκων, ὥσπερ ἐπὶ τέλει ὧν ἀποστῆς. ἀρνέσει γὰρ ἡμῖν, κανὸν ὥσπερ δικαιοσύνης πέρι καὶ σωφροσύνης καὶ τῶν ἄλλων διηλθεῖς, οὗτοι καὶ περὶ τοῦ ἀγαθοῦ διέλθησ. Καὶ γὰρ ἔμοι, ηδὸς ἐγὼ, ὡς ἑταῖρε, καὶ μάλα ἀρνέσει. ἀλλ' ὅπως μὴ οὐχ οἶστος τὸ ἔσομαι, προσυμούμενος δὲ ἀσχημονῶν γέλωτα ὀφλήσω. ἀλλ', ὡς μακάριοι, αὐτὸς μὲν τί ποτε ἔστι τὸ Ε ἀγαθὸν, ἐάσωμεν τὸ νῦν εἶναι· πλέον γάρ μοι φαίνεται, η κατὰ τὴν παροῦσαν δομὴν ἐφικέσθαι τοῦ γε δοκοῦν-

τί] post τυφλῶν Flor. T.

σοι] τῶν Stob. Heer. om. Cant.

τυφλῶν] τυφλῶ Stob. Cant.

(*τυφλῶν* cod. Augustan.)

διαφέρειν] διαφέρει Ald.

πορευομένων] πορευόμενον Vind. F.

νοῦ] οὐκ Stob. Cant. (*νοῦ* et η pro οἱ cod. Aug. et Vatic.)

δοξάζοντες] δοξάζοντες Flor.

T.

οῦν] Ita Par. A. Lob. Vind. BEF. Vat. BHM. Ven. BC. Ang. B. Flor. ACRT. *γοῦν* reliqui editique ante Bekkerum.

θεάσασθαι] θεάσασθαι Vind. E. Comma in editis ante Bekkerum appositorum et ab hoc sublatum recte Stallbaumius in sec. restituit.

ἐξὸν] ἐξ ὡν Vind. F.

D *φανά]* φᾶννά Vind. F. φάναι Par. K. sec. Bekk. φανερὰ Ven. B. Vind. E. Vat. H. Ang. B. Flor. ACRT.

τε] om. Ang. B.

ηδὸς] post ὡς Σώκρατες Par. K.

ὥσπερ ἐπὶ τέλει ὧν] ὥσπερ ἐπιτελεῖσιν Lob. Vat. M. ὥσπερ ἐπὶ τελείσιν Vind. BF. Vat. B. Par. D. ὥσπερ ἐπὶ ἡλείσιν Par. K. cum prope calcem perveneris Fic.

ἀποστῆς] ἀπιστῆς Ven. B. Vat. H. Flor. AC.

ἀρνέσει] ἀρέσκει Flor. T.

ἡμῖν κανὸν] Ita Ald. Bas. ab. ημῖν κανὸν, Steph. quam interpunctionem Stallbaumius, qui in pr. ημῖν καν sine commate cum Bekkerio scripsit, in sec. propterea repetit, quod καὶ in καν „ad universam, quae deinde enuntiatur, sententiam refertur, perinde ac si scriptum esset ἀρνέσει γὰρ ημῖν καὶ τοῦτο, εἰν, ὥσπερ δ. n. τ. l.“ Recte; sed hac ratione comma inter n et εν ponendum esset. Quod quum fieri non possit, εν potius, quam καὶ respiendū videtur.

περὶ] περὶ Vind. E.

ηδὸς ἐγὼ] ηδὸς ἀν, adscripto in m. a m. s. ἐγὼ, Mon. B.

ἑταῖρε] ἑταῖρε καὶ περὶ τοῦ ἀγαθοῦ διέλθης: cum linea sub supervacaneis Mon. B.

ἀρνέσει] ἀρνέσῃ Mon. B. ἀρέσκει Vind. E. Post hoc Vind. F. γὰρ ημῖν etc. usque ad hoc ἀρνέσει iterum habet.

οὐχ] οὐκ Ald. Bas. a.

ἀλλ', ὡς etc.] Proclus in Civ. p. 426: ἀλλὰ τὸ ἀπλῶς (ἀγαθὸν) δεδήλωτεν εἰπών· ἀλλ', ω μακάριε, αὐτὸς μὲν τί ποτέ ἔστι τὸ ἀγαθὸν, ἐάσωμεν τὸ νῦν εἶναι.

τοις ἐμοὶ τὰ νῦν· ὃς δὲ ἔκγονός τε τοῦ ἀγαθοῦ φαίνεται καὶ δομοιότατος ἐκείνῳ, λέγειν ἐθέλω, εἰ καὶ ὑμῖν φίλον, εἰ δὲ μὴ, ἐᾶν. Ἀλλ', ἔφη, λέγε· εἰσαῦθις γὰρ τοῦ πατρὸς ἀποτίσεις τὴν διήγησιν. Βουλοίμην ἄν, εἰπον, ἐμέ τε δύνασθαι αὐτὴν ἀποδοῦναι καὶ ὑμᾶς κομίσασθαι, ἀλλὰ μὴ ὕσπερ νῦν τοὺς τόκους μόνον. τοῦτον δὲ δὴ οὖν τὸν τόκον τε καὶ ἔκγονον αὐτοῦ τοῦ ἀγαθοῦ κομίσασθε· εὐλαβεῖσθε μέντοι, μὴ πη ἐξαπατήσω ὑμᾶς ἀκον πίθηλον ἀποδιδοὺς τὸν λόγον τοῦ τόκου. Εὐλαβησόμεθα, ἔφη, κατὰ δύναμιν· ἀλλὰ μόνον λέγε. Διομολογησάμενός γ', ἔφην ἐγὼ, καὶ ἀναμνήσας ὑμᾶς τά τε ἐν τοῖς ἔμπροσθεν δηθέντα καὶ ἄλλοτε ἥδη πολλάκις εἰρημένα. Τὰ ποῖα; ἦ δ' ὅς. Πολλὰ καλὰ, ἦν δ' ἐγὼ, B

πλέον γάρ μοι φαίνεται, η κατὰ τὴν δοκοῦσαν δόμην ἀφιεσθαι τοῦ γε δοκοῦντος ἐμοὶ νῦν.

ἔστι] ἔστιν Vind. F.

τὸ ἀγαθὸν] τάγαθὸν Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACV. Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius. V. Vol. I. p. LVII. sq.

ἐάσωμεν] ἐάσομεν Ang. B. Ald. Bas. ab. et ante corr. Vind. F.

τὸ νῦν] τοῦν Vind. BE.

E πλέον — τὰ νῦν] est enim, ut mihi videtur, praesentem supra contemplationem Fic. — τανῦν Mon. B. — τανῦν Lob. Vind. BEF. cum editis ante Astii sec.

δομοιότατος] δομοιώτατος Vind. F. a m. pr.

ὑμῖν] ἡμῖν Flor. AC. Bas. ab.

ἐᾶν] ἐὰν Bas. a. ἐῶ Mon. B. Flor. U.

Ἀλλ', ἔφη, λέγε] ἀλλὰ λέγε ἔφη Vind. E. In Ven. B. λέγε a m. pr. omissum.

εἰσεῦθις] εἰς αὐθις Vind. F. εἰσεῦθις Vind. E.

ἀποτίσεις] ἀποτίσειν Yat. H. Flor. AV. patrem vero posteas declarabis Fic.

507 τοῦτον] τοῦτο Lob. Vat. B. Par. DK. Ven. BC. Ald. Bas. ab.

δὲ] om. Par. K.

οὖν] om. Vind. F. Ang. B.

κομίσασθε] κομίσασθαι Vind.

EF. Vat. H.

εὐλαβεῖσθε] εὐλαβεῖσθαι Vind.

F. Vat. H. om. Bas. b. — Proclus l. c. pag. 427: πρῶτον μὲν παραπελεύεται τοῖς ἀνροσταῖς παραφυλάτεται, μὴ πίθηλον ἀποδῷ τὸν λόγον τοῦ τόκου, τὸν μὲν ἡλιον τόκουν ἀποκαλῶν, τὸ δὲ πίθηλον ἀπὸ τῶν ἐν νομίμασι τύπων μεταγεγόνων.

πη] πῆ Vind. F. om. Vat. H. Flor. AC.

ὑμᾶς] ἡμᾶς Flor. AC. Bas. ab.

Εὐλαβησόμεθα] Εὐλαβασόμεθα Ald.

Διομολογησάμενός γ'] γ' om. Mon. B. Par. DK. Flor. U. δ' eius loco est in Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACTV. editisque ante Bekkerum. Conf. Phaedr. p. 228. D: τὴν μέντοι διάνοιαν — δίειμι ἀρξάμενος ἀπὸ τοῦ πρῶτον. Σω. Δειξας γε πρῶτον, ω φιλότης, τί ἀρα ἐν τῇ ἀριστοφῷ ἔχεις ὑπὸ τῷ ἴματιον.

ἀναμνήσας] ἀναμνήσαι Vind. F.

ὑμᾶς] ἡμᾶς Lob. Vind. B. Vat. BM.

τά τε] τά τ' Lob. Vind. EF. Ang. B. Vat. HM. τέ τ' Vind. B.

ἄλλοτε] ἄλλο τε Ald. Bas. ab.

καὶ πολλὰ ἀγαθὰ καὶ ἔκαστα οὗτως εἶναι φαμέν τε καὶ διορίζομεν τῷ λόγῳ. Φαμὲν γάρ. Καὶ αὐτὸ δὴ καλὸν καὶ αὐτὸ ἀγαθὸν καὶ οὕτω περὶ πάντων, ἢ τότε εἰς πολλὰ ἐτίθεμεν, πάλιν αὖτε καὶ ίδεαν μίαν ἔκάστου ὡς μιᾶς οὕσης τιθέντες δὲ ἔστιν ἔκαστον προσαγορεύομεν.

"Ἔστι ταῦτα. Καὶ τὰ μὲν δὴ ὁρᾶσθαι φαμεν, νοεῖσθαι δ' οὐ, τὰς δ' αὖτες νοεῖσθαι μὲν, ὁρᾶσθαι δ' οὐ.

Παντάπασι μὲν οὖν. Τῷ οὖν δρῶμεν ἡμῶν αὐτῶν τὰ δρῶμενα; Τῇ ὄψει, ἔφη. Οὐκοῦν, ἣν δ' ἐγὼ, καὶ ἀνοῆ τὰ ἀκονόμενα καὶ ταῖς ἄλλαις αἰσθήσεσι πάντα τὰ αἰσθητά; Τί μήν; Ἄροι οὖν, ἣν δ' ἐγὼ, ἐννενόηκας τὸν τῶν αἰσθήσεων δημιουργὸν, ὃς φυτεύει τάτην τὴν τοῦ ὄραν τε καὶ ὁρᾶσθαι δύναμιν ἐδημιούργησεν;

B καὶ ἔκαστα] καὶ om. Par. K. perperam probante Schleiermacher. Quemadmodum pulchra et bona, ita iusta et reliqua omnia, quae praedicari possunt, multa sunt, quorum singula genera duobus illis nominatis per copulam adduntur.

εἶναι φαμέν] Vulgo εἶναι φαμέν. Item paullo post ὁρᾶσθαι φαμέν.

αὐτὸ δὴ καλὸν] αὐτὸδημαλὸν Vind. B. αὐ. δὲ κ. Mon. B.

αὐτὸ ἀγαθὸν] αὐτὸαγαθὸν Vind. B.

ἢ τότε] αὐτὸ τε Vind. F. τότε, quod Ficinus omisit, ad eam, quae modo facta est, multorum commemorationem spectat. Sic infra p. 510. B. τοῖς τότε τμηθεῖσιν.

καὶ ίδεαν] κατιδέαν Vind. F. δὲ ἔστιν] δὲ ἔστιν codices mei et editiones ante Bekkerum.

προσαγορεύομεν] προσαγορεύωμεν Vind. E. προσαγορεύομεν Par. DK. sec. Bekk. Mon. B. Flor. U.

"Ἔστι ταῦτα.] Ita Par. A. Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Vat. H. et Stallbaumio in utraque editione testante Flor. ACRTU. Sed quum in pr. idem in Flor. U. προσαγορεύομενον καὶ τὰ μὲν deinceps

legi tradat, non ex eo, sed ex Flor. V. ἔστι ταῦτα a Furia enotatum fuisse, in Flor. U. ut in compari Mon. B. et in reliquis codicibus editisque ante Bekkerum utrumque deesse videtur. *Vera haec sunt.* Fic. ex quo Astius in sec. Αἰνῆα finxit, in tert. hoc ipsun vel *"Ἔστι ταῦτα* sibi interponendum videri demonstravit, codicum inopia neutrum recipere ausus.

Καὶ τὰ — ὁρᾶσθαι δ' οὐ. C.] laudat Proclus l. c. p. 427.

δὴ ὁρᾶσθαι] διορᾶσθαι Ang. B. δὴ om. Proclus. δὴ, ὁρᾶσθαι δ' οὐ Mon. B. undecim mediis omissis.

δ' οὐ] δὲ οὐ Procl. item altero loco.

δὲ αὖ] δὲ idem.

ιδεας] εἰδεας Vind. F. a m. pr.

C *Παντάπασι]* πάντα πᾶσι Vind. F.

Τῷ οὖν — τὰ δρῶμενα;] Qua potentia e multis, quas habemus, quae patent oculis, cernimus? Fic.

ἀκονόμεναι] ἀκονόμεναι; Steph.

Ἄροι] ἄροι Vind. F.

τὸν τῶν] τὸ τῶν Vat. B. Ven. C. Vind. F. Flor. T.

τὴν τοῦ] τοῦ Ven. B. Vind. E. Vat. H.

Οὐ πάνυ, ἔφη. Ἀλλ' ὡδε σπόπει. ἔστιν ὅτι προσδεῖ ἀκοῇ καὶ φωνῇ γένους ἄλλου εἰς τὸ τὴν μὲν ἀκούειν, τὴν δὲ ἀκούεσθαι, ὃ ἐὰν μὴ παραγένηται τρίτον, ή μὲν Δούκι ἀκούεται, ή δὲ οὐκ ἀκουσθήσεται; Οὐδενὸς, ἔφη. Οἶμαι δέ γε, ἦν δ' ἐγὼ, οὐδ' ἄλλαις πολλαῖς, ἵνα μὴ εἴπω, ὅτι οὐδεμιᾶ, τοιούτον προσδεῖ οὐδενός. ή σύ τινα ἔχεις εἰπεῖν; Οὐκ ἔγωγε, ηδ' ὅς. Τὴν δὲ τῆς ὄψεως καὶ τοῦ δρατοῦ οὐκ ἐννοεῖς, ὅτι προσδεῖται; Πῶς; Ἐνούσης που ἐν ὅμμασιν ὄψεως καὶ ἐπιχειροῦντος τοῦ ἔχοντος χρῆσθαι αὐτῇ, παρούσης δὲ χρόας ἐν αὐτοῖς, ἐὰν μὴ παραγένηται γένος τρίτον ἵδιᾳ ἐπ' αὐτὸ τοῦτο Επεφυκὸς, οἰσθα, ὅτι ηδ' τε ὄψις οὐδὲν ὄψεται τά τε χρώματα ἔσται ἀόρατα. Τίνος δὴ λέγεις, ἔφη, τούτου;

τε] om. Lob. Vind. B. Vat. M.
δρᾶσθαι] τοῦ δρ. iidem et
Vat. B.

προσδεῖ] πρὸςδεῖ Vind. E.
ἀκοῇ καὶ φωνῇ] ἀκοῇ καὶ φωνῇ Vind. F.

ἄλλου εἰς] ἄλλου: εἰς Vind. E.
τὴν δὲ] Ita codices mei et Florentini cum Ald. Bas. ab. τὴν δ' Steph. Ast. et Bekkerus, qui de suis taceat.

ἀκούεσθαι,] ἀκούεσθαι; Lob. Bas. ab. Steph. Bekk. Stallb. ἀκούεσθαι. Ald.

D οὐκ ἀκούεσθήσεται] οὐκακούεσθαι Vind. EF.

οὐδὲ] οὐδὲ Vind. F. Flor. R.
ἄλλαις] ἄλλως Ang. B. Non aliōdūs est supplexum est, quippe quae non amplius tres supersint, sed δυνάμεσι vel δυνάμεσιν συζεύξεσι.

οὐδεμιᾶ] οὐδεμία Vind. F.
οὐδενός.] οὐδενός: Vind. E.
σύ τινα] σὺ τίνα Lob.
ἔχεις] ἔχει Vind. E.
οὐκ ἐννοεῖς — χρῆσθαι αὐτῇ] om. Vat. B.

Πῶς; Ἐνούσης] πῶς ἐνούσης Ald.

ὅμμασιν] σώματι Vind. E.
τοῦ] om. Par. K.
ἔχοντος] ἔχον Ven. C.
αὐτῇ] αὐτῇ Vat. H. Flor. ACV. αὐτοῖς; a m. s. —η; Mon. B.

χρόας] χροᾶς Vind. F. χροίας Flor. A.

ἐν αὐτοῖς] om. Fic. (præsente item colore) Praepositione offensi Morgensternius, Astius et Stallbaumius ille commate post χρόας posito ἐν αὐτοῖς ad sequentia referri, horum prior in tert. ἐπ' pro ἐν scribi, posterior in sec. ἐν deleri iubet: quorum nihil necessarium et ἐν retinendūm proprieque accipiendum esse placita de coloribus Tim. p. 67. C. sqq. exposita intuenti patebit. Nec aliter Homericā dictio ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἰδέσθαι intelligenda videatur.

μὴ] μὴν Ald. Bas. ab.

γένος] γένος τὶ Mon. B. Flor. U.

ἐπ' αὐτὸ] ἐπαντὸ Vind. E. E
οἰσθα] οἰσθ' Vind. EF. Ang.

B. Vat. H.
ἀόρατα.] ἀόρατα:, Vind. E.
(h. e. ἀόρατα; cum signo mutatae personae.)

ἔφη] om. Lob. Vind. B. Vat. BM.
τούτον] om. Vind. E. In Vind. F. Socrati assignatur, non omnino male, nisi δὴ post ὃ obstaret, cui tertius locus minus, quam secundus convenit. Itaque τούτον cum τίνος construendum, more Platonī usitato, quo e. g. Criton.

"Ο δὴ σὺ καλεῖς, ἦν δ' ἐγὼ, φῶς. Ἀληθῆ, ἔφη, λέγεις.

Οὐδὲ σμικρῷ ἄρα ἰδέα η τοῦ ὁρᾶν αἰσθησίς καὶ η τοῦ
508 ὁρᾶσθαι δύναμις τῶν ἄλλων ξυζεύξεων τιμιωτέρῳ ζυγῷ
ἔξυγησαν, εἶπερ μὴ ἄτιμον τὸ φῶς. Ἀλλὰ μὴν, ἔφη,
πολλοῦ γε δεῖ ἄτιμον εἶναι. Τίνα οὖν ἔχεις αἰτιάσασθαι
τῶν ἐν οὐρανῷ θεῶν τούτου κύριον, οὗ ήμιν τὸ φῶς
ὄψιν τε ποιεῖ ὁρᾶν ὅτι κάλλιστα καὶ τὰ δρώμενα δρᾶ-
σθαι; "Οὐπερ καὶ σὺ, ἔφη, καὶ οἱ ἄλλοι· τὸν ἥλιον γὰρ
δῆλον ὅτι ἐρωτᾶς. Ἄρ' οὖν ὡδε πέφυκεν ὄψις πρὸς

p. 43. C. Phaedon. 71. E. τίνα ταύτην; dixit, genitivus autem a nomine γένος repetendus.

σὺ καλεῖς — τότε ὁρῶμενα L. VII. p. 515. D.] in Ven. C. excisis foliis duobus desunt.

σμικρῷ ἄρα ἰδέα] Ita Par. A. Lob. (σμικρᾶι — ἰδέαι) Vind. E. Par. K. sec. Bekk. Vat. M. (σμι-
κρᾶ — ἰδέα) σμικρῷ ἄρα ἰδίᾳ Mon. B. Flor. U. σμικρῷ ἄρα ἰδέα reliqui codices editionesque excepta Bekkeri, qui unus videtur sensum scriptoris perspexisse. Scilicet ut L. II. p. 373. E. οὐ τι σμικρῷ, ἀλλ᾽ ὅλως στρατοπέδῳ μείζων πόλις civitas non paullo, sed integro exercitu auctior, ita hic ἔνγον οὐ σμικρῷ ἰδέᾳ τιμιώτερον vinculum non exiguo rerum genere excellentius dicitur, cuius praestantia tali genere ntitur s. continetur per ipsumque efficitur. ἰδέα idem est, quod γένος, ut Polit. p. 289. B. η τοῦ νομίσματος ἰδέα, neque dativus offensionem habere potest. Ceterum non male, ut contra veritatem, Stephanus in m. οὐ σμικρῷ ἄρα ηδε η τοῦ ὁρᾶν coniecit: illud minus perite fecit, quod ibidem, quum Ficinum σμικρῷ ἰδέᾳ leguisse ex eius interpretatione (non exigua quadam specie) collegisset, ei scripturae aequae ac vulgatae magnum subesse errorem pronuntiavit. Cf. L. VIII. p. 579. C.

η] η τε Mon. B. Flor. U. om. Par. DK. Ang. B. Vat. M.

η] η καὶ Ald. Bas. ab. om. Lob. Vind. B. Mon. B. Vat. B. Par. DK. sec. Bekk. (qui perpetram Ven. C. inter omittentes restulit, Vind. B. Mon. B. omisit.) Flor. RU.

ὁρᾶσθαι] ὁρᾶν Lob. Vind. B. Vat. M.

ξυζεύξεων] Ita Bekkerus se-508 cundum Par. ADK. de quo Bip. tacent, et Vat. B. Mei libri cum Ald. Bas. ab. Steph. σνξ. habent.

Τίνα οὖν] οὖν Ficinus omisit.

οῦ] ος Mon. B. Par. K. sec. Bip. et a m. s. Flor. U.

φῶς] παρέχων addit Mon. B. et a m. s. Flor. U.

ὅτι] om. Vind. F.

ὁρῶμενα] om. Ven. B. a m. pr.

ἔφη] ἔφης Vind. E.

δῆλον ὅτι] Ita Vind. F. Flor. R. δηλονότι reliqui mei (et Flor.) cum editis ante Astii sec.

ἐρωτᾶς] ἐρωτᾶς Vind. F.

Ἄρ'] Ita Lob. Vind. B. Mon. B. ἄρ' Vind. F. Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr. ἄρ' Vind. E. Bas. b. Ita vero — Fic.

Θεόν;] Ita Lob. Vind. B. Θεόν. reliqui mei cum editis ante Astii sec.

Πῶς; Οὐκ] πῶς οὐκ Vind. F.

τοῦτον τὸν θεόν; Πῶς; Οὐκ ἔστιν ἥλιος ἡ ὄψις οὗτε
αὐτὴ οὔτε ἐν ᾧ ἐγγίγνεται, δὸς δὴ καλοῦμεν ὅμιλος. Οὐδὲ
γὰρ οὖν. Ἀλλ' ἥλιοι εἰδέστατόν γε, οἷμαι, τῶν περὶ τὰς
αἰσθήσεις ὀργάνων. Πολὺ γε. Οὐκοῦν καὶ τὴν δύνα-
μιν, ἣν ἔχει, ἐκ τούτου ταμιευομένην ὥσπερ ἐπίδρυτον
κέκτηται; Πάνυ μὲν οὖν. Ἄρος οὖν οὐ καὶ ὁ ἥλιος
ὄψις μὲν οὐκ ἔστιν, αἵτιος δὲ ᾧν αὐτῆς ὀρᾶται ὥπ'
αὐτῆς ταύτης; Οὐτως, ηδὸς ὅσ. Τοῦτον τοίνυν, ἣν δὲ ἐγὼ,
φάναι με λέγειν τὸν τοῦ ἀγαθοῦ ἔκγονον, ὃν ταγαθὸν

ἥλιος] om. idem.

ἢ] ἢ Vind. E.

οὔτε αὐτὴ] Ita Vind. F. a m.
pr. οὔτε αὐτὴ a m. s. Ficinus
utrumque omisit, item Bekkerus,
sed hic per errorem, non, ut
Hermannus in annotatione ad Eu-
rip. Med. p. 401. statuebat, co-
dicum auctoritate, quae si ades-
set, teneri potuisse Hermanno
concedendum.

B ὅμιλος] ὅνυμομα Ang. B.

Οὐ γὰρ οὖν.] οὐγαροῦν. Lob.
et e corr. Vind. F. οὐ γὰρ οὖν,
Bas. b.

ἥλιοι εἰδέστατόν] ἥλιοι εἰδέστα-
τόν Ald. Bas. a.

οἷμαι] Vulgo sine commatis.

Οὐκοῦν] οὐκ οὖν Vind. F.

ταμιευομένην] ταμιευομένην
Mon. B. Par. D. Ald. Bas. ab.
et Par. K. sec. Bekk. ταμιευ-
μένης sec. Bip.

Ἄρος οὖν — τὰ δόσμενα. C.]
laudat Eusebius praep. L. XI.
p. 318. Pro ἄρος οὖν oὐ Vind. E.
δὲ, idque sine interpunctione cum
proximis cohaerens, Vind. F. ἄρος
οὐδανοῦ, Ang. B. ἄρος οὐ habet.
Quin etiam sol —. Fic.

οὐ ἥλιος] δὲ om. Flor. T. In
Mon. B. ad h. l. in m. a m. pr.
adscriptum est: πλὴν δὲ μὲν ἀσε-
φίς καὶ ἄδιλος, δὲ τὰνατία
τούτων.

ἔστιν] ἔστι Steph. Ast. pr. sec.

ορᾶται] ἀρεται Vind. F. ante
corr.

Οὐτως] οὐτω Vind. E. om.
Vind. F.

Τοῦτον — δόσμενα. C.] laudat
Iulianus or. III. pag. 133. A.
Spanh.

τοίνυν] om. Fic.

φάναι με] φάναι μὲν Vind. F.
φανιόμενος Iuliani cod. Voss.
φάθι με Mon. B. Flor. U. quod
ipsum Stephanus in m. dubitabat
an hic et p. 509. B. reponendum
esset. Sed cf. Mattheiae gramm.
p. 1072.

ἔκγονον] Proclus in Plat. theol.
p. 380: διὸ καὶ ὁ ἐν Πολιτείᾳ
Σωκράτης ἔκγονον αὐτὸν (scil.
τὸν ἥλιον) ἀποκαλεῖ τοῦ ἀγαθοῦ
καὶ δημιουργὸν τοῦ γεννητοῦ καὶ
πάντος τοῦ ἐγκοσμίου φωτὸς
ὑποστάτην. Idem in Tim. p. 119,
6. a f. δεντέρον δὴ κεφάλαιον
ἐπὶ τούτῳ τὸ δεινόν, δτι καὶ
ὁ Πλάτων ἐπὶ μίαν ἀρχὴν ἀνέ-
γει πάντα, καὶ ἀπὸ τῶν ἐν Πο-
λιτείᾳ λόγων, ἐν οἷς τὸν μὲν ἥ-
λιον αἰτιάται τῶν δοστῶν, τὸ
δὲ ἀγαθὸν τῶν νοητῶν, αὐτὸν
δὲ αὐτὸν τὸν ἥλιον ἔγγονον
τοῦ ἀγαθοῦ προσαγορεύει. Ib.
p. 259, 14: δὲ μὲν γὰρ ἥλιος,
ώστε ἐμάθομεν ἐν Πολιτείᾳ, τῆς
ἀληθείας εἰπόντα τὸ φῶς ὑπέστη-
σεν.

οὐ ταγαθὸν] δὲν τὸ ἀγ. Vind.
F. δὲν τὸ ἀγ. Eus. δὲν ἀγ. Iuliani
cod. Voss. δὲντ ἀγ. Vind. E. δὲν
ταγ. Vat. H.

C ἐγένησεν ἀνάλογον ἔαυτῷ, ὅτιπερ αὐτὸς ἐν τῷ νοητῷ τόπῳ πρός τε νοῦν καὶ τὰ νοούμενα, τοῦτο τοῦτον ἐν τῷ ὁρατῷ πρός τε ὄψιν καὶ τὰ ὁράμενα. Πῶς; ἔφη· ἔτι δίελθέ μοι. Ὁφθαλμοὶ, ἦν δὲ ἔγω, οἶσθ', ὅτι σταυροὶ μηκέτι ἐπ' ἐκεῖνά τις αὐτοὺς τρέπῃ, ὥν ἀν τὰς

C ἀνάλογον] post ἔαυτῷ Lob. Vind. B. Vat. BM. λόγον Iuliani cod. Voss. ἀνὰ λόγον Astius in sec. et tert. scripsit praeeunte Heindorfio ad Phaedon. §. 136. qui adiectivum omnino improbare videtur. At extra dubitationem positum est Tim. p. 69. B. ἀνάλογα καὶ σύμμετρα, et h. l. aptius dictione adverbiali, ut indolem geniti potius, quam gignendi rationem describi appareat. Ceterum hoc respexit scholiastes ad Gorg. p. 506. C. (130, 9. Bekk.) ἐν Παρομενίδῃ δὲ, inquiens, τελεότερον οὐ περὶ ἀγαθοῦ τινὸς, ἀλλ' ἀπλῶς περὶ ἀγαθοῦ ποιεῖται τὸν λόγον, ἐν Πολιτείᾳ δὲ δὲὶ ἀναλογίας τινός.

ἔαυτῷ] ἔαυτοῦ Mon. B. Quod Stephanus in m. addendum censemebat καὶ, id Stallbaumius necessarium esse recte negat et sequentia epexegesin antecedentium facere statuit, sed minus recte ea ad remotius λέγειν refert, quum mea quidem sententia ad ἐγένησεν referenda sint: τὸ ἀγαθὸν ἐγένησε τὸν ἥλιον τοῦτο ἐν τῷ ὁρατῷ τόπῳ, ὅπερ αὐτὸς ἐν τῷ νοητῷ ἐστίν, ut esset idem in loco visibili, quod ipsum est incogitabili. Placitum ipsum tamquam suum proposuit Celsus apud Origeneum L. VII. p. 363: οὐσία καὶ γένεσις νοητὸν, ὁρατόν, μετὰ οὐσίας μὲν ἀλήθεια, μετὰ δὲ γενέσεως πλάνη. περὶ ἀλήθειαν μὲν οὖν ἐπιστήμη, περὶ δὲ θάτερον δόξα. καὶ νοητὸν μέν ἐστι νόησις, ὁρατοῦ δὲ ὄψις. γνώσκει δὲ νοητὸν μὲν νοῦς, ὁρατὸν δὲ ὄφθαλμός. ὅπερ οὖν ἐν τοῖς ὁρατοῖς ἥλιος οὔτ' ὄφθαλμὸς ὡν οὔτ' ὄψις, ἀλλ' ὄφθαλμῷ τε τοῦ ὁρατοῦ αἴτιος καὶ ὄψει τοῦ δὲ αὐτοῦ συνίστασθαι καὶ ὁρατοῖς τοῦ

οἰσθασθαι, πᾶσιν αἰσθητοῖς τοῦ γῆγενθασθαι καὶ μὴ αὐτὸς αὐτῷ τοῦ βλέπεσθαι, τοῦτο ἐν τοῖς νοητοῖς ἐκεῖνος, ὅσπερ οὕτε νοῦς οὕτε νόησις οὔτ' ἐπιστήμη, ἀλλὰ νῷ τε τοῦ νοεῖν αἴτιος καὶ νόησει τοῦ δὲ αὐτὸν εἶναι καὶ ἐπιστήμη τοῦ δι' αὐτὸν γνώσκειν καὶ νοητοῖς ἄπαισι.

αὐτὸς] αὐτῷ Vat. H. γὰρ αὐτῷ Vind. B. Vat. M. et correctus in o Lob. ἔαυτῷ Iulian.

τε νοῦν] τε om. Iul. τε νῦν Ald. Bas. ab.

τοῦτο τοῦτον] τοῦτον Vind. F. Eus. τοῦτο Ang. B. Flor. R. Cf. L. VIII. p. 581. B: καὶ χορημάτων τε καὶ δόξης ἥμιστα τούτων τούτῳ μέλει. Apol. 23. A: (κινδυνεύει δὲ θεός) ἐν τῷ χορημῷ τούτῳ τοῦτο λέγειν.

καὶ τὰ ὁράμενα] πρός τε ὄψιν, sup. a m. s. καὶ τὰ βλέπειν et super βλέπειν νοούμενα, Vind. B.

ἔτι δίελθέ] ἐπιδίελθέ Vind. F. Cf. ad L. V. p. 449. C. dicta.

Ὥφθαλμοί] Proclus in Civ. p. 428, 6: εἰπὼν γὰρ Ὁφθαλμοί, ἦν δὲ ἔγω, ὅταν τις αὐτοὺς μὴ ἐπένεινα τρεπῇ, ὥν τὰς χρόας ἥμεριν δὲ φῶς ἐπέχει, ἀμβλυνάτουσιν, ὅταν δὲ ὡν δὲ ἥλιος καταλάμπῃ, σαρφῶς δέωσι. ταῦτα οὖν ἐπὶ τῶν ὁρατῶν διελόμενος, χρόας, φῶς, ὄφθαλμούς, ἥλιον ἐπήνεγκεν τὰ ἀνάλογον καὶ ἐπὶ νοούμενων λέγων. οὕτω καὶ τὸ ὄμμα τῆς ψυχῆς, φῶς δὲ νοεῖ, ὅταν μὲν τρεπῇ τις οὗ τὸ δὲ καὶ ἡ ἀλήθεια λάμπει, νοεῖ καὶ γνώσκει, ὅταν δὲ εἰς τὸ τῷ σκότῳ περιφαμένον, τὸ γιγνόμενον καὶ τὸ ἀπολλύμενον, δοξάζει τε καὶ ἀμβλυνάττει.

οἶσθ', ὅτι] οἶσθα ὅτι Lob. Vind. BF. porro Fic.

χρόας τὸ ἡμερινὸν φῶς ἐπέχῃ, ἀλλὰ ὡν μυκτερινὰ φέγγη, ἀμβλυώττουσί τε καὶ ἔγγὺς φαίνονται τυφλῶν, ὅσπερ οὐκ ἐνοίσης καθαρᾶς ὄψεως. Καὶ μάλα, ἔψη. "Οταν δέ γ', οἶμαι, ὡν ὁ ἥλιος καταλάμπῃ, σαφῶς Δόρκωστος; καὶ τοῖς αὐτοῖς τούτοις ὅμμασιν ἐνοῦσα

ὅταν] ὅτ' ἀγ̄ Mon. B. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr.

ἐπ' ἐκεῖνά] ἐπέκεινά Vind. EF. Vat. H. ἐπ' ἐκεῖνα Ald. Bas. a. ἐπ' ἐκεῖνοις Mon. B.

τρέπη] πρέπη Vind. E. Ald. Bas. ab.

ἡμερινὸν φῶς] Antiatt. p. 98, 29: ἡμερινὸν φῶς. Πλάτων Πολιτείας τετάρτῳ. immo ἔπτῳ.

ἐπέχῃ] ἐπέχοι Lob. Ven. B. ἐπέχει Vind. F. Flor. R. illuminauit ostenditque Fic. potius obtinet.

ῶν] ὡς Lob. Vind. B. Mon. B. Vat. BM. Par. DK.

φέγγη] φέγγη Flor. T. In Vind. B. alterum η in fine int. vers. additum est.
ἀμβλυώττουσι] ἀβλυώττουσι Vind. E. Ald. ἀβλυωποῦσι Vind. F. Idein Flor. A. vulgato superscriptum habet. caecutiunt hallucinanturque Fic.

τε] γε Ven. B. Vind. E. Flor. ACTV.

φαίνονται] φαίνωνται Vind. F. φαίνεται Vind. E. Vat. H. Idein in Flor. CT. repertum videtur, quos Stallbaumius in pr. refert pro φαίνονται aliquid habere, quod nihil faciendum sit, quid habeant, non docet.

καθαρᾶς] καθαρῶν Ald. Bas. a. Eadem terminationem Bas. b. in una pagina, quem custodeim dicunt, exhibet.

ὄψεως.] ὄψεως; Lob. Vind. B. Mon. B. Ald. Steph. Bekk. Ast. tert. Stallb.

μάλα] μάλι Vind. F. Ang. B.

ἔψη] ἔψης Vat. H.

γ'] γε Mon. B.

ῶν] οὐ idem et Flor. U.

D καταλάμπῃ] Ita Par. A. Lob. Vind. BE. Vat. B. Ven. B. Flor.

ACTV. (Proclus.) καταλάμπει reliqui cum editis. Quum Atticos non tantum poëtas, sed etiam scriptores satis constet in describendo genere solum nonnunquam coniunctivum pronomini relativō addere, qua de re cf. Matthiae gramm. p. 1025. cuius exemplis addo Leg. L. V. p. 728. A: ὃς ἄπεις ἀν νομοθέτης αἰσχρὰ εἴναι καὶ πανὰ διαριθμούμενος τάττη καὶ τούναντιον ἀγαθά καὶ παλά, τῶν μὲν ἀπέχεσθαι μὴ ἐθέλη πάσης υπκανῆ, τὰ δὲ ἐπιτηδεύειν ἔνυπασαν πατὰ δύναμιν, οὐκ οἶδεν ἐν τούτοις πᾶσι πᾶς ἄνθρωπος ψυχὴν θειότατον ὃν ἀτιμότατα καὶ πανοσχημόνεστα διατιθεῖς. Ib. p. 737. B: ἀνεγνήτους γὰρ δεῖ τὰς οὐσίας πρὸς ἀλλήλους πατασπενάγεσθαι ἀμωσύπτως, η μὴ προϊέναι πρότερον εἰς τούμπροσθεν ἐκόντα εἴναι τῆς ἀλλῆς πατασπενῆς, οἷς η παλαιὰ ἐγκλήματα πρὸς ἀλλήλους καὶ ὄσις νοῦ καὶ συνηδὼν μετῆ. nostro loco codicibus optimis eo magis obtemperandum est, quo facilius ex antecedentibus ὡν ἀντὶς χρόας τὸ ἡμερινὸν φῶς ἐπέχῃ particula relativō addi solita repeti potest. Cf. Vol. I. p. 410, a. — In Ald. sequentis vocabuli syllaba priore huic coniuncta καταλάμπεισα φῶς legitur.

ἐνοῦσα] Ita Vind. F. a m. pr. ἐνόντα a m. s. Quod Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius ante hoc inseruerunt ὄψις, quamquam durius abesse nomen concedo, tamen codicum Lob. Vind. B. Mon. B. Vat. M. Flor. U. et Ficini auctoritatē ad recipiendum sufficere nou puto. Accedit, quod non solum ὄψις, sed καθαρὰ ὄψις supplendum videtur.

φαίνεται. Τι μήν; Οὗτω τοίνυν καὶ τὸ τῆς ψυχῆς ὡδε νόει. 479
 ὅταν μὲν οὐ καταλάμπει ἀλήθειά τε καὶ τὸ ὄν, εἰς
 τοῦτο ἀπερείσηται, ἐνόησέ τε καὶ ἔγνω αὐτὸ καὶ νοῦν
 ἔχειν φαίνεται. ὅταν δὲ εἰς τὸ τῷ σκότῳ πενθαμένον,
 τὸ γιγνόμενόν τε καὶ ἀπολλύμενον, δοξάζει τε καὶ ἀμ-
 βλυνώττει ἄνω καὶ κάτω τὰς δόξας μεταβάλλον καὶ ἔοι-
 κεν αὖ νοῦν οὐκ ἔχοντι. Ἔοικε γάρ. Τοῦτο τοίνυν τὸ
 Ε τὴν ἀλήθειαν παρέχον τοῖς γιγνωσκομένοις καὶ τῷ γι-
 γνώσκοντι τὴν δύναμιν ἀποδιδὸν τὴν τοῦ ἀγαθοῦ ἰδέαν
 φάσι εἶναι, αἰτίαν δὲ ἐπιστήμης οὖσαν καὶ ἀληθείας
 ὡς γιγνωσκομένης μὲν διανοοῦ, οὗτω δὲ καλῶν ἀμφο-
 τέρων ὅντων, γνώσεώς τε καὶ ἀληθείας, ἄλλο καὶ κάλ-

φαίνεται.] φαίνεται; Vind. B.
 Mon. B. Ald. φαίνεται: καὶ μάλι-
 ἔψη: Flor. RT.

ωδε νόει] ὡδὴ νοεῖ Proclus.
 μὲν] enim Fic.

οὐ] οὐ Vat. H. οὐν̄ Flor. AC.
 αὐτὴν Ang. B. Flor. T. et mar-
 go R. om. Vind. E.

καταλάμπει] καταλάμπῃ Vind.
 BE. Vat. H.

ἐνόησέ τε] ἐννόησετε αὐτὸ^ν
 Vind. F.

ἔχειν] ἔχον Mon. B. Flor. U.
 δὲ] δὲ Vind. F. Ang. B.

πενθαμένον] πενθαμμένον Vind.
 E. Flor. R. (Procl.)

δοξάζει τε] om. Fic.
 ἀμβλυνώττει] ἀμβλυνώτει Vind.
 B. Synag. Bekk. anecd. p. 386,
 31: ἀμβλυνώττει τυφλώττει. Cf.
 L. VII. p. 516. E.

μεταβάλλον] μεταβαλλον Vind.
 F. μεταβάλλων Vind. E. μετα-
 βαλὼν Lob. Vind. B. Par. DK.
 sec. Bekk. Vat. M. μεταβαλὼν
 Vat. B.

αὖ] om. Fic.
 Τοῦτο — φάσι εἶναι E.] laudat Eusebius praep. L. XI. p. 319.
 respiciunt Proclus in Parm. T. V.
 p. 155. Cous. et Damascius ἀπο-
 καὶ λύσ. p. 66. et 90. Kopp.

E γιγνωσκομένοις] γιγνομένοις
 Vind. E. Vat. H. Flor. ACV.
 τῷ] τῷ Euseb.
 γιγνώσκοντι] γινώσκοντι Vind.
 E.

ἀποδιδὸν] ἀποδιδοῦν Euseb.
 ἰδέαν] εἰδέαν Vind. F. a m.
 pr.

φάσι] Ita Lob. Vind. BF.
 Mon. B. Euseb. φασὶ Par. A. a
 m. s. Vat. B. a m. pr. Ast. sec.
 tert. Piores cum Vind. E. φασὶ^ν
 habent. Cf. Vol. I. p. 407, b.

αἰτίαν δὲ — διανοοῦ] Quum
 bonum veritatis etiam tamquam
 ideae caussa sit, quippe quod
 omnibus ideis hoc, ut sint, im-
 pertiat, idem veritatis tamquam
 cognoscendae caussam ostendere
 non ita supervacaneum erat, ut
 visum est Astio, qui in comm.
 haec verba glossematis manifesta
 esse et nihil nisi praegressa re-
 petere statuit, extrema vero ὡς
 γιγνωσκομένης μὲν διὰ νοῦ, quemadmodum ante Bekkerum legeba-
 tur, miris modis languere idem
 recte censuit. Nam veritatem
 alia re nulla, nisi intellectu co-
 gnosci post ea, quae supra de
 intelligibili et visibili dicta sunt,
 denuo inculcandum non erat. Ita-
 que proprius a vero abesse vide-
 tur Astius in tert. haec extrema
 delenda existimans, quam Stall-
 baumius, qui ea ob id ipsum re-
 tinet, quod intellectus commemo-
 ratio recte abesse non possit.
 Praeterea particulæ δὲ et μὲν
 cum illa lectione consistere ne-
 queunt, quarum priorem Stall-
 baumius aut eiiciendam aut cum

λιον ἔτι τούτων ἡγούμενος αὐτὸς ὁρθῶς ἡγήσῃς ἐπιστήμην δὲ καὶ ἀληθειαν, ὥσπερ ἐκεῖ φῶς τε καὶ ὄψιν ἡλιο- 509 ειδῆ μὲν νομίζειν ὁρθὸν, ἥλιον δὲ ἡγεῖσθαι οὐκ ὁρθῶς ἔχει, οὗτον καὶ ἐνταῦθα ἀγαθοειδῆ μὲν νομίζειν ταῦτ' ἀμφότερα ὁρθὸν, ἀγαθὸν δὲ ἡγεῖσθαι ὁπότερον αὐτῶν οὐκ ὁρθὸν, ἀλλ' ἔτι μειζόνως τιμητέον τὴν τοῦ ἀγαθοῦ ἔξιν. Ἀμήκανον κάλλος, ἔφη, λέγεις, εἰ ἐπιστήμην μὲν καὶ ἀληθειαν παρέχει, αὐτὸς δ' ὑπὲρ ταῦτα κάλλει ἐστίν· οὐ γὰρ δὴ που σύ γε ἡδονὴν αὐτὸς λέγεις. Εὐφήμει, ἦν δ' ἔγω· ἀλλ' ὡδε μᾶλλον τὴν εἰκόνα αὐτοῦ ἔτι ἐπισπόπει. Πῶς; Τὸν ἥλιον τοῖς ὁρωμένοις οὐ μόνον, Βοῖμαι, τὴν τοῦ ὁρᾶσθαι δύναμιν παρέχειν φήσεις, ἀλλὰ

Astio, cuius et ipsius conjecturae repugnat, in γε mutandam putat, posteriorem iam Stephanus p. 24. aut expungendam aut potius ad aliquid, quod post διὰ νοῦ exciderit, quae etiam Geerii diatr. p. 82. opinio est, referendam arbitratur, Stallbaunius autem ne scio quo modo explicandam automat. Evidem cum Bekker pro διὰ νοῦ, quae Vind. E. Ven. B. Vat. H. Ang. B. Flor. ACRTV. eademque Ficini (scientiae et veritatis, quae per intellectum percipitur, caussam) lectio est, scribendum putavi διανοοῦ, quod Par. A. Vind. F. et a m. s. Vat. B. exhibent, a quo διὰ νοού, quod in Lob. Vind. B. Mon. B. Par. DK. sec. Bekk. Flor. U. Vat. M. et a m. pr. B. legitur, parum aut nihil differt, atque hanc sententiam de bono scientiae et veritatis tamquam cognoscendae caussa primum veluti continuacionem et explicationem prioris, qua cognoscendis veritatem, cognoscendi facultatem eius rei imperfite declaratum erat, per δὲ adiectam, deinde vero ut oppositam sequenti, quae ipsum diversum a scientia et veritate ac pulchrius utraque praedicat, per μὲν significatam statuo; cuius particulae quum proprius locus post αἵτιαν esset, ut διανοοῦ δὲ αἵτιαν μὲν οὐσαν etc. scribi deberet, con-

cinnitatis gratia, quoniam in praecedenti sententia imperativus (φά-
δι) post obiectum collocatus est, hic quoque obiectum initio positum eique δὲ copulans subiunctum, μὲν autem finitae obiecti descriptioni additum est. — Pro δ' in Vind. F. δὲ, pro γιγνωσκομένης in Vind. E. γιγνωσκομένης, in Flor. U. γιγνωσκομένην, in Mon. B. γιγνωσκομένων legitur.

ἡγήσῃ] ἡγήσει Ang. B. Flor.
R. et recentiores.

ἐπιστήμην] καὶ ἐπ. Vind. EF.
Ang. B. Flor. AC.

ἐκεῖ] om. Fic.

μὲν] om. Vat. H.

δὲ] δ' Vind. EF. Ang. B.
Vat. H. Flor. ACTV.

οὗτον] καὶ οὗτον Lob. Vat.
BM. Bas. b.

ταῦτα] ταῦτα Vind. BF.

μειζόνως] Cf. Vol. I. p. 344, a.
augustior enim est ipsius boni ma-
iestas. (ἀλλ' — ἔξιν.) Fic.

εἰ — λέγεις] om. Lob. Vind.
B. Vat. BM.

δ'] δὲ Vind. F.

καλλει ἐστίν] καλλει εἰ ἐστιν
idem. καλλιστον Flor. RT. In
Vat. H. η super ει scriptum.

Εὐφήμει] εῦ, a. m. s. οὐ,
φημὶ Vind. F.

ἀλλ' ὡδε μᾶλλον] atque ita
planius Fic.

Τὸν ἥλιον — ὑπερέχοντος.] B

καὶ τὴν ἔνεσιν καὶ αὐξῆν καὶ τροφὴν, οὐ γένεσιν αὐτὸν ὄντα. Πῶς γάρ; Καὶ τοῖς γιγνωσκομένοις τοίνυν μὴ μόνον τὸ γιγνώσκεσθαι φάναι ὑπὸ τοῦ ἀγαθοῦ παρεῖναι, ἀλλὰ καὶ τὸ εἶναι τε καὶ τὴν οὐσίαν υπὲνουν αὐτοῖς προσεῖναι, οὐκ οὐσίας ὄντος τοῦ ἀγαθοῦ, ἀλλ᾽ ἔτι ἐπέκεινα τῆς οὐσίας πρεσβείᾳ καὶ δυνάμει υπερέ-
C χοντος. Καὶ δ Γλαύκων μάλα γελοίως Ἀπολλον, ἔφη,

Iaudat Eusebius praep. L. XI. p. 319. Proclus in Tim. p. 130: εἰ μὴ καὶ ἄρα καὶ μέρηματα πάντα δεῖ τὰ ἐν τῷ πόσῳ λέγειν ὡς τρεφόμενα πάντα ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῶν δρατῶν διὰ τῆς τοῦ φωτὸς μεταδόσεως, διὰ τὸν Πολιτείαν Σωκράτης τροφῆς αἴτιον εἶπε καὶ γενέσεως πάσιν, διὰ φωτίζει. τρέφεται γὰρ ἔναστα τελειούμενα διὰ τοῦ φωτός.

αὐξῆν] αὐξήσιν Vind. F. Par. K. Ang. B. Flor. R.

οὐ γένεσιν αὐτὸν ὄντα] om. Vind. B. καὶ γ. αὐ. ὁ. Lob. Vat. M. οὐ γ. αὐτὰ ὁ. Par. K.

Πῶς γάρ] π. γ. οὐ Vind. B. γιγνωσκομένοις] γιγνοσκ. Vind. E. γιγνωσκ. Euseb. et paullo post γιγνώσκεσθαι.

φάναι] φέναι Vind. F. Conf. p. 508. B.

ἄλλα — προσεῖναι] om. Euseb. — εἶναι τε τὴν οὐσίαν υπενείνον — Vind. F.

οὐκ οὐσίας] οὐκονοσίας Vind. F.

ἔτι] om. Euseb.

ἐπέκεινα] ἐπὲνεινα Vind. E. Antiat. p. 94, 6: ἐπέκεινα, ἐπιτάδε· Πλάτων περὶ ψυχῆς. p. 112. B. quo loco Bekkerus ἐπὲνεινα scripsit. Dictionem et sententiam hanc Proclus aliquoties commemo-ravit in dissertatione περὶ τοῦ ἐν Πολιτείᾳ λόγου τοῦ δεικνύντος, τι ποτέ ἔστι τάγαθόν, primum p. 425, 9. a f. ubi varie de bono disputare Socratem docet: τοτὲ μὲν ὡς περὶ τοῦ ἐν ἡμῖν ἀγαθοῦ, τοτὲ δὲ ὡς περὶ τοῦ εἰδούς τῶν ἀγαθῶν πάντων, τοτὲ δὲ ὡς περὶ ἄλλου τινὸς οὐτε ἐν ἡ-

μὲν ὄντος οὐτε εἰδητικὴν ἔχοντος οὐσίαν οὐδὲ ὄλως οὐσίαν, (v. οὐσία) ἀλλ᾽ ἐπέκεινα, παθάπερ φησί, τοῦ εἶναι καὶ οὐσίας υπάρχοντος. tunc p. 429, 24: τάγαθὸν δὲ οὐχὶ μόνον τῆς οὐσίας εἶπεν ὁ Σωκράτης ἐπέκεινα, ἀλλὰ καὶ τοῦ εἶναι. iterum ib. 7. a f. εἰ οὖν τὸ δὲ ἐπιστητὸν, τὸ δὲ ἀγαθὸν οὐδὲν ἐπιστητὸν, τὸ ἄρα ἀγαθὸν οὐδὲν ἔστιν δὲ, (v. ἐπιστητὸν) καὶ αὐτὸς ἐλεγεν οὐσίας αὐτὸν λέγων ἐπέκεινα καὶ τοῦ εἶναι. Item in Tim. p. 93: Ἀττικός δὲ αὐτόθεν τὸν δημιουργὸν εἰς ταῦτα ἀγει τάγαθῶ, καίτοι ἀγαθὸς μὲν παλεῖται παρὰ τῷ Πλάτωνι, τάγαθὸν δὲ οὐ, καὶ νοῦς προσαγορεύεται, τάγαθὸν δὲ αἴτιον πάσης οὐσίας καὶ ἐπέκεινα τοῦ ὄντος ἔστιν, ὡς ἐν Πολιτείᾳ μεμαθήκαμεν. Similiter Damascius ἀποq. καὶ λύσ. p. 55. Kopp. ἀλλ᾽ οὐ τί γε τὸ πάντων τούτων ἐπέκεινα (hic Koppius perperam rumpit) fecit. ἐν οὐδαμῷ ἀπεφῆσεν οὐδαμῶς. διὸ καὶ ἐν Σοφιστῇ τίθησιν αὐτὸν ὡς ἐν πρὸ τοῦ ὄντος, καὶ ἐν Πολιτείᾳ τὰ γαθὸν ἐπέκεινα πάσης οὐσίας. Eodem respexit Origenes c. Cels. L. VI. p. 320: ἵνενδεθῆ, πότερον ἐπέκεινα οὐσίας ἔστι πρεσβείᾳ καὶ δυνάμει ὁ θεὸς μεταδιδούς οὐσίας οἷς μεταδίδωσι κατὰ τὸν ἐαντοῦ λόγον καὶ αὐτῷ λόγῳ, ἢ καὶ αὐτός ἔστιν οὐσία.

τῆς] om. Euseb.

μάλα γελοίως] Proclus in Civ. C p. 424: ὅθεν καὶ ἐν τοῖς ἐπομένοις λόγοις εἰπόντος τοῦ Σωκράτους τάγαθὸν περὶ οὐσίας υφεστάναι καὶ αὐτὸν παράγειν τὸ δὲ

δαιμονίας ὑπερβολῆς. Σὺ γὰρ, ἦν δ' ἔγω, αἴτιος, ἀναγνάξων τὰ ἐμοὶ δοκοῦντα περὶ αὐτοῦ λέγειν. Καὶ μηδαμῶς γ', ἔφη, παύσῃ, εἰ μή τι, ἀλλὰ τὴν περὶ τὸν ἥλιον ὄμοιότητα αὖ διεξιὼν, εἴ τη ἀπολείπεις. Ἀλλὰ μὴν, εἶπον, συχνά γε ἀπολείπω. Μηδὲ σμικρὸν τοίνυν, ἔφη, παραλίπης. Οἶμαι μὲν, ἦν δ' ἔγω, καὶ πολύ· ὅμως δὲ, ὅσα γε ἐν τῷ παρόντι δυνατὸν, ἔκαν

⁷Απολλων, ἔφη ὁ Γλαύκων, δαιμονίας ὑπερβολῆς, εἰς τὸ ὑπερόντιον ἐνατενίσαι μὴ δυνηθεῖς. πατέρων (f. καὶ πατέρων) τοῦ θαύματος ὁ Σωκράτης μάλα γε λοις τοῦτο εἰπὼν ἀποδίηψε τὸν Γλαύκωνα, καὶ πολλές φησι τῶν δοκοῦντων αὐτῷ περὶ ἐνετονού σιωπήσεσθαι. Ib. p. 426. sq. διὸ καὶ ἔξης εἰπὼν ὑπεροντιον εἶναι τὸ ἀγαθὸν τοῦ Γλαύκωνος δαιμονίαν εἶναι φάντος τὴν ὑπερβολὴν ἐπέπληξε γελοίως (v. γελοῖος) αὐτὸν εἰπεῖν ἀποφηνάμενος, εἰδὼς κενεμεβατοῦντος πρὸς τὴν θέαν τοῦ πάντων ἐπέπεινα πάλιν πολλά φησι παραλείψειν ἐπὼν εἶναι τῶν ἔσων δοκοῦντων καὶ μόνην τὴν περὶ τὸν ἥλιον ἀναλογίαν γυμνάσειν.

περὶ αὐτοῦ] τὰ περὶ αὐτοῦ
Vat. H. Flor. V.

γ'] γε Vind. E.

εἰ μή τι, ἀλλὰ] Pro ἀλλὰ Par. A. Vind. F. ἀλλα, Vind. E. Ang. B. et a m. s. Flor. R. ἀλλο exhibit, quod Stephanus pag. 24. non videns, quid post εἰ μή τι subaudiri possit, a Platone profectum coniecit. Atque ita p. 502. A. scriptum vidimus: ἦνα, εἰ μή τι ἀλλο, αἰσχυνθέντες ὄμοιογήσωσι. Sed omisso ἀλλῳ adhibitoque ἀλλὰ, ut nostro loco, Menon. p. 86. E. legitur εἰ μή τι οὖν, ἀλλὰ σμικρὸν γέ μοι τῆς ἀρχῆς χάλασον, quo exemplo adversus Stephanum usus est Stallbaumius. Minus etiam feliciter idem Stephanus ibidem coniiebat πανόη ἐμοὶ ἔτι ἀλλην τὴν περὶ etc. Ficinus haec usque ad διεξιὼν ita interpretatus est:

sed absolve praeceipe solis comparationem.

αὐ] αὐτοῦ Vind. F. Ang. B.
εἰ] ἦ Mon. B. Par. K. sec. Bekk. ἦ Par. D. om. Vind. E.

πη] ποι Ven. B. Stephanus pag. 24. pro eo fortasse τι legi posse monet, sed vulgatam lectio nem defensionem recipere concedit. Stallbaumius vero hanc dubie scribendum esse εἰ πή τι ἀπολείπεις pronuntiat idque in Ven. B. scriptura latere suspicatur. Ego neque Ficini interpretationem si quid est praetermissum, neque quod Socrates συχνὰ ἀπολείπειν fatetur, quibus argumentis Stallbaumius usus est, tantum valere crediderim, ut illud τι a librariis potius, quam ab ipso scriptore omissum statuere debeamus, praesertim quum alia ellipsis in eodem verbo Platoni quoque satis frequens sit, e. g. Gorg. p. 497. C: ὅθεν οὖν ἀπέλιπες, ἀπονοίνοι. et locis ab Heindorfio ibi citatis.

ἀπολείπεις] ἀπολείποις Lob. Vat. B. ἀπολείπης Par. K. sec. Bekk. ἀπολίπης Vind. B. Vat. M. In Flor. A. i super εἰ scriptum.
εἰπον — Οἶμαι μὲν] om. Flor. RT.

γε] τε Par. K.

τοίνυν] om. Fic.

παραλίπης] παραλείπης Vind. EF. Ang. B. Flor. ACV. His Flor. T. addit Stallbaumius, quem supra haec omittere ostendit.

ἦν δ' ἔγω] τοίνυν ἦν δεγω Vind. E.

δὲ] δ' Lob. Vind. B. Vat. M.

γε] γ' Vind. EF. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. Stallb.

D οὐκ ἀπολείψω. Μὴ γὰρ, ἔφη. Νόησον τοινυν, ἦν δ' ἐγώ, ὡσπερ λέγομεν, δύο αὐτῷ εἶναι, καὶ βασιλεύειν τὸ μὲν νοητοῦ γένους τε καὶ τόπου, τὸ δ' αὖ ὄρατοῦ, ἵνα μὴ οὐρανοῦ εἰπὼν δόξω σοι σοφίζεσθαι περὶ τὸ ὄνομα. ἀλλ' οὖν ἔχεις ταῦτα διττὰ εἴδη, ὄρατὸν, νοητόν. "Εχω.

οὐν ἀπολείψω] οὐπάπολείψω
Vind. E.

D τοινυν] om. Fic.
ὡσπερ λέγομεν] om. Vat. H.
Flor. V. Fic.
δύο] δύω Par. A. Conf. ad L. V. p. 472. A. observata.
αὐτῷ] αὐτῷ Vind. E. αὐτῷ Vind. F.

τὸ] om. Vind. F. Ang. B.
Flor. R. Proclus in Tim. p. 70:
ἐν οἷς καὶ περὶ τάγαθοῦ διαλεγόμενος ἔλεγεν αὐτὸν βασιλεύειν
ἐν τῷ νοητῷ τόπῳ, καθάπερ ἐν τῷ ὄρατῷ τὸν ἥλιον.

τόπου] τρόπου Lob. Vind. B.
Vat. M.

αὖ] om. Flor. T.

οὐρανοῦ] ὄρανοῦ Lob. οὐρανὸν Par. A. Vind. E. Flor. ACTV.
Cf. Gorg. p. 521. D: οἵμαι μετ' ὀλίγων Ἀθηναίων, ἵνα μὴ εἰπω μόνος, ἐπιχειρεῖν τῇ ὡς ἀληθῶς πολιτικῆ τεχνη. Ceterum accusativum non omnino vitiosum arbitror. sub coelo Fic.

σοι] σοὶ Steph. Ast. pr.

ἔχεις] habeas Fic. recte, si idem quod habere te opinor esse voluit. Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius post νοητὸν signum interrogationis fecerunt, quod etiam Mon. B. habet, cui ἀλλ' οὖν refragatur. Vid. ad L. VII. p. 526. D.

ἄνισα] εἰς ἵσα Ang. B. ἄν, ἵσα Vind. F. ἄν ἵσα Vind. E. Flor. ACTV. Astius in sec. et tert. Stallbaumius in pr. ἀν' ἵσα idem in sec. Vulgo olim, sed iam tum dissentientibus codicibus, ἵσα vel εἰς ἵσα lectum fuisse scholion ad h. l. docet, quod ex Archytæ, Brontini et Iamblichī commentariis excerptum dicitur. Eius initium hoc est: γραμμὴν δίχα τὸ πρῶτον τετμημένην, εἴτε εἰς ἵσα

τμῆματα κατ' Ἀρχύταν καὶ τὸν Χαλκιδέα Ἰάμβλιχον, εἴτε καὶ εἰς ἄνισα, ὡς ἐν τῷ τισὶν ἀντιγράφων τοῦ Πλάτωνος εὑρηται, τὰ ὅντα πάντα δηλοῦσθαι εἰς δύο κατὰ ποστήν διαιρέσειν τεμνόμενα, τὸ νοητὸν δηλονότι καὶ ὄρατόν. εἰ μὲν εἰς ἵσα, διὰ τε τὴν τῶν λόγων μετονοίαν καὶ τῶν εἰδῶν καὶ τὴν τῶν μετεχόντων πρὸς τὰ μετεχόμενα ὁμοιότητα καὶ τῷ τὴν ἀναλογίαν τὴν αὐτήν πως εἶναι ἐπ' ἀμφοτέροις εἰ δὲ εἰς ἄνισα, ὡς ἐν ἄλλοις εὑρηται, διὰ τὴν τῶν νοητῶν πρὸς τὰ αἰσθητὰ ἵσας ὑπεροχὴν καὶ ἀνομοιότητα. Eadem lectioonis discrepantiam respicere videatur Proclus in Civ. p. 431, 10: μίαν μὲν οὖν γραμμὴν διὰ ταῦτα λαμβάνει, τέμνει δὲ δίχα ταύτην οὐν εἰς ἵσα μέρη τέμνων, ἀλλ' εἰς ἄνισα, δύο δὲ ὅμως. Cuius iudicium et codicum nostrorum auctoritate et re ipsa plane confirmatur. Quomodo enim aequales partes exsistere possunt, si in dividendo perspicuitatis et veritatis rationem habere atque ita lineam secare iubemur, ut quantum alterius partis particulæ duæ perspicuitate et veritate inter se differant, tantundem inter ipsam et alteram discriminis obtineat? quod quidem aperte declaratum est verbis καὶ σοὶ ἔσται σαφηνεῖς καὶ ἀσαφεῖς πρὸς ἀληθηλα ἐν μὲν τῷ ὄραμένῳ τὸ μὲν ἔτερον τμῆμα εἰκόνες, τὸ δὲ ἔτερον φῶ τοῦτο ἔσται, et certius etiam illis ἢ καὶ ἔθέλουις ἀν αὐτῷ φάναι δημοσθαι ἀληθεῖς τε καὶ μή; An forte cum Stallbaumio magnitudinem partium seu ambitum loci utriusque, visibilis et cogitabilis, parem a Socrate statui ideoque ἵσα τμῆματα significata

Ωσπερ τοίνυν γραμμὴν δίχα τετμημένην λαβὼν ἄνισα τμῆματα πάλιν τέμνε ἐκάτερον τὸ τμῆμα ἀνὰ τὸν αὐτὸν λόγον, τό τε τοῦ ὁρωμένου γένους καὶ τὸ τοῦ νοούμενου, καὶ δοι ἔπειται σαφηνείᾳ καὶ ἀσαφείᾳ πρὸς ἄλληλα ἐν μὲν τῷ ὁρωμένῳ τὸ μὲν ἔτερον τμῆμα εἰκόνες. Ε

tione vulgari dici credimus? At hoc ipso ideae a rebus sensu subiectis maxime differunt, quod illae unae, hae multitudine infinitae sunt, atque harum rursus unaquaeque infinita umbrarum simulacrorumque multitudine repraesentari, neque ipsarum idearum numerus cum theorematum mathematicorum numero comparari potest. Itaque vel sic ἄνισα τμῆματα dicenda erant. Verum de ambitu cogitandum non esse sequentia illa docent, quae divisionis rationem aperte demonstrant. Non magis ea, quae in scholio commemorantur, aequalitatem praestant. Nam quae primo loco ponitur, ἡ τῶν λόγων μετονοία καὶ τῶν εἰδῶν, communio, quae rebus visibilibus et inferioribus cum superioribus, notionibus (ἔναστος λόγος οὐνειον πλήθεως ἡγεῖται secundum Proclum T. III. p. 107.) et ideis, intercedit, utrarumque complexum parem efficere non aliter potest, nisi ut unaquaque idea in totidem partes, quot res visibles eius participes sunt, divisa statuatur, quo facto una, h. e. idea esse desinit. Similitudo autem inferiorum et superiorum, ἡ τῶν μετεχόντων πρὸς τὰ μετεχόμενα ὄμοιότης, non est aequalitas, neque vero propterea partes duae aequales dici possunt, quod eadem ratione in binas particulias divisae sunt, τῷ τὴν ἀναλογίαν τὴν αὐτὴν πώς εἴναι ἐπ' ἀμφοτέρων. Denique, quod gravissimum est, nihil horum sequentibus convenit. His de caussis Procli iudicium et codicum auctoritatem cum Bekkerio et Schleiermacherio secutus sum. ἀν, quod Astius recepit, ineptum esse appareat.

Pro ἀν' ἵσα, quod Stallbaumio placuit, Platonem, si praeter consuetudinem ea praepositione uti vellet, ἀνὰ ἵσα dictum fuisse arbitror. εἰς ἵσα cum Ang. B. et vulgatis olim libris Stallbaumius scribere debebat.

τὸ τμῆμα] om. Vat. H. τμῆμα Par. AK. sec. Bekk. quod ferri posse videtur. Sed quum in proximis utrumque τμῆμα commemoratum sit, articulum a tot codicibus oblatum tenere malui. Cf. Apol. p. 36. A: ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον θεωράζω ἐκατέρων τῶν ψήφων τὸν γεγονότα ἀριθμόν.

ἀνὰ τὸν αὐτὸν λόγον] His potissimum verbis inductus Stallbaumius ἵσα τμῆμα facienda putavit. „Nec profecto“ inquit „recte subiiceretur ἀνὰ τὸν αὐτὸν λόγον, si universe dictum esset ἄνισα τμῆματα, nec ratio aliqua accuratius definita.“ Contra Schleiermacherus alteram in aequales partes divisionem nimis exquisite ἀνὰ τὸν αὐτὸν λόγον faciendam dici statuit, recte; quamquam id ferendum esset, si accuratior, quam Stallbaumius desiderat, rationis definitio non sequeretur et aequalitas omnino locum haberet.

γένους] γένος Vind. B. Mon. B. Flor. U. Par. K. sec. Bip. Ast. pr. sec.

σαφηνείᾳ καὶ ἀσαφείᾳ] Ita Par. A. Flor. A. Vat. H. (hunc enim per m, pro quo m esse debebat, significatum in Bekkeri commentariis opinor.) σαφήνεια καὶ ἀσαφεία Mon. B. σαφήνεια οὐν ἀσαφεία Bas. b. γρ οὐν (pro καὶ) margo Steph. Idem οὐν super καὶ scriptum est in Lob. qui cum reliquis codicibus editisque ante Bekkerum pro dativis

510 λέγω δὲ τὰς εἰκόνας πρώτον μὲν τὰς σημὰς, ἔπειτα τὰ
ἐν τοῖς ὕδαις φαντάσματα καὶ ἐν τοῖς ὅσα πυκνά τε
καὶ λεῖα καὶ φανὰ ἔννέστηκε, καὶ πᾶν τὸ τοιοῦτον, εἰ
κατανοεῖς. Ἀλλὰ κατανοῶ. Τὸ τοίνυν ἔτερον τίθει ὡς
τοῦτο ἔοικε, τά τε περὶ ἡμᾶς ξῶα καὶ πᾶν τὸ φυτευτὸν
καὶ τὸ σκενευστὸν ὅλον γένος. Τίθημι, ἔφη. Ἡ καὶ

nominativos *σαφῆνεια* et *ἀσάφεια* exhibit, quo modo eadem nomina L. V. pag. 478. C. in nonnullis libris corrupta vidimus. Vitiosam scripturam prava in editionibus sequebatur interpunctio post πρὸς ἀληῆλα, qua sublata Bekkerus omnia sana intellectuque facilia praestitit: per claritatis et obscuritatis inter utraque obtinentem rationem visibile in imagines et in ea, quorum imagines sunt, divisum habebis. Dativus, ut solet, caussam continet. Cf. Bernhardy synt. p. 102. Ficinus ὥσπερ τοινῦν usque ad πρὸς ἀληῆλα ita interpretatus: perinde ac si acceperis lineam in duas aequales sectam portiones et utramque rursus partem simili ratione divisoris, ita nunc oblatum tibi genus unum visibile, intelligibile alterum in duo rursus secundum claritatem et obscuritatem utrumque distingue. sequentibus verbum addere coactus est: in genere quippe visibili portio una imagines continebit. Ceterum in Stallbaumii sec. σαφεῖα pro σαφῆνεια excusum in textu et in annotatione correctoris diligentiam fecellit.

510 σημὰς] σημᾶς Vind. F.

ἐν τοῖς ὕδαις φαντάσματα καὶ] om. Ang. B. Post καὶ editiones ante Bekkerum tacentibus Bip. ἔπειρ addunt, quod in uno Ven. B. repertum quamvis haud inelegans recte Bekkerus omisit. Ficinus utrum legerit, an non, incertum est: deinde simulacra, quae in aquis apparent, et quae in corporibus densis, laevibus, teresis ac lucidis.

Ἀλλὰ] om. Fic.

Τὸ] Καὶ editi ante Bekkerum tacentibus Bip.

τίθει ὡς τοῦτο] τοῦτο, θείω Lob. τοῦτο, θείω Vind. B. Vat. BM. Ficinus pro τίθει comprehendet et tamen pro τίθημι, quod sequitur, sic pono posuit.

πᾶν] Pro eo lacuna est in Vind. E. om. Ficinus et Proclus in Civ. p. 431. verba ὡς τοῦτο ἔοικεν usque ad ὅλον γένος citans.

καὶ τὸ] τὸ om. Lob. Vind. B. Mon. B. Vat. BM. Par. DK. Flor. U.

Ἡ] ἦ Vind. E. ἦ Vind. F.

ἔθελοις] θέλοις Vind. F. Flor. R. θέλεις Ang. B. ἔθέλεις Vind. E. Flor. T.

αὐτὸ] genus hoc Fic. Recte. Est genus visibile, cuius secundum claritatem et obscuritatem facta divisio nunc secundum veritatem eiusque contrarium instituta dicitur. Scilicet claritas sequitur veritatem, quemadmodum L. V. p. 477. A. sqq. demonstratum est, ideoque pari iure ἀληθείᾳ τε καὶ μὴ atque σαφῆνεια καὶ ἀσαφείᾳ divisum illud dici poterat. Ex eadem libri V. disputatione repetitum est, quod Socrates divisionem generis visibilis porro illustratus similem inter duas eius partes atque inter δοξαστὸν et γνωστὸν rationem intercedere docet, qua de re p. 479. D. sermo fuerat. Itaque Glauco sine haesitatione assentitur. Verba autem extrema οὕτω τὸ ὄμοιωθὲν πρὸς τὸ ὡς ἀμούσην perspicuitatis caussa ad explicandum αὐτὸ addita sunt. Alter Schleiermacherus, qui αὐτὸ φάναι die Sache selbst behaupten reddens αὐτὸ illa vi praeditum statuit, quam initio positum vel ante relativum haud raro habet,

ἐθέλοις ἐν αὐτῷ φάναι, ἦν δ' ἔγώ, διηρῆσθαι ἀληθεία τε καὶ μή, ὡς τὸ δοξαστὸν πρὸς τὸ γνωστὸν, οὕτω τὸ ὄμοιωθὲν πρὸς τὸ ὡς ὁμοιώθη; Ἔγωγέ, ἔφη, καὶ μάλα. Β Σκόπει δὴ αὖτις τὴν τοῦ νοητοῦ τομὴν ἥτις τητέον. Πη; Ἡτις τὸ μὲν αὐτοῦ τοῖς τότε τητέοις ὡς εἰκόσι χρωμένη ψυχὴ ζητεῖν ἀναγκάζεται ἐξ ὑποθέσεων οὐκ ἐπ'

(cf. Matthiae gramm. pag. 869.) rem ipsam vero hanc dicit, dass Bild und Ding durch dieselbe Theilungsart entstanden ist, durch welche Denkbare und Sichtbare, eaque sententia ipsam harum divisionum omnium normam et rationem contineri arbitratur.

φάναι] φάναι Vind. E. In Vind. F. ad circumflexum additus est acutus.

ἀληθείᾳ] ἀληθεία Vind. F.

οὕτῳ] οὕτῳ καὶ Flor. T.

ὁμοιώθη] ὁμοιώθη Bas. ab.

Ἐγωγέ] Ἔγωγε Lob. Vind. B.

B δὴ] δὲ Mon. B. Par. K. sec. Bekk. Flor. U. Bas. ab. om. Fic. ἥτις τητέον] ἥτις Vind. F. om. Fic.

Ἡτις] Ἡτις Vind. F. Η Bas. b. Cf. Vol. I. p. 386, a. et L. II. p. 376. B: Άλλὰ μὴν κομψόν γε φαινεται τὸ πάθος αὐτοῦ τῆς φύσεως καὶ ὡς ἀληθῶς φιλόσοφον. Πη δὴ; Ἡτις, ἦν δ' ἔγώ, ὅφειν οὐδενὶ ἄλλῳ φίλην καὶ ἐχθρὰν διαποίει, ἥτις τὴν μὲν παταμαθεῖν, τὴν δὲ ἀγνοῆσαι.

τητέοις] τητέοις Vind. F. μηθεῖσιν Par. A. et Proclus in Civ. p. 432, 2. quod, quium animus mathematicis quaestionibus occupatus non omnibus, quae in genere visibili continentur, sed superiore tantum eius parte seu iis, quorum imaginēs sunt, tamquam imaginib[us] utatur, si τὰ τότε μηθέντα eadem dici possint, quae infra p. 511. A. τὰ ὑπὸ τῶν κατώτω ἀπεικασθέντα dicuntur, vulgariter praeserendum videatur. Iam quod ad formam verbi attinet, a passiva significatione eam non abhorre quin multiplex analogia, de qua cf. Matthiae gramm. p. 931. sq. tum loci L. X. p. 599.

A. et Leg. L. II. p. 668. B. docent, quorum prior τὸ μιμηθησόμενον, posterior etiam τὸ μιμηθὲν item passive dictum exhibet. Quid quod ne potuisse quidem aliter intelligi ex frequenti mediī μιμήσασθαι usu satis probabiliter colligas. Sed ipsum verbum μιμεῖσθαι vereor ut naturalem illam, de qua hic agitur, formarum repetitionem, qualis in umbris et speculis cernitur, significet. Certe neque h. l. alterum eius exemplum exstat, neque L. III. et X. ubi frequentissime usurpat[ur], aliam nisi artificiosam imitationem designat. Accedit quod quae in priore divisione, ἐν τῇ τοῦ ἐλάσσονος διαιρέσει, ut Proclus ait, exemplarium locum ab inferioribus adumbratorum obtinuerunt, non sine obscura et vitiaria brevitate τὰ τότε μηθέντα dici potuisse videntur. Itaque vulgatum retinendum et hoc quidem loco universum genus, in quo illa, quibus animus tamquam imaginibus utatur, comprehensa sint, infra vero illa ipsa accuratius a Socrate definita existimō.

εἰκόσι] post χρωμένη Flor. T.

ζητεῖν] om. Lob. Vind. B.

Vat. BM. Ven. B.

ἐξ ὑποθέσεων] ἔξυπ. Mon. B. Vind. F. ἐξ ὑποθέσεως Vat. B. Ven. B. Flor. TV.

οὐκ ἐπ' ἀρχὴν — ἐξ ὑποθέσεως] om. Vind. B. οὐν ἐπαρχὴν etc. ἐπιτελευτὴν etc. ἔξυποθέσεως Vind. F. — ἐξ ὑποθέσεων Lob. Vat. BM. Ven. B. In Ang. B. ν super σ scriptum. τὸ post ἔτερον, quium in omnibus codicibus exstet, delere ausus non sum, quamquam quomodo explicem non habeo. Nam pro τὴν

ἀρχὴν πορευομένη, ἀλλ' ἐπὶ τελευτὴν, τὸ δ' αὐτὸν τὸ ἐπὶ ἀρχὴν ἀνυπόθετον ἐξ ὑποθέσεως ιοῦσα καὶ ἀνευ ὕν περὶ ἐκεῖνο εἰκόνων αὐτοῖς εἰδεσι δι' αὐτῶν τὴν μέθοδον ποιουμένη. Ταῦτ', ἔφη, ἡ λέγεις, οὐκ ἴκανως Κ ἔμαθον. Ἀλλ' αὐτοῖς, οἵτινες δὲ γάρ τούτων προειρημένων μαθήσῃ. οἷμαι γάρ σε εἰδέναι, ὅτι οἱ περὶ τὰς γεωμετρίας τε καὶ λογισμοὺς καὶ τὰ τοιαῦτα πραγματεύμενοι, ὑποθέμενοι τό τε περιττὸν καὶ τὸ ἄρτιον καὶ τὰ σχήματα καὶ γωνιῶν τριτὰ εἴδη καὶ ἄλλα τούτων ἀδελφὰ καθ' ἐκάστην μέθοδον, ταῦτα μὲν ὡς εἰ-

όδὸν accipere per usum linguae non licet, neque appositionis instar verba τὸ ἐπὶ ἀρχὴν ἀνυπόθετον haberi possunt, quemadmodum Stephanus post ea incidentes fecisse videtur, quum et sententiae et dictionis ἐξ ὑποθέσεως ιοῦσα et oppositorum οὐκ ἐπὶ ἀρχὴν πορευομένη ratio ιοῦσα cum ἐπὶ ἀρχὴν construi iubeat. Cetera vero tam plana et apta sunt, ut gravioris corruptiae aut lacunae suspicio exsistere nequeat, liberiusque, ut interdum facit, versatus esse Ficinus, non aliquid, quod hodie exciderit, legisse censendus sit, quum verba η τὸ μὲν usque ad ιοῦσα sic converterit: *unum quidem ipsius genus est, quod inquirit animus, his utens velut imaginibus, quae prius divisa sunt, compulsus ex suppositionibus non ad principium, sed ad finem procedere. alterum vero, quod ex cogitat animus ex suppositione procedens ad principium non suppositum.* Quo tamen duce, si conjecturae locus detur, leniissima mutatione ὁ πρὸ τὸ scribi et maiori veterum editionum interpunctione post τελευτὴν adhibita τὸ ἐτερον pro nominativo accipi possit. Atque supra p. 501. B. ὁ a plerisque in τὸ corruptum videmus. Quod Hermanno, apud quem olim de hoc loco disputabamus, me articulum delente pro eo scribendum videbatur λόγως, quam conjecturam deinde in praefatione ad Draco-

nem p. XXVIII. proposuit, propterea minus probo, quod in prioris partis descriptione facultas animi, qua eam cognoscamus, non commemoratur, quam si eandem statueret Socrates, ibi potius, quam hic significare debebat, quo facilius ad utramque partem pertinere intelligeretur, sin diversam, nihil causae erat, quin priori aequo ac posteriori suam tribueret. Est vero eadem, nec aliter partes distinguntur, nisi quod alteram imaginum ope ac descendendo, alteram ascendendo et sine imaginibus ratio cognoscatur. Itaque infra p. 511. B. quo loco Hermannus conjecturam suam tueatur, non λόγος simpliciter, sed αὐτὸς ὁ λόγος, *ratio per se ipsa et sola*, hanc partem attingere dicitur. Etiam Astius τὸ εἰδένδυμα putat, et Stallbaumius in sec. uncis inclusit. Ceterum nec scio, an hunc Platonis locum respxerit Aristoteles Eth. Nic. L. I. c. 4. §. 5. Zell. μὴ λανθανέτω δ' ήμας, ὅτι διαφέρουσιν οἱ ἀπὸ τῶν ἀρχῶν λόγοι καὶ οἱ ἐπὶ τὰς ἀρχάς. εν γάρ καὶ Πλάτων ἡ πόρει τοῦτο καὶ ἐξήτει, πότερον ἀπὸ τῶν ἀρχῶν, η ἐπὶ τὰς ἀρχάς ἐστιν η ὁδός. ὥσπερ ἐν τῷ σταδίῳ ἀπὸ τῶν ἀθλοθετῶν ἐπὶ τὸ πέρας, η ἀνάπαλιν. quorum extrema Aristotelis, non Platonicis videntur.

ιοῦσα] ιοῦσι Vind. E. Vat. H. Flor. A.C.
ων περὶ] Ita Par. A. et ante

δότες, ποιησάμενοι ὑποθέσεις αὐτὰ, οὐδένα λόγον οὔτε αὐτοῖς οὔτε ἄλλοις ἔτι ἀξιοῦσι περὶ αὐτῶν διδόναι ὡς παντὶ φανερῶν, ἐκ τούτων δ' ἀρχόμενοι τὰ λοιπὰ ἥδη Δ διεξιόντες τελευτῶσιν ὁμολογούμενως ἐπὶ τοῦτο, οὗ ἂν ἐπὶ σκέψιν ὅρμήσωσιν. Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη, τοῦτό γε οἶδα. Οὐκοῦν καὶ ὅτι τοῖς ὁρμένοις εἰδεσι προσχρῶνται καὶ τοὺς λόγους περὶ αὐτῶν ποιοῦνται οὐ περὶ τούτων διανοούμενοι, ἀλλ' ἐκείνων πέρι, οἷς ταῦτα ἔοικε, τοῦ τετραγώνου αὐτοῦ ἔνεκα τοὺς λόγους ποιούμενοι καὶ διαμέτρου αὐτῆς, ἀλλ' οὐ ταῦτης, ἥν γράφουσι,

corr. Vind. F. ὠνπερ Lob. Vind. BE. Vat. BM. Ven. B. τῶν περὶ Vind. F. e corr. et reliqui cum editis, quod explicationem faciliorem habet. Sed ne illud quidem impeditum aut dubium, quin pro ἄνευ τούτων, αἷς περὶ ἐπει-
ντην μέθοδον ποιεῖται per attractionem poni potuerit. Ficinus: nec imaginibus utens, quibus ad genus alterum uti solemus, sed ipsis speciebus per ipsas progre-
diens.

αὐτοῖς] αὐτῆς, sup. oīs, Par. K.

ποιουμένη] ποιουμένην Lob. Vind. B. Vat. BM.

αὐθις] sc. λεγέσθω vel λέξω, idque cum praemonitione. Astius in sec. εὐθὺς scripsit, in tert. scribendum suspicatus est. Stallbaumius αὐθις cum εἰσαῦθις confundens exemplorum multitudinem inutilium congestis.

C γάρ] om. Vind. E. Flor. ACTV. et Ficinus, qui pro ἀλλ' αὐθις — μαθήσῃ haec habet: *At enim facilius per haec intelliges.*

προειρημένων] προειρημένον Vind. F.

μαθήσῃ] μαθήσει recentiores. γάρ] om. Fic.

τὸ ἀρτιον] τὸ om. Flor. T.

καθ' ἐκάστην] καθεκ. Vind. EF.

οὔτε] οὐδὲ Vind. F. Ang. B.

PLATONIS OP. II.

Flor. R. In Mon. B. τ a m. s. in θ mutatum.

αὐτοῖς] αὐ. Lob. Vind. BEF. Ald. Bas. ab. et a m. pr. Mon. B.

οὔτε] οὐδὲ Vind. F. Ang. B. Flor. R.

ἔτι] ἔτ' Vind. E.

ἀξιοῦσι] ἀξιοῦμεν Lob. Vind. B. Vat. BM.

φανερῶν] φανερόν Lob. Vind. BEF. Ang. B. Vat. HM. Ald. Bas. ab. Ficinus haec inde a ταῦτα μὲν ita convertit: *his positis, tanquam cuilibet manifestis, rationem de his nullam exigendam putant.*

δέ] δὲ Vind. F.

ἥδη] εἰδη Par. K. sec. Bekk. D ὁμολογούμένως] om. Fic. ἐπὶ τοῦτο] ἐπιτ. Vind. F.

ἐπὶ σκέψιν] ἐπίσκεψιν idem et Vind. E.

ὅρμήσωσιν.] ν cum Bekkero (et Astio in tert.) secundum Lob. Vind. BF. adieci.

τοῖς ὁρμένοις] εἰρημένοις Ang. B. τοῖς εἰρημένοις Vind. E. Vat. H. Flor. ACRTV. et margo Par. D. supra dictis Fic.

πέρι] περὶ Vind. BE.

τοὺς λόγους] καὶ τοὺς λ. Vind. F. Flor. AC.

γράφουσι — τε καὶ E.] om. Vind. F. Contra in Vind. E. haec eadem bis deinceps scripta sunt.

Q

E παὶ τὰλλα οὗτως, αὐτὰ μὲν ταῦτα, ἡ πλάττουσί τε παὶ γράφουσιν, ὃν παὶ σκιαὶ παὶ ἐν ὑδασιν εἰκόνες εἰσὶ, τούτοις μὲν ὡς εἰκόσιν αὐτὸν χρώμενοι ξητοῦντές τε αὐτὰ 511 ἐκεῖνα ἰδεῖν, ἡ οὐκ ἀν ἄλλως ἴδοι τις, ἢ τῇ διανοίᾳ. Ἀληθῆ, ἔφη, λέγεις. Τοῦτο τοίνυν νοητὸν μὲν τὸ εἶδος ἔλεγον, ὑποθέσει δ' ἀναγκαζομένην ψυχὴν χρήσθαι

τὰλλα] τὰλλα Mon. B. Vind. B. Steph. τ' ἄλλ' Vind. E. utrobius.

E μὲν] μὲν ἀν Vind. E. utrobius. μὲν οὖν Lob. Vind. B. Vat. BM. Bas. b.

ταῦτα] om. Ang. B. Flor. RT. ὃν] ὃν τὰλλα οὗτως, αὐτὰ μὲν ταῦτα cum linea sub quinque supervacaneis Mon. B.

παὶ σκιαὶ παὶ] παὶ σκιαὶ Vind. E. Vat. H. σκιαὶ παὶ Flor. AC. Corpora et figuræ, quibus mathematici utuntur, et umbras facere et in aquis imagines habere Socrates ideo commemorat, ut ad superiorem generis visibilis partem referenda esse doceat, quam quidem partem in antecedentibus (A.) ita descripserat, ut dubium esse posset, utrum figuræ in ea, an in altera continerentur.

τούτοις μὲν] Lene anacoluthon multoque minus offensionis habens illo, quod Heindorfius huic similimum statuebat, Euthyd. p. 281. D: ἐν οὐφαλεῖο δ', ἔφην, ὡς Κλεινία, κανδυνέει σύμπαντα, ἡ τὸ ποῶτον ἔφαμεν ἀγαθὰ εἶναι, οὐ περὶ τούτον ὁ λόγος αὐτοῖς εἶναι, δπως αὐτά γε παῖς αὐτὰ πέφυκεν ἀγαθὰ εἶναι, ἀλλ', ὡς ξοκεν, ὥδ' ἔχει. Cf. potius Leg. L. XII. p. 949. A: παὶ ποιῆην αὐτὸν χρῶν (δρᾶν δεῖ τὸ τοιούτον) παὶ πάσης μουσικῆς — βραβέας παὶ ἀπάντων, δπόσα μη φέρῃ πέρδος πατὰ τὴν ἀνθρωπίνην δόξεν τῷ ἐπιορκοῦντι· τῶν δὲ δπόσα ἔξαρηνθέντι παὶ ἔξομοσαμένωνέρδος μέγα φανερόν εἶναι δονεῖ, ταῦτα δὲ διὰ δικῶν ὅρκων χωρὶς ποίνεσθαι ἔνμπαντας τοὺς ἐπικαλοῦντας ἐλλήλοις.

εἰκόσιν αὐτὸν εἰκόσι Vind. F.

Ven. B. Ang. B. Flor. R. Ea, quorum imagines sunt, nunc mutata vice ipsa imaginum instar habentur. Etiam Ficinus αὐτὸν omisit.

ξητοῦντές τε] ξητοῦντες δὲ Vind. F. Ang. B. Flor. R. Ast. sec. tert. Stallb. ξητοῦντες Ven. B. affectantes Fic., „Quum praecedat τούτοις μὲν χρώμενοι, non dubito quin sequi debeat ξητοῦντες δέ.“ Stephanus p. 24. Immo quum praecedat αὐτὰ μὲν ταῦτα. Nam ipsa illa, quae fingunt ac describunt, dicens Socrates de aliis ab his diversis cogitabat, quae illorum ope quaerenda oppositus erat, et huiusmodi sere orationem parabat: αὐτὰ μὲν ταῦτα, ἡ πλάττουσί τε παὶ γράφουσιν, εἰσορῶντες, ἐπεῖνα δὲ ἰδεῖν ξητοῦντες, ἡ etc. Sed imaginum, quas eadem illa habent, mentione interiecta factum est, ut ipsa pro imaginibus esse, quam inspici dicere mallet, ideoque mutato per anacoluthon casu particulam μὲν perspicuitatis gratia ex priori orationis forma repetens illud, quod per δὲ oppositus fuerat, quoniam aliud in verbis ὡς εἰκόσιν αὐτὸν χρώμενοι opposuit, huic per τε iungit, hoc sensu: ipsa quidem haec, quae fingunt ac describunt, quorum et umbrae et in aquis imagines sunt, (contemplantes, sed) his quidem imaginum vice utentes et ipsa illa intueri conantes, quae etc. Itaque τε retinui. „Non recte autem dixeris, respondere sibi μέν et τέ, sed est hoc ἀναπόλουθον.“ Hermannus ad locum Sophoclis Ant. 1148. hactenus nostro similem.

αὐτὸν εἰκόσι Vind. F.

περὶ τὴν ξήτησιν αὐτοῦ, οὐκ ἐπ' ἀρχὴν λοῦσαν, ὡς οὐ δυναμένην τῶν ὑποθέσεων ἀνωτέρω ἐκβαίνειν, εἰκόνι δὲ χρωμένην αὐτοῖς τοῖς ὑπὸ τῶν κάτω ἀπεικασθεῖσι καὶ ἐκείνοις πρὸς ἐκεῖνα ὡς ἐναργέσι δεδοξασμένοις τε καὶ τετμημένοις. Μανθάνω, ἔφη, ὅτι τὸ ὑπὸ ταῖς γεω-
μετρίαις τε καὶ ταῖς ταύτης ἀδελφαῖς τέχναις λέγεις.

- ἄλλως] ἄλλος Lob.
 τις] τις ἂν Vind. E.
 511 τοίνυν] om. Fic.
 νοητὸν] Ita Par. A. Vind. E.F.
 Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor.
 ACRTV. et Schleiermacherio prae-
 eunte Stallbaumius in sec. νοη-
 τοῦ reliqui codices editique et
 Ficinus, qui generis intelligibilis
 habet. Poterat id ferri, etiam si
 ἐν, quod Astius et Schleierma-
 cherus desiderabant, non adesset.
 Nam quod νοητὸν εἶδος est, id
 haud dubie et ipsum est νοητόν.
 Sed νοητὸν quum perspicuitate
 sua, tum codicum auctoritate
 praestat.

- δὲ] δὲ Vind. F.
 ψυχὴν — δυναμένην] om. Vind.
 E.

- οὖν] οὖν ἂν Vat. H. Flor. AC.
 Hos Stallbaumius in pr. οὖν ἂν
 ἐπ' ἀρχὴν ἐπούσαν exhibere osten-
 dit, quorum extremum hypothetae
 errore natum videtur.

- ἐπ' ἀρχὴν] ἐπαρχὴν Vind. F.
 ὑπὸ] Id Mon. B. a m. pr. in
 textū habet, sed a m. s. linea
 notatum et in m. ἐπὶ scriptum
 est.

- τε καὶ τετμημένοις] om. Ang.
 B. τε καὶ τετμημένοις Vind. BEF.
 Vat. HM. Flor. AC. et correctus,
 ut videtur, Par. A. Recepit Bek-
 kerus, Astius in tert. et quamvis
 de obscuritate huius loci querens
 Stallbaumius. Mihi quid videatur,
 ad p. 510. B. significavi. Scili-
 cet τὰ πάτω ea sunt, quae infe-
 rior generis visibilis pars conti-
 net, h. e. imagines; contra τὰ
 ὑπὸ τῶν πάτω ἀπεικασθέντα ea,
 quorum similitudinem inferiora
 referunt, τὰ τε περὶ ἡμᾶς ἔως
 et reliqua, quibus superiorem
 eiusdem generis partem constare

pag. 510. A. demonstratum est.
 Quae quum comparata cum infe-
 rioribus pro veris habeantur eu-
 nique locum per divisionem secun-
 dum veritatem et eius contrarium
 factam acceperint, πρὸς ἐκεῖνα
 (τὰ πάτω) ὡς ἐναργῆ δεδοξασμέ-
 να τε καὶ τετμημένα dicuntur.
 Atque haec illa sunt, quibus ani-
 mus inferiorem generis intelligi-
 bilis partem investigans tamquam
 imaginibus utitur, quemadmodum
 p. 510. E. expositum est. Itaque
 vulgata lectio nullam offensionem
 habet, interpres autem mirum
 in modum a sensu aberrarunt.
 Ficinus: utaturque imaginibus his,
 quae ex inferioribus sunt ad su-
 periorum similitudinem compara-
 tae atque ita opinione conceptae
 distinctaeque sunt, quasi ad illa
 perspicue conferant. Astius: sed
 imaginibus utens ipsis illis ad
 rerum inferiorum similitudinem
 descriptis, quae ad illas pro evi-
 dentibus haberentur magnique
 aestimarentur. Schleiermacherus:
 so dass sie sich dessen als Bilder
 bedient, was von den unteren
 Dingen dargestellt wird, und
 zwar derer, die im Vergleich
 mit den andern als hell und klar
 verherrlicht und in Ehren gehal-
 ten werden. cui interpretationi
 hanc explicationem adiecit: Den
 letzten etwas schwierigen Satz,
 und zwar derer etc. kann
 ich nur von dem Vorzug der re-
 gelmässigen Gestalten vor den
 übrigen verstehen, wiewol nicht
 alles rein heraus kommt, weshalb
 die Uebersezung auch nicht ge-
 nau ausfallen konnte. Leider bie-
 tet der Bekkersche Apparat keine
 Hilfe dar. Denique Stallbaumius:
 sed imaginibus utatur ipsis ipsis

Tò τοίνυν ἔτερον μάνθανε τμῆμα τοῦ νοητοῦ λέγοντά
με τοῦτο, οὐ ἀύτὸς ὁ λόγος ἀπτεται τῇ τοῦ διαλέγεσθαι
δυνάμει, τὰς ὑποθέσεις ποιούμενος οὐκ ἀρχὰς, ἀλλὰ
τῷ ὅντι ὑποθέσεις, οἶνον ἐπιβάσεις τε καὶ ὄρμὰς, ἵνα
μέχοι τοῦ ἀνυποθέτου ἐπὶ τὴν τοῦ παντὸς ἀρχὴν ἵων,⁴⁸⁰
ἀψάμενος αὐτῆς, πάλιν αὖ ἐχόμενος τῶν ἐκείνης ἐχομέ-
νων, οὕτως ἐπὶ τελευτὴν καταβαίνη αἰσθητῷ παντάπα-
C σιν οὐδενὶ προσχρώμενος, ἀλλ᾽ εἰδεσιν αὐτοῖς δι᾽ αὐτῶν
εἰς αὐτὰ, καὶ τελευτῇ εἰς εἰδη. Μανθάνω, ἔφη, ἵνανῶς
μὲν οὗ· δοκεῖς γάρ μοι συχνὸν ἔργον λέγειν· ὅτι μέντοι
βούλει διορίζειν σαφέστερον εἶναι τὸ ὑπὸ τῆς τοῦ δια-

rebus, quae a rebus inferis (sub sensus cadentibus) effectae ad illarumque similitudinem expressae sunt, et quidem illis, quae ad alias comparatae pro evidentibus habentur et magni aestimantur.

B *[γεωμετρίαις] γεωμετρικαῖς* Vind. F.

τε] om. Ven. B.

ταύτης] *ταύταις* Lob. Vat. B. et, sup. ης, Ven. B. editiones omnes, tacentibus Bip. Ego a tot libris et ab optimo exhibitum singularem praferre non dubitavi. Nam quod Stallbaumius in pr. (in sec. tacet) „ita etiam antea ἐν γεωμετρίᾳ scribi debuisse“ autumat, nihil obstat videtur, quo minus affinium illarum, quae proprie γεωμετρίαι dicuntur, disciplinarum complexus pro una arte ponatur. Tum vero ipsa numeri diversitas mirum non est si librariis offensioni fuit. Accedit quod ad *ταύταις* parum grata ambiguitate nescias, utrum γεωμετρίαι, an *τέχναις* supplementum sit.

τοίνυν] om. Fic.

λέγοντά με] *λέγοντα μετὰ* Vind. F. Flor. R. ἄλλως λέγοντά με Ang. B.

αὐτὸς ὁ] ὁ αὐτὸς Vind. B.

τῇ τοῦ] *τῇ* om. Par. K. sec. Bekk.

τῷ ὅντι — ἐπιβάσεις] *τωόντι — ὑποβάσεις* Vind. E. Proclus in Civ. p. 429: λέγει δὲ οὐτωσὶ

περὶ τούτων ἡν ἔχει διάνοιαν ἐπιδιάσιων, ὡς αἱ μὲν ἄλλαι ἐπιστῆμαι δοκοῦσαι εἶναι ποιοῦνται τὰς ἀρχὰς ὑποθέσεις, μόνη δὲ διαλεκτικὴ ἐπὶ αὐτὴν ὄρμωμένη τὴν ἀρχὴν ἀναιρεῖ τὰς ὑποθέσεις, ὡς ἂν εὐρη τὴν μὲν ὅντως οὖσαν ἀρχὴν ὡς ὑπόθεσιν, ἀλλ᾽ ὅντως ἀνυπόθετον. Idem in Parmen. T. V. p. 323: καὶ ὅτι διὰ τῆς ὑποθέσεως ταύτης ἴνεισιν ἐπὶ αὐτὸ τὸ ἐν, ὅπερ αὐτὸς ἀνυπόθετον ἐν Πολιτείᾳ προσονομάζει.

αὐ] om. Vind. F. Ang. B. Flor. R.

ἐκείνης] *ἐκείνοις* Vind. F. Vat. H.

οὕτως ἐπὶ τελευτὴν] οὕτω ἐπιτελευτὴν Vind. E.

καταβαίνη] *καταβαίνοι* Lob. Vind. B. Ven. B. Vat. M. καταβαίνει Vind. EF.

C *ἵνανῶς μὲν οὗ·]* *quanquam minime sufficienter, ut cuperem* Fic. *ἵνανῶς μὲν οὖν* Lob. Vind. BEF. Par. K. sec. Bekk. et a m. pr. D. Vat. HM. Flor. ACV.

F. qui ante *ἵνανῶς* mutatae personae indicium et ante haec nullam interpunctionem habet. Astius in tert. et Stallbaumius verbis *δοκεῖς — λέγειν* parentheseos signa addunt.

M. *διορίζειν]* *λέγειν* Vind. B. Vat. M.

ἢ τὸ] *ἢ τῷ* Vat. H. Flor. AC.

λέγεσθαι ἐπιστήμης τοῦ ὄντος τε καὶ νοητοῦ θεωρούμενου, ἢ τὸ ὑπὸ τῶν τεχνῶν παλούμενων, αἷς αἱ ὑποθέσεις ἀρχαὶ καὶ διανοίᾳ μὲν ἀναγκάζονται, ἀλλὰ μὴ αἰσθήσεσιν, αὐτὰρ θεᾶσθαι οἱ θεώμενοι, διὰ δὲ τὸ μὴ ἐπ' D ἀρχὴν ἀνελθόντες σκοπεῖν, ἀλλ' ἐξ ὑποθέσεων, νοῦν οὐκ ἵσχειν περὶ αὐτὰ δοκοῦσί τοι, καίτοι νοητῶν ὄντων μετὰ ἀρχῆς. διάνοιαν δὲ καλεῖν μοι δοκεῖς τὴν τῶν γεωμετρικῶν τε καὶ τὴν τῶν τοιούτων ἔξιν, ἀλλ' οὐ νοῦν, ὡς μεταξύ τι δόξης τε καὶ νοῦ τὴν διάνοιαν οὖσαν. Ἰκανώτατα, ἢν δ' ἐγὼ, ἀπεδέξω. καὶ μοι ἐπὶ τοῖς τέτταρσι τμήμασι τέτταρα ταῦτα παθήματα ἐν τῇ ψυχῇ

παλούμενων] παλούμενω Vat.
H. τι παλούμενων Ven. B. Vind.
F. τι παλούμενον Vind. E. τι πα-
λούμενῳ Flor. AC.

αἷς αἱ] οἵς Ven. B.

διανοίᾳ] διανοίαι, a m. s.
διάνοιαι, Vind. F.

αἰσθήσεσιν] αἰσθῆσει Vind. E.
Ang. B. αἰσθῆσιν Vat. H.

οἱ θεώμενοι] οἰόμενοι Mon. B.
a m. pr.

D ἀνελθόντες] Ita Par. A. Lob.
Vind. BEF. Vat. BM. Ven. B.
Ang. B. Flor. ACTV. ἀνελθὸν
Mon. B. ἀνελθόντας reliqui cum
editis. Nominativum sequens δο-
νοῦσι tuetur.

μετὰ] μετ' Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

καλεῖν μοι δοκεῖς] καλή μοι
δοκεῖς Vat. H. δοκεῖς μοι καλεῖν
Par. K. Ast. tert.

καὶ τὴν] τὴν om. Lob. Vind.
B. Vat. BM. Par. K.

οὐ νοῦν] Ita Par. AD. Vind.
E. Ang. B. Flor. ACRTV. οὐ
νῦν Vind. F. Vat. H. οὐν
reliqui editique ante Bekkerum. Veram
lectionem secutus est Ficinus in
genere τῶν γεωμετρικῶν falsus:
videlicet autem mihi geometricarum
et similiūm rerum habitum cogita-
tionem potius appellare quam
intellectum.

τι] πον Vind. B. om. Vind. E.

οὐσαν] λοῦσαν Par. K. καλ-
λιον. οὐσαν idem in margine sec.
Bekk. (sec. Bip. nil nisi οὐσαν.)

Ικανώτατα] Ικανότατα Bas.
ab.

ἀπεδέξω] ἀπεδείξω Vind. B.
Vat. M. Par. K. sec. Bekk. et
ante corr. Lob.

τέτταρσι] τέσσαρσι Lob. Vind.
B. Mon. B. Flor. U. Neque
abest suspicio, quin idem in aliis
Bekkeri codicibus exstet, quorum
tam immemor fuerit, quam fuit
Vind. et Mon. Ceterum vulga-
tam non solum sequens τέτταρα,
verum constans, ut videtur, scrip-
toris usus flagitat. Cf. L. V.
p. 460. E. VIII. 544. E. Phae-
don. 104. B. Phileb. 23. E. Tim.
44. E. quibus locis pro τεττ.
quod in editionibus erat, nunc
secundum codices τεττ. legitur.
Nam de Par. A. quem Bekkerus
Timaei loco inter Atticae formae
assertores non magis, quam Mon.
B. qui eandem exhibet, nominavit,
Vind. CCCXXXVII. in quo
item exstat, vix dubitare sinit.
Praeterea σσ oppido raro in
codicibus singularibus binisve appa-
ret, ut L. III. pag. 400. A. in
Amb. C. Flor. T. V. 449. A. in
Par. D. Flor. T. Parmen. 127. B.
in Clark. (τεσσαράκοντα) Menon.
91. E. in Vat. A. (idem) Tim.
56. E. in Lob. Par. Y. (τέσσαρες
pro δύο) Ib. 60. A. in Par. S.
Leg. VI. 759. E. in Ang. B.
L. XII. p. 963. C. in Pal. C.
Flor. M.

τμήμασι] τιμήμασι Vind. E.

Ε γυγνόμενα λαβὲ, νόησιν μὲν ἐπὶ τῷ ἀνωτάτῳ, διάνοιαν δὲ ἐπὶ τῷ δευτέρῳ, τῷ τρίτῳ δὲ πίστιν ἀπόδος καὶ τῷ τελευταῖς εἰκασίαιν, καὶ τάξον αὐτὰ ἀνὰ λόγου, ὡσπερ ἐφ' οἷς ἔστιν ἀληθείας μετέχειν, οὕτω ταῦτα σεφηνείας

λαβὲ] λάβε codices mei et editiones ante Bekkerum. V. Vol. I. p. 389, b. — Proclus in Alcib. T. II. p. 57. Cous. (p. 21. Creuz.) ἀλλ' ὥσπερ αὐτὸς ὁ Σωκράτης ἐν Πολιτείᾳ διέφρινε, τῇ μὲν ἀπλῆ καὶ μονοειδεῖ καὶ νοερᾷ γνώσει τὰ νοητὰ πάντα συζύγως θεωρεῖν, τῇ δὲ ἐπιστημονικῇ καὶ διανοητικῇ τῶν εἰδῶν ἀνελίξει καὶ συνθέσει τοὺς μέσους τῶν δύντων λόγους ἐπισποπεῖσθαι, τοτῇ δὲ ἀπὸ τῆς ἀληθείας τῇ αἰσθήσει δι' ὄργάνων ἐφαπτομένῃ τῶν οἰκείων γνωστῶν τὰ αἰσθητὰ πάντα διαυρίνειν δεόντως, τῇ δὲ εἰναστικῇ τὸ λοιπὸν δυνάμει τὰ εἰναστὰ τῶν αἰσθητῶν εἰδῶλα τυγχάνοντα γιγνώσκειν. Idem in Civ. pag. 429: σαφέστατα τοῦ Πλάτωνος ἐπιστήμην μὲν ἐπὶ τοῦ δύντος τάττοντος, πίστιν δὲ ἐπὶ τῷ δοκοῦντι πως εἶναι καὶ αἰσθητῷ, διάνοιαν δὲ ἐπὶ τοῖς διανοητοῖς καὶ εἰναστοῖς εἰπε τὴν ἐνέργειαν, ὡς διάνοιαν τὴν τῶν μέσων γνῶσιν νοητῶν καὶ δοξαστῶν. Cf. ib. p. 105, 21. et in Civ. p. 431, 2.

ἀνωτάτῳ] ἀνωτάτῳ Vind. E. ἀνωτάται Lob. Erant enim qui hacc adverbia cum i scriberent, ut ex Etymologicō collegit Fischersus anim. ad Well. II. p. 114. Hinc non solum ἐγγντέρῳ L. I. p. 330. E. in Ald. Bas. ab. sed etiam ἐγγντάται et περαπέραι Soph. p. 265. A. et Ale. II. 149. B. in Clarkiano codice scriptum est. Quamquam nostro loco etiam ipse dativus videri potuit librario

sequioris aevi usum ad Platonem transferenti. Cf. Buttmanni gramm. I. p. 277. II. p. 411. Sic τοῦ ἀνωτάτου δέρος Defin. p. 411. C. legitur, quod Bekkerus secundum unum Ven. D. in ἀνωτάτῳ inutandum putavit. Quod in Stallbaumii sec. hic item extat ἀνωτάτῳ, id ipso tacente hypothetae culpae tribuendum videtur.

δὲ] δ'. Vind. F. Ang. B. E
τῷ τρίτῳ] τῷ om. Mon. B.
Par. DK. Flor. U.

τάξιν] τάξιν Vind. EF.

ἀνὰ λόγον] ἀνάλογον codices mei et editiones ante Astii sec.

ἐφ' οἷς] ἐφοις Vind. F.
ἔστιν] ἔστιν Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius. Conf. L. VII. p. 534. A: τὴν δ' ἐφ' οἷς ταῦτα ἀναλογιαν, ubi ἔστιν omissum est.

ἀληθείας] ἀληθεία Vind. E.
μετέχειν,] Ita cum reliquis codicibus Mon. B. sed subscriptis extremae litterae punctis duobus, quae Bekkeri aciem effugerunt, quibus librarius μετέχει scribendum esse demonstrabat; idque magnopere vellem in bono aliquo libro repertum. Nam qua ratione quatuor illae rerum species, ad quas animi affectiones quatuor modo dictae pertinent, veritatis participes essent, Socrates pro certo et ex superioribus iam satis cognito ponere, non Glauconi existimandum relinquere debebat, quemadmodum secundum vulgatam lectionem facere videtur, si quidem ad μετέχειν ex sequentibus supplendum est γγῆ. Atque hacc ipsa supplementi ex sequentibus petendi necessitas normihil offensionis habet, quum fere in antecedentibus verbum finitum relativō necessarium inesse soleat. Sic Phaedon. p. 72. A: τούτον δὲ δύντος ἵκανόν πον ἐδόκει τε-

ἥγησάμενος μετέχειν. Μανθάνω, ἔφη, καὶ ξυγχωρῶ καὶ τάττω ὡς λέγεις.

ημήριον εἶναι, ὅτι ἀναγκαῖον τὰς τῶν τεθνεώτων ψυχὰς εἶναι που, ὅθεν δὴ πάλιν γίγνεσθαι. scil. ἔφαμεν, quod latet in ἐδόκει. Leg. L. III. p. 677. A: Ἄρ' οὖν ὑμῖν οἱ παλαιοὶ λόγοι ἀληθειαν ἔχειν τινὰ δοκοῦσιν; Κλ. Ποιοι δὴ; Άθ. Τὸ πολλὰς ἀνθρώπων φύσιοράς γεγονέναι καταπλυσμοῖς τε καὶ νόσοις καὶ ἄλλοις πολλοῖς, ἐν οἷς βραχὺ τι τῶν ἀνθρώπων λείπεσθαι γένος. sc. φασὶν οἱ λόγοι. Phileb. p. 15. B: πρῶτον μὲν εἰ τινας δεῖ τοιαύτας εἶναι μονάδας ὑπολαμβάνειν ἀληθῶς οὔσας· εἶτα πῶς αὐτὸν ταῦτας, μίαν ἐνάστην οὖσαν ἀεὶ τὴν αὐτὴν καὶ μῆτε γένεσιν μῆτε ὄλεθρον προσδεχομένην, ὅμως εἶναι βεβαιότατα μίαν ταῦτην. sc.

ὑπολαμβάνειν δεῖ. Denique si μετέχειν ad sequentia referri vellet scriptor, quidni omitteret potius et genitivi ἀληθείας prorsus eandem, quam σωφρηνείας conditionem faceret? Itaque si tamen scripsit μετέχειν, non ἥγη, sed οἴσθα vel ἥγονύμεθα in mente habuisse idque ob similitudinem eius, quod additurus erat, omisisse videtur. Sed multo probabilius est μετέχει.

ξυγχωρῶ] συγ. Vind. F. Idem post λέγεις initium sequentis libri μεταταῦτα δὴ εἰπον ἀπείκασον: additum habet.

Τέλος τοῦ πολιτειῶν (πλιπειῶν Ald.) ἢ περὶ δικαίου ἔπον λόγον. Ald. Bas. ab.

ΛΟΓΟΣ ΕΒΔΟΜΟΣ.

514 *Μετὰ ταῦτα δὴ, εἶπον, ἀπεικασον τοιούτῳ πάθει τὴν ἡμετέραν φύσιν παιδείας τε πέρι καὶ ἀπαιδευσίας· οὐδὲ γὰρ ἀνθρώπους οἶν ἐν παταγείῳ οἰκήσει σπηλαιώδει*

πλάτωνος πολιτειῶν, .ξ.

Lob. *πολιτειῶν λόγος ἔβδομος*
Vind. B. ξ. Vind. E. *πλάτωνος πολιτειῶν ἔβδομη* Mon. BC. Flor.
U. *πλάτωνος πολιτεῖαι ἢ περὶ δικαίου ἔβδομη* Flor. V. *πλάτωνος πολιτειῶν ἢ περὶ δικαίου λόγος ἔβδομος* Flor. AC. Ald.
Bas. ab. (hae maiusculis litteris)
ΠΟΛΙΤΕΙΩΝ ΔΙΑΛΟΓΟΣ ἔβδομος Steph. Z. Bekkerus et Stallb. pr.

514 *Μετὰ ταῦτα — ἢ δημοσίᾳ.*

517. C.] excerpst Iamblichus *Προτρεπτ.* cap. 15. p. 228. sqq. ed. Kiesslingii a. 1813. p. 92. sqq. ed. pr. Arcerii a. 1598. Eadem paucis complexus est Alcinous isag. c. 27. p. 114: ὡμοιῶσθαι γὰρ τὸν ἄφεντας τοῖς ὑπὸ γῆν ἀνθρώποις πατωνισμένοις καὶ φῶς μὲν μηδέποτε λαμπρὸν ἐωρακόσιν, ἀμυδρὰς δέ τινας σιαὶς δρῶσι τῶν παρ' ἡμῖν σωμάτων, οἷομένοις δὲ σαφῶς ἀντιλαμβάνεσθαι τῶν ὅντων. ὡς γὰρ τούτους τυχόντας τῆς ἐν τῷ ζόφον ἀνόδου καὶ εἰς τὸ παθαρὸν φῶς προελθόντας εὐλόγως παταγγώσεσθαι τῶν τότε φανέντων καὶ πολὺ πρόσθεν ἐεντῶν ὡς ἔξηπατημένων, οὕτω δὲ καὶ τὸν ἄπο βιωτικοῦ ζόφον μεταβαίνοντας ἐπὶ τὰ πατέλητειαν θεῖα καὶ καλὰ τῶν μὲν πάλαι θαυμασθέντων αὐτοῖς παταφρονήσειν, τῆς δὲ τούτων θεωρίας σφροδροτέραν ἔξειν ὄρεξιν. — In codice Iamblichi Cizensi, quem Kiesslingius

contulit, initio μεταῦτα, in Lob. Vind. E. Mon. B. Ald. μετα ταῦτα scriptum est.

εἶπον] ἔγὼ addit Mon. C.

ἀπεικασον] ἀπεικάσαι δεῖ Iamblich. Proclus in Civ. p. 432: ἐν προοιμίοις τοῦ ἔβδομου σπόπει τὶ φησιν ἀπεικασιν (scripserrat φησιν. ἀπεικασον) τὴν ἡμετέραν φύσιν, αὐτὴν δήπον τὴν ἀνθρωπίνην ζωὴν, οὐ καθ' ὅσον ἔστιν οὐδία καὶ δύναμιν ἔλασης τοιάνδε ἢ τοιάν, ἀλλὰ παιδείας τε πέρι καὶ ἀπαιδευσίας.

τοιούτῳ] τοιῶδε Mon. B. Flor. U.

πέρι καὶ ἀπαιδευσίας] περὶ καὶ ἀπειδευσίας Vind. E.

ἴδε] Ita Par. A. scholiastes ad h. l. et Porphyrius de antro Nymphaeum pag. 255. ed. Cantabrig. a. 1655. haec usque ad τὸ σπηλαιον laudans. Nec aliter Proclus l. c. ubi haec ita leguntur: εἰ δὲ γὰρ ἀνθρώπους ἐν παταγείῳ σπηλαιῷ διοικήσει. Reliqui codices cum Iamblico editisque ante Astii sec. ίδε. Cf. Thomas Mag. pag. 468. et quae Vol. I. p. 389, b. dicta sunt.

παταγείῳ] παταγείῳ Mon. C. παταγωγείῳ Iamblichei cod. Ciz. παταγείᾳ Flor. T. a m. s. Phrynicus Bekkeri anecd. p. 47, 14: πατάγειον. οὐχὶ πατάγαιον διὰ τῆς αἱ διφθόγγου. Infra p. 532. B. παταγείον sine discrepantia legitur.

οἰκήσει] οἰκείσει Ald. Bas. a. ἀντρῷ καὶ οἰκήσει Porph.

ἀναπεπταμένην πρὸς τὸ φῶς τὴν εἴσοδον ἔχουσῃ μα-
νιὰν παρ' ἄπαν τὸ σπήλαιον, ἐν ταύτῃ ἐκ παίδων ὅν-
τας ἐν δεσμοῖς καὶ τὰ σκέλη καὶ τοὺς αὐχένας, ὥστε
μένειν τε αὐτοὺς εἰς τε τὸ πρόσθεν μόνον ὁρᾶν, κύκλῳ Β
δὲ τὰς κεφαλὰς ὑπὸ τοῦ δεσμοῦ ἀδυνάτους περιάγειν,
φῶς δὲ αὐτοῖς πυρὸς ἀνωθεν καὶ πόρφυραθεν καόμενον
ὅπισθεν αὐτῶν, μεταξὺ δὲ τοῦ πυρὸς καὶ τῶν δεσμω-
τῶν ἐπάνω ὁδὸν, παρ' ἧν ἵδε τειχίον παρωκοδομημέ-

ἀναπεπταμένην] ἀναπεπτα-
μένη Vind. E. Vat. H. Flor. A.C.
Iamblichi cod. Ciz.

παρ' ἄπαν] παρὰ πᾶν Iam-
blichi cod. Ciz. et ed. Kiessl.
παράπαν Vind. EF. Mon. C.

τὸ σπήλαιον] τοῦ σπηλαίου
Vind. E. Flor. RT. In editioni-
bus ante Bekkerum h. l. et in
sequentibus post περιάγειν et
post αὐτῶν maior interpunctio
est.

σκέλη] σκέλη Iambl. cod. Ciz.
μένειν τε] τε om. Bas. b.

εἰς τέ] εἰς Lob. Vat. M. et a.
m. pr. B. καὶ εἰς Mon. B. Flor.
U. Par. DK. sec. Bekk. et a m.
s. Vat. B. καὶ εἰς τε Par. K. sec.
Bip.

B πρόσθεν] πρόσθε Iambl. cod.
Ciz. Conf. Vol. I. pag. 125, a.
vers. 12.

μόνον] om. Vat. M.

κύκλῳ δὲ] κύκλῳ μὲν Iambli-
chi codex Parisiensis a Kiesslin-
gio adhibitus. Stallbaumius in
sec. verba κύκλῳ δὲ usque ad
περιάγειν praecedentibus ὥστε
— ὁρᾶν anteponenda fuisse au-
tumat haeretque in eo, quod in-
feruntur demum post illa εἰς τὸ
πρόσθεν μόνον ὁρᾶν. Scilicet
qui cervices vinculo adstrictas
habet ita, ut nihil nisi anteriora
videat, ei facultatem capitum in
orbem circumagendi deesse facile
intelligitur. Nihilo minus quam ad
conditionem istorum describendam
pertineret maxime, anteaque vi-
dere tantum, non etiam posse
nihil nisi anteriora videre dicti
essent, expressis verbis addi et
tamquam alterum in istis consi-

derandum proponi sine tautologia
poterat. Esse autem hoc alterum
idque ab ἵδε pendens, non ab
ἄστε, particula δὲ et adiectivum
ἀδυνάτους arguunt, quorum ne-
que Astius in interpretatione (*ca-
put vero propter vincula nequeant
circumferre*) neque Stephanus mi-
nore post ὁρᾶν, quam post σπή-
λαιον et post περιάγειν inter-
punctione usus rationem habuit.

ἀδυνάτους] ἀδυνάτον Iambl.
cod. Ciz.

πυρὸς] om. Vind. E. Schleier-
machero accusativum desideranti
φῶς παόμενον minus placuisse
videtur, et solet φῶς fere ἀπό-
μενον, πῦρ vero παόμενον dici.
Sed quemadmodum λύχνος et δῆς,
de quibus cf. Stephani thesaurus
T. II. p. 174. F. H. haud secus
φῶς praesertim ab igne profi-
ciscens πάσσθαι dici potuit. Et
τὸ τοῦ πυρὸς φῶς infra redit
p. 517. B.

παόμενον] παόμενον Lob. ante
corr. Vind. EF. Flor. ACR.
Iambl. ed. pr. Bas. ab.

μεταξὺ] Proclus l. c. μεταξὺ
γοῦν φῆσι τῶν τε δεσμωτῶν δεῖν
νοεῖν ἡμᾶς καὶ τοῦ πυρὸς ἐπά-
νω ὁδὸν.

δεσμωτῶν] δεσμωτῶν Mon. C.
Iambl. ed. pr. Ald. Bas. ab.

ἢν ἵδε] ἢνιδε Vind. F. ἢ ἢν
ἵδειν Lob. Mon. B. Vat. M. Flor.
U. Par. K. sec. Bip. ἢν ἵδειν
Vat. B. Par. DK. sec. Bekk. ἢν
εἶναι Iambl. codd. Ciz. et Par.
et ed. Kiessl. ἢν ἵδε Mon. C.
Vind. BE. cum Iambl. ed. pr. et
editis ante Astii sec. secus quam
paries sit constructus exiguis Fi-

νον, ὡσπερ τοῖς θαυματοποιοῖς πρὸ τῶν ἀνθρώπων πρόκειται τὰ παραφράγματα, ὑπὲρ ᾧν τὰ θαύματα δειπνύσσιν. Ὁρῶ, ἔφη. Ὅρα τοίνυν παρὰ τοῦτο τὸ τειχίου φέροντας ἀνθρώπους σκεύη τε παντοδαπὰ ὑπερέχοντα 515 τοῦ τειχίου καὶ ἀνδριάντας καὶ ἄλλα ζῶα λίθινά τε καὶ ξύλινα καὶ παντοῖα εἰργασμένα, οἷον εἶκός, τοὺς μὲν φυτεγγομένους, τοὺς δὲ σιγῶντας τῶν παραφερόντων. Ἀτοπον, ἔφη, λέγεις εἰκόνα καὶ δεσμώτας ἀτόπους.

cinus; qui in hoc libro interpre-
tando multo liberius, quam in
prioribus versatus parcus deinceps a nobis commemorabitur.

[τειχίου] τοιχίου Mon. B. Flor. U.

[παραφράγματος] φράγματος Iambl.

[πρὸ] πρὸς Bas. b.

[παραφράγματα] παραφράγματα Vind. B. Mon. C.

[θαύματα] Timaeus lex. p. 140: θαύματα νευροσπάσματα. quod docte et copiose illustravit Ruhnkenius.

[δειννύσιν] Ita Par. A. Vind. B. Mon. C. Flor. ACV. δειννύσιν Lob. Vind. E. Ven. B. Vat. HM. Iambl. cod. Ciz. ed. Kiessl. δειννύσιν Iambl. cod. Paris. Bas. b. δειννύσιν Vind. F. δειννύσιν reliqui libri, Iamblich. ed. pr. Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr. sec. Terminationem in νασι, quae Thoma Mag. (in ζευγνύσι) iudice pulchrior, Moeridis testimonio aliquanto graviore (p. 127. 171.) recentioribus (δευτέροις seu μέσοις) Atticis tam usitata, quam veteribus (πρώτοις) in νασι fuit, Platoni prae altera placuisse locorum comparatio docet. Civ. L. VIII. pag. 586. B. et Polit. p. 298. B. ἀποκτιννύσι, Leg. L. VIII. p. 835. D. σβεννύσιν vulgo et in optimis libris, —νασι in nullo, —νασι in paucis legitur. Civ. L. III. pag. 421. A. ἀπολλύσι et Gorg. p. 466. B. ἀποκτιννύσι secundum codices vulgato —νασι praelatum, —νασι nusquam inventum est. Denique Gorg. pag. 466. C. codices inter

ἀποκτιννύσι et —νασι, Theaet. p. 153. C. inter ἀπολλύσι et —νασι fluctuant ita, ut —νασι praeferendum videatur. Contra unus est locus Leg. L. III. pag. 706. C. ἀπολλύσι pro certo exhibens. Itaque δειννύσιν non frustra hic in optimo codice scriptum recteque a Bekkero et sequentibus receptum est. Ceterum ne ea quidem, quam Thomas et Moeris communem perhibent, terminatione in νασι Plato abstinuisse videtur, quum Gorg. p. 496. B. haud dubie ἀπολλύει, non ut vulgo legebatur ἀπολύει, scripserit; unde dubitatio progreditur, Criton. p. 47. C. διολλυσιν an διολλύει, Tim. p. 76. A. περιημφίεννιν an —έννυε, Phileb. p. 25. D. συμμίγνυν an συμμίγνυσ, Leg. L. VIII. p. 838. B. πατασβέννυσι an πατασβεννύει, quorum utrumvis codicum auctoritate non contemnenda munitur, potius sit habendum. Sed infra p. 523. A. δειννυ extra dubitationem possum est.

[Ορῶ, ἔφη.] ὁρθῶς ἔφη. Lob. Vat. BM. om. Iambl.

[Ορα τοίνυν] ἔτι τοίνυν ὅρα Iambl.

[τειχίου] τειχίου Vind. F. τοι- C ζίου Mon. B. Flor. U.

[φέροντας] post ἀνθρώπους Flor. T.

[ἀνθρώπους] ἀνθρώποις, Mon. B.

[τε] om. Mon. C.

[τειχίου] τοιχίου Mon. B. Flor. U.

[ζῶα], ζῶα, ut solet, Par. 515 A. Etiam Ald. Bas. ab. h. I.

Ομοίους ήμιν, ἦν δ' ἐγώ. τοὺς γὰρ τοιούτους πρῶτους μὲν ἑαυτῶν τε καὶ ἄλλήλων οἵει ἄν τι ἐωρακέναι ἄλλο, πλὴν τὰς σκιάς τὰς ὑπὸ τοῦ πυρός εἰς τὸ παταντικὸν αὐτῶν τοῦ σπηλαίου προσπιπτούσας; Πῶς γὰρ, ἔφη, εἰ ἀσυνήτους γε τὰς πεφαλὰς ἔχειν ἡναγκασμένοι εἶεν Β διὰ βίου; Τί δὲ τῶν παραφερομένων; οὐ ταῦτὸν τοῦτο; Τί μήν; Εἰ οὖν διαλέγεσθαι οἷοί τ' εἴεν πρὸς ἄλλήλους, οὐ ταῦτα ἥγη ἄν τὰ παρόντα αὐτοὺς νομίζειν ὀνομά-

ut alibi ξῶα habent. Cf. Vol. I. p. 60, a. Post ξῶα Stallbaumius in sec. incisionis signum fecit, quod ad sensum minime ineptum, sed in hac verborum positura superfliuum videtur.

σιγῶντας] *σιγοντας* cum ω super o. Vind. E.

τῶν] in margine a. m. s. habet Mon. B.

ἔφη] om. Lob. Vat. BM.

λέγεις] λέγειν Vind. E. — Mon. B. in ima pagina, cuius hoc extremum verbum est, a. m. pr. scripta haec habet: πάντα τὰ μυαλῶς ἀπὸδημευενα, μετ' ἀσαφίας. γράφονται:

Ομοίους ήμιν] post ἦν δ' (δὲ Mon. C.) ἐγώ Vind. B. Mon. C. δομοίως ήμιν Vind. E. δομοὺς ήμιν Par. D. Mon. B. Iamblichus haec ab ἄτοπον inde in τὴν δὴ ἄτοπον εἰνόντα ταῦτην καὶ τοὺς δεσμώτας τοὺς (id om. ed. pr.) ἄτοπονς (ἀπόνονς ed. Kiessl.) δὲς εἴναι ομοίους (δομοίως Ciz.) ήμιν mutavit.

μὲν] om. Lob. Mon. B. Vat. BM. Par. DK. Flor. U.

τε] om. Iambl. codd. Ciz. et Paris.

παταντικὸν] πατάντικον Vind. F. πατέρ ἀντικὸν Iambl. ed. pr. Ald. Bas. ab.

Πῶς γὰρ, ἔφη,] Post γὰρ in Ald. Bas. ab. nulla interpunctio est, Stephanus signum interrogations fecit, quod Bas. ab. post ἔφη habent. οὐδὲν ἄλλο. πῶς γὰρ Iambl.

ἔχειν] om. Vind. F. Ang. B. B βίου;] βίου. Ald. Bas. ab.

Tί δὲ] τὸ δὲ Mon. B. In Ald.

post δὲ comma positum, post παραφερομένων vero ut in Bas. ab. omissa interpunktio est; non omnino male.

τοῦτο] om. Iambl. cod. Ciz. et is, quo usus est Arcerius, nec non ed. Kiessl.

Tί μήν;] om. Iambl.

οἷοι τ'] οἷοι τε Vind. F. οῖον τ' Mon. C.

ταῦτα] ταῦτα sine accentu Vind. B. ταῦτα Par. A. Vat. H. Flor. ACRV. Mon. C. Vind. EF.

ἥγη] ἥγει Vind. F. Ang. B. Flor. R. Astius in sec. et tert. Bekkerus et Stallbaumius.

παρόντα] παριόντα Flor. T. Astius in sec. et tert. et Stallbaumius; quod valde ineptum videtur, sive cum Stallbaumio interpreteris: nonne pūtas eos res, quae praeterferrentur, suo quodam modo esse nominaturos, quas quidem viderent? sive cum Astio: nonne censes eos res praeterlatas arbitraturos esse nominandas quas viderent? Non enim hoc rogit Socrates, an nomina umbris imponenda existimaturi aut re vera imposituri essent, quippe quod citra errorem facere eis liceret, sed an haec, quae viderent, tamquam res praesentes, non tamquam umbras appellare, de praesentibus, non de absentibus loqui sese opinaturi essent. Quem sensum et vulgatae lectioni subesse et sequentibus unice convenire apparet. Fere eodem redit, quod Iamblico ex codd. Ciz. Paris. et Arceriano restituit Kiesslingius, ὄντα, quod etiam Proclus legisse videtur l. c. (p. 432.) scribens:

ζειν, ἄπερ δρῶεν; Ἀνάγκη. Τί δ'; εἰ καὶ ἡχώ τὸ δεσμωτήριον ἐκ τοῦ καταντικὸν ἔχοι, δόποτε τις τῶν παριόντων φθέγξαιτο, οἷει ἀν ἄλλο τι αὐτοὺς ἡγεῖσθαι τὸ φθεγγόμενον, ἢ τὴν παρούσαν σκιάν; Μὰ Δι' οὐκ εἴγωγ', ἔφη. Παντάπασι δὴ, ἦν δὲ ἔγω, οἱ τοιοῦτοι οὐκ ἀν ἄλλο τι νομίζοιεν τὸ ἀληθὲς, ἢ τὰς τῶν σκευαστῶν σκιάς. Πολλὴ ἀνάγκη, ἔφη. Σκόπει δὴ, ἦν δὲ ἔγω, αὐτῶν λύσιν τε καὶ ἵσιν τῶν δεσμῶν καὶ τῆς ἀφροσύνης, οἵα τις ἀν εἶη, εἰ φύσει τοιάδε ξυμβαίνοι

τὰς σκιὰς ἢ τῶν δεσμωτῶν ἢ τῶν σκευῶν, ἂ δὴ καὶ τὴν ἀρχὴν ὅντα νομίζουσιν οἱ δεσμῶται δὲ ἀπαδενσίαν. Simul intelligitur illud ταῦτα, quod in optimo libro exstat, aliquatenus ferri posse: eadem, quae viderent, non alia; sed quoniam alia illis non sunt praeter ea, quae vident, ταῦτα multo melius est. Ficinus Socrati haec tribuit: Si ergo invicem loqui liceret, nonne ista quae coram viderent loqui opinarentur? ex quibus nihil ego sani elicere possum.

νομίζειν] ὀνομάζειν Iamblich. cod. Paris. om. codd. Ciz. et Arserian. et ed. Kiessl.

ὀνομάζειν] om. Vind. EF. καὶ ὀν. Flor. RT. et post ἄπερ δρῶεν Ang. B.

δρῶεν] δρῶμεν Iambli. ed. pr. δρῶ ἐν cod. Ciz.

δέ; εἰ] δεῖ Vind. F. δέ εἰ Ald. Bas. ab. Steph.

καὶ ἡχώ] Horum loco in Iambli. cod. Paris. lacuna est. καὶ ἡχώ Vind. F. cum corr. in ἦ.

δεσμωτήριον] δεσμοτήριον Vind. E.

καταντικὸν] καταντικὸνς Flor. R. κατάντικονς Vind. F. Ang. B. κατ' ἀντικὸν Iambli. ed. pr.

ἔχοι] ἔχει Vind. E.

ἡγεῖσθαι] ἡγῆσθαι Vat. M.

παρούσαν] παρούσαν Lob. Vind. B. Mon. C. Vat. HM. Flor. T.

Μὰ Δι' οὐκ ἔγωγ', ἔφη.] οὐδὲν ἄλλο. Iambli. — δία Mon. C. — ἔγωγε idem et Lob.

δὴ] om. Flor. T.

ἦν δὲ ἔγω] οὖν Iambli.

τι] om. Lob. Vat. M.

τὸ ἀληθὲς] τἀληθὲς Vind. F.

Ang. B. τὸ ἀληθεῖς Ald.

ἡ] ἡ καὶ Vind. E.

σκιάς] σκιᾶς Vind. F.

ἀνάγκη] ἀν ἀνάγκη Vat. H.

ἔφη] om. Iambli.

δὲ] δὲ Vind. F. Ang. B. οὖν Iambli.

ἦν δὲ ἔγω] om. Iambli.

τῶν δεσμῶν] Vulgo interpositum τε cum Par. A. Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. ACRV. omisi.

οἵα] οἵα Vind. F. Iambli. cod. Ciz. οἵα Lob. Vind. E.

εἰ φύσει τοιάδε] η φύσις τοιάδε Iambli. cod. Ciz. φύσει τοιάδε Lob. Vat. BM. Par. DK. φύσει τοιάδε εἰ Mon. B. φύσει εἰ τοιάδε Flor. U. et Stallbaumius. Idem, sed commate post φύσει, non ante id posito, probat Schleiermacherus. Mihi vulgata melior videtur, modo ne Astium et Stallbaumium τοιάδε pro feminino habentes et φύσει re vera interpretantes sequamur. Sensus hic est: si res et natura ferret, ut haec eis contingent.

ξυμβαίνοι] ξυμβαίνει Lob. Vind. F. Mon. B. Vat. BM. Ven. B. Ang. B. Flor. RTU. Ald. Bas. ab. Steph. et, sup. οἱ, Par. K.

λνθεῖη] λνθοίη Par. K. sec. Bip.

ἀνίστασθαι] ἀνίσταται Vind. F.

αὐτοῖς· ὅπότε τις λυθείη καὶ ἀναγκάζοιτο ἔξαιφνης ἀνίστασθαι τε καὶ περιάγειν τὸν αὐχένα καὶ βαδίζειν καὶ πρὸς τὸ φῶς ἀναβλέπειν, πάντα δὲ ταῦτα ποιῶν ἀλγοῦ τε καὶ διὰ τὰς μαρμαρυγὰς ἀδυνατοῦ καθορᾶν ἐκεῖνα, ὃν τότε τὰς σκιὰς ἑώρα, τί ἂν οἴει αὐτὸν εἰπεῖν, εἴ τις D αὐτῷ λέγοι, ὅτι τότε μὲν ἑώρα φλυαρίας, νῦν δὲ μᾶλλον τι ἐγγυτέρω τοῦ ὄντος καὶ πρὸς μᾶλλον ὄντα τετραμμένος ὁρθότερα βλέποι, καὶ δὴ καὶ ἔκαστον τῶν παριόντων δεικνὺς αὐτῷ ἀναγκάζοι ἐρωτῶν ἀποκρίνεσθαι,

φῶς ἀναβλέπειν] φῶς ἄνω βλέπειν Vind. E. ἄνω φῶς βλέπειν Flor. T.

D αὐτὸν εἰπεῖν] εἰπεῖν αὐτὸν, sup. β α, Vind. B.

αὐτῷ λέγοι] αὐτὸν λέγει Iambl. cod. Ciz.

μᾶλλον τι] τι om. Lob. Mon. B. Par. DK. Vat. M. Flor. U. et a m. pr. Vat. B. Par. A. qui si a manu recenti additum habet, retinendi caussa non videtur, quamquam facilius omitti, quam assui a librariis potuit.

καὶ] om. Lob. Vat. M.

τετραμμένος] τεθραμμένος iiidem. τετραγμένος Vind. E.

ὁρθότερα] ὁρθότερον Vind. BE. Mon. BC. Par. DK. Vat. H. Flor. ACV. Iambl. codd. Ciz. et Arcerian. et ed. Kiessl. ὁρθώτερον Vind. F. Ang. B. Pluralem Astius magis Atticum, Buttmanus gramm. II. p. 268. poëticum perhibet: mihi usu minus tritus, ceterum eodem loco habendus videtur. Cf. Polit. pag. 276. E: εὐηθέστερα τοῦ δέοντος εἰς ταῦτὸν βασιλέα καὶ τύραννον ἔννέθμεν.

βλέπει] βλέπει Mon. B. Flor. U. Iambl. codd. Ciz. Arcer. ed. Kiessl. Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaunius; sine necessitate. Post illa εἰ τις αὐτῷ λέγοι, ὅτι optativus praesentis legitimus est haud secus atque aoristi Phaedonis initio: οὕτε τις ἔνεος ἀφίκηται κρόνου συγκοῦ ἐκεῖθεν, ὅστις ἀν-

ημῖν σαφέσ τι ἀγγεῖλαι οἶός τ' ἦν περὶ τούτων, πλὴν γε δὴ ὅτι φρέμακον πιῶν ἀποθάνοι· τῶν δὲ ἄλλων οὐδὲν εἰχε φράξειν. Neque vero praecedens indicatus ἑώρα alterum subsequentem habeat necesse est. Cf. ib. p. 96. B: πολλάκις ἐμαυτὸν ἄνω πάτω μετέβαλλον σκοπῶν — πότερον τὸ αἷμα ἐστιν ὡς φρονοῦμεν, ἢ δὲ ἀηδὸν τὸ πῦρ, ἢ τούτων μὲν οὐδὲν, ὁ δὲ ἐγνεφαλός ἐστιν ὁ τὰς αἰσθήσεις παρέχων τοῦ ἀνούσιν καὶ ὁρᾶν καὶ ὀσφραίνεσθαι, ἐκ τούτων δὲ γίγνεται τοιτοῦ μηνῆς καὶ δόξα, ἐκ δὲ μηνῆς καὶ δόξης λαβούσης τὸ ἡρεμεῖν πατὰ ταῦτα γίγνεσθαι ἐπιστήμην. et p. 95. D. ubi post ἦν item obliqua in oratione infertur ξώη et ἀπολλύοιτο. — Post βλέποι Steph. et in pr. Astius signum interrogandi fecerunt. In Vind. E. mutatae personae nota apposita est.

καὶ δὴ καὶ] Alterum καὶ om. Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV.

παριόντων] παρόντων Vind. F. Ang. B. In pr. Stallbaumius Florentinum T. παρόντων δὴ ἔκαστον exhibere tradens quorum ea loco ibi exhibita sint non ostendit.

ἀναγκάζοι] ἀναγκάζει Vind. F. et, sup. οἱ, B. Mon. B. Flor. RU.

ἀποκρίνεσθαι] ἀποκρίνασθαι Par. K. sec. Bekk. Iambl. cod. Ciz. et ed. Kiessl.

ὅτι ἔστιν; οὐκ οἶει αὐτὸν ἀπορεῖν τε ἄν καὶ ἡγεῖ-
σθαι τὰ τότε δρώμενα ἀληθέστερα, ἢ τὰ νῦν δεινού-
μενα; Πολύ γ', ἔφη. Οὐκοῦν καν εἰ πρὸς αὐτὸν τὸ φῶς
ἀναγκάζοι αὐτὸν βλέπειν, ἀλγεῖν τε ἄν τὰ ὅμματα καὶ⁴⁸¹
φεύγειν ἀποστρεφόμενον πρὸς ἐκεῖνα, ἢ δύναται καθο-
ρᾶν, καὶ νομίζειν ταῦτα τῷ ὅντι σαφέστερα τῶν δει-
νυνμένων; Οὔτως, ἔφη. Εἰ δ', ἦν δ' ἔγω, ἐντεῦθεν
ἔλκοι τις αὐτὸν βίᾳ διὰ τραχείας τῆς ἀναβάσεως καὶ
ἀνάντους καὶ μὴ ἀνείη, πρὶν ἔξελκυσθειν εἰς τὸ τοῦ ἥλιου

ἔστιν] In Lob. et Astii sec.
encliticon est, oxytonon in Vind.
BE. Mon. C. Iambl. ed. Kiessl.
Steph. Ast. pr. Pro signo inter-
rogandi Ald. Bas. ab. Ast. pr.
sec. item Iamblichii editiones com-
ma habent.

αὐτὸν] αὐτὸν Iambl. ed. pr.
Ald. Bas. ab.

τὰ τότε] τὰ τε Iambl. codd.
Ciz. et Paris.

ἀληθέστερα] Redit h. l. Ven.
C. Cf. ad L. VI. pag. 507. E.
monitum.

τὰ νῦν] ταῦτα Vind. F. Mon.
B.

Πολύ γ', ἔφη] πάνυ γ' ἔφη
Vind. B. Mon. C. πάντως δήπον
Iambl.

E δύναται] δύνανται Vind. B.
Mon. C. Vat. H. Flor. AC. et a
m. pr. Ven. B. Iambl. ed. pr.
Ald. Bas. ab.

τῷ ὅντι] τωόντι Mon. C. Vind.
E.

σαφέστερα] σαφέστατα Mon.
C. ante corr.

δεινούμενων] δυνημένων
Vind. E.

Οὔτως, ἔφη.] om. Iambl.

Εἰ δ'] εἰ δὲ Vind. BEF. Mon.
C. et Iamblichus, qui sequentia
ἦν δ' ἔγω omisit.

διὰ τραχείας] διατρ. Vind. F.

τῆς ἀναβάσεως] Haec respexit
Plotinus Enn. II. L. VIII. c. 6.
p. 203. F. (Bas. 1580.) εἰδότων
καὶ σαφῶς τῶν Ἑλλήνων ἀτύ-
φως λεγόντων ἀναβάσεις ἐν τοῦ
σπηλαίου καὶ πατὰ βραχὺ εἰς
θέαν ἀληθεστέραν μᾶλλον καὶ
μᾶλλον προϊούσας.

καὶ ἀνάντους] αντοὺς καὶ
Iambl. cod. Paris.

ἀνείη] Ita Par. A. a m. pr.
ἀνίοι Vind. B. Mon. B. Flor. U.
ἀνίη, sup. οἱ, Mon. C. ἀνίη
Lob. Vind. EF. Iambl. ed. pr.
Ald. Bas. ab. ἀνίη Steph. tacen-
tibus Bipontinis. Idem in reliquis
Flor. et in Bekkeri codicibus, de
quibus nihil significat, nec non
in Par. A. a m. s. scriptum vi-
detur. ἀν οἴει Iambl. cod. Par.
ἄν εἴη Ciz. ex quo verum eruit
Kiesslingius, idem in Platone re-
poni iubens. Contra Stephanus
significationem tantum curans ne-
que moduni respiciens ἀνή scri-
bendum statuebat annot. p. 24.
cui in pr. ed. obsecutus Astius
in sec. ἀνείη de conjectura re-
stituit. neque permetteret quie-
quam aspicere Fic.

ἄρσει οὐχὶ ὁδηνᾶσθαι] οὐ δύ-
νασθαι Iambl. cod. Ciz. ὁδηνᾶ-
σθαι in suo codice solum inven-
nisce videtur Arcerius ἄρσει οὐχὶ^e
e Platone addidisse demontrans.
ἄρσει οὐχὶ ὁδ. Vind. F. Ang. B.
ἄρσει οὐχὶ ὁδ. Vind. E. ἄρσει οὐχὶ^e
ὁδ. Vind. B. Mon. C.

φῶς, ἀρα οὐχὶ ὁδυνᾶσθαι τε ἀν καὶ ἀγανακτεῖν ἐλιόμενον, καὶ ἐπειδὴ πρὸς τὸ φῶς ἔλθοι, αὐγῆς ἀν ἔχοντα 516 τὰ ὄμματα μεστὰ δρᾶν οὐδ' ἀν ἐν δύνασθαι τῶν νῦν λεγομένων ἀληθῶν; Οὐ γάρ ἀν, ἔφη, ἐξαίφνης γε. Συνηθείας δὴ, οἶμαι, δέοιτ' ἀν, εἰ μέλλοι τὰ ἄνω ὅψεοι, καὶ πρῶτον μὲν τὰς σκιὰς ἀν φᾶστα καθορῷ καὶ μετὰ τοῦτο ἐν τοῖς ὕδαις τά τε τῶν ἀνθρώπων καὶ τὰ τῶν ἀλλων εἴδωλα, ὕστερον δὲ αὐτά; ἐκ δὲ τούτων τὰ ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ αὐτὸν τὸν οὐρανὸν νύκτωρ ἀν φᾶσιν

τε ἀν] Prius om. Vat. M. posterius Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. T. et a m. pr. Ven. B. ἐλιόμενον,] ἐλιόμενον; Steph. Ast. pr. sec.

516 ἀν ἔχοντα] ἀνέχοντα Vind. F. ἔχοντα Ang. B. Flor. RT. Haec et illa, quae infra E. leguntur, Proclus respexit in Tim. pag. 6. extr. ὡς πον καὶ αὐτὸς εἰρηνεύος Σωκράτης ἐν Πολιτείᾳ, τὸν ἐν αὐγῇ καθορῷ τεθραμμένους ἀμβλωπτειν εἰς τὸ σπήλαιον καταβάντας ὑπὸ τοῦ ἐκεῖ σπότον, ὥσπερ καὶ τὸν ἀναβάτας ἐν τοῦ σπηλαίου διὰ τὸ μὴ δύνασθαι πω πρὸς τὸ φῶς ἀντωπεῖν.

οὐδ' ἀν ἐν] οὐδ' ἀν Iamblich. cod. Arcer. οὐδ' ἀν ἐν Vind. F. Ang. B. (hunc enim significare voluisse Bekkerum suspicor, non Vat. M. quem significat; postquam eundem οὐδ' ἀν ἐν exhibere demonstravit.) οὐδὲν ἀν Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACT. Iambl. ed. pr. Ald. Bas. ab. Steph. οὐδὲς ἀν ἐν Ast. pr. οὐδ' ἀν ἐν Kiesslingius secundum codd. Ciz. et Paris. in Iamblico scripsit et in Platone scribendum esse docuit, quod reliquorum librorum consensus comprobavit.

Οὐ γάρ ἀν, ἔφη, ἐξαίφνης γε.] ὥστε ἐξαίφνης αὐτοῖς προσβάλλοντας Iambl.

δὴ] δὲ (Par. DK.) Iambl. ed. pr. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr.

μέλλοι] μέλλει Par. K. sec. Bip.

τὰ ἄνω] τὰν ω Vat. B. Bekkerus.

τὰς σκιὰς] τὰ σκολιὰ Vind. E. τὰς σκολιὰς Vind. B. Vat. H. Flor. AC. cuius utriusque in margine legitur: γρ τὰς σκιὰς ὃ καὶ κάλλιον.

καθορῷ] Ita Par. A. Lob. Vind. F. Vat. BM. Ven. C. Par. D. Ang. B. Flor. RU. καθορῷ Par. K. sec. Bekk. καθορῶν, e corr. — φῶν, Vind. E. καθορῶν Vind. B. Mon. C. Vat. H. Flor. ACTV. καθορῶν Ven. B. Mon. B. sed hic correctus in ultima, quae a m. pr. ωι vel ων fuerit, et Iambl. cum editis. Cf. Vol. I. p. 366. sq.

καὶ] om. Ven. B. Fic. editique ante Bekkerum.

μετὰ τοῦτο] μετατοῦτο Vind. F. Mon. B. Ald. Bas. ab. μετὰ ταῦτα Mon. C. post haec Fic.

τῷ οὐρανῷ] τῷ om. Lob. Vind. B. Mon. C. Par. K. Ast. sec. — Proclus in Civ. p. 432: μετὰ δὲ ταῦτα φῆσιν αὐτὸν ἰδεῖν ἡδη τῷ ὅλῳ οὐρανὸν ἐν νυκτὶ καὶ τὰ ἀστρα τῶν νοητῶν ὅγτα διμοιώματα καὶ τὰ ἐν αὐτοῖς φῶτα, καθὸ ἡλιοειδῆ πάντα ἐστίν.

αὐτὸν] αὐτὸν ἀν (Ven. B. Vat. B.) Iambl. ed. pr. cum editis ante Astii sec.

ἀν] om. Ven. B. Vat. BM.

B θεάσαιτο, προσβλέπων τὸ τῶν ἀστρων τε καὶ σελήνης φῶς, ἢ μεδ' ἡμέραν τὸν ἥλιον τε καὶ τὸ τοῦ ἥλιου. Πᾶς δ' οὖ; Τελευταῖον δὴ, οἶμαι, τὸν ἥλιον οὐκ ἐν ὕδασιν ούδ' ἐν ἀλλοτρίᾳ ἔδρᾳ φαντάσματα αὐτοῦ, ἀλλ' αὐτὸν καθ' αὐτὸν ἐν τῇ αὐτοῦ χώρᾳ δύναται ἀν κατιδεῖν καὶ θεάσασθαι, οὗτός ἐστιν. Ἀναγκαῖον, ἔφη. Καὶ μετὰ ταῦτ' ἀν ἥδη συλλογίζοιτο περὶ αὐτοῦ, ὅτι αὐτὸς δὲ τὰς τε ᾔρας παρέχων καὶ ἐνιαυτοὺς καὶ πάντα ἐπιτροπεύων τὰ ἐν τῷ ὁραμένῳ τόπῳ καὶ ἐκείνων, ὃν C σφεῖς ἑώραν, τρόπον τινὰ πάντων αἴτιος. Αῆλον, ἔφη, ὅτι ἐπὶ ταῦτα ἀν μετ' ἐκεῖνα ἔλθοι. Τί οὖν; ἀναμυησκόμενον αὐτὸν τῆς πρώτης οἰκήσεως καὶ τῆς ἐκεῖ

ἀστρων] ἀστέρων Vind. F.
Ang. B. Flor. R.
B σελήνης] σεληνῶν Iambl. codd.
Ciz. et Paris. τῆς σελήνης Par.
K. et Astius. Cf. Vol. I. p. 435,
a. extr. et a Stallbaumio laudatus
locus Polit. p. 271. C: τὴν
μὲν γὰρ τῶν ἀστρων τε καὶ ἥλιον
μεταβολήν.
μεδ' ἡμέραν] μεθημ. Mon. C.
μετ' ἡμέραν Iambl. ed. pr. Bas. a.
τε καὶ τὸ] καὶ Flor. RT.
ἥλιον] τὸ φῶς addunt Ang. B.
Flor. RT. Cf. Vol. I. p. 366,
a. in.

Πῶς δ' οὖ;] om. Iambl.
δὴ] δὲ Mon. B. Flor. U. —
Proclus in Civ. p. 432. extr. τε-
λευταῖον φησι δεῖν ἐν τῷ ὁρατῷ
τὸν ἥλιον ὄραν.

τὸν ἥλιον] Vulgo comma ad-
dunt.

οὐδὲ] ἀλλ' Vind. E.
ἔδρᾳ] om. Mon. C. Vat. H.
Eius locus in Vind. B. vacuus
est.

καθ' αὐτὸν] καθαντὸν Vind.
F.

αὐτὸν] αὐ. Lob. Vind. BEF.
Mon. BC. Iambl. ed. pr. cod.
Ciz. Ald. Bas. ab. quod non vi-
tiosum est. αὐτῇ Par. K.

κατιδεῖν] καὶ κατιδεῖν Vat. B.
οὗτος] οὗτος τε Iambl. cod. Ciz.
secundum quem Kiesslingius οὗτος
τ' exhibuit, quod multo deterius
vulgato est.

ἐστιν] ἐστιν Vind. F.
Ἀναγκαῖον, ἔφη.] om. Iambl.
(Ἀναγκαῖον Ald.)
μετὰ ταῦτ' ἀν] μετὰ ταῦτ' ἀν
Lob. Vind. E. Mon. B. μετὰ ταῦ-
τα Vind. F. Etiam Ang. B. ἀν
omittit.

αὐτὸς] Ita Par. A. Vind. BE.
Mon. C. Vat. H. Flor. ACTV.
ὅ τοιοῦτος Iambl. cod. Paris. et,
omisso ὅτι, Arcerianus. Reliqui
codices et editiones omnes οὗτος
exhibit, quod ingratae scilicet
repetitionis evitandae caussa fa-
ctum videtur. Sed ita supra
L. V. p. 462. E: ᾔρας ἀν εἴη
ἐπανιέναι ἡμῖν ἐπὶ τὴν ἡμετέραν
πόλιν καὶ τὰ τοῦ λόγον ὄμολο-
γήματα σημεῖν ἐν αὐτῇ, εἰ αὐ-
τῇ μάλιστ' ἔχει, εἴτε καὶ ἄλλῃ
τις μᾶλλον. quo loco Bekkerus
αὐτῇ a Mon. B. oblatum recte
contempsit. Omnia Plato huius-
cetodi repetitiones minime fugit.
Nec sine vi casui obliquo rectus
statim succedit. Ceterum vulgo
pronomini additum ἐστιν in uno
Ven. B. repertum neque in Iam-
blichii tribus codicibus extans
merito delevit Bekkerus, Astius
in tert. et Stallbaumius. De ea
ellipsi cf. Vol. I. p. 104, a.

ἐπιτροπεύων τὰ] ἐπιτροπεύ-
ωντα Vind. E.

τόπῳ] τύπῳ Vat. M. Lob.
In Stephani ed. colon, in reliquis
commata additum est.

σοφίας καὶ τῶν τότε ξυνδεσμωτῶν οὐκ ἀν οἵει ἑαυτὸν μὲν εὑδαιμονίζειν τῆς μεταβολῆς, τοὺς δ' ἐλεῖν; Καὶ μάλα: Τιμαὶ δὲ καὶ ἔπαινοι εἴ τινες αὐτοῖς ἦσαν τότε παρ' ἀλλήλων καὶ γέρα τῷ ὀξύτατα παθορῶντι τὰ παριόντα καὶ μηδουμεύοντι μάλιστα, ὅσα τε πρότερα αὐτῶν καὶ ὕστερα εἰώθει καὶ ἄμα πορεύεσθαι, καὶ ἐκ τούτων δὴ δυνατώτατα ἀπομαρτενομένῳ τὸ μέλλον ἥξειν, δοκεῖς ἀν αὐτὸν ἐπιθυμητικῶς αὐτῶν ἔχειν καὶ ξηλοῦν τοὺς παρ' ἑκείνοις τιμωμένους τε καὶ ἐνδυναστεύοντας, ἢ τὸ τοῦ Ὁμήρου ἀν πεπονθέναι καὶ σφόδρα βούλεσθαι ἐπάρουντον ἔστι τὰ θητευέμεν ἄλλῳ ἀνδρὶ παρ' ἀκλήρῳ καὶ ὄτιον ἀν πεπονθέναι μᾶλλον, ἢ κεῖνά τε δοξάζειν

C ἐκείνων] ἐκείνως Mon. C.
αἴτιος.] Pro puncto Mon. B.
correctus interrogandi nota m exhibet.

ἔφη] γὰρ Iambl.
ἐπὶ ταῦτα] ἐπιτ. Vind. E.
οἰκήσεως] οἰκήσεως Iamblich.
cod. Paris.
οἵει] οἴη Iambl. cod. Ciz.
ἑαυτὸν] αὐτὸν Vat. M. Flor.
RTV. αὐτὸν Lob. Vind. BEF.
Mon. C. Ang. B. Vat. H. Iambl.
cod. Ciz. et unus vel plures Flor.
quos significare Stallbaumius obli-
tus est.

τοὺς δ'] τοὺς δὲ Lob. τοὺς
δὲ Mon. C. Vind. BEF. Flor.
ACTV.

μάλα] μᾶλλον cum acuto ante
circumflexum et λα super λλοι
Lob.

εἶ] οἶ Lob. Vat. BM.
αὐτοῖς] post ἥσαν Iambl.
παρ' ἀλλήλων] παραλλ. Vind.
EF. περὶ ἀλλ. Iambl. codd. Ciz.
et Paris.

οὕντατα] οὕνταται Lob. οὕν-
τάται Vat. M. et a m. pr. B.
οὕντατως a m. s.

παριόντα] παρόντα Lob. Mon.
B. Par. K. Vat. M. Flor. U.

D τε πρότερα] τὰ πρ. Vind. F.
εἰώθει] εἰώθε Iambl. codd.
Ciz. et Paris.

καὶ ἄμα] καὶ om. Vind. BE.
Mon. C. Ang. B. Vat. H. Flor.
ACRTV.

δυνατώτατα] ἀδυνατώτατα
Vind. F. Ang. B.
δοκεῖς] δοκοῖς Vat. B. Vind.
E. δοκῆς Iambl. codd. Ciz. et
Paris.

ἀν] om. Lob. Vat. BM.
αὐτὸν — αὐτῶν] αὐτῶν — αὐ-
τὸν Ven. B.
τοὺς] Ad hoc τοῖς pertinere
videtur, quod Mon. B. in mar-
gine habet.
ἐνδυναστεύοντας;] ἐνδυναστεύ-
οντας; Bas. ab. Steph.
ἢ τὸ] om. Vat. H. τὸ om.
Flor. AC.

τοῦ Ὁμήρου] τοῦ om. Vind.
E. Locus Homeri iam L. III.
p. 386. C. citatus et ibi proscriptus
est Odyss. XI. 489.

καὶ σφόδρα] om. Mon. C. Fic.
βούλεσθαι] βούλεύεσθαι Lob.
Vat. BM. Ven. C.

ἐπάρουντον] ἐπαρουντον Vind.
F. ἐπ' ἄρουραιen Vind. B. Mon. C.
Vat. H. ἄρουραιen Vind. E.

θητευέμεν ἄλλῳ] θητευέμεν
ἄλλῳ Mon. C.

παρ' ἀκλήρῳ] παρακλήρῳ Lob.
Vind. BF. Mon. C. Vat. M. Post
ἀκλήρῳ in Ald. punctum, in Bas.
ab. comma est; Stephanus (Ast.
pr. sec.) interrogationis signum
posuit, ceterum versum particu-
las lineis transversis ante θητευ-
έμεν et maiuscula prima nominis
ἀνδρὶ significandas putavit; de-
nique Stallbaumius verba ἐπάρου-

Ε καὶ ἐκείνως ξῆν; Οὔτως, ἔφη, ἔγωγε οἶμαι, πᾶν μᾶλλον πεπονθέναι ἀν δέξασθαι, η̄ ξῆν ἐκείνως. Καὶ τόδε δὴ ἐννόησον, η̄ν δ' ἔγώ. εἰ πάλιν ὁ τοιοῦτος καταβὰς εἰς τὸν αὐτὸν θᾶκον καθίζοιτο, ἀρ' οὐ σκότους ἀνάπλεως σχοίη τοὺς ὀφθαλμοὺς ἐξαίφνης ἥκων ἐκ τοῦ ἥλιου; Καὶ μάλα γ', ἔφη. Τὰς δὲ δὴ σκιὰς ἐκείνας πάλιν εἰ δέοι αὐτὸν γνωματεύοντα διαμιλλᾶσθαι τοῖς

ρον — ἀκλήσω diductioribus litteris scribi iussit. Conf. Vol. I. p. 14, b. 123, a. b. 130, a.

ὅτιοῦν] ὅτι Vind. F.

ἀν] om. Flor. T.

ἡ̄ νεῖνά] η̄ ἐκείνα Lob. Vind. BEF. Mon. BC. Vat. BHM. Ven. B. Ang. B. Flor. ACRTUV. Iambl. Ast. sec. tert. Bekkerus et Stallbaumius. η̄ νεῖνά priores. Cf. Vol. I. p. 154, b.

ἐκείνως] ἐκείνω Vind. F.

E ἔψη] om. Iambl.

οἶμαι,] Comma Stallbaumius in sec. apposuit; in Vind. E. etiam punctum est.

ἀν δέξασθαι] ἀν μᾶλλον δέξασθαι Vat. H. Nec aliud in Flor. AV. repertum fuerit, quos Stallbaumius int̄ pr. πᾶν ἀν μᾶλλον δέξασθαι pro πᾶν μᾶλλον ἀν δέξασθαι, quod nusquam legitur, exhibere tradit.

τόδε] τότε Lob. Vind. B. Mon. C. Vat. HM. Flor. ACTV. τότε δὲ Iambl. cōd. Arcer. τοῦτο Vind. E.

η̄ν δ' ἔγώ] om. Iambl.

εἰ] εἰβ̄ Mon. C.

ὅ τοιοῦτος] ὅτι οὗτος Par. A. Vind. B. Mon. C. Vat. H. et a m. pr. Ven. B.

θᾶκον] Ita Vind. F. Par. DK. Flor. RT. τᾶκον Ang. B. θᾶκον Par. A. Vat. B. Ven. C. Ast. sec. tert. Bekkerus et Stallbaumius. θᾶκον reliqui codices et Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr. quod Thomas Mag. p. 430. poëticum perhibet, usus Ionicum potius habendum esse docet. De accentu nescio cur secus statuerit h. I. Bekkerus, qui anecd. p. 263, 26. θᾶκον· καθέδραι. ediderit atque

α longum esse haud dubie non ignoraret. V. Soph. Ant. 986: εἰς γὰρ παλαιὸν θᾶκον ὄγνιθοσκόπον. Aristoph. Ran. 1511: ταῦτα ποιήσω· σὺ δὲ τὸν θᾶκον. 1518: μηδέποτ' ἐσ τὸν θᾶκον τὸν ἔμον. Nub. 993: καὶ τῶν θάνων τοῖς πρέσβυτέροις. Quin igitur properispomenon esse debeat, non ambigendum videtur, idque altero Platonis loco restituendum, Polit. p. 288. A: τούτων δὴ τοίτον ἔτερον εἶδος πτημάτων πάμπολυν πατοπτέον — ἐν ὅνομα ἔχον, διότι πᾶν ἐνεά τινος ἐφέδρας ἔστι, θᾶκος δεὶ τινι γιγνόμενον. quo loco si quis pro neutro habeat ex eoque codicis Ravennatis Nubium l. c. scripturam θᾶκῶν defendi posse existimet, a vero non aberraverit. Similia v. in Buttmanni gramm. I. p. 208. not. 4.

καθίζοιτο] καθέζοιτο Mon. B. Flor. U.

ἄρ] ἄρ Vind. F.

ἀνάπλεως] ἀνάπλεω idem cum litura post ω. Timaei glossam p. 30. ἀνάπλεως· ἀναπεπληρωμένος. χρῆται δὲ ἐπὶ τοῦ μεμολυμένον. minus recte hic pertinere statuit Wyttenbachius · anim. in Plut. T. I. p. 292.

σχοίη] De hoc optativo praeter Platonis consuetudinem particula ἀν destituto cf. Vol. I. pag. 91. Ante ἀνάπλεως tamen illa particula facillime excidere potuit.

Kai] om. Vind. F. Ang. B. Iambl. codd. et ed. pr. (Kiesslinius ex Platone addidit.)

μάλα γ'] μάλα γε Mon. C. Iambl. μάλα Vind. E. Vat. BM. μάλ' Lob.

αεὶ δεσμώταις ἐκείνοις, ἐν ᾧ ἀμβλυώττει, ποὶν κατα- 517
στῆναι τὰ ὄμματα, οὗτος δ' ὁ χρόνος μὴ πάνυ δλίγος
εἴη τῆς συνηθείας, ἀρ' οὐ γέλωτ' ἀν παράσχοι, καὶ λέ-
γοιτο ἀν περὶ αὐτοῦ, ὡς ἀναβάς ἄνω διεφθαρμένος
ἥκει τὰ ὄμματα, καὶ ὅτι οὐκ ἔξιον οὐδὲ πειρᾶσθαι ἄνω
ἰέναι, καὶ τὸν ἐπιχειροῦντα λύειν τε καὶ ἀνάγειν, εἴ
πως ἐν ταῖς χερσὶ δύναιντο λαβεῖν καὶ ἀποκτείνειν,

ἔφη] om. Iambl.

πάλιν] om. Vind. E. Fic.

γνωματεύοντα] Ita omnes co-
dices atque editiones, nec aliter
legisse videtur Timaeus, cuius in
lexico scriptum γνωμονεύοντα
Ruhnkenius p. 72. e Suida et hoc
ipso Platonis loco, quem lexico-
grapho obversatum esse probabile
est, in γνωματεύοντα mutavit.
Timaeus explicationis caussa δια-
νοίνοντα καὶ διαγνώσκοντα ad-
scripsit. In scholiis est διανοί-
νοντα, διαγνώσκοντα ἀνοιβῶς.
Schneiderus in lexico umbrarum
mentione deceptus umbras in gno-
mone scrutantem proprie γνωμα-
τεύειν dici statuit, Etymologus
vero plane ineptit ē γνώμη et
ματεύω conflatum existimans.
Quum γνῶμα indicium et docu-
mentum significet, γνωματεύειν
fere idem, quod γνωρίζειν esse
intelligitur, in quaerendo indicio
versari, cognoscere.

ἀμβλυώττει] ἀμβλυώττειν Mon.
C. ante corr. ἀμβλυώπει Iambl.
codd. Ciz. et Paris. ed. Kiessl.
ἀμβλυώττοι Mon. B. Flor. U.
Bekkerus, Ast. tert. et Stallbaumius,
sine necessitate. Illum aliquantis per caecutire necesse est.
Procli locum haec respicientis
supra ad A. indicavi. De verbo
ipso cf. L. VI. p. 508. D. Inci-
sionem vulgo omissam cum Stall-
baumio in sec. feci.

517 τὰ ὄμματα] τὸ ὄμμα Vind. BE.
Mon. C. Vat. H. Flor. ACTV.

δ'] δὲ Iambl. Male Astius in
tert. verba οὗτος δ' — συνηθείας
parentheseos signis circumdedit,
quem Stallbaumius secundum ea,
quaes ad. p. 515. C. adscripsit,

sequi debebat. Optativum εἴη
ita ut δέοι ab εἰ pendere parti-
cula μὴ docet.

ἄρο] ἄρα Vind. F.

γέλωτ'] γέλωτα Mon. BC.

παράσχοι] παράσχη cum οἱ
super η Mon. C. παράσχοι Vind.
F. παράσχοι Iambl.

λέγοιτο] λέγοιτ' Lob. Vat. M.
Par. K. sec. Bip.

ἀναβάς] ἀναβολὰς Iambl. codd.
Ciz. et Paris.

ἥκει] ἥκει Ang. B. ἥκοι Par.
D. Mon. B. Flor. U. Iambl. ed.
pr. et Kiessl. (non codd.) editi-
que ante Bekkerum.

ὄμματα,] ὄμματα; Steph.

ἄνω ἰέναι] ἀνιέναι Iamblich.
codd. Ciz. et Paris. ed. Kiessl.

εἰ πως] ὅπως Lob. Vat. M.

δύναιντο] δύναιντο Vind. E.
Vat. H. Flor. AC.

καὶ ἀποκτείνειν, ἀποκτιννύναι
ἄν; Σφ.] καὶ om. Mon. C. Pro
ἀποκτείνειν idem et Vind. BE.
Vat. H. Flor. ACTV. (signum
Flor. T. in Stallbaumii pr. per-
peram omissum eiusque loco ite-
rum Flor. A. significatus est.)
ἀποκτενεῖν, Ven. B. ἀποκτιννύ-
ειν, editi ante Bekkerum et Iam-
blich. ed. pr. ἀποκτιννύναι ex-
hibit. Pro ἀποκτιννύναι in Lob.
Mon. B. Par. K. sec. Bip. et
Iambl. cod. Ciz. ἀποκτιννύναι,
in Vind. F. Ang. B. ἀποκτεινύ-
ναι, et pro ἀν in Vind. BE.
Vat. H. Flor. ACV. αὐ legitur.
Ceterum editi ante Bekkerum et
Iamblich. editiones alia persona-
rum distinctione utuntur et Glau-
coni Ἀποκτιννύναι ἀν σφ. tri-
buunt, cui Bekkerus secundum
Ven. B. Vind. B. Par. D. nil nisi

ἀποκτιννύναι ἄν; Σφόδρα γ', ἔφη. Ταύτην τοινυν, ἡνδ' ἐγώ, τὴν εἰκόνα, ὡς φίλε Γλαύκων, προσαπτέον ἀπα-

B σαν τοῖς ἔμπροσθεν λεγομένοις, τὴν μὲν δὶς ὅψεως φαι-

νομένην ἔδραν τῇ τοῦ δεσμωτηρίου οἰκήσει ἀφομοιοῦν-

τα, τὸ δὲ τοῦ πυρὸς ἐν αὐτῇ φῶς τῇ τοῦ ἥλιου δυνά-

μει· τὴν δὲ ἄνω ἀνάβασιν καὶ θέαν τῶν ἄνω τὴν εἰς

τὸν νοητὸν τόπον τῆς ψυχῆς ἄνοδον τιθεὶς οὐκ ἀμαρ-

τήσει τῆς γ' ἐμῆς ἐλπίδος, ἐπειδὴ ταύτης ἐπιθυμεῖς

Σφόδρα γ' assignavit. Etiam Lob. et Flor. U. ante σφόδρα mutatae personae indicem, Mon. B. Vind. (B)E. interrogandi signum, Mon. C. Flor. ACV. punctum ha-

bent, in Vind. F. vero ante κοὶ et post ἀποτείνειν punctum, ante σφόδρα comma positum est. Bekkeri distributionem securi sunt Astius in tert. et Stallbaumius, sed locum corruptum putant. Sci-

licet non apparet, quo infinitivus ἀποτιννύναι referendus sit. Nam Ficini interpretationi diceturque nunquam ad supra contendendum esse, et eum, qui solvere tentet et sursum ducere, si deprehendantur, protinus occidendum? Tota haec imago etc. quum interpositorum τὸ πτῶς δύναντο sententia narrantis hauld dubie multo, quam istorum ipsorum orationi convenientior, tum linguae ratio λέγοιτο ἄν περὶ αὐτοῦ ἀποτιννύναι ἄν illo sensu dici nequaquam patientis repugnat. Sed si pro verbis ἀρ' οὐ γέλωτ' ἄν παράσχοι καὶ λέγοιτο ἄν Socrates οὐκ οἴει γέλωτ' ἄν αὐτὸν παρασχεῖν καὶ λέγεσθαι ἄν dixisset, infinitivus ille salva perspicuitate subiecti significazione careret, et quia λέγεσθαι ἄν idem, quod ἐκείνος ἄν εἰπεῖν foret, hoc ipsum ἐκείνος nullo negotio sub-audiretur. Hac igitur explicatione utendum exitumque orationis non ab eo, quo usa est, ingressu, sed ab altero illo, quo uti pariter potuisse, repetendum censeo. Nexus autem horum extremorum et antecedentium per anacoluthon non tollitur. Itaque comma post

ἄνω λέναι, quod Bekkerus et sequentes in signum interrogationis mutarunt, restitui. Non multo aliter de h. I. sensisse videtur Bernhardy synt. p. 368. hunc infinitivum parentheticum nominans similemque statuens ei, quo Herodotus L. III. c. 110. extr. et Plato Phaedon. p. 96. B. in verbis supra ad p. 515. D. adscriptis usi sint, *im leichten Absprung von dem Indikativ und Optativ*, et mutationis caussam in ellipsi notionis cuiusdam subiectivae, quallem verbum λέγω vel ἡγοῦμαι contineat, positam existimans: nisi forte supplementum illud extinsecus, quemadmodum in distinctionibus εἰς Ἄιδον, δ' Ἀρίστερος et similibus, adsciscendum statuit.

Σφόδρα γ', ἔφη] σφόδρος ἔφη Par. K. sec. Bip. σφόδρα ἔφη Mon. B. Par. K. sec. Bekk. σφόδρα γε Iambl. (om. Fic.)

Ταύτην — δυνάμει B.] laudat Porphyrius de antro Nymph. p. 255.

ἢν δ' ἐγώ] om. Iambl. Porph.
ὡς φίλε Γλαύκων] om. Iambl.

ἀπασαν] ἀπασι Vind. F. Ang. B. et, sup. σαν, Lob. ἀπασιν Flor. RT.

τοῖς ἔμπροσθεν] τοῖς ἔμπροσθεν Vind. F. Flor. V. Cf. supra p. 514. B. 1. et Vol. I. p. 125, b. vers. 21. ὡς ἀληθῶς τοῖς Iambl.

λεγομένοις,] εἰρημένοις, in m. B a m. pr. λεγο, Mon. C. λεγομένοις: Vind. E. λεγομένοις. Ald. Bas. ab. Steph.

ἀκούειν· θεὸς δέ που οἰδεν, εἰ ἀληθὴς οὖσα τυγχάνει· τὰ δ' οὖν ἐμοὶ φαινόμενα οὕτω φαίνεται, ἐν τῷ γνωστῷ τελευταῖα ἡ τοῦ ἀγαθοῦ ἰδέα καὶ μόρις ὁρᾶσθαι, ὁφθεῖσα δὲ συλλογιστέα εἶναι, ὡς ἄρα πᾶσι πάντων C αὐτῇ ὁρῶν τε καὶ καλῶν αἰτίᾳ, ἐν τε ὁρατῷ φῶς καὶ τὸν τούτον κύριον τεκοῦσα ἐν τε νοητῷ αὐτῇ κυρίᾳ ἀλήθειαν καὶ νοῦν παρασχομένη, καὶ ὅτι δεῖ ταύτην ἰδεῖν τὸν μέλλοντα ἐμφρόνως πράξειν ἢ ἰδίᾳ ἢ δημοσίᾳ.

δεσμωτηρίου] δεσμωτηρίου cum
ω super o Vind. E.

ἀφομοιοῦντα] ἀφομοιοῦντας
Porph.

τῆς ψυχῆς] om. Vind. E. Vat.
H. Flor. AC. et a m. pr. Ven. B.

ἀμαρτήσει] Ita Par. AD. et,
sup. ση, K. Vind. F. Ven. C.
Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV.
Iambl. cod. Ciz. et ed. pr. ὁμαρ-
τήσει Iambl. cod. Paris. ἀμαρτή-
ση Vind. B. Mon. BC. Flor. U.
ἀμαρτήσεις reliqui codices et
editiones ante Bekkerum, ex qui-
bus Kiesslingius idem Iamblico
impertiendum putavit.

τῆς γ' ἐμῆς] τῆς γε ἐμῆς Lob.
τῆς ἐμῆς Vind. E. τῆς σ' ἐμῆς,
e corr. τῆς ἐμῆς, Mon. B. τῆς
ἀληθείας, αὐτῇ (αὐτῇ ed. Kiessl.)
δέ που οὕτω φαίνεται etc. Iambl.
omissis ἐπιδίσος — φαινόμενα.

ἐπειδὴ] ἐπεὶ Par. K.

ἐπιθυμεῖς] ἐπιθυμεῖ idem sec.
Bip. ἐπηθυμεῖς Ald.

θεὸς] Ad h. l. Mon. B. in m.
a m. pr. scripta haec habet: οὐ-
λὸς λέγεις. δ' θεὸς πάντα ἥδεν.
ἄλλον δίκηνσι τὰ φενδεῖ καὶ τὰ
ἄλιθεῖ, ὅπια: et in ima pagina
haec, quibus boni quae sequitur
descriptio carpi videtur: ὁμοῦ δὲ
πάντα ἐν τόδε τὸ μέρι τὸ γεννούσε
συνιθρισάς. ποιητικὴν καὶ φιλο-
ρικὴν, καὶ σοφιστικὴν. δύστε δίξε
ἀναγνωζώμενος, τὴν ἀκριβηταν
τῆς θανατοπιῆς.

ἀληθῆς] ἀληθές Mon. C.

τυγχάνει] τυγχάνοι idem et
Vind. B.

τὰ δ' οὖν] ταδοῦν Vind. F.

φαίνεται,] Editiones ante Bek-
kerum pro commate colon vel
punctum habent, quorum prius
ferri potest, quia οὗτο partim
ad sequentia pertinet. Magis vero
ad antecedentia referendum et
quod sequitur pro appositione ha-
bendum, cui comma aptius vide-
tur. Cf. p. 528. A.

τελευταῖα] τελευταῖα Vind. EF.
Bas. ab. τελευταῖας Iambl. —
Proclus in Civ. p. 433: ὅτι δὲ
καὶ πάλιν δαιμονίως εἴρηται τε-
λευταῖαν ἐν τῷ γνωστῷ τὴν ἀγε-
θοῦ ἰδέαν ὁρᾶσθαι καὶ μογις
(καὶ γὰρ τοῦτο προσέθηκεν) δῆ-
λλον ἀν γένοιτο γοήσασι, διότι
etc.

ἰδέα] εἰδέα Vind. F.

αὐτῇ] αὐτῇ Lob. Vind. F. C
Par. D. Ang. B. Vat. M. (non
Mon. B. quem Bekkerus quartum
addit.)

ὁρατῷ] τῷ ὁρ. Iambl. cod. Ciz.
et ed. Kiessl.

τεκοῦσα] τεκοῦσα. Ald. Bas.
ab. τεκοῦσα· Steph.

νοητῷ] τῷ νο. (Ven. B. Flor.
ACRTV.) Iambl. ed. pr. et
Kiessl. Ald. et reliquae ante Bek-
kerum nec non Stallbaumii pr.

αὐτῇ] Ita Lob. Vind. F. Mon.
B. Vat. B. Par. DK. sec. Bekk.
Ang. B. Flor. U. αὐτῇ Ven. C.
αὐτῇ reliqui codices cum Iambl.
et editis ante Bekkerum.

παρασχομένη] παρεχομένη Iam-
blich. cod. Ciz. et ed. Kiessl.

δεῖ] om. Iambl. cod. Ciz.

δημοσίᾳ] δημοσίου idem.

Ξυνοίομαι, ἔφη, καὶ ἐγὼ, ὅν γε δὴ τρόπον δύναμαι.
 "Ιδι τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, καὶ τόδε ξυνοιήθητι καὶ μὴ
 θαυμάσῃς, ὅτι οἱ ἐνταῦθα ἐλθόντες οὐκ ἐθέλουσι τὰ
 τῶν ἀνθρώπων πράττειν, ἀλλ' ἄνω ἀεὶ ἐπείγοντας
 Δ αὐτῶν αἱ ψυχαὶ διατρίβειν· εἰκὸς γάρ που οὕτως, εἴπερ
 αὖ κατὰ τὴν προειρημένην εἰκόνα τοῦτ' ἔχει. Εἰκὸς
 μέντοι, ἔφη. Τί δέ; τόδε οἶει τι θαυμαστὸν, εἰ ἀπὸ
 θείων, ἦν δ' ἐγὼ, θεωριῶν ἐπὶ τὰ ἀνθρώπειά τις ἐλ-
 θῶν κακὰ ἀσχημονεῖ τε καὶ φαίνεται σφόδρα γελοῖος
 ἔτι ἀμβλυώττων καὶ πρὸν ίκανῶς συνήθης γενέσθαι τῷ

Ξυνοίομαι] Ξυνοίομαι Steph.
 Mon. C. Flor. U.

ἐγὼ ὅν] ἐπομαι ὅσον (ἔς ὅσον
 Flor. U.) κατ' ἐμόν Mon. B. Flor.
 U.

τοίνυν] om. Lob. Vat. BM.
 δὴ τοίνυν Vind. EF. Ven. B.
 Ang. B. Flor. CRT. editi ante
 Bekkerum.

ἦν δ' ἐγὼ] post τόδε Vind. F.
 Ang. B.

τόδε] τὸ Vind. E.

οἱ] εἰ Vat. B. om. Vind. EF.
 Ang. B. Vat. H. Flor. ACR.

ἀεὶ ἐπείγονται αὐτῶν] αὐτ. ἐπ.
 ἀεὶ Flor.... In Vind. E. Mon.
 C. αὐτῶν post αἱ ψυχαὶ legitur.

D διατρίβειν] ἀεὶ δ. Vind. E.

εἰκὸς γὰρ etc. — ἔχει.] om.
 Fic.

αὖ] om. Vat. M.

εἰκόνα] εἰκόνα καὶ Vind. E.

τοῦτ'] Ita Par. A. Vind. BEF.
 Mon. C. Ang. B. Vat. H. Flor.
 ACRV. Bekkerus. ταῦτ' reliqui
 codices et editi.

ἔφη.] ἔφη; Stallb. sec.

τόδε οἶει τι] τὸ δέοι η τι Vind.
 F. In Vind. E. Mon. B. non ante,
 sed post τόδε interpungitur. Si-
 militer Ficinus: Quid autem hoc?
 mirandum putas etc.

ἀπὸ θείων] ἀποθ. Vind. E.

τὰ ἀνθρώπειά] τὰνθρώπειά
 Vind. BF. Mon. C. Ang. B. τὰ
 ἀνθρώπινά Vind. E.

ἀσχημονεῖ] ἀσχημονεῖν Lob.

γελοῖος] γελοῖως Ven. B. Vat.
 H. Flor. V.

ἔτι ἀμβλυώττων] ἐπαμβλυώτ-
 των Vind. F. Ang. B. Flor. R.
 Stephanus signum interrogandi
 adiecit.

σούτῳ] σούπω Mon. C. ante
 corr.

νπὸ τῶν αὐτὴν] Ita Mon. B. E
 videtur a m. pr. scriptum ha-
 buisse, sed τῶν in τὴν corre-
 ctum et in m. ab eadem manu
 νπὸ τὴν αὐτὴν appositum est.
 Post αὐτὴν Lob. Vat. M. ἐκείνην
 addunt.

μὴ πώποτε] μήπω ποτέ Vind.
 F. μηπώποτε Ang. B. μήποτε
 Lob. Vat. M. Flor. T. et ante
 corr. Vind. E.

ἰδόντων] εἰδότων Vind. F.
 Ang. B. Flor. R.

Οὐδ' ὁπωστιοῦν θαυμαστὸν]
 μὴδ' ὁπωστιοῦν:, οὐθὲ θαυμαστὸν
 Mon. B. Flor. U. sine interpunc-
 tionē post ιδόντων. μὴδ' etiam
 Par. DK. pro οὐδέ habent. In
 Vind. EF. ὁπωστιοῦν scriptum.

ἔφη] ante θαυμαστὸν Vind. F.
 Ang. B.

γε] om. Lob. Vat. BM. Par.
 K.

παρόντι σκότῳ ἀναγκαζόμενος ἐν δικαιστηρίοις ἢ ἄλλοθι που ἀγωνίζεσθαι περὶ τῶν τοῦ δικαίου σκιῶν ἢ ἀγαλμάτων ὡν αἱ σκιὰ, καὶ διαιμιλλᾶσθαι περὶ τούτου, ὅπῃ ποτὲ ὑπολαμβάνεται ταῦτα ὑπὸ τῶν αὐτὴν δικαιοσύνην Ε μὴ πώποτε ἰδόντων; Οὐδέ' ὀπωστιοῦν θάνατον, ἔφη. Ἀλλ' εἰ νοῦν γε ἔχοι τις, ἦν δὲ ἔγω, μεμνῆται ἀν, ὅτι 518 διτταὶ καὶ ἀπὸ διττῶν γίγνονται ἐπιταράξεις ὁμμασιν, ἐκ τε φωτὸς εἰς σκότος μεθισταμένων καὶ ἐκ σκότους εἰς φῶς. ταῦτα δὲ ταῦτα νομίσας γίγνεσθαι καὶ περὶ ψυχὴν, ὅπότε ἴδοι θορυβούμενην τινὰ καὶ ἀδυνατοῦσάν

518 ἔγω,] οὐ addunt Lob. Vat. M. F. Mon. B. Par. K. Ang. B. Flor. RT. ἔφη cum ζ super φ Par. D.

corum consensus rationi certe non repugnans in hac re plus valet.

διτταὶ] διττὰ Ald. Bas. ab.

ἀπὸ] ὑπὸ Vind. F. Ang. B.

γίγνονται] γίγνονται Mon. C. γίγνονται ἀν Lob. Vat. BM. (Par. K. sec. Bip. Flor. U.) cum editionibus ante Bekkerum.

ἐπιταράξεις] Pollux II. 65: νόσημα δὲ ὁρθαλμῶν, ὁρθαλμία. ἐπιτάραξις ὁμμάτων, παρὰ Πλάτωνι γλαμῆν, καὶ λημῆν. In quibus verba παρὰ Πλάτωνι ad omnia quatuor referenda videntur.

ἐκ τε] ἐκ γε Ald. Bas. a. Steph.

μεθισταμένων] μεθισταμένω Ven. B.

ἐκ] εἰ, adscripto in m. a m. pr. εἰ, Mon. B.

σκότους] σκότον (Par. K. sec. Bip.) Ald. etc. ante Bekkerum.

ταῦτα δὲ ταῦτα] Ita Par. AK. sec. Bekk. Vind. E. et corr. B. Mon. BC. Ven. B. Ang. B. Vat. M. Flor. ACRTV. ταῦτα δὲ ταῦτα Lob. Vind. F. et ante corr. B. Ven. C. Vat. BH. ταῦτα δὲ ταῦτα (Par. D. Flor. U.) editi ante Astii sec.

νομίσας] νομίσας τις Lob. Par. DK. Mon. B. Vat. M. Flor. U. et a m. s. Ven. B. cum editis ante Astii sec.

ὅπότε ἴδοτ] ὅπότε εἰδοι Vind. F.

μέμνηται] μέμνηται Lob. Mon. B. Vat. B. (hic cum οὐ super η) HM. Ven. C. Par. DK. secundum Bekk. Bas. b. μέμνηται Vind. E. Flor. T. μέμνηται Ven. B. Mon. C. et corr. in οἱ Vind. B. (ante corr. erat in hoc quoque proparoxytonon.) μέμνημαι, omisso ἀν, Vind. F. Ang. B. μέμνηται Ald. μέμνηται Bas. a. μέμνηται Ast. tert. et Stallbaumius rationi a. Buttmanno gramm. I. p. 442. excogitatae obsecutus. Cui quum auctor ipse ib. II. p. 422. ab Hermanno monitus diffidere coepert, in re dubia grammaticorum a Dobreo ad Aristoph. Plut. 991. citatorum praeceptum et codicis Par. A. auctoritatem cum Bekkerio sequi et Stephanianam scripturam servare malui. Quamquam de Par. A. dubitatio quaedam oriri ex eo potest, quod Mon. B. qui clare μέμνηται exhibet, mentionem Bekkerus non magis, quam illius iniecit, et quod idem ille Par. A. Leg. L. V. p. 731. C. 742. E. VI. 776. B. XI. 931. E. optativum (nam is ubique requiritur) perfecti οὔτημαι ita ut reliqui οὔτητο facit. Neque nostro loco Florentinos quinque, de quibus Stallbaumius tacet, cum Stephano consentire credo. Sed grammati-

τι καθορᾶν, οὐκ ἀν ἀλογίστως γελῶ, ἀλλ' ἐπισκοποῖ
ἀν, πότερον ἐκ φανοτέρου βίου ἥκουσα ὑπὸ ἀγθείας
B ἐσπότωται, η ἐξ ἀμαθίας πλείονος εἰς φανότερον ἰοῦσα
ὑπὸ λαμπροτέρου μαρμαρυγῆς ἐμπέπλησται, καὶ οὕτω
δὴ τὴν μὲν εὐδαιμονίσειεν ἀν τοῦ πάθους τε καὶ βίου,
τὴν δὲ ἐλεήσειε, καὶ εἰ γελῶν ἐπ' αὐτῇ βούλοιτο, ἥττον
ἀν καταγέλαστος ὁ γέλως αὐτῷ εἴη, η ὁ ἐπὶ τῇ ἄνωθεν
ἐκ φωτὸς ἥκουόνη. Καὶ μάλα, ἔφη, μετρίως λέγεις.
Δεῖ δὴ, εἶπον, ἡμᾶς τοιόνδε νομίσαι περὶ αὐτῶν, εἰ +82
ταῦτα ἀληθῆ· τὴν παιδείαν οὐχ οἴαν τινὲς ἐπαγγελλού-
μενοί φασιν εἶναι, τοιαύτην καὶ εἶναι. φασὶ δέ που οὐκ

ἀν ἀλογίστως] ἀναλογίστως
Vind. BF.

γελῶ] Ita Par. A. Vind. BF.
Mon. C. Vat. H. et a m. pr.
Ven. C. om. Flor. AC. γελῶν
reliqui codices (addito ἀν Vind.
E.) et editi. Cf. Vol. I. p. 366, b.

ἐπισκοποῖ] ἐπισκοποίν Vat.
BM. Ven. B. Vind. E. (hic omissio
ἀν) Flor. T. Stallbaumius.

φανοτέρου] Ita Par. ADK.
sec. Bekk. Lob. Vat. BM. Ven.
C. a m. pr. Ang. B. Flor. T.
Ald. Bas. ab. φανερωτέρου Vind.
B. Mon. C. Ven. B. Vat. H. φα-
νερωτάτον Vind. E. φανωτέρου
Mon. B. Vind. F. (Flor. ACRUV.)
Steph. Ast. pr. sec.

ἥκουσα] ἥκ. Lob. Vind. EF.
ἀγθείας] Ita Par. A. Vind. BF.
Mon. C. Ven. B. et corr. C.
Ang. B. Vat. H. Flor. ACRV.
ἀληθείας Lob. Vind. E. Vat. BM.
Flor. T. et a m. pr. Ven. C.
ἀμαθίας Ald. Bas. a. ἀμαθίας
Mon. B. (addito hic commate.)
Par. K. et corr. D. Flor. U. item
corr. et Steph. Ast. pr.

ἔξ ἀμαθίας] ἔξαμ. Vind. F.
ἔξ ἀμαθείας Lob. Vind. E.

φανότερον] φανερώτερον Vind.
EF. Ven. B. Ang. B. Bas. b. Ast.
pr. φανώτερον Mon. BC. (Flor.
RU.) Steph. Ast. sec. φανότερον
cum reliquis Par. K. sec. Bekk.

B ἰοῦσα] ἰοῦσαν Vat. H.

λαμπροτέρου] Stallbaumius im-
perite pro feminino habet. Hunc
locum expressit Celsus apud Ori-

genem L. VI. p. 321. φάσκων,
οὓς ἀν τις εἰς λαμπρὸν φῶς ἐν
σκότους προσαγάγῃ, τούτους μὴ
δυναμένους ἀντέχειν ταῖς μαρ-
μαρυγαῖς πολάξεσθαι τὴν ὅψιν
καὶ βλάπτεσθαι καὶ νομίζειν πη-
ροῦσθαι.

εὐδαιμονίσειεν ἀν] εὐδαιμονή-
σειεν ἀν Vind. BF. Mon. C. Ven.
B. Vat. H. εὐδαιμονήσεις Lob.
Etiam Vat. BM. ἀν omittunt.

τε] om. Ven. B. Par. K.

δὲ] δ' Vind. F. Ang. B.

ἐλεήσει] Ita Lob. Vind. BEF.
Mon. BC. Vulgo tacentibus omni-
bus ἐλεήσειεν.

ἐπ' αὐτῇ] ἐπαντῇ Vind. E.

μάλα] μάλ' Vind. F. Ang. B.
Flor. T.

Δεῖ δὴ — τέτραπται. 519. B.]
excerpsit Iamblichus προτρέπτ.
cap. 16. p. 241. sqq. Kiessl. ini-
tio hunc in modum reficto: "Ετι
τοίνυν, εἰ ταῦτα ἀληθῆ, δεῖ
νοῆσαι περὶ αὐτῶν τοιόνδε τι.
τὴν παιδείαν etc. νοῆσαι pro νο-
μίσαι, superscripto tamen a m.
pr. vulgato, etiam Flor. T. ex-
hibet.

ταῦτα] ταῦτ' Vind. BE. Mon.
C. Vat. H.

ἀληθῆ·] Astius, Bekkerus et
Stallbaumius pro colo comma po-
nentes incertum relinquunt, utrum
verba εἰ ταῦτα ἀληθῆ ad sequen-
tia pertineant, an ad antecedentia.

παιδείαν] παιδίαν Mon. C.

ἐνούσης ἐν τῇ ψυχῇ ἐπιστήμης σφεῖς ἐντιθέναι, οἷον Κ
τυφλοῖς ὄφθαλμοῖς ὅψιν ἐντιθέντες. Φασὶ γὰρ οὖν,
ἔφη. 'Ο δέ γε νῦν λόγος, ἦν δ' ἔγω, σημαίνει ταύτην
τὴν ἐνοῦσαν ἑκάστου δύναμιν ἐν τῇ ψυχῇ καὶ τὸ ὄργα-
νον, ὡς καταμανθάνει ἑκάστος, οἷον εἰ ὅμμα μὴ δυνα-
τὸν ἦν ἄλλως, ἢ ξὺν ὅλῳ τῷ σώματι στρέφειν πρὸς τὸ
φανὸν ἐκ τοῦ σκοτώδους, οὗτοι ξὺν ὅλῃ τῇ ψυχῇ ἐκ
τοῦ μιγνομένου περιακτέον εἶναι, ἕως ἂν εἰς τὸ ὃν καὶ
τοῦ ὄντος τὸ φανότατον δυνατὴ γένηται ἀνασχέσθαι
θεωμένη· τοῦτο δ' εἶναι φαμεν τάγαδόν. ἢ γάρ; Ναί. D
Τούτου τοίνυν, ἦν δ' ἔγω, αὐτοῦ τέχνη ἀν εἴη, τῆς

παιδείαν, Steph. Bekkerus et
Stallbaumius.

οἵαν τινὲς] οἷον τινες Iambl.
ed. pr. et cod. Ciz. οἱάντινες
Ald. οἴάν τινες Bas. ab. Astius
ante οἵαν incisionem fecit.

ἐπαγγελλόμενοι] ἀπαγγελλόμε-
νοι Ald. Bas. a.

C σφεῖς] σφᾶς Vind. E. σφεῖ
Vind. F. om. Iambl.

ἐντιθέντες] ἐντιθέντας Mon.
B. Flor. U.

Φασὶ γὰρ οὖν, ἔφη.] om.
Iambl. item proxime sequentia
ἦν δ' ἔγω, in quibus Mon. C.
pro δ' ante corr. δὲ habebat.

ἐνοῦσαν] ἐνοῦσαν Vind. E.
ἐνάστον] ἐνάστῳ Iambl. Ast.
tert. Cf. p. 527. D: ὅτι ἐν τού-
τοις τοῖς μαθήμασιν ἐνάστον
ὄργανον τῇ ψυχῇ ἐκμαθαίσεται.

Phaedon. p. 117. A: ἔως ἀν. σον
βάρος ἐν τοῖς σκέλεσι γένηται.
Symp. p. 215. E: οὐδὲ ἐτεθορύ-
βητό μον ἦ. ψυχή. quibus locis
dativus maeque commodus erat,
genitivus autem non pro eo po-
situs aut eius vi praeditus videri
debet, quemadmodum Stallbaumio
visus est. Cf. p. 538. D.

ῷ] δ Vind. BF. Mon. C. Vat.
H. Flor. ACR. Iambl. cod. Ciz.
et ed. pr.

οἷον εἰ] οἰονεὶ Lob. Vind. F.
Vat. M. οἷον εἰ Vind. E.

μὴ δυνατὸν ἦν] εἶναι μὴ δυν.
Lob. Vat. M. εἶναι μὴ δυν. ἦν
Bas. b.

ἄλλως] ἄλλῳ Vind. F. Ang. B.
Flor. . . (R. opinor.)

ξὺν ὅλῳ] ξυνόλῳ Vind. F.
Ang. B.

φανὸν] φαεινὸν Iambl.
ξὺν ὅλῃ] ξυνόλῃ Vind. F.

ὄντος τὸ] τὸ om. Iambl. cod.
Ciz.

φανότατον] Ita Lob. Vind. BE.
Iambl. cod. Ciz. et ed. pr. Ald.
Bas. ab. φανώτατον Mon. BC.
Vind. F. Iambl. ed. Kiessl. Steph.
Ast. pr. sec. Bekkerus et Stall-

baumius hoc tantum demonstrant,
φανώτατον vulgatum esse, de
codicibus tacent, Stallbaumius for-
sitam recte, Bekkerus haud dubie
perperam.

γένηται] γένοιται Mon. C.
ἀνασχέσθαι θεωμένη] ἀνον-
χεῖσθαι δ. Iambl. cod. Ciz. specu-
culando transcendere Fic.

τοῦτο δ'] τοῦτο Vind. BE.
Mon. C. Flor. ACR. Etiam Vat.
H. δ' omittit.

ἢ γάρ; Nat.] om. Iambl. Pro D
ἢ Vind. F. ἢ habet. Aldus, Ste-
phanus et Astius in pr. et sec.

H dederunt.

Toύτοις] Toύτο editiones ante
Astium (Ald. τοῦτο) et fortasse
Par. A. Vat. M. quos quidem
Bekkerus in eis, secundum quos
τούτοις scripsérunt, non refert. Sed
non magis in eis refert Mon. B.
qui tamen τούτοις exhibet, quae
necessaria reliquorum omnium et
Iamblichī lectio est.

ἦν δ' ἔγω] om. Iambl.

περιαγωγῆς, τίνα τρόπον ὡς ὁ̄στα τε καὶ ἀνυσιμώτατα μεταστραφήσεται, οὐ τοῦ ἐμποιησαι αὐτῷ τὸ δρᾶν, ἀλλ’ ὡς ἔχοντι μὲν αὐτῷ, οὐκ ὁρθῶς δὲ τετραμένῳ οὐδὲ βλέποντι οἴ̄ ἔδει, τοῦτο διαμηχανήσασθαι. "Εοικε γὰρ, ἔφη. Αἱ μὲν τοίνυν ἄλλαι ἀρεταὶ παλούμεναι ψυχῆς κινδυνεύουσιν ἐγγύς τι εἶναι τῶν τοῦ σώματος· τῷ ὅντι γὰρ οὐκ ἐροῦσαι πρότερον ὕστερον ἐμποιεῖσθαι ἔθεσί^E τε καὶ ἀσκήσειν· ἡ δὲ τοῦ φρονῆσαι παντὸς μᾶλλον θειοτέρου τινὸς τυγχάνει, ὡς ἔοικεν, οὖσα, ὃ τὴν μὲν δύναμιν οὐδέποτε ἀπόλλυσιν, ὑπὸ δὲ τῆς περιαγωγῆς

αὐτοῦ] om. Vat. H.

εἰη,] Comma scite apposuit Bekkerus. Artem non inferendae animo scientiae neque alius cuiuspiam rei, sed huius ipsius, quae modo commemorata sit, conversionis efficiendae esse Socrates docet.

περιαγωγῆς,] περὶ ἀγωγῆς. Iambl. ed. pr. περιαγωγῆς. Ald. Bas. ab.

τίνα τρόπον ὡς] Τίνα τρόπον, ὡς Ald. Τίνα τρόπον; Ως Bas. ab. τίνα τρόπον; ὡς Iambl. ed. pr. Pro τίνα Vind. F. τινά, Lob. τινα habet.

οὐ τοῦ] αὐτοῦ Vind. E. Vat. H. Flor. AC.

αὐτῷ] αὐτὸν Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H.

τὸ] om. Iambl. cod. Ciz.

αὐτὸν] αὐτὸν Par. D. αὐτῷ Vat. H.

τετραμένῳ] τετραμένος Iamblich. cod. Ciz.

διαμηχανήσασθαι] δὴ μηχανήσασθαι Mon. C. Vind. B. Vat. H. Flor. ACV. Iambl. cod. Ciz. Ast. sec. tert. δεῖ μ. Vind. E. et a m. s. Par. A. Idem in Iamblichio requirebat Scaliger, recte improbante Kiesslingio. Cf. Leg. L. V. p. 746. C: τοῦτ' αὐτὸν διαμηχανᾶσθαι δύως ἀν γίγνηται. Epist. VII. p. 348. A: δὲ διαμηχανώμενος, τίνα τρόπον ἀνασοβήσοι με. quem locum Stephanus in thes. habet.

"Εοικε γὰρ, ἔφη.] om. Iambl. ἐγγύς τι] τι om. Mon. C.

τῷ ὅντι] τωόντι idem et Vind.

E. ὕστερον] om. Mon. B.

ἐμποιεῖσθαι] ἐμπεσεῖσθαι Vind.

B. Mon. C.

τε] om. Vind. F. Mon. B. Par. K. Ang. B. Flor. RU. Iambl. cod. Ciz.

παντὸς μᾶλλον] μ. π. Lob. E. Vat. B. Flor. T. παντὸς Vat. M.

δύναμιν] διάνοιαν Vind. E.

ζηγόσιμόν τε] τε om. Par. AD. Ven. C. quod ob reliquorum et affinium dissensionem librariorum negligentiae imputandum videtur. Ceterum necessariam particulam non puto, sed aptam.

ἄχρηστον] ἄχριστον Vind. E.

γίγνεται] γίν. Vind. B. Mon. 519

C.

ἐννενόησις] μὲν νενόησις Mon. C. ἐννενόησις Vind. F. ἐννενόησις Lob. ἐννενόησις Vat. M. Comma a Stephano, Bekkero et Stallbaumio additum delevi, quia genitivi, qui sequuntur, non minus a praecedente verbo, quam a nomine subsequentे pendent.

πονηρῶν μὲν] μὲν π. Iambl. μὲν om. Par. K. sec. Bekk. πων: μὲν Ald.

δομιν] δομιν Mon. C.

βλέπει] βλέπειν Iambl. cod. Paris.

ταῦτα] πάντα (Ven. C.) Iambl. ed. pr. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. (ea Fic.)

ἔφ' ἄ] ἔφα Vind. F. ἔφ' ὁ Stallb. pr.

τέτραπται] τρέπεται Mon. C.

χρήσιμόν τε καὶ ὀφέλιμον καὶ ἄχρηστον αῦτον καὶ βλαβεῖς 519
ρὸν γίγνεται. ήτοι οὕπω ἐννενόηκας τῶν λεγομένων πονηρῶν μὲν, σοφῶν δὲ, ὡς δριμὺ μὲν βλέπει τὸ ψυχάριον καὶ ὁξέως διορᾶ ταῦτα, ἐφ' ἣ τέτραπται, ὡς οὐ φαύλην ἔχον τὴν ὄψιν, κακίᾳ δ' ἡναγκασμένον ὑπηρετεῖν, ὥστε ὅσῳ ἀν δξύτερον βλέπῃ, τοσούτῳ πλείω κακὰ ἐργαζόμενον; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Τοῦτο μέντοι, ἦν δ' ἔγω, τὸ τῆς τοιαύτης φύσεως εἰ ἐκ παιδὸς εὐθὺς κοπτόμενον περιεκόπη τὰ τῆς γενέσεως ξυγγενῆ, ὥσπερ μολυβδίδας, Βαῖ δὴ ἐδωδαῖς τε καὶ τοιούτων ἥδοναῖς τε καὶ λιχνείαις

ώς] ἄτε Mon. B. Flor. U.
ἔχον] ἔχων Vind. F. et, sup.
ο, Lob.

δὲ] δὲ Vind. F. Iambl.

ἡναγκασμένον] ἡναγκασμένη
Iambl. cod. Ciz. ἡναγκασμένην
cod. Paris.

ὑπηρετεῖν,] ὑπηρετεῖν; Steph.
ώστε] om. Ang. B. Flor. RT.
Stallbaumius. Astio. in tert. καὶ
eius loco ponendum videtur. Sed
satius fuerit participium ἐργαζό-
μενον, pro quo iudicem libri, qui
ώστε omitunt, cum Ven. B. ἐρ-
γάσεται, Ang. B. etiam praepo-
sito variae lectionis indice ἀλλως,
exhibit, vel verbi finiti potes-
tate praeditum statuere, qua-
ratione usus est Bernhardy synt.
p. 471. vel coniunctioni ὕστε ita
subiunctum habere, ut si pro ea
καὶ οὔτως seu καὶ διὰ τοῦτο di-
ctum esset. Cf. L. II. p. 362.
D: ὕστε καὶ σὺ, εἴ τι ὅδε ἐλει-
πει, ἐπάμυνε, et Leg. L. VIII.
p. 834. D: ὕστε ἔσται καὶ τού-
των παιδίας χάριν ἔρις τα καὶ
ἀγωνία. quibus locis imperativus
a coniunctionis natura certe haud
minus alienus eodem modo expli-
candus videtur.

Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη.] om.
Iambl. πάνυ μὲν etc. Lob. Vat. M.
μέντοι] bis deinceps scriptum
in Vind. E.

ἦν δὲ ἔγω] om. Iambl.

κοπτόμενον] κοπτόμενον Vind.
F. Iambl. cod. Ciz. περικοπτό-
μενον Vind. E.

περιεπόπη] περιεπόπει Iambl.
cod. Ciz.

τὰ] τὰς Vind. EF. Mon. B.
Par. DK. Flor. ACU. Ven. C. a
m. s. et Iambl.

ξυγγενῆ] ξυγγενεῖς non solum
illū codices, qui τὰς habent, (Ven.
C. sine correctione) sed etiam
Vind. B. Mon. C. Vat. H. et
Flor. R. ξυγγενῆς Ang. B. ξυγ-
γενεῖς Iambl. Comma Stallbau-
mius in sec. nullum addens verba
sequentia ὥσπερ μολυβδίδας ut
artius cum his, quam cum verbo
περιεπόπη coniuncta videantur,
fecit; quod si verum putaret, τὰς
ξυγγενεῖς praeferre debebat. At-
que id ipsum Schleiermacherus
dubitabat an praestanter. Mihi
Plato, si τὰς scripsisset et iam
hic μολυβδίδας in animo habuis-
set, non ξυγγενεῖς, sed aliud
massae plumbeae magis conve-
niens adiectivum positurus fuisse
videtur.

μολυβδίδας] μολυβδίνας Flor.
AC. μολιβδίδας Mon. B. Vat. B.
ut est apud Origenem adv. Cels.
L. VII. p. 334: βαρονυμένη (ψυ-
χή) ὑπὸ τῶν τῆς κακίας μολιβδί-
δων. et in uno Clementis Al. co-
dice Strom. L. III. p. 570. haec
imitati: διὰ ταῦτα οὐδὲ καθα-
ρὰν ἀπολύνοντας τὴν ψυχήν, ἀλλ'
ώσπερ μολυβδίδας τὰς ἐπιθυμίας
μεθ' ἔαυτῆς φερομένην.

ἐδωδαῖς] αἰδωδαῖς Vind. F. B

τοιούτων] τῶν τοιούτων Vind.
EF. Ven. B. Ang. B. Flor. R.
Iambl. ed. pr. et Kiessl. (non

προσφυεῖς γιγνόμεναι περὶ τὰ κάτω στρέφουσι τὴν τῆς ψυχῆς ὄψιν· ὡν εἰ ἀπαλλαγὴν περιεστρέφετο εἰς τὰ ἀληθῆ, καὶ ἐκεῖνα ἀν τὸ αὐτὸ τοῦτο τῶν αὐτῶν ἀνθρώπων ὁξύτατα ἔωρα, ὥσπερ καὶ ἐφ' ἣ νῦν τέτραπται. Εἰκός γ', ἔφη. Τί δέ; τόδε οὐκ εἰκός, ἢν δ' ἔγω, καὶ ἀνάγκη ἐκ τῶν προειδημένων, μήτε τοὺς ἀπαιδεύτους καὶ ἀληθείας ἀπείρους ἴκανῶς ἀν ποτε πόλιν ἐπιτροπεῦσαι, μήτε τοὺς ἐν παιδείᾳ ἔωμένους διατρίβειν διὰ τέλους, τοὺς μὲν, ὅτι σκοπὸν ἐν τῷ βίῳ οὐκ ἔχουσιν ἔνα, οὐ στοχαζομένους δεῖ ἀπαντα πράττειν, ἢ ἀν πράττωσιν ἰδίᾳ τε καὶ δημοσίᾳ, τοὺς δὲ, ὅτι ἐκόντες εἶναι οὐ πράξουσιν, ἡγούμενοι ἐν μακάρων νήσοις ζῶντες ἔτι

codd. Ciz. et Paris.) Ald. Bas. ab. Steph. (tacentibus Bip.) et Astius.

τε] om. Vat. B. Vind. E.

λιγνεῖαις] λιγνίαις Vind. E. λιγνεῖαις Iambl. codd. Ciz. et Paris. λιγνίαις Mon. C.

γιγνόμεναι] γιν. Vind. E.

τὰ] om. Par. A. Vind. BF. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV. Ven. C. et a m. pr. B. τὸ Lob. Vat. BM. Ang. B. Flor. RT. et a m. s. Ven. B. quod aequa bonum et a codicibus aequa firmum ac vulgatum τὰ videtur. Itaque incertum est, utrum genuinum sit. Nisi forte etiam περὶ in dubitationem vocare volumus.

εἰ] om. Lob. Vat. M.

περιεστρέφετο] περιεστρέφοιτο „ut videtur“ Par. D. περιεστρέφοιτο Mon. B. Flor. U.

τὰ ἀληθῆ] Ita Lob. Vind. BEF. Mon. BC. Flor. ACRTUV. Iambl. ed. Kiessli ἀληθῆ Iambl. ed. pr. Ald. Bas. a. τὰληθῆ reliquae editiones, Bekker et Bipontinis tacentibus. Ceterum quod Stallbaumius in sec. „temerario consilio post εἰς τὰληθῆ“ interpolationem in ceteris editionibus omissam esse queritur, de iis, quas contulit, hoc est, de Bekkeriana, Astii tertia et ipsius priori interpretandum est: reliquae omnes comma habent.

ἐκεῖνα] εἰ ἐκεῖνα Vind. F. Flor. AC. ἢ ἐκ. Ang. B.

ἔωρα, ὥσπερ] om. Iambl. codd. Ciz. et Paris. „Post ὁξὺ in ms. nostro eraτ lacuna, quain proclive erat tollere ex Platone.“ Arcerius.

καὶ] om. Ang. B. Flor. R.

γ'] γε Lob. Vind. B. Mon. C.

δέ] δεῖ Par. A. Stallb. sec. Cf. Vol. I. p. 155, b. In Vind. BE. non hic, sed post τόδε interpunktio est. Similiter Ficinus: Quid istud? nonne probabile etc.

οὐκ εἰκός] Ita Mon. B. ante corr. οὐκειός e corr.

ἐπιτροπεῦσαι] ἐπιτροπεύσι Vind. F. ἐπιτροπεύσειν Ang. B. Elor. R.

διὰ τέλους,] διατ. Vind. E. διὰ τέλους. Ald. Bas. ab. διὰ τέλους; Steph. Ast. pr. sec.

σκοπὸν] σκοπῶν Vind. F.

ἔχουσιν — δεῖ — πράξουσιν]

ἔχουσι — δή — πράξωσιν idem.

ζῶντες] ζῶντές τε Vind. EF.

Ven. B.

ἔτι] om. Vind. F.

ἀπωνεῖσθαι] ἀπωνεῖσθαι idem, ἀποκεῖσθαι Ang. B. Cf. Polit. p. 284. E. Pro signo interrogandi editiones ante Bekkerum punctum habent.

ἔφη] λέγεις Vat. M.

Ημέτερον] In Par. K. primis litteris νῦ superscriptum.

οἰνιστῶν,] Vulgo comma abest.

ἀφικέσθαι — ἀνάβασιν D.] laudat Clemens Al. Strom. L. V.

ἀπωνίσθαι; Ἀληθῆ, ἔφη. Ἡμέτερον δὴ ἔργον, ἦν δ' ἐγώ, τῶν οἰκιστῶν, τάς τε βελτίστας φύσεις ἀναγκάσαι ἀφικέσθαι πρὸς τὸ μάθημα, ὃ ἐν τῷ πρόσθεν ἔφαμεν εἶναι μέγιστον, ἵδεῖν τε τὸ ἀγαθὸν καὶ ἀναβῆναι ἐκείνην Δ τὴν ἀνάβασιν, καὶ ἐπειδὴν ἀναβάντες ἴκανως ἕδωσι, μὴ ἐπιτρέπειν αὐτοῖς ὃ νῦν ἐπιτρέπεται. Τὸ ποῖον δή; Τὸ αὐτοῦ, ἦν δ' ἐγώ, καταμένειν καὶ μὴ ἐθέλειν πάλιν καταβαίνειν παρ' ἐκείνους τοὺς δεσμώτας μηδὲ μετέχειν τῶν παρ' ἐκείνους πόνων τε καὶ τιμῶν, εἴτε φαυλότεραι εἴτε σπουδαιότεραι. Ἐπειτ', ἔφη, ἀδικήσομεν αὐτοὺς καὶ ποιήσομεν χεῖρον ξῆν δυνατὸν αὐτοῖς ὃν ἄμεινον; Ἐπελάθου, ἦν δ' ἐγώ, πάλιν, ὡς φίλε, ὅτι νόμῳ οὐ E

p. 729. ex eoque Eusebius praep. ev. L. XIII. pag. 404. cum hac præfatione: εἰκότως τοίνυν καὶ (Eus. ὁ πρὸ καὶ habet) Πλάτων ἔθιξε τὰς βελτίστας φύσεις. Pro ἀφικέσθαι Par. DK. Mon. B. Flor. U. ἀφικέσθαι præbent, et in Vind. B. ἀφι correctioni debetur.

πρόσθεν] Ita Par. ADK. sec. Bekk. Löb. Vind. BF. Mon. C. Vat. BM. Ven. C. Ang. B. Flor. RV. Clem. Euseb. ἔμπροσθεν reliqui codices cum Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Stallb. pr.

τε] om. Euseb.

τὸ ἀγαθὸν] ἀγαθὸν Vat. H. τάγαθὸν Clem. Euseb.

D δεσμώτας] δεσμότας Ald. Bas. ab.

ἀδικήσομεν] ἀδικήσωμεν Vind. F. et, sup. o, Ang. B. Flor. R. αὐτοὺς] αὐτούς; Steph. In reliquis fere comma additum.

ποιήσομεν] ποιήσωμεν Vind. F. et, sup. o, Ang. B.

χεῖρον] χείρω Mon. C.

ξῆν] Ita h. l. Aldus, qui i illud plerumque omittit.

δυνατὸν αὐτοῖς ὃν ἄμεινον; Ἐπελάθου, ἦν δ' ἐγώ, πάλιν, ὡς φίλε, ὅτι νόμῳ οὐ τοῦτο μέλει] Horum loco Ven. C. a m. pr. nihil nisi δυνατὸν habebat, cui recens manus reliqua addidit. In Vat. B. Par. DK. Bekkerus δυνατὸν τούτον μέλει pro iis

scriptum idque in Par. D. in ἀλλ' οὐ τούτον ἦν δ' ἐγώ correctione mutatum, hoc ipsum vero in Vat. M. (sine litura et a m. pr.) exaratum tradit. Sed Parisiensem K. δυνατὸν τοῦτο μέλει habere Bipontini testantur, et Vaticano B. ac Parisiensi D. (ante corr.) ipse Bekkerus postea τοῦτο assignat. Lob. ἀλλ' οὐ τούτον, ἦν δ' ἐγώ, μέλει habet. Singularis et ad lacunam explendam non omnino inepte excogitata est lectio Mon. B. haec: σὺ ἦν δ' ἐγώ ἔστις ἐπιλεκτοῦ ὃ πολλάκις ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ἔφαμεν, ὅτι ἀνδρὶ νομοθέτῃ οὐ δυνατὸν τοῦτο μέλειν, quae eadem in Flor. U. sed in margine et a m. s. scripta exstat, addito ibidem proxime sequente ὥπως, quo certius inter ξῆν et ὥπως ista inserenda esset constaret. Neque vero difficile erat ex eis, quae Glauco respondet, sensum eorum, quae intercidisse apparebat, colligere, sed πάλιν divinando assequi ille non poterat, quia Glauco nondum oblitus illud erat, sed Adimantus initio libri quarti immemorem se consilii ad totius civitatis felicitatem necessario pertinentis exhibuerat, cuius oblivionis Socrates hic Glauconem arguens non ipse memoria lapsus, sed eadem libertate usus est, quam Vol. I. p. 170, b. et 182, b. demonstravimus. Hanc enim

τοῦτο μέλει, ὅπως ἐν τι γένος ἐν πόλει διαφερόντως εὖ πράξει, ἀλλ' ἐν ὅλῃ τῇ πόλει τοῦτο μηχανᾶται ἔγγενέσθαι ξυναρμόττων τὸν πολίτας πειθοῖ τε καὶ ἀνάγκη, ποιῶν μεταδιδόναι ἀλλήλους τῆς ὥφελείας, ἢν ἣν ἔκαστοι 520 τὸ ποινὸν δυνατοὶ ὕσιν ὥφελεῖν, καὶ αὐτὸς ἐμποιῶν τοιούτους ἄνδρας ἐν τῇ πόλει, οὐχ ἵνα ἀφίγη τρέπεσθαι ὅπη ἔκαστος βούλεται, ἀλλ' ἵνα παταχῷται αὐτὸς αὐτοῖς ἐπὶ τὸν ξύνδεσμον τῆς πόλεως. Ἀληθῆ, ἔφη· ἐπελαθόμην γάρ. Σκέψαι τοινυν, εἶπον, ὡς Γλαύκων, ὅτι οὐδ'

interpretationem alteri praefero, quam μέμνησαι illud Glauconis L. V. p. 466. A. commendare aliqui possit, ut Socrates hoc dicat: *semel tu recordatus, iterum oblitus es.* Sed utramlibet adsciveris, πάλιν supra interpolatoris captum fuisse fateberis. πολλάνις vero obtrudere Platoni non debebat, quin re vera non amplius bis dictum in superioribus esset. Non magis feliciter ei in nomine δυνατὸν, quod ante τοῦτο μέλει superesse videbat, cum reliqua oratione construendo res cessit, neque in verborum μηχανᾶται, ξυναρμόττων et reliquorum subiecto coniectura eum non fecerit, ut paullo post apparebit.

ἢν ἄμεινον] Ita Par. A. Vind. F. Ang. B. Flor. R. et a m. s. Ven. C. ἄμεινον ὃν Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. ACTV. Stallb. pr. ἄμεινον Ven. B. editi ante Bekkerum; qua lectione non iterum uti debebat Matthiae gramm. p. 1112. ut omitti hoc participium posse doceret. Quamquam hoc ipsum recte statuere videtur.

E πάλιν] om. Fic.

νόμῳ] Ita Par. A. Vind. BEF. Mon. C. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. hoc est, omnes, qui integrum hunc locum exhibent. Nec aliter in supplemento Veneti C. scriptum est, et Ficinus quoque legi posuit. Itaque νόμοθέτη, quod in omnibus editionibus exstat, nullam a librorum testi-

monio auctoritatem habet. At per se optimum est. Neque vero alterum ineptum. Cf. Tim. p. 24. B: τὸ δὲ αὐτὸν περὶ τῆς φρονήσεως ὁρᾶς πον τὸν νόμον τὴδε ὅσην ἐπιμέλειαν ἐποιήσατο εὑθὺς καὶ ἀρχὰς περὶ τε τὸν νόμον ἀπαντά μέχρι μαντικῆς καὶ λατοικῆς πρὸς ὑγίειαν ἐν τούτων θείων ὄντων εἰς τὰ ἀνθρώπινα ἀνευρὼν, ὃσα τε ἄλλα τούτοις ἐπεται μαθήματα, πάντα κατηγόρειν. Simillima his nostro loco μέλει, μηχανᾶται, ξυναρμόττων, ποιῶν habemus: αὐτὸς ἐμποιῶν vero et ἵνα παταχῷται αὐτὸς si quis iusto audacius de ipsa lege praedicari censeat, de legislatore dicta putet enallage facillima.

τοῦτο] Hoc quoque ob librorum auctoritatem in locum vulgati τούτου, quod tantum Lob. Ven. B. Vat. M. exhibent, substituendum putavi. Legitur in Par. A. Vind. BEF. Mon. C. Ven. C. (a m. s.) Ang. B. Vat. H. De Par. DK. Vat. B. supra dictum est. Nec non accedere videntur Flor. ACRTV. quibus Stallbaumius in pr. (in sec. neque hoc neque νόμῳ commemoratione dignum putavit.) τούτω tribuit. Cf. p. 538. C. et Timaei locus modo citatus, qui paullo ante illa haec habet: οἷς οὐδὲν ἄλλο πλήν τὰ περὶ τὸν πόλεμον ὑπὸ τοῦ νόμου προσετάχθη μέλειν. Etiam Bernhardy synt. p. 150, τοῦτο h. l. recipiendum suspicabatur.

ἀδικήσουμεν τοὺς παρ' ἡμῖν φιλοσόφους γιγνομένους,
ἄλλὰ δίκαια πρὸς αὐτοὺς ἐροῦμεν προσαναγκάζοντες
τῶν ἄλλων ἐπιμελεῖσθαι τε καὶ φυλάττειν. ἐροῦμεν γὰρ,
ὅτι οἱ μὲν ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσι τοιοῦτοι γιγνόμενοι Β
εἰκότως οὐ μετέχουσι τῶν ἐν αὐταῖς πόνων· αὐτόματοι
γὰρ ἐμφύονται ἀκούσης τῆς ἐν ἑπάσῃ πολιτείᾳ, δίκην
δ' ἔχει τό γε αὐτοφυὲς μηδενὶ τροφὴν ὁφεῖλον μηδ'
ἐκτίνειν τῷ προθυμεῖσθαι τὰ τροφεῖα· ὑμᾶς δ' ἡμεῖς
ὑμῖν τε αὐτοῖς τῇ τε ἄλλῃ πόλει ὕσπερ ἐν συήνεσιν

μέλει] μέλλει Flor. ACRTV.

ἐν πόλει] post διαφερόντως
Vind. B. Mon. C.

πράξει] πράξῃ Par. K. sec.
Bekk. πράξῃ Mon. B. (tacente
eodem) Ald. Bas. ab.

ἐγγενέσθαι] ἐπαινεῖσθαι Vind.
F.

ξνναρμόττων] ξαρμόττων Vind.
E. ξνναρμόττων Lob. Vat. BM.
Ven. C. Par. DK. Ald. Bas. ab.

ἀνάγνη,] In editis ante Bekkerūm
ante πειθοὶ interpungitur
non sine concinnitatis detimento.

ἔναστοι] ἔναστος Vind. E.

520 καὶ] om. Ang. B.

ἐμποιῶν] ἐκποιῶν Ven. B.

τοιούτονς] τοιαύτονς Vind. E.

ἐν] om. idem.

ἀφίη] ἀφιῆ Bekkerus, Astius
in tert. et Stallbaumius. Cf. ad
L. V. p. 458. B. — Ficinus haec
inde a verbis ἀλλ' ἐν ὅλῃ ita in-
terpretatus est, ut quaedam ali-
ter legisse videatur: sed ut tota
civitas. profecto ad hoc cives ipsos
persuasione et impulsione conci-
liat, facitque ut mutuo sese ad-
iuvent communemque pro viribus
utilitatem colant. nempe lex civili
coetu homines congregat, non ut
permittat —.

τρέπεσθαι] τρέπεται Vind. F.

ὄπη]. ὄποι Lob. Vind. E. Vat.
B.

βούλεται] βούληται editi ante
Astii sec. tacentibus Bipontinis.

αὐτὸς] post αὐτοῖς Flor. T.
αὐτοῖς Vind. E. ante corr.

ἐπὶ] ἐν ἦ Vind. F.

ξύνδεσμον] συν. Vind. E.

εἶπον] εἶπεν Vind. E. εἶπων
Mon. B. a m. pr.

γιγνομένους] ante φιλοσόφους
Par. D. ante corr. Ald. Bas. ab.
Steph. Ast. In Bekkeri editione
excidit, in comm. suo loco resti-
tutum est.

ἐπιμελεῖσθαι τε] τε om. Mon.
C.

γὰρ] δὲ Vat. M. Ald. Bas. a.
Steph. Ast. pr. sec. tac. Bip.

μὲν] om. Mon. C.

αὐτόματο] αὐτόματο Bas. a. B
αὐτόματα Bas. b. Stephanus haec
usque ad τροφεῖα parenthesis
fecit.

τό γε] τό τε Lob. Vat. M.

օφεῖλον] ὁφεῖλεν Vind. B.
Mon. C. Vat. H. ὁφεῖλεν Vind.
E.

μηδ'] μὴ δὲ Vind. F.

ἐκτίνειν] ἐκτίνειν Vind. BEF.
Mon. C. Flor. ACTV.

τῷ] τὸ Vind. F. τῷ ante corr.
Vind. B. Mon. B. τῷ editi ante
Bekkerūm, quod Stephanus in
supplemento annot. p. 79. in τῷ
mutandum docuit.

τῷ] om. Vat. B.

δ' ὑμεῖς] δὲ ἦ. Vind. F.

ὑμῖν] ὑμῶν Vind. B. Mon. C.
Ven. B. Flor. T.

ἡγεμόνας τε καὶ βασιλέας ἐγεννήσαμεν, ἀμεινόν τε καὶ
C τελεώτερον ἐκείνων πεπαιδευμένους καὶ μᾶλλον δυνατοὺς
 ἀμφοτέρων μετέχειν. παταράτερον οὖν ἐν μέρει ἐκάστῳ
 εἰς τὴν τῶν ἄλλων ξυνοίκησιν καὶ συνεδιστέον τὰ σκο-
 τεινὰ θεάσασθαι· ξυνεδιζόμενοι γὰρ μνοῖσι βέλτιον ὅψε-
 σθε τῶν ἐκεῖ καὶ γνώσεσθε ἐκαστα τὰ εἰδωλα ἄττα ἐστὶ
 καὶ ὡν, διὰ τὸ τάληθῆ ἔωρανται καλῶν τε καὶ δικαίων
 καὶ ἀγαθῶν πέρι. καὶ οὕτως ὑπαρ ἡμῖν καὶ ὑμῖν ἡ πόλις
 οἰκήσεται, ἀλλ' οὐκ ὄντας, ὡς νῦν αἱ πολλαὶ ὑπὸ σια-
D μαχούντων τε πρὸς ἄλλήλους καὶ στασιαζόντων περὶ
 τοῦ ἀρχειν οἰκοῦνται, ὡς μεγάλου τινὸς ἀγαθοῦ ὄντος.
 τὸ δέ που ἀληθὲς ἄδ' ἔχει· ἐν πόλει η̄ ἥκιστα πρόθυ-
 μοι ἀρχειν οἱ μέλλοντες ἀρξεῖν, ταύτην ἄριστα καὶ ἀστα-

ἡγεμόνας] ἡγεμόνος editio Bekkeri.

C ἐκάστῳ] ἐκαστον Vind. EF. (Ven. B. Ang. B. Flor. ACR.) Ald. Bas. ab. Steph. Ast. sec. tert. Stallb. pr. quos sequitur Matthiae gramm. p. 840. invitatis non linguae legibus, sed codicibus.

ξυνοίκησιν] οἰκησιν Vind. F. Ang. B. Flor. R.

συνεδιστέον] ξυν. Flor. T. et septem illi, qui supra ἐκαστον, et Astius, Bekkerus, Stallbaumius. Cf. p. 530. A: συστήσα-
 σθαι, οὕτω ξυνεστάναι.

θεάσασθαι] θεάσθαι Vind. E. ξυνεδιζόμενοι] συν. Vind. F. μνοῖσι] μνοῖων Ang. B. Flor. R.

βέλτιον] βελτίονi Lob. Vat. BM. βέλτιόν τε Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Flor. CR. cum editis ante Astii sec. Etiam Par. K. de quo Bekkerus tacet, Bipontinis testibus τε omittit.

ὅψεσθε] ὅψεσθαι Vat. H. Idem Vind. B. ante corr. videtur habuisse. ἄψεσθαι Ang. B. Flor. R. et ante corr. Vind. F. ἄψε-
 σθε idem correctus ab eadem manu.

γνώσεσθε] γνώσεσθαι Ang. B. et, sup. ε, Vind. E.

ἄττα] ἄττα Vind. E. Mon. B. τάληθῆ] ἀληθῆ Vind. E.

καλῶν τε] καλῶν γε Mon. B. περὶ] περὶ Vind. E.

οὕτως] οὕτω Vind. BF. Mon. BC. Flor. R. Ald. Bas. ab.

ὑπαρ] ὑπαρ, e corr. ὑπὲρ, Vind. E. παρ⁷ Ang. B. Flor. R. ἡμῖν καὶ ὑμῖν] ὑ. καὶ η. Vind. F. Flor. R.

τοῦ] τὸ Mon. B. Par. DK. D Flor. U. Ald. Bas. ab.

τὸ δέ — ἐναντίως.] excerptis Stobaeus serm. XXXXI. p. 259. Sed in cod. A. extrema inde a τὴν δ', in Trinc. omnia desunt.

ώδ'] ωδ' Vind. F. ωδε Vind. B. Mon. C.

η̄] om. Lob. Vat. M. Conf. L. VIII. pag. 552. D. et Bernhardy synt. pag. 203. Quamquam quod sequitur ταύτην (cuius loco Stobaei cod. A. et ed. Gesn. ταύτη exhibent) tale est, ut Socrates sibi non ἐν πόλει, ἐν η̄, sed ἐν η̄ πόλει dixisse visus videatur. Alter, sed non minus ἀναπολούθως, haec eadem sententia pronuntiata est L. I. p. 347. D.

ἀστασιαστότατα] ἀστασίαστα Stob. cod. A.

τὴν δ'] τὴν δὲ Flor. T.

σχοῦσαν] ἵσχουσαν Ang. B. Flor. R. et margo A. ἵσχουσαν Vind. F.

ἡμῖν] om. Vat. B.

ταῦτ'] ταῦτα Vind. F.

σιαστότατα ἀνάγκη οἰκεῖσθαι, τὴν δ' ἐναντίους ἄρχοντας
σχοῦσαν ἐναντίως. Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Ἀπειδήσουσιν
οὖν ἡμῖν, οἵει, οἱ τρόφιμοι ταῦτ' ἀκούοντες καὶ οὐκ
ἐθελήσουσι ξυμπονεῖν ἐν τῇ πόλει ἔκαστοι ἐν μέρει,
483 τὸν δὲ πολὺν χρόνον μετ' ἀλλήλων οἴκειν ἐν τῷ οἰκα-
ρῷ; Ἀδύνατον, ἔφη· δίκαια γὰρ δὴ δικαίοις ἐπιτάξο- E
μεν. παντὸς μὴν μᾶλλον ὡς ἐπ' ἀναγκαῖον αὐτῶν ἔκαστος
εἴσι τὸ ἄρχειν, τούναντίον τῶν νῦν ἐν ἔκαστῃ πόλει
ἀρχόντων. Οὕτω γὰρ ἔχει, ἢν δ' ἐγώ, ὡς ἐταῖρος· εἰ
μὲν βίον ἔξευρήσεις ἀμείνω τοῦ ἄρχειν τοῖς μέλλουσιν 521
ἄρξειν, ἔστι δοι δυνατὴ γενέσθαι πόλις εὗ οἰκουμένη·
ἐν μόνῃ γὰρ αὐτῇ ἄρξουσιν οἱ τῷ ὅντι πλούσιοι, οὐ
χρυσίου, ἀλλ' οὐδὲ τὸν εὐδαιμονα πλουτεῖν, ζωῆς ἀγαθῆς

ἐν τῇ] ἐν om. Vind. F. Ang.
B. Flor... (R?) τῇ om. Par. K.
πολὺν] πολλὺν ante corr. Mon.
BC. πολὴν Ald. Bas. a.
μετ' ἀλλήλων] μεταλλ. Vind.
F.

Ἀδύνατον] Ἀδύναστον Ald.
δίκαια] Ultimam Vind. B. int.
vers. a m. s. habet.

E δὴ] om. Vind. E. Vat. H.
δικαίοις] δικαίως Vind. F.
ἐπ' ἀναγκαῖον] ἐπαν. idem.
ἔκαστος εἰσι] ᔍκαστος εἰσὶ idem.
ἔκαστος εἰσὶν Lob. Vat. B. ᔍκα-
στος εἰσήσι Vat. M. ᔍκαστω εἰς
Mon. B. Par. K. Flor. U. ᔍκα-
στω εἰ Par. D. ᔍκαστος εἴη eius
margo. ᔍκαστος εἰσι. γρ. margo
Mon. B. a m. s.

ἐν] om. Vind. E. Vat. H. Flor.
ACT.

ἔχει] ᔍχειν Vind. F.
ἐταῖρος] ἐταῖρος, Ald. Steph.
Ast. pr. sec. ἐταῖρος. reliquae.
οὐτῷ magis ad sequentia perti-
net, quibus Socrates aversationis
a Glaucone demonstratae caussam
et necessitatem exponit: recte tu
de illis auguraris, et opus est, ut
in iusti imperium suscipiant; nam
ita res habet: si vitam imperato-
ria meliorem norint, quam com-
mutare cum ista non nisi coacti
sustineant, poterit civitas bene
instituta exsistere.

PLATONIS OP. II.

τοῦ ἄρχειν] Non legisse haec
dicas scholiasten, qui ita scri-
pserit: εἰ μὲν εῦροις, φησὶ, βίον
ἀμείνω φιλοσόφου βίον. λέγοι δ'
ἄν θεοῦ μόνον· καὶ γὰρ θεὸς
ἀμείνων φιλοσόφου μόνος.

ἔστι] ἔστι Lob. Steph. Ast. pr. 521
sec.

δυνατὴ] δυνατὸν Par. K. sec.
Bip.

ἐν μόνῃ — ἀλλην πόλιν.] habet
Stobaeus serm. XXXXI. p. 259.
Trinc. non habet.

αὐτῇ] αὐτὴ Vind. F. αὐτὸς
Flor. T.

τῷ ὅντι] τωρόντι Vind. E. Mon.
C.

οὐ] om. Lob. Vind. F. Vat. M.
et a m. pr. B. Ven. C. Par. K.
et a m. pr. D.

οὐδὲ] οὐ Lob. Vind. EF. Vat.
M.

ἀγαθῆς] ἄτερ ἀγαθῆς Lob.
Vat. M. Bas. b. „Ex quadam
vet. libro annotatur alia lectio,
quam satis mirari non possum,
ζωῆς ἄτερ ἀγαθῆς τε etc. Quid
enim hic ἄτερ ager? quid aliud
quam praeclararum sententiam cor-
rumpet? — Sed tamen ne hanc
quidem γραφὴν διάφορον celare
te volui, si forte ipse aliquid in
ea perspicere possis quod meorum
oculorum aciem fugiat: alioqui
hinc discas, in bonis etiam libris

S

τε καὶ ἔμφρονος· εἰ δὲ πτωχοὶ καὶ πεινῶντες ἀγαθῶν ιδίων ἐπὶ τὰ δημόσια ἵασιν ἐντεῦθεν οἱόμενοι τάργαθὸν δεῖν ἀρπάζειν, οὐκ ἔστι· περιμάχητον γὰρ τὸ ἄρχειν γιγνόμενον, οἰκεῖος ὡν καὶ ἔνδον ὁ τοιοῦτος πόλεμος αὐτούς τε ἀπόλλυσι καὶ τὴν ἄλλην πόλιν. Ἀληθέστατα, ἔφη. "Ἐχεις οὖν, ἦν δ' ἐγώ, βίον ἄλλον τινὰ πολιτικῶν ἄρχων καταφρονοῦντα, ἢ τὸν τῆς ἀληθινῆς φιλοσοφίας; Οὐ μὰ τὸν Δία, ἢ δ' ὅς. Ἀλλὰ μέντοι δεῖ γε μὴ ἔραστὰς τοῦ ἄρχειν ἴεναι ἐπ' αὐτό· εἰ δὲ μὴ, οἴ γε ἀντερασταὶ μαχοῦνται. Πῶς δ' οὐ; Τίνας οὖν

aliquando valde malas γραφὰς interdum inveniri. Ex eo enim unde sumpta est illa exemplari, non paucorum emendationes locorum sunt prosectae." Steph. annot. p. 24. Proxime praecedentem lectionis varietatem intuenti ne huius quidem origo obscura esse potest.

τε] om. Mon. C.

εἰ] οἱ Vind. E.

ἵασιν] ἵασιν Vind. BEF. ξῶσιν Stob. cod. A.

οἱόμενοι] ἱώμενοι Vind. F. Flor. R.

δεῖν] int. vers. Mon. C.

οὐκ ἔστι] οὐκ ἔστιν Vind. B. et ante corr. Mon. C. Hanc lectionem Stephanus l. c. ferri nullo modo posse statuens οὐ ἔστι cum hypostigme scribendum suspicatur et Ficinum quoque ita legisse, sed ea verba nulla interpunctione adhibita cum sequentibus coniunxisse putat; utrumque perperaram. Ficinus vulgatam recte est interpretatus: *sin autem inopes bonisque propriis vacui ad publica adventaverint, bona illinc rapere cupientes, civitas illa felix esse non poterit. nam ubi de principatu contenditur, cum proprium hoc sit et intestinum bellum, tum eos qui ita pugnant, tum reliquam civitatem perdit.* Stephanum autem nominativi absoluti περιμάχητον τὸ ἄρχειν γιγνόμενον fefeller videtur, si absoluti dicendi sunt qui pene eodem iure, quo sequentes οἰκεῖος ὡν ὁ πό-

λεμος, cum verbo ἀπόλλυσι construi possunt. Similem nominativi usum, sed magis iam anacoluthi manifestū habet locus Leg. L. VIII. p. 866. B: ἐὰν δ' ὁ προσήκων ἐγγύτατα μὴ ἐπεξήγη τῷ παθήματι, τὸ μίασμα ὃς εἰς αὐτὸν περιεληλυθός τοῦ παθόντος προστρεπομένου τὴν πάθην, ὃ βονιόμενος ἐπεξελθὼν τούτῳ δίκην πέντε ἔτη ἀποσχέσθαι τῆς αὐτοῦ πατρίδος ἀναγκαζέτω κατὰ νόμον.

περιμάχητον] περιμαχητὸν Vind. F.

γιγνόμενον] γιν. Mon. B.

αὐτούς τε] αὐτούς καὶ Ang. B.

Ἀληθέστατα] ἄλληθ. Mon. B.

τινὰ] om. Vind. E. B.

πολιτικῶν] π. τινων Lob. π. τινῶν Vat. M.

καταφρονοῦντα] καταφρονούντων Lob. Vat. M. καταφρονοῦντος Par. K.

ἄληθινῆς] ἀλιθινῆς Vind. E.

Δία] δί' Lob. Vind. BE. Vat. HM. διὰ Ald.

ὅς. Ἀλλὰ] ὅς, ἀλλὰ Ald.

ἐπ' αὐτό] ἐπαντὸ Vind. F. et paullo post ἐπιψυλαὴν.

οἱ περὶ] οἱ περὶ Lob. Vind. E. οἴτει Mon. B. Par. DK. Flor. U. ἑδίτι ante Astii sec.

τούτων] ταῦτα Vind. E.

τε] om. Vind. F. Par. K. Ang. B. Flor. RT. Ast. sec. et Stallb.

φρονιμώτατοι] φρονιμότατοι Vind. E. et a m. pr. Mon. B.

βίον] βίον Ald. Bas. ab.

ἄλλους ἀναγκάσεις λέναι ἐπὶ φυλακὴν τῆς πόλεως, ἢ οἱ περὶ τούτων τε φρονιμώτατοι, δι᾽ ᾧ ἄριστα πόλις οἰκεῖται, ἔχουσί τε τιμὰς ἄλλας καὶ βίον ἀμείνων τοῦ πολιτικοῦ; Οὐδένας ἄλλους, ἔφη. Βούλει οὖν τοῦτ' ἥδη C σκοπῶμεν, τίνα τρόπον οἱ τοιοῦτοι ἔγγενήσονται, καὶ πῶς τις ἀνάξει αὐτοὺς εἰς φῶς, ὡσπερ ἐξ Ἀιδον λέγονται δή τινες εἰς θεοὺς ἀνελθεῖν; Πῶς γὰρ οὐ βούλομαι; ἔφη. Τοῦτο δὴ, ως ἔοικεν, οὐκ ὀστράκον ἀν εἴη περιστροφὴ, ἀλλὰ ψυχῆς περιαγωγὴ ἐκ νυκτερινῆς τινὸς ἡμέρας εἰς ἀληθινὴν τοῦ ὄντος οὖσαν ἐπάνοδον, ἦν δὴ

Oὐδένας ἄλλους] οὐδένας ἄλλας Vind. E. οὐδὲν ἄς ἄλλήλους Vind. F.

C τοῦτ' ἥδη] τοντὶ δὴ Vind. F. Ang. B. Idem Flor. R. exhibere videtur, quem Stallbaumius ita pro Τοῦτο δὴ, quod paullo post, legitur, scriptum habere tradit.

ἐξ Ἀιδον] ἐξάδον Vind. F. In editis ante Bekkerum nomen a minuscula incipit.

λέγονται] λέγοντες Vat. H. Flor. ACV.

Toῦτο δὴ — φήσομεν εἶναι.] laudat Clemens Al. Strom. L. V. p. 729. ex eoque Eusebius praep. ev. L. XIII. p. 404. Τοῦτο δὲ etc. Clem. De testa cf. in primis Hermia's ad Phaedrum, ab Astio editus p. 90.

ψυχῆς] om. Vind. F. — Clemens l. c. L. III. p. 575, 40: τὴν δὲ μεταστροφὴν τὴν ἐπὶ τὰ θεῖα οἱ μὲν Στωίνοι ἐν μεταβολῆς φασὶ γενέσθαι, Πλάτων δὲ τῆς ψυχῆς ἐπὶ τὰ ἀμείνων περιαγωγὴν λαβούσης καὶ μεταστροφὴν ἐν νυκτερινῆς τινὸς ἡμέρας. L. V. p. 712, 18: πάλιν τε αὐτὸν Πλάτων ἐν μὲν τῷ ἐβδόμῳ τῆς Πολιτείας τὴν ἐνταῦθα ἡμέραν νυκτερινὴν πέπλην διὰ τοὺς κοσμοκρατορας, οἵμαι, τοῦ σφότους τούτου.

ἡμέρας] μοίρας Mon. B.

οντος] ὄντως Vind. B. Clem. cuius cod. Flor. ὄντως ὄντος, Ottobon. vero ὄντος habet.

οὖσαν] om. Ven. B. ιούσας Ald. Bas. ab. ιούσης Mon. B.

Par. DK. Flor. U. Steph. et recentiores; quod mihi non solum propter codices respuendum, sed etiam per se multo deterius videatur. Nam ιούσης ψυχῆς περιαγωγὴ significata h. l. esse nequit, quippe quae nihil aliud sit, nisi turbatio mentis et a recta via, quam ingredi iam cooperit, in pravam revocatio. Itaque ea intelligi debet, qua mens ιούσα fiat, ψυχῆς περιαγωγὴ εἰς τὸ ἐν νυκτερινῆς τινὸς ἡμέρας εἰς ἀληθινὴν τοῦ ὄντος λέναι ἐπάνοδον. atque ita Stephanum eiusque asseclas intelligi voluisse comma ab eis post περιαγωγὴ positum declarat. Sed eandem nemo non videt brevius et certius ψυχῆς περιαγωγὴν εἰς ἀληθινὴν ἐπάνοδον dici. Neque obscurum esse potest, quid sit τοῦ ὄντος ἐπάνοδος, qua dictione Alcinous quoque in hac re utitur isag. c. 7. Cf. Bernhardy synt. p. 174. et Apollodorus Heynii p. 200. τῆς Ἀιδον παταβάσεως στόμιον eadem ratione dicens. Quod autem ad ἀληθινὴν etiam οὖσαν addidit, partim proximi ὄντος caussa factum videri potest, magis vero ad augendam veritatis significationem pertinet. Sunt enim et aliae ἐπάνοδοι οὐκ ἀληθιναι οὖσαι, quas vulgares illius aevi magistri (οἱ εἰς φιλοσοφίαν ἀναγοντες p. 529. A.) monstrabant ab ea philosophia, quam Socrates veram statueret, longe remoti. Itaque in sequentibus non

φιλοσοφίαν ἀληθῆ φήσομεν εἶναι. Πάνν μὲν οὖν. Οὐκοῦν δεῖ σκοπεῖσθαι, τί τῶν μαθημάτων ἔχει τοιάν· Δ την δύναμιν; Πῶς γὰρ οὗ; Τί ἀν οὖν εἴη, ὡς Γλαύκων, μάθημα ψυχῆς ὀλιὸν ἀπὸ τοῦ γιγνομένου ἐπὶ τὸ ὄν; τόδε δ' ἐννοῶ λέγων ἄμα· οὐκ ἀδιλητὰς μέντοι πολέμου ἔφαμεν τούτους ἀναγκαῖον εἶναι νέους ὅντας; "Ἐφαμεν γάρ. Λεῖ ἄρα καὶ τοῦτο προσέχειν τὸ μάθημα, δὲ ζητοῦμεν, πρὸς ἐκείνῳ. Τὸ ποῖον; Μὴ ἄχοηστον

frustra iterata appellatio est: ἦν δὴ φιλοσοφίαν ἀληθῆ φήσομεν εἶναι. ubi Vat. B. perperam ἀληθῆ omittit. Similem huius participii usum habet locus Leg. L. V. p. 728. B: ἔστι δὲ η μεγίστη (τῆς πανοργίας δίην) τὸ δύμοιονσθαι τοῖς οὖσι πανοῖς ἀνδράσιν. Sic codices optimi, Par. A. et Vossianus, et Stobaeus, quos recte secuti sunt Astius et Bekkerus, quum vulgo οὖσι deesset, quia supervacaneum vide-retur. Ceterum eorum interpretum, qui in hac verborum compositione ἀληθινὴν non ad ἐπάνοδον, sed ad ἡμέραν e proximo petendum spectare censem, rationem non magis habere possum, quam quibus alii indulserunt conjecturarum.

φήσομεν] φήσομαι Clementis editiones. Sed φήσομεν codd. Paris. et Ottob.

δεῖ] δὴ Vind. F.

ἔχει] post τοιαύτην Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H. Flor. ACV.

D δύναμιν;] δύναμιν. Mon. B. Ald. Steph.

Ti ἀν οὖν—Πῶς δ' οὗ; 522. B.] recitat Eusebius praepl. ev. L. XIII. p. 435. Pro ἀν οὖν Vind. BF. Mon. C. Ang. B. Flor. R. οὖν ἀν habent.

εἴη, ὡς] εἴπω Vind. F. εἴη Mon. C.

οὐκὸν] οὐκὸν Vind. EF. ἔλνον Lob. Mon. B. Vat. BM. Par. D. Ang. B. Flor. RTU. et a m. s. Ven. BC. Cf. p. 524. E: οὐκ ἀν οὐκὸν εἴη ἐπὶ τὴν οὐσίαν. et 527. B: οὐκὸν ψυχῆς πρὸς ἀλήσιαν εἴη ἄν. quorum locorum

uterque similem lectionis varietatem habet. Erant fortasse quibus hoc adiectivum omnino minus probaretur, quemadmodum fuisse constat qui de hominibus dicendum negarent, quos contra Antiatticistes Bekk. p. 111, 1. ὀληὸς, inquit, ἄνθρωπος. Πλάτων Πολιτείας πέμπτῳ. σημαίνει δὲ τὸν ἔλνστικὸν, ἐπαγγεγόν. non quo alicubi in hoc libro (in quinto enim non exstat) masculinum invenisset, sed quod nihil obstarere existimabat, quo minus id, quod neutro genere usurpatum a Platone videret, etiam masculino usurparetur.

ἐπὶ] om. Par. K.

τόδε δ'] τό δ' Mon. C. Par. K. sec. Bip. τόδε sec. Bekk.

ἐννοῶ] ἐννοῶν Vind. B. Mon. C. Flor. ACV. ἐνοῶ, sup. ν a m. s., Mon. B.

ἀναγκαῖον] ὡς ἀν. Mon. B. Flor. U. ἀλλ' ἀν. Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV. Ast. sec. et Ficinus: quippe non athletas eos belli esse diximus: sed necessarium, dum iuvencs sunt, tales esse. Errorem ex eo fluxisse apparet, quod οὐ cum interrogative dictum non caperent et immemores essent loci L. III. p. 403. E: ἀδιληταὶ μὲν γάρ οἱ ἄνδρες τοῦ μεγίστου ἀγῶνος. cl. VIII. 543. B: ὥσπερ ἀδιλητάς τε πολέμου καὶ φύλακας.

ἄρα καὶ] ἄρα. καὶ Lob. quae interpunctio sequentium verborum depravationes peperit.

προσέχειν] προσεχεῖς Lob. Vat. M. πως ἔχειν Mon. B. παρέχειν Vind. E. Ven. B. Vat. H.

πολεμικοῖς ἀνδράσιν εἶναι. Λεῖ μέντοι, ἔφη, εἴπερ οὗτον τε. Γυμναστικὴ μὴν καὶ μουσικὴ ἐν γε τῷ πρόσθεν ἐπαιδεύοντο ἡμῖν. Ἡν ταῦτα, ἔφη. Γυμναστικὴ μὲν Επον περὶ γιγνόμενον καὶ ἀπολλύμενον τετεύτακε· σώματος γὰρ αὐξῆς καὶ φθίσεως ἐπιστατεῖ. Φαίνεται. Τοῦτο μὲν δὴ οὐκ ἀν εἶη ὁ ξητοῦμεν μάθημα. Οὐ γάρ. Ἄλλ' 522 ἄρα μουσικὴ ὅσην τὸ πρότερον διήλθομεν; Ἄλλ' ἢν ἐκείνη γ', ἔφη, ἀντίστροφος τῆς γυμναστικῆς, εἰ μέμνη-

ὅ] om. Lob. Vat. BM. et a. m. pr. Ven. C. Par. D. ὁ Vind. E. ξητοῦμεν] ξητῶμεν Lob. Vat. M.

ἀνδράσιν] ἀνδράσι Ald. Bas. a. ἔφη] uel Bas. b.

Γυμναστικὴ — ἔφη.] om. Vind. E. γυμναστικὴ etc. Vind. BF. Mon. C.

μὴν] πη Euseb. μέντοι Lob. Vat. BM. μέν πον Mon. B. Par. DK. Flor. U. editi ante Bekkerum. μὲν Astius in tert. quod ipsum in sec. ex Mon. C. affert. Sed is cum reliquis μὴν habet: atque.

μουσικὴ] μουσικὴ Vind. BF. Mon. C.

ἐν γε] ἐν τε Flor. T.

Γυμναστικὴ] καὶ γνῦν. Vind. F. Vat. M. Euseb. probante Stephano annot. pag. 24. Sed πον repugnare videtur.

E μέν] μέν γέ Mon. B.

γιγνόμενον] γιν. Vind. E. τὸ γενν. Lob.

τετεύτακε] Ita Par. A. Vind. B. Mon. C. Vat. H. (hi τετεύτακεν. Cf. Vol. I. p. 123, b.) Flor. ACRTV. Euseb. τεύτακε Vind. F. et, γρ τέταυχε, Ang. B. τετάχαται.... Vind. E. τέτευχε Ven. C. correctus et reliqui cum editis ante Astii sec. Timaeus lex. p. 253: τεντάζων· προγματενόμενος, ἐνδιατρίβων. Pollux L. VIII. c. 137: καὶ τὸ τεντάζειν πάρο τε Πλάτωνι καὶ ἄλλοις εἰρημένον· ἀλλ' οὐ προσίεμαι τούνουα. Photius Pors. pag. 504: (Lips.) τεντάζειν· — σημαίνει δὲ καὶ τὸ σπουδάζειν· Πολιτείας ξ. Cf. Bachmanni anecd. I. p. 386. 3. Sed in priinis conferenda est

doctissima Ruhnkenii annotatio ad Timaeum, in qua etiam h. l. τετεύτακε ex Eusebio male a Stephano (p. 24.) contempto et veteri grammatico apud Photium, Suidam et Etymologum, cuius testimonium e Photio Porsoni verum libri numerum (ξ) pro reliquorum vitioso (δε) exhibente adscripsi, et ex codice Parisino (A.) recipiendum esse docet idemque a scholiasta ad h. l. comparari perhibet, cuius tamen nullum in ipsis aut Bekkeri collectione hic exstat scholion, de ipso denique verbo τεντάζειν recte veretur, ne mendose scriptum originem dederit verbo ταντάζειν, a quo Schneiderus in lexico perperam Ruhnkenium auctorem ferens τεντάζειν ducere originem statuit.

αὐξῆς] Ita Mon. B. sed in m. a m. pr. αὐξιης habet. αὐξήσεως Ang. B. Flor. RT. et tribus litteris extremis int. vers. superscriptis Vind. F.

φθίσεως] φθήσεως Ald.

Οὐ]. ἢ Vind. E. 522

Ἄλλ' ἄρα] ἄλλα Lob. Vat. BM. Pro ἄρα Vind. BF. Mon. BC. (Flor. ARTUV. Par. K. sec. Bip.) et editiones ante Bekkerum ἄρα habent.

ὅσην] ὅση Mon. C. ἢν Vind. F. Ang. B. Flor. R. ὅσον Par. K. Ast. sec. tert.

τὸ πρότερον] τὸ om. Vind. F. Ang. B. τοπο. Lob. Vind. B. Mon. BC. Par. K. sec. Bip. (Florentini) cum editionibus ante Astii sec.

ἐκείνη] ἐκεί Mon. B. νη in m. a m. s.

σαι, ἔθεσι παιδεύουσα τοὺς φύλακας, πατά τε ἀρμονίαν εὐαρμοστίαν τινὰ, οὐκ ἐπιστήμην, παραδιδοῦσα καὶ κατὰ ὄνθμὸν εὐρυθμίαν, ἐν τε τοῖς λόγοις ἔτερα τούτων ἀδελφὰ, ἔφη, ἄττα ἔχουσα, καὶ ὅσοι μυθώδεις τῶν λόγων καὶ ὅσοι ἀληθινώτεροι ἡσαν· μάθημα δὲ πρὸς τοιοῦτον τι ἀγαθὸν, οἶον σὺ νῦν ξητεῖς, οὐδὲν ἦν Β ἐν αὐτῇ. Ἀκριβέστατα, ἦν δ' ἐγὼ, ἀναιμιμησκεις με· τῷ γὰρ ὅντι τοιοῦτον οὐδὲν εἶχεν. ἀλλ', ὃ δαιμόνις Γλαύκων, τί ἀν εἴη τοιοῦτον; αἴ τε γὰρ τέχναι βάναυ-

ἔθεσι] consuetudine moribusque
Fic.

εὐαρμοστίαν] καὶ εὐ. Lob.
Vat. BM.

παραδιδοῦσα] παραδοῦσα Par.
DK. Ald. Bas. ab. et in secunda
Astius cum Mon. C. ut falso exi-
stimabat.

καὶ πατὰ ὄνθμὸν εὐρυθμίαν.] His Vind. E. mutatae personae
indicium (:) utrinque appositum
habet. καὶ πατ' ἀριθμόν. Par. K.
καὶ πατὰ ὄνθμὸν Mon. B. Par.
D. καὶ πατ' ἀριθμὸν εὐρυθμίαν
Vind. F. — ὄνθμαν — Vat. M.
— εὐρυθμίαν Vind. B.

ἔφη] om. Flor. T. ἔθη Vind.
F. Ang. B. Flor. R. et a m. s.
Ven. C. cum Eusebio: „Emen-
dationem insignem (nisi fallor)
afferam, quae Eusebio debetur.
apud eum enim vera lectio inve-
nitur, ubi hunc locum affert. Ea
autem est ἔθη pro ἔφη. Cui
emendationi confirmatione opus
non est, meo quidem iudicio:
praesertim quam praecedat, ἔθεσι
παιδεύουσα τοὺς φύλακας.“ Ste-
phan. annot. p. 24. „sed ἔτερα
ἄττα non ad ἔθη in praecedentib;
spectat, sed ad εὐαρμοστίαν
et εὐρυθμίαν.“ Astius in sec.
p. 564. Id vero Stephani senten-
tiae non obstat. Magis obstat
ἄττα, tun codicum auctoritas
et vulgatae lectionis praestantia.
Iteratum enim ἔφη memoriae fa-
cilitatem Glauconis magis insignem
redit atque ethicam, ut ita di-

cam, viii habet. Similem, sed
alio spectantem obtinet Phaedon.
p. 78. A: πόθεν οὖν, ἔφη, ὡς
Σώκρατες, τῶν τοιούτων ἀγα-
θὸν ἐπωδὸν ληψόμεθα, ἐπειδὴ
σὺ, ἔφη, ἡμᾶς ἀπολείπεις; ubi
intendenda pronominis οὐ signifi-
cationi inservit, quemadmodum
supra p. 517. D. insolentiori loco
positum ἦν δ' ἐγὼ augendo nomi-
nis θείων ponderi. Sed quae
Heindorfius et Stallbaumius ibi
adscripterunt repetitionis exempla,
ea ad vulgaris sermonis imitatio-
nem facta sunt.

ἄττα] ἄττα Vind. F. Mon. C.

τῶν λόγων] τῷ λόγῳ Mon. B.
a m. pr. et Flor. U.

δὲ] om. a m. pr. Vat. B. et
Ven. C.

τοιοῦτον] τὸ τοιοῦτον Par. K.
τοιοῦτό Vind. B. Mon. C.

ἀγαθὸν] ὃν ἀγαθὸν Ang. B.
αγ̄ Vind. F. om. Flor. R. ἀγον
Euseb. et γο Ven. C. Id Stephano p. 25. multo magis, quam
ἀγαθὸν probatum Astius in sec.
ex Eusebiō recepit „postulante
sensu et praepositione πρὸς, quae
e voce μάθημα pendere non po-
test.“ Pendet vero a nomine ἀγά-
θὸν et eam rem significat, cuius
rei respectu seu ratione habita
aliiquid bonum seu utile dicatur.
Sic L. VIII. p. 559. Λ: πρὸς οὐδὲν
ἀγαθόν. Alcib. I. p. 109. C: βέλτιον
πρὸς τὸ πολεμεῖν καὶ μη. Xen.
Mem. III. 6, 10: ἀρ̄ οὐν τὸν
μὲν ἀγαθὸν πρὸς τὰ δεινὰ καὶ

σοὶ ποὺ ἀπασαι ἔδοξαν εἶναι. Πῶς δ' οὐ; καὶ μὴν τί
ἔτ' ἄλλο λείπεται μάθημα, μουσικῆς καὶ γυμναστικῆς
καὶ τῶν τεχνῶν κεχωρισμένον; Φέρε, ἣν δ' ἐγὼ, εἰ μη-
δὲν ἔτι ἐκτὸς τούτων ἔχομεν λαβεῖν, τῶν ἐπὶ πάντα
τεινόντων τι λάβωμεν. Τὸ ποῖον; Οἶον τοῦτο τὸ κοι-
νὸν, ὃ πᾶσαι προσχρῶνται τέχναι τε καὶ διάνοιαι καὶ
ἐπιστῆμαι, ὃ καὶ παντὶ ἐν πρώτοις ἀνάγκη μανθάνειν.
Ποῖον; ἔφη. Τὸ φαῦλον τοῦτο, ἣν δ' ἐγὼ, τὸ ἐν τε
καὶ τὰ δύο καὶ τὰ τρία διαγυγνώσκειν· λέγω δὲ αὐτὸ-

ἐπικίνδυνα ὅντας ἀνδρείους ἡγῆ
εἶναι, τοὺς δὲ ναοὺς δειλούς;

σὺ νῦν ἔντεις] σὺ ἔντεις Ang.
B. Flor. R. συγκεῖν Vind. F.

B τῷ γὰρ ὅντι] τωγαρόντι Vind.
E. τωόντι γὰρ Mon. C.

αὖτε] Ita omnes codices, etiam
Mon. C. quem Astius in sec. τε
omittere tradit et quasi omitten-
tem in tertia quoque sequitur.
Cf. Vol. I. p. 167, a. Quid ad-
dere Socrates in animo habuerit,
Glauconis intercipientis verba do-
cent: καὶ μὴν τι ἔτ' ἄλλο λείπε-
ται μάθημα;

βάνανσοι] καὶ β. Mon. B. Par.
D. Cf. L. VI. p. 495. E.

ἀπασαι] post ἔδοξαν Vind. E.
αἴπασαι Mon. C.

εἶναι] Huic in Mon. B. et a
m. s. in m. Flor. U. καὶ οὐ προ-
σαπτέον αὐτῶν ὅν πολεμοῖς
ἀνδράσι additum legitur, quod
Bekkerus et Stallbaumius reci-
piendum non putarunt. Scilicet
illud καὶ in Par. D. ante βάναν-
σοι insertum require alterum
aliquid videbatur.

καὶ] Kαὶ Bas. ab. Stephanus.
Etiam Ficinus Socratis personam
h. l. interponit, deinde pro φέρε,
ἢν δ' ἐγώ, age itaque pergentem
facit. Sed hoc ipsum ἢν δ' ἐγώ
in distribuendis partibus sequi,
porro incitatum Glauconis cursum
non subito inhibere, sed paulla-
tim revocare, denique Socratem

non sine caussa iterum pene de-
sperantem in scenam producere
debemus.

ἔτ'] ἔτι Lob.

τῶν] τε Vind. F.

κεχωρισμένον] κεχωρισμένων,
sup. ov., Par. D.

πάντα] ταῦτα Flor. T.

τι λάβωμεν] τι λάβωμεν; Mon.

B. Οἶον] οἶον Ald. Steph. C

τέχναι] om. Lob. Vat. M.

ἐν πρώτοις] post ἀνάγκη Vind.

E. μανθάνειν.] μανθάνειν; Mon.
B.

Ποῖον;] Vulgo Τὸ ποῖον;
quo quum in proximo usus sit
Glauco, crescenti eius admirationi
paullulum mutatam verborum for-
matam satis convenire existimans
articulum secundum Par. A. Vind.
BE. Mon. C. et m. pr. Ven. B.
omisi. Cf. Vol. I. pag. 341, a.
Infra p. 527. C: καὶ γὰρ τὰ πά-
ρεοντα αὐτοῦ οὐ σμικρά. Ποῖα;
ἢ δ' ὅς. 530. E: ἡμεῖς δὲ παρὰ
πάντα ταῦτα φυλάξομεν τὸ ἡμέ-
τερον. Ποῖον; Plura collegit Hein-
dorfius ad Soph. §. 52.

διαγυγνώσκειν] γυγνώσκειν Ven.
B. a m. pr. cognoscere Fic. δια-
γυγνώσκειν Vind. BE. Mon. BC.
(Florentini et Par. K. sec. Bip.)
et cum γ super iv Lob. Etiam
Ald. Bas. ab. Steph. hoc γ omit-
tunt; fortasse recte. V. ad L. V.
p. 472. A.

λέγω] Λέγω Steph. anteposito
puncto.

ἐν κεφαλαιώ ἀριθμόν τε καὶ λογισμόν. η̄ οὐχ οὗτο περὶ τούτων ἔχει, ὡς πᾶσα τέχνη τε καὶ ἐπιστήμη ἀναγκάζεται αὐτῶν μέτοχος γίγνεσθαι; Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκοῦν, η̄ν δ' ἐγώ, καὶ η̄ πολεμική; Πολλὴ, ἔφη, ἀνάγκη. Παγ-
D γέλοιον γοῦν, ἔφην, στρατηγὸν Ἀγαμέμνονα ἐν ταῖς τραγῳδίαις Παλαμήδης ἑκάστοτε ἀποφαίνει. η̄ οὐκ ἐννε- νόηκες, ὅτι φησὶν ἀριθμὸν εὑρὼν τάς τε τάξεις τῷ στρατοπέδῳ παταστῆσαι ἐν Ἰλίῳ καὶ ἔξαριθμῆσαι ταῦς τε καὶ τὰλλα πάντα, ὡς πρὸ τοῦ ἀναριθμήτων ὅντων

ἐν κεφαλαιώ] ὡς ἐν κεφ. Ven. B. Flor. V. cum editis ante Bekkerum Cf. Ion. p. 531. E: οὐκοῦν ἐν κεφαλαιώ λέγωμεν, ὡς δὲ αὐτὸς γνώσεται ἀεὶ περὶ τῶν αὐτῶν πολλῶν λεγόντων, δύστις τε εὖ λέγει καὶ δύστις πανῶς. Soph. 232. E: ἀτάρο δὴ τὸ τῆς ἀντιλογικῆς τέχνης ἀριθμὸν ἐν κεφαλαιώ περὶ πάντων πρὸς ἀμφισβήτησιν ἴσανή τις δύναμις ζοικίσιν; Symp. 196. E: ὡς δὴ πρόπει ἡμᾶς μαρτυρούσι φορθῶσι, ὅτι ποιητὴς δὲ "Ἐρως ἀγαθὸς ἐν κεφαλαιώ πᾶσαν ποιησον τὴν πατὰ μονοτικήν. Sed ὡς ἐν κεφαλαιώ cum infinitivo, velut εἰπεῖν, ἐπάνελθεῖν vel simili construi solet.

τέχνη τε] τε om. Mon. C.

αὐτῶν μέτοχος] μετ. αὐτῶν, sup. β α, idem. αὐτ. μέτοχοι Vind. F.

γίγνεσθαι] γίν. Vind. F.

μάλα] μάλιστα idem et Ang. B.

Παγγέλοιον — ἡπίστατο; D.] laudat Theo Smyrnaeus a Stallbaumio significatus de arithmeticā pag. 7. ed. de Gelder. cum hac praefatione: ἐν δὲ τῷ ἔβδομῷ τῆς Πολιτείας περὶ ἀριθμητικῆς λέγων ὡς ἔστι ἀναγνωστάτη πασῶν φησὶν, ἐπειτα, ἡσ δεῖ πάσαις μὲν τέχναις, πάσαις δὲ διανοίαις καὶ ἐπιστήμαις καὶ τῇ πολεμικῇ παγγέλοιον etc. πανγγέλοιον etc. Vind. F.

γοῦν] οὖν Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV. Astius in sec. et tert. et Stallbaumius, cui „sententiarum ra-

tio“ id postulare visa est. Sed necessariam imperatorī arithmeticen esse nequaquam adhuc dictis ita probatum erat, ut concludere ex eis Socrati licet perridiculum eius inscientia imperatorem fieri Agamemnonem; neque, si esset probatum, Agamemnonis commemoratione opus erat. Contra eo, quod exadversus numeri inventorem non posset non ridiculus imperator videri, haud dubie verisimile siebat belli ducem guarum arithmeticā esse debere. Itaque argumenti loco Socrates hoc ipsum sumens Certe valde ridiculum, inquit, imperatorem Agamemnonem. in fabulis Palamedes facere solet. ut habeamus ipsam vero necessitatem in sequentibus Glauconi agnoscendam proponit: ἂλλο τι οὖν μάθημα ἀναγνωστῶν etc. Ex his γοῦν aptissimum, οὖν ineptum esse intelligitur.

ἔφην] ἔφη Vind. F. Mon. C. Ang. B. Ald. Bas. ab. om. Theo.

η̄ οὖν ἐννενόημας, ὅτι φησὶν γὰρ Theo. (ἐννεόημας Vind. E. ἐννεόημας Vind. F. ἐννεόημας cum υ super ο̄ Mon. C.) Verba ipsa, quae sequuntur, Palamedis incertum est ad unam quandam fabulam pertineant, in qua numero invento ordines constituisse exercitui et naves reliquasque res omnes enumerasse gloriaretur, an pluribus communem locum et beneficiorum istorum commemorationem respiciant, qualem et fabulae argumentum requirebat, et

καὶ τοῦ Ἀγαμέμνονος, ὡς ἔοικεν, οὐδὲ ὅσους πόδας
εἶχεν εἰδότος, εἴπερ ἀριθμεῖν μὴ ἡπίστατο; καίτοι ποῖον
τιν' αὐτὸν οἶει στρατηγὸν εἶναι; "Ατοπόν τιν', ἔφη, ἔγωγε,
εἰ ἦν τοῦτ' ἀληθές. "Άλλο τι οὖν, ἦν δὲ ἐγώ, μάθημα Ε
ἀναγκαῖον πολεμικῷ ἀνδρὶ θήσομεν καὶ λογίζεσθαι τε
καὶ ἀριθμεῖν δύνασθαι; Πάντων γέ, ἔφη, μάλιστα, εἰ
καὶ ὅτιον μέλλει τάξεων ἐπαῖειν, μᾶλλον δὲ εἰ καὶ ἀν-
θρωπος ἔθεσθαι. Ἐννοεῖς οὖν, εἶπον, περὶ τοῦτο τὸ
μάθημα ὅπερ ἐγώ; Τὸ ποῖον; Κινδυνεύει τῶν πρὸς τὴν

Aeschylum pariter atque Euripidem in sua Palamede posuisse ex earum fragmentis (p. 114. Schütz. p. 246. Matth.) appareret. Neque Sophoclem, qui et ipse Palameden docuisse fertur, in diversa abiisse crediderim, quum Plato quotiescumque in scenam prodeat Palamedes, ἐν ταῖς τραγῳδίαις ἐνάστοτε, ridiculum fieri Agamemnonem dicat: de eius tamen Nauplio, quam Schleiermacherus hic significatain esse pro certo ponit, propterea non cogitandum videtur, quod ipse Palamedes nullas in ea partes habebat.

τῷ στρατοπέδῳ] post καταστῆσαι Theo. τῷ om. Ang. B.

καταστῆσαι] κατεῖσαι Mon. C. Ἰλίῳ] ἥλιῳ idem et Vat. B. ἥλιῳ καὶ τάλλᾳ πάντα Ang. B.

καὶ ἔξαριθμῆσαι — ὄντων] om. Mon. C.

τάλλᾳ] τάλλᾳ Vind. F. τῷ ἄλλῳ Vind. E. τάλλᾳ Vind. B. Mon. B. (Flor.) Steph. Ast.

πάντα,] πάντα; Steph.

πρὸς τοῦ] προτοῦ Mon. B. (Flor.) Theo Geld. cum parte codicium, Steph. Ast. pr.

ἔοικεν] ἔοικε Vind. E.

οὐδὲ — ἡπίστατο] οὐδὲ ὅσους εἶχε πόδας εἰδότος, εἴγε μὴ ἡπίστατο ἀριθμεῖν Theo.

τιν'] τινα Lob. et ante corr. Mon. C.

οἶει στρατηγὸν εἶναι] στρατηγὸν οἶει γεγονέναι Flor. T.

τιν', ἔφη] τινα Mon. C.

"Άλλο τι οὖν] ἀλλ' ὅτιον Lob. ἀλλ' ὅτι οὖν Vind. E. et a. m.

pr. Mon. B. (manus secunda o ex ὁ fecit.)

ἡν δὲ ἐγώ] post μάθημα Lob. E Vat. BM.

ἀναγκαῖον] om. iidem.

καὶ λογίζεσθαι] Ita Par. A. Vind. E. Vat. H. Flor. ACV. ἢ τὸ λογ. Mon. C. Vind. B. μᾶλλον λογ. Vat. M. μᾶλλον ἢ λογ. editi ante Bekkerum et, ut videtur, Ven. C. a. m. s. cui Glauconis responsum aperte repugnat. Astius in sec. τὸ pro μᾶλλον ἢ scribendum suspicabatur, in tertia, ut Stallbaumius, secutus est Bekkerum cum ceteris codicibus (Ven. C. a. m. pr.) μᾶλλον ἢ simpliciter omittentem. Mihi καὶ, quod codex optimus habet, genuinum et ex eo primum ἢ, in quod saepe corruptum est, tum μᾶλλον ἢ et reliqua varietas originem ducere videtur. Et aliarum rerum et arithmetices peritum imperatorem esse decet.

δύνασθαι] δυναμένω Par. DK. (—νω sec. Bip.)

γέ] γε Vind. F.

μάλιστα] μ. τοῦτο Mon. C. Vind. B. Id post illud ἢ τὸ utique necessarium erat, Astio vero in sec. praeter necessitatem etiam delecto ἢ recipiendum videbatur.

δὲ εἰ] δεῖ Vind. F. δὲ εἰ Lob. εἰ Vind. BE. Mon. C. Par. DK. Vat. H. Flor. ACV.

Ἐννοεῖς] ἐνοεῖς Mon. C.

εἶπον] om. Lob. Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK. Flor. U.

Κινδυνεύει — οὐσίαν. 523. A.] Haec Theo l. c. superioribus illis

523 νόησιν ἀγόντων φύσει εἶναι, ὡς ξητοῦμεν, χρῆσθαι δ' οὐδεὶς αὐτῷ ὁρθῶς, ἐλκτικῷ ὅντι παντάπαι σι πρὸς οὐσίαν. Πῶς, ἔφη, λέγεις; Ἐγὼ πειράσουμαι, ἦν δ' ἐγὼ, τό γ' ἐμοὶ δοκοῦν δηλῶσαι. ἂν γὰρ διαιροῦμαι παρ' ἐμαυτῷ ἀγωγά τε εἶναι οἶ λέγομεν καὶ μὴ, ξυνθεατὴς γενόμενος ξύμφασθι ἢ ἀπειπε, ἵνα καὶ τοῦτο σαφέστερον ἰδωμεν εἰ ἔστιν οἶον μαντεύομαι. Αἰείνυν, ἔφη. Αἰείνυμι δὴ, εἶπον, εἰ καθορᾶς, τὰ μὲν ἐν ταῖς αἰσθήσεσιν οὐ παραπατοῦντα τὴν νόησιν εἰς ἐπίσκεψιν, ὡς ἴκανῶς ὑπὸ τῆς αἰσθήσεως κρινόμενα, τὰ δὲ παντάπαι διαικελευόμενα ἐκείνην ἐπισκέψασθαι, ὡς τῆς αἰσθήσεως οὐδὲν ὑγιὲς 484 ποιούσης. Τὰ πόρχωθεν, ἔφη, φαινόμενα δῆλον ὅτι λέγεις καὶ τὰ ἐσπιαγραφημένα. Οὐ πάνυ, ἦν δ' ἐγὼ, ἔτυχες οὖς λέγω. Ποῖα μὴν, ἔφη, λέγεις; Τὰ μὲν οὐ

εἴ γε μὴ ἡ πίστατο ἀριθμεῖν continuat: ηὐδυνεύει γοῦν (cod. Scalig. οὖν) τῶν πρὸς νόησιν ἀγόντων φύσει εἶναι, καὶ οὐδεὶς αὐτῷ χρῆται ἐλκτικῷ ὅντι πρὸς οὐσίαν.

523 ὡν] Ita Par. A. Vind. BF. Mon. C. Ven. C. a m. s. (οὐ a m. pr.) Ang. B. Vat. H. Flor. ACTV. ὁ Ven. B. a m. s. et reliqui codices editique ante Astii sec. in qua veram lectionem accurata Monacensis C. collatione destitutus Ficino praeente (*qualia nos perquirimus*) et similis ducto loci p. 525. B. ὡν ξητοῦμεν ἄρα μαθημάτων ἀν εἰη restituit.

δ'] δὲ Vind. BF. Mon. C. δι' Ald. δ' i Bas. a.

ὁρθῶς] om. Ven. B. a m. pr.
τό γ' ἐμοὶ] τόγε μοι Vind. F. Ang. B.

οἶ] Ita Par. A. οἱ Vind. F. om. Ang. B. Flor. R. οἶα reliqui codices et editiones ante Bekkerum, item Ficinus: *qualia nos dicimus*. Ferri vix poterat.

μὴν] μὴν Par. DK. μοι Ang. B.

ἀπειπε] ἀπειπεῖν Vind. F. Ang. B.

ἵνα] ἂν Vind. F.

ἰδωμεν] εἰδῶμεν Vat. M.

Αἰείνυ] δείκνυ' Mon. B. δεί-

κνυν Ang. B. Flor. R. δείκνυν
Vind. F. Cf. supra p. 250.

Αἰείνυμι] δείκνυμι Mon. B. δοκεῖ μοι Vind. E. δεῖ μοι Vat. H. Flor. AC.

δὴ] δεῖ Vind. F. ante corr.
καθορᾶς,] Comma Bekkero debetur.

τὰ μὲν] Stephanus in m. τῶν addendum suspicatur, quo opus non esse Astius docuit.

αἰσθήσεσιν οὐ] αἰσθήσει Mon. C.

ώς] om. Lob. Vat. M. B
ἴκανῶς] ικανὸς Vind. F.

ἐπισκέψασθαι] διεπισκέψασθαι
Par. K. sec. Bip.

ποιούσης] Astius νοούσης coniicit Platonem scripsisse et legisse Ficinum: *quasi sensus in eis nihil sincere diiudicet*. Sed αἰσθήσεως non est νοεῖν, et Ficinus sensum, non significationem verbi propriam secutus est, quamquam et ipsam egregie huic loco convenientem. Nam quae sensuum ope percipiuntur, quum ita comparata sunt, ut esse aliquid et simul non esse videantur vel diversam et contrariam speciem pariter exhibeant, sensus fallacibus nuntiis et infidis interpretibus similes fiunt et *nihil sincere agere* merito arguuntur, et αἰσθήσεις οὐδὲν ὑγιὲς ποιοῦσα

παρακαλοῦντα, ἥν δ' ἔγω, ὅσα μὴ ἐκβαίνει εἰς ἐναντίαν
αἴσθησιν ἄμα· τὰ δ' ἐκβαίνοντα ὡς παρακαλοῦντα τί- C
θημι, ἐπειδὴν ή αἴσθησις μηδὲν μᾶλλον τοῦτο, η τὸ
ἐναντίον δῆλοι, εἴτ' ἐγγύθεν προσπίπτουσα εἴτε πόρφω-
θεν. ὥδε δὲ ἀ λέγω σαφέστερον εἶση. οὗτοι, φαμὲν,
τρεῖς ἀν εἰεν δάκτυλοι, ὅ τε διαιρότατος καὶ ὁ δεύτε-
ρος καὶ ὁ μέσος. Πάνυ γ', ἔφη. Ως ἐγγύθεν τοίνυν
ὅρωμένους λέγοντός μου διανοοῦ. ἀλλά μοι περὶ αὐτῶν
τόδε σκόπει. Τὸ ποῖον; Δάκτυλος μὲν αὐτῶν φαίνεται
όμοιός ἔκαστος, καὶ ταύτῃ γε οὐδὲν διαιφέρει, ἐάν τε D
ἐν μέσῳ ὁρᾶται ἐάν τ' ἐν ἐσχάτῳ, ἐάν τε λευκὸς ἐάν τε
μέλας, ἐάν τε παχὺς ἐάν τε λεπτὸς, καὶ πᾶν ὅτι τοιοῦ-
τον. ἐν πᾶσι γὰρ τούτοις οὐκ ἀναγκάζεται τῶν πολλῶν
ἡ ψυχὴ τὴν νόησιν ἐπερέβει, τί ποτ' ἔστι δάκτυλος.

eodem iure dicitur, quo ἀνήρ οὐ-
δὲν ὑγιὲς εἰργασμένος Aristoph.
Plu. 355. Cf. ib. 50: ὡς σφόδρος'
ἔστι συμφέρον τὸ μηδὲν ἀσκεῖν
ὑγιὲς ἐν τῷ νῦν χρόνῳ. Simili-
ter infra E: ἡ ὥδε ποιεῖ ἐκάστη
αὐτῶν· ποῶτον μὲν etc. in qui-
bus amplificataim prosopóropeiam
vides.

φαινόμενα] φαινόμεθα Mon.
B. a m. pr.
δῆλον ὅτι] δηλονότι Lob. Vind.
BE. Mon. BC. Flor. ACTUV.
(Par. K. sec. Bip.) editi ante
Astii sec. Cf. Vol. I. p. 163. sq.
οὐ] οὐ Vind. F.

Ποῖα] ποία Vind. E.
ἐκβαίνει] ἐκβαίνη Lob. Vind.
BF. Mon. C. Ven. B. Ang. B.
Vat. H. Flor. ACRV.

C τὰ δ'] τὰ δὲ Mon. C.
ἐπειδὴν] ἐπειδὸς ἀν Vind. E.
εἴτ'] εἴτ' Vind. F.
προσπίπτουσα] πίπτουσα Mon.
B. Flor. U.
ἢ] ὢ Ang. B. Flor. R. quod
Fic.
σαφέστερον] σαφέστερα Mon.
B.
εἶση] εἰσ Vind. F. εἴη Ang. B.
εἰσει recentiores.
ἀν εἰεν] εἰεν ἀν Vind. F. ἀν
εἰεν ἀν Ang. B.
Πάνυ γ'] πάνυ γε Mon. C.

τόδε] ὥδε Flor. T.

μὲν] μέν πον Vind. F. Ang.

B. Flor. R. Ven. C.

καὶ ταύτῃ γε] καὶ Mon. B. D
idque in fine versus a m. s. ad
ἔκαστος additum.

ἐάν τε] ἐάν τ' Vind. F. Ang.

B.

ἐν μέσῳ] ἐν τῷ μ. Flor. T.

ἐάν τ'] ἐάν τε Lob. Vind. BF.

Mon. C.

μέλας] μέγας Lob. Vat. BM.

Ven. C.

παχὺς — λεπτὸς] λεπτὸς —

παχὺς Vat. B.

τοιοῦτον] τοιοῦτο idem et Lob.

τῶν πολλῶν] Haec verba Astius,
quum in commentario secundum
Ficinum (quid e multis sit digi-
tus) cum sequente τι construenda
esse docuisse, in addendis et in
tert. ed. glossematis suspecta ha-
bet et eiicienda opinatur; neu-
trum recte. Sunt enim ad rerum
naturam perscrutandam facta in-
genia, quae etiam colore conspec-
to aliave re non contraria, sed
tamen ab ipso, cui inhaeret, di-
versa sensuum ope percepta exci-
tentur, ut, quid illud ipsum sit,
anquirant et caussam explorent,
cur digitus, ut Socratis exemplo
utar, quem album vident, digitus
sit potius, quam color albus. Sed

οὐδαμοῦ γὰρ ἡ ὄψις αὐτῇ ἀμα ἐσήμηνε τὸν δάκτυλον τούναντίον, ἢ δάκτυλον εἶναι. Οὐ γὰρ οὖν, ἔφη. Οὐκοῦν, ἦν δ' ἐγὼ, εἰκότως τό γε τοιοῦτον νοήσεως οὐκ ἐν παραπλητικὸν οὐδ' ἐγερτικὸν εἴη. Εἰκότως. Τί δὲ δή; τὸ μέγεθος αὐτῶν καὶ τὴν σμικρότητα ἡ ὄψις ἀραι ἵκανως ὁρᾷ, καὶ οὐδὲν αὐτῇ διαφέρει ἐν μέσῳ τινὰ αὐτῶν κεῖσθαι ἢ ἐπ' ἐσχάτῳ; καὶ ὥστα πάχος καὶ λεπτότητα ἡ μαλακότητα καὶ σκληρότητα ἡ ἀφή; καὶ αἱ ἄλλαι αἰσθήσεις ἀρ οὐκ ἐνδεῶς τὰ τοιαῦτα δηλοῦσιν;

ii pauci sunt: plurimorum animus non nisi contrariis animadversis sollicitari et ad philosophandum impelli solet.

ἐπερέσθαι] ἐπέρεσθαι Vind. F. Flor. R. ἐπαιρεσθαι Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV. ad disceptandum provocare Fic.

ἔστι] ἔστι Lob. Vind. BE. Astius in tert.

αὐτῇ] Ita Par. A. αὐτῃ Lob. αὐτῃ Vind. BEF. Mon. C. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACTV. αὐτῃ reliqui cum editis ante Bekkerum.

ἄμα] om. Lob. Mon. B. Vat. BM. Ven. C. Par. K. Flor. U.

ἐσήμηνε] Ita Par. AD. Vind. F. Mon. B. Ven. C. Ang. B. Flor. ACTV. ἐσήμηνε τε Flor. U. Par. K. sec. Bip. ἐσήμηνε sec. Bekk. ἐσήμαινε Lob. Vind. BE. Mon. C. (Flor. R. et, nisi fallor, Vat. BHM. Ven. B. de quibus Bekkerus item ut de Vind. B. tacuit) cum Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr. sec. Aoristum etiam Stephanus videtur desiderasse, etsi p. 25. scripsit: „Vide annon potius ἐσήμαινε scribendum sit.“ At id ipsum ediderat.

Οὐ γὰρ οὖν] ονγαροῦν Lob. τό γε] τὸ Vind. F. Ang. B. τοιοῦτον] τοιοῦτο Lob. Vat. B.

οὐδ' ἐγερτικὸν] om. Ven. B. a m. pr.

E Tί δὲ δή] τι δαι δή Par. A. δή om. Mon. B. Par. DK. Flor. U. cum editis ante Bekkerum. Stallbaumius in utraque ed. etiam apud Iamblichum id extare mo-

net, sed Iamblichī locū non significat, nec ego inveni.

σμικρότητα] σμικρότατα Vind. F. Flor. R.

ἀραι] ἀραι Lob. Vind. EF. Flor. ACUV. et a m. pr. Mon. B. ἵκανως] in. καὶ Mon. C.

ὁρᾷ,] ὁρᾷ; Bas. ab. Steph. Ast. pr.

ἐσχάτῳ] ἐσχάτων Mon. B. Par. DK. Flor. U. editi. ante Bekkerum. in extremis Fic.

ἀφή,] In Vind. B. Mon. B. Ald. Bas. ab. nulla h. l. interpunktio est.

αἰσθήσεις] Hic Ald. punctum, Bas. ab. interrogationis notam habent.

δηλοῦσιν;] δηλοῦσιν, Ald. Bas. ab. quod ferri potest.

ἢ ὅδε ποιεῖ εἰλ ὅδε ποιεῖ Vat. B. Ven. B. εἰ ὅδε ἐποίει Lob. Vat. M. ὅδε ποιεῖ Par. D. a m. pr. δ' ἐποίει Par. K. sec. Bip. δ' ἐποίει sec. Bekk. ἢ ὅδε πη Vind. E. ἢ οὐχ ὅδε ποιεῖ Mon. B. et corr. Flor. U. Id Schleiermacherus secutus est et Stallbaumius in sec. recepit. Sed quae praecedunt, ἀρ οὐκ ἐνδεῶς, idem significant, quod ἀρ ἀνενδεῶς seu ἵκανως.

αὐτῶν·] αὐτῶν; Bas. ab. Steph. Ast. pr. sec. Stallb. sec. αὐτῶν, Bekkerus, Ast. tert. Stallb. pr.

τεταγμένη] τε τεταγμένη, e524 corr. τε ταγμένη, Mon. B.

ἡνάγνασται] ἡνάγνασθαι Mon. C. ante corr.

τῷ] μὲν Bas. b. παραγγέλλει] παραγγέλει Vind.

ἡ ὥδε ποιεῖ ἐκάστη αὐτῶν· πρῶτον μὲν ἡ ἐπὶ τῷ σκλη- 524
ρῷ τεταγμένη αἰσθησις ἡνάγκασται καὶ ἐπὶ τῷ μαλακῷ
τετάχθαι καὶ παραγγέλλει τῇ ψυχῇ ὡς ταῦτὸν σκληρόν
τε καὶ μαλακὸν αἰσθανομένη; Οὕτως, ἔφη. Οὐκοῦν,
ἥν δ' ἔγα, ἀναγκαῖον ἐν τοῖς τοιούτοις αὖτὴν ψυχὴν
ἀπορεῖν, τί ποτε σημαίνει αὗτη ἡ αἰσθησις τὸ σκληρὸν,
εἴπερ τὸ αὐτὸν καὶ μαλακὸν λέγει, καὶ ἡ τοῦ κοῦφου
καὶ ἡ τοῦ βαρέος, τί τὸ κοῦφον καὶ βαρὺ, εἰ τὸ τε
βαρὺ κοῦφον καὶ τὸ κοῦφον βαρὺ σημαίνει; Καὶ γὰρ, B

F. „Crediderim παραγγέλλει mutandum esse in προσαγγέλλει.“ Steph. annot. pag. 25. Scilicet παραγγέλλειν vulgo non factum, sed faciendum denuntiare, hor-tari, imperare significat, et ita Plato Criton. p. 50. D. Phaedon. 59. E. 116. C. et alibi eo utitur. Sed ea quoque, quae agi et fieri non possunt, sed credi et vera haberet et, si res ita ferat, pro norma agendi observari iubentur, παραγγέλλεισθαι dicit. Sic supra L. III. p. 429. C. ubi fortitudinem eam vim esse demonstrat, ἡ διὰ παντὸς σώσει τὴν περὶ τῶν δεινῶν δόξαν, ταῦτα τε αὐτὰ εἶναι καὶ τοιαῦτα, ἃ τε καὶ οἷα ὁ νομοθέτης παρηγγειλεν ἐν τῇ παυδείᾳ. et 442. C. tum fortē aliquem praedicans, ὅταν αὐτοῦ τὸ θυμοειδὲς διασώζῃ διά τε λυπῶν καὶ ἡδονῶν τὸ ὑπὸ τοῦ λόγου παραγγελθὲν δεινόν τε καὶ μή. et sapientiam in ea animi parte ponens, ὃ ἡρχέ τ' ἐν αὐτῷ καὶ ταῦτα παρηγγειλεν. Confer L. VIII. p. 556. D. Ita hic sensum contraria nuntiantem utraque credere animum iubere atque ita magna perturbatione implere significat. Aliter res habet. Xenoph. Anab. VI. 3, 22. quo loco παραγγέλλοντι iure secundum optimos libros in ἀπαγγέλλοντι mutatum est.

αἰσθανομένη] αἰσθομένη cum aro super o. Ven. B. Signum interrogandi cum Mon. B. apposui propter sequens οὔτως, quod magis respondentis, quam assentientis videretur. Idem Astius in

tert. et Stallbaumius in sec. sece-runt. Bekkerus punctum tenuit.

ἐν] ἐν γε Vind. F. Ang. B. Flor. R.

αὖτὴν] αὐτὴν Bas. b. αὖ di-versam harum perceptionum ab illis, quae animum movere non solent, indolem demonstrat.

αὗτη ἡ αἰσθησις] Ita Par. A. Vind. BEF. Mon. C. Ven. B. Ang. B. Vat. H. et Ficinus: (*duri*) hic sensus. Pro αὐτῇ in Mon. B. Flor. ACUV. αὐτὴ, in reliquis et vulgo αὐτῆ legitur, quod facilius, si opus sit, ad σημαίνει, quam αὐτῇ, quo opus est, ad ἡ αἰσθησις cogitando addas. Non enim facultatem aut instrumentum percipiendi, sed ipsam perceptio-nem h. l. intelligendam esse se-quentia ἡ τοῦ κοῦφον καὶ ἡ τοῦ βαρέος docent, quibus αὐτῇ ἡ αἰσθησις, hoc est, ἡ τοῦ σκλη-ροῦ αἰσθησις, optime respondet.

σκληρὸν] σκληρὰν Bas. a. Ge-nitivum, quem Astius in tert. re-quirit, post αὐτῇ nemo desidera-verit.

καὶ] om. Vat. H. λέγει] λέγοι Vind. E. Ven. B. Vat. H. Flor. AC. In Bas. ab signum interrogandi adiectum.

ἡ τοῦ βαρέος] βαρέος Lob. Vat. M. τοῦ βαρέος Vat. B. Ast. pr. sec. ἡ τοῦ βαρέως Vind. F.

τό τε] τε τὸ Vind. F. τότε Ald. Bas. ab. „τε τό] τότε Ang. B.“ Bekkerus ad h. l. adnotans cum Vind. F. potius, quam cum Ald. consentientem significare co-dicem Angelicum voluisse videtur.

σημαίνει;] σημαίνει. Ald. Steph.

ἔφη, αὐταί γε ἄτοποι τῇ ψυχῇ αἱ ἐρμηνεῖαι καὶ ἐπισκέψεως δεόμεναι. Εἰκότως ἄρ, ἦν δ' ἐγώ, ἐν τοῖς τοιούτοις πρῶτον μὲν πειρᾶται λογισμὸν τε καὶ νόησιν ψυχὴν παραπαλοῦσα ἐπισκοπεῖν, εἴτε ἐν εἴτε δύο ἐστὶν ἔκαστα τῶν εἰσαγγελλομένων. Πῶς δ' οὖ; Οὐκοῦν ἐὰν δύο φαίνηται, ἔτερόν τε καὶ ἐν ἐκάτερον φαίνεται; Ναί. Εἰ ἄρα ἐν ἐκάτερον, ἀμφότερα δὲ δύο, τά γε δύο κεχωρισμένα νοήσει· οὐ γὰρ ἀν ἀχώριστά γε δύο ἐνόει, C ἀλλ' ἐν. Ὁρθῶς. Μέγα μὴν καὶ ὄψις καὶ σμικρὸν ἐώρα, φαμὲν, ἀλλ' οὐ κεχωρισμένον, ἀλλὰ συγκεχυμένον τι. ἡ γάρ; Ναί. Διὰ δὲ τὴν τούτον σαφήνειαν μέγα αὐτὸν καὶ σμικρὸν ἡ νόησις ἡναγκάσθη ἵδειν οὐ συγκεχυμένα, ἀλλὰ διωρισμένα, τούναντίον, ἥτις εἴνη. Ἀληθῆ. Οὐκοῦν ἐντεῦθέν ποθεν πρῶτον ἐπέρχεται ἐρέσθαι ημῖν, τί οὖν ποτέ ἐστι τὸ μέγα αὐτὸν καὶ τὸ σμικρόν; Παντάπασι μὲν οὖν. Καὶ οὗτοι δὴ τὸ μὲν νοητὸν, τὸ δὲ ὁρατὸν ἐκά-

Bekkerus et Stallbaumius in pr.
quae ratio sequentibus aequē con-
veniens minus convenire pree-
dentibus et illi οὐκοῦν videtur.

B αὐταί] Ita Par. A. Lob. Vind. BEF. Mon. C. et a m. s. B. (a m. pr. αὐτα) Ven. B. Ang. B. Vat. HM. αὐταί (Flor. Par. K. sec. Bip.) editi ante Astii sec. qui Ficinum (*hae — interpretationes*) secutus est. De reliquis Bekkeri libris non constat.

αἱ] om. Flor. T. non male.

ἄρ] ἄρ Bas. b. ἄρα Lob. Vind. BEF. ἄρα Mon. C.

τε] om. Lob. Vat. BM.

ψυχῇ] ψυχῆς Vind. F.

εἴτε ἐν] εἰ ἐν Ald. Bas. a.

ἀμφότερα δὲ] ἀμφότερα γε Lob. Vat. BM.

τά γε] τά τε Mon. C.

ἐνόει] ἐννόει Vat. H. ἐνός Bas. b.

C καὶ ὄψις] Ita Par. AK. et a m. s. D. Vind. B. Mon. BC. Ven. C. Vat. H. Flor. UV. ὄψις Lob. Vat. BM. καὶ ἡ ὄψις Ang. B. Flor. AC. Vind. F. et post καὶ σμικρὸν E. ἡ ὄψις (Flor. R.) Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Stallb. pr. Idem in Flor. T. sed post καὶ σμικρὸν legitur. De Ven. B.

et m. pr. Par. D. Bekkerus nihil ostendit. *magnum quidem et parvum aspectum videre dicimus.* Fic.

σμικρὸν] μικρὸν Mon. C. ἡ] ἡ Vind. F. Mon. B. Ἡ Ald. Steph.

σμικρὸν] σ int. vers. Mon. C. ἰδεῖν] ἰδεῖν, Bas. ab. Steph. Stallb. sec.

ἥτις εἴνη] Ita Par. A. Lob. Vind. B. Vat. BHM. Ven. BC. Ang. B. et, ut videtur, Vind. F. ἥτις εἴνη Flor. ACTV. et corr. Mon. C. ἥτις εἴνη idem ante corr. cum reliquis et editis. Cf. Vol. I. p. 154, b.

ποθεν] om. Mon. C. πόθεν Vind. EF.

πρῶτον] om. Vind. B. Mon. C. post ἐπέρχεται Lob. Vat. BM. Flor. T. πρῶτον μὲν Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Flor. ACR. editiones ante Bekkerum.

ἐρέσθαι] Sic Bekkerus secundum Ven. B. Par. DK. de quo Bipontini tacent. Non aliter Lob. Vind. E. Mon. B. Reliqui mei et Florentini cum editis ante Bekkerum ἐρέσθαι habent.

ποτέ ἐστι] Ita Lob. ποτέ ἐστι Vind. F. ποτέ ἐστι Vind. BE.

λέσαμεν. Ὁρθότατ', ἔφη. Ταῦτα τοίνυν καὶ ἄρτι ἐπε- D
χείρουν λέγειν, ὡς τὰ μὲν παρακλητικὰ τῆς διανοίας
ἔστι, τὰ δ' οὐ, ἀ μὲν εἰς τὴν αἴσθησιν ἅμα τοῖς ἐναν-
τίοις ἑαυτοῖς ἐμπίπτει, παρακλητικὰ δοιξόμενος, ὅσα δὲ
μὴ, οὐκ ἐγερτικὰ τῆς νοήσεως. Μανθάνω τοίνυν ἥδη,
ἔφη, καὶ δοκεῖ μοι οὕτω. Τί οὖν; ἀριθμός τε καὶ τὸ
ἐν ποτέρων δοκεῖ εἶναι; Οὐ χυννοῶ, ἔφη. Ἀλλ' ἐκ τῶν
προειρημένων, ἔφη, ἀναλογίζουν. εἰ μὲν γὰρ ἵκανῶς
αὐτὸ καθ' αὐτὸ δρᾶται ἢ ἄλλῃ τινὶ αἰσθήσει λαμβάνε- E
ται τὸ ἐν, οὐκ ἐν δλκὸν εἴη ἐπὶ τὴν οὐσίαν, ὥσπερ
ἐπὶ τοῦ δακτύλου ἐλέγομεν· εἰ δ' ἀεὶ τι αὐτῷ ἅμα δρᾶ-
ται ἐναντίωμα, ὥστε μηδὲν μᾶλλον ἐν, ἢ καὶ τούναντίον
φαίνεσθαι, τοῦ ἐπικρινοῦντος δὴ δέοι ἀν ἥδη, καὶ
ἀναγκάζοιτ' ἐν ἐν αὐτῷ φυχὴ ἀπορεῖν καὶ ζητεῖν κινοῦσα
ἐν ἑαυτῇ τὴν ἔννοιαν καὶ ἀνερωτᾶν, τί ποτ' ἔστιν αὐτὸ
τὸ ἐν, καὶ οὕτω τῶν ἀγωγῶν ἀν εἴη καὶ μεταστρεπτικῶν 525

Mon. BC. Ald. Bas. ab. Steph.
Ast.

σημικόν] μιηρόν Lob. Signum
interrogandi in Ald. et Steph.
deest.

τὸ δ'] τό δ' Lob.

D Ὁρθότατ'] οὐθότατ' Mon. C.
ὁρθότατα Lob. ὁρθώτατα Vind.
F.

τά δ'] ταδ' Vind. F. τάδ' Mon.
B. τά δ' Ald. Bas. ab. τά δὲ
Vind. BE.

τὴν] om. Flor. T.

ἑαυτοῖς] om. Mon. B.

δοιξόμενος] ἐργαζόμενος Vind.
F. et margo Flor. A.

οὕτω], οὕτως. Bekkerus.

Tί οὖν;] In Ald. Bas. ab. nulla
hic distinctio, sed deinde post
Ἐν comma est. Simili modo Fi-
cinus.

ποτέρων] πότερον Mon. BC.
Vind. BE. Flor. T. et a. m. pr.
Ven. B. πρότερον Vat. H. Flor.
A.

ἔφην] ἔφη Vind. F.

ἵκανῶς] ἵκανὸς idem. Deinde
καθαντό.

E ἐν δλκὸν] ἀνολκον Lob. Mon.
B. ἀν ἔλκον Par. K. sec. Bekk.
Flor. T. In Vat. M. lacuna est.
Cf. supra p. 276.

τι αὐτῷ] τε, e corr. τι, αὐτὸ
Vind. F.

ἢ] om. Vind. E.

τούναντίον] τούναντίον Ald.
Bas. a.

δὴ] om. Vind. E. Flor. R.

ἀναγκάζοιτ'] ἀναγκάζοι τ' Ald.

αὐτῷ φυχὴ — ἀπαντα ταῦτα
528. C.] om. Vind. B. Mon. C.

Vat. H. sine ullo lacunae indicio.
Hos igitur tres ex uno derivatos
habemus, in quo casu aliquo, qualem
L. VI. p. 507. E. Veneto C.
accidisse vidiimus, ista interierant.
Pro αὐτῷ Flor. T. Bas. b. αὐτῇ
exhibitent.

ἑαυτῇ] ἑαυτῇ Ald. „Alia etiam
est lectio, κινοῦσα ἐν αὐτῇ τὴν
ἔννοιαν: sed ἐν ἑαυτῇ retineam-
us necesse est.“ Steph. p. 25.
Vereor, ne haec lectio non di-
versa sit ab ea, quam modo ex
Bas. b. retulimus.

τι ποτ' ἔστιν] Ita Lob. Vind.
F. — ἔστιν duo reliqui mei et
Ald. Bas. ab. Steph. Ast.

τὸ] om. Ven. B. a. m. pr.

ἀγωγῶν] ἀναγωγῶν Mon. B. 525
Par. DK. Flor. U. et a. m. s.
Ven. C.

μεταστρεπτικῶν] μεταστρεπτι-
κῶν Vind. E. μετατρεπτικῶν Lob.

ἐπὶ τὴν τοῦ ὄντος θέαν ἡ περὶ τὸ ἐν μάθησις. Ἀλλὰ μέντοι, ἔφη, τοῦτό γ' ἔχει οὐκ ἥκιστα ἡ περὶ αὐτὸ ὄψις· ἀμα γὰρ ταῦτὸν ὡς ἐν τε δοῶμεν καὶ ὡς ἅπειρα τὸ πλῆθος. Οὐκοῦν εἴπερ τὸ ἐν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ ξύμπας ἀριθμὸς ταῦτὸν πέπονθε τοῦτο; Πῶς δ' οὖ; Ἀλλὰ μὴν λογιστική τε καὶ ἀριθμητικὴ περὶ ἀριθμὸν πᾶσα. Καὶ Β μάλα. Ταῦτα δέ γε φαίνεται ἀγωγὰ πρὸς ἀλήθειαν. Ὄπεροφυῶς μὲν οὖν. Ὡν ξητοῦμεν ἄρα, ὡς ἔοικε, μαθημάτων ἀν εἰη· πολεμικῷ μὲν γὰρ διὰ τὰς τάξεις ἀναγκαῖον μαθεῖν ταῦτα, φιλοσόφῳ δὲ διὰ τὸ τῆς οὐσίας ἀπτέον εἶναι γενέσεως ἔξαναδύντι, ἢ μηδέποτε λογιστικῷ γενέσθαι. "Εστι ταῦτ", ἔφη. Ὁ δέ γε ἡμέτερος φύλαξ πολεμικός τε καὶ φιλόσοφος τυγχάνει ὧν.

Vind. F. Vat. BM. Ang. B. Flor. ACRT. μετατρεπτικὸν, sup. ὃν, Ven. B.

μάθησις] μάθησις Ald.

Ἀλλὰ] ἀλλὰ Ald. Bas. b. Steph.

γένεται] γε Vind. EF.

η] ἡ Par. K. sec. Bekk. et, ut videtur, a m. pr. Mon. B. item Ald. Bas. ab.

αὐτὸν] Ita Vind. EF. Ang. B. Flor. ACTV. et a m. pr. Ven. B. τὸ αὐτὸν reliqui cum editis ante Bekkerum. At nondum aliud quicquam de uno praedicatum est, ut hoc tanquam alterum eidem assignandum proponi potuerit.

ταῦτὸν] ταῦτὸν Ven. B. τε αὐτὸν Vind. E. Ang. B. τε αὐτὸν Vind. F. *ipsum* Fic.

ἐν τε] ἐν τὶ Vind. E.

πλῆθος. Οὐκοῦν] πλῆθος, οὐκοῦν Ald.

εἴπερ] υπὲρ Vind. E.

ταῦτὸν] Ita cum Bekkerio, Astio in tert. et Stallbaunio secundum Par. A. Ven. C. pro ταῦτὸν scribendum putavi, quia iidem librarii alibi, velut Tim. p. 44. B. Par. A. et infra p. 530. A. Ven. C. ταῦτὸν ante eandem π exhibentes non praeceptum aliquod de pleniore forma ubique representanda, sed exemplarium suorum scripturam h. l. secuti videntur.

τοῦτο] om. Vat. M. τούτωι

Par. A. quod multo deterius est, quia Socrates non quidvis, sed certum quoddam, de quo modo dixerat, universo numero pariter atque uni accidere significat.

ἀριθμητικὴ] ἀριθμητικὴ τε

Par. K. sec. Bekk.

δέ γε] γε om. Flor. T.

Ων] ὁ Vind. E. Cf. p. 523. B

A. πολεμικῷ] πολεμικῶς Vind. E.

μὲν] om. idem et Flor. T.

τῆς οὐσίας] τῆς om. Ang. B.

ταῦτ'] ταῦτα Lob. Vind. E.

φιλόσοφος] φιλόσοφον Ald.

Bas. a.

τὸ μάθημα] τὸ om. Flor. ACV.

μεθέξειν] μέθεξιν Ven. C. et

a m. pr. Par. D.

ἐπὶ λογιστικὴν] ἐπιλογ. Vind. E.

ἐπὶ λογιστικὸν Flor. V.

ἀνθάπτεσθαι] ἐὰν θάπτεσθαι C

Vind. F. Hanc Socratis ἔησιν Theo Smyrnaeus de arithm. p. 8.

Geld. minus accurate recitat: ἀπτέον δὲ τῆς (id cod. Seal. omittit.) λογιστικῆς μὴ διωτικῶς,

ἀλλ' ὡς ἀν ἐπὶ θέαν τῆς τῶν

ἀριθμῶν φύσεως ἀφίκωνται τῇ

νοήσει, οὐδὲ πράσεως γάρ οὐν ἐμ-

πόρων ἢ παπήλων μελετῶντες,

ἀλλ' ἐνεπα ψυχῆς τῆς ἐπ' ἀλή-

θειαν παλ οὐσίαν ὄδοιν.

αὐτῆς] αὐτῶν Par. K.

ἀλλ'] ἀλλὰ Vind. F. ἀλλὰ παί

Flor. ACT.

Tί μήν; Προσῆκον δὴ τὸ μάθημα ἀν εἰη, ὡ Γλαύκων, νομοθετῆσαι καὶ πείθειν τοὺς μέλλοντας ἐν τῇ πόλει τῶν μεγίστων μεθέξειν ἐπὶ λογιστικὴν ιέναι καὶ ἀνθά- C πτεσθαι αὐτῆς μὴ ἴδιωτικῶς, ἀλλ' ἔως ἂν ἐπὶ θέαν τῆς τῶν ἀριθμῶν φύσεως ἀφίκωνται τῇ νοήσει αὐτῇ, οὐκ ὥντος οὐδὲ πράσεως χάριν ὡς ἐμπόρους η̄ καπήλους μελετῶντας, ἀλλ' ἔνεκα πολέμου τε καὶ αὐτῆς τῆς ψυχῆς ὁμοτάπειρης μεταστροφῆς ἀπὸ γενέσεως ἐπ' ἀλήθειάν τε καὶ οὐσίαν. Κάλλιστ', ἔφη, λέγεις. Καὶ μὴν, η̄ δ' ἔγω, νῦν καὶ ἔννοιῶ ὁμοτάπειρης τοῦ περὶ τὸν λογισμὸν D μαθήματος, ὡς κομψόν ἔστι καὶ πολλαχῆ χοήσιμον ἥμιν πρὸς ὃ βουλόμεθα, ἐὰν τοῦ γνωρίζειν ἔνεκα τις αὐτὸς ἐπιτηδεύῃ, ἀλλὰ μὴ τοῦ καπηλεύειν. Πῆ δή; ἔφη. Τοῦτο γε,

ἀφίκωνται] ἀφίκονται Vind. F. Flor. R.

αὐτῇ] Ven. B. ὡν super η habet.

ψυχῆς ὁμοτάπειρης μεταστροφῆς] Ita Vind. EF. Mon. B. (hic cum

gravi a m. s. super α' posito: μεταστροφῆς) Vat. B. Ven. BC.

Par. D. Flor. ACRUV. et Ald. Bas. ab. (hae cum puncto post

ψυχῆς) Ast. sec. tert. Stallb. nec

aliter Theo videtur legisse. ψυ-

χῆς ὁμοτάπειρης καὶ μεταστροφῆς

Lob. Par. K. Ang. B. Vat. M. Flor. T. Steph. Ast. pr. ψυχῆς

ὁμοτάπειρης τε μεταστροφῆς Par. A.

Bekkerus. quod etsi ferri possit,

ita ut τε, quemadmodum καὶ sae-

pius, epexegesi inservire statua-

tur, qualem Leg. L. V. p. 744.

B. in verbis πολλῶν ἔνεκα τῶν

τε κατὰ πόλιν καιρῶν ισότητος

ἔνεκα facere videtur, eoque ascito

particula καὶ quomodo in codices

nonnullos venerit. facilius intelli-

gatur, tamen quum τε in uno

tantum libro exstet, pariter atque

καὶ ad evitandum genitivorum

concursum interpolando additum

crediderim. Quem concursum scri-

ptores non reformidasse Matthiae

exempla gramm. p. 699. n. 2. do-

cent. ψυχῆς ὁμοτάπειρη autem με-

ταστροφῆς non ineleganter con-

ditionem animi eo, quod iam fa-

cilius convertatur, meliorem red-

dendam significat et ita ψυχῆς ὁμοτάπειρη dicitur, ut simul μετα-
στροφῆς ὁμοτάπειρη esse demon-
stretur. Pari brevitate Tim. p. 24.
B. η̄ τῆς ὀπλίσεως αὐτῶν σχέσις
ἀσπιδῶν καὶ δοράτων armaturaē
eorum ratio in clypeorum et ha-
starum usu posita appellatur, quasi
dicatur η̄ τῆς ὀπλίσεως σχέσις
ἀσπιδῶν καὶ δοράτων σχέσις
οὗσα.

ἐπ' ἀλήθειάν τε] τε ἐπ' ἀλή-

θειάν Vind. E. Flor. ACR.

νῦν καὶ] om. Vind. E. καὶ

Flor. T. νῦν Vind. F. Flor. R.

ἔννοιῶ] ἔννοιῶ Ald.

πολλαχῆ] πολλαχῆ Ald. Bas. a. D

(Bekkerus et Stallbaumius.) πολ-

λαχῆ Vind. F. πολλαχοῦ Par. K.

πολλαχοῖ Mon. B.

αὐτὸς] αὐτῶν Vind. E. αὐτῶ

Vat. M.

Πῆ] πᾶς Vind. E. Flor. T.

Τοῦτο γε] Τοῦ τόγε Ald. —

Theo l. c. post ὁδοῦ ita pergit: τοῦτο γάρ ἄνω ἄγει τὴν ψυχὴν

καὶ περὶ αὐτῶν τῶν ἀριθμῶν

ἄναγμάζει διαλέγεσθαι, οὐκ ἀπο-

δεχομένον, ἀν τις αὐτῷ σώματα

η̄ αὐτὰ δρατὰ ἔχοντα ἀριθμούς

(ἀριθμὸν cod. Scalig.) προσφε-

ρόμενος διαλέγηται. in quibus

Gelderus η̄ αὐτὰ et ἔχοντα se-

cundum Platонem in ἀπτὰ η̄ et

ἔχοντας mutavit.

T

ο νῦν δὴ ἐλέγομεν, ὡς σφόδρα ἄνω ποι ἀγει τὴν ψυχὴν καὶ περὶ αὐτῶν τῶν ἀριθμῶν ἀναγκάζει διαλέ- 485 γεσθαι, οὐδαμῆ ἀποδεχόμενον, ἐάν τις αὐτῇ δρατὰ ἦ ἀπτὰ σώματα ἔχοντας ἀριθμοὺς προτεινόμενος διαλέγη-
Ε ται. οἶσθα γάρ που τοὺς περὶ ταῦτα δεινοὺς, ὡς ἐάν τις αὐτὸ τὸ ἐν ἐπιχειρῇ τῷ λόγῳ τέμνειν, καταγελῶσί τε καὶ οὐκ ἀποδέχονται, ἀλλ' ἐάν σὺ κερματίζῃς αὐτὸ, ἐκεῖνοι πολλαπλασιοῦσιν, εὐλαβούμενοι, μή ποτε φανῇ τὸ ἐν μὴ ἐν, ἀλλὰ πολλὰ μόρια. Ἀληθέστατα, ἔφη,
526 λέγεις. Τί οὖν οἴει, ὡς Γλαύκων, εἴ τις ἔροιτο αὐτοὺς, Ὡ θαυμάσιοι, περὶ ποιῶν ἀριθμῶν διαλέγεσθε, ἐν οἷς τὸ ἐν οἷον ὑμεῖς ἀξιοῦτες ἔστιν, ἵσον τε ἔκαστον πᾶν

ποι] πη Mon. B. Par. DK. Flor. U. editi ante Bekkerum; quod, quia regio adverbio ἄνω designata satis certa et in antecedentibus sermonibus definita est, alicui tenendum videri possit. Sed nihil obstat, quo minus *ποι* non ad totum ἄνω, sed ad eius partem referamus: *in aliquem superioris regionis locum.*

οὐδαμῆ] οὐδαμὴ Vind. F.
ἀποδεχόμενον] ἀποδεχόμενος Flor. T.

αὐτῇ] αὕτῃ Vind. F. Flor. AC. *αὐτὸ* ἐπὶ Ang. B. *αὐτῇν* ἐπὶ τὰ Flor. T.

ἀπτὰ] τοὺς τὰ Vind. E. ἀπὸ τὰ Flor. AC. ἐπὶ τὰ Flor. T. ἐπὶ τὰ ἀπτὰ Ang. B.

ἔχοντας] ἔχοντα Ang. B. Flor. TU.

ἀριθμοὺς] ἀριθμὸν Mon. B. a m. s. Quid a m. pr. fuerit, non liquet. In m. a m. s. γρ. οὐσ habet.

προτεινόμενος] post διαλέγηται Flor. T.

ποι] om. Lob. Vat. M.

τοὺς] nescio cuius errore in Ast. pr. et sec. excidit.

δεινοὺς, ὡς] δεινοὺς δύο ὡς Par. A. Vat. B. Ven. C. Hoc δύο, cuius ego in meis libris nullum vestigium deprehendi, non habeo, unde ortum aut quo referendum dicam, nisi forte notae cuiquam numero β simili, qua

scholion in Par. A. adscriptum, τοὺς ἀριθμητικούς, ad hanc contextus partem et ad verba τοὺς περὶ ταῦτα δεινοὺς revocaretur, originem debet. Nam duo tantum arithmeticos, qui quidem hoc nomine digni essent, quemquam significare voluisse quis credat? praesertim quum illi codices ab eiusmodi glosseminatis liberi esso soleant; quod ipsum impedit, quo minus ex interpretamento εἰς δύο ad sequens τέμνειν apposito residuum existimemus.

τις] τε Mon. B. E. ἀλλ'] ἀλλὰ Vind. E.

πολλαπλασιοῦσιν] πολλὰ πλασιοῦσιν idem. πολυπλασιοῦσιν Lob. Vat. M.

φανῇ] φανῶ Par. K. μὴ ἐν, ἀλλὰ πολλὰ] ἀλλὰ Mon. B.

οἴει] οἶσθα Vind. E. οἶσθ' Flor. ACT.

ἀξιοῦτες ἔστιν] ἀξιοῦντες ἔστε 526 Lob. Vat. BM. ἀξιοῦντε ἔστι Ven. C. ἀξιοῦντε ἔστιν Vind. EF.

ἵσον] ἵσον Lob. cum editis ante Bekkerum. ἵσον Mon. B.

συνηρὸν] συνηρῶ Vind. E.

διαφέρον] Stephanus interrogationis notam, reliqui editores comma adiecerunt.

μόριόν τε] μόριόν τι Vind. E.

ἄλλως δὲ] ἄλλως δὲ Vind. EF.

οὖν] om. Vind. E. et a m. pr. Ven. B.

παντὶ καὶ οὐδὲ σμικρὸν διαφέρον μόριόν τε ἔχον ἐν ἑαυτῷ οὐδέν; τί ἀν οἵει αὐτοὺς ἀποκρίνασθαι; Τοῦτο ἔγωγε, ὅτι περὶ τούτων λέγουσιν, ὃν διανοηθῆναι μόνον ἐγχωρεῖ, ἄλλως δ' οὐδαμῶς μεταχειρίζεσθαι δυνατόν. Ὁρᾶς οὖν, ἦν δ' ἔγω, ὡς φίλε, ὅτι τῷ ὅντι ἀναγκαῖον ἡμῖν κινδυνεύει εἶναι τὸ μάθημα, ἐπειδὴ φαίνεται γε προσαναγκάζον αὐτῇ τῇ νοήσει χρῆσθαι Β τὴν ψυχὴν ἐπ' αὐτὴν τὴν ἀλήθειαν; Καὶ μὲν δὴ, ἔφη, σφόδρα γε ποιεῖ αὐτό. Τί δέ; τόδε ἥδη ἐπεσκέψω, ὡς οἴ τε φύσει λογιστικοὶ εἰς πάντα τὰ μαθήματα ὡς ἔπος εἰπεῖν ὀξεῖς φύονται, οἴ τε βραδεῖς, ἀν ἐν τούτῳ παιδευθῶσι καὶ γυμνάσωνται, καὶ μηδὲν ἄλλο ὠφεληθῶσιν,

ἥν] om. Vind. F. Flor. AC.
τῷ ὅντι] τωόντι Vind. E.

ἀναγκαῖον ἡμῖν κινδυνεύει εἰ-
ναι] u. ε. ἀ. ἡ. Lob. Vat. M. u.
ἡ. ἀ. ε. Flor. T.

B γε] τε Flor. V.

προσαναγκάζον] προσαναγυά-
ξων Lob.

αὐτῇ τῇ] τῇ om. Par. A. et
certe non necessarium est. Sic
L. IIII. p. 437. E. αὐτοῦ πώμα-
τος, huius libri p. 517. E. αὐ-
τῇ τῇ δικαιοσύνῃ legimus. Sed
quum in reliquis codicibus omni-
bus exstet et post αὐτῇ facillime
praetermitti a librario potuerit,
pro genuino habendum videtur.

τὴν ψυχὴν] τῇ ψυχῇ Vind. F.
Vat. B. Flor. AC.

ἐπ' αὐτῇ] ἐπαν. Vind. E.

μὲν] μὴν Par. DK. (Flor.
RTUV.) editi ante Bekkerum.

Tί δέ;] Tί δαι; Stallbaumius
in sec. cum Par. A. cui in hoc
vocabulo nihil tribuendum esse
saepē experti sumus. Neque vero
hoc, quod sequitur, tanti ad
summam quaestioneis momenti est.

ἥδη] om. Par. K. Sequentia
Theo l. c. p. 9. in haec contra-
xit: ἔτι οἱ λογιστικοὶ εἰς πάντα
(ἄπαντα cod. Scal.) τὰ μαθή-
ματα ὀξεῖς φύονται, οἴ τε βρα-
δεῖς εἰς τὸ ὀξύτεροι (ὁξύτερον
cod. Thuan.) αὐτοὶ (id duo codd.
Paris. omittunt.) αὐτῶν γενέσθαι.

λογιστικοὶ] λογικοὶ Lob. Vat.
M.

φύονται] Ita Par. A. Vind.
EF. Ven. C. Ang. B. Vat. M.
Flor. ACRT. et Theo. φαίνον-
ται, sup. ὕον, Lob. φαίνονται
reliqui septem cum editis. viden-
tur Fic. φαίνονται non malum
est et ferri debebat, donec late-
bat melius: melius est φύονται
propterea, quod acumen illud at-
que ingenii sollertia, quae na-
turali arithmeticæ facultate prae-
ditis ad omnem scientiam adesse
soleat, item naturalem, non arte
aut exercitatione paratam esse
certius et sine ulla ambiguitate
significat, ex quo facultatum
ab ipsa natura instituto consortio
Socrates futurum coniicit, ut qui
arithmeticen rite doceantur, iidem
reliquam scientiam optime perci-
piant. Neque repugnantiae spe-
cies, quum οἱ φύσει λογιστικοὶ,
quos tamen natos esse oporteat,
priusquam tales nominari possint,
iterum ὀξεῖς φύεσθαι dicantur,
detergere nos debet. Est enim
prolepsis quaedam, qua ad sub-
iecti descriptionem interdum res
praedicato non anteriores tem-
pore, sed posteriores adhibentur:
οἱ φύσει λογιστικοὶ, qui quidem
postmodum tales apparituri sunt,
ὀξεῖς φύονται eo scilicet tempo-
re, quo φύσει λογιστικοὶ nondum
facti sunt. Eodem modo expli-

δύμως εἰς γε τὸ δέξυτεροι αὐτοὶ αὐτῶν γίγνεσθαι πάντες
C ἐπιδιδόασιν; "Εστιν, ἔφη, οὗτο. Καὶ μὴν, ὡς ἐγῶμαι,
ἄλλη γε μείζω πόνον παρέχει μανθάνοντι καὶ μελετῶντι,
οὐκ ἀν διδίως οὐδὲ πολλὰ ἀν εῦροις ὡς τοῦτο. Οὐ
γὰρ οὖν. Πάντων δὴ ἔνεκα τούτων οὐκ ἀφετέον τὸ
μάθημα, ἀλλ' οἱ ἄριστοι τὰς φύσεις παιδευτέοι ἐν αὐ-
τῷ. Ξύμφημι, ἥ δ' ὅς. Τοῦτο μὲν τοῖνυν, εἶπον; Ἐν
ἡμῖν κείσθω δεύτερον δὲ τὸ ἔχομενον τούτου σκεψώμεθα

candus est Phaedri locus p. 253. C: ἀλίσκεται δὲ δὴ ὁ αἰρεθεὶς τοιῶδε τρόπῳ. et Leg. L. VIII. p. 869. A: ἐάν μὲν ὁ τελευτῆς ποὺν τελευτῆσαι τὸν δράσαντα φόνον ἀφίη ἐκών. Ceterum verbum φύεσθαι non semel in φαινεσθαι corruptum est. Cf. supra L. VI. p. 503. B. et Leg. L. III. pag. 712. A. ubi pro φύεται in Ven. B. — Vat. CM. et Flor. C. φαίνεται, in Flor. AW. φαίεται cum υ super αι legitur.

ἀν ἐν] ἐάν ἐν Ven. B. ἐάν Vind. EF. ἀν Ang. B.

τούτῳ] τούτῳ cum circumflexo super acuto et ο super ω Vind. E.

παιδευθῶσι] παιδευθῶσιν Lob. μηδὲν] μηδὲ Par. K. secundum Bekkerum.

δέξυτεροι] δέξυτερον Vind. F. Ang. B.

αὐτῶν] αὐ. Mon. B. Vind. EF. Ald. Bas. ab. ἐαυτῶν Lob. Vat. M. Flor. AV.

ἐπιδιδόασιν;] ἐπιδιδόασιν. et supra φαίνονται; editi ante Astii sec.

οὗτοι.] οὗτοι. Bekkerus et Stallbaumius, qui alibi Bekkerum in hac re non sequitur.

C ἔ γε] ἔγε Vind. F. μείζω] μείζον Lob. Vat. M.

πόνον] πόνων Ald. — Ut difficile esset quod discerent futuri civitatis custodes et philosophi, Socrates L. VI. p. 503. E. requisiverat, eoque magis nunc arithmeticen probat, quod non facile alia ea difficilior disciplina sit. Scholiastes contra: ἵσως τοῦτο βούλεται λέγειν ὁ Πλάτων,

ὅτι τῶν μετὰ πολλοῦ πόνου κατορθούμενων τεχνῶν οὐκ ἔστιν οὐδὲμια τοιαύτη εὔκολος, ὡς ἥ (id Ruhnkenius omisit.) ἀριθμητική. Haerebat in particula ὡς ante τοῦτο, quam quum ad comparativum μείζω referri non posse intelligeret, comparativum ipsun per se accipiendum, adverbium autem διδίως pro adiectivo habendum statuebat. Sed illud ὡς ita dictum est, ut si οὕτω μέγαν, non μείζω praecessisset. Conf. Apol. pag. 36. D: οὐκ ἔσθ' ὅτι μᾶλλον πρέπει οὕτως, ὡς τὸν τοιοῦτον ἄνδρα σιτεῖσθαι, πολὺ γε μᾶλλον, ἥ εἴ τις ὑμῶν — νενίκηνεν Ολυμπιάδιν. ubi expressum vides quod hic reticetur. Nostro simillimus est Origenis locus adv. Cels. L. III. p. 200: τις ἀν ἄλλος λόγος ἐπιστρεφέστερον προσάγει τὴν ἀνθρωπίνην φύσιν τῷ εὐ ξῆν, ὡς ἥ πιστις; — Adde Theocriti et Euripidis versus a Matthiae gramm. p. 851. c. commemoratos.

Οὐ γὰρ οὖν] οὐγαροῦν Lob. παιδευτέοι] παιδευταῖοι Vind. F. Flor. RT.

εἶπον] post ἡμῖν Lob. Vat. BM. Flor. V.

Ἐν] ἐν Lob. Vind. F. Vat. BM. Ven. C. Ang. B. om. Fic.

τούτοις] τοῦτο Vind. F. Flor. AC.

σκεψώμεθα] σκεψάμεθα Mon. B.

ἄρα τι] Ita Vind. E. Mon. B. Ast. sec. tert. ἄρα τι Lob. Ald. Bas. ab. ἄρα τι Vind. F. Flor. ACRTV. Stallb. pr. ἄρα, τι Ast. pr. ἄρα τι Steph. Bekkerus et

ἀρά τι προσήκει ἡμῖν. Τὸ ποῖον; ἢ γεωμετρίαν, ἔφη, λέγεις; Αὐτὸ τοῦτο, ἦν δ' ἔχω. "Οσον μὲν, ἔφη, πρὸς τὰ πολεμικὰ αὐτοῦ τείνει, δῆλον ὅτι προσήκει πρὸς D γὰρ τὰς στρατοπεδεύσεις καὶ καταλήψεις χωρίων καὶ συναγωγὰς καὶ ἐκτάσεις στρατιᾶς καὶ ὅσα δὴ ἄλλα σκηματίζουσι τὰ στρατόπεδα ἐν αὐταῖς τε ταῖς μάχαις καὶ πορείαις, διαφέροι ἀν αὐτὸς αὐτοῦ γεωμετρικὸς καὶ μὴ ᾧν. 'Ἄλλ' οὖν δὴ, εἶπον, πρὸς μὲν τὰ τοιαῦτα βραχύ

Stallbaumius in sec. hoc pro ἀρα προσήκει ἡμῖν καὶ τὶ προσήκει ἡμῖν accipiens et Matthiae gramm. §. 630. conferri iubens, qui §. 488. 12. n. 2. p. 919. duarum interrogacionum una enuntiatarum exempla quaedam significavit, quale est Platonicum πῶς τὶ Theaet. pag. 208. E. et alibi usurpatum. Sed ἀρε τὶ neque Heindorius ad Hipp. §. 40. neque alius, quod sciam, sic iunctum monstravit, et ut possit aliquando de re ipsa dubitans aliquis eamque dubitationem per ἀρε ostendens subito quasi non amplius dubitans modum rei exquirere et priori interrogatori alteram per τὶ enuntiatam copulare, hoc quidem loco inusitatae dictionis pro usitata recipienda causa non videtur.

ἡμῖν.] ἡμῖν; Lob. Mon. B. Ald. Bas. ab. σπεψάμεθα hor-tantis est.

D αὐτοῦ] om. Vind. E. αὐτὰ Ald. Bas. a. Steph. αὐτὸ Ast. pr. αὐτὴ idem in sec. „Legitur etiam αὐτοῦ. ut sit ὅσον αὐτοῦ. q. d. ea eius pars quae ad res bellicas pertinet.“ Steph. in m.

τείνει] εἰη Vind. E. εὶ Ang. B. εὶ Vind. F. Flor. ACT.

δῆλον ὅτι] δῆλονότι Lob. Vind. E. Mon. B. Ald. Bas. ab.

προσήκει] om. Vind. EF. Ang. B.

καταλήψεις] τὰς κ. Lob. Vat. BM. et a. m. s. Ven. B. κατα-λήψη Vind. F.

χωρίων] τῶν γ. Par. K. sec. Bekk. χωρίον Vind. F.

ἐκτάσεις] ἐκτός Vind. F. ἐκτός Vind. E. Ang. B. Flor. ACR.

ἐξετάσεις legisse videtur Theo, qui l. c. post γενέσθαι hoc addit: ἔτι ἐν τῷ αὐτῷ φησί· καὶ ἐν πολέμῳ δ' (καὶ δ' ἐν πολιτικῷ cod. Scal.) αὐτὸς κρόνιμον πρὸς τὰς στρατοπεδεύσεις καὶ καταλήψεις χωρίων καὶ ἔνναγωγὰς καὶ ἐξετάσεις στρατιᾶς. Gelderus ἐκτάσεις ex Platone exhibuit.

στρατιᾶς] στρατείας Vind. EF. Vat. B. Ang. B. Flor. ACR. In Lob. εὶ super i positum.

σχηματίζουσι] σχηματίζουσα Lob. Vat. M.

διαφέροι] διαφέρει Flor. AC. αὐτοῦ] Ita Par. ADK. sec. Bekk. Ven. C. αὐτοῦ Mon. B. ἐαυτοῦ reliqui cum editis ante Bekkerum. Cf. quae ad p. 538. D. adscripti.

γεωμετρικὸς] Ante Bekkerum γεωμετρικός τε legebatur, ut infra p. 527. C. etiamnum legitur ἡμερος τε γεωμετρίας καὶ μή. Sed h. l. τε non solum in Par. AD. Vat. B. et a. m. pr. in Ven. C. quos Bekkerus secutum se profitetur, sed etiam in Mon. B. et Bipontinis testibus in Par. K. et in Lob. Flor. UV. omissum his invitatis non est quod retineatur.

δὴ] om. Par. A. a. m. pr. quo remoto fieri potest, ut non tam adversatus, quam novum quidem, sed ex superioribus colligendum adiecturus Socrates hoc dicere videatur: Sed quoniam huius rei mentionem inieciisti, illud addam, ad eiusmodi usum etc. Accedente vero per illam particulam affirmatione graviori hoc dicit: Sed, quoniam hac de re dicere coepisti, profecto ad eius-

τι ἀν ἔξαρκοι γεωμετρίας τε καὶ λογισμῶν μόριον· τὸ
Ε δὲ πολὺ αὐτῆς καὶ ποφθωτέρω προϊὸν σκοπεῖσθαι δεῖ
εἴ τι πρὸς ἐκεῖνο τείνει, πρὸς τὸ ποιεῖν κατιδεῖν δῆσον
τὴν τοῦ ἀγαθοῦ ίδεαν. τείνει δὲ, φαμὲν, πάντα αὐτόσε,
ὅσα ἀναγκάζει ψυχὴν εἰς ἐκεῖνον τὸν τόπον μεταστρέ-
φεσθαι, ἐν ᾧ ἐστὶ τὸ εὐδαιμονέστατον τοῦ ὄντος, ὃ δεῖ
αὐτὴν παντὶ τρόπῳ ίδειν. Ὁρθῶς, ἔφη, λέγεις. Οὐκοῦν
εἰ μὲν οὐσίαν ἀναγκάζει θεάσασθαι, προσήκει, εἰ δὲ
γένεσιν, οὐ προσήκει. Φαμέν γε δῆ. Οὐ τοίνυν τοῦτο
527 γε, ἣν δ' ἔγὼ, ἀμφισβητήσουσιν ἡμῖν ὅσοι καὶ συκρὰ

modi etc. Cf. supra L. VI. p. 501.
A. et 509. D. ubi ἀλλ' οὖν pos-
tum est, cum L. VIII. p. 544. A.
et Phaedon. p. 100. A. ubi ἀλλ'
οὖν δὴ legitur. De ἀλλ' οὖν
omnino probabiliter disputavit Hoo-
geveenius doctr. part. Cap. I.
sect. XI. sed viii particulae δὴ
non respexit.

τὰ] om. Lob. Vat. B.

βραχύ] καὶ βραχύ Vind. EF.
Ven. B. Ang. B. Vat. M. (Flor.
ACRTUV.) Ald. Bas. ab. Steph.
Ast. tacentibus Bip. Id, si per
codices liceret, tenendum fuisse
Stallbaumum non fugit.

ἔξαρκοι] ἔξαρκει Vind. F.

λογισμῶν] Ita Par. ADK. sec.
Bekk. Lob. Mon. B. Vat. BM.
Flor. UV. λογισμὸν Ven. C. a
m. pr. λογισμὸν reliqui libri cum
Ald. Bas. ab. Steph. Ast. Singu-
lari usus est Plato Phaedr.
pag. 274. C: τοῦτον δὲ πρῶτον
ἀριθμὸν τε καὶ λογισμὸν εὑρέειν
καὶ γεωμετρίαν καὶ ἀστρονομίαν.
Euthyphr. p. 7. B: ἐπὶ λογισμὸν
ἐλθόντες περὶ γε τῶν τοιούτων
ταχὺ ἀν ἀπαλλαγεῖμεν. Plurali
supra L. VI. p. 510. C: οἱ περὶ¹
τὰς γεωμετρίας τε καὶ λογισμὸν
καὶ τὰ τοιαῦτα πραγματευόμενοι.
et huius libri p. 525. C: ὁηθέν-
τος τοῦ περὶ τὸν λογισμὸν μα-
θήματος. et p. 536. D: τὰ μὲν
τοίνυν λογισμῶν τε καὶ γεωμε-
τριῶν καὶ πάσης τῆς προπαι-
δείας. item Xenophon Mem.
L. III. c. 7. §. 8: ἐκέλευε δὲ

καὶ λογισμὸν μανθάνειν, quem
locum Schneiderus in lexico re-
ctius, quam in indice libri Xe-
nophontei interpretatus est.

τὸ] τ, sup. ol, Vind. F. τὰ
Flor. AC.

προϊὸν] προσιὸν Par. A. προϊὼν
cum o super ὠ Vind. F.

ἐκεῖνο] ἐκείνων Par. K. sec. E
Bip.

τείνει δὲ] τείνειν δὲ Vind. E.
Mon. B. Par. K. sec. Bekk. Flor.
RT.

αὐτόσε] αὐτὰ τε Vind. E. om.
Flor. UV.

ἔστι] ἔστι Ast. tert. Stallb.
sec.

δὲ] οὐ Par. A. quod vitiosum
est, quia relativum ad τὸ εὐδαι-
μονέστατον pertinet.

λέγεις] om. Lob. Mon. B. Vat.
BM. Par. DK. et a m. pr. Ven. C.

εἰ δὲ γένεσιν, οὐ προσήκει] om. Ang. B.

τοῦτο γε] γε om. Vind. EF.
Ven. B. Ang. B.

ἀμφισβητήσουσιν] ἀμφισβη-
τοῦσιν Vind. E. Flor. ACRT.

συκρὰ] μικρὰ Vind. EF.

λόγοις] om. Ven. B.
ὑπὸ] τοῖς ὑπὸ Vind. EF. Ang.
B. Flor. ACRT.

μάλι] μάλιστα iidem (μάλιστά
Vind. E.) et Ven. B.

ἀναγνωτῶς] quasi coacti saepe
Fic. V. L. VI. p. 510. B. —
511. A. cuius loci consideratio

γεωμετροῖς ἔμπειροι, δτι αὐτη ἡ ἐπιστήμη πᾶν τούναντίον ἔχει τοῖς ἐν αὐτῇ λόγοις λεγομένοις ὑπὸ τῶν μεταχειριζομένων. Πῶς; ἔφη. Λέγουσι μέν που μάλα γελοίως τε καὶ ἀναγκαῖως· ὡς γὰρ πράττοντές τε καὶ πράξεως ἐνεκα πάντας τοὺς λόγους ποιούμενοι λέγουσι, τετραγωνίζειν τε καὶ παρατείνειν καὶ προστιθέναι καὶ πάντα οὕτω φθεγγόμενοι· τὸ δ' ἔστι που πᾶν τὸ μάθημα γνώσεως ἐνεκα ἐπιτηδευόμενον. Παντάπασι μὲν οὖν, Β ἔφη. Οὐκοῦν τοῦτο ἔτι διομολογητέον; Τὸ ποῖον; Ὡς τοῦ ἀεὶ ὄντος γνώσεως, ἀλλ' οὐ τοῦ ποτέ τι γιγνομένου

eos, qui hic illius aevi geometras reprehendi autumant, non methodum illorum, sed vitium quoddam ipsius scientiae notari docebit, quae quin res sensibiles adhibere ad theorematum sua explicanda cogatur, verbis quoque efficientiam sensibilem significantibus uti debeat; quamquam hic locus ipse et quod Socrates vel paullulum geometriae peritos secum consensuros affirmat, idem docere eos poterat.

οὗτῳ] οὗτοι Lob. Vat. B.

τὸ δ' ἔστι] τὸ δ' ἔστι Lob. Mon. B. Vind. E. Steph. Ast. pr. sec. τὸ δ' ἔστι Ald. Bas. ab. In hac formula, cuius usum exemplis Heindorfius ad Theaet. §. 37. rationem Astius in comm. ad L. I. p. 363. explicuit, verbum substantivum formulam excipiens inclinari recusat. Cf. Protag. p. 344. E: τὸ δ' ἔστι γενέσθαι μὲν χαλεπὸν, δυνατὸν δὲ ἐσθλὸν, ἐμπειραι δὲ ἀδύνατον. Sic unus inter recentiores Bekkerus: reliqui τὸ δ' ἔστι. Cf. D.

B Tὸ ποῖον;] om. Mon. B.

Ως τοῦ] Ita cum reliquis omnibus Ven. B. a m. pr. In editionibus ante Bekkerum τῆς interpositum.

τι] om. Vind. EF. Ang. B. Flor. ACRT. Fic. et Stallbaumius in sec. incertum utrum significatio magis, an casu pronominis offensus. Sed significatio nullam difficultatem habet: ad casum

quod attinet, sane soloecismo similis et Graeci pariter atque Latini participii naturae contraria est haec nominativi cum genitivo constructio, et tamen, quemadmodum τὸ ποτέ τι γιγνόμενον, ita etiam τοῦ ποτέ τι γιγνομένον dici potuisse videtur, ipsa vocabuli brevitate et ambiguitate vitium occultante. Simili libertate Galenus de Hipp. et Plat. decr. L. VIII. in. T. V. p. 649. Kühn. οὐδὲν ὡς πρὸς τὰ παρόντα διαφέροντος dixit, maiore Origenes adv. Cels. L. III. p. 200. inf. ὡς μόνης ψυχῆς ἔργον οὐσης θεοῦ, maxima ipse Plato Polit. p. 272. E: πάσας ἐκάστης τῆς ψυχῆς τὰς γενέσεις ἀποδεδωνίας, ὅσα ἦν ἐκάστη προσταχθὲν, τοσαῦτα εἰς γῆν σπέρματα πεσούσης. Atque ut haec ob dicum discrepantium pro corruptis haberit, Origenis ἔργον autem facile in ἔργον mutari possit, Galeni quidem οὐδὲν extra dubitationem positum et ad τι tuendum sufficere videtur. Nec magnopere obstat Alcinous isag. c. 7. haec e nostro loco repetens: τό γε μὴν ιατρὰ τὴν γεωμετρίαν ἐπιτηδειότατον καὶ αὐτὸ πρὸς τὴν τοῦ ἀγαθοῦ γγῶσιν, ὅταν γέ τις μὴ πράξεως ἐνεκεν μετίῃ γεωμετρίαν, ἀλλὰ προσχρώμενος αὐτῇ ὡς ἐπὶ τὸ δὲ ἀεὶ ἀνιέναι καὶ μὴ διατρίβειν περὶ τὸ γενόμενον καὶ ἀπολύμενον.

γιγνομένον] γν. Vind. E.

καὶ ἀπολλυμένου. Ἐνομολόγητον, ἔφη· τοῦ γὰρ
άεὶ ὅντος ἡ γεωμετρικὴ γνῶσις ἐστιν. Οὐκὸν ἄρα, ὃ^C
γενναῖε, ψυχῆς πρὸς ἀλήθειαν εἴη ἀν καὶ ἀπεργαστικὸν
φιλοσόφου διανοίας πρὸς τὸ ἄνω σχεῖν ἢ νῦν πάτω οὐ
δέον ἔχομεν. Ως οἶν τε μάλιστα, ἔφη. Ως οἶν τ' ἄρα,
ἡν δ' ἐγὼ, μάλιστα προστακτέον, ὅπως οἱ ἐν τῇ καλ-
λιπόλει σοι μηδενὶ τρόπῳ γεωμετρίας ἀφέξονται. καὶ
γὰρ τὰ πάρεργα αὐτοῦ οὐ δικιοά. Ποῖα; ἥ δ' ὅς. Α τε
δὴ σὺ εἶπες, ἡν δ' ἐγὼ, τὰ περὶ τὸν πόλεμον, καὶ δὴ

Ἐνομολόγητον] διομολογητέον
Ang. B. Flor. ACRT. εὐ διομο-
λογητέον Par. A. adscripto, ut
Faehsius refert, in margine vul-
gato. Fortasse Plato εὐδιομολό-
γητον scripsit

γάρ] δὲ Lob. Vat. M.

γεωμετρικὴ] In Ald. Bas. ab.
Steph. comma additum editoribus
hoc nomen substantivum visum
esse arguit. Mihi adiectivum vi-
detur.

Οὐκὸν] Ita Par. A. Ang. B.
Flor. ACRT. ὁρῶν Vind. F.
οὐκοῦν Vind. E. ἔλνον Ven. C.
a m. s. et reliqui cum Ald. Bas.
ab. Steph. Ast. Cf. ad p. 521.
D. dicta.

ψυχῆς πρὸς ἀλήθειαν] Sic ii-
dem, qui οὐκὸν, et Vind. EF.
Ven. C. ψυχὴν πρὸς ἀλήθειαν
reliqui praeter Ven. B. qui cum
editis supra significatis πρὸς ἀλή-
θειαν ψυχὴν exhibet.

ἄ] ἀν Vind. F.

οἶν τ'] οἶν τε Vind. EF.

καλλιπόλει] καλλιεπόλει Vat.
B. καλῆ πόλει Ven. C. a m. s.
καλλιστῇ πόλει Ven. B. Bas. b.
Steph. „In praeced. editionibus
καλλιπόλει, pro quo quidam vet.
καλλιστῇ πόλει. Alioqui videri
potuisset scribendum καλῆ πόλει.
Sed superlativum gradum agnoscit
et Fic.“ idem in m. (qui praeclara-
rissimam hanc habitant civitatem
Fic.) Themistius or. XXI. p. 248.
Α: βασινιστήρια, οἷς ἐνάθησ
τον φιλοσόφους ἐν τῇ καλλιπό-
λει καὶ ἀπεργάσατο τελεότερον,
η Φειδίας τὰ ἀγάλματα. quem

locum Astius de Platone eiusque
civitate agentem recte ad stabi-
liendam lectionem καλλιπόλει ad-
hibuit. Sed ne Stephanum qui-
dem sine ratione recipere eam du-
bitasse et tamen recipiendam esse
ex eis appareret, quae Lobeckius
ad Phryn. p. 600. sqq. de huius-
modi compositionibus verborum
disputavit.

σοι] σον Vind. EF. Ang. B.
Flor. ACRT. Ald. Bas. ab. Steph.
Ast. sec.

ἀφέξονται] Ita Lob. Vat. BM.
Reliqui codices (Par. K. sec.
Bekk.) et editi ante Steph. ἀφέ-
ξωνται habent.

αὐτοῦ] „Quomodo quis tueri
possit genitivum αὐτοῦ non in-
telligo, quum genitivo opus sit
qui περὶ τῆς γεωμετρίας dicatur,
cuius nomen praecessit. Nec vero
dubito quin scriptum ita fuerit in
Fic. libro: qui hunc locum ita
vertit — quae praeter ipsius pro-
positum quodammodo esse viden-
tur —“ Steph. p. 25. quem mi-
reris tam cito oblitum esse illorum
p. 526. C: ἥ γεωμετρίαν λέ-
γεις; αὐτὸ τοῦτο. ut alia per-
multa taceam, quae significavit
Matthiae gramm. p. 819. sq. Cf.
Vol. I. p. 364, a.

Ποῖα] ποία Vind. F.

εἶπες] In Ven. C. εἰς super εἰ-
scriptum.

πόλεμον,] Ita Astius in tert.
et Stallbaumiūs. πόλεμον. vel πό-
λεμον. reliqui editores.

καὶ δὴ καὶ] Ita Par. A. Vind.
EF. Ven. B. Ang. B. Flor. ACRT.

καὶ πρὸς πάσας μαθήσεις, ὥστε κάλλιον ἀποδέχεσθαι, ἵσμεν που ὅτι τῷ ὄλῳ καὶ παντὶ διοίσει ἡμμένος τε γεωμετρίας καὶ μή. Τῷ παντὶ μέντοι νὴ Άλ', ἔφη. Δεύτερον δὴ τοῦτο τιθῶμεν μάθημα τοῖς νέοις; Τιθῶμεν, ἔφη. Τί δέ; τοίτον θῶμεν ἀστρονομίαν; η̄ οὐ δοκεῖ; "Εμοιγ' οὖν, ἔφη· τὸ γὰρ περὶ ὧρας εὐαισθητοτέρως ἔχειν καὶ μηνῶν καὶ ἐνιαυτῶν οὐ μόνον γεωργίᾳ οὐδὲ ναυτιλίᾳ προσήκει, ἀλλὰ καὶ στρατηγίᾳ οὐχ ἡττον. Ἡδὺς εἰ, ἦν δ' ἐγὼ, ὅτι ἔοικας δεδιότι τοὺς πολλοὺς,

Steph. Bekk. Ast. tert. Stallb.
καὶ δὴ reliqui.

ώστε]. ὡς τὸ Lob. Vat. M. et
a m. pr. B. Ang. B. Flor. RT.

ἵσμεν] ἵσμεν Vind. E. ἵσως
μέν Flor. R. Ang. B.

γεωμετρίας] καὶ γ. Lob. Vat.
B. Ven. C. γ. τὲ Vind. E.

μέντοι] μὲν Vind. EF. Ven. B.
Ang. B. Flor. ACRT.

Δεύτερον — ἔφη.] om. Lob.
Mon. B. Vat. B. et a m. pr. M.
Par. DK.

νέοις;] νέοις. editi. ante Bekkerum.

ἔφη] ἔχη Ald. Bas. a. ἔχει
Bas. b.

Tί δέ;] τί δ' ἔφη Vat. M. Tί
δαλ; cum Par. A. Flor. T. Stall-
baumius in sec. In Vind. E.
Mon. B. Ald. Bas. ab. sine di-
stinctione τί δὲ τοίτον etc. scri-
ptum et in Mon. B. post θῶμεν
interrogationis signum positum.

D "Εμοιγ' οὖν] ἔμοιγον Vind. F.
Ἐμοὶ γοῦν Bekkerus, Astius in
tert. et Stallbaumius, quemad-
modum est in Lob. scriptum. Cf.
Vol. I. pag. 30. Hoc vero loco
etiam verbi ellipsis Bekkeri ra-
tioni adversatur.

τὸ] :τὸ Vind. E. Τὸ Bas. ab.
ναυτιλίᾳ] ναυτηλίᾳ Vind. E.
Flor. R.

Ἡδὺς etc.] Theo l. c. p. 6:
τό τε χρήσιμον παραδεικνὺς τῶν
μαθημάτων φησίν· ἡδὺς εῖ,
(ἔστιν cod. Scal.) ὅτι ἔοικας δε-
διέναι, μὴ ἄχρηστα τὰ μαθῆματα
προστάττοιμι. (καὶ προστάττοιμι
cod. Reg. 3. προστατῶμεν cod.

Scal.) τὸ δ' ἔστιν (τοντέστιν idem.)
οὐ πάνν φαύλοις, ἀλλὰ πᾶσι χα-
λεπὸν (χαλ. πᾶ. idem.) πιστεύ-
θῆναι, ὅτι ἐν τούτοις τοῖς μα-
θῆμασιν ἐκάστον οἷον ὁργάνοις
τὸ ψυχῆς ἐκπαθαίρεται καὶ ἀνα-
ζωπυρεῖται ὅμμα τυφλούμενον
καὶ ἀποσβεννύμενον ὑπὸ τῶν
ἄλλων ἐπιτηδευμάτων, ορεῖττον
δὲ σωθῆναι μυρίων ὁμμάτων·
μόνῳ γὰρ αὐτῷ ἀλήθεια (ἡ ἀλ.
idem.) ὁρᾶται. Nicomachus isag.
arithm. L. I. c. 3. pag. 71. Ast.
καθά καὶ ὁ παρὰ Πλατωνὶ ἐν τῇ
Πολιτείᾳ Σωκράτης τοῦ προσδια-
λεγομένου αἰτίας τινὰς εὐλόγους
ἐπιφέρειν δοκοῦντος τοῖς μαθή-
μασιν — ἐπιπλήττων φησίν· ὡς
ἡδὺς εἰ, (λῶστε addit. cod. 76.)
οτι ἔοικας δεδιέναι, μὴ ἄσα ἄχρη-
στα ταῦτα (id om. idem.) τὰ μα-
θῆματα προστάττοιμι. τὸ δέ ἔστι
παργάλεπον, μᾶλλον δὲ ἀδύνα-
τον· ὅμμα γὰρ τῆς (om. idem et
cod. 482.) ψυχῆς ὑπὸ τῶν ἄλλων
ἐπιτηδευμάτων ἀποτυφλούμενον
καὶ κατορυττόμενον διὰ τούτων
μόνων ἀναγωπυρεῖται καὶ ἀνε-
γίρεται, ορεῖττον δὲ σωθῆναι
μυρίων σωματικῶν ὁμμάτων·
μόνῳ γὰρ αὐτῷ ἡ περὶ τοῦ παν-
τὸς ἀλήθεια ὁρᾶται.—Pro ἡδὺς
Mon. B. Par. DK. Flor. U. ὡς
ἡδὺς exhibent, quod Astius te-
nuit. Etiam Ficinus: Quam dul-
cis vir es. Atque ita Gorg. p. 491.
E: ὡς ἡδὺς εῖ. Hipp. mai. p. 288.
B: ὡς γλυκὺς εῖ, φήσει, ὡς Σώ-
κρατες. Sed supra L. I. p. 337.
D: ἡδὺς γὰρ εῖ. quem ad locum
Timaei glossam (ἡδύς· εὐήθης

μὴ δοκῆς ἔχοντα μαθήματα προστάττειν. τὸ δ' ἔστιν οὐ πάνυ φαῦλον, ἀλλὰ χαλεπὸν πιστεῦσαι, ὅτι ἐν τούτοις τοῖς μαθήμασιν ἑκάστου ὄργανόν τι ψυχῆς ἐκκαίηται τε καὶ ἀναξωπυρεῖται ἀπόλλυμενον καὶ τυφλούμενον ὑπὸ τῶν ἄλλων ἐπιτηδευμάτων, κρείττον ὃν σωθῆναι μνοίων ὄμμάτων· μόνῳ γάρ αὐτῷ ἀληθεῖα δρᾶται. οἷς μὲν οὖν ταῦτα ξυνδοκεῖ ἀμηχάνως ὡς εὗδόξεις λέγειν, ὅσοι δὲ τούτου μηδαμῇ ἥσθημένοι εἰσὶν, εἰκό-

καὶ ἀφρων.) a Ruhnkenio illustrata signifcavi.

εἶ] εἰ Vind. E.

δεδιότι] De hoc dativo conf. Heindorfius ad Crat. p. 416. E.

δοκῆς] δοξεῖς Flor. U. et a m. pr. Mon. B.

μαθήματα] τὰ μ. Par. K.

τὸ δ'] τόδ' Ald. Bas. ab. τοδέ Lob. τοῦδ' Vind. F. τοῦδε Flor. ACR. τοῦτο δ' Vind. E. Ang. B.

ἔστιν] In editis ante Stallbau-
mii sec. ἔστιν scriptum est, quo ille tacite in ἔστιν mutato sensum loci fere eundem, quem Theo, esse statuit: *lepine agis, quum vereri videaris, ne homines putent te inutiles disciplinas praescribere.* Illud vero haud sane facile, sed difficile est ad persuadendum, hisce disciplinis etc. qua interpretatione adhibita non apparet, quo iure Socrates Glauconem istud verentem reprehendere, aut hanc intelligendae utilitatis, quam istae disciplinae habeant, difficultatem opponere speciosae earum inutilitati potuerit. Itaque hoc potius dicere videtur: *tu vereris, ne inutiles disciplinas praecipere videaris, quum tamen minime contemnendas, quamquam ad credendum difficultem utilitatem hanc habeant, quod etc.* et ita demum ἔστιν aptum et necessarium est, ut paullo ante ad A. demonstravimus. Nicomachi interpretatio, si integra est, longe a vero aberravit.

ἐκάστου] Ita Par. ADK. Lob. Vind. EF. Mon. B. Ven. C. Ang. B. Vat. M. et a m. pr. B. Flor. ACR. Theo et scholiastes, (ἐκά-

στον ἀνδρὸς τοῦ μανθάνοντος) quos merito secutus est cum Astio in tert. Stallbaumius. Reliqui codices et editi ἐκάστοις habent, quod etiam ambiguitate laborat.

ὄργανόν τι] ὄργανόν τε Vind. EF. Ang. B. Flor. AC. quibus Stallbaumius Flor. V. addit, ex quo postea ὄργανόν τι τῆς assert. Videtur τε pro τι in Flor. R. repertum fuisse, τι τῆς in V. ex-
stare.

τε] τι Lob.

κρείττον ὃν etc.] Plutarchus E symposiac. L. VIII. probl. 2. quo quaerit, πῶς Πλάτων ἔλεγε τὸν θεὸν ἀεὶ γεωμετρεῖν, p. 718. D. hunc locum et Phaedon. p. 83. D. simul respiciens ἐθιζομένη γάρ, inquit, (sc. ἡ διάνοια) ὑπὸ τοῦ σφόδρα πονεῖν καὶ ἥδεσθαι τῷ περὶ τὰ σώματα πλανητῶν προσέχειν ὡς ὅντι τοῦ ἀληθῶς ὅντος τυφλοῦται καὶ τὸ μνοίων ἀντάξιον ὄμμάτων (ita cod. Vulcobii: ὄνομάτων ed. Ald. Bas. σωμάτων Steph.) ὄργανον ψυχῆς καὶ φέγγος ἀπόλλυσιν, φόβον τοῦτον ἔστι τὸ θεῖον. Iamblichus de vita Pythag. c. 16. §. 70. pag. 148. Kiessl. τὸ θεῖον ὄμμα ποεῖττον ὃν σωθῆναι πετά τὸν Πλάτωνα μνοίων σαρκίνων ὄμμάτων. Alcinous isag. c. 27. p. 114: ὅθεν δὴ καὶ μεγάλων τε καὶ θαυμασίων τὰς τῷ ὅντι φιλοσόφους ψυχὰς ἔφασκεν ἀναμέστους καὶ μετὰ τὴν τοῦ σώματος διάλυσιν συνεστίους θεοῖς γινομένας καὶ συμπεριπολούσας καὶ τὸ τῆς ἀληθείας πεδίον θεωμένας, ἐπείπερ καὶ ἐν τῷ ξῆν ἔφιεντο τῆς ἐπιστήμης αὐτοῦ καὶ τὴν ἐπιτήδευ-

τως ἡγήσονται σε λέγειν οὐδέν· ἄλλην γὰρ ἀπ' αὐτῶν οὐχ ὁρᾶσιν ἀξίαν λόγου ὡφέλειαν. σκόπει οὖν αὐτόθεν, πρὸς ποτέρους διαλέγη, ἢ πρὸς οὐδετέρους, ἀλλὰ σαν- 528 τοῦ ἔνεκα τὸ μέγιστον ποιεῖ τὸν λόγους, φθονοῖς μὴν οὐδ' ἀν ἄλλῳ, εἴ τις τι δύναιτο ἀπ' αὐτῶν ὅνασθαι. Οὕτως, ἔφη, αἰροῦμαι, ἐμαυτοῦ ἔνεκα τὸ πλεῖστον λέ- γειν τε καὶ ἐρωτᾶν καὶ ἀποκρίνεσθαι. "Ἀναγε τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, εἰς τούπισα· νῦν δὴ γὰρ οὐκ ὁρῶς

σιν αὐτοῦ προετίμων, ἀφ' ἣς
ώσπερ τι ὅμμα ψυχῆς ἐκκαθηρα-
μένους καὶ ἀναζωπυρόσαντας ἀ-
πολλίμενόν τε καὶ ἀποτυφλού-
μενον, προέπτον δὲ σωζόσθαι
μυρίων ὄμμάτων, δυνατοὺς γί-
νεσθαι ἐπορέξασθαι τῆς τοῦ λο-
γικοῦ παντὸς φύσεως.

ἀμηχάνως ὡς] ὡς om. Mon. B.
Par. DK. sec. Bekk. Flor. U.

μηδαμῆ] μηδαμὴ Vind. F. μη-
δαμῆ Steph. Ast. pr. sec.
ἡσθημένοι] ἡσθημένοις Flor.

A.

οὐχ] om. Lob. Vat. M.

διαλέγη] διαλέγει Ang. B. et
recentiores.

ἢ πρὸς οὐδετέρους] Ita Vind.
EF. Ven. B. Ang. B. Flor. ACRT.
et Ficinus: *an forte cum neutrīs.*
Reliqui cum editis οὐ inter ἢ et
πρὸς interpositum habent, cui,
si post ὅνασθαι cum Astio in pr.
et sec. et Stallbaumo in sec. in-
terrogationis signum fieri debet,
hic non est locus. Nam qui vi-
dere aliquem iubet, cum utris
disputet, non potest simul opinari
eum cum neutrīs disputare, ne-
dum hanc opinionem tamquam ra-
tionem, cur illud iubeat, pronun-
tiare; quod utrumque secundum
illam lectionem Socrates facit.
Cf. L. VI. p. 505. C: ἢ οὐ καὶ
οὗτοι ἀναγνάζονται ὄμολογεῖν
ἥδονάς εἶναι κακάς; et sic sex-
centies. Accedit quod Glauco οὕ-
τως αἰροῦμαι respondens optio-
nem sibi aliquam a Socrate da-
tam, non affirmandum aliquid
propositum ostendit. Itaque post
ὅνασθαι cum reliquis editoribus

punctum et ante ἢ οὐ non colon,
quod iidem habent, sed comma
faciendum erit, ut Socrates vi-
dere eum iubeat, utrum eligere
alterutros, an negligere utrosque
malit. Verum ne sic quidem ne-
gationi locus, et dictio πρὸς
ποτέρους pro πότερον πρὸς ὄπο-
τέρους accipiendae brevitas in-
commoda et obscura videtur.
Quare οὐ delevi: Platonem ta-
men σὺ pro eo scripsisse suspi-
cor.

ποιεῖ] Ita Par. A. Vind. F. 528
ποιεῖν Vind. E. ποιῆσιν εἰ
super ἢ Ang. B. ποιῆι Lob. ποιῆ
Mon. B. ποιῆ Ald. Bas. ab.
Steph.

φθονοῖς] φθονεῖς Lob. Vat.
B. et a m. s. Ven. C. φθονεῖν
non Stephanus, ut Bekkeri typot-
heta voluit, sed Mon. B.

μὴν] μέντοι Ald. Bas. ab. Steph.
Ast. et fortasse Ven. B. a m. pr.
Hunc enim correctum Bekkerus
tradit μὴν exhibere cum reliquis,
inter quos etiam Mon. B. refe-
rendus est, cuius notam ille prae-
termisit, vel, si Bipontinorum si-
lentium non fallit, cum Parisien-
sis K. nota confudit.

τι] om. Par. K. sec. Bekk.

ὅνασθαι] ὅνασθαι Ald. Bas.
ab.

Οὕτως] οὕτω γε Vind. EF.
Ven. B. Ang. B. Flor. ACRT.
editi ante Bekkerum.

λέγειν] om. Vind. E.

"Ἀγογεῖ] ἀνάγαγε idem. "Ἀρα γε
Ald. "Ἄρα γε Bas. a. ἄρα γε Bas.
b. et Par. K. sec. Bekk.
δὴ] om. Vind. E.

τὸ ἔξῆς ἐλάβομεν τῇ γεωμετρίᾳ. Πῶς λαβόντες; ἔφη. Μετὰ
ἐπίπεδον, ἦν δ' ἐγώ, ἐν περιφορᾷ ὃν ἥδη στερεὸν λα-486
B βόντες, ποὶν αὐτὸν καθ' αὐτὸν λαβεῖν· ὁρθῶς δὲ ἔχει
ἔξῆς μετὰ δευτέραν αὐξῆν τρίτην λαμβάνειν. ἔστι δέ που
τοῦτο περὶ τὴν τῶν κύβων αὔξην καὶ τὸ βάθους μετέ-
χον. Ἐστι γὰρ, ἔφη· ἀλλὰ ταῦτα γε, ὡς Σώκρατες,
δοκεῖ οὕπω εὑρῆσθαι. Λιττὰ γὰρ, ἦν δ' ἐγώ, τὰ αἵτια
ὅτι τε οὐδεμία πόλις ἐντίμως αὐτὰ ἔχει, ἀσθενῶς ζητεῖται
χαλεπά ὄντα, ἐπιστάτου τε δέονται οἱ ζητοῦντες, ἀνευ
οὗ οὐκ ἀν εὔροιεν· ὃν πρῶτον μὲν γενέσθαι χαλεπὸν,
C ἐπειτα καὶ γενομένου, ὡς νῦν ἔχει, οὐκ ἀν πείθοιντο

τὸ ἔξῆς] τοεξῆς Vind. E. τὸ ἔξῆς
Vind. F.

τῇ γεωμετρίᾳ] τρία Mon. B.
In Lob. ἦν super ἦι et αν super
α scriptum.

ἐν] Huic in Mon. B. τὸ int.
vers. a m. s. prae scriptum est.

καθ' αὐτὸν] καθαντὸν Vind. F.
καθαντὸν τὸ Vind. E.

B δὲ ἔχει ἔξῆς] δὴ ἔχει Vind. E.
— Alcinous isag. c. 7: καὶ μὴν
ἥ γε στερεομετρία (v. ἥ τε γεω-
μετρία) χρησιμωτάτη· μετὰ γὰρ
τὴν δευτέραν αὐξῆσιν ἀπόλονθος
ἥ κατ' αὐτὴν θεωρία τρίτην αὐ-
ξῆσιν ἔχουσα.

τοῦτο] om. Vind. EF. Ang. B.
Flor. ACRT.

βάθους] βάθος Lob. Vind. F.
Vat. BM. Flor. RT.

δοκεῖ οὕπω] Ita Par. ADK.
Lob. Mon. B. Vat. B. Ven. C.
Flor. UV. οὕπω δοκεῖς Vind. E.
οὕπω δοκεῖ reliqui et editiones
ante Bekkerum:

ὅτι τε] ὅτι om. Ang. B. τε
om. Lob. Flor. V. Vat. B. et a
m. pr. M.

ἀσθενῶς] ἀσθενῶς τε Mon. B.
Par. DK. Flor. U. Fic. (et cum
inventu difficultia sint, haud ar-
denter queruntur.) Ald. Bas. ab.
Steph. Ast.

ζητεῖται] ζητεῖτε Lob. Vat. M.
et, sup. αι, B.

ἐπιστάτου τε] τε om. Par. A.
a m. pr. In Lob. eius loco ante
correctionem δὲ erat. Astius in
tert. γε pro eo requirit.

ἔνεν] post οὖ Vind. EF. Ven.
B. Flor. ACRTV. Vat. M. a m.
s. Stallb. pr.

δὲ] ὡν Vind. E.
πρῶτον] τρόπον, in m. πρῶ-
τον, Par. D.

γενομένου] γενομένονς Bas. b.
εἰ δὲ — πείθοιντο] om. Mon. C

B. ξυνεπιστατοῖ] ξυνεπιστατοι
Vind. F. ξυνεπισταται Vind. E.
ξυνεπιστατεῖ Lob. Vat. M. Flor.
TV.

καὶ] In Mon. B. a m. s. τοι
int. vers. additum est.
ξυνεγᾶς] συν. Vind. F.

εντόνως] εντόνως Vind. EF.
Flor. RT. et cum ν super ν Ang.
B. ἔμπονως Mon. B. Par. DK.
sec. Bekk. Flor. U.

ἔχει] ἔχοι Mon. B. Flor. UV.
Stallb. pr.

νῦν ὑπὸ] Vulgo additum μὲν
quamvis bonum secundum Par.
ADK. (de quo Bipontini tacent)
Lob. Mon. B. Ven. C. Flor. UV.
et Vat. M. a m. pr. omisi, qui-
bus libris hoc eodem iure debe-
tur, quo obsequium in οὐτως (A.)
δοκεῖ οὕπω (B.) et ἔνεν οὖ ne
a Bekkero quidem negatum; praes-
ertim quum μὲν ob sequens δὲ
librariis necessarium videri po-
tuerit et alibi non semel interpo-
latum reperiatur. Conf. Vol. I.
p. 162, a. n. 7. et 184, a. n. 1.
κολονόμεναι] κοντονόμεναι Lob.
κωλονόμεναι Vind. EF. Ang. B.
et a m. pr. Ven. B. Idem Fici-

οἱ περὶ ταῦτα ξητητικοὶ, μεγαλοφρονούμενοι. εἰ δὲ πόλις ὅλη ἔννεπιστατοῖ, ἐντίμως ἄγουσα αὐτὰ, οὗτοί τε ἀν πείθοιντο, καὶ ἔννεχῶς τε ἀν καὶ ἐντόνως ξητούμενα ἐκφανῆ γένοιτο ὅπῃ ἔχει· ἐπεὶ καὶ νῦν ὑπὸ τῶν πολλῶν ἀτιμαζόμενα καὶ κολουόμενα, ὑπὸ δὲ τῶν ξητούντων λόγον οὐκ ἔχόντων, καθ' ὅτι χρήσιμα, ὅμως πρὸς ἄπαντα ταῦτα βίᾳ ὑπὸ χάριτος αὐξάνεται, καὶ οὐδὲν θαυμαστὸν Δ αὐτὰ φανῆναι. Καὶ μὲν δὴ, ἔφη, τό γε ἐπίχαιρι καὶ διαφερόντως ἔχει. ἀλλά μοι σαφέστερον εἴπε ἡ νῦν δὴ ἔλεγες. τὴν μὲν γάρ που τοῦ ἐπιπέδου πραγματείαν γεωμετρίαν ἐτίθης. Ναὶ, ἦν δ' ἔγώ. Εἴτα γ', ἔφη, τὸ

nus legisse videtur: *quamquam et vulgus ista contemnit et prohibet.* Nec multum interest. Scilicet eo, quod vulgo stereometriam contemnebant, fiebat, ut minora incrementa caperet. Alterum obstaculum erat, quod qui ei operam dabant, utilitatem eius et cum altiori mathesi coniunctionem nondum perspexerant, qua intellecta et rectius et studiosius eam tractaturi fuissent. Cf. *Historia problematis de cubi duplicatione auctore N. Th. Reimer.* (Gottingae 1798.) c. VI. p. 35. sq. In verbis autem hoc alterum demonstrantibus participium, velut διωκόμενα vel ξητούμενα, post χρήσιμα omissum, et quoniam incrementum disciplinae a quaerentibus illis quamvis utilitatis eius ignaris proficiscebatur, hoc ipsum αὐξάνεται cum ὑπὸ τῶν ξητούντων constructum, hisque interpositum δὲ quasi primitivae orationis monumentum relictum est. Male igitur Stallbaumius καὶ πολονόμενα post χρήσιμα ponenda suspicatur. Unde tandem incrementa caperet ars, nisi ὑπὸ τῶν ξητούντων? Neque probabiliter Schleiermacherus: *da sie schon jetzt, wievol von den meisten gar nicht geachtet, sondern eher gehemmt, und von den Forschenden selbst, welche die rechte Einsicht nicht haben, nur so weit als sie nützlich ist, dennoch dem allen zum Troz vermöge ihres innern*

Reizes gedeiht. Propius ad Graeca accesserint haec: *da es auch jetzt schon von der Menge verachtet und unterdrückt und von suchenden, die nicht anzugeben wissen, wiefern es nützt, gleichwohl trotz allen dem unwillkürlich wegen seines Reizes grösseren Bestand erhält.*

καθότι] καθότι Lob. Wind. EF. Mon. B.

αὐξάνεται] αὐξάνεσθαι Vind. B. Mon. C.

αὐτὰ] ταῦτα Vind. BE. Mon. D C. Vat. H. Flor. ACTV. Ast. sec.

τό γε] τό γ' Vind. F.

ἔχει] ἔχοι Mon. C.

τοῦ ἐπιπέδου πραγματείαν] Proclus in Euclidis librum I. (Bas. 1533.) p. 32: *τοῖς μὲν παλαιότεροις τῶν φιλοσόφων οὐκ ἐδόκει τῆς ἐπιφανείας εἶδος τίθεσθαι τὸ ἐπιπέδον, ἀλλ' ὡς ταῦτο ἐκάτερον παραλαμβάνειν εἰς παρέστασιν τοῦ διχῇ διαστάντος μεγέθους. οὕτω γάρ καὶ ὁ θεῖος Πλάτων τὴν γεωμετρίαν τῶν ἐπιπέδων ἔφατο θεωρητικὴν εἶναι πρὸς τὴν στερεομετρίαν αὐτὴν ἀντιδιαιρῶν, ὡς ἀν τῆς αὐτῆς οὖσης τῷ ἐπιπέδῳ τῆς ἐπιφανείας.*

ἐτίθης] Ita Par. A. Vind. B. Mon. BC. Ven. C. Vat. H. Flor. V. *ἐτίθεις reliqui mei et Florentini et editiones ante Bekkerum et Stallbaumius. Vid. ad L. VI. p. 497. D. In Vind. B. Mon. C.*

μὲν πρῶτον ἀστρονομίαν μετὰ ταύτην, ὅπερον δ' ἀνεγάρθησας. Σπεύδων γὰρ, ἔφη, ταχὺ πάντα διεξελθεῖν μᾶλλον βραδύνω. ἐξῆς γὰρ οὖσαν τὴν βάσους αὐξῆς μέθοδον, ὅτι τῇ ξητήσει γελοίως ἔχει, ὑπερβὰς αὐτὴν μετὰ γεωμετρίαν ἀστρονομίαν ἔλεγον, φορὰν οὖσαν βάσους. Ὁρθῶς, ἔφη, λέγεις. Τέταρτον τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, τιθῶμεν μάθημα ἀστρονομίαν, ὡς ὑπαρχούσης τῆς νῦν παραλειπούσης, ἐὰν αὐτὴν πόλις μετίῃ. Εἰπός, ἦ δ' ὅς. καὶ ὁ γε νῦν δῆ μοι, ὡς Σώκρατες, ἐπέπληξες περὶ ἀστρονομίας ὡς φορτικῶς ἐπαινοῦντι, νῦν 529 ἦ σὺ μετέρχῃ ἐπαινῶ. παντὶ γάρ μοι δοκεῖ δῆλον, ὅτι

Ald. Bas. ab. signum est interrogandi.

γ' ἦ γε Mon. C.

μετὰ ταύτην] Ita Par. A. Vind. E. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. Bas. b. et ante ἀστρονομίαν Vind. B. Mon. C. μετατάῦτα τὴν Vind. F. μετ' αὐτὴν reliqui libri scripti et editi. Cf. p. 529. E.

δ'] δὲ Lob.

ἀνεγάρθησας] ἀνεγάρθησας Ald. Bas. ab.

ἔφην] ἔφη Lob.

ἐξῆς] ἐξ ἦς Vind. E. Proaspero Vind. F. e corr. lenem habet.

βάσους] βάθος Vind. F.

αὐξῆς] αὐξῆν Lob. Vat. M. αὐξῆσιν Vind. F. Flor. R. „Vat. M.“ Puto Ang. B.

γελοῖως] γελοῖος Bas. b. γελοίως ἔχειν τῇ ξητήσει dicitur stereometria non „quia ita est comparata, ut eam disquirere ridiculum sit“ quemadmodum Stallbaumius explicat, sed quia impetrare tractabatur. Cf. p. 529. E: οὐλλιστα μὲν ἔχειν ἀπέργασία.

μετὰ γεωμετρίαν] μεταγ. Vind. F.

E βάθους] βάθος idem ante corr. Quod astronomiam φορᾷ, non μέθοδον φορᾶς, appellat, eadem brevitate p. 530. D. ὡς πρὸς ἀστρονομίαν, inquit, ὅμματα πέπηγεν.

μετίῃ] μετίοι Vind. B. Mon. C. μετείη Ald. Bas. ab.

καὶ] : καὶ Vind. E. Καὶ editi ante Astii sec.

Σώκρατες] σώσωκρατες Vind. E.

ἀστρονομίας] ἀστρονομίας Bas. b.

σὺ μετέρχῃ] Ita Par. AK. Vind. BEF. Mon. C. Vat. BH. Ven. B. Ang. B. Flor. ACRTUV. σὺ μετέρχει Mon. B. συμμετέρχη Lob. (—η) Ald. Bas. ab. Steph. σὺ μετέρχει recentiores, inter quos Bekkerus σὺ μετ. ex Mon. B. et reliquis septem supra indicatis afferens terminationem incertam reliquit neque de Ven. C. Par. D. Vat. M. quicquam significavit, Stallbaumius autem σὺ μετέρχει in Florentinis, Monacensi (C.) et Parisiensi (K.) scriptum ostendit.

γάρ μοι] bis Mon. C. 529

δῆλον] εἶναι idem et Vind. B. addunt. Theo Sm. p. 9: ἐν τε τοῖς ἐξῆς ἐπαινῶν τὴν περὶ τὰ τοιαῦτα μαθήματα σπουδὴν γεωμετρία μὲν, φησίν, ἐστὶ περὶ τὴν τοῦ ἐπιπέδου θεωρίαν, ἀστρονομία δὲ περὶ τὴν τοῦ στερεοῦ φορὰν, αὐτὴ δὲ ἀναγνάζει εἰς τὸ ἄνω δοῦλην, καὶ ἀπὸ τῶν ἐνθένδε ἐνείσει ἄγει.

οὔτω] οὔτως Par. K. sec. Bip. et recentiores. Cf. Vol. I. p. 398, a. inf.

οἱ] οἱ Bas. ab.

αὐτη γε ἀναγκάζει ψυχὴν εἰς τὸ ἄνω δρᾶν καὶ ἀπὸ τῶν
ἐνθένδε ἐκεῖσε ἄγει. Ἰσως, ην δ' ἐγὼ, παντὶ δῆλον
πλὴν ἐμοὶ· ἐμοὶ γὰρ οὐ δοκεῖ σύτω. Ἀλλὰ πῶς; ἔφη.
Ως μὲν νῦν αὐτὴν μεταχειρίζονται οἱ εἰς φιλοσοφίαν
ἀνάγοντες, πάνυ ποιεῖν κάτω βλέπειν. Πῶς, ἔφη, λέ-
γεις; Οὐκ ἀγεννῶς μοι δοκεῖς, ην δ' ἐγὼ, τὴν περὶ τὰ
ἄνω μάθησιν λαμβάνειν παρὰ σαντῷ ἦ ἐστι· κινδυνεύεις
γὰρ καὶ εἴ τις ἐν δροφῇ ποικίλιατα θεώμενος ἀνακύ- B
πτων καταμανθάνοι τι, ηγεῖσθαι ἀν αὐτὸν νοήσει, ἀλλ'
οὐκ ὅμμασι θεωρεῖν. Ἰσως οὖν καλῶς ἥγη, ἐγὼ δ' εὐηθι-
κῶς. ἐγὼ γὰρ αὖ οὐ δύναμαι ἄλλο τι νομίσαι ἄνω ποιοῦν

ἀνάγοντες] ἀγοντες Flor. T.
Cf. p. 521. C. Secus Schleier-
macherus: welche sie als Philo-
sophie erheben wollen.

ἀγεννῶς] ἀγενῶς Vind. E.
Flor. U. et, sup. a m. s. altero
ν, Mon. B. Cf. Phaedr. p. 264.
B: ἐμοὶ μὲν γὰρ ἔδοξεν ὡς μη-
δὲν εἰδότι οὐν ἀγεννῶς τὸ ἐπὶδὲν
εἰρησθαι τῷ γράφοντι. non sine
generosa fiducia.

μοι δοκεῖς] om. Mon. C.

η] η Par. K. sec. Bekk. et a
m. s. A. Ven. C. η Vind. E. η
Bas. b.

κινδυνεύεις] κινδυνεύει Vind.
F. Ang. B. Flor. R.

B καὶ] om. Mon. C.

ἀνακύπτων] ἀνακαλύπτων
Vind. E.

καταμανθάνοι] καταμανθάνει
Mon. B. Ven. B. καταμανθάνει
cum οἱ εἰ super ultimo ν Mon. C.
καταλαμβάνει Vat. M. Cf. L. V.
p. 475. D.

αὐτὸν] αὐτὴν Par. K. sec.
Bekk.

νοήσει] Ita Mon. BC. Par. K.
sec. Bekk. Ang. B. Flor. RTU.
et cum litura post ει Vind. BF.
νοεῖν τι Ven. B. intelligere Fic.
νοήσειν reliqui cum editis ante
Bekkerum, quod Stephanus p. 25.
in νοεῖν, Porsonus vero testante,
ut Stallbaumius commémoravit,
Malthbyo in Morelli thes. pros.
p. 603. secundum codices quos-
dam Oxonienses in νοήσει mutan-

dum docuit. Ego νοήσειν, si
sequeretur δρᾶν, ob temporum
diversitatem sollicitandum non pu-
tarem, cuius exempla Vol. I. p. 52.
monstravi, neque ipsum verbum
non aptum haberi potest; sed
ὅμμασι θεωρεῖν, quae dictio in-
solentior est, prae simplici ὁρᾶν
non aliter, nisi quod νοήσει praec-
cessisset, placuisse scriptori vi-
detur.

οὐκ ὅμμασι] Ita Lob. Vind.
BE. Mon. B. (hic οὐκόμμασι)
Flor. ACRTUV. Bas. b. et Stall-
baumius. οὐκ ὅμμασιν Mon. C.
Vind. F. Ald. Bas. a. Steph.
(tacentibus Bip.) Bekkerus item
tacens et Astius. Conf. Vol. I.
p. 123, b.

ἥγη] ηγεῖ Par. D. et recen-
tiores.

δ' εὐηθιῶς] δεν. Vind. E.
ποιοῦν] Pro eo Heindorfius
ad Theaet. §. 83. obiter ostendit
ποιεῖν scriendum, cui Astius νο-
μίζειν frequenter cum participio
loco infinitivi coniungi dictitans
duos Xenophontis locos obiecit,
qui nihil probant. Unus est Anab.
VI. 6, 24: νόμιζε δ', ἐάν ἐμὲ
νῦν ἀποτείνῃς, δι' ἄνδρα δει-
λόν τε καὶ πονηρὸν ἄνδρα ἀγα-
θὸν ἀποτείνων. Alter de rep.
Lac. I. 6: καὶ τοῦτο συμφέρον
τῇ εὐγονίᾳ νομίζων. Neque ego
exemplis refutare Heindorfium
possum, sed aliud esse puto νο-
μίσαι τι ποιεῖν, aliud ποιοῦν

ψυχὴν βλέπειν μάθημα, ἢ ἐκεῖνο, ὁ ἂν περὶ τὸ
ὄν τε ἢ καὶ τὸ ἀόρατον, εάν τέ τις ἄνω κεχηνώσῃ
κάτω συμμεμυνώσῃ τῶν αἰσθητῶν ἐπιχειρῆ τι μανθάνειν,
οὔτε μαθεῖν ἄν ποτέ φημι αὐτὸν, ἐπιστήμην γὰρ οὐδὲν
C ἔχειν τῶν τοιούτων, οἵτε ἄνω, ἀλλὰ κάτω αὐτοῦ βλέ-
πειν τὴν ψυχὴν, καὶ ἐξ ὑπτίας νέων ἐν γῇ ἢ ἐν θαλάττῃ

idque huic loco magis aptum,
scilicet non solum facere s. fa-
ciendo in praesentia occupatum
esse, sed vim et consuetudinem
faciendi habere aliquid existimare.
Nec nihil alteri infinitivo βλέπειν
et variandae orationis studio tri-
buendum videtur.

τὸ ὄν] τὸ om. Mon. C.

τε ἢ] γε ἢν Vind. E.

ἀόρατον] ὄρατὸν Par. K. sec,
Bekk.

ἐάν τέ τις — μανθάνειν] ἐάν
τέ τις ἄνω κεχηνώσῃ ἢ ἐάν τε κά-
τω συμμεμυνώσῃ. εἰ δέ τις αἰσθη-
τῶν πέρι μανθάνειν ἐπιχειρεῖ
Vind. B. Eadem est Mon. C.
lectio, praeterquam quod pro
συμμεμυνώσῃ simplex ρεμυνώσῃ ha-
bet. ἐάν τέ τις ἄνω κεχηνώσῃ ἢ
κάτω συμμεμυνώσῃ τούτων τε
μανθάνῃ. ἐάν δέ ἄνω που κεχη-
νώσῃ διοῦν τῶν αἰσθητῶν ἐπι-
χειρῆ μανθάνειν Mon. B. et,
τούτων — διοῦν in m. a m. s.
positis, Flor. U. Hanc lectionem
Bekkerus et in sec. Stallbaumius
recepserunt. Reliqui codices et
Ficinus in nostram cum reliquis
editionibus consentiunt, nisi quod
Ficinus pro ἢ κάτω συμμ. nun-
quam conversus deorsum posuit,
quasi μὴ ο. σ. legisset, et pro
ἐάν τε Vind. F. Ang. B. ἐὰν δέ,
pro κεχηνώσῃ Vind. F. κεχηνώσῃ,
pro ἢ Vind. E. ἢ, pro συμμεμυ-
νώσῃ Lob. Vat. M. μεμυνώσῃ, Vat.
B. Ven. B. uterque a m. s. νε-
νευκώσῃ, pro τι Ang. B. τε ha-
bet, quod ipsum τι in Lob. omis-
sum, in Par. A. Ven. B. Vat.
HM. eo quo nos posuimus loco,
in reliquis et in Ald. Bas. ab.
Steph. (quem falso Bekkerus cum

Par. A. consentire significat) Ast.
et Stallb. pr. ante ἐπιχειρῆ vel
ἐπιχειρεῖ, quomodo in Vind. EF.
Flor. AC. scriptum est, legitur.
Quae omnia exigui et ad minuen-
dam vulgatae auctoritatem nullius
momenti esse apparet. Haud multo
maioris ea sunt, quae Schleier-
macherus et ipse Monacensem
Bekkeri secutus obiicit. Primum
negat rebus sensibilibus intentum
non solum ἄνω κεχηνότα, sed
etiam κάτω συμμεμυνότα dici de-
buisse, quod Ficino quoque of-
fensioni fuit. Sed hoc omissis cor-
poris statui erecto et ori aperto
non tam efficienda cognitionis
vis - negata, quam impedienda
tributa videretur. Itaque nulla
eiusmodi vi praedita illa et omni-
no inefficacia demonstraturus So-
crates si quis sursum aperto, in-
quit, vel clauso deorsum ore sen-
sibile quid cognoscere studet, ne-
que cognoscere mihi neque sursum
spectare animo videtur. Deinde
in particula τε post ἐὰν offendit
et contrarii significationem desi-
derat, non animadvertisit duas
negationes, οὐ δύναμαι et οὐ
φημι, recte per τε copulari, et
si necessarium esset δὲ, id unum
servatis ceteris ex Ang. B. vel
etiam ex coniectura restitui po-
tuisse. Bekkeri lectioni praeter
codicum auctoritatem hoc maxime
obstat, quod viro gravi et gra-
vissimi in rebus delixo personam
comicam, πρόσωπον κεχηνόσ, ad-
iicit. Accedit quod sensibilibus
intentum non quamvis, sed quod
ἄνω κεχηνώσ sit, cognitione pri-
vare videntur, et quod non appar-
et, cur ἢ κάτω συμμεμυνώσ po-
tius, quam ἐάν τε ο. σ. dicatur.
Atque hac ex parte multo magis

μανθάνη. Δίκην, ἔφη, ἔχω· ὁρθῶς γάρ μοι ἐπέπληξες. ἀλλὰ πῶς δὴ ἔλεγες δεῖν ἀστρονομίαν μανθάνειν παρὰ ἡ νῦν μανθάνουσιν, εἰ μέλλοιεν ὥφελίμως πρὸς ἡ λέγομεν μαθήσεσθαι; Ὡδε, ἦν δὲ ἔγω· ταῦτα μὲν τὰ ἐν τῷ οὐρανῷ ποικίλατα, ἐπείπερ ἐν ὄρατῷ πεποίκιλται, πάλλιστα μὲν ἡγεῖσθαι καὶ ἀκριβέστατα τῶν τοιούτων D

tolerabilis et haud paullo modestior est alterius Monacensis interpolatio, quem Schleiermacherus pro inutili abiicere et cum Bekkeriano confundere non debebat.

ποτε] om. Vind. F. Ang. B. Flor. R.

ἔχειν] *ἔχει* iūdem.

τῶν τοιούτων] *τὸν τοιοῦτον* Lob. Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. HM. Ast. sec. tert. scientiam enim adipisci hunc nego Fic. Cf. prima lectionis varietas in D.

ἀλλὰ] *οὕτε* Vind. F. Ang. B. Flor. R.

C *ἔξ νότιας νέων*] *νέων*, pro quo Vat. BM. Ven. B. et, sup. ε, Lob. *νείων*, Par. DK. sec. Bekk. *νεῶν*, Par. A. Mon. C. Vat. H. *μὲν*, Vind. B. *μὴν*, Vind. E. (*ἔξ νότιας* ut F.) *μὴ* exhibet, Ficinus *iacens* posuit, Stephanus p. 25. recte negat in *νέον* mutandum aut pro *habitans* accipiendum, quum sit *natans*. Pollux VII. 138: *νεῖν δὲ ἔξ νότιας μάθημα οὐλυμβητῶν Ἀριστοφάνης εἶπε καὶ Πλάτων*. Astius, qui in pr. *νεύων* dederat, in sec. metaphorice dictum putat, ut *ἔξ νότιας νέων* nihil aliud sit, nisi *supinus*. Atque ita Galenus intellexisse aut *νέων* non leguisse videtur de usu part. L. III. T. III. p. 183. Kühn. ad haec respiciens: *τὸ δὲ μηδὲ Πλάτωνος αὐτοὺς ἀκηκοένται λέγοντος, ὃς οὐ τοῦτο λέτι τὸ ἄνω βλέπειν, ὅταν τις νότιον αὐτὸν ἀναλίνειε χαρακτηρούντος, ἀλλ’ ὅταν, οἷμαι, τῷ νῷ τὴν τῶν ὄντων φύσιν ἐπισκοπήται, δεινῶς δλίγορον*. Sed huic interpretationi per se non nimis

probabili etiam addita ἐν γῇ ἢ ἐν θαλάττῃ parum convenient, et mare natantem, qui proprio dicatur, requirit. Neque vero propterea opus est, ut cum Mon. B. Flor. U. ἐν θαλάττῃ ἢ ἐν γῇ scribatur, quod Stallbaumius in sec. fecit. Namque in ea orbis terrarum parte, quae γῇ vocatur, non minus, quam in altera natari potest. γῇ non idem est, quod *χέρσος*.

Δίκην] νῦν τιμωρίαν. scholiastes; recte. Cf. Xenophon Cyrop. VII. 2, 24. et ibi a Schnieder citatus Lysias epitaph. §. 7. Bekk. p. 59. Reisk.

ἀλλὰ] *ἀλλὰ* Ald.

διέλεγες] *διέλεγες* Vind. E.

παρὰ] *παρ'* idem. *πρὸς* Par. K.

μέλλοιεν] *μέλλοι* Vat. H. *μέλλομεν* Vind. E. Flor. ACT. et Ficinus: *si eius nobis perceptio sit ad ea, quae dicimus, profutura*.

λέγομεν] *λέγομεν* Vind. F. Ang. B. Flor. R.

τῷ] om. Vat. H. et Stallbaumio in pr. referente Flor. ACT. Sed idem in Par. K. omissum dicit. Itaque ἐν οὐρανῷ pro ἐν ὄρατῷ e Florentinis illis notatum accepisse et perperam huc retulisse videtur. Nam pro ὄρατῷ Bekkerus et Bipontini testantur in Par. K. οὐρανῷ legi. Idem legitur in Vind. E. eratque ante corr. in Lob.

τῶν τοιούτων] *τὸν τοιοῦτον* D Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. V.

έχειν, τῶν δὲ ἀληθινῶν πολὺ ἐνδεῖν, ἃς τὸ δὲ τάχος καὶ ή οὖσα βραδύτης ἐν τῷ ἀληθινῷ ἀριθμῷ καὶ πᾶσι τοῖς ἀληθέσι σχήμασι φοράς τε πρὸς ἄλληλα φέρεται καὶ τὰ ἐνόντα φέρει· ἂ δὴ λόγῳ μὲν καὶ διανοίᾳ ληπτὰ, ὅψει δ' οὐ. ή σὺ οἶσι; Οὐδαμῶς, ἔφη. Οὐκοῦν, εἶπον, τῇ περὶ τὸν οὐρανὸν ποικιλίᾳ παραδείγμασι χρηστέον τῆς πρὸς ἐκεῖνα μαθήσεως ἔνεκα, διοίως ὥσπερ ἀν εἴτε τις ἐντύχοι ὑπὸ Δαιδάλου ἡ τινος ἄλλου δημιουργοῦ ἡ

τῶν δὲ ἀληθινῶν] τὸν δὲ ἀληθινὸν Vind. B. Mon. C. τὸ δὲ ἀληθινὸν Vind. E.

ἃς] ὁ Ang. B. ἢ Flor. R. Id Stallbaumius in sec. probat atque extrema sic scripta velit: σχήμασι πάσας φοράς πρὸς ἄλληλα τε καὶ τὰ ἐνόντα φέρει. additque interpretationem, quae quoniā fundamento caret, commemoranda non videtur. Astius ὡν pro ἃς scribendum et post βραδύτης commate posito καὶ inserendum idque pro καὶ ἢ accipiendo statuit; cui multa repugnant; illud vere monuit, ἃς non pertinere ad τῶν ἀληθινῶν, quasi hoc sit femininum et φορῶς per attractionem pro φορῶν positum, quod nuper placuit Bernhardyo synt. p. 302. Denique Schleiermacherus in vulgata acquiescit, sed una cum veris motibus sensibiles simul significari totamque enuntiationem ellipticam, summam autem sententiae hanc esse censem: τὰ ἐν τῷ οὐρανῷ πολὺ τῶν ἀληθινῶν ἐνδεῖ καὶ τὰς φοράς. Ego neque a grammatica, neque a sensu quicquam obstare puto, quo minus ad τῶν ἀληθινῶν ex antecedentibus repetamus ποικιλμάτων, tum verarum varietatum descriptionem contineri putemus verbis ἃς τὸ δὲ τάχος etc. φοράς τε πρὸς ἄλληλα φέρεται καὶ τὰ ἐνόντα φέρει, quasi dicat τῶν ἀληθινῶν ποικιλμάτων, τοῦτ' ἔστι τῶν φορῶν, ἃς etc. Qua ratione vera celeritas, et vera tarditas quum invicem ferri, tum quae insint ferre dicantur, haud difficile intellectu nec non signi-

ficatum a Schleiermacheru est. Quemadmodum enim sensibilis coeli varietas eo efficitur, quod stellas in coelo conspicuas alias celerior, alias tardior motus per definita temporis spatia certasque figurās circumagit, qui motus est non verae, sed sensibilis celeritatis tarditatisque et per numeros atque figurās item sensibiles decurrit, ita veram varietatem vera celeritas et tarditas efficiunt eo, quod veras stellas secundum verum numerū verasque figurās movent, qui motus partim ipsarum est, quia celeritas et tarditas motu carere non possunt, partim ad res motas seu veras stellas pertinet, quae τὰ ἐνόντα dicuntur, quia celeritas et tarditas cum eis sese coniungentes eas amplectuntur et continent. Cf. Proclus in Tim. p. 244: πρόσεισι καὶ ἀριθμὸν ὁ οἷς ἀληθῶς χρόνος, ἀριθμὸν τὰ μετέχοντα (v. ἀ. μεταμετέχοντα) αὐτὸν καὶ αὐτὸς ὡν νόρος ἀριθμὸς, ὃν καὶ ὁ Σωκράτης ἔλεγε καὶ ἡνίσκετο, ἡνίκα ἔλεγεν, ἐν τῷ ἀληθινῷ ἀριθμῷ λεγων εἶναι τὸ αὐτοτάχος καὶ τὴν αὐτοβραδυτήτην, οἷς διαφέρει τὰ ὑπὸ τοῦ χρονοῦ ἀριθμούμενα, θάττον ἡ βραδύτερον κινούμενα. et in Parm. T. III. p. 158: ὥσπερ τῶν ἐνεργειῶν ἡ λειτουργίη καὶ ἀνιστάσας ἔστι καὶ βραδύτης ἐν τῷ ἀληθινῷ ἀριθμῷ, μεμαθήναμεν ἐν Πάλιτείᾳ. in quibus post ἀριθμῷ nonnulla excidisse suspicor.

τάχος] πάχος Vind. F. et int. vers. Flor. A. βραδύτης] Ita Vind. EF. βρα-

γραφέως διαφερόντως γεγραμμένοις καὶ ἐκπεπονημένοις διαγράμμασιν. ἡγήσαιτο γὰρ ἀν πού τις ἔμπειρος γεωμετρίας ἴδων τὰ τοιαῦτα κάλλιστα μὲν ἔχειν ἀπεργασία, γελοῖον μὴν ἐπισκοπεῖν ταῦτα σπουδῆς ὡς τὴν ἀλήθειαν ἐν αὐτοῖς ληψόμενον ἵσσων ἦ διπλασίων ἢ ἄλλης τινὸς 530 συμμετρίας. Τί δ' οὐ μέλλει γελοῖον εἶναι; ἔφη. Τῷ ὅντι δὴ ἀστρονομικὸν, ἥν δ' ἔγω, ὅντα οὐκ οὔει ταῦτὸν πείσεσθαι εἰς τὰς τῶν ἀστρων φορὰς ἀποβλέποντα;

δυτῆς reliqui mei cum editis,
contra Herodiani, scholiastae Veneti et Eustathii (T. II. p. 149,
5. Lips.) praeceptum. Cf. Butt-
mannus gramm. II. p. 324. Idem
Defin. p. 415. E. ex duobus co-
dicibus Bekkeri unoque Mon.
DXIIII. pro vulgato βραδυτῆς
restituendum.

πρὸς ἄλληλα] προσάλλ. Vind.
F.

δὴ] om. Vind. E.

ληπτὰ] λεπτὰ Vind. B.

δέ] δέ, Lob.

ἥ] ἥ Vind. F. Mon. B.

Οὐδαμῶς ἔφη] om. Mon. B.
οὐδαμῶς γε ἔφη Vind. F. (Flor.
ACR.) Stallb. pr. οὐδαμῶς γ' ἔφη
Ven. B. Ang. B. Ald. Bas. ab.
Steph. (tac. Bip.) Ast.

παραδείγμασι] παραδείγμασι
Vind. B. et corr. Mon. C. (ante
corr. —σι) Steph. Ast. pr. sec.
exemplō Fic. In Lob. τι super
σι scriptum. De Vat. M. (et Vind.
B.) Bekkerus nihil ostendit.

ἐπεῖνα] ἐπεῖνα μαθήσεως, Vind.
E.

ἐντύχοι] ἐντύχη Vind. BF.
Vat. M.

E. ἡγήσαιτο] ἡγήσατο Vind. F.
ἄν] idem int. vers. habet.

καλλιστα] καλλιστον Vind. B.
Mon. C. In Mon. B. κάλλι τα,
sup. a m. s. σ, legitur.

ἀπεργασία] ἀπεργασίαν Vind.
F. Ang. B. Flor. R. Cf. p. 528.
D.

μὴν] μὲν Vind. F. Ang. B.
Vat. H. δ' Vind. E. μέντοι Flor.
TV. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. et,
ut videtur, Ven. B. quem Bekke-
rus tradit μὴν pro varia lectione

(γρ) exhibere. Conf. p. 528. A.
Perperam, ut alia, Stallbaumius
in sec. μὲν vulgatum fuisse dicit.
ἐπισκοπεῖν] ἐσκοπεῖν Vind. E.
ταῦτα] αὐτὰ Lob. Vind. F.
Mon. B. Vat. BM. Par. DK. Ven.
C. et γρ B. Ang. B. Flor. RU.
Stallb.

σπουδῆ] om. Lob. Vat. BM.
Ven. B. sed is pro var. lect. ha-
bet. In Flor. T. ante ταῦτα le-
gitur.

ώς] πρὸς Ven. C. Par. DK.
et, sup. ως, Vat. B. πρὸς τὸ
Lob. Vat. M.

ληψόμενον] ληψόμενος Mon.
C. ληψόμενον, sup. εσθατ, Ven.
C.

ἵσσων] ἥ ՚ Ang. B.

οὐ] δὲ Lob. om. Vat. M.

μέλλει] μέλλοι Flor. T.

εἶναι] om. Vat. H.

Tῷ ὅντι] τωόντι Vind. E.
Mon. C. τὸ τῷ ὅντι Lob. Vat.
M. τὸν τῷ ὅντι Mon. B. Flor.
TU. Idem invenisse videtur scho-
lii auctor: δ τῷ ὅντι, φραν,
ἀστρονομικὸς etc. Articulum re-
cepit Stallbaumius.

δὴ] δὲ Vind. B. Mon. C.

ἥν δέ ἔγω] post ὅντα iidem.

οὐκ οὔει ταῦτὸν πείσεσθαι] om. Lob. Vat. M. Pro ταῦτὸν
Mon. C. τὸν αὐτὸν, Ven. C.
ταῦτὸ, Vat. B. αὐτὸ- habet. Pro
πείσεσθαι, ut videtur, nám ver-
sus numerus non congruit, πήσε-
σθαι Bekkerus in Par. K. legit.
Bipontini silent. Idem quoque fa-
cturum putare debemus verum
astronomum etc. Fic.

ἀστρων φορὰς] ἀστρων φο-
ρὰς Mon. C.

νομιεῖν μὲν, ὡς οἶόν τε πάλλιστα τὰ τοιαῦτα ἔργα συ-
στήσασθαι, οὕτω ξυνεστάναι τῷ τοῦ οὐρανοῦ δημιουργῷ
αὐτὸν τε καὶ τὰ ἐν αὐτῷ· τὴν δὲ νυκτὸς πρὸς ἡμέραν
ξυμμετρίαν καὶ τούτων πρὸς μῆνα καὶ μηνὸς πρὸς ἐνι-
B αυτὸν καὶ τῶν ἄλλων ἀστρῶν πρὸς τε ταῦτα καὶ πρὸς
ἄλληλα οὐκ ἄτοπον, οἷει, ἡγήσεται τὸν νομίζοντα γίγνε-
σθαι τε ταῦτα ἀεὶ ὀσαύτως καὶ οὐδαμῆ οὐδὲν παραλ-
λάττειν, σῶμά τε ἔχοντα καὶ ὁράμενα, καὶ ζητεῖν παντὶ
τρόπῳ τὴν ἀλήθειαν αὐτῶν λαβεῖν; Ἐμοὶ γοῦν δοκεῖ,
ἔφη, δοῦ νῦν ἀκούοντι. Προβλήμασιν ἄρ', ἦν δ' ἔγω,
χρώμενοι ὕσπερ γεωμετρίαν οὕτω καὶ ἀστρονομίαν μέ-
τιμεν, τὰ δ' ἐν τῷ οὐρανῷ ἐάσομεν, εἰ μέλλομεν ὄντως
C ἀστρονομίας μεταλαμβάνοντες χρήσιμον τὸ φύσει φρό-
νιμον ἐν τῇ ψυχῇ ἐξ ἀχρήστου ποιήσειν. Ἡ πολλαπλά-

οῦτο] οὐ τῷ Ald. Bas. ab.

οὐρανὸν] οὐρανῷ Vind. F.

αὐτὸν τε] αὐτὸν idem. Paullo
post ἐναυτῷ et συμμετοῖαν et
πρὸς τε ταυτὰ.

B οἴει] Ven. C. a m. recenti εἰ
additum habet. Cf. L. VI. p. 486.
C.

ἡγήσεται] ἡγήσεσθαι Mon. B.
et ante corr. C. Ang. B. Flor.
RTU.

γίγνεσθαι] γίν. Vind. E. Mon.
C. Ald. Bas. ab. Steph. (non
Florentini.)

οὐδαμῆ] οὐδαμὴ Vind. F. οὐ-
δαμῆ Steph. Ast. pr. sec.

σῶμά] τὰ σώματά Vind. F.
Flor. A. Plotinus Enn. II. L. I.
c. 2: πῶς γὰρ ἀν, φησὶ, σώ-
ματα ἔχοντα καὶ ὁράμενα ἀπα-
ραίλλατως ἔξει καὶ τὸ (αν ἀεὶ?)
ὠσαύτως; συγχωρῶν καὶ ἐπὶ τού-
των δηλούότι τῷ Ἡρακλείτῳ, ὡς
(L. δε) ἔφη ἀεὶ καὶ τὸν ἥλιον
γίνεσθαι.

ἔχοντα] ἔχ. αὐτὰ Flor. T.

καὶ ζητεῖν] καὶ om. Vind. F.

Ang. B.

ἀλήθειαν] βοήθειαν Vind. F.

αὐτῶν] αὐτῶι Lob. αὐτῶ
Vat. M.

Ἐμοὶ γοῦν] ἔμοιγοῦν Vind. F.
ἔμοιγ' οὖν Mon. B. Vid. ad p. 527.
D.

ἀκούοντι] ἀκούοντος Par. K.

ἄρ'] ἄρα Vind. BEF. Mon. C.

ἐάσομεν] ἐάσωμεν Vind. F.

Mon. C. (hic sup. o) Par. DK.
Ang. B. Vat. M. Flor. ACRT.
Ald. Bas. a.

μέλλομεν] μέλλομεν Vind. B.
Mon. C. Vat. M. et a m. s. Ven.

C. μέλλοντες Vat. H. Flor. A.

ἔξ ἀχρήστου] ἔξαχρ. Vind. E. C.

ἔξ ἀρχῆς τοῦ cum π super τ Vat.
B. ἔξ ἀρχῆς τωι Lob. Vat. M.

(hic τω) ἔξαρχῆς Mon. B. Par.
K. Flor. U. πρὸς ἀχρήστου Vind.
F. Ang. B.

Ἡ] Ἡ Vind. F.

προστάττεις] προστάττεις Par.
K. sec. Bip. In Bas. ab. signum
interrogandi additum.

εἴπον] ἔφην Mon. C.

τάλλα] τάλλα Vind. F. τ' ἄλλα
Vind. E. τάλλα Vind. B. Mon.
BC. Steph. Ast.

τρόπον] λόγον Ven. B.

ὡς νομοθετῶν] post-ὅφελος
Lob. Vat. BM.

ἄλλα] ἄλλα idque ut novi ca-
pitis initium exhibent editiones
Bekkeri, Astii tertia et Stallbau-
mii. Sic Tί δέ; p. 527. C. extr.
Τοῦτο μὲν 526. C. Βούλει οὖν
521. C. et in superioribus atque
insequentibus libris certis quibus-
dam locis, ubi transitus ad aliam
rem fieri videretur. Quas inci-
siones ego, si solum argumentum

σιν, ἔφη, τὸ ἔογον, ἡ ὡς νῦν ἀστρονομεῖται, προστάτεις. Οἶμαι δέ γε, εἰπον, καὶ τὰλλα κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον προστάξειν ἡμᾶς, ἐάν τι ἡμῶν ὡς νόμοθετῶν ὄφελος ἦ. ἀλλὰ γὰρ τί ἔχεις ὑπομνῆσαι τῶν προσηκόντων μαθημάτων; Οὐκ ἔχω, ἔφη, νῦν γ' οὐτωσί. Οὐ μὴν ἐν, ἀλλὰ πλείω, ἦν δ' ἔγώ, εἴδη παρέχεται ἡ φορὰ, ὡς
487 ἔγῳ μα. τὰ μὲν οὖν πάντα ἴσως δύτις σοφὸς ἔξει εἰπεῖν· D
ἄ δὲ καὶ ἡμῖν προφατή, δύο. Ποῖα δή; Πρὸς τούτῳ,
ἡν δ' ἔγώ, ἀντίστροφον αὐτοῦ. Τὸ ποῖον; Κινδυνεύει,
ἔφην, ὡς πρὸς ἀστρονομίαν ὅμματα πέπηγεν, ὡς πρὸς
ἐναρμόνιον φορὰν ὥτα παγῆναι, καὶ αὗται ἀλλήλων
ἀδελφαὶ τινες αἱ ἐπιστῆμαι εἶναι, ὡς οἵ τε Πυθαγόρειοι
φασι, καὶ ἡμεῖς, ω̄ Γλαύκων, συγχωροῦμεν. ἡ πᾶς
ποιοῦμεν; Οὔτως, ἔφη. Οὔτοῦν, ἦν δ' ἔγώ, ἐπειδὴ

sequuntur, horum sermonum naturae, de qua Vol. I. p. XII. sq. dixi, minus convenientes et ita demum, si quod extrinsecus vel alio conversi colloquii vel narrationis requiescentis indicium accedat, admittendas existimo.

γὰρ τι] γάρ τι Vind. F. Mon. B.

ἔχεις] —ς int. vers. additum habet Mon. C.

ἔχω] ἔχωγ' Mon. B. ἔχωγε Flor. U. ἔχω γ' editi ante Beckerum, qui γ' ab octo suorum abesse demonstrans de Par. DK. nihil significavit. Etiam Bipontini tacent.

γ'] om. Mon. C. γε Flor. U.
οὐτωσί] οὐτωσίν Mon. B. Flor. U. Ald. Bas. ab. In Vind. F. post i litura est. Conf. Vol. I. p. 12, a.

μὴν] μόνον Vat. H.

εἴδη] ἥδη Vind. F. Mon. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. εἴδη, sup. η, Vind. B.

φορὰ] φορὰ Mon. C.

D τούτῳ] τοῦτο Lob. Vind. EF. Ang. B. Vat. M. et cum ω super ultima B. τούτῳ Ald.

πέπηγεν] πέποιγεν Vind. E. Alcinous isag. c. 7: ὡςπερ γὰρ πρὸς ἀστρονομίαν ὅμματα συνέστηκεν, οὔτως ἀκοή πρὸς τὸ ἐναρμόνιον.

ώς] οὔτως Vind. F. Ang. B. Flor. R. et int. vers. AT. οὔτω Ven. C. a m. s. ως Lob. Vind. BE. Mon. C. Bas. b. Ast. pr. ως Ast. sec. Hermannum de emend. rat. gr. gr. p. 113. secutus, qui tamen postea ipse usum certum maluit, quam doctrinam incertam sequi. Cf. Phaedr. p. 241. D: ως λύνοι ἔρν' ἀγαπῶσ', ως παιδα φιλοῦσιν ἔρασται. Protag. pag. 333. A: ως οὖν ποιήσετε. 326. D: ὡςπερ οἱ γραμματισταὶ — ἀναγνάζονται — ως δὲ καὶ ἡ πόλις — ἀναγνάζει etc. quem ad locum Heindorfius nostrum et duo Sophocleos adscripsit.

αἱ] om. Mon. C. Theo Sm. p. 9: καὶ μὲν δὴ περὶ μονσικῆς ἐν τῷ αὐτῷ φησὶν, δέ τι δνεῖν (al. δνοῖν) δεῖται ἡ τῶν οὐτων θεωρία, ἀστρονόμιας καὶ ἀρμονίας, καὶ αὗται ἀδελφαὶ αἱ ἐπιστῆμαι, ὡς οἱ Πυθαγοριοί. οἱ μὲν οὖν τὰς ἀκονομένας etc. Cf. p. 531. A.

εἶναι] εἰσὶν Lob. Bas. b. εἰεν Par. K.

Πυθαγόρειοι] πυθαγόροι Vind. F. Mon. C.

ἡμεῖς] ὑμεῖς Ven. B.
συγχωροῦμεν] ἔνγχ. Flor. T. Stallb.

ἢ πᾶς ποιοῦμεν;] vel quidnam agemus? Fic. ἢ πᾶς ποιῶμεν;

E πολὺ τὸ ἔργον, ἐκείνων πενδόμεθα, πῶς λέγουσι περὶ αὐτῶν καὶ εἴ τι ἄλλο πρὸς τούτοις· ἡμεῖς δὲ παρὰ πάντα ταῦτα φυλάξομεν τὸ ἡμέτερον. Ποῖον; Μή ποτ’ αὐτῶν τι ἀτελὲς ἐπιχειρῶσιν ἡμῖν μανθάνειν οὔς θρέψομεν, καὶ οὐκ ἐξῆκον ἐκεῖσε ἀεὶ, οἷς πάντα δεῖ ἀφήνειν, οἷον ἄρτι περὶ τῆς ἀστρονομίας ἐλέγομεν. Η̄ οὐκ οἰσθ’, διτε
531 καὶ περὶ ἀρμονίας ἔτερον τοιοῦτον ποιοῦσι; τὰς γὰρ ἀκονομένας αὖ συμφωνίας καὶ φθόγγους ἀλλήλοις ἀναμετροῦντες ἀνήνυτα ὥσπερ οἱ ἀστρονόμοι πονοῦσι. Νη̄

Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Flor.
R. Cf. Vol. I. p. 168.

E ἔργον, ἐκείνων] ἔργον ἐκείνων,
editi ante Bekkerum. Veram distinctionem viderat Ficinus. Cf.
p. 531. B. extr.

πενδόμεθα] πασόμεθα Vind.
E. πενδάμεθα Vind. F.

πάντα ταῦτα] Ita Par. A.
Vind. BEF. Mon. C. Ven. B.
Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV.
ταῦτα πάντα reliqui mei cum
editis ante Bekkerum.

φυλάξομεν] φυλάξωμεν Vind.
F. Mon. C. Ang. B. Flor. R.
et cum o super ω Ven. B.

ἡμέτερον.] ἡμέτερον; Bas. ab.
Ast. tert. At nullum sequitur
responsum.

Mή ποτ’ αὐτῶν — ἐπάτεροι.
531. C.] laudat Eusebius praep.
L. XIII. p. 435. Pro μή ποτ’
in Lob. Vat. M. μή τ’ exstat.
Post αὐτῶν Vind. E. τῶν addit.

οἷ] οἱ Vind. F. οὐς Flor. R.

πάντα] πάντας Euseb.

δεῖ] δῆ Ven. B. Vat. H. Flor.
ACTV.

ἀφήνειν] ἀνήκειν Euseb. quod
Stephanus annot. pag. 25. recipi
posse censem. Idem thes. T. I.
pag. 1690. C. ἐφήκειν coniicit.
Codicum consensus et verbi ἀφί-
κνεῖσθαι, quod infra p. 531. D.
in simili re positum est, analogia
vulgatum quamvis ἄπαξ λεγόμε-
νον satis tuetur.

ἢ] ἢ editiones ante Astium.

531 τοιοῦτον] τοιοῦτο Vind. BE.
Mon. C. — Theo Sm. p. 9: οἱ
μὲν οὖν τὰς ἀκονομένας συμφω-

νίας αὖ καὶ φθόγγους ἀλλήλοις
ἀναμετροῦντες (άν. ἀλλ. cod.
Scal.) ἀνήνυτα πονοῦσι· τελείως
παραβάλλοντες τὰ ὡτα, οἷον ἐπ
γειτόνων φωνὴν θηρώμενοι, οἱ
μέν φασιν ἀκούειν ἐν μέσῳ τινὰ
ῆχον καὶ μικρότατον εἶναι διά-
στημα τοῦτο, φέρετον, οἱ
δὲ ἀμφισβητοῦσιν, ὡς ὅμοιον
ἥδη φθεγγομένον, τὰ ὡτα τοῦ
νοῦ προστησάμενοι, τεις χορ-
δαῖς πρόσγυματα παρέχουσιν ἐπὶ
τῶν πολλάβων (πονηλάβων cod.
Reg. A. πονηλάβων margo cod.
Reg. B.) στρεβλοῦντες. (στρε-
βλοῦνται Reg. A.)

συμφωνίας] Pollux II. 114:
παρὰ δὲ Πλάτονι συμφωνεῖ καὶ
διαφωνεῖ καὶ συμφωνία καὶ δια-
φωνία. Verbū frequentius est.
Cf. L. V. p. 463. E. X. 617. B.
Crat. 436. D. et Phaedon. 101.
D. quo loco cum altero contra-
rium significante iunctum est.

ἀναμετροῦντες] μετροῦντες
Ven. B.

ἀνήνυτα] ἀνόνητα Vind. EF.
Flor. ACR. et, sup. η et ν, Ang.
B.

ἀστρονόμοι] ἀστρολόγοι Bas.
b. Idem „in quodam vet. libro
legi“ monet Stephanus p. 25.

πονοῦσι] ποιοῦσι Lob. Mon.
B. Ven. B. Par. DK. sec. Bekk.
Vat. M. Flor. U. Euseb. Ald.
Bas. ab. πονοῦσιν Bekkerus.

γελοῖς] γελοῖς Vind. EF.
Ang. B. Flor. R. (τελείως Theo.)

πυνθάνεται] πυνθάνε-
τάττα Lob. Vind. F. πυνθάνεται
άττα Vind. E. crebriores quasdam

τοὺς θεούς, ἔφη, καὶ γελοίως γε, πυκνώματα ἄττα
ὑνομάζοντες καὶ παραβάλλοντες τὰ ὅτα, οἷον ἐκ γειτό-
νων φωνὴν θηρευόμενοι, οἱ μέν φασιν ἔτι κατακούειν
ἐν μέσῳ τινὰ ἥχην καὶ συικρότατον εἶναι τοῦτο διάστη-
μα, ὡς μετρητέον, οἱ δὲ ἀμφισβητοῦντες ὡς ὅμοιον ἥδη
φθεγγομένων, ἀμφότεροι ὅτα τοῦ νοῦ προστησάμενοι. Β
Σὺ μὲν, ἦν δ' ἔγω, τοὺς χρηστοὺς λέγεις, τοὺς ταῖς
χορδαῖς πράγματα παρέχοντας καὶ βασανίζοντας, ἐπὶ^{τῶν} κολλόπων στρεβλοῦντας· ἵνα δὲ μὴ μακροτέρα ἡ

vocum congestiones Fic. frequentamenta Gellii L. I. c. 11. et V. 1. quae lexicographi huc referunt, quamquam secundum Graecum vocabulum dicta videntur, ab hac tamen re aliena sunt haud minus, quam frequentes chordarum pulsationes soni experiendi causa, quas alii hic intelligunt. Artis vocabulum, quem terminum technicum vocant, pronomen ἄττα, nescio quae, et verbum ὄντομάζοντες haud dulie indicat, idque rem, non actionem significare ipsa nominis ratio docet. Iam quum Aristoxenus intervalla illa minora in tetrachordo ad genus chromaticum et harmonicum aptato, quae bina minima comprehendunt, πνημὰ appellaverit, (elem. harm. L. I. p. 24. Meibom. πνηνὸν δὲ λεγέσθω τὸ ἐν δύο διαστημάτων συνεστηκὸς, ἢ συντεθέντα ἔλαττον διάστημα περιέξει τοῦ λειπομένου διαστήματος ἐν τῷ διὰ τεσσάρων.) haec ipsa πνηνὰ vel alia parva et tamen composita intervalla iam ante Aristoxenum simili nomine πνηνώματα a quibusdam propter sonorum in angusto spatio quasi confertorum frequentiam dicta et in dubitationem vocari solita esse credi potest. Cf. Bullialdus ad Theonem p. 206. et 279. et Boeckhius de metris Pind. p. 208. Sed pro certo ponendum non puto.

θηρευόμενοι] θηρώμενοι Mon. C. et Theo p. 10. sed p. 23. οὐδὲν καὶ αὐτὸς, inquit, ὁ Πλάτων ἀφηγεῖται λέγων, ὡς οὐ καὶ

ὅσπερ ἐκ γειτόνων (τόνων Reg. C.) φωνὴν θηρευομένους πράγματα παρέχειν ταῖς χορδαῖς. velut vicinore loco vocem ipsam venantes Fic. quae interpretatio non magis probabilis videtur, quam qua Schleiermacherus usus est: als ob sie den Ton von seinem Nachbar ablauschen wollten. Eodem modo isti ad chordas, quo ex contigua domo vocem aucupantes ad parietem aures admovere dicuntur.

φασιν ἔτι] φασιν ὅτι Par. K. φασι Vind. F. Etiam Ang. B. Flor. R. ἔτι omittunt.

τοῦτο] τοῦτο τὸ Flor. T.
ὡς] ὡς Lob. Vat. BM. Flor. T.

δὲ] δ' Euseb. Pro ἀμφισβητοῦντες exspectabatur ἀμφισβητοῦσιν, quod praecedenti φασὶ responderet; atque ita scriptum a Theone vidimus. Sed redit oratio ad participium, a quo fecerat initium, quasi etiam φάσοντες, non φασὶν possum est.

φθεγγομένων] φθεγγόμενον Ven. B. Vat. H.

ἀμφότεροι] ἀμφότερα Euseb.

προστησάμενοι] προστησάμενοι B Ang. B. et margo Flor. R. Idem liber a m. s. δεξάμενοι ἀρεσθέντες vulgato superscripta habet.

μὲν] μὲν οὖν Flor. T.

κολλόπων] κολλόπων Mon. B. Flor. U, κολλοπίων Par. K. sec. Bip. quod sine articulo satis commodum esset. κολλόπων Vat. M. κολλόπων cum β super π Vind.

εἰκονὶ γίγνηται πλήκτῳ τε πληγῶν γιγνομένων καὶ πα-
τηγορίας πέρι καὶ ἔξαρνήσεως καὶ ἀλαζονείας χορδῶν,
παύομαι τῆς εἰκόνος καὶ οὐ φημι τούτους λέγειν, ἀλλ
ἔκεινους, οὓς ἔφαμεν νῦν δὴ περὶ ἀρμονίας ἐρήσεσθαι.

Cατάτον γὰρ ποιοῦσι τοῖς ἐν τῇ ἀστρονομίᾳ τοὺς γὰρ
ἐν ταύταις ταῖς συμφωνίαις ταῖς ἀπονομέναις ἀριθμοὺς
ξητοῦσιν, ἀλλ' οὐκ εἰς προβλήματα ἀνίστην ἐπισκοπεῖν,
τίνες ξύμφωνοι ἀριθμοὶ καὶ τίνες οὖθις, καὶ διὰ τί ἐκά-
τεροι. Δαιμόνιον γὰρ, ἔφη, πρᾶγμα λέγεις. Χρῆσιμον
μὲν οὖν, ἦν δ' ἔγω, πρὸς τὴν τοῦ καλοῦ τε καὶ ἀγα-

E. οὐλάβων Flor. T. οὐλάβων, ut Theo scripsit, Timaeus leguisse
videtur, cuius glossa est p. 161: **κόλλαβοι**. τὰ τῶν χορδῶν ἐπιτό-
νια. **οὐλλόπων** scholiastes agno-
scit et per οὐλλάβων explicat.
In Flor. R. a m. s. **πασσαλίσων**
superscriptum est. Cf. Ruhnke-
nius ad Tim. l. c. ubi Bekkeri
anecdoton Antiatt. pag. 102, 33.
protulit. Post οὐλλόπων Euse-
bius ταῦτα addit, quod Stephanus
p. 25. refert, non probat, ut ait
Valckenarius in epist. ad Erne-
stium p. 167. Tittm. quem con-
ferri iussit Stallbaumius. Idem
Stephanus in referenda Eusebii
lectione τῶν ante οὐλλόπων omit-
tit.

κατηγορίας πέρι] η. περὶ Vind.
E. Hoc quoque artis vocabulum
esse liquet. Aliis item metapho-
ricis isti, quum de plectro et fi-
dium percussione loquebantur, usi
fuerint, quae Socrates breviter
significat verbis πλήκτῳ πληγῶν
γιγνομένων. Ficini interpretabit
huius loci vel ad mutilum librum
facta vel ipsa mutila videtur:
*Sed ne longius haec provehatur
similitudo circa plectri accusatio-
nemque et negationem ac elatio-
nem chordarum, imagini iam huic
finem impono.*

ἀλαζονείας] **ἀλαζονίας** Mon. C.
εἰκόνος] In editionibus ante
Astii sec. maior h. l. interpunctio
est.

οὐ φημι] οὐ φημι Lob. Vind.
E. Mon. BC. cum editis ante

Astii sec. Perperam haec inter-
pretatur Ficinus: *neque his dicen-
dum assero, sed illis etc.* Aliter,
sed item perperam Schleierma-
cherus: *und läugne, dass dicse
Leute etwas von der Sache sagen,
sondern vielmehr jene etc. quasi
λέγειν τι scriptum esset.* Neque
in eo assentiri viro egregio pos-
sum, quod sequens ποιοῦσι cum
Astio et Stallbaumio ad empiricos
a Glaucone introductos referen-
dum putavit, quae opinio eum ad
illam interpretationem videtur ad-
duxisse. Sed quo modo isti, qui
toti ex auribus pendebant, nume-
ros investigare et quod in nume-
ris consistenter neque caussas
eorum scrutarentur, reprehendendi
dici poterant? Quum vero verbo-
rum nostrorum sententia alia esse
nequeat, nisi haec: *non hos, quos
tu memoras, sed illos, quos modo
de harmonia interrogandos dixer-
amus, in mente habebam, quum
inanem a quibusdam in hac disci-
plina item ut in astronomia labo-
rem consumi et nobis a tali eius
tractatione cavendum esse demon-
strabam, sequitur, ut Pythago-
reos eosdem, quos antea reliquis
praetulerat, nunc ab eo repre-
hendi et quamvis empiricis non
comparandos, tamen verae ratio-
nis ne ipsos quidem omnino com-
potes dici statuamus.*

ἔφαμεν] φαμὲν Vind. F. Ang.
B. Flor. R.

δὴ] δὲ Mon. B.

ἐρήσεσθαι] Ita Par. A. Mon.

θοῦ ἔγέτησιν, ἄλλως δὲ μεταδιωκόμενον ἀχρηστον. Εἰκός γ', ἔφη. Οἶμαι δέ γ', ἦν δ' ἐγὼ, καὶ ἡ τούτων πάντων, ὃν διεληλύθαμεν, μέθοδος ἐὰν μὲν ἐπὶ τὴν ἀλλήλων Διοινωνίαν ἀφίκηται καὶ ξυγγένειαν, καὶ ξυλλογισθῆ ταῦτα ἦν ἐστὶν ἀλλήλοις οἰκεῖα, φέρειν τι αὐτῶν εἰς ἀβουλόμεθα τὴν πραγματείαν, καὶ οὐκ ἀνόνητα πονεῖσθαι, εἰ δὲ μὴ, ἀνόνητα. Καὶ ἐγὼ, ἔφη, οὕτω μαντεύομαι· ἄλλὰ πάμπολυ ἔργον λέγεις, ὃ Σώκρατες. Τοῦ προοιμίου, ἦν δ' ἐγὼ, ἥ τίνος λέγεις; ἢ οὐκ ἵσμεν, ὅτι πάντα ταῦτα προοίμια ἐστιν αὐτοῦ τοῦ νόμου, ὃν δεῖ μαθεῖν;

BC. Vind. BF. Vat. B. et a. m.
s. H. Ven. BC. Ang. B. Flor.
ARTUV. εἰρῆσθαι Euseb. αἰσήσεσθαι Vind. E. Flor. C. et, sup.
ξ, Lob. Idem in editis ante Astii sec. exstat, tacentibus de Par. K. Bipontinis. Neque Bekkerus, quid in eo aut in Par. D. et Vat. M. legerit, ostendit.

C ταῖς συμφωνίαις] ταῖς om. Mon. B.
προβλήματα] προβλημάτων Flor. AC.
ἀνιάσιν] ἀνιάσιν Par. K. sec. Bekk. Vind. B. Euseb.
διὰ τί] διατὸς Lob. Vind. E. Ald. Bas. a. διατί Mon. B. Euseb. Bas. b.

γάρ] om. Flor. T. Theo Sm. p. 10: οἱ δὲ ἀγαθοὶ ἀριθμητικοὶ ἔητοῦσιν ἐπισκοποῦντες, τίνες σύμφωνοι ἀριθμοὶ ἀριθμοῖς καὶ τίνες οὖ. καὶ τοῦτο χρήσιμον πρὸς τὴν τοῦ ἀγαθοῦ καὶ καλοῦ (τοῦ καλοῦ cod. Scal.) ἔγέτησιν, ἄλλως δὲ ἀχρηστον. καὶ τούτων πάντων (id omittunt duo Reg.) ἦ μέθοδος ἀν μὲν ἐπὶ τῶν (immo τὴν) ἀλλήλων ἀφίκηται ποινωνίαν καὶ ξυλλογισθῆ, ἦ ἐστὶν ἀλλήλοις οἰκεῖα, (v. οἰκεῖα) φέρει αὐτῶν (αὐτῶ Reg. C.) ἦ πραγματεία ιαρπόν. οἱ δὲ ταῦτα δενοὶ διαλεκτικοί· οὐ γάρ μὴ δύνωνται λαβεῖν τε καὶ ἀποδέξασθαι λόγον· οὐχ οἶόν τε δὲ τοῦτο μὴ δι' ἐκείνων ἐλθόντα τῶν μαθημάτων· ὅδος γάρ ἐστι δι' αὐτῶν ἐπὶ τὴν τῶν ὄντων δέαν ἐν τῷ διαλέγεσθαι. quoruin

priora parum accurate excerpta, posteriora vero Platonis sententiae contraria esse appareat.

ἄλλως δὲ] Pro δὲ Vind. F. Flor. R. τε, Ang. B. τι habet.

γέ] γε Vind. B. Mon. C. δ' Par. K. sec. Bekk.

γέ] γε Lob. Vind. BEF. Mon. C.

ἀφίκηται] ἀφίληται Ald. δ

ξυλλογισθῆ] ἔνλογ. Vind. F. συλλ. Flor. T. Steph. tacentibus Bip.

η̄] ἥ Vind. E. οἶ Μon. C. ἄ Mon. B. Flor. U.

πραγματείαν] πραγματείαν Vind. E.

οὐκ ἀνόνητα] οὐκαν. Vind. F. πονεῖσθαι] ποεῖσθαι Bas. b.

Καὶ] om. Ang. B.

προοιμίον] Alcinous isag. c. 7: ἐστι γάρ ἥ τῶν μαθημάτων ἐπίσκεψις ὡς ἀν προοίμιόν τι πρὸς τὴν τῶν ὄντων θεωρίαν.

ἥ τίνος] ἥ τίνος Bas. b.

πάντα] om. Lob. Vat. BM. Par. K.

προοίμια] προοίμια Mon. B. ἐστιν] ἐστι Ald. Bas. ab.

ὸν] Astius in tert. ἥ scribendum suscipatur, recte dissentientibus Schleiermacher et in sec. Stallbaumio. Cf. Tim. p. 29: D: τὸ μὲν οὖν προοίμιον θαυμασίος ἀπεδεξάμεθά σου, τὸν δὲ δὴ νόμον ήμιν ἐφεξῆς πέραινε. Ita enim secundum codices legendum, non λόγον, quod Stallbaumius ex quibusdam pro νόμον recepit. Accedit Procli auctoritas, qui

Ε οὐ γάρ πον δοκοῦσί γέ σοι οἱ ταῦτα δεινοὶ διαλεκτικοὶ εἶναι. Οὐ μὰ τὸν Δία, ἔφη, εἰ μὴ μάλα γέ τινες ὀλίγοι ὡν ἐγὼ ἐντετύχημα. 'Αλλ' ἥδη, εἶπον, μὴ δυνατοὶ τινες ὄντες δοῦναι τε καὶ ἀποδέξασθαι λόγον εἰσεσθαι ποτέ τι ὡν φαμὲν δεῖν εἰδέναι; Οὐδ' αὖ, ἔφη, τοῦτό γε.

532 Οὐκοῦν, εἶπον, ω Γλαύκων, οὗτος ἥδη αὐτός ἐστιν ὁ

p. 108. verborum significationem demonstrat: ὃ δὲ νόμος εἴληπται ἀπὸ τῶν κιθαρωδικῶν νόμων. οὗτοι μὲν οὖν εἰσὶ μέλη τινὰ πεποιημένα τὰ μὲν Ἀθηναῖς, τὰ δὲ Αρειᾶς, καὶ τὰ μὲν ἐνθεαστικά, τὰ δὲ σκοματικά (f. σωστικά) τῶν ἥθων. πρὸ δῆ, τῶν νόμων τούτων προοίμια προτάττειν εἰώθασιν, ἢ καὶ διὰ τοῦτο προψηλαφήματα ἐπάλουν. — καὶ γάρ τὰ μέλη νόμους ἐπάλουν, ὅτι δὴ ἀνίνητα ἔμενε, καὶ ὅτι διανεμέντο τὰ πρέποντα ἐφ' ἐπάστοις. (v. ἀφ' ἐπάστης.) Conf. Heindorfius ad Crat. §. 73.

οὐ γάρ πον] οὐ γάρ πω Vind. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. ACRTV. οὐ γάρ πον cum ω super ov Ang. B. nondum enim Fic. πω Astius in sec. praetulit, quod ferri poterat, sed explicuit ita, ut ferri non posset: nondum exposuimus tibique persuasimus, in his h. e. in philosophia intelligentes esse dialecticos. In tertia πον restituit et veram interpretationem secutus est.

οἱ ταῦτα δεινοὶ] Ita Par. A. Vind. BEF. Mon. C. Ven. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. οὐ ταῦτα δεινοὶ Vat. BM. οὐ ταῦτα δεινοὶ οἱ Lob. εἰς ταῦτα δεινοὶ Par. DK. οἱ εἰς ταῦτα δεινοὶ Mon. B. et a m. s. Flor. U. ταῦτα δεινοὶ οἱ Ven. B. cum editis ante Bekkerum.

Ε εἶναι.] εἶναι; Ald. Bas. ab. non omnino inepte.

Διεῖ] διεῖ Vind. BEF. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. Hos secutus est Stallbaumius.

εἰ μὴ] εἰμὴ Ald. Bas. a. εἰμὶ Bas. b.

ἐντετύχημα] ἐντετυχήμεν Lob.

Vat. BM. In Ald. Bas. ab. comm. appositum.

'Αλλ' ἥδη] ἀλλὰ ἥδη Vind. BE. Mon. C. ἀλλὰ δὴ Vind. F. Ang. B. Flor. AR. ἀλλ' οἵει Mon. B. Flor. U. At enim Fic. 'Αλλὰ δὴ Astius in sec. e conjectura positum in tertia tenuit eumque secutus est Stallbaumius. Sed supplendum est ἔδοξαν, quod ipsum Glauconis verbis magis accommodatum est, quam δοκοῦσι.

μὴ] εἰ μὴ Vind. E. Ang. B. Vat. H. οἱ μὴ Par. A. Vind. B. Mon. C.

δυνατοί] δυνασταί Mon. B. τινες ὄντες] ὄντες om. Flor. T. et editi ante Bekkerum, tacentibus Bipontinis. Astius in sec. cum Mon. C. τινες omittendum et οἱ ante μὴ recipiendum statuit et in tertia οἱ μὴ δυνατοὶ ὄντες scripsit. Sed in Mon. C. ut in reliquis omnibus τινες ὄντες legitur. Articulus autem etsi consistere quodam modo cum τινες possit, ut ii, qui non sint aliqui ex numero valentium, οἱ μὴ δυνατοὶ τινες ὄντες eadem ratione dicantur, qua illa, quae Vol. I. p. 310, a. commemoravi, tamen insolentius positus videtur, quam qui paucorum librorum testimonio recipi debeat.

εἰσεσθαι] εἰσεσθε Flor. RTU. In Vind. F. incertum est — prius scriptum fuerit, an —ε, sed illud magis clarum.

δεῖν] om. Ven. B. a m. pr.

εἰδέναι;] εἰδέναι. Stallb. sec.

ὅν τὸ διαλέγεσθαι περαίνει] 532 Ita Vind. F. Mon. B. Ang. B. Flor. ACRTUV. ὅν τὸ διελέσθαι περαίνει Mon. C. (contra Crat. p. 425. B. διελέσθαι quidam in διαλέγεσθαι corrupere.) ὅν τὸ

νόμος, ὃν τὸ διαλέγεσθαι περαιώνει; ὃν καὶ ὅντα νοητὸν μιμοῖτ̄ ἀνὴ τῆς ὄψεως δύναμις, ἦν ἐλέγομεν πρὸς αὐτὲς ἥδη τὰ ξῶα ἐπιχειρεῖν ἀποβλέπειν καὶ πρὸς αὐτὰς ἀστρα τε καὶ τελευταῖον δὴ πρὸς αὐτὸν τὸν ἥλιον; οὕτω καὶ ὅταν τις τῷ διαλέγεσθαι ἐπιχειρῇ ἀνεν πασῶν τῶν αἰσθήσεων διὰ τοῦ λόγου ἐπ’ αὐτὸν ὃ ἔστιν ἔκαστον ὁρμᾶν,

διαλέγεσθαι πάροινεῖ reliqui codices et Astius in sec. ὃ τὸ διαλέγεσθαι περαιώνων editiones ante Astii sec. quae (lex) per disserendi artem ostenditur Fic. Quum νόμος h. l. duplē significationem habeat, unam ex superioribus retentam, qua prooemio oppositam modorum compagēm seu compositionem ipsam denotat, alteram vulgari propiorem legitimae agendi rationis, quam inferiora sequuntur, verbum περαινεῖν ita ad priorem accommodatum est, ut simul posteriori conveniat: *an* igitur *hic*, qui reddenda accipiēndaque ratione continetur, *modus* ipse est, qui excipere prooemium debet, *is scilicet*, quem dialectica persequitur? Itaque nec vulgariter olim lectionem, neque eam, quae in optimis libris est, ferri posse, et περαινεῖν unice verum esse appareat. Pro signo interrogandi Ald. Bas. ab. punctum, Steph. colon, Astius in pr. et sec. comma habet, quorum propter particulam οὐκοῦν et maiorem ante ὃν καὶ faciendam pausam nihil non deterius videtur.

μιμοῖτ̄] παραὶ τὸ Vind. B. παραποῖτ̄ cum duobus punctis (:) super priori τὸ Mon. C.

ἢν] ἢν Bas. a.

τὰ ξῶα] om. Mon. C. (τὰ ξῶα Ald. Bas. ab.)

τὸν ἥλιον] τὸν om. Mon. C. Post ἥλιον Stephanus et recentiores puncto vel colo usi sunt: mihi nexus his cum proximis intercedens, similis illi, qui L. VI. p. 506. C. et alibi per relativum efficitur, tum optativus μιμοῖτ̄ ἀντὶ haec quoque cum interrogatione pronuntiata esse persuasit, cuius proinde etiam in fine ver-

borum Socratis post ὁρατοῦ, ubi omnes editiones punctum habent, signum ponendum fuit.

τῷ διαλέγεσθαι ἐπιχειρῇ] ὃ διαλέγεσθαι ἐπιχειρεῖ Flor. U. quae lectio ad sequentia verborum difficultatem explicandam non prorsus inepta, ceterum nullius pretiis est. Etiam Par. K. sec. Bip. ὃ pro τῷ habet.

πασῶν] om. Fic.

αὐτῷ] αὐτῷ Vind. F.

ὅτιν] ὅτιν editi ante Bekkerum cum Lob. Mon. B. Vind. B.E. et ante corr. F.

ἔκαστον] om. Vind. B.E. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV.

ὁρμᾶν] Sic Astius in sec. et tert. e conjectura scripsit, quem ego Clementis Alex. accidente auctoritate sequendum existimavi. Ita enim ille Strom. L. V. p. 690: δηνατὸν δὲ καὶ τῷ διαλέγεσθαι τὸ καταμαντεύεσθαι τοῦ θεοῦ, ἐὰν ἐπιχειρῇ τις ἀνεν πασῶν τῶν αἰσθήσεων διὰ τοῦ λόγου ἐπ’ αὐτὸν ὃ ἔστιν ἔκαστον ὁρμᾶν καὶ μὴ ἀποστατεῖν τῶν ὄντων, πρὸν ἐπαναβαίνων ἐπὶ τὰ ὑπερονείμενα αὐτῷ ὃ ἔστιν ἀγαθὸν αὐτῇ νοήσει λάβῃ ἐπ’ αὐτῷ γινόμενος τῷ τοῦ νοητοῦ τέλει κατὰ Πλάτωνα. Scilicet ὁρμᾶ, quae nostrorum codicum et reliquarum editionum lectio est, si deinde, ut codices iubent, καὶ μὴ ἀποστῇ teneri volumus, pro conjunctivo habere et commate post ἐπιχειρῇ posito (quod Astius in sec. recte děletum in tert. nescio qua ratione restituit) ad explicandum hoc una cum μὴ ἀποστῇ additum statuere cogimur: si quis dialecticae studet, hoc est, remotis sensibus omnibus ratione ad ipsum quod est unumquodque contendit et non

B *καὶ μὴ ἀποστῆ*, ποὶν ἀν αὐτὸ δὲ ἔστιν ἀγαθὸν αὐτῇ νοήσει λάβῃ, ἐπ' αὐτῷ γίγνεται τῷ τοῦ νοητοῦ τέλει, ὥσπερ ἐκεῖνος τότε ἐπὶ τῷ τοῦ δρατοῦ; Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Τί οὖν; οὐδὲ διαλεκτικὴν ταύτην τὴν πορείαν παλεῖς; Τί μήν; Ἡ δέ γε, ἦν δ' ἐγὼ, λύσις

desistit etc. Quam viam a Bekkerio et Stallbaumio in pr. tentatam valde impeditam reddit copulae post ἐπιχειρῆ defectus et quod commate illo in loco positio fieri vix potest, quin ὁμοῦ indicativus et in apodosi esse videatur. Itaque inter καὶ et μὴ ἀποστῆ aliquid inserendum erit, quod coniunctivum regat alteramque protasis efficiat cum verbo γίγνεται sic, ut priora illa ὅταν τις τῷ διαλέγεσθαι ἐπιχειρῇ cum ὁμοῦ cohaerentem. Ac Stephanus quidem ἐὰν inseruit, Ficini, ut opinor, interpretationem secutus: *haud secus cum quis ad dialecticam artem disserendi se confert absque sensibus, ratione duntaxat ad ipsum, quod est, quodlibet ntititur: qui si non destiterit prius, quam ipsum, quod est bonum, intelligentia ipsa perceperit, tunc demum ad finem intelligibilis ipsius ita pervenit, ut ille alter ad visibilis finem ascendit.* cui codices non, ut alibi, assensum praebuerunt. Minus etiam probari potest εἰ, quod Ang. B. habet. Superest δὲ, quod ex Vind. B. allatum Schleiermacherus et in sec. Stallbaumius asciverunt, quod etiam Mon. C. exhibet. Id ferri posse non nego, quamquam fateor neque in protasi illa distinctionem ἐπιχειρεῖν τῷ διαλέγεσθαι post paulo ante positam ἐπιχειρεῖν ἀποβλέπειν, neque apodosin ipsam magnopere mihi placere, quum Socrates effectum potius, quam conatum dialecticae describere ideoque rectius apodosin illi reservare, hunc in protasi deinceps significare, denique, si ipse h. l. eum, qui dialecticae studeat, ratione ad id, quod est, contendere docuit, minus apte interrogandi

gationem illam τί οὖν; οὐδὲ διαλεκτικὴν ταύτην τὴν πορείαν παλεῖς; subiicere videatur; sed ante omnia codices respiciendos censem, in quibus ὁμοῦ haud dubie facilius in ὁμοῦ mutari, quam δὲ omitti potuit. Per se vero ὁμοῦ optimum esse quis neget? τῷ διαλέγεσθαι ut Latinorum gerundii ablativus *actionem*, διὰ τοῦ λόγου *rem*, qua id, quod est, consequi aliquis studet, demonstrat. Nec frustra hic non simpliciter ὁμοῦ ἐπ' αὐτὸ δὲ ἔστιν ἐπαστον, sed quia res magni molimini est, ἐπιχειρεῖν ὁμοῦ item, ut ille ἐπιχειρεῖν ἀποβλέπειν dicitur.

οὐδὲ ἔστιν codices mei editique ante Bekkerum.

αὐτῇ] αὐτῇ Ald. Bas. a. Par. B. K. sec. Bekk. αὐτῇ τῇ Bas. b. Vind. E. Ven. B. et articulo a m. s. in m. posito Mon. B.

λάβῃ] λάβοι Lob. Ven. B. In editionibus omnibus una Bekkeri excepta post λάβῃ leguntur verba τότε δὴ, quae quum tantum Vind. EF. Ven. B. Ang. B. Flor. CRT. et Ficini auctoritate nitantur, neque tam tunc demum, non prius, quam omnino perveniri illuc ea, qua dictum fuerat, via Socratis interessē videatur ostendere, ad haec τότε paullo post alia significatione positum sit, merito Bekkerus omisit.

αὐτῷ] αὐτὸ Lob. Vat. B. αὐτοῦ Mon. B.

γίγνεται] γίν. Vind. E.

ἐκεῖνος] ἐκεῖνη idem. Scilicet δὲ τῆς ὄψεως δύναμις.

τῷ τοῦ] τῷ om. Lob. Vind. BE. Mon. C. Vat. BHM. Ven. B. Flor. ACRTV. τοῦ om. Par. A. a m. pr.

Τί οὖν;] Signum interrogandi

τε ἀπὸ τῶν δεσμῶν καὶ μεταστροφὴ ἀπὸ τῶν σκιῶν ἐπὶ τὰ εἴδωλα καὶ τὸ φῶς καὶ ἐκ τοῦ καταγείου εἰς τὸν ἥλιον ἐπάνοδος καὶ ἐκεῖ πρὸς μὲν τὰ ξῶά τε καὶ φυτὰ καὶ τὸ τοῦ ἥλιον φῶς ἐπ’ ἀδυναμίᾳ

in Mon. B. Vind. E. editionibusque ante Astii sec. male omis-
sum et sine distinctione τί οὖν
οὐ etc. scriptum est. Pro οὖν
Ven. B. δὲ habet.

ταύτην] om. Mon. C.

‘H] ‘H Ald. ‘H Bas. a. ἦ Vind.
E. Bas. b.

γε] γ' Bas. b.

μεταστροφὴ] μεταστροφὴ Bas. a.

ἐπάνοδος] Ald. Bas. ab. punctum, Stephanus colon, recentiores coiama addunt.

ἐπ’ ἀδυναμίᾳ] Praepositionem Vind. F. Ang. B. Flor. R. omit-tunt, et Ven. B. pro ea ἔστιν habet. Pro ἀδυναμίᾳ in Ang. B. ἀδυναμίαν, in Ven. B. a m. pr. ὀνναμία scriptum est. ἐπ’ ἀδυ-
ναμίᾳ βλέπειν is dici posse vi-
detur, cuius visio seu videndi actio cum imbecillitate coniuncta et robore destituta infirmo quasi fundamento nititur et effectu ca-
ret. Certe non multo aliter prae-
positione usus est Euripides Tro-
ad. 329. Seidl. ἐπὶ δάκρυσι καὶ γόοισι τὸν θανόντα πατέρα πα-
τρίδα τε φίλαν καταστένοντες ζῆσις et Phoen. 1571. Pors. οὐκ ἐπ’ ὄνειδεσιν οὐδὲ ἐπιχάρμασιν,
ἀλλ’ ὁδύναισι λέγω. quos locos Erfurdtius ad Soph. Ant. 755. adhibens verba, quae ibi legun-
tur, Creontis ἀλλ’ οὐ, τόνδ’ Ο-
λυμπον, ἵσθ’ ὅτι χαίρων ἐπὶ ψό-
γοισι δεννάσεις ἐμέ eodem modo intellexisse videtur, quo Bern-
hardy, qui ea synt. p. 250. una cum his nostris inter exempla praepositionis ἐπὶ cum dativo coniunctionem significantis retulit. Similis huic est alter Sophoclis locus El. 108: ἐπὶ πονητῷ τῶν-
δε πατρώων πρὸς θυρῶν ήχῳ πᾶσι προφενεῖν, quo Erfurdtius item ήχῳ ἐπὶ πονητῷ per ηχῷ θρηνητικὴν interpretatur. Verum Sophocles magis proprie et suo

more locutus fuerit, si dictionibus ἐπὶ ψόγοισι et ἐπὶ πονητῷ re-
prehendendi causa et luctus provocandi caussa significaverit, quemadmodum Hermannus statuit. Neque Platonicae consuetudini aliud convenientius, quam dictio-
ne ἐπ’ ἀδυναμίᾳ propter imbecil-
litatem significatum statuere. Ita-
que Stephanus in marg. μὴ ante βλέπειν excidisse coniiciebat et annot. p. 25. Non dubium est, inquit, quin depravatus sit hic locus: quem etiam in iis quae margini adscripsi, aliqua ex parte restituere conatus sum. Postea autem hanc eius expositionem in-
veni, Et illic quidem visus ad animalia, et plantas, et solis lu-
men: in videndi vero debilitate ad spectra in aquis: eique expo-
sitioni subiunctam hanc lectionem, καὶ ἐπεὶ μὲν ὅψις πρὸς τὰ ξῶά τε καὶ φυτὰ, καὶ τὸ τοῦ ἥλιον φῶς. ἐπ’ ἀδυναμίᾳ δὲ τὸν βλέ-
πειν, πρὸς τὰ ἐν ὑδασι φαντά-
σματα. Ego autem, legens μὴ βλέπειν, iungebam cum praecedentibus, πρὸς μὲν τὰ ξῶά τε καὶ φυτὰ καὶ τὸ τοῦ ἥλιον φῶς, tanquam ἐν ἀδυναμίᾳ seorsum positum esset.“ Eadem, qua Stephanus et Cornarius (nam Cornarii est expositio illa et lectio, quam postea invenisse Stephanus ait) de praepositionis vi opinione ductus Morgensternius symb. 1815. p. 14. sqq. commate ante τὸ τοῦ ἥλιον φῶς posito haec ipsa verba non a praecedente πρὸς, sed a sequentibus ἐπ’ ἀδυναμίᾳ βλέ-
πειν regi autumat et alia quae-
dam parum probabilia proponit, quae omnia probavit Astius in-
tert. Platonem sic scripsisse coniiciens: καὶ ἐπεὶ μὲν πρὸς τὰ ξῶά τε καὶ φυτὰ καὶ, τὸ τοῦ ἥλιον φῶς ἐπ’ ἀδυναμίᾳ βλέπειν, πρὸς τὰ ἐν ὑδασι φαντάσματα, ἐν-

С βλέπειν, πρὸς δὲ τὰ ἐν ὑδασὶ φαντάσματα θεῖα καὶ σημᾶς

ταῦθα δὲ etc. nec improbasse Stallbaumius in sec. videtur. Ego, quum Stephani conjecturae codices omnes refragentur, si plures praepositionem omitterent, aut inserendae potius, quam omittendae causa libriis fuisse videtur, cum Vind. F. Flor. R. ἀδνυαίᾳ scribendum idque cum infinitivo βλέπειν sic ut δύναμις cum ἀκεῖσθαι L. II. p. 364. B. C. ὄντος cum ἀπτεσθαι, λέγειν, εἰπεῖν V. 450. D. 473. E. VI. 503. B. constructum statuerem: nunc vulgatam retinendam et secundum Euripidem eo, quo supra ostendi, modo interpretandam, ad sequentia πρὸς δὲ τὰ ἐν ὑδασὶ φαντάσματα autem contrarium illius cum imbecillitate coniunctae visionis supplendum existimo, quam rationem Schleiermacherus quoque secutus est. Transitus a substantivo ad infinitivum, η ἐπάνοδος καὶ βλέπειν, nullam offenditionem habet. Sic infra p. 535. B: δημότητα δεῖ αὐτοῖς πρὸς τὰ μαθήματα ὑπέροχεν καὶ μὴ καλεπώς μενθάνειν.

βλέπειν,] βλέπειν: Vind. E. βλέπειν. Ald. Bas. ab.

C φαντάσματα θεῖα] His vulgo quatuor verba ἐνταῦθα δὲ πρὸς φαντάσματα interposita leguntur, quibus receptis descriptioni vindictorum et solutionis eorum immiscetur aliquid ex disciplinis mathematicis petitum; ἐνταῦθα enim ad regionem intelligibilium referendum est, quam ipsam Socrati etiam quum ἔκει diceret obversata statuunt, quasi e specu ad solem productos utramque regionem simul ingressos cogitasset; et verba πᾶσα αὐτῇ η πράγματα, quibus tamen recentiores apōsiopsis vel anacoluthi signum praefigunt, cum initio η δε γε λύοις etc. grammatico cohaerent, et solutio illa et conversio et ad solem ascensio et imaginum visio pariter ac mathesis hanc vim habere dicitur, ut rationem ad boni ideam conspiciendam evēhat, quod

et per se ineptum et sequentibus illis ὕσπερ τότε τοῦ σωφρεστάτου etc. contrarium est. Tum non apparet, qua ratione theorematata mathematica φαντάσματα θεῖα dicantur, multo minus qua εἰδώλων σημᾶς esse negentur. Imaginum umbris isti intenti fuerant in specu vinci: at regionem ingressi intelligibilem quibus et ipsi umbris idearum initio operant, eas si cum aliis umbris longius a veritate remotis comparare vellet Socrates, non cum illis comparare debebat, quas in specu contemplati essent, sed cum iis, quas soluti in regione visibili oculis luci nondum assuefactis inspicerent, quippe quae eundem in hac regione, quem theorematata mathematica in altera locum tenerent. Itaque huius saltem incommodi vitandi causa εἰδώλων aliter sane, quam paullo ante, corpora ipsa interpretari et commate post εἰδώλον σημᾶς, quod Stephanus posuit, servato participium ἀποσημαζούντας ad σημᾶς τῶν ὄντων referre et ἔτερον τοιοῦτον φῶς verum lumen seu ideam boni, quae cum sole comparata reapse verum lumen sit, dictum statuere debebant ii, quibus additamentum istud genuinum videretur. Verum res salva est. Codices omnes uno Ven. B. excepto, cuius hic quoque Aldus vestigia pressit, verba ἐνταῦθα δὲ πρὸς φαντάσματα omittunt. Quae si ad sensum necessaria aut utilia aut denique non omnino inepta essent, ob homoēoteleuton a ceteris neglecta in uno libro isto quemadmodum alia fideliter servata videri possent; quin vero iis electis omnia plana et expedita fiant, quis non glossema ex male intellecto adverbio ἔκει vel undelibet oriundum et de industria homoēoteleuton factum agnoscat? Scilicet τὰ ἐν ὑδασὶ φαντάσματα θεῖα solis dei (v. L. VI. p. 508. A.) imagines in aquis conspicuae sunt, quae eodem nomine supra

τῶν ὄντων, ἀλλ' οὐκ εἰδώλων σκιάς δι' ἐτέρου τοιούτου

p. 516. B. ἐν ὕδασι φαντάσματα αὐτοῦ dicuntur, quas, quia ipsius lumen ferre nondum queunt, soluti primum inspicere debent. His accedunt σκιαὶ τῶν ὄντων, umbrae rerum naturalium, quae res licet proprie ὄντα non sint, tamen cum rerum simulacris in specu apparentibus comparatae ὄντα dici possunt utpote μᾶλλον ὄντα, (515.D.) quarum propterea umbrae recte εἰδώλων σκιαὶ esse negantur, quales in specu per aliud lumen et ipsum εἰδώλον, non verum, si cum sole comparatur, h. e. per ignem illum superne accensum efficiebantur. Itaque Socrates, postquam methodi seu legis dialecticae effectum et finem demonstravit similem illum ei, quem legitima visus exercitatio habeat, disciplinarum mathematicarum, de quibus adhuc disputaverant, utilitatem ac vim, qua sint ad illum effectum praeparandum instructae, declaraturus atque ita dialecticae ipsius natūram illustraturus primum mentionem facit medicinae, quam vincit in specu adhibendam initio huius libri dixerat, similemque ei disciplinarum illarum vim statuens solutio vinculorum, inquit, et reliqua istis facienda huic artium studio respondent, quod quidem rationem eodem modo ad ideam boni, quo illa oculum ad solis conspectum, evocere contendit. Longiore autem eorum, quae vincit fieri dixerat, repetitione usus ab instituto orationis cursu deflexit et verbum, quod ad nominativos λύσις, μεταστροφή etc. pertineret, quale foret δύναται (ταῦτὸν τῇ τῶν τεχνῶν πραγματείᾳ) vel μιμεῖται (τὴν πραγματείαν), omittens πᾶσα αὕτη etc. dicit, ut si initio ἡν δέ γε ἡ λύσις etc. δύναμιν ἔχει vel simile quid dixisset. Cuius anacoluthi seu nominativi absoluti exempla Vol. I. p. 377. ostendi. Neque vero postpositum sine articulo adiectivum θεῖα post τὰ ἐν ὕδασι

φαντάσματα offendit esse debet, quum non indolem aut conditionem imaginum, sed originem significet ideoque non multo artius cum substantivo cohaereat, quam gentilia aut pronomina possessiva, quae simil modo interdum postposita reperiuntur, ut Phaedonis initio τῶν πολιτῶν Φλιασίων, (von unsfern Landsleuten aus Phlius) quod codices et lexicon Bekkeri anecd. p. 352, 25. et aliquot Pausaniae in huiusmodi rebus auctoritate non facile substituti dictiones (cf. Siebelis ad L. I. c. XXV. §. 6.) satis tuentur, Soph. Ai. 570. ὁ λυμεὼν ἔμος, Eurip. Hippol. 683. ὁ γεννήτωρ ἔμος, Theocr. Id. XXVII. 53. τῷ μπέχοντος ἔμον, quae omnia contra libros corrigere non ausim. Accedit quod verba ἐν ὕδασι inter τὰ et φαντάσματα epitheti loco posita alterum epitheton ut laxius necti substantivo et praedictati instar extrinsecus adiici possit faciunt. Sic Thucyd. VI. 31: εἰ γάρ τις ἐλογίσατο τὴν τε τῆς πόλεως ἀνάλογων δημοσίων καὶ τῶν στρατευομένων τὴν Ἡδίαν. Aristot. Eth. Nic. VI. 11, 1: ή δὲ πολονυμένη γνώμη — ή τοῦ ἐπιεικοῦς ἐστὶ ποίησις ὁρθή. quos locos significavit Bernhardy synt. p. 323. Omnino Platōnem quoque adiectivum nonnunquam contra consuetudinem posuisse praeter Phaedonis locum illa Leg. L. III. p. 713. D. docent: ταῦτὸν δὴ καὶ ὁ Θεὸς ἄρα καὶ φιλάνθρωπος ὥν τὸ γένος ἀμεινὸν ημῶν ἐφίστη τὸ τῶν δαιμόνων. Itaque nec τὰ post φαντάσματα, quamvis facile excidere potuerit, inserendum nec θεῖα in θέα mutandum putō, quod Astius in sec. post alterum φαντάσματα, quum de glossemate nihil suspicans et ἐνεὶ antrum, ἐνταῦθα locum sub divo significare posse opinans de verbo tantum, quo alterum πρὸς pertineret, sollicitus esset, pro θεῖα in contextu positum in addendis βλέπειν e superioribus

φωτὸς ὡς πρὸς ἥλιον κρίνειν ἀποσημαζομένας, πᾶσα αὕτη ἡ πραγματεία τῶν τεχνῶν, ἃς διήλθομεν, ταύτην ἔχει τὴν δύναμιν καὶ ἐπαναγωγὴν τοῦ βελτίστου ἐν ψυχῇ πρὸς τὴν τοῦ ἀρίστου ἐν τοῖς οὖσι θέαν, ὥσπερ τότε τοῦ σαφεστάτου ἐν σώματι πρὸς τὴν τοῦ φανοτάτου ἐν τῷ

D σώματοειδεῖ τε καὶ ὁρατῷ τόπῳ. Ἐγὼ μὲν, ἔφη, ἀποδέχομαι οὗτο. καίτοι παντάπασι γέ μοι δοκεῖ χαλεπὰ μὲν ἀποδέχεσθαι εἶναι, ἄλλον δ' αὖ τρόπον χαλεπὰ μὴ ἀποδέχεσθαι. ὅμως δὲ (οὐ γὰρ ἐν τῷ νῦν παρόντι μόνον ἀκουστέα, ἄλλα καὶ αὐθις πολλάκις ἐπανιτέον) ταῦτα θέντες ἔχειν ὡς νῦν λέγεται, ἐπ' αὐτὸν δὴ τὸν νόμον

repeti debere sentiens retractavit.

σκιᾶς] σκιᾶς Vind. F. item paullo post.

δι’ ἑτέρου] διετ. Vind. E.

ἀποσημαζομένας,] ἀποσημαζομένας. Bas. ab. Steph.

ἄς] ἦν Lob. Vat. M.

ἔχει] ἔχῃ Mon. B.

ἐπαναγωγὴν] ἐπαγωγὴν Ven. B. ἐπ’ ἀναγωγὴν Ald. Bas. ab.

βελτίστου ἐν ψυχῇ πρὸς τὴν τοῦ] om. Ang. B. — ἐν τῇ ψ. — Mon. C.

θέαν]. θεοῖς cum αὐτοῖς super oīs Vat. B.

ώσπερ] ὡπερ Steph.

τότε] τό, τε Vind. E.

ἐν — φανοτάτον] om. Vat. B.

σώματι] σώμασι Vind. EF. Mon. C. Flor. ACTV. σώμασιν Vind. B. Ang. B. Vat. H.

φανοτάτον] Ita. Par. ADK. sec. Bekk. Lob. Vind. BEF. Mon. B. Ven. BC. Vat. HM. Ald. Bas. ab. φανοτάτον Mon. C. (Florentini, Ang. B.) Steph. Ast. pr. sec.

τῷ] om. Vind. B. Mon. C. Ald. Bas. a. Steph.

σωματοειδεῖ] σωματοειδῆ Vind. E.

D τε] om. Bas. ab. Ficinus hanc Socratis ἔξιν ita interpretatus est: *Atqui quemadmodum solutio illa a vinculis, conversioque ab umbris ad simulacra ac lumen, et*

ex antro ad solis lumen exitus, ibique animalium et plantarum inspectio solisque, et sidereum in aqua propter imbecillitatem oculorum intuitus, ipsum, quod in corporibus est clarissimum, ad id convertunt, quod est in corporali et visibili regione omnium fulgentissimum: ita omnium supra dictarum artium studium deducit animum per umbras non simulatorum, sed eorum potius, quae vere sunt: iudicareque eas efficit apparentes ad aliud quoddam lumen, tanquam ad solem; habetque vim quandam extollendi id, quod est in animo praestantissimum, ad contemplationem eius, quod in ordine rerum est optimum.

εἶναι — ἀποδέχεσθαι] bis deinceps posuit Vind. F.

πολλάκις] om. Vat. M.

θέντες], θέντας (ut videtur) Ven. B. Idem habet Ald. Bas. ab.

νῦν] νῦν δὴ Par. K. secundum Beckerum.

διέλθωμεν] ἐλθωμεν Par. ADK. sec. Bip. Vind. BE. Mon. C. Ven. C. Vat. H. Cf. Vol. I. p. 356, a.

οὖτως] om. Vind. F. Flor. R.

δὴ] om. Lob. Vat. BM. post E εἰδη Vind. F. Ang. B.

εἰδη] ἡδη Vat. H.

αὖ] αἱ Lob. Vat. M. om. Fic: (et quae viae sint.)

ἄν] om. Vat. H.

ἴωμεν καὶ διέλθωμεν οὗτως, ὡσπερ τὸ προοίμιον διήλθομεν. λέγε οὖν, τίς ὁ τρόπος τῆς τοῦ διαλέγεσθαι δυνάμεως, καὶ κατὰ ποῖα δὴ εἶδη διέστηκε, καὶ τίνες αὖτε δόδοι. αὗται γὰρ ἀνήδη, ὡς ἔοικεν, αἱ πρὸς αὐτὸν ἄγουσαι εἰεν, οἱ ἀφικομένων ὡσπερ δόδοι ἀνάπαντα ἀνελήπται· εἰ δὲ διάντας, ηὔτε μὴ, οὐκέτι ἄξιον τοῦτο διασχυρίζεσθαι. ἀλλ’ οὗτοι δὴ τοιοῦτοι τι ιδεῖν, ισχυριστέον.

αὐτὸν] *αὐτὸν* Vind. BE. Mon. C. Vat. H.

οἱ] *οἱ* Vind. F. *οὐ* Ang. B. Flor. R.

προσείας] *προσίας* Vind. E.

Οὐκέτι] *οὐκέτι* Mon. C. *οὐκέτι* Vind. F.

οὗτος τε] *οὗτος τε* Vind. F.

533 *ἔσῃ*] *ἔσῃ* Vind. F. Ang. B. Flor. AR. *ἔσει* recentiores.

ἔπει] *ἔπι* Vind. E. *projecto* Fic.

ἀπολίποι] Ita Vat. BM. Ang. B. Flor. R. et a m. pr. Par. A. Ven. C. quod ob sequens *ἴδοις* merito a Bekkero praelatum Astius in tert. et Stallbaumius in pr. recepit. *ἀπολείποι* reliqui libri excepto Mon. C. in quo *ἔλλειποι* legitur, cum editis ante Bekkerum et Stallbaumio in sec. Etiam Mathiae gramm. pag. 865. haec verba propter τὸ *ἔμὸν* laudans praesens tenuit.

οὐδὲ] *οὐδὲ* Vind. F. Flor. R. *ἄντεν*] post *ἔτι* iidem.

ἴδοις] *εἴδοις* Mon. C. *ηδεις* Vat. B. a m. pr. et, sup. i et *οἱ*, Lob. In Ven. C. *η* et *εἰ* super *i* et *οἱ* posita sunt.

τὸ] om. Flor. T.

δῆ] om. Par. K. sec. Bekk. *δὴ* *ὡς* *μὲν* *ἔστιν* *οὐ* *ἔμοι* Mon. B.

μοι] Ita secundum Par. A. Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV. pro vulgato *ἔμοι* scripsi, quia nihil opus est,

ut sonus verbi φαίνεται cum pronomine communicetur.

εἰ δὲ διάντας] *ἰδόντος* Ven. C. a m. pr. *ἰδόντι* Mon. B. Par. DK. Ald. Bas. a. et cum *οἱ* super *τι* Lob. Vat. M. *εἰ* *ἰδόντι* Flor. U. secundum Stallbaumium, qui idem in Par. K. Ald. Bas. a. legi tradidit. „In praeced. edit. male *ἰδόντι* pro *εἰ δὲ διάντας*, ut habet vet. lib. Alioqui legi etiam possset *εἰ δὲ τῷ διάντας*.“ Steph. in m. *οὐκέτι*] *οὐκέτι* Vind. E. Mon. BC.

μὲν δὴ τοιοῦτον] *δεῖ μὲν τοιοῦτον* Vind. B. Mon. C.

τι] om. Vat. B. Ven. B. *τις* Ald. Bas. ab.

ἰδεῖν] Hoc vulgo omissum e Par. A. Vind. BEF. Mon. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. et recenti Ven. C. scriptura recipere eo minus dubitavi, quo magis ad summae ideae descriptionem in superiori libro exhibitam appositum est. Lectum idem Ficino, sed simul *δεῖ* pro *δῆ*: *quod tale aliquid est cognoscendum*.

ισχυριστέον] „Rectius fortasse δισχυριστέον scribetur, ut mox dicet δισχυρίζεσθαι.“ Stephan. p. 25. Magis etiam ob antecedens δισχυρίζεσθαι probabile id videri poterat. Sic Phaedon. p. 63. C: *καὶ τοῦτο μὲν οὐκ ἀν πάνν δισχυριστέον*: *οὗτοι μέντοι παρὰ θεούς δεσπότας πάνν ἀγαθούς*

ἡ γάρ; Τί μήν; Ούκοῦν καὶ ὅτι ἡ τοῦ διαλέγεσθαι δύναμις μόνη ἀν φήνειεν ἐμπείρῳ ὅντι ὡν νῦν δὴ διήλ- 488 θομεν, ἄλλη δὲ οὐδαμῆ δυνατόν; Καὶ τοῦτ', ἔφη, ἄξιον δισχυρίζεσθαι. Τόδε γοῦν, ἦν δ' ἐγώ, οὐδεὶς ἡμῖν B ἀμφισβητήσει λέγοντιν, ως αὐτοῦ γε ἐκάστου πέρι ὃ ἔστιν ἐκαστον οὐκ ἄλλη τις ἐπιχειρεῖ μέθοδος ὁδῷ περὶ παντὸς λαμβάνειν, ἄλλ' αἱ μὲν ἄλλαι πᾶσαι τέχναι ἡ πρὸς δόξας ἀνθρώπων καὶ ἐπιθυμίας εἰσὶν, ἥ πρὸς γενέσεις τε καὶ συνθέσεις, ἥ πρὸς θεραπείαν τῶν φυομένων τε καὶ συντιθεμένων ἀπασαι τετράφαται· αἱ δὲ

ἥξειν, εν ἴστε, ὅτι εἰπερ τι ἄλλο τῶν τοιούτων, δισχυρισάμην ἀν καὶ τοῦτο. Ac simplicis alia significatio est Gorg. p. 489. C: τῷ σώματι ἰσχυρίσασθαι. Sed eadem, quae compositi, ib. p. 495. B: σὺ δὲ τῷ ὅντι, ὡς Καλλίνεις, ταῦτα ἰσχυρίζῃ; ubi codices non magis, quam hic, dissentunt. Cf. Thucyd. L. VI. c. 55: ὅτι δὲ πρεσβύτατος ὡν Ἰππίας ἡρέεν, εἰδὼς μὲν καὶ ἀποῆ ἀποβέστερον ἄλλων ἰσχυρίζομαι.

ἥ] ἥ Vind. F. Ald. Bas. ab.

Steph.

φήνειεν] φήσειεν Lob. Vat. M. φήνειεν ἐν Flor. T. (φήνειεν editiones ante Astii sec.)

νῦν δὴ] δὴ om. Lob. Mon. B. Vat. BM. Par. DK. Ven. C. Flor. U. et editiones ante Astii sec.

ἄλλη] ἄλλη Lob. Ald. Bas. ab.

οὐδαμῆ] οὐδαμῆ Vind. F. οὐδαμῆ Steph. Ast. pr. sec.

δυνατόν; Καὶ] δυνατόν, καὶ editi ante Astii sec. et codices mei excepto Vind. E. qui duo puncta interponit. Etiam Ficinus recte distinxit.

δισχυρίζεσθαι] δισχυρίζομαι, εσθ in m. a m. s., Mon. B. (δισχυροίζεσθαι; Ast. pr.)

γοῦν] γ' οὖν Vind. F.

ἡμῖν] ἀν ἡμῖν Vind. E.

B ἀμφισβητήσει] ἀμφισβητήσαι Vind. E. ἀμφισβητείσεις Par. K. sec. Bekk.

πέρι] περὶ Vind. BE.

ὅ ἔστιν] δ ἔστιν Vind. B. δ ἔστιν Bekkerus, Astius in tert. et Stallbaumius, ut supra p. 532. A. Sed h. l. post αὐτοῦ, i. e. ὅντως ὅντος, ἐκάστου repetitum ἐκαστον et sequens λαμβάνειν pronomen δ̄ praedicatum et verbum ἔστιν nihil nisi copulam esse arguunt: quod unumquodque sit. Quare commata ante δ̄ et post ἐκαστον delevi.

οὐν] ὁμ. codices omnes uno Par. A. excepto et editi ante Stephanum, nec non omitti posset, si ως a verbo ἀμφισβητήσει penderet, de quo cf. Heindorius ad Theat. §. 40. Sed ως p̄det a λέγοντι et simul ad sequentia ἄλλ' αἱ μὲν ἄλλαι pertinet. Itaque negatio abesse nequit. Idem sensit Ficinus: Nemo autem adversabitur nobis diligentibus, quod disserendi facultas duntarat conatur ordine certo circa unumquodque, quid ipsum sit, invenire.

ἄλλη τις] ἄλλη ἥτις Lob.

περὶ] παρὰ Bas. b.

πρὸς γενέσεις] προσγενέσεις Ald.

τε καὶ συνθέσεις] om. Ang. B.

ἥ] Ita Par. A. Vind. B. Mon. C. Vat. H. Flor. AT. Reliqui cum editis addunt καὶ, quod multis locis interpolatum (cf. Vol. I. p. 166, a. b. 177, b. 178, a. 254, a. b. 270, a. 420, b. 432, a. et infra, p. 538. B. pr. in Vat. B. post ἥ) hic superfluum et tantum

λοιπαὶ, ἃς τοῦ ὄντος τι ἔφαμεν ἐπιλαμβάνεσθαι, γεω-
μετρίαν τε καὶ τὰς ταύτης ἐπομένας, δρῶμεν ὡς ὀνει- C
ρώττουσι μὲν περὶ τὸ ὅν, ὑπαρ δὲ ἀδύνατον αὐταῖς
ἰδεῖν, ἕως ἂν ὑποθέσεις χρώμεναι ταύτας ἀκινήτους
ἔσσι, μὴ δυνάμεναι λόγον διδόναι αὐτῶν. ὡς γὰρ ἀρχὴ
μὲν δὲ μὴ οἶδε, τελευτὴ δὲ καὶ τὰ μεταξὺ ἐξ οὗ μὴ οἶδε
συμπέπλευται, τίς μηχανὴ τὴν τοιαύτην ὁμολογίαν ποτὲ
ἐπιστήμην γενέσθαι; Οὐδεμία, ηδὲ δ' ὅσ. Οὐκοῦν, ην
δ' ἐγὼ, ηδὲ διαλεκτικὴ μέθοδος μόνη ταύτη πορεύεται,
τὰς ὑποθέσεις ἀναιροῦσα ἐπ' αὐτὴν τὴν ἀρχὴν, ἵνα

non intolerabile, certe accuratae
artium, quam Socrates exhibet,
divisioni contrarium videtur.

τε] int. vers. Vind. B.

τετράφαται] τετράφατε, sup.
a m. s. αι, Mon. C.

ἐπιλαμβάνεσθαι] ἀντιλαμβά-
νεσθαι Ven. B. Vind. E.

γεωμετρίαν] γεωμετρίας Lob.
Mon. B. Vat. BHM. Ven. C.
Par. DK.

C ἀδύνατον αὐταῖς] ἀδύνατοι
αὐτὸν Mon. B. Flor. U.

ταύτας] ταύται Vind. F. παν-
τας Ald.

δυνάμεναι] δυνάμενα Ald.

ἀρχὴ] ἀρχὴ Ald. — Proclus
in Parmen. T. V. p. 323: εἰ δέ
τις τὴν ὑπόθεσιν ἀρχὴν ποιή-
σαιτο, περὶ τούτου ταῦτα ὁγ-
τέον, ἀπὸ (l. ἢ περὶ) τῶν γεω-
μετρικῶν ἐκεῖνος εἰληφεν· ὡς γὰρ
ἀρχὴ μὲν *δὶ ἐν, τελευτὴ δὲ καὶ
μεσαὶ ἐξ ὧν οὐκ οἶδεν, οὐδειùα
μηχανὴ τὸ τοιοῦτον ἐπιστήμην
εἴναι. quibus quae desunt nullo
negotio hinc addideris et vitiosa
correxeris. Cousinio tamen nil
deesse et δὶ ἐν sanum videbatur.

συμπέπλευται] συμπλέκεται
Lob. Vat. BM. connectuntur Fic.

τίς] τίς Ald. Bas. ab.

τὴν] om. Vind. E.

Οὐδεμία] οὐδὲ μία Mon. B.

Οὐκοῦν ηδὲ διαλεκτικὴ — ὡς
άριστα. D.] excerptis Stobaeus
ecl. L. II. p. 157. Cant.

μόνη] μόνη Lob. μόνη editi
ante Astium. Bekkerus μόνη
tantum ex Par. A. Ven. C. retu-
lit, hos solos, opinor, innuens
dativum a nominativo distinguere
solere. Sed Stephanum μόνη ha-
bere non ostendit.

ἀναιροῦσα] Ita Stobaei cod.
Augustanus et Vaticanus. ἀνά-
γνοντα Cant. quod, nisi proxime
sequens ἀνάγει obstaret, praef-
ferrem. Nam quum dialectica
secundum L. VI. p. 511. B. C.
D. non id agat, ut axiomata et
postulata mathematica tollat seu
evertat, sed ad principium referat
eique coniuncta ut iam scian-
tur efficiat, ἀναιροῦσα diversam
h. l. a vulgari significationem ha-
bere et, quod collocatio quoque
verborum flagitat, cum sequenti-
bus ἐπ' αὐτὴν τὴν ἀρχὴν con-
struendum esse sequitur: dialec-
tica sola hac, cui contraria in
proximis demonstrata est, via
procedit, positiones non fixas et
immotas relinquens, sed ad ipsum
principium extollens, ut firmas
et certas reddat. Sed verbi ἀναι-
ρεῖν cum praepositione ἐπὶ con-
structi exemplum nusquam inven-
io, neque qua ratione construi
possit, satis intelligo. An igitur
ἀναιροῦσα scribendum? cuius ver-
bi quamvis rari certus tamen lo-
cus est in Euripidis Electra
v. 102: "Ἐως γὰρ λευκὸν ὅμη
ἀναιρεται.. Neque diversum ab
eo Homericum est ἀναιρεῖσιν.

τὴν] om. Mon. B.

D βεβαιώσηται, καὶ τῷ ὅντι ἐν βορβόρῳ βαρβαρικῷ τινὶ τὸ τῆς ψυχῆς ὄμμα πατορωρυγμένον ἡρέμα ἔλκει καὶ ἀνάγει ἄνω, συνερίθοις καὶ συμπεριαγωγοῖς κρωμένη αἷς διήλθομεν τέχναις· ἂς ἐπιστήμας μὲν πολλάκις προσείπομεν διὰ τὸ ἔθος, δέονται δὲ ὀνόματος ἄλλου, ἐναργεστέρου

βεβαιώσηται] βεβαιώσητε Mon. C.

καὶ] om. Stob.

τῷ ὅντι] τωόντι Vind. E.

Mon. C.

D βαρβαρικῷ] βαρικῷ Vind. F. βαρβαρικῶς Stob. cod. Vat. βαρβαρικῶν Cant.

τῷ] Ita Stob. cod. Aug. et Vat. τῷ Cant.

πατορωρυγμένον] πατορυγμένον Vind. E. πατωρόγυμένον Stob. Cant. (non cod. Aug. Vat.) πατορωρυγμένον Ald. Bas. ab.

ἡρέμα] ἥρ. Vind. E. Mon. C.

ἀνάγει ἄνω] Ad hoc Timaei glossam p. 31. ἀνατείνας τὴν ψυχήν· ἐπὶ τὰ ἄνω τρέψας καὶ ἐπὶ τὴν τῶν θεῶν θέαν· non dubie referendam esse et Timaeum ἀνατείνει pro ἀνάγει ἄνω legisse statuit Ruhnkenius. Mihi pari, si non maiori iure ad p. 540. A. referri ibique pro ἀνακλίναντας Timaeus ἀνατείναντας in suo codice invenisse statui videtur. Sed utrumque incertum, lectio quidem nostri loci non minus, quam alterius certa est. Alia significatio ἀνάγειν ἄνω Plato Phaedr. p. 272. D. dixit.

συνερίθοις] ξνν. Stob. συνεριθμοῖς Lob. Vat. B. et a m. pr. Ven. C. συνεθισμοῖς Mon. B. Par. D. Flor. U. συνωθισμοῖς Par. K. συνέργοις Flor. R. a m. s. ex glossemate. Nam ita Timaeus lex. p. 242: συνέριθοι· συνεργοί. Cf. Leg. L. X. p. 889. D.: γραφικὴ καὶ μονοικὴ καὶ ὅσαι ταῦταις εἰσὶ συνέριθοι τέχναι.

συμπεριαγωγοῖς] συμπεριαγώγοις Vind. F. συμπεριαγωγαῖς Mon. B. Flor. U. συμπεριαγωγῆς Stob. cod. Vat. συμπεριαγωγῆ Par. K. περιαγωγοῖς Vind. B.

Mon. C. Vat. H. Flor. ACV. περιαγωγαῖς Vind. E.

αἷς] ἂς Vind. B. Mon. C.

Flor. V.

τέχναις] τέχνας Vind. B. Mon.

C. ἐναργεστέρου] ἐνεργεστέρου Stob.

δὲ, ἢ] δὲ idem.

διάνοιαν δὲ] διάνοιάν γε Vind.

F. Ang. B. Flor. RT.

πον] πῶς Par. K. sec. Bip. πῶς sec. Bekk. om. Mon. C. Vid. p. 522. C. et L. VI. p. 511.

A. C. D.

δ'] δὲ Lob. Vind. F.

ἢ] om. Lob. Vind. B. Mon. BC. Vat. BHM. Ven. C. Par. DK. Flor. TUV. Articulus eam designat contentionem, quae sit vel possit esse inter tantis de rebus disquirentes.

τοσοῦτον] τοσοῦτον Lob. Vat. M. et a m. pr. B. Par. K. sec. Bekk. et cum ω super ultima D. et Ven. C. τοσοῦτο, sup. ων, Vind. B. τοσούτον Vat. B. a m. s. Ald. Bas. ab.

πέρι σκέψις] περὶ σκέψις Vind. E. περίσκεψις Lob. Vind. BF. Mon. C. Par. K. sec. Bekk. Vat. M.

ὅσων] ὕσον Lob. Vat. BM. Par. K. sec. Bekk. et a m. pr. D. et Ven. C. Conf. Matthiae gramm. p. 886. Bernhardy synt. p. 203.

Oὐ γὰρ οὖν] οὐγαροῦν Lob. οὐ γὰρ ἀν Mon. C. οὐ γὰρ αν Vind. B. Quae praeterea in codicibus plerisque non sine magna varietate atque in editionibus Bas. b. Astii pr. Bekkeri et Stallbaumii sec. tamquam a Glaucone dicta post ἔφη adduntur, quoniam nihil eorum neque integrum neque modeste et quantum liceret

μὲν, ἡ δόξης, ἀμυνδροτέρουν δὲ, ἡ ἐπιστήμης διάνοιαν δὲ αὐτὴν ἔν γε τῷ πρόσθεν που ὠρισάμεθα· ἔστι δ', ὡς ἔμοὶ δοκεῖ, οὐ περὶ ὀνόματος ἡ ἀμφισβήτησις οἷς τοσούτων πέρι σκέψις ὅσων ἡμῖν πρόκειται. Οὐ γὰρ Εοῦν, ἔφη. Ἀρέσκει οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, ὥσπερ τὸ πρότε-

immutatum aut sententiam non ineptam aut orationem Platone dignam habere atque ipsa additio ab eius consuetudine abhorre, codicum vero auctoritas non omni exceptione carere videbatur, facere non potui, quin pro insiticis abiicerem. Sunt autem haec: ἄλλ' ὁ (ἄλλο Bas. b. ἄλλο Lob. Vind. F. Vat. BM. Ven. C. Par. D.) ἀν μόνον δηλοῖ (ἀν δήλον μόνον Par. K. sec. Bip. ἀν δηλοῖ μόνον sec. Bekk.) πρὸς τὴν ἔξιν (π. τ. λέξιν Mon. B. Flor. U. Bekk. Stallb.) σαφηνεῖται (om. Flor. AC. Fic. σαφηνύται Vind. E. σαφήνειαν Vind. B. Mon. C. Ast. pr. σαφηνείᾳ Bekk. Stallb.) λέγει (λέγει cum τι super i Par. A. λέγειν Vind. BEF. Mon. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. λόγον Ast. pr. ὁ λέγοι Mon. B. Flor. U. Bekk. Stallb.) ἐν (ἐν τῇ Mon. C.) ψυχῇ. Ex his quod Bekkerus secundum Mon. B. pro genuino, Stallbaumius ut glossema cum uncis edidit, ἄλλ' ὁ ἀν μόνον δηλοῖ πρὸς τὴν λέξιν σαφηνεῖται ὁ λέγοι ἐν ψυχῇ, si sensum illum habet, quem videtur habere, quem Schleiermacherus non satis accurate ita reddidit: sondern wenn eines (ein Wort) nur das bestimmt bezeichnet für den Vortrag was man bei sich denkt, aliquid requirit, quod si adsit, profecto amplius desiderari nequeat. Quod enim melius aut magis perfectum vocabulum esse potest, quam σαφηνείᾳ, hoc est, perspicue et sine ulla obscuritate cogitatum significans? Et tamen Glauco in hoc se acquiescere dicere, quasi severior alter plus exigere posset? Nihil dicam de molesta verborum πρὸς τὴν λέξιν abundantia, nihil de incommoda

dictionis λέγοι ambiguitate, quam nescias utrum ad ὄνομα an ad loquenterem referas: sententia mihi tam absonta videtur, ut eam vix interpolatori mediocri, nedum Platonii tribuere audeam. Paullo tolerabiliorem ex superscripta in Par. A. lectione effeceris una littera adiecta scribens ἄλλ' ὁ ἀν μόνον δηλοῖ πρὸς τὴν ἔξιν σαφηνείᾳ & λέγεις ἐν ψυχῇ: sed (id requirimus seu probamus) quod duntaxat pro rerum conditione perspicue monstret, quae tecum apud animū loquaris. cui sententiae similem Ficinus fecit: nam solam exigunt ad rerum habitum interni conceptus expressionem. eamque Stephanus in marg. ostendit sibi videri sub illis latere, quae inter ἔφη et ἀρέσκει „ex vet. cod. sed mendosa afferuntur.“ Nam qui πρὸς τὴν ἔξιν ita dixerit, is summa et absoluta remissa perspicuitate mediocrem quandam et relativam postulaverit, qua contentus utique non severissimus sit. Sed Platonem πρὸς τὴν ἔξιν eo sensu posuisse, non saltem τῶν πραγμάτων addidisse non credo: sequioris aevi lectorem facilius adducor ut nimia illa, quam Socrates concessisset, licentia offensum hanc condicionem scripsisse et πρὸς τὴν ἔξιν aut ita, ut ostendi, aut, postquam ἔξις idem quod δύναμις significare coepisset, pro viribus intelligi voluisse credam. Eadem illud λέγειν ἐν ψυχῇ pro νοεῖν condonandum puto, quod certe h. I. parum aptum est. Nam si cogitationem interna animi oratione constare volumus, quemadmodum Plotinus Enn. I. L. II. c. 3. p. 13. F. τὸν ἐν φωνῇ λόγον μίμημα τοῦ ἐν ψυχῇ, et ipse

ρον, τὴν μὲν πρώτην μοῖραν ἐπιστήμην καλεῖν, δευτέραν δὲ διάνοιαν, τρίτην δὲ πίστιν καὶ εἰκασίαν τετάρτην, καὶ ξυναμφότερα μὲν ταῦτα δόξαν, ξυναμφότερα δ' ἔκεινα νόησιν, καὶ δόξαν μὲν περὶ γένεσιν, νόησιν δὲ περὶ οὐσίαν, καὶ ὅτι οὐσία πρὸς γένεσιν, νόησιν

Plato Theaet. p. 190. C. τὸ λέγειν πρὸς ἑαυτὸν δοξάζειν dicit, nomen quoque aliquod intus apud animum pronuntiantem ponere debemus eum, qui cogitat, quod nomen diversum esse nequit ab eo, quod idem, quum loquitur, ore emittit. Quomodo igitur ore pronuntiatum nomen ita demum probabile dici potest, si interni nominis et sermonis significacionem perspicue exprimat, quum ipsum illud internum sit et tantum eo differat, quod ore pronuntiatur? Quae quidem ratio Bekkeri scripturae non minus, quam cuilibet illa extrema retinenti vehementer repugnat. His accedit quod in Platonis dialogis quum negationi assensus per formulam οὐ γὰρ οὖν praebetur, nunquam assentiens quicquam addit, quod ex contrario petitam negati descriptionem contineat idque per affirmationem cum particula ἀλλὰ definiat. Unus est Sophistae locus isque admodum dubiae lectionis et personarum distinctionis, qui exceptionem additam habet, p. 240. B: οὐ γὰρ οὖν πλήν γέ εἰναι ὄντως. Bis novum et alio spectans subiicitur: Polit. pag. 266. A: οὐ γὰρ οὖν. ἀλλὰ τίνι δὴ τῷ δύο διαιρούμεν; et Phileb. p. 16. B: οὐ γὰρ οὖν, ως παιδες, ως φησιν οὐμᾶς προσαγορεύων Φίληβος. οὐ μὴν ἔστι καλλίων ὁδὸς etc. Nonnunquam verbum ex praegressa alterius interlocutoris oratione repetitur: Civ. L. III. p. 388. E: οὐ γὰρ οὖν δεῖ. et ib. 397. E. V. 454. B. Hipp. mai. 299. D. Theaet. 205. D: οὐ γὰρ οὖν δὴ φαίνεται. Plerumque vero nihil praeter tria illa verba ponitur: Civ. II. 375. A. 376. D. III. 394.

E. 398. D. III. 439. B. V. 465. B. VI. 508. B. nostri libri p. 523. D. 526. C. 534. D. VIII. 556. C. X. 603. A. Euthyphr. 2. B. Phaedon. 93. E. 104. C. Theaet. 160. A. 171. B. 182. E. 185. A. 186. E. (189. B: οὐ γὰρ οὖν δῆ) 193. D. 203. E. Soph. 233. E. 252. A. 256. A. Phil. 17. C. 30. C. 42. C. Alcib. I. 134. A. Charm. 167. E. Lys. 215. B. 218. A. Leg. I. 627. C. 634. D. III. 696. C. Parm. 134. B. 138. B. 139. A. C. E. 140. B. 146. E. 147. A. 149. A. D. 154. C. 156. C. D. 158. B. 162. D. 163. B. 164. E. 166. A. Phaedr. 277. E. Itaque praeter consuetudinem Platonicam verba ἀλλὰ δὲ ἄν μόνον etc. assuta videntur. Denique non solum in Ald. Bas. a. Steph. sed haud dubie etiam in Ven. B. omissa sunt, quem codicem supra p. 532. C. Aldo glossematis recipiendi auctorem exstissee vidimus, cuius Bekkerus cum Stephani scilicet textu a se collati neque ullam ab eo discrepantiam exhibentis mentionem facere oblitus est, tantum Stephanum ista omittere significans.

οὖν] om. Bas. b. γοῦν Par. A. Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H. quod ad sequens ἔπειτα et ad affirmationem, quam posterior huius sermonis pars habet, magis accommodatum, quam οὖν, ob significationem tamen admitti nequit, nisi forte voluntatem pro ratione sequi Socratem statuimus. Itaque οὖν tenendum, ut in interrogatione, quae in affirmationem exeat. Cf. Vol. I. p. 294, b.

τὸ πρότερον] τοπῷ. Lob. Ald. Bas. ab. Steph.

δευτέραν δὲ] τὴν δὲ δευτέραν Flor. T.

πρὸς δόξαν, καὶ ὅτι νόησις πρὸς δόξαν, ἐπιστήμην πρὸς πίστιν καὶ διάνοιαν πρὸς εἰκασίαν· τὴν δὲ ἐφ' οἷς ταῦτα ἀναλογίαν καὶ διαιρεσιν διχῇ ἐκατέρου, δοξαστοῦ τε καὶ νοητοῦ, ἐῶμεν, ὡς Γλαύκων, ἵνα μὴ ἡμᾶς πολλαπλασίων λόγων ἐμπλήσῃ, ηδὲ ὅσων οἱ παρεληλυθότες. B

534 τοῖτην] τρίτον Ald. Bas. ab.
μὲν ταῦτα δόξαν, ἔνναμφότερα δὲ ἐπεῖνα νόησιν] Quatuor priora om. Lob. Vat. BM. Par. DK. sec. Bekk. et a m. pr. Ven. C. μὲν ἐπεῖνα νόησιν, ταῦτα δὲ δόξαν Mon. B. μὲν et in m. ἐπεῖναι δόξαν, ἔνναμφότερα δὲ ταῦτα νόησιν Flor. U. quemadmodum in pr. ed. Stallbaumius testatus est. In sec. vero ἐπεῖνα νόησιν, ταῦτα δὲ δόξαν in eius margine scripta perhibet. Etiam Ficinus aliter haec ordinavit: et ambo illa simul intelligentiam, haec autem ambo simul opinionem. quia liberitate saepe eum usum vidimus. Pro δὲ, quod et ipsum Lob. Par. K. omittunt, in Vind. BE. Mon. C. δὲ scriptum est.

καὶ δόξαν. Par. K.

περὶ γένεσιν] om. Par. D. πρὸς γένεσιν Par. K. περὶ γένεσιν Vind. E.

δὲ καὶ Par. K.

περὶ οὐσίαν] περιουσίαν idem sec. Bip.

οὐσία] Ita Par. A. Lob. Vind. BE. Mon. C. Vat. BHM. Ven. BC. Fic. Reliqui codices a me et a Bekkerio collati (nam de Florentinis Stallbaumii silentium mihi suspectum est) cum editionibus omnibus οὐσίαν habent, quod ferre potest, cui καλοῦμεν suppleret placet. Sed proxima illa περὶ γένεσιν et περὶ οὐσίαν ita dicta sunt, quasi εἶναι praecessisset, nec aliter sequentia πρὸς δόξαν, πρὸς πίστιν, πρὸς εἰκασίαν. Cur vero εἶναι suppleamus et ὅτι pro accusativo habeamus, quod genus attractionis durissimum est, nulla caussa videtur.

γένεσιν] γένησιν Vat. H.

νόησιν] νόησις Flor. ACRTV.

et iidem, qui οὐσία, exceptis Par. A. Ven. C. item Ficinus.

καὶ ὅτι νόησις πρὸς δόξαν] Haec vulgo omissa ex Par. A. Vind. BE. Mon. C. Ven. BC. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. Fic. recipere non dubitavi, quoniam sine iis ἐπιστήμην et διάνοια non partes νοήσεως esse neque ea contineri, sed iuxta eam positae videantur, quod incommode Bekkerus frustra commate ante ἐπιστήμην delendo evitare conatus est, scriptor haud dubie μὲν et δὲ post ἐπιστήμην et διάνοια inserendo evitasset. Quam facile excidere potuerint, nemo non videt: glossematis suspicionem codicum indoles defendit.

ἐπιστήμην] ἐπιστήμη Par. A. Lob. Vind. BE. Mon. C. Vat. HM. et, addito a m. s. δὲ, B. Ven. B. Flor. ACRTV. Fic. καὶ ἐπιστήμην Vind. F. καὶ ἐπιστήμη Ang. B. Cernitur hic praestantia Veneti C.

διάνοιαν] διάνοια Lob. Vind. BE. Mon. C. Ang. B. Vat. HM. Flor. ACRTV. et Ficinus, qui haec inde ab ὅτι οὐσία ita reddidit: Quod autem est ad generationem essentia, id ad opinionem intelligentia; quodve intelligentia est ad opinionem, id et ad fidem scientia, et ad imaginationem denique cogitatio.

δὲ] δὲ Vind. F.

ἀναλογίαν] ἀναλογίαν τε Mon. C. Ast. sec. et tert.

διχῇ] διχῇ editi.

τε] om. Lob. Vat. BM.

ἐῶμεν] ἐῶμεν Vind. B. Θεῶμεν Ang. B.

πολλαπλασίων] πολλαπλασίων Mon. C.

ὅσων] Pro eo Bekkerus in Par. A. Vat. BH. Ven. C. ὅσον inve-

'Αλλὰ μὴν ἔμοιγ', ἔφη, τά γε ἄλλα, καθόσον δύναμαι ἐπεσθαι, ξυνδοκεῖ. Ἡ καὶ διαλεκτικὸν καλεῖς τὸν λόγον ἐκάστου λαμβάνοντα τῆς οὐσίας; καὶ τὸν μὴ ἔχοντα, καθ' ὅσον ἂν μὴ ἔχῃ λόγου αὐτῷ τε καὶ ἄλλῳ διδόναι, κατὰ τοσοῦτον νοῦν περὶ τούτον οὐ φήσεις ἔχειν; Πῶς γὰρ ἂν, η̄ δ' ὅς, φαίην; Οὐκοῦν καὶ περὶ τοῦ ἀγαθοῦ ὡσαύτως· ὅς ἂν μὴ ἔχῃ διορίσασθαι τῷ λόγῳ ἀπὸ τῶν ἄλλων πάντων ἀφελῶν τὴν τοῦ ἀγαθοῦ ἰδέαν καὶ

nisse videtur, quamquam versus numerus ad ὅσον in comm. adscriptus uno minor est numero eius, in quo ὅσων in editione legitur, atque meorum et Florentinorum codicum omnium in ὅσων consensus testimonium illud suspectum reddere possit. Dictiōnem ipsam scriptor negligentius, quam fere solet in his libris, velut ex duabus conflatam exhibuit, quum aut ὅσοι οἱ παρεληλυθότες aut ὅσων τὰ παρεληλυθότα seu τὰ πρότερα dicendum fuisset, ὅσων οἱ παρεληλυθότες dicens, quasi sermones eos sermonum impleverint. Nam nomen λόγοι ad παρεληλυθότες supendum ob id ipsum, quod ex superioribus repetendum est, eadem, qua ibi, significazione accipi debet. Non multo tamen aliter L. VI. pag. 490. A. opinionibus opinionem tribuit. Sermones autem ante habiti, quibus Socrates nunc prolixiores cire veretur, libri sexti posteriores sunt, quo loco δοξαστὸν et νοητὸν in binas partes dividens principium dividendi non ab ipsa rerum illarum natura, sed a diversa hominis eas percipientis et cognoscentis actione petierat.

B ἔμοιγ'] ἔμοιγε Lob.

ἄλλα] ἄλλὰ Ven. C.

καθόσον] καθ' ὅσον Mon. B.
H] η̄ Lob. Vind. BEF. Mon. C. Flor. ACTV.

καὶ] om. Vind. F. Ang. B. Flor. R.

διαλεκτικὸν καλεῖς] διελεκτικὸν καλεῖς Ald.

καθ' ὅσον] Ita h. l. cum Mon.

B. scribendum putavi pro καθόσον, quia κατὰ τοσοῦτον sequitur.

ἔχῃ] ἔχει Ven. C. Par. D. ἔχοι Lob. Mon. B. Vat. BM. Flor. U. et, sup. ἔχη, Par. K. αὐτῷ] αὐτ. Lob. Vind. EF. αὐτῶν Vind. B. Mon. C.

ἄλλω] ἄλλων Vind. B. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV.

κατὰ τοσοῦτον] κατατος. Vind. F. Mon. B. κατὰ τοσοῦτο Vind. B.

νοῦν] οὖν Lob. Vat. BM. Par. DK. sec. Bekk. et a m. s. Ven. C.

φαίην] οὐ φαίην Steph. Ast. pr. sec. Certe non aliter est dicendum. Ficinus; qui quum in superioribus illum vero — eatenus intelligentiam circa hoc habere negabis? idque recte dixisset, vulgata ante Stephanum et codicum omnium lectionem πῶς γὰρ ἂν φαίην illo modo reddere poterat.

τοῦ] om. Ang. B.

ὅς ἂν — ἐπικαταδαρθάνειν; D.] excerptis Stobaeus ecl. L. II. c. 8. §. 36. Heer. p. 200. Cant. et initio ὡς pro ὅς habet.

μὴ] μὲν Lob. Vat. M.

ἔχη] ἔχοι Lob. Mon. B. Vat. BM. Par. DK. sec. Bekk. Flor. U. Ald. Bas. ab.

διορίσασθαι] διωρίσασθαι Mon. C.

τῷ] om. idem.

πάντων] om. Vind. F. Ang. B. ἀπάντων Stob.

ἀφελῶν] ἀφελῶν Stob. Cant. Procli locum huc spectantem ad p. 540. A. adieci.

ώσπερ ἐν μάχῃ διὰ πάντων ἐλέγχων διεξιὼν, μὴ πατὰ Κ
δόξαν, ἀλλὰ πατ' οὐσίαν προθυμούμενος ἐλέγχειν, ἐν
πᾶσι τούτοις ἀπτῶτι τῷ λόγῳ διαπορεύηται, οὕτε αὐτὸ^τ
τὸ ἀγαθὸν φήσεις εἰδέναι τὸν οὗτος ἔχοντα οὕτε ἄλλο
ἀγαθὸν οὐδὲν, ἀλλ' εἰ πη εἰδώλου τινὸς ἐφάπτεται,
δόξῃ, οὐκ ἐπιστήμῃ ἐφάπτεσθαι καὶ τὸν νῦν βίον ὄντε-
ροπολοῦντα καὶ ὑπνώτοντα, ποὺν ἐνθάδε ἔξεγρεσθαι,
εἰς Ἀιδουν πρότερον ἀφικόμενον τελέως ἐπικαταδαρθά- D

C ἐν μάχῃ] ἐν μ. Ald. Bas. ab.
Hunc locum respexit Proclus in
Parm. T. III. p. 106. verbum
διαμάχεσθαι Parm. p. 127. E.
ita illustrans: τὴν γάρ διὰ τῶν
ἀποφάσεων ἀτραπὸν μάχη προ-
σείνασεν. οὗτος ἄρα καὶ ἐν Πο-
λυτείᾳ παραπελεύεται περὶ τοῦ
ἀγαθὸν ποιεῖσθαι τὸν λόγον,
ώσπερ ἐν μάχῃ, φησὶν, οὐδὲν
ἄλλο ἀξιῶν, ἥ διὰ τῶν ἀποφα-
τικῶν αὐτὸν συμπερασμάτων αἱ-
ρεῖν. καὶ δεῖ μηδὲ ἐνταῦθα τὸ
διαμάχεσθαι παρέργως ἀκούειν,
ἀλλὰ πάνεπιν διὰ τούτων γνώμον
ποιεῖν, ὡς τῆς μάχης τὰς
ἀποφάσεις αὐτῷ δηλουσῆς καὶ
ἐκεῖ παθάπερ ἐν τούτοις. Item
in Civ. p. 430, 8: μόνον ἀν οὖ-
τως τῷ Σωκράτει συμφωνοῦμεν
ἀξιοῦντι παθάπερ ἐν μάχῃ διε-
ξιόντα περὶ τοῦ ἀγαθοῦ ὡς ἄρα
οὐκ ἔστι διελέγχειν ἐν τι τῶν ἀλ-
λων. οὐ γάρ ἀλλο τι δηλοῖ ταῦ-
τα πλήν τῶν ἀφαιρέσεων.

διὰ πάντων] διαπ. Vind. F.

διεξιὼν — ἐλέγχειν] ter. deinceps scripta habet Mon. B. atque
in secunda scriptioне verba qua-
tuor priora obelō notata, reliqua
uncis inclusa sunt.

πατ'] πατὰ Vind. F. παθ' Bas.
b.

προθυμούμενος] προθυμούμε-
νον Stobaei cod. August.

ἐλέγχειν] ἐλέγχων Mon. B. in
secunda scriptioне et a m. pr. in
tertia.

ἀπτῶτι] ἀπτῶτι Vind. F.
ἀπτῶσι Stob. cod. Paris. et ed.
Cant. In Flor. R. βεβαιώ super-
scriptum. Cf. Dissenius ad Pind.
Ol. VIII. 92.

τῷ] om. Vind. E.

διαπορεύηται] διαπορεύεται
Flor. R.

οὕτε] οὕτ' Lob. Vat. M.

αὐτὸ] om. Vind. F. Ang. B.
αὐτὸ φησὶ Stob. cod. Vatic.

τὸ ἀγαθὸν] τ' ἀγ. Stob. Heer.

Quod in editionibus ante Astii
sec. additum legitur οὐδὲν, Astius
secundum Par. K. Bekkerus se-
cundum deceim suorum delevit,
de uno Par. A. nihil significans.
In quo si exstat, e versu sequente
subrepsisse videtur. Florentini
et a me collati omnes cum Sto-
baeo recte omittunt.

φήσεις] φησὶ Stob. Cant. φη-
σιν Heer. om. cod. Vatic.

οὕτε] οὕτ' Stob.

οὐδὲν,] οὐδέν; editi ante Bek-
kerum.

εἰ πῃ] Ita Stob. cod. Vat. εἰπε
August. ἐπεὶ Cant. Heer.

εἰδώλον] αὐτοῦ εἰδώλον Sto-
baei codices Aug. Vat. Par. et
ed. Cant. αὐτοῦ εἰδώλον Heer. e
coni. (Platonis locum ignorabat.)

ἐφάπτεται] cum tribus sequen-
tibus om. Stob. cod. Aug. Vat.

ἐφάπτεσθαι] ἐφάπτεται Lob.
Mon. C. Vat. M. ἐφάπτεσθαι;
Steph. ἐφάπτεσθαι, reliquae.

τὸν νῦν] Ita Stob. cod. Aug.
Vat. τοῖνυν Cant. Heer.

ὑπνώττοντα] ὑπνοῦντα Stob.
Cant. (ὑπνώττοντα cod. Aug.
Vat.)

ἐνθάδε] Ita Lob. Vind. BEF.
Mon. BC. Stob. Vulgo ἐνθάδ
omnibus tacentibus.

ἔξεγρεσθαι] ἔξεγρεσθαι Vind.
F. Flor. AR. ἔξαγρενεσθαι Stob.

νειν; Νὴ τὸν Δία, ἡ δ' ὅς, σφόδρα γε πάντα ταῦτα φήσω. Ἀλλὰ μὴν τούς γε σαντοῦ παιδας, οὓς τῷ λόγῳ τρέφεις τε καὶ παιδεύεις, εἴ ποτε ἔργῳ τρέφοις, οὐκ ἀν ἐάσαις, ὡς ἐγχῆμαι, ἀλόγους ὅντας ὥσπερ γραμμὰς ἀρχοντας ἐν τῇ πόλει υφίσιον τῶν μεγίστων εἶναι. Οὐ γὰρ οὖν, ἔφη. Νομοθετήσεις δὴ αὐτοῖς ταύτης μάλιστα τῆς παιδείας ἀντιλαμβάνεσθαι, ἐξ ἣς ἐρωτᾷν τε καὶ ἀποκρίνεσθαι ἐπιστημονέστατα οἵοι τ' ἔσονται; Νομοθετήσω, ἔφη, μετά γε σοῦ. Ἄρ' οὖν δοκεῖ σοι, ἔφην

Cant. Heer. ἐξαγρεύσαι cod. Vat.
ἐξαγρεύεσται August.

[Αἰδον] ὁδον editi ante Astium
et in Stobaeo Canterus et Heerenius.

D [ἐπιπαταδαρθάνειν] Ita Mon. C.
ante corr. ἐπιπαταδαρθεῖν Stob.
et Mon. C. corr. ἐπιπαταδαρθα-
νεῖν Vind. B. Plotinus Enn. I.
L. VIII. c. 13. extr. καὶ τοῦτο
ἔστι τὸ ἐν ἄδον ἐλθόντα ἐπιπα-
ταδαρθεῖν.

Δία] δί' Lob. Vind. E. Vat.
HM.

γε] γε, Vind. F.

πάντα] post ταῦτα Lob. Vind.
BE. Mon. C. Vat. BHM. Ven.
BC. Par. K. Flor. AC.

φήσω.] φήσω; Bas. b.

τρέφεις τε] τε om. Vind. E.
Mon. C.

τρέφοις] τρέφεις cum οἱ su-
per εἰ Vind. F.

ἐάσαις] In Mon. B. i int. vers.
positum.

ώσπερ γραμμὰς] Cornarius ecl.
p. 101. ὡς Φρούγας Μίδας, Ställ-
baumius ὥσπερ γραφὰς scriben-
dum, Astius γραμμὰς litteras seu
scriptiones, quae vitae et ratio-
nis expertes interroganti nihil re-
spondeant, Schleiermacherus ma-
thematicorum, quippe διάνοιαν
tantum, non ἐπιστήμην haben-
tium, at si rationem reddere ne-
queant, ad δόξαν delabentium
figuras, quae et ipsae rationem
sui reddere seseque explicare non
possint, dictas statuunt, quorum
nihil probabile videtur. Veram

interpretationem petas ab Eucli-
de, qui libro suo decimo has de-
finitiones praeposuit: καλείσθω
οὖν ἡ μὲν προτεθεῖσα εὐθεῖα
ἡτη, καὶ αἱ ταύτῃ σύμμετροι
εἴτε μήνει καὶ δυνάμει εἴτε δυ-
νάμει μόνον ἡταῖς αἱ δὲ ταύτῃ
ἀσύμμετροι ἐλογοι καλείσθω-
σαν. καὶ τὸ μὲν ἀπὸ τῆς προτε-
θείσης εὐθείας τετράγωνον ὥτ-
τον, καὶ τὰ τούτῳ σύμμετρα ὥτ-
τα, τὰ δὲ τούτῳ ἀσύμμετρα ἀλο-
γοι καλείσθω, καὶ αἱ δυνάμεναι
αὐτὸς ἐλογοι.

υφίσιος] υφίσιας Par. K. sec.
Bekk.

Οὐ γὰρ οὖν] οὐγαροῦν Lob.
δὴ] δὲ Vind. B. et, ut vide-
tur, Mon. C.

ταύτης] om. Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

ἐξ ἣς] ἐξης Vind. F.
οἵοι τ'] οἵοι τε Lob.

Ἄρ'] ἄρ' Vind. F. Haec usque E
ad μαθημάτων; 535. A. excer-
psit Stobaeus ecl. L. II. p. 157.
Cant.

σοι] σοι ὥσπερ Vat. H.

θριγκὸς] θριγνος Ven. C. Ang.
B. (Flor. V.) θριγγὸς Vind. E.
Mon. B. Vat. M. Flor. U. θριγ-
γος Vind. F. Stob. cod. Aug. et
Vat. Alcinous isag. c. 7: ἐπεὶ
δὲ ἡ διαλεκτικὴ ἴσχυρότατον τῶν
μαθημάτων, ἄτε καὶ περὶ τὰ
θεῖα καὶ βέβαια γνομένη, διὰ
τοῦτο καὶ ἀνωτέρω τῶν μαθη-
μάτων τάττεται, ὥσπερ θριγγος
τις ὑπάρχοντα ἡ φυλακὴ τῶν
λοιπῶν. Proclus in Parm. T. V.

έγω, ὥσπερ θριγκὸς τοῖς μαθήμασιν ἡ διαλεκτικὴ ἡμῖν ἐπάνω κεῖσθαι, καὶ οὐκέτ' ἄλλο τούτου μάθημα ἀνωτέρῳ ὁρθῷ ἀντίθεσθαι, ἀλλ' ἔχειν ἥδη τέλος τὰ τῶν μαθημάτων; "Εμοιγ", ἔφη. Διανομὴ τοίνυν, ἦν 535 δ' ἔγω, τὸ λοιπόν σοι, τίσι ταῦτα τὰ μαθήματα δώσομεν καὶ τίνα τρόπον. Αῆλον, ἔφη. Μέμνησαι οὖν τὴν προτέραν ἐκλογὴν τῶν ἀρχόντων, οἶους ἐξελέξαμεν; Πᾶς γὰρ, ἦ δ' ὅς, οὕ; Τὰ μὲν ἄλλα τοίνυν, ἦν δ' ἔγω, ἐπείνας τὰς φύσεις οὗτον δεῖν ἐκλεκτέας εἶναι τούς τε

p. 274: τὴν διαλεκτικὴν, ἦν θριγκὸν ἐν Πολιτείᾳ τῶν μαθημάτων ἐκάλεσεν, ἐν λογικαῖς ἡμᾶς ἀνελίξει καὶ διεξόδοις γυμναζούσαν πρὸς τὴν ἀνοιβεστέραν νόησιν τὸν ἀὑλων καὶ χωριστῶν πραγμάτων. Idem in Cratylum p. 2. Boiss. Platonem ait nosse τὴν διαλεκτικὴν θριγκὸν (θεογυμὸν cod. B.) οὐσαν τῶν μαθημάτων καὶ ἀνάγουσαν ἡμᾶς ἐπὶ τὴν μίαν πάντων αἰτίαν, τάγαθόν. et in Civ. pag. 429, 35: οὐκοῦν ἀπὸ τούτων δῆλον, ὡς ἄρα τὴν διαλεκτικὴν θριγκὸν ἐπιστημῶν εἴναι δοκούσαν ἀποκαλῶν καὶ ὄντως ἐπιστήμην ὁριζόμενος ἐξ ἀνυπόθετον φησὶν ἀρχῆς ὅρμωμένην πάντα σκοπεῖν, ὡς ἔχει φύσεως, ὅτι ποτὲ ἔστιν ἔκαστον. Denique, quem locum Astius citavit, in Euclid. p. 12, 39: πάλιν ἐπείνα θεωρήσουμεν, ὅπως ὁ Πλάτων θριγκὸν τῶν μαθημάτων ἐν Πολιτείᾳ τὴν διαλεκτικὴν προσείσηκεν.— Θριγκὸς οὖν εἰκότως ἔστιν ἡ διαλεκτικὴ τῶν μαθημάτων, πᾶν τὸ νοερὸν αὐτῶν τελειούσα καὶ τὸ ἀνοιβὲς ἀνελεγητότερον (v. ἀνελυκτότερον, cf. p. 13, 20.) ἀπεργαζομένη καὶ τὸ ἀκίνητον μόνιμον ὡσαντώς διαφυλάττοντα καὶ τὸ ἀὑλον καὶ τὸ παθαρὸν εἰς τὴν ἀπλότητα τὴν τοῦ νοῦ καὶ τὴν ἀὑλίαν ἀναφέροντα, καὶ τὰς τε ἀρχὰς αὐτῶν τὰς πρώτας ἀφορίζοντα διὰ τῶν λόγων καὶ τὰς τῶν γενῶν καὶ εἰδῶν τῶν ἐπ' αὐτὰ διαιρίσεις ἐμφαίνοντα, τὰς τε συνθέσεις τὰς ἐπ τῶν ἀρχῶν τὰ μετὰ τὰς ἀρ-

χὰς προσαγούσας καὶ τὰς ἀνελύσεις τὰς ἐπὶ τὰ πρώτα καὶ τὰς ἀρχὰς ἐπανιούσας ἀναδιδάσκοντα. Quod ad orthographiam nominis attinet, duplex γ neque Eustathius ad Od. T. I. p. 262, 21. Lips. novit, neque Suidas aut lexicographus Bachmanni anecdot. I. p. 257, 25. neque Hesychius, in cuius lexico MS. Schowio teste θρι..ός et altero loco tantum θριγκῶσαι sine Musuri additamento η θριγγῶσαι legitur: in codicibus quidem nonnunquam ut h. l. ita alibi exstat, e. c. Clementis Al. Paed. L. III. p. 303, 18. περιθριγγούμεθα. Sed usitatum dubito an nunquam fuerit.

μαθήμασιν] μαθήμασι Mon. B.

οὐκέτ'] οὐμέτ' Vind. F. οὐν ζτ' Mon. BC. οὐν ζτι Stob.

μάθημα] post ἀνωτέρῳ Stob. ἄλλ' ἔχειν ἥδη] ἄλλα ἔ. ή. Stobaei cod. Aug. Vat. ἄλλ' ἔχειν ζδει Cant.

ἔφη. Διανομὴ] ἔφη διαν. Ald. 535 Pro διανομῇ Par. K. Mon. B. Flor. U. διανοῦ habent.

τοίνυν] om. Ald. Bas. a.

ἦν] Ἡν Ald.

τὸ λοιπόν] τολ. Vind. E. Ald. Bas. a.

σοι] σὺ Par. K. sec. Bekk.

τρόπον.] τρόπον; Mon. B. Ald. Bas. ab.

τὴν προτέραν ἐκλογὴν] L. III. p. 412. C. sqq.

οἶον] οἶον Vind. F.

γὰρ βεβαιοτάτους καὶ τὸν ἀνδρειοτάτους προαιρετέον
καὶ κατὰ δύναμιν τοὺς εὐειδεστάτους· πρὸς δὲ τούτοις

B ξητητέον μὴ μόνον γενναίους τε καὶ βλοσυροὺς τὰ ἥθη,
ἀλλὰ καὶ ἡ τῆδε τῇ παιδείᾳ τῆς φύσεως πρόσφρογα ἐκτέον
αὐτοῖς. Ποῦα δὴ διαστέλλει; Δριμύτητα, ὡς μακάριε,
ἔφην, δεῖ αὐτοῖς πρὸς τὰ μαθήματα ὑπάρχειν καὶ μὴ
χαλεπῶς μανθάνειν· πολὺ γάρ τοι μᾶλλον ἀποδειλιῶσι
ψυχαὶ ἐν ἴσχυροῖς μαθήμασιν, ἢ ἐν γυμνασίοις· οἰκειό-
τερος γὰρ αὐταῖς ὁ πόνος, ἔδιος, ἀλλ' οὐ κοινὸς ὡν
μετὰ τοῦ σώματος. Ἀληθῆ, ἔφη. Καὶ μνήμονα δὴ καὶ

καὶ τὸν ἀνδρειοτάτους] om.
Lob. Mon. B. Vat. BM. Ven. C.
Par. DK. Flor. U. καὶ om. Ang.
B. τὸν om. Vind. F. Flor. R.

κατὰ δύναμιν τοὺς εὐειδεστά-
τους] κατεδύναμιν τοὺς αειδε-
στάτους Vind. F.

B βλοσυροὺς] βλωσυροὺς Vind. F.
βλοσυροὺς Lob. Vind. BE. Ven.
B. Par. K. sec. Bekk. Vat. M.
et a m. s. Mon. B. βλισσυροὺς
idem a m. pr.

ἥθη] ἔθη Mon. B.

τῆδε] int. vers. Vind. F.

πρόσφρογα] προσφρογὰ idem.

ἐκτέον] ἐκτέον Lob. Vind. BE.
ἐκτέα Flor. R. ἐκτέα Vind. F.
Ang. B.

διαστέλλει] Ita Par. A. Vind.
B. Mon. C. Vat. H. Par. K. sec.
Bip. Flor. ACV. διαστέλλῃ Lob.
διαστέλλῃ Vind. E. Mon. B. δια-
στέλλῃ Ald. Bas. ab. Steph. om.
Vind. F. Ang. B. Fic. (Quas?
sc. dotes.)

ὡς μακάριε] om. Fic.

δεῖ] δεῖν Vind. E.

μανθάνειν·] μανθάνειν, Bek-
kerus.

τοι] τι Vind. B. Ven. B. Vat.
H. Flor. ACTV.

ἢ] om. Bas. b.

αὐταῖς] αὐτοῖς Vind. F. In
Mon. C. οἱ super αἱ a m. s. scri-
ptum est.

τοῦ] om. Vind. F. Ang. B.
Vat. M.

Καὶ μνήμονα δὴ] Ita Par. A.
Vind. BEF. Mon. C. Ang. B.
Vat. H. et Ficinus: Quaerendus

itaque vir est etc. Reliqui libri
cum editis δὲ pro δὴ habent. Sed
quae Socrates h. l. deinceps re-
quirit, ea non tamquam nova,
sed ob ipsam disciplinarum diffi-
cilitatem modo commemoratam ne-
cessaria requirit, cui necessitatī
significandae δὴ inservit.

καὶ] om. Lob. Ang. B.

ἄρρωτον] Ita Par. A. Vind.
BF. Mon. C. Ven. C. Vat. H.
Flor. ACR. ἄρα τὸν Lob. Vat.
M. ἄρρωτον Ven. B. Vat. B. a
m. s. (Flor. TUV.) Ald. Bas. ab.
Steph. ἄρρητον Par. DK. ἄρτιον
Mon. B. ἄρα ἴσχυρὸν μὴ δέοντα
Ang. B. quae lectio e duabus
glossematis conflata videtur. In
scholiis enim ad h. l. ἄρρωτον
per ἴσχυρὸν, στερεὸν, ἢ δύσκι-
νητον, et ad Crat. p. 407. D.
ubi alterum eius exemplum in no-
minis Ἄρης etymologia κατὰ τὸ
σκληρόν τε καὶ ἀμετάστροφον,
δὸ δὴ ἄρρωτον καλεῖται, sic dicti
exstat, per ἀσφαλὲς ἢ ἀκάματον
vel secundum alios ἴσχυρὸν ex-
plicatur, eodemque modo Timaeus
lex. p. 50. ἄρρωτον ἴσχυρὸν, στε-
ρεὸν interpretatus est; originem
nominis vero erant qui satis pro-
babiliter αἱ ὅσια repeterent, ut
Methodius et Phrynicus a Ruhn-
kenio laudati. Cf. Bekkeri anecd.
p. 24, 5. 442, 20. 446, 15. quo
loco Platonis auctoritas ad Timaei
glossam addita est. Quod praet-
erea in scholio ad Crat. legitur,
Ἐνιοὶ μικρὸν, οἱ δὲ μέγα, nisi
fallor, ad penultimae quantitatē

ἄρδατον καὶ πάντη φιλόπονον ξητητέον. ἡ τίνι τρόπῳ C
οἴει τά τε τοῦ σώματος ἐθελήσειν τινὰ διαπονεῖν καὶ
τοσαύτην μάθησίν τε καὶ μελέτην ἐπιτελεῖν; Οὐδένα, ἡ
δ' ὅς, ἐὰν μὴ παντάπασι γ' ἡ εὐφυής. Τὸ γοῦν νῦν
ἀμάρτημα, ἥν δ' ἔγω, καὶ ἡ ἀτιμία φιλοσοφίᾳ διὰ
ταῦτα προσπέπτωκεν, ὃ καὶ πρότερον εἶπον, ὅτι οὐ
κατ' ἀξίαν αὐτῆς ἄπτονται· οὐ γὰρ νόθους ἔδει ἄπτε-
σθαι, ἀλλὰ γνησίους. Πῶς; ἐφη. Πρῶτον μὲν, εἶπον,
φιλόπονίᾳ οὐ χωλὸν δεῖ εἶναι τὸν ἀψόμενον, τὰ μὲν D
489 ήμίσεα φιλόπονον, τὰ δὲ ήμίσεα ἄπονον. ἔστι δὲ τοῦτο,

pertinet, de qua dubitatio esse
nequit, si verum est, quod scho-
liastes Victorianus ad II. XIII.
56. tradit, pro ἄρδητον (νηῶν
τε καὶ αὐτῶν εἰλαρ ἔσεσθαι)
alios legisse ἄρδατον.

C πάντη] In hoc omnes a Bek-
kerero collati codices (etiam Par. K.
de quo Bipontini tacent) uno Par.
A. fortasse excepto, cuius Bek-
kerus mentionem non facit, con-
sentient, item mei praeter Vind.
F. qui παντὶ habet, et Florentini
cum Bas. b. in qua est πάντη.
Ald. Bas. a. Steph. Ast. pr. sicc.
πάντα exhibit, quod paullo
asperius videtur.

ἡ τίνι] ἡ τίνι Lob. Vind. F.
Bas. b. Id sufficere poterat Prin-
sterorio, quem Stallbaumius re-
fert Prosopogr. p. 209. propter
τίνι τρόπῳ in sequentibus Glau-
conis verbis οὐδενὶ pro οὐδένᾳ
legendum censuisse. Sed ille ita
respondet, ut si τίνα οἴει inter-
rogatus fuisset. Conf. Charm.
p. 167. A: ἀρα ταῦτα ἔστιν ἄ-
λεγεις; "Ἐγωγ", ἐφη. Gorg. p. 467.
E: ἀρ, οὖν ἔστι τι τῶν ὄντων,
ὅ οὐχὶ ἦτοι ἀγαθόν γ' ἔστιν ἡ
καὶ ποὺ ἡ μεταξὺ τούτων, οὔτε
ἀγαθὸν οὔτε καὶ πού; Πολλὴ ἀνάγ-
η, ὡς Σώκρατες.

ἐθελήσειν] ἐθελήσει Vind. F.
ἐπιτελεῖν] διατελεῖν Vat. M.
παντάπασι γ' ἡ] παντάπασι.
γῇ Vind. F. παντάπασιν ἡ Bas.
b. παντάπασιν ἡ reliquae ante
Bekkerum cum Vind. BE. Mon.

C. Ven. B. Vat. H. Ang. B.
Flor. ACRT.

γοῦν] οὗν Vind. E.
ἥν δ' ἔγω] om. Lob. Vat. BM.
φιλοσοφίᾳ] φιλοσοφία cum αἱ
super ultima Ang. B. φιλοσοφία
Ald. (Lob.)

διὰ ταῦτα] διὰ τ. Lob. Vind.
EF.

εἶπον] Sic Par. A. Vind. B.
Mon. C. Vat. H. et Ficinus: *ut
supra dicebam. εἶπομεν reliqui
cum editis. Singularis eo praefe-
rendus videri poterat scriptori,
quo magis Socrati, hoc est, sibi
peculiarem sententiam de con-
temptu philosophiae eiusque caus-
sis L. VI. p. 495. C. sqq. ex-
positam significaret. εἶπομεν autem
facilius ex εἶπον, quam hoc ex
illo oriri potuit.*

κατ' ἀξίαν] καταξ. Vind. E.
αὐτῆς] αὐτοῖς Vind. F. αὐ-
τῷ Bas. b.

Πρῶτον μὲν — φιλόπονίᾳ. D.]
excerpsit Stobaeus serm. XXVIII.
p. 206. Sed in cod. A. desunt.

εἶπον] δὴ εἶπον Par. K. sec.
Bekk. ἐφην Vat. M. om. Stob.

φιλόπονίᾳ] φιλόπονίας Lob.
Mon. B. Par. DK. sec. Bekk.
Vat. M. Flor. TU. et a m. s.
Ven. C.

ἀψόμενον] ἀψόμενον Vind. D
EF. Stob.

φιλόπονον] ὄντα addunt Vind.
EF. Ven. B. Ang. B. (Flor. RTU.)
Ald. Bas. ab. Steph. Ast.

τὰ δὲ] τὰ δ' Lob. Vind. BE.
Mon. C. Vat. M.

ὅταν τις φιλογυμναστὴς μὲν καὶ φιλόθροος ἥτις καὶ πάντα τὰ διὰ τοῦ σάματος φιλοπονῆται, φιλουμαθῆς δὲ μὴ, μηδὲ φιλήκοος μηδὲ ζητητικὸς, ἀλλ᾽ ἐν πᾶσι τούτοις μισοπονῆται· χωλὸς δὲ καὶ ὁ τάνατία τούτου μεταβεβλημένος τὴν φιλοπονίαν. Ἀλληδέστατα, ἔφη, λέγεις. Οὐκοῦν καὶ πρὸς ἀλήθειαν, ἥτις δὲ ἐγώ, ταῦτὸν τοῦτο ἀνάπτηρον E. ψυχὴν θήσομεν, ἥτις ἀν τὸ μὲν ἐκούσιον ψεῦδος μισῇ καὶ χαλεπῶς φέρῃ αὐτή τε καὶ ἐτέρων ψευδομένων ὑπεραγανακτῆται, τὸ δὲ ἀκούσιον εὐκόλως προσδέχεται καὶ ἀμαθαίνουσά πον ἀλισκομένη μὴ ἀγανακτῆται, ἀλλ᾽ εὐχερῶς 536 ὕσπερ θηρίον ὕειον ἐν ἀμαθίᾳ μολύνηται; Παντάπασι

ὅταν τις] ὅταντις Vind. E.
φιλογυμναστὴς] Pro η Mon.

B. a m. pr. ἡ habebat.

καὶ φιλόθροος ἥτις] ἥτις καὶ φιλομόχθοος Stob. Conf. L. III. p. 412. B.

τὰ διὰ τὰ om. Lob. Vat. BM. διὰ om. Vind. B. Mon. C. Vat. H. Flor. ATV.

φιλοπονῆται] φιλοπονεῖ Vind. F. διαπονῆται] Stob.

φιλουμαθῆς δὲ μὴ] μὴ om. Stob. Trinc. ante φιλ. ponunt Gesn. et Gaisf.

μηδὲ] μὴ δὲ Lob. Vind. B. Mon. C. Stob. Trinc. Ald.

φιλήκοος] φιλέινος Mon. C. μηδὲ] μὴ δὲ Vind. B. Stob. Trinc. Ald. μὴ δὲ Lob.

μισοπονῆται] μισοπονεῖ Vind. BF. Mon. C.

τούτον] τῆτον τούτον Vat. B. Cf. L. III. p. 424. C.

Οὐκοῦν — μολύνηται; E.] habet Stobaeus serm. XII. p. 141. Oὐκ οὖν etc. Gaisf.

ταῦτὸν] ταῦτὸν Stob. cod. A. ἀνάπτηρον] ἀνάπτειρον Mon. C.

Phrynicus Bekkeri anecd. p. 9, 22: ἀνεπηρία: διὰ τοῦ η τὴν τρίτην, οὐ διὰ τῆς εἰ διφθόγγου, ὡς οἱ ἀμαθεῖς. τὸ μὲν οὖν ἀνάπτηρος μαθωμένηται, τὸ δὲ ἀνεπηρία σπάνιον. Sed in Mon. C. η εἰ εἰ saepe confusa sunt, et Phrynicū reprobens fortasse tantum ad substantivum pertinet. Ceterum nescio, quid Gesnerus cogitaverit, qui in margine Sto-

baei pro ἀνάπτηρον sese μετρίαν malle ostendit.

ψυχὴν] ψυχῆ Stob. cod. A. ἥτις] ἥτις Lob. Vind. F. et a m. E pr. Mon. B.

μισῇ] μισεῖ Mon. C. μισοῦ Lob. Vat. M.

φέρῃ] φέρει sup. η, Mon. C. αὐτῆ] αὐτῆ Stob. cod. A.

Trinc. αὐτῆς Gesn. ὑπεραγανακτῆ] ὑπεραγανακτεῖ Vind. F. Stob. Trinc. ὄγανακτῆ cod. A. Stephanus signum interregandi addidit.

τὸ δὲ — ἀγανακτῆ] om. Mon. C. τὸ δὲ etc. Stob. Bas. b.

προσδέχεται] προσδέχεται Mon. B.

ἀμαθαίνουσά] ἀμαθαίν. Vind. F. ἀμαρτάνουσά Ang. B.

πον] πη Mon. B. πως Vat. M.

ἀμαθίᾳ] ἀμαθείᾳ Vind. E. Mon. C.

μολύνηται] μολύνεται Mon. B. ἀνδρίαν] ἀνδρείαν Lob. Vind. 536 F. Mon. C. Flor. ACRT. Steph. Stallb.

οὐχ ἥπιστα] οὐχήν. Vind. B. Mon. C. non minus Fic.

δεῖ] δή Vind. F. Mon. C. τὸν νόθον] τὸν ν. Vind. E.

τε] om. Mon. C.

τὸν γνήσιον] τὸ γ. Vind. E.

ἐπιστῆται] ἐπιστῆται Bas. b. ἐπιστήσεται Ang. B. Flor. R.

τὰ τοιαῦτα] His vulgo prae-
positum πάντα, quum tantum in
Par. DK. Mon. B. Flor. U. re-

μὲν οὖν, ἔφη. Καὶ πρὸς σωφροσύνην, ἦν δ' ἐγὼ, καὶ ἀνδρίαν καὶ μεγαλοπρέπειαν καὶ πάντα τὰ τῆς ἀρετῆς μέρη οὐχ ἥκιστα δεῖ φυλάττειν τὸν νόθον τε καὶ τὸν γνήσιον. ὅταν γάρ τις μὴ ἐπίστηται τὰ τοιαῦτα σκοπεῖν καὶ ἴδιώτης καὶ πόλις, λανθάνουσι χωλοῖς τε καὶ νόθοις χρώμενοι πρὸς ὅτι ἀν τύχωσι τούτων, οἱ μὲν φίλοις, οἱ δὲ ἄρχοντι. Καὶ μάλα, ἔφη, οὕτως ἔχει. Ἡμῖν δὴ, ἦν δ' ἐγὼ, πάντα τὰ τοιαῦτα διενλαβητέον, ὡς ἐὰν Β μὲν ἀρτιμελεῖς τε καὶ ἀρτίφρονας ἐπὶ τοσαύτην μάθησιν καὶ τοσαύτην ἄσκησιν κομίσαντες παιδεύωμεν, ἢ τε δίκη ἡμῖν οὐ μέμψεται αὐτῇ, τὴν τε πόλιν καὶ πολι-

pertum, in Lob. Vind. F. Vat. BM. Ven. C. Ang. B. Flor. R. pro eo πάντη scriptum sit, secundum Par. A. Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H. Flor. ACTV. et Ficinum (*quando enim haec minus considerant*) omittendum existimavi. Articulus enim sufficere videtur ad complexum eorum rerum significandum, quae ita comparatae sunt, ut ex iis subditicii ac genuini agnoscit et diūdicari possint, et πάντα ex sequentibus πάντα τὰ τοιαῦτα interpolari potuit, quo plenior oratio fieret.

λανθάνουσι] λανθάνουσα Vind. EF. Flor. ACR.

πρὸς ὅτι] προσότι Vind. F. τούτων, οἱ] τούτων εἰ idem ante corr. τούτων οἱ ε corr. τούτων οἱ Ang. B. quod verum videtur Stallbaumio, „ut ad πρὸς ὅτι ἀν τύχωσιν more frequenti verbum χρῆσθαι denuo intelligatur, hoc sensu: *ad quodcumque iis utantur.*“ Meo iudicio τούτων supervacaneum et languidum, ad τύχωσι autem haud dubie χρώμενοι denuo intelligendum, τούτων vero pro neutro habendum et cum ὅτι construendum est: *ad quodcumque horum negotiorum,* hoc est, aliquam ex his, quae dictae sunt, virtutibus requirentium, *fors tulerit ut vel amicis vel praesidibus utantur.*

ἄρχοντι.] ἄρχοντι, Bekkerus et Stallbaumius.

μάλιστα] μάλιστα Vind. F. Ang. B.

ἔφη] om. Lob. Mon. B. Vat.

BM. Par. DK. Ven. C. Flor. U.

δὴ, ἦν δ' ἐγὼ] δὲ ἦν δ' ἐγὼ

Lob. Vind. E. Mon. C. Vat. BM.

Ven. B. δ' ἐγὼ Ald. Bas. ab.

δ', ἔφην ἐγὼ, Steph. Ast. pr.

ἐὰν μὲν] μὲν om. Par. DK. B

Mon. B. Vat. H. Flor. TU. cum

editis ante Bekkerum.

ἀρτιμελεῖς] ἀρτιμελεῖς Vat.

B. a m. pr. ἀρτιμελεῖς Lob.

Vat. M.

ἐπὶ τοσαύτην] ἐπιτοσ. Vind.

E.

κομίσαντες] κομιήσαντες Par.

K. sec. Bekk.

παιδεύωμεν] παιδεύομεν Vind.

F.

δίκη] Non aliter haec dicta

videntur atque illa L. VI. p. 487.

A: ονδ' ἀν ὁ Μῶρος τό γε τοιοῦτον μέμψατο. Neque incognitum Platoni Δίκης numen. Cf.

Leg. L. III. pag. 717. D: πᾶσι

γὰρ ἐπίσποπος τοῖς περὶ τὰ τοιαῦτα ἐτάχθη Δίκης Νέμεσις ἔγγελος. XII. 943. E:

παρθένος γὰρ αἰδοῦς Δίκη λέγεται τε καὶ

ὄντως εἴρηται. quemadmodum He-

siodus tradidit ἔργ. 254: Ἡ δέ τε

παρθένος ἐστὶ Δίκη, Διός ἐνγε-

γενῖα, Κυδνή τ' αἰδοΐη τε θεοῖς,

οἱ "Ολυμπον" ἔχοντι. Itaque Δί-

κη etiam h. l. scribi poterat, nisi

obstaret αὐτῇ, quod personae

instar quidem cogitandam δίκην,

sed non pro nomine accipiendam

esse declarat. Similiter αὐτῇ τῇ

τείαν σώσομεν, ἀλλοίους δὲ ἄγοντες ἐπὶ ταῦτα τάναντία πάντα καὶ πράξομεν καὶ φιλοσοφίας ἔτι πλείω γέλωτα παταντλήσομεν. Αἰσχρὸν μέντ' ἀν εἴη, ηδ' ὅς. Πάνυ μὲν οὖν, εἶπον. γελοῖον δ' ἔγωγε καὶ ἐν τῷ παρόντι

C ζοικα παθεῖν. Τὸ ποῖον; ἔφη. Ἐπελαθόμην, ηδ' ἔγω, ὅτι ἐπαιζομεν, καὶ μᾶλλον ἐντεινάμενος εἶπον. λέγων γὰρ ἄμα ἔβλεψα πρὸς φιλοσοφίαν καὶ ἴδων προπεπηλα-
πισμένην ἀναξίως ἀγανακτήσας μοι δοκῶ καὶ ὕσπερ θυ-
μωθεὶς τοῖς αἰτίοις σπουδαιότερον εἰπεῖν ἢ εἶπον. Οὐ μὰ τὸν Δί', ἔφη, οὐκονν ἦς γέ μοὶ ἀκροατῆ. Ἀλλ' ὡς ἔμοὶ, ηδ' ἔγω, ρήτορι. τόδε δὲ μὴ ἐπιλανθανώ-
μεθα, ὅτι ἐν μὲν τῇ προτέρᾳ ἐκλογῇ πρεσβύτας ἔξελέ-

D γομεν, ἐν δὲ ταύτῃ οὐκ ἔγκωρήσει. Σόλωνι γὰρ οὐ πειστέον, ὡς γηράσκων τις πολλὰ δυνατὸς μανθάνειν, ἀλλ' ἥττον, ητ τρέχειν· νέων δὲ πάντες οἱ μεγάλοι καὶ

ἀληθείᾳ interpretandum videtur
Crat. p. 433. A.

ἡμῖν] post οὐ μέμφεται Par.
K.

ἀλλοίους] ἀλλοίους Vind. F.
ἀλλοίως Lob. Mon. B. Vat. BM.
Ven. C. Par. K. sec. Bekk.
Flor. U.

καὶ πράξομεν] καὶ om. Vind.
F. Mon. BC. Par. D. Ang. B.
Flor. RU. Ald. Bas. a. Steph.
Ast. pr. sec. Stallb. sec. Est illud paullo insolentius positum,
sed ita, ut τάναντία πάντα par-
tī ad civitatis conditionem, qua-
lem ineptis indignisque ad illa
studia admissis experturi sint,
partī ad opinionem hominum at-
que existimationem philosophiae,
quam sequi errorem istum oportet,
spectare et utramque con-
tra, quam dictum optandumque
sit, casuram esse significet.

μέντ' ἀν] μέν τ' ἀν Vind. F.
Mon. C. Ald. Bas. ab. μένταν
Vind. E.

εἴη] om. Mon. B.

η] om. Vind. F.

γελοῖον] γέλοιον Lob. Vind. F.
Cf. huius Vol. p. 14.

τῷ] om. Bas. b.

Ἐπελαθόμην] ἡπελαθόμην
Mon. C.

ἐντεινάμενος] ἐντεινόμενος C
idem.

γὰρ] γὰρ ἄμα Mon. B. for-
tasse vere. Sic Apol. p. 32. A:
ἴν' εἰδῆτε, ὅτι οὐδὲ ἀν ἐν ὑπει-
νάθοιμι παρὰ τὸ δίκαιον δεῖσας
θάνατον, μηδὲν εἰπεῖνον δὲ ἄμα
καὶ ἄμα ἀν ἀπολοίμην. quem lo-
cum bene explicuit Fischerus re-
cteque cum Xenophonteo Cyrop
III. 1, 15. (27.) composuit.

προπεπηλανισμένην] προσπε-
πηλανισμένην Par. D.

ἀγανακτήσας] ἀγανακτῆσαι
Mon. B. Flor. U.

Δί'] δία Mon. B. Bas. b.
ἔφη] Ita Lob. sed corr. ἔφην
Vat. M.

γέ μοὶ] ἔμοὶ Vind. F. Ang. B.
Flor. R. γε μοὶ φαίνεται, e corr.
γε μοι, Mon. C.

τόδε] οὐ τόδε Vind. F. Flor.
AC.

δὲ] δὴ Vat. M.
ἐπιλανθανώμεθα] Ita Lob. in
νθ corr. ἐπιλανθανόμεθα Vind.
E.

πρεσβύτας] L. III. p. 412. C.
οὐκ ἔγκωρησει] οὐκεγχ. Vind.
F.

Σόλωνι] Cf. N. Bachii diss.
de Solonis carminibus, Bonnae

οἱ πολλοὶ πόνοι. Ἀνάγκη, ἔφη. Τὰ μὲν τοίνυν λογισμῶν τε καὶ γεωμετριῶν καὶ πάσης τῆς προπαιδείας, ἦν τῆς διαλεκτικῆς δεῖ προπαιδευθῆναι, παισὶν οὖσι χρὴ προβάλλειν, οὐχ ὡς ἐπάναγκες μαθεῖν τὸ σχῆμα τῆς διδαχῆς ποιουμένους. Τί δή; "Οτι, ἦν δ' ἐγώ, οὐδὲν μάθημα μετὰ δουλείας τὸν ἐλεύθερον χρὴ μανθάνειν. Εοὶ μὲν γὰρ τοῦ σώματος πόνοι βίᾳ πονούμενοι χειρονούδεν τὸ σῶμα ἀπεργάζονται, ψυχῇ δὲ βίαιον οὐδὲν ἔμμονον μάθημα. Ἀληθῆ, ἔφη. Μὴ τοίνυν βίᾳ, εἰπον, ὡς ἄριστες, τοὺς παῖδας ἐν τοῖς μαθήμασιν, ἀλλὰ παίζοντας τρέψε, ἵνα καὶ μᾶλλον οἶός τ' ἦς καθορᾶν ἐφ' 537 δὲ ἐκαστος πέφυκεν." Εχει δὲ λέγεις, ἔφη, λόγον. Οὐκοῦν μνημονεύεις, ἦν δ' ἐγώ, ὅτι καὶ εἰς τὸν πόλεμον ἐφαμεν τοὺς παῖδας εἶναι ἀντέον ἐπὶ τῶν ἵππων θεωρούς, καὶ ἐάν που ἀσφαλὲς ἦ, προσαντέον ἐγγὺς καὶ γενστέον

1825. p. 22. Scholiastes ad h. l. initium versus pentametri paullo aliter scriptum habet: αἰεὶ γηράσκω πολλὰ διδασκόμενος. Vulgo est γηράσκω δὲ αἰεὶ π. δ.

D πειστέον] πιστέον Vind. F.
πολλὰ] πολὺ Mon. C. in dies plurima Fic.

Tὰ μὲν] τὰ μὲν Ald. Bas. b. Steph. Ast. pr.

γεωμετριῶν] προπαιδειῶν Par. K.

τῆς διαλεκτικῆς δεῖ] δεῖ τ. δ. Lob. Vat. B. τοῖς διαλεκτικοῖς δεῖ Vind. B. Mon. C. δεῖ τοῖς διαλεκτικοῖς Vat. M.

προπαιδευθῆναι] προσπαιδευθῆναι Vind. F.

προβάλλειν] προσβάλλειν Lob. Vind. E. Mon. B. Vat. BM. Flor. U. προβάλλειν Mon. C.

ἐπάναγκες] Cf. Rückertus ad Symp. p. 27.

E πόνοι] ingentes labores Fic.
οὐδὲν] in fine versus evanuit in Vind. F.

ψυχῇ] ψυχῇ idem.

ἔμμονον] ἔμμονον Vind. E. ἔμμενον Flor. R. Ald. Ad hoc pertinere videtur, quod Mon. C. in m. habet: σῇ τοῦ μεγάλου βα-

σιλ. ὅθεν ἐλήφθη. Basilii locum nescio.

μάθημα] Ultima syllaba evanuit in Vind. F.

Ἀληθῆ — μαθήμασιν] om. Mon. C.

παίζοντας] quasi ludentes Fic.

τ' ἦς] τῆς Vind. F. τ' ὡς Bas. 537 b. τ' ἦ Ald. Bas. a. Steph. tacentibus Bip.

ἐφ' δὲ] ἐφὸν Mon. C. ἐφη δὲ Ang. B. ἐφ' ως Vat. BM. Lob. (hic ωι) et a m. s. Par. A.

λέγεις] ἐφη Vind. E.

εἶναι ἀντέον] „Videri posset infinitivus εἶναι ante ἀντέον irreptius esse, quum eo minime sit opus: sed tali loco adhibitum et alibi me observare memini.“ Steph. p. 25. E. g. p. 518. C. Atque ubi non est adhibitum verbum substantivum (nam modi infinitivi aliam atque reliquorum statuisse rationem Stephanum non credo) ibi certe subaudiendum et de ellipsi potius, quam h. l. de pleonasmo cogitandum est. Ceterum locus, quem Socrates hic respicit, est L. V. p. 467. E.

θεωρούς,] θεωρούς; Steph.

προσαντέον] πρασαντέον Vind. F.

αἴματος, ὡσπερ τοὺς συύλακας; Μέμνημαι, ἔφη. Ἐν πᾶσι δὴ τούτοις, ἦν δ' ἐγὼ, τοῖς τε πόνοις καὶ μαθήμασι καὶ φόβοις ὃς ἀν ἐντρεχέστατος ἀεὶ φαίνηται, εἰς β ἀριθμὸν τινα ἐγκριτέον. Ἐν τίνι, ἔφη, ἡλικίᾳ; Ἡνίκα, ἦν δ' ἐγὼ, τῶν ἀναγκαίων γυμνασίων μεθίενται. οὗτος γὰρ δὲ χρόνος, ἐάν τε δύο ἐάν τε τρία ἔτη γίγνηται,

ἔφη.] ἔφη ἐν πᾶσι. Mon. C.
τε | om. idem.

ὅς] οἷς Par. K. sec. Bekk.

ἐντρεχέστατος] Antiatticistes Bekkeri an. p. 94, 30: ἐντρεχῆ ἄνδρα· Πλάτων Πολιτείᾳ. ἐντρεχέστατον. Itaque fuerint qui probum et Atticum esse negarent. Neque ego alterum apud antiquiores exemplum extare novi.

ἐγκριτέον] ἐγκριτέος Mon. B.
Flor. U.

B ἐν τίνι] ἐν τίνι Vind. F.

Ἡνίκα] In Mon. B. καὶ a m. s.
int. vers. positum.

μεθίενται] ἀφίενται Flor. T.
Cf. D.

δύο ἐάν τε] in m. habet Lob.
γίγνηται] γένηται Vind. E.

ἥποι] Pseudoplatarchus de
educ. p. 8. C: πατὰ γὰρ Πλάτων
οὐ πνοι καὶ νόποι μαθήμασι
πολέμιοι.

βασάνων] βασιάνων Vat. M.
et corr. Lob.

τις] τοῖς Ald. Bas. ab. Pro
eo Cornarius ecl. p. 101. ποιός
τις scribendum censebat, quam
conjecturam Stephanus pag. 25.
tamquam aliam lectionem commem
moravit, ipse feliciore conjectura
τις scripsit, quod omnes codices
confirmarunt. Tamen Astius in
pr. et sec. Cornarium securus
etiam in tert. ποιός τις probabili
lius statuit. Cf. Bernhardy synt.
p. 443.

Ἐναστος] om. Vind. F. Ang. B.
Flor. R.

οὐκ; ἔφη] οὐκ ἔφη Lob. Vind.
BEF. Mon. B. Ald. Bas. ab.

δὴ] Id mei codices omnes et
reliquorum plerique pro δὲ, quod
ante Bekkerum tacentibus Bip.
vulgatum erat, exhibent: tantum
de Par. A. Vat. M. et Flor. U.

Bekkerus et Stallbaumius rem inc
certam reliquerunt. Sed etiam per se δὴ praestat, quum Socrates h. l. inchoatām verbis ὃς ἀν
ἐντρεχέστατος ἀεὶ φαίνηται, εἰς
ἀριθμὸν τινα ἐγκριτέον senten
tiam Glauconis quaestione ἐν τίνι
ἡλικίᾳ interruptam denuo susci
piat et absolvat. Ficinus parti
culam neglexit.

ἐν τῶν — οὗτος φύσεως. C.]
adhibuit Theo Sm. de arithm.
p. 6. Geld.

εἶνοσιν ἐτῶν] εἶνοσι καὶ πέντε
ἐτῶν Theo, quod ex ἡ ἐτῶν,
quemadmodum in Vind. B. Mon.
C. scriptum est, perperam gemi
nato εἰ ortum videtur. Gravius
est quod Vind. F. εἶνοσιετῶν ex
hibit, cuius ductu nescio an εἰ
νοσιετῶν Platoni restituendum
fuerit. Pariter enim durum τὰ
εἶνοσιν ἔτη vicenarios atque articulo
a nomine divulso τὸν εἶ
νοσιν ἐτῶν eos, ex quibus optimi
eligendi sint, dictos statuere, si
cuti Leg. L. IIII. p. 721. A. et
B. ἐπειδὴν ἐτῶν ἡ τις τριάκον
τα, et L. VI. p. 755. A. πεντή^{κοντα} γεγονώς ἐτῶν dicitur. Quo
rum si tamen alterutrum propter
codices subeundum est, prius
praetulerim, ut ἀντίστροφον hoc
idioma illius sit, quo L. V. p. 460.
E. mulier ἀπὸ εἶνοσιετίδος μέ
χοι τεταρακονταέτιδος τίκτειν,
vir μέχοι πεντεκαιπεντηκονταέ
τον γεννᾶν τῇ πόλει iubentur.
Cf. p. 540. E.

μείζους] post τῶν ἄλλων Theo.

χύδην μαθήματα] χύδημα θή-
ματα Vind. F. χύδην μαθήματα
codices Paris. Theonis.

παισιν] πᾶσιν Theo. παισι
Vind. F. Flor. R.

ἀδύνατός τι ἄλλο πρᾶξαι· πόποι γὰρ καὶ ὕπνοι μαθημασι πολέμιοι· καὶ ἄμα μία καὶ αὕτη τῶν βασάνων οὐκ ἐλαχίστη, τίς ἔκαστος ἐν τοῖς γυμνασίοις φανεῖται. Πῶς γὰρ οὕκ; ἔφη. Μετὰ δὴ τοῦτον τὸν χρόνον, ἦν δ' ἔγα, ἐκ τῶν εἴκοσιν ἑτῶν οἱ προνοιδέντες τιμάς τε μείζους τῶν ἄλλων οὖσονται, τά τε χύδην μαθήματα παιδὶν ἐν τῇ παιδείᾳ C

— ἐν] ὁμ. Vind. F. Flor. R. Ang. B.

παιδείᾳ παιδείᾳ Theonis codd. Paris. παιδίᾳ eiusdem edd. et Mon. B. παιδίᾳ Par. DK. sec. Bekk. Flor. U. Totidem modis discrepantes in hoc nomine libros vidimus Vol. I. p. 209, b. Atque illo loco ambiguum non erat, quin παιδείᾳ verum et sermo de institutione puerorum esset, hoc nostro vero pueritiae significatio non inepta est, eaque non solum Theo, si πᾶσιν pro παισὶν scripsit, haud dubie est usus, sed etiam Plato, quamquam παισὶν scripserat, uti potuit ita, ut unam notionem duobus nominibus declararet, quemadmodum alibi fecit, velut Criton. p. 45. D: οἵτε περ εἰώθε γίγνεσθαι ἐν ταῖς ὀρφανίαις περὶ τὸν ὀρφανούς. Itaque cum Theone et Mon. B. scribi h. l. παιδίᾳ poterit, si pueritiam eo nomine appellatam fuisse statuimus. Quod quum Budaeus primum ob locum quandam Platonis L. VIII. de Legibus sibi probabile videri demonstrasset, Stephanus in thesauro T. III. p. 14. E. nomen παιδίᾳ secundum Budaeum recepit et Platonis loco, qui est p. 864. D., in verbis ή γῆρας ὑπερομέτρως ἔννεκόμενος η παιδείᾳ χρώμενος pro παιδείᾳ, quae antecedentium quatuor editionum lectio erat, „in exempl. vet.“ repertum παιδίᾳ reposuit, et in adnot. p. 38. etiam in aliis „huius operis“ locis perperam παιδείᾳ pro παιδίᾳ legi monuit, ad L. VII. p. 808. E. ut videtur, respiciens, ubi non quidem παιδείας, sed παιδίᾳς ante ipsum legebatur in verbis παιδίᾳς καὶ νηπιότητος χάριν,

et fortasse ad Polit. p. 268. E. quo loco ad verbā οὐ πολλὰ ἐνφεύγεις παιδίᾳς ἔτη in margine „omnino παιδίᾳς, quum de pueritia seu puerili aetate intelligatur, non παιδίᾳς scribendū“ observaverat. Atque hanc Stephani sententiam lexicographi in sequentes amplexi παιδίᾳ in ordinem receperunt et pueritiam interpretati sunt, alii, ut Casaubonus ad Athenaci L. VII. p. 323. C. et Dorvillius ad Charit. p. 405. eam vocem omnino Graecam esse negarunt. Sed Atticos παιδίᾳ dixisse quae communi lingua παιδίᾳ vocaretur, Etymologus p. 657, 50. et Suidas et e Suida corrigendus Aristophanis scholiastes ad Plut. 1057. memoriae prodiderunt, quorum testimonio Hemberthusio quoque et Dobreo probato haud exiguum pondus accedit e loco Epinom. p. 975. D: τό γε μετὰ τοῦτο παιδίᾳ τις ἀν λείποντο μιμητικὴ μὲν τὸ πλεῖστον, ἀλλ' οὐδαμῆ σπουδαῖα. ubi optimi codices παιδίᾳ, ceteri cum Stephano παιδείᾳ exhibit, nec nihil ex eis, quibus quum eandem ludi iocique significacionem requirant, in codicibus tamē omnibus vel plerisque παιδείᾳ legitur, quod quidem ex παιδίᾳ facilius, quam ex παιδίᾳ oriri potuit. Tales sunt Polit. p. 307. D. Leg. L. X. p. 889. D. Epist. VI. extr. Saltem hactenus igitur παιδίᾳ Graecum esse concedi debebat. Verum amplius concedendum et non Atticis tantum propriam eam dictiōnem fuisse puto. Etenim Athenaeus l. c. de accentu vocabuli σηπίας disputans ὡς αἰτίας, inquit, η παραλήγουσα ὀξύνεται, ὡς Φι-

γενόμενα τούτοις συναπτέον εἰς σύνοψιν οἰκειότητος ἀλλήλων τῶν μαθημάτων καὶ τῆς τοῦ ὄντος φύσεως. Μόνη γοῦν, εἰπεν, ἡ τοιαύτη μάθησις βέβαιος ἐν οἷς ἂν ἐγγένηται. Καὶ μεγίστη γε, ἦν δ' ἐγὼ, πεῖρα διαλεκτικῆς φύσεως καὶ μή. ὁ μὲν γὰρ συνοπτικὸς διαλεκτικὸς, ὁ δὲ μὴ οὕ. Ξυνοίομαι, ἥδ' ὅς. Ταῦτα D τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, δεήσει σε ἐπισκοποῦντα οὐ ἂν μάλιστα τοιοῦτοι ἐν αὐτοῖς ὥσι καὶ μόνιμοι μὲν ἐν μαθήμασι, μόνιμοι δ' ἐν πολέμῳ καὶ τοῖς ἄλλοις νομίμοις,

λήμων ἴστορεῖ· ὅμοιως οὐλ ταῦτα· παιδία, τανία, οίνα. Haec ita demum recte coniuncta et ad propositum apta haberi possunt, si pariter omnibus Graecis communia pariterque certo accentu praedita erant. Iam quum utroque Platonis de Legibus loco L. VII. et VIII. pueritiam a scriptore designatam esse pateat, παιδεῖαν autem et παιδιάν usus linguae innumeris documentis extra dubitationem positus aliter, quam institutionem eruditionemque et ludum iocumque interpretari vix patiatur, παιδία vero a παις ad pueri habitum et conditionem significandam sic derivari potuerit, ut ἀνδρία ab ἀνήρ et οὐδενία (Theaet. p. 176. C.) ab οὐδείς, denique Hippocrates προσδόχητ. L. II. T. I. p. 231. Kühn. nomine παιδίη de eadem re usus sit, (γίνεται δὲ τὸ νούσημα τοῦτο οἶσιν ἐν τῇ παιδίῃ τε καὶ νεότητι ἔννηθες ἐὸν αἷμα φεῦν ἐπ τῶν ἔινῶν πέπανται.) codicibus aliquam tamen optionem inter παιδεῖαν, παιδιάν et παιδεῖαν dantibus hoc quamvis in paucioribus neque optimis (L. VII. in Ven. B. et int. vers. Vat. C. Flor. A. L. VIII. in Flor. CMW.) reperturnum nihilo minus praferendum et nomen idem, quod Athenaeus in animo habebat, ea, quae Budaeo et Stephano placuit, significatione bis a Platone positum videtur. Ac libro quidem VII. etiam Bekkerus παιδίας tenuit, sed VIII. παιδείᾳ scripsit, for-

tasse Photii auctoritate inductus, qui παιδεῖαν παιδικὴν ήλικίαν interpretatur; cuius glossam ego vel corruptam et in παιδίαν mutantam vel corruptis locis, quales permulti sunt, enatam, denique non pluris, quam a Bekkerio anecd. 296, 21. e lexico rhetorico editam: παιδία· τῆς ἐν παισὶν ήλικίᾳς faciendam censeo. Nostro tamen loco quum παιδεία satis commodum sit et αὐτῷ nullo negotio subaudiatur, codices optimos plurimosque sequi præstat.

[γενόμενα] γιγνόμενα Lob. Vat. BM.

[συναπτέον] συνταπτέον Mon. B. Flor. U.

[σύνοψιν] σύναψιν Mon. C. Pollux L. VI. 159: Πλάτων δὲ συμμαθητὰς ἔφη, οὐλ σύνοψιν οἰκειότητος.

[οἰκειότητος] οἰκειότητός τε Vind. F. Ang. B. Flor. R. Theo.

[γοῦν] οὖν Flor. T. om. Fic.

[Καὶ μεγίστη] μεγίστην Mon. C.

[γε] om. Ven. B. Vind. E. Vat. H. Flor. ACT.

[πεῖρα] πεῖρα Vind. F.

[γὰρ] om. Flor. R.

[Ξυνοίομαι] Teneo equidem Fic.

[δεήσει σε] δεήσεις Vind. F.

δεήσει Ang. B.

[ἐπισκοποῦντα] ἐπισκοποῦντα Mon. B.

[οὐλ ἀν] ol ἀν Ald. Bas. ab. D

ολαν Vind. F. olol ἀν Lob. Vat. BM.

[τοιοῦτοι] τοιοῦτον Vind. F.

τούτους αὖ, ἐπειδὴν τὰ τριάκοντα ἔτη ἐκβαίνωσιν, ἐκ τῶν προκρίτων προκρινάμενον εἰς μείζους τε τιμᾶς καθιστάναι καὶ συοπεῖν τῇ τοῦ διαλέγεσθαι δυνάμει βασανίζοντα, τις ὄμμάτων καὶ τῆς ἄλλης αἰσθήσεως δυνατὸς μεθιέμενος ἐπ' αὐτὸν τὸ δὲ μετ' ἀληθείας λέναι. καὶ ἐνταῦθα δὴ πολλῆς φυλακῆς ἔργον, ὡς ἐταῖρε. Τί μάλιστα; ηδὸν δέ. Οὐκ ἐννοεῖς, ἦν δὲ ἐγὼ, τὸν νῦν περὶ Εἰ τὸ διαλέγεσθαι πακόν γιγνόμενον δόσον γίγνεται; Τὸ ποῖον; ἔφη. Παρανομίας που, ἔφην ἐγὼ, ἐμπίπλαται.

μόνιμοι δ'] μ. δὲ Vind. BF.
Mon. C.

καὶ τοῖς] Ita Vind. BE. Mon. C. Flor. ACRTV. καὶ ἐν τοῖς Lob. Vind. F. Mon. B. Flor. U. cum editionibus ante Bekkerum, qui in comm. καὶ τοῖς in Par. A. Ven. B. Vind. B. Vat. H. omitti, in reliquis et apud Stephanum καὶ ἐν τοῖς legi scribens in priori adnotationis parte haud dubie eravit et quatuor illos libros non haec tria vocabula, sed medium eorum omittere seque eorum auctoritatem secutum demonstrare voluit.

τούτους] post αὐτὸν Vat. M. τούτους Lob. Vat. B. Ven. C. Par. K. Flor. ACU. Ald. Bas. ab. et a m. s. Mon. B. (a m. pr. τούτους.)

προκρίτων] om. Mon. B.

προκρινάμενον] προκρινάμενων Vind. B. Mon. C.

καθιστάναι] καθιστᾶναι Vind. F.

βασανίζοντα] βασανίζονται idem. βασανίζοντας Mon. B. Par. K. sec. Bekk. Flor. U. Ald. Bas. ab.

ὄμμάτων] ὄμμα. τε Vind. EF. Flor. ACRT. (Ven. B. Ang. B.) editi ante Bekkerum.

δυνατὸς] post μεθιέμενος Steph. Ast. pr. sec.

μεθιέμενος] μεθιέμενος Bas. b.

ἐπ' αὐτὸν] ἐπαντὸν Vind. F.

καὶ] om. Ang. B.

πολλῆς] Prius λ. Mon. B. int. vers. a m. s. habet.

ἐννοεῖς] In Mon. C. alterum
ν int. vers. est.

καὶ δὲ] καὶ δὲ Par. A. Vind. E. BE. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV. Sed ironiae hic non erat locus, et frequens ista in deterioribus libris confusio est, quam hic in optimo factam videamus.

γιγνόμενον] γιν. Lob. Mon. C. γίγνεται] γίν. Mon. C.

ἐμπίπλαται] ἐμπίπλασθαι Vind. E. et margo Mon. B. in quo a m. s. ὅθι pro τι, quod contextus exhibet, scriptum est. ἐμπίπλαται Vind. B. Mon. C. Vat. H. Flor. ACRTV. idque Stallbaumius ab Astio in tert. commendatum recepit et Ficini auctoritate munivit, qui Socratem *Iniquitate prorsus abundant respondentem fecit*. Pluralis ad sequentia et ad pronomen αὐτὸν haud dubie aptior est singulari, sed magis respicienda sunt antecedentia, in quibus quum Socrates ita locutus esset, quasi ipsi dialectae, quemadmodum tunc opera ei daretur, magnum malum accideret, consentaneum erat malum sciscitanti Glauconi item ut inhaerens dialecticae ostendere eamque iniquitatis, qua adolescentes impleret, ipsam plenam dicere.

Ceterum hoc periculum una cum remedio infra p. 539. B. commendato aliquoties secundum hos locos memoravit Proclus in Parmen. T. III. p. 41: τὴν διαλέπτικὴν μηδαμῶς προσῆκειν παραδίδοσθαι νέοις, ὡς ὁ Σωκράτης ἐν Πολιτείᾳ φησι, μὴ λάθω-

Καὶ μάλα, ἔφη. Θαυμαστὸν οὖν τι οἶει, εἶπον, πά-
σχειν αὐτοὺς καὶ οὐ ἔνγγιγνώσκεις; **Πή** μάλιστ'; ἔφη.
Οἶν, ἦν δ' ἐγὼ, εἴ τις ὑποβολιμαῖος τραφείη ἐν πολ-
538 λοῖς μὲν χρήμασι, πολλῷ δὲ καὶ μεγάλῳ γένει καὶ κό-
λαξι πολλοῖς, ἀνὴρ δὲ γενόμενος αἴσθοιτο, διὰ οὐ τού-
των ἐστὶ τῶν φασκόντων γονέων, τοὺς δὲ τῷ ὄντι γεν-
νήσαντας μὴ εὔροι, τοῦτον ἔχεις μαντεύσασθαι, πᾶς
ἄν διατεθείη πρός τε τοὺς οὐλακας καὶ πρὸς τοὺς ὑπο-
βαλομένους ἐν ἐκείνῃ τε τῷ χρόνῳ, ὃ οὐκ ἔδει τὰ περὶ 490
τῆς ὑποβολῆς, καὶ ἐν ᾧ αὐτὸν ἔδει; η̄ βούλει ἐμοῦ μαν-
τευομένου ἀκοῦσαι; Βούλομαι, ἔφη. Μαντεύομαι τοίνυν,
εἶπον, μᾶλλον αὐτὸν τιμῆν ἄν τὸν πατέρα καὶ τὴν
B μητέρα καὶ τοὺς ἄλλους οἰκείους δοκοῦντας, η̄ τοὺς
οὐλακεύοντας, καὶ ἡττον μὲν ἄν περιιδεῖν ἐνδεεῖς τινὸς,

σιν εἰς παρανομίαν ἐλάσαντες.
p. 77: καὶ τὸν ἐν Πολιτείᾳ Σω-
νοάτην παραπελεύεσθαι νέοις ού-
σι μὴ παραδιδόνται τοὺς διακε-
πτιους λόγους, μὴ πως λάθωσιν
εἰς παρανομίαν ὑπὲρ αὐτῶν προ-
αγχθέντες, ὃ δὴ φιλοῦσιν οἱ νέοι
πάցειν ἀρτι γενεσάμενοι τῶν λο-
γικῶν θεωρημάτων. T. V. p. 269:
τῆς διακεπτικῆς — νέοις οὐ πα-
ραδοτέας, ὡς αὐτὸς ἐν Πολι-
τείᾳ λέγει, μή πῃ λάθωσιν εἰς
παρανομίαν ἐλάσαντες. et p. 270;
τὸ δὲ ἐν Πολιτείᾳ μὴ παραδιδό-
ναι νέοις τὴν διακεπτικὴν ἀληθῆς
μὲν, ἔχει δὲ αἰτίαν εὐλόγιστον,
διότι τοὺς ἐκεῖ παιδευομένους
νέοντας ἀνώμαλον ἔχειν ἀνάγκη
τὴν φύσιν καὶ οὐ πάντως ἀρι-
στην, καὶ διὰ τοῦτο δέος εἶναι,
μὴ καὶ τινες αὐτῶν εἰς τὴν εἰρη-
μένην παρανομίαν ἐλάσωσι.

μάλα] μάλ' Vind. F. Ang. B.
εἶπον] om. Vind. E. Mon. C.
Vat. M.

ἔνγγιγνώσκεις] ἔνγγιγνώσκειν
Vind. F. Ang. B. ἔνγγιγνώσκεις
Lob. Vind. BE. Mon. BC. (hic
ἔνγγιγν.) Ald. Bas. ab. Steph.
(Flor.) tacentibus Bip. Etiam
Bekkerus tacet. Cf. huius Vol.
p. 99. sq.

Πή] πᾶς Par. K.

μάλιστ'] μάλιστα Lob. Vind.
BE. Mon. C. Flor. ACTV.
καὶ οὐλαξι] καὶ om. Vat. B. 538
et ad κόλαξι a m. s. additum δὲ
habet.

ἀνὴρ δὲ] δὲ om. Lob. Mon.
B. Vat. BM. Ven. C. Par. DK.
sec. Bekk. Flor. U.

γενόμενος] γεν. καὶ Flor. AC.
ἐστὶ] ἐστι Vind. F. Stallb.
sec.

τῷ ὄντι] τωόντι Vind. E. Mon.
C.

ἔχεις] ἔχοις Mon. B.

καὶ πρὸς] πρὸς om. Vind. E.

ὑποβαλομένους] ὑποβαλλομέ-
νους Lob. Vind. BEF. Mon. BC.
Vat. BM. Ver BC. Par. DK.
sec. Bekk. Ang. B. Flor. ACRTV.
Ald. Bas. ab. Itaque perpauci-
restant lectionis a Stephano pro-
fectae assertores, Par. A. Vat.
H. Flor. U. et ne hi quidem per
silentium Bekkeri Stallbaumique
satis certi, quum etiam Mon. B.
silentio a Bekkerio praetermissus
tamen ὑποβαλλομένους habeat.
Ac nescio an qui suppositum sibi
ali quando filium pro suo habere
et venditare pergit, eodem mo-
do ὑποβαλλόμενοι dici potuerint,
quo Vol. I. p. 301. veteres legis-
latores καθιστάντας μουσικῇ καὶ

ἥττον δὲ παράνομόν τι δοᾶσαι η̄ εἰπεῖν εἰς αὐτοὺς,
ἥττον δὲ ἀπειθεῖν τὰ μεγάλα ἐκείνοις, η̄ τοῖς κόλαξιν,
ἐν φῷ χρόνῳ τὸ ἀληθὲς μὴ εἰδείη. Εἶνὸς, ἔφη. Αἰσθό-
μενος τούτου τὸ δὲν, μαντεύομαι αὖ περὶ μὲν τούτους
ἀνεῖναι ἀν τὸ τιμῆν τε καὶ σπουδάζειν, περὶ δὲ τοὺς
κόλακας ἐπιτεῖναι καὶ πειθεσθαί τε αὐτοῖς διαφερόντως,
η̄ πρότερον, καὶ ξῆν ἀν ἥδη κατ’ ἐκείνους, ξυνόντα C
αὐτοῖς ἀπαρακαλύπτως, πατρὸς δὲ ἐκείνου καὶ τῶν ἀλ-
λῶν ποιουμένων οἰκείων, εἰ μὴ πάντα εἴη φύσει ἐπιεικῆς,
μέλειν τὸ μηδέν. Πάντ’, ἔφη, λέγεις οἵα περ ἀν γένοιτο.
ἄλλὰ πῆ πρὸς τοὺς ἀπτομένους τῶν λόγων αὕτη φέρει
η̄ εἰκών; Τῇδε. ἔστι που ἡμῖν δόγματα ἐκ παϊδῶν περὶ^C
δικαίων καὶ καλῶν, ἐν οἷς ἐκτεθράμμεθα ὥσπερ ὑπὸ^C
γονεῦσι, πειθαρχοῦντές τε καὶ τιμῶντες αὐτά. "Ἔστι

γυμναστικὴ παιδεύειν dictos esse
vidimus. Itaque si Par. A. au-
ctoritas ad reliquos accesserit,
praesens restituendum erit.

φ] ἐν φ Ven. B. cum editis
ante Bekkerum.

οὐν ἥδει] οὐν εἰδει Vind. F.
ἢ] εἰ idem. η̄ οὐ Lob. Vat.
BM.

αὐτὸν] post τιμῆν ἀν Vind. F.
Ang. B.

πατέρᾳ] π. τε iidem et Flor...
(R?)

B. η̄] η̄ καὶ Vat. B.

ἐνδεεῖς] ἐνδεοῦς Vat. M. et
corr. Lob. (ante corr. ἐνδεεῖς)

δοᾶσαι] δοᾶσαι Lob. Vind. EF.
Mon. BC. editiones ante Bekke-
rum.

η̄ εἰπεῖν εἰς αὐτοὺς] om. Flor.
T. In Lob. καὶ pro η̄ legitur.

μὴ] οὐν Ang. B. om. Lob.
Vind. F. Ven. C. Par. DK. Vat.
M. et a m. pr. B. et Mon. B.
quorum in priori a m. s. ante
τὸ ἀληθὲς insertum, in poste-
riori hoc loco item a m. s. int.
vers. subscriptum est.

Aἰσθόμενος etc.] Cf. Vol. I.
p. 377. sq.

αὐ] αὐ. Vind. B.

τούτους] τούτου τοὺς Vind.
F.

ἀνεῖναι] ἀνεῖ superscripto a
m. s. ναι, Mon. B.

τιμῆν τε] τε om. Mon. C.
ἀπαρακαλύπτως] ἀπανακαλύ-
πτως Mon. B.

ποιουμένων] Conf. huius Vol.
p. 193.

εἴη] post φύσει Vat. M.
φύσει] φύσις Vind. E. Vat. H.
Flor. RT.

μέλειν] μέλλειν Vind. F. Ang.
B. μέλλει Lob. μέλει Vat. M.

τὸ] om. Lob. Vat. BM.
πρὸς τοὺς ἀπτομένους] Ita
Par. A. Vind. BEF. Mon. C.
Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV.

προσαπτομένους Lob. Mon. B.
Par. DK. sec. Bekk. Ven. C.
Vat. M. Flor. U. προσαπτομένους
Vat. B. προσαπτομεν οὐς Ven.
B. Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr.

πρὸς ἀπτομένους Ast. sec.

τῶν] In Vat. B. ν int. vers.
superscriptum.

Τῇδε] πῆ δὴ Vind. E.

ἐκτεθράμμεθα] ἐκτεθράμμεθα
Vind. B. Mon. C. ἐκτεθράμμεθα
Flor. T.

ὑπὸ γονεῦσι] ὑπογ. Vind. E.
ἐπὶ γ. Ang. B.

αὐτά.] αὐτά; Mon. B. Ald.
Bas. ab.

D γάρ. Ούκοῦν καὶ ἄλλα ἐναντία τούτων ἐπιτηδεύματα ἥδονὰς ἔχοντα, ἂν πολακεύει μὲν ἡμῶν τὴν ψυχὴν καὶ ἔλκει ἐφ' αὐτὰ, πειθεῖ δ' οὐ τὸν καὶ ὀπηοῦν μετοίους· ἀλλ' ἐκεῖνα τιμῶσι τὰ πάτραια καὶ ἐκείνοις πειθαρχοῦσιν. "Εστι ταῦτα. Τί οὖν; ἦν δ' ἐγώ· ὅταν τὸν οὔτως ἔχοντα ἐλθὸν ἐρώτημα ἔργται, τί ἐστι τὸ παλὸν, καὶ ἀποκριναμένον ὃ τοῦ νομοθέτου ἡκουεν, ἐξελέγχῃ δὲ λόγος καὶ πολλάκις καὶ πολλαχῆ ἐλέγχων εἰς δόξαν καὶ ταβάλῃ, ὡς τοῦτο οὐδὲν μᾶλλον παλὸν, ἢ αἰσχρὸν, καὶ περὶ δικαίου ὠσαύτως καὶ ἀγαθοῦ καὶ ἀ μάλιστα ἥγεν

D ἄλλα] ἄλλως Vat. B.

ἐναντία] ἐναντίω Vind. E.

ἥδονὰς ἔχοντα] ἔχ. ἥδ., sup.

β α, Mon. C.

πολακεύει] πολακεύειν Vind. F.

Vat. H.

ἡμῶν] ἡμῖν Vind. F. Ang. B. om. Mon. C. αὐτῶν Bas. b. Cf. ad p. 518. C. adscripta, quibus addo L. III. p. 411. D: εἰ τι καὶ ἐνήν αὐτοῦ φιλομαθὲς ἐν τῇ ψυχῇ.

ἐφ' αὐτὰ] Ita Par. A. Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H. Flor. ACRT. ἐφεντὰ Vind. F. ἐφ' ἐαντὰ reliqui codices. Id Bekkerum una cum ceteris editoribus tenuisse et optimo codici refragatum esse eo magis miror, quo saepius eum ab eodem vel solo vel paucos habente comites trisyllabum recepisse video, veluti infra L. VIII. p. 550. B. et Tim. 34. A. 69. C: ἐν ἐαντῷ. Tim. p. 29. E: παραπλήσια ἐαντῷ. 44. B: τὴν ἐαντῶν. 49. D: τις ἐαντόν. 81. C: τῶν ἐαντῆς. Leg. III. 687. D: ἐκεῖνοι ἐαντοῖσιν. V. 731. D: πᾶς ἐαντῷ. quibus omnibus locis scriptori quidem, si is trisyllabum praetulit, caussas quasdam preferendi fuisse easque in numero potissimum et in sono quaerendas esse concedo, nobis vero eas ubique inventire inventisque pro norma uti aut aurium nostrarum iudicio plus, quam codicum auctoritati tribuere licere nego. Nam id ipsum, quod numerosius cadere suaviusve sonare eruditiores omnes consen-

tiant, nonnunquam ut nimis artificiosum improbari a scriptore potuit. Itaque singulorum locorum scriptura secundum codices instituenda est, quorum ex observatione haec collegi, Platonem in dictioribus e reflexivo et personali pronomine compositis bisyllabum potius, quam trisyllabum usurpavisse et αὐτὸς αὐτοῦ, αὐτὸς καθ' αὐτὸν et similia frequentius, quam ἔαν dixisse, hoc tamen, ubi homoeoteleuton et nullum vocabulum interpositum esset, praetulisse et αὐτὸς ἐαντὸς, αὐτοὺς ἐαντοὺς etc. ut Phaedon. 61. E. 62. A. C. raro αὐτὸς αὐτὸς etc. ut Phaedr. 246. D. scriptis, porro, quum bis deinceps reflexivo utendum esset, plerunque et tamen non semper (vid. L. VIII. p. 553. B.) eodem vel bisyllabo vel trisyllabo utrobique usum esse, ut Tim. 33. C. ἐν ἐαντῷ καὶ ὡφ' ἐαντοῦ. 32. B: τά τε μεθ' ἐαντῆς ἔννοειν καὶ ἐαντίν. Critia 120. B: αὐτῷ καὶ τῷ αφ' αὐτοῦ. in ceteris vero dictioribus, qualis haec nostra est, nullam legem certa formula comprehendendam observassé, sed librariis quibusdam, ut Lob. Vat. BM. trisyllabum, aliis, ut Clarkiano, bisyllabum magis placuisse. Iam quum Par. A. quoque ad prius inclinare videatur, eo certior quum alibi tum h. l. a nullo asseclarum suorum constitutis duosque diversae familiæ adscriptos consentientes habens bisyllabi auctor existimandus est.

ἐν τιμῇ, μετὰ τοῦτο τί οἶει ποιήσειν αὐτὸν πρὸς αὐτὰ τιμῆς τε πέρι καὶ πειθαρχίας; Ἀνάγκη, ἔφη, μήτε τιμὴν ἔτι δυοῖς μήτε πείθεσθαι. Ὁταν οὖν, ἦν δ' ἐγὼ, μήτε ταῦτα ἥγηται τίμια καὶ οἰκεῖα ὥσπερ πρὸς τοῦ, τά τε ἀληθῆ μὴ εὑρίσκῃ, ἔστι πρὸς ὅποιον βίον ἄλλον, ἢ τὸν 539 πολακεύοντα εἰκότως προσχωρήσεται; Οὐκ ἔστιν, ἔφη. Παράνομος δὴ, οἶμαι, δόξει γεγονέναι ἐκ νομικοῦ. Ἀνάγκη. Οὐκοῦν, ἔφην, εἰκὸς τὸ πάθος τῶν οὕτω λόγων ἀπτομένων, καὶ δὲ ἄρτι ἐλεγον, πολλῆς συγγνώμης ἄξιον; Καὶ ἐλέου γ', ἔφη. Οὐκοῦν ἵνα μὴ γίγνηται δ

πείθει] πείθε Vind. B.

δέ] δὲ Vind. E.

όπηοῦν] ὅποιοῦν Lob. Mon. C. Vat. BM. Par. K.

πειθαρχοῦσιν.] πειθαρχοῦσιν; Mon. B.

ἔλθον] ἔλθων Vind. B. Mon. C. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. R. Hos videtur adventus quaestio[n]is male habuisse. Recordari debebant ἔλθόντος τοῦ λόγου L. III. p. 402. A.

ἔργηται] om. Lob. Vat. BM. εἰρηται (Par. K.) editi ante Bekkerum.

ἀποκρινάμενον] Ita Par. ADK. Wind. BEF. Mon. B. Ven. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTUV. ἀποκρινάμενον cum ov super ov Lob. ἀποκρινάμενον Mon. C. ἀποκρινάμενον Ven. B. Vat. BM. cum editis. respondentem Fic. Genitivum ut defendam, vix opus est; si tamen est opus, confer L. VIII. p. 590. D: ὡς ἄμεινον οὐ παντὶ ὑπὸ θείου καὶ φρονίμου ἔσχεσθαι, μάλιστα μὲν οἰνεῖον ἔχοντος ἐν αὐτῷ, εἰ δὲ μὴ, ἔξωθεν ἐφεστῶτος. et Schaeferum ad Lamb. Bosium p. 50. sq.

ῆκουσεν] ἤκουσεν Vind. BE. Mon. C. Ven. B. Vat. H. Flor. ACV. Non semel ille audiverat. ἔξελέγχη] ἔξελέγχοι Lob. ἔξελέγχει Ven. B. ἔξελέγξει Vind. B. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV. οὐκ ἔλέγχη Par. K.

καὶ πολλαχῇ] om. Par. K. καὶ πολλαχῷ Flor. U. καὶ πολλαχῇ Vind. F. καὶ πολλαχῇ Ald. καὶ πολλαχῇ Bas. ab. (recentiores.)

καταβάλῃ] καταλάβῃ Par. A.

Vind. B. (hic commate anteposito.) Mon. C. Vat. H. Flor. AC. καταβάλλῃ Lob. Mon. B. Ven. C. Vat. M. Flor. U. καταβάλλει Vat. B.

ώσεύτως] post καὶ ἀγαθοῦ E. Vind. B. Mon. C.

μετὰ τοῦτο] μετάτοῦτο Mon. B. Ald. Bas. ab.

πέρι] περὶ Vind. E.

ἥγηται] ἥγηται Vind. F.

πρὸς τοῦ] προτοῦ Mon. BC.

Steph. Ast. pr. πρὸς τοῦ Bas. b.

εὑρίσκῃ] εὑρίσκει Vind. F.

πρὸς ὅποιον] προσπεισθεὶς idem.

βίον] βίον Ald. βίς Bas. ab.

δόξει] δόξεις Lob. Vat. BM. 539 δόξει γε Vind. B. Vat. H.

ἐκ] om. Bas. b.

νομικοῦ] νομίμον Vind. BEF.

Mon. C. Ven. B. Ang. B. Vat. H.

Flor. ACRTV. Bas. b. Ast. sec.

tert. Stallb. (ex) iusto Fic. Quem-

admodum Leg. L. I. p. 625. A. in verbis ἐπειδὴ δὲ ἐν τοιούτοις ἥθεσι τέτραφθε νομικοῖς mores a legibus originem ducentes legibusque constituti ἥθη non, ut plerumque, νόμιμα, sed νομικὰ appellantur, ita non solum vita et ratio agendi legibus accommodata, sed etiam vir, qui ea utitur, νομικὸς appellari potuit, a legibus pendens, ein gesetzlicher.

συγγνώμης] συγγνώμης Mon.

BC.

ἄξιον;] ἄξιον. Ald. Steph.

ἐλέου] ἐλέους Vind. BE. Mon.

C. Ven. B. Vat. H. Flor. ACV.

ἔλεος οὗτος περὶ τοὺς τριακοντούτας σοι, εὐλαβουμένῳ παντὶ τρόπῳ τῶν λόγων ἀπτέον; Καὶ μάλ’, ηδ’ ὅς.
 B Ἄρ’ οὖν οὐ μία μὲν εὐλάβεια αὕτη συχνὴ, τὸ μὴ νέους ὄντας αὐτῶν γεύεσθαι; οἷμαι γάρ σε οὐ λεληθέναι, ὅτι οἱ μειονάσκοι, ὅταν τὸ πρῶτον λόγων γεύωνται, ὡς παιδιᾶς αὐτοῖς παταρῷωνται, ἀεὶ εἰς ἀντιλογίαν χρώμενοι, καὶ μιμούμενοι τοὺς ἔξελέγχοντας αὐτοὶ ἄλλους ἔλέγχουσι, χαίροντες ὥσπερ σκυλάκια τῷ ἔλκειν τε καὶ σπαράττειν τῷ λόγῳ τοὺς πλησίους ἀεί. Τπερφωδός μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκοῦν δταν δὴ πολλοὺς μὲν αὐτοὶ ἔλέγξω-
 C σιν, ὑπὸ πολλῶν δὲ ἔλεγχοῦσι, σφόδρα καὶ ταχὺ ἐμπίπτουσιν εἰς τὸ μηδὲν ἥγεῖσθαι ὥσπερ πρότερον· καὶ ἐκ τούτων δὴ αὐτοὶ τε καὶ τὸ ὄλον φιλοσοφίας πέρι εἰς

τριακοντούτας] Ita Par. A. Vind. BEF. Mon. C. Vat. BH. Ven. C. Flor. ACV. et cum εἰς super ας Lob. *τριακοντά* Bas. b. *τριακοντούσεις* Mon. B. *τριακοντότεις* reliqui cum editis ante Bekkerum. Grammaticis apud Atticos haec heteroclita et ad primam declinationem traducta fuisse testantibus codices et hic et Leg. L. II. p. 670. A. *τριακοντούτας*. et *πεντηκοντούτας* exhibentes adstipulantur, qua de re Buttmannus gramm. I. p. 210. et Lobeckius ad Phryn. p. 408. adhuc dubitabant. Sed in addendis Buttmannus (II. 403.) horum locorum ratione habita fidem grammaticis habere coepit, Choe-roboscum vero (apud Bekkerum anecd. ind. in ἔτος) pluralem tantum heterocliton agnoscere statuit, qui tamen p. 1376, 10. ἀπὸ τοῦ *τριακονταέτης* *τριακονταέτου* femininum *τριακονταέτις* Atticos fecisse docet.

σοι,] Ita Bekkerus et in sec. Stallbaumius. σοι cum commate post εὐλαβουμένῳ Ald. Bas. ab. σοι cum eadem distinctione Stephanus. Astius et in pr. Stallbaumius post οὗτος incisionem fecerunt. γίγνεσθαι necessario cum περὶ iungendum, et quum non de omnibus tricenariis, sed de electis a legislatore optimis

sermo sit, σοι ad τριακοντούτας referendum et ad εὐλαβουμένῳ iterum ut encliticum subaudiendum videtur.

τρόπῳ] λόγῳ Lob. Vat. M. ἀπτέον,] ἀπτέον. editi ante Astii sec.

μάλα] μάλα Vind. BEF. Mon. C. Ἄρο] Ἄρο Vind. F.

οὐ μία] οὐδεμία Vind. B. Mon. C. Vat. H. Flor. ACV. οὐδὲ μία Vind. E.

γεύεσθαι] evanuit in Vind. F. B Locos Proeli huc pertinentes ad p. 537. E. adscripsi.

τὸ πρῶτον] τοπρῶτον Lob. Wind. BE. Ald. Bas. ab. Steph.

γεύωνται] γεύονται Bas. b.

παιδιᾶς] παιδεία Vind. F. παιδία Ven. C. Vind. E. Conf. ad p. 537. C. de hoc nomine dicta.

ἀεὶ] om. Ven. B.

καὶ σπαράττειν] καὶ om. Mon. C. — Plutarchus ab Astio citatus mor. p. 78. E: πάντες γὰρ, ὡς ἀπλῶς εἰπεῖν, οἱ ἀρχόμενοι φιλοσοφεῖν τοὺς πρὸς δόξαν (sc. λόγους) διώκοντει μᾶλλον, οἱ μὲν ὥσπερ ὅρνιθες ἐπὶ τὴν λαμπρότητα τῶν φυσικῶν καὶ τὸ ὑψος ὑπὸ κονφότητος καὶ φιλοτιμίας καταίροντες, οἱ δὲ ὥσπερ τὰ σκυλάκια, φῆσιν δὲ Πλάτων, τῷ ἔλκειν καὶ σπαράττειν χαίροντες ἐπὶ τὰς ἔριδας καὶ τὰς ἀπορίας καὶ τὰ σοφίσματα χωροῦσιν.

τοὺς ἄλλους διαβέβληνται. Ἀληθέστατα, ἔφη. Ο δὲ δὴ πρεσβύτερος, ἦν δ' ἐγὼ, τῆς μὲν τοιαύτης μανίας οὐκ ἀν ἐθέλοι μετέχειν, τὸν δὲ διαλέγεσθαι ἐθέλοντα καὶ σκοπεῖν τάληθὲς μᾶλλον μαμήσεται, ἢ τὸν παιδιᾶς χάριν παίζοντα καὶ ἀντιλέγοντα, καὶ αὐτός τε μετριώτερος ἔσται καὶ τὸ ἐπιτήδενμα τιμιώτερον ἀντὶ ἀτιμοτέρου Δ ποιήσει. Ορθῶς, ἔφη. Οὐκοῦν καὶ τὰ προειρημένα τούτου ἐπ' εὐλαβείᾳ πάντα προείρηται, τὸ τὰς φύσεις ποσμίους εἶναι καὶ στασίμους οἵς τις μεταδώσει τῶν λόγων, καὶ μὴ, ὡς νῦν ὁ τυχὼν καὶ οὐδὲν προσήκων ἔοχεται ἐπ' αὐτό; Πάντα μὲν οὖν, ἔφη. Αρκεῖ δὴ ἐπὶ λόγων μεταλήψει μεῖναι ἐνδελεχῶς καὶ ξυντόνως μηδὲν ἄλλο πράττοντι, ἀλλ' ἀντιστρόφως γυμναζομένῳ τοῖς

ἔφη] ἔφην Mon. C. ante corr.
[ἔλεγχωσιν] ἔξελεγχωσιν Ven. B.
Vind. EF. Ang. B. Flor. CRT.
cum editis ante Bekkerum.

δὲ] om. Bas. b.

[ἔλεγχθσι] ἔλεγχθσι Mon. C.
ἔξελεγχθσι iidem, qui ἔξελεγχω-
σιν. (ἔξελεγχθσι Vind. E.)

C [ἡγεοθαι] ἡγησθαι Ald. Bas.
ab.

ῶνπερ] ὡν Mon. C.

[διαβέβληνται] Praepositionem
Ven. B. a m. s. additam habet.

ἔφη] ἔφης Lob. Vat. BM.
Ven. C.

'Ο] οὐκοῦν Vat. B.

τάληθὲς] τὸ ἀληθὲς Vind. F.
Flor. R.

μαμήσεται] μεμήσεται γρ Par.
A. a m. s. (Faehsius tantum με-
μνήσεται in eius margine scri-
ptum tradit.)

παιδιᾶς] παιδίας Ven. C. παι-
δείας Vat. B. Vind. F.

αὐτός τε] τε Vind. B. int.
vers. habet.

D τιμιώτερον] μετριώτερον Par.
DK. Mon. B.

ἀτιμοτέρον] ἀτιμωτέρον Vind.
E. Mon. C. Ald. Bas. ab.

ἐπ' εὐλαβείᾳ] ἐπενλ. Vind. F.
φύσεις] φύσεις τε Vind. F.

Ang. B. Flor. R.
καὶ μὴ] Astius in sec. εἰ δὲ
μὴ scripsit, in tert. scribendum
proposuit; frustra. Potius comma

post νῦν cum Bekkero, quem
secutus est Stallbaumius, delere
et ex sequentibus οὔτως ἔρχεσθαι
ad καὶ μὴ repetere dehebat. Nam
quod Stallbaumius subaudiendum
putat, τοιούτους εἶναι, quum
non sequatur οἷοι νῦν ἔρχονται,
minus est aptum.

οὐδὲν] μηδὲν Ven. B. Bas. b.
ἔρχεται] ἔρχηται Vind. E.

αὐτό;] αὐτό. editi ante Bek-
kerum. Quod Stephanus p. 25.
potius αὐτοὺς scribendum existi-
mabat, non maiori hic, quam
p. 527. C. iure in neutro videtur
offendisse.

- ἐπὶ λόγων] ἐπιλ. Vind. E.
μεῖναι] δοῦναι ante corr. Mōn.

C. ἐνδελεχῶς] ἐντελεχῶς Flor. R.
Et Ang. B. τ super ὁ scriptum
habet. Quam Hesychius adverbio
ἐνδελεχῶς significationem tribuit,
idem, quod ἀδιαλείπτως, συνε-
χῶς, ἐπιμόνως esse tradens, quae
explicatio et nostro et Menandri
loco p. 182. Mein. ἐνδελεχῶς ἀει
dicentis confirmatur, eandem ἐν-
τελεχῶς Leg. L. X. p. 905. E.
in verbis ἀρχοντας μὲν ἀναγ-
ναῖον που γίγνεσθαι τούς γε δι-
οικήσοντας τὸν ἀπαντα ἐντελε-
χῶς οὐρανόν habere indeque haud
exiguum Luciani T. I. pag. 62.
Lehm. et Gregorii Cor. p. 155.
ἐντελέχειαν et ἐνδελέχειαν syno-

Ε περὶ τὸ σῶμα γυμνασίοις, ἔτη διπλάσια, ἢ τότε; Ἐξ,
ἔφη, ἢ τέτταρα λέγεις; Άμέλει, εἶπον, πέντε θέσ· μετὰ
γὰρ τοῦτο καταβιβαστέοι ἔσονται σοι εἰς τὸ σπήλαιον
πάλιν ἐκεῖνο καὶ ἀναγκαστέοι ἄρχειν τά τε περὶ τὸν
πόλεμον καὶ ὅσαι νέων ἀρχαὶ, ἵνα μηδὲ ἐμπειρίᾳ ὑστε-
ρῶσι τῶν ἄλλων. καὶ ἔτι καὶ ἐν τούτοις βασανιστέοι,
540 εἰ ἐμμενοῦσιν ἐλκόμενοι πανταχόσε ἢ τι καὶ παραπινή-
σουσι. Χρόνον δὲ, ἢ δ' ὅς, πόσον τοῦτον τιθῆς; Πεν-

nyma et diversis tantum dialectis
adscribenda statuentium sententiae
firmamentum accedere videtur, nec
non eodem dicit, quod Hesychius
ἐνδελεχεῖ *Lacones* pro πυντάζει
dixisse perhibet.

[ξυντόνως] συν. Mon. C.

[πράττοντι] Quum ἀρνεῖ dativum regat, non aliter haec atque pervulgata illa ἔξεστι εὐδαιμονίαι εἶναι et similia dicta, et male Bernhardy whole synt. p. 360. hoc loco ad tuendum dativum in verbis ἀρισταῖς πατέροις ἡ αὐτὴ ἀρετὴ καὶ δούλοις, ἄρχειν οἷω τε εἶναι τοῦ δεσπότου; Menon. p. 73. D. usum esse appetet.

[γυμνασιούμενω] Cf. Procli locus ad L. VI. p. 503. E. adscriptus.
[ἔτη διπλάσια] ἔτι δ. Ven. B.
τῇ διπλάσιᾳ Vind. F.

E πέντε θέσ] πέντεθες Ald. πέν-
τετες Bas. a.

γὰρ] om. Fic. Socrates duplicati annorum numeri rationem reddit positam in eo, quod e disciplina dimissos vita excipiat negotiorum et diversarum curarum plenissima. Itaque parum apte Schleiermacherus pro γὰρ aber posuit.

[καταβιβαστέοι] καταβιβαστέα Par. K. sec. Bekk.

[εἰς τὸ σπήλαιον] post πάλιν Vind. E.

[ἀναγκαστέοι] ἀναγκαστέον Par. K. sec. Bekk.

μηδὲ] μηδὲ Mon. B.

[βασανιστέοι] βασανιστέον Par. K. sec. Bekk.

[εἰ] ἐν Ven. C. om. Lob. Vat. BM.

[ἐμμενοῦσιν] ἐμμένουσιν Vind.

F. μένουσιν Mon. B. Vat. BM.
Ven. C. Par. DK. sec. Bekk.
Flor. U. et corr. Lob. μέλλουσιν
idem ante corr.

ἢ] εἰ Vind. E. Mon. B. Vat. 540
H.

[παραπινήσουσι] παραπινήσου-
σι, Ald. παραπινήσουσιν. Bekke-
rus.

[Χρόνον δὲ] χρόνον Ang. B.
χρόνων Vind. F.

[πόσον] ποσὸν Vind. F.

[τοῦτο] τοῦτο Lob. Vind. BE.
Mon. C. Vat. BM. Ven. B. istis
(adscribis) Fic.

[τιθῆς] τιθῆς Lob. Vind. F.
τιθεῖς Mon. C. τιθεῖς Par. DK.
sec. Bekk. Vat. M. τιθῆς, π. Ald.

[Πεντεπάδεσα] πέντε καὶ δέκα
Vind. F. Flor. R.

[ἔτη] post ἥν δὲ ἐγώ Vind. F.
Ang. B. Flor. R. Conf. Vol. I.
p. 302, a. ἔτι Vat. B. Ven. C.
δὲ] om. Vind. F. Ang. B. Flor.
R.

[πεντηκοντοντῶν] Ita Vind. BE.
Mon. C. (hic πεντεκ.) Vat. H.
πεντήκοντα τούτων Ven. B. Ald.
Bas. ab. πεντηκοντούτων Stephanus
et recentiores cum reliquis
codicibus contra primae, cui supra
p. 539. A. haec ab Atticis
attributa vidimus, pariter ac ter-
tiae declinationis legem.

[ἄριστενσαντας] διαριστενσα-
ντας Mon. C.

[πάντη] πάντη Ald. Bas. ab.
(Bekkerus etc.)

[ἐν ἔργοις τε] ἐν om. Lob. Vat.
M. τε om. Mon. B.

[ἡδη ἀκτέον] ἡδηκτέον Vind.
F.

[ἀνακλίναντας τὴν τῆς ψυχῆς

τεκαιδενα ἔτη, ἦν δ' ἐγώ. γενομένων δὲ πεντηκοντουτῶν τοὺς διασωθέντας καὶ ἀριστεύσαντας πάντα πάντη ἐν ἔργοις τε καὶ ἐπιστήμαις πρὸς τέλος ἥδη ἀκτέον καὶ ἀναγκαστέον ἀνακλίναντας τὴν τῆς ψυχῆς αὐγὴν εἰς αὐτὸν ἀποβλέψαι τὸ πᾶσι φῶς παρέχον, καὶ ιδόντας τὸ ἀγαθὸν αὐτὸν, παραδείγματι χρωμένους ἐκείνω, καὶ πόλιν καὶ ιδιώτας καὶ ἑαυτοὺς κοσμεῖν τὸν ἐπίλοιπον βίον Β ἐν μέρει ἐκάστους, τὸ μὲν πολὺ πρὸς φιλοσοφίαν δια-

αὐγὴν] Pro τῆς ψυχῆς in Par. K. sec. Bip. ψυχῆν, sec. Bekk. ψυχῆς, pro αὐγῇ in eodem αὐτὴν et in Lob. Vat. M. εἰς αὐγὴν scriptum, in Vind. F. αὐγὴν omissum, denique in editis ante Bekkerum eius loco ἀκτῖνα possum est, quod Ficinus quoque invenisse in suo codice videtur: *animi radium ad supera dirigentes.* Ac poterat id non ineptum haberi, et, quemadmodum teste grammatico Bekkeri anecd. p. 386, 23. erant qui ἀμαργνὰς ἀκτῖνας ὅψεως interpretarentur, ita ἀκτῖνα ψυχῆς *luminosus animi obtutus,* ἀνακλίνειν autem, ut ἔρειδεν et ἀπεριέδεσθαι ὄμμα et ὅψιν εἰς τι, propria significatione intelligi, *reclinare seu desigere;* et si per se aestimetur utraque lectio, αὐγὴν magis, quam ἀκτῖνα glossemati simile censeas. Nihilo minus codicum ratio cogit, ut aliter sentiamus et αὐγὴν a scriptore secundum poëtas. pro ὀφθαλμὸν possum et, ut in Par. K., in αὐτὴν corruptum postea leni sane et pronuntiatione adiuta emendatione in ἀκτῖν' et ἀκτῖνα mutatum, ἀνακλίνειν autem vel ea, quam Astius vere, sed ad ἀκτῖνα parum apte ei inesse ostendit, significatione *aperiendi*, vel eadem illa, quam propriae proximam dixi, *desigendi* praeditum statuamus. Ad codices accedit Procli et Damascii-testimonium, qui ψυχῆς αὐγὴν aliquoties hinc citant, Proclus in Civ. p. 428. extr. μόνη ἄρα γνωστὸν (sc. τὸ ὀγαθὸν) τῇ ἐνθέω προσβολῇ τῇ τοῦ νοῦ ορείτον, ἦν αὐτὸς αὐγὴν παλεῖ

τῆς ψυχῆς, ἦν ἀνακλίναντά φησιν ἐκείνω δεῖν (v. φασὶν ἐκ. δεῖ) προσβάλλειν διὰ τῆς ἀφαιρέσεως τῶν μετ' αὐτὸν πάντων. καὶ γὰρ τοῦτο σφῶς εἶπεν αὐτὸς, (supra p. 534. B.) ὅτι ἀφελεῖν δεῖ τὴν ἀγαθὸν ιδέαν ἀπὸ πάντων, καὶ οὕτως ἐπ' αὐτῷ ἀνακλίναι τὴν τῆς ψυχῆς αὐγὴν, εἴπερ μέλλοι τις ὅψεσθαι αὐτὴν καθ' αὐτὴν. Idein in Parm. T. V. p. 277: τῷ δὲ ἡλικίᾳν νεωτέρων δυναμένῳ τὰ πράγματα καθοδῶν καὶ τὸ ὡς ἀληθῶς αἴτιον τῶν πάντων ἀνακλίναντι τὴν τῆς ψυχῆς αὐγὴν, ὡς αὐτὸς ἐν Πολιτείᾳ εἶπε, θεωρεῖν. Damascius ἀπορ. καὶ λίσ. p. 62. Kopp. ἥδη δὲ ποτε καὶ ἡμεῖς ἐπιβαλοῦμεν, δταν, ὡς φησι, τὴν αὐγὴν (in cod. Mon. τ super γ a m. s. scriptum.) τῆς ψυχῆς ἀνακλίνωμεν. p. 95: οὐχὶ δὲ καὶ ὁ Πλάτων αὐτῆς εἰναι φησι τῆς ψυχῆς αὐγὴν τινα, ἦν δεῖ ἀνακλίναντας τῷ φωτὶ συναφθῆναι τῆς ἀληθείας; p. 111: ἢ οὖν αὐγὴ τῆς ψυχῆς τι βούλεται τῷ Πλάτωνι; ἢ συνάπτειν etc.

πόλιν] πάλιν Vind. F.

κόσμεῖν] Ita Par. A. Vind. BF. B. Mon. C. Ven. B. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. σκοσμεῖν Vind. E. κατασκομεῖν Bas. b. κατακόσμεῖν reliqui codices et editi. Ornare etiam aptius h. l. videtur, quam in ordinem redigere. Cf. L. VIII. p. 560. A. καὶ κατεκοσμήθη πάλιν. et Polit. p. 273. A: μετὰ δὲ ταῦτα προσλθόντος ἴκανον κρόνον θορύβων τε καὶ ταραχῆς ἥδη πανόμενος (sc. ὁ κόσμος) καὶ τῶν σεισμῶν, γαλήνης ἐπιλαβό-

τριβοντας, ὅταν δὲ τὸ μέρος ἡμη̄, πρὸς πολιτικοῖς ἐπιταλαιπωροῦντας καὶ ἀρχοντας ἐκάστους τῆς πόλεως ἔνεπα, οὐχ ὡς καλόν τι, ἀλλ' ὡς ἀναγκαῖον πράττοντας, καὶ οὗτος ἄλλους ἀεὶ παιδεύσαντας τοιούτους, ἀντικαταλιπόντας τῆς πόλεως φύλακας, εἰς μακάρων νήσους ἀπιόντας οίκειν· μημεῖα δ' αὐτοῖς καὶ θυσίας τὴν πόλιν δημοσίᾳ ποιεῖν, ἐὰν καὶ η̄ Πυθία ἔνναναιοῦ, ὡς δαιμοσιν, εἰ δὲ μὴ, ὡς εὑδαίμοσι τε καὶ θείοις. Παγκάλους, ἔφη, τοὺς ἀρχοντας, ω̄ Σώκρατες, ὥσπερ ἀνδριαντοποιὸς, ἀπείργασαι. Καὶ τὰς ἀρχούσας γε, ἦν δ' ἐγώ,⁴⁹¹

μενος εἰς τε τὸν εἰωθότα δρόμον τὸν ἑαυτοῦ κατακομούμενος ἦει.
cum Leg. L. III. pag. 718. B: ὅσα τε ἔνικὰ πρὸς θεῶν θεραπεύματα καὶ διμίας ἔνυπάντων τούτων ἀποτελοῦντα τὸν ἑαυτοῦ βίον φαιδροννάμενον κατὰ νόμον κοσμεῖν δεῖ.

ἐν μέρει ἑαύτους] et singula vicissim Fic.

ἡμη̄] ἡμοι Lob. Ald. Bas. ab. τοιούτους,] Ante Bekkerum comma non hic, sed post παιδεύσαντας erat.

μημεῖα δ'] μ. δὲ Vind. F. δημοσίᾳ] δημόσια Lob.

C ἔνναναιοῦ] ἔνναναιοῖ Par. A. Vat. H. Flor. AC. ἔνναναιοῖ Lob. Vind. F. Vat. BM. Ven. C. ἔνναναιοῖ Vind. E. Aristides T. II. p. 12. Dind. ἀλλὰ καὶ οὗτος (Πλάτων) ἀξιοῖ τὴν Πυθίαν ἔρωτᾶν, δόπταν πολιτεύνται καὶ νομοθετῆ, καὶ τότε φησὶ δεῖν (δεῖν φησι cod. Barocc. 136.) ποιεῖν, ἐὰν καὶ η̄ Πυθία συναναιοῦ, (ita cod. Laurent. tert. et Oxon. συναναιοῦ Coisl. συναιοῦ Barocc. συναναιεῖ ed. Cant. et Iebb.) πρότερον δὲ οὐ θαρρεῖ. Thomas Mag. in ἀνεῖλεν p. 67: Πλάτων εν τινι τῶν Πολιτειῶν. (haec quatuor om. cod. Oxon.) τότε δεῖ ποιεῖν, ἐὰν καὶ η̄ Πυθία συναναιοῦ. quae non ex fonte hausta, sed ex Aristide derivata esse praemissa verba τότε δεῖ ποιεῖν arguunt. Indidem haec, ut alia, derivata habet lexicon ab Hermanno editum p. 344: ἀναιρῶ τὸ

μαντεύω. ὡς παρὰ Πλάτωνι τότε δεῖ ποιεῖν, ἐὰν καὶ η̄ Πυθοῖ συναναιοῦ. Aristides autem nostrum locum potius, quam similem L. V. p. 461. E: ἀδελφὸν δὲ καὶ ἀδελφὰς δώσει ὁ νόμος συνοικεῖν, ἐὰν ὁ οἰκητος ταντῇ ἔνυπάντῃ, καὶ η̄ Πυθία προσαναιοῦ. respectuisse ex eoque etiam illud ποιεῖν petiisse videtur, ad quod utique δεῖ ex verbalibus, quae praeeserunt, subaudiendum est.

Παγκάλους] παγκάλλους Lob. ὥσπερ ἀνδριαντοποιὸς] ὥσπερ Vat. B. et Lob. cuius in margine scriptum est τὸ λεῖπον, ἀνδριαντας οἵμαι εἶναι ἐθέλει. conjectura fortasse ex L. II. p. 361. D. ducta. ὥσπερ ἀνδριαντας οἴμαι Vat. M. ὥσπερ τοποιὸς Ven. C. ὡς περιττοποιὸς Mon. B. Par. DK. Flor. U. ὥσπερ ἀνδριαντας τοποιὸς Ven. B. Eccē lineas, quibus horum codicum stemma continetur.

ἀπείργασαι. Καὶ] ἀπείργασαι, καὶ Ald.

γε] om. Mon. C.

Γλαῦκων] γλαῦκω idem.

τι] τοι Vind. E. Mon. B. Flor. U.

οἶον] οἴει Vind. F. Ang. B. εἰρηνέων] εἰρ. με Par. K. sec. Bip.

γνναιοῦ] καὶ γνν. Vind. F. Ang. B. Flor. T.

αὐτῶν] αὐταὶ Lob. Vat. M. ἔγγιγνονται] ἔγγιγνονται Vind. F. ἔγγένονται Mon. C. Ast. tert. Scilicet. natus esse oportebat

δ Γλαύκων. μηδὲν γάρ τι οἶου με περὶ ἀνδρῶν εἰρη-
κέναι μᾶλλου ἢ εἴρηκα, ἢ περὶ γυναικῶν, ὅσαι ἀν αὐ-
τῶν ἴκαναι τὰς φύσεις ἐγγίγνωνται. Ὁρθῶς, ἔφη, εἴπερ
ἴσα γε πάντα τοῖς ἀνδράσι ποιωνήσουσιν, ώς διήλθο-
μεν. Τί οὖν; ἔφην· ἔνγχωρεῖτε περὶ τῆς πόλεως τε D
καὶ πολιτείας μὴ παντάπασιν ἡμᾶς εὐχάριστον εἰρηκέναι, ἀλλὰ
χαλεπὰ μὲν, δυνατὰ δέ πη, καὶ οὐκ ἄλλῃ, ἢ εἴρηται,
ὅταν οἱ ὡς ἀληθῶς φιλόσοφοι δυνάσται, ἢ πλείους ἢ
εἰς, ἐν πόλει γενόμενοι τῶν μὲν νῦν τιμῶν καταφρο-
νήσωσιν, ἡγησάμενοι ἀνελευθέρους εἶναι καὶ οὐδενὸς

omnes, quibus eadem, quae viris,
tribui. Socrates iuberet, id vero
significari non item oportebat,
magisque in rem erat ostendere
rationem illam mulierum haud se-
cūs atque virorum habendam ad
omne tempus civitatis optimae
pertinere. Verum, nisi fallor,
neque de nascentibus neque de
natis, sed de signis sermo est, e
quibus mulieres ad rem publicam
gerendam idoneae agnoscantur,
quae simul atque appareant, ipsas
idoneas fieri, hoc est, ad numerum
idonearum accedere indeque
ab eo tempore eodem loco, quo
viros idoneos, habendas esse So-
crates dicat; qua interpretatione
adhibita praesens multo aptius,
quam aoristus videtur. Cf. L. VIII.
p. 557. C: παντοδαποὶ δὴ ἄν,
οἵμαι, ἐν ταύτῃ τῇ πολιτείᾳ μά-
λιστα ἐγγίγνοντο ἀνθρώποι.

ἴσα γε πάντα] ίσα γ. π. Lob.
Mon. B. εἰς ἄπαντά γε Vind. F.
Ang. B.

D ἔνγχωρεῖτε] Ita Vind. BEF.
Mon. BC. Flor. ACRTUV. con-
ceditis Fic. „ἔνγχωρεῖ—τε Par. A.“
quo compendio Bekkerus videtur
lituram inter εἰ et τε significare
voluisse. ἔνγχωρεῖν τε Lob. et cum
puncto sub ν Vat. BM. Ven. C.
ἔνγχωρεῖς τε Par. K. et a m. s.
D. Ang. B. Vat. H. ἔνγχωρεῖς
(Ven. B.) editi ante Bekkerum.
Sequentia usque ad πλεῖστα ὀνή-
σειν p. 541. A. Stobaeus serm.
XXXI. p. 260. excerptis: Χα-

λεπὸν μὲν οὖν πόλεως τε καὶ πο-
λιτείας etc. Sed eius cod. A. ea
omittit.

τε] om. Vind. F. Ang. B.

ἡμᾶς] om. Stob.

χαλεπὰ μὲν, δυνατὰ] χαλεπὸν
μὲν, δυνατὸν idem.

οὐκ ἄλλῃ] οὐκάλλῃ Vind. F.
οὐκ ἄλλῃ] Vind. E. οὐ κακῶς Ven. B. Bas. b. „Invenitur et
haec lectio, καὶ οὐ κακῶς εἴρη-
ται;“ Steph. annot. p. 25.

ἢ] Ita Par. A. Vind. B. Mon.
C. Vat. H. Flor. ACV. ea dun-
taxat ratione qua diximus Fic.
πη Stob. ἢ ἢ Mon. B. Flor. U.
Stallbaumius. Reliqui codices et
Ald. Bas. ab. Steph. Ast. pr.
tert. particulam omitunt. Astius
in sec. ἢ ὡς edidit idque in tert.
a Platone scriptum coniecit. ὡς
non magis necessarium, quam ἢ.
Cf. L. I. p. 334. E: ἐροῦμεν
τούναντίον, ἢ τὸν Συμονίδην
ἐφαμεν λέγειν. cum p. 339. E:
τούναντίον, ἢ δ σὺ λέγεις. Iamb-
lichus de myst. p. 35, 30. Gal.
καὶ διότι τούτοις εἰσὶν ἄγνωστοι
καὶ ἀφανεῖς, (sc. οἱ ἀφανεῖς
θεοὶ) οὗτοις ἐπονομάζονται, πο-
λὺ διαφερόντως, ἢ ἐπὶ τῶν δαι-
μόνων λέγεται τὸ ἀφανές. quo
loco nonnulli libri ὡς post ἢ in-
sertum habent.

ὅταν] ἢ ὅταν Stob. Gesn.
Gaisf.

ὡς] om. Vind. F. Stob.
καταφρονήσειν] τε η. Flor.
T. καταφρονήσασιν Vind. E.
ἡγησάμενοι — ποιησάμενοι]

ἀξίας, τὸ δὲ ὁρθὸν περὶ πλείστου ποιησάμενοι καὶ τὰς Ε ἀπὸ τούτου τιμᾶς, μέγιστου δὲ καὶ ἀναγκαιότατον τὸ δίκαιον, καὶ τούτῳ δὴ ὑπηρετοῦντές τε καὶ αὖξοντες αὐτὸν διασκευωρήσωνται τὴν ἐαυτῶν πόλιν; Πῶς; ἔφη.
"Οσοι μὲν ἄν, ἦν δ' ἐγὼ, πρεσβύτεροι τυγχάνωσι δεκε-
541 τῶν ἐν τῇ πόλει, πάντας ἐκπέμψωσιν εἰς τοὺς ἀγροὺς,
τοὺς δὲ παῖδας αὐτῶν παραλαβόντες ἐκτὸς τῶν νῦν

om. Stob. cod. B. ἡγησάμενος
etc. Vind. E.

E ἀξίας]. ἀξίους Flor. T. Stob.
μέγιστον δὲ] μέγιστόν γε Vind.
F. Flor. R. Ang. B.

τούτῳ] τοῦτο Vind. BE. Mon.
C. Vat. BH. Ven. B.

τε] om. Lob. Vat. M.

αὐτῷ] αὐτοὶ Vind. E.

διασκευωρήσωνται] διασκευω-
ρίσωνται Lob. Par. DK. sec. Bekk.
διασκευωρήσωται Stob. Gesn.
διασκευωρήσονται Vind. BF. Mon.
C. et a m. pr. B. (a m. s.—ων-
ται) Ven. B. Vat. M. Flor. ACRTV.
διασκευάσωνται Vind. E. Conf.
Epist. III. p. 316. A: ἀνούσι γάρ
ὑστερογρ ὑμῶν τινάς αὐτὰ (τὰ
τῶν νόμων προοίμια) διασκευω-
ρεῖν, formam legum in prooemiosis
descriptam exprimere ac persicere.
Similiter h. l. omnium rei publi-
cae partium diligentem constitu-
tionem significat, cuius fundamen-
tum in sequentibus demonstratur.

πόλιν] πάλιν Stob. cod. B.
Stephanus, qui in superioribus
post εἰρηνεῖαι et εἰρηται inter-
rogationis notam posuit, hic pun-
ctum fecit.

ἄν] οὐν Stob.

δεκετῶν] δέκα' ἔτῶν Par. A. et
a m. s. D. Vind. B. Mon. C. Vat.
H. Flor. ACV. δὲ κέκτων Vind.
E. δὲ καὶ τῶν Vind. F. Par. K.
Flor. U. et, vulgata a m. s. in
m. adscripta, Mon. B. δέκα Stob.
In re dubia, quum de apicibus
agatur, in quibus codicum auto-
ritatem minus certam esse con-
stat, vulgatam utpote magis pro-
prietati sermonis Graeci conve-
nientem tenui. Cf. L. V. p. 460.
E. Leg. L. VII. p. 794. C: μετὰ

δὲ τὸν ἔξετη καὶ τὴν ἔξετιν δια-
κοινέσθω μὲν ἥδη τὸ γένος ἐκα-
τέρων. Ceterum δέκα' ἔτῶν pro-
pter elisionem in numeralibus ra-
riorem scribis offensioni esse ideo-
que in vocabulum usitatius mu-
tari potuisse non nego. Sic τοὶ'
ἔτη Leg. VII. p. 792. B. in τοιε-
τῇ et τοῖα ἔτη, et p. 793. D. in
τοιετῇ et τοιετοῦς depravatum,
et multis locis δύο ex δύ' a li-
brariis factum est.

ἐκπέμψωσιν] ἐκπέμψοντι Vind.
E. (Ven. B.) et editi ante Bek-
kerum, qui etiam Par. K., de
quo Bipontini tacent, coniunctio-
num exhibere testatur. Eundem
modum in verbo θρέψωνται plu-
rium et meliorum codicum con-
sensu firmatum videmus, ut iam
non dubitandum sit, quin illud
ὅταν suam vim, quae Glauconis
interlocutione fracta videbatur,
hucusque extendat. Maiori etiam
hoc in genere licentia Plato
L. VIII. p. 550. A. usus videtur,
ubi ἀνούσι magnam a codicibus
neque ab iis solum commendatio-
nem habet. Neque nostro loco
interna coniunctivo veritatis nota
deest. Scilicet accusativi cum in-
finitivis, in quos haec Socratis
oratio exit, haud dubie ad ver-
bum ἔνγγωρεῖτε initio proximae
positum referri debent. Id quanto
facilius fiat, si haec priora quo-
que ex proximorum parte aliqua
pendeant, nemo non intelligit.
Atque huic nexui similem, quam-
quam ob maiorem nectendorum
propinquitatem minus notabilem
supra p. 515. D. extr. animad-
vertimus.

ἡθῶν, ἂν καὶ οἱ γονῆς ἔχουσι, θρέψωνται ἐν τοῖς σφετέροις τρόποις καὶ νόμοις, οὓσιν οἵοις διεληλύθαμεν τότε, καὶ οὕτω τάχιστά τε καὶ ὁρατά πόλιν τε καὶ πολιτείαν, ἦν ἐλέγομεν, καταστᾶσαν αὐτήν τε εὐδαιμονήσειν καὶ τὸ ἔθνος, ἐν ᾧ ἀν ἐγγένηται, πλεῖστα ὄνήσειν; Πολύ γ', ἔφη· καὶ ὡς ἀν γένοιτο, εἴπερ ποτὲ γίγνοιτο, Βδοκεῖς μοι, ὡς Σώκρατες, εὗ εἰρηκέναι. Οὐκοῦν ἄδην

541 νῦν ἡθῶν] συνήθων Stob. νῦν om. Bas. b.

ἄ] καὶ ἄ Mon. B. Par. DK. sec. Bekk.

οἱ γονῆς] Ita Par. A. et a. m. pr. Ven. C. Astius in sec. et tert. Bekkerus et in sec. Stallbaumius. οἱ γονεῖς Vind. BEF. Mon. C. Ang. B. Vat. H. Flor. ACRTV. Stob. et Stallbaumius in pr. parentes Fic. οἰκογενῆ Mon. B. Flor. U. οἰκογενεῖς reliqui codices editique ante Astii sec. cui defectus articuli et Atticorum consuetudo οἰκότοιβας potius, quam οἰκογενεῖς dicentium, de qua re Phrynicus Lob. pag. 201. et Bekkeri lexicographus aneed. p. 286, 18. conferendi sunt, denique hoc repugnat, quod vernae non tanti sunt, ut eorum potissimum mentione facienda fuerit. De terminazione vide Vol. I. p. 157, a.

ἔχουσι] ἔχωσι Lob. Vat. M.

θρέψωνται] θρέψονται Vind. EF. Mon. B. Par. K. Ang. B. Flor. ART. Stob. cum editis ante Bekkerum.

σφετέροις] σαφεστέροις Vat. B. Ven. B.

τρόποις] τρόποισι Vind. F. Ang. B. Flor. R. Conf. Vol. I. p. 223, a.

οἵοις] οὓσι Stob.

καὶ οὕτω] Vulgo haec puncto ab antecedentibus dirimunt (Stephanus adeo Καὶ οὕτω scripsit) quibus tamen non aliter, quam superiora ὅταν οἱ ὡς ἀληθῶς sibi proximis adiecta sunt. Pendant enim, ut dixi, a ἔνγκωρεῖτε

et alteram interrogationis partem continent, cui Glauco deinde, ut par est, respondeat. Itaque hic comma et post ὄνήσειν interrogationis signum feci. Ficinus hunc locum ita interpolavit: *Atque ita celerrime atque facilime ea civitas et res publica orietur, quam supra diximus, si quando extilerit, beatam fore, et genus hominum, in quo condita fuerit, plurimum iuvaturam.*

τε] om. Vat. H.

ἦν ἐλέγουσν] ἦν λέγομεν Vat. H. εἰναι λέγομεν Mon. B. (hic adscripto in 'm. a m. s. ἦν ἐλέγειν) et Flor. U. quod Stallbaumius in pr. recepit. Ita laboranti, ut videbatur, structurae corrector ille succurrebat et εἰναι pro ἔξειναι accipi volebat, quam significacionem Crat. p. 429. Dicit extr. et alibi habet, sed vereor, ut usquam cum infinitivo futuri.

καταστᾶσαν] καταστάσαν Mon. B.

ἐγγένηται, πλεῖσται] γένηται πλείσταν Lob. Vat. M.

ὄνήσειν] ὄνήσειν Mon. B.

Πολύ] Πολύν Bas. b.

καὶ] Καὶ Ald. Bas. ab. Steph. B. ὡς] ὡσγ' Vind. F. Ang. B.

γένοιτο] γήνοιτο, a m. s. γίγνοιτο, Mon. B.

γίγνοιτο] γένοιτο Vind. E.

εὗ εἰρηκέναι] εὗ εὐρηκέναι Vind. E. εὑρηκέναι Vind. F. Flor.

R. adiuvénisse Fic.

ἄδην] Ita Par. A. Lob. Vind. F. Vat. BH. Ven. B. Flor. ACRTV. ἄδην Ven. C. Vind. B. ἄδην Mon. C. ἄδην reliqui et editiones ante Bekkerum. Conf. Vol. I. p. 49, b.

ἢδη, εἰπον ἐγώ, ἔχουσιν ἡμῖν οἱ λόγοι περὶ τε τῆς πόλεως ταύτης καὶ τοῦ δμοίου ταύτη ἀνδρός; δῆλος γάρ που καὶ οὗτος, οἶν φήσομεν δεῖν αὐτὸν εἶναι. Δῆλος, ἔφη· καὶ ὅπερ ἐρωτᾷς, δοκεῖ μοι τέλος ἔχειν.

ἢδη] post εἰπον Vind. B. Mon. C.

οἱ λόγοι] ὀλίγοι Vat. B. Ven. C.

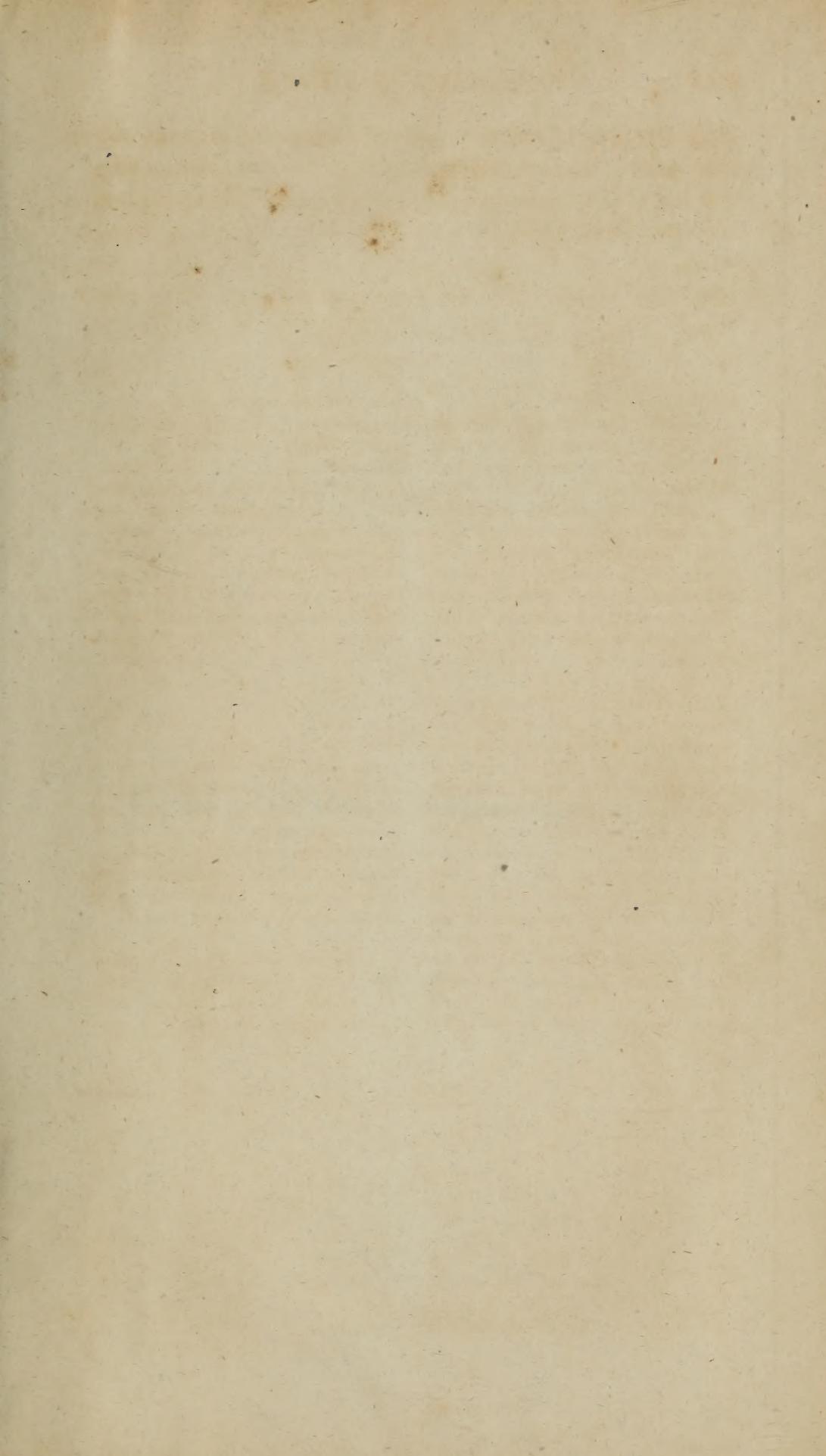
ἀνδρός;] Signum interrogatio-
nis Bekkerus fecit.

δῆλος] δῆλον Mon. B. Vat. H. Hic locus ad tuendam lectionem L. V. p. 465. C. extr. receptam adhiberi potest.

ἐρωτᾶς,] In sec. ed. Stallbau-
mius comma multis locis in pr.
cum Bekkero non distinctis re-
stitutum huic loco, quem in pr.
secundum eundem Bekkerum et
reliquos editores incisum exhi-
buerat, tacite subtraxit, fortasse
quo magis dissentire ab Astii ra-
tione videretur, qui in tert. ver-
bis ὅπερ ἐρωτᾶς quasi in paren-
thesi positis utrinque commata
circumdedit, hac interpretatione
addita: et, quod rogas, videtur
michi res ad exitum esse adducta.
Quae ratio quamvis ad usum par-
ticulae περὶ cum relativo coniunctae,
qualis vulgo obtinet, ac-
commodata tamen hoc loco im-
probanda est, quia non solum
de viro civitati optimae simili, sed
etiam de ipsa civitate atque de ea
potissimum satis sibi dictum vi-
deri Glauco ostendere debebat,
adhibita vero ratione illa verbi
δοκεῖ non res, quod Astius ponit,

sed ἀνὴρ subiectum statuendum
esset. Itaque dictio ὅπερ ἐρωτᾶς
nihil aliud, nisi τὸ ὑπὸ τοῦ ἐρω-
τῶμενον seu τοῦτο, ὃ ἐρωτᾶς,
particula περὶ autem ut Latino-
rum *nempe* responsionis conven-
ientiam cum interrogatione signi-
ficare videtur, quam qui pluribus
declarare velit, ita fere dicat:
id, quod quaeris, quoniam par-
est, ut interroganti respondeam,
ad finem perductum existimo.
Sic Phaedr. p. 228. C: σὺ οὖν,
ὦ Φαῖδρε, αὐτοῦ δεήθητι, ὅπερ
τάχα πάντας ποιήσει, νῦν ἢδη
ποιεῖν. et addito, quod hic omis-
sum est, demonstrativo Phaedon.
p. 60. E: καὶ ἐγὼ ἔν γε τῷ πρό-
σθεν χρόνῳ ὅπερ ἐπράττον, τοῦτο
ὑπελάμβανον αὐτό μοι παρα-
κελεύεσθαι τε καὶ ἐπικελεύειν,
ώσπερ οἱ τοῖς θέουσι διακελεύο-
μενοι· καὶ ἔμοι οὕτω τὸ ἐνύ-
πνιον ὅπερ ἐπράττον, τοῦτο ἐpi-
κελεύειν. Ion. p. 534. A: καὶ
τῶν μελοποιῶν η̄ φυγὴ τοῦτο
ἐργάζεται, ὅπερ αὐτὸι λέγονται.
Sed huic explicationi comma post
ἐρωτᾶς, modo ne alterum ante
ὅπερ ponatur, minime obstat.

Τέλος: — Lob. πολιτεία ξ'
Vind. F. Τέλος τοῦ πολι-
τειῶν, η̄ περὶ δικαίου ἐβδό-
μου. Ald. Bas. ab.



4874

Plato. - Opera. (Schneider, ed.)

v. 2

PONTIFICAL INSTITUTE
OF MEDIAEVAL STUDIES
59 QUEEN'S PARK
TORONTO 5, CANADA

4874 •

